

کشف (الباری

علما دويويتد كيعلوم كالإسيان ديني على كتابول كالخليم مركز فيليرام جينل

نفى كتب خانه محمد معاذ خان

ورس نظامی کیلئے ایک مفید ترین للتكرام چينل

صحيع (البخاري

كتأب الجهاد والسّير (اول)

تاليف ← صدروفاق المدارس مولاناً سليم الله خان مد ظله العالى شيخ الحديث جامعه فأروقيه كراجي ترتيب وتحقيق + مولاناحبيب اللهزكريا صاحب استاذ جامعه فاروقيه كراجي ترجمه مولانا شاكافيصل فاضلوفاق المدارس،امدادالعلوم

- () داحاً ديثو تخريج
- 🕜 د تعليقات بخاري تخريج كول
- د اسماء الرجال مختصر تعارف
- دګرانو لغاتو لغوی صرفی او نحوی حل
- ماقبل باب سره د ربط په باره کښې پوره تحقیق
- د شرحې د هرې خبرې په حاشیه کښې حواله ورکول
- د ترجمة الباب مقصد په بيانولو كښې پوره تحقيق
- د مختلفو مذاهبو تحقیقی بیان او بیا د مذهب حنفی ترجیح
- دحدیث اطراف بیانول چه په بخاری کښې داحدیث په کوم کوم ځائې کښې دې.

فيهل كتب خانه محله جنكى ييشور

دكتاب نوم: - كشف البارى مما ني صميع البخاري كتاب (المهاو والسير (اول) حلد: فارح: صدر وقاق المدارس شيخ الحديث مولانا سليم الله عان مدظله العالى ترتيب وتحقيق : مولانا حبيب الله زكريا صاحب استاذ جامعه قاروقيه كرايي يبتومترجم: مولانا شاه فيصل فأضل امداد العلوم و وفأى البدارس آیماے اسلامیات وعربی پیشور یونیورستی د ڪشف الباري د پښتو اور فارسي د ترجمي د حقوقو په حقله وضاحت دا خبره دې په ذهن کښې وي چې فيصل کتب خانه د صدر وفاق المدارس العربيـه مه تمم حامعه دا حبره دې په دهن سبى وى چې سيصل سب مالد و صدر وركي مسارس سريب او مالي فره فاروقيد شيخ الحديث مولاتا سليم الله خان مدظله العالى څخه د كشف البارى پښتو او فارسى ژبو كښي د ترجمو حقوق ترلاسه كړل او د حقوقو معاوضه ئي ورته وركړه ددې څخه روسته هيڅ چاته دكشف البارى پښتو او فارسى د ترجمه كولو او چهاپ كولواجازت نشته او د هر يو جلد رجستريسن ئى هم د حكومت پاكستان سره شوې دې د ملاويدو پتې: د فيصل ڪتب خانه پيښور څخه علاوه *رشىدىدكتبخانداكورە خېك معلميد كتب خاند اكوره ختى ٩٩٢٣۶٣٠٥٩٠ مكتبه رشيديه كوئتيه ٨١٢۶۶٢٢۶٣ مکتبه عثمانیه کانسی روډ کوئټه ۱۳۷۳۷۰۳۰ ۲۰۰ مکتبه یوسفیه کانسی روه کوئته ۰۳۲۱۰۸۲۸۹۳۰ →راشد کتبخانه چمن ۳۸۹۶۳۵۳۰ مكتبه عمريه تاج مير رود چمن بلوچستان مکتبه علوم اسلامیه تاج میر روډ چمن بلوچستان ۲۹۲۸۰ مکتبه حقانیه جمن ۱۹ ۳۳۳۷۷۵۲۳۰ ◄ صداقت كتب خانه قندهار افغانستان ١ ٧٨٧٧۴٢٣٢٠٠ →مكتبة رحمانيه قندهار افغانستان ۲۸۱ °۷۹۷۷۳۰ → مكتبه عبدالحى قندهار افغانستان ٢٠٠٨٢٤٣٣٤. → اسدالله كتب خانه قندهار افغانستان ٧٠٢٧٧٦٢٧ →مكتبة غفاريه قندهار افغانستان ٩٧٠٠٣٤١٧٤٩ →مکتبهٔ رشیدیه قندهار افغانستان ۲۷۲۲۱۰۷۹ مكتبهٔ حبيبيه قندهار افغانستان ۲۹۹۴۴۷۴۱۳ و ۲۹۹۴۴۷۴۱۳ مكتبة القديق قندهار افغانستان ٥٥٠٧٩٤٨٥٩٠ تدرت كتب خاند كابل افغانستان ٧٩٩٢١٩٢٠٣٠ عيد المجدد كتب خانة جلال آباد ٩٧٧٢٩ ماهين كتب خانه خوست افغانستان ما لال كتب خانه خوست افغانستان ◄ اسلامي كتب خانه خوست افغانستان ۲۴۷ • ۷۹۹۳۱ •

کشف البّاری مضامین مضامین فهرست مضامین فهرست مضامین

| صفحه ۲۸ | مضمون | شميره |
|-------------------|--|---------------------|
| ٧٨ | | عرض مرت |
| | ٢٠- كتأب الجهاد والسير | |
| ٧٠ | ختلاف | دَ نسخو ا- |
| ٧٠ | وىمعنى: | دَ جهاد لغ |
| ٧٠ | ى تعريف السناني المستناني المستاني المستناني المستناني المستناني المستناني المستناني المستناني ا | اصطلاحى |
| ٧٠ | | دَ جهادصو |
| ٧١ | ں کفایه دې که ف رض ع ین؟ | جهاد فرض |
| ٧٢ | | مشروعيت |
| | ١ بَأَب: فَضُلِ الْجِهَادِ وَالسِّيَرِ | |
| ٧٢ | ى معنى: | دَ سيرلغو; |
| ٧٢ | طلاحی معنی: | دَ سير اص |
| ٧٣ | باب مقصد: | دُ ترجمة ال |
| ٧٢ | سخ: | اختلافنه |
| ٧٣ | ن نزول:ن نزول: | |
| ٧٣ | رجمه: | |
| ٧۴ | ينو ذكركولو م قصد | • |
| ٧۴ | رابن عباس:الحد _ا دالطاعة: | |
| ٧۴ | تعليق تخريج: | |
| ٧۴ | تعليق مقصد: | - - |
| ٧۴ | شيغان المستقبل | رجال الت |
| ۷۴ | بن صباح | ۱. حسن ب |
| ٧٥ | بن سابق تمیمی | ۲- محمد |
| | بن مغول بن مغوّل: | |
| Y Ø | بن عيزار: | ۴- الوليد |
| Y Ø | .نرو الشيبانيي | ۵- ابوعمر ۲- سان |
| | | - |
| Y Ø | ترجمة الباب سره مطابقت | |
| | • | حدیث بار |
| | ديث | رجال الد |

| جلداول) | ری کتاب الجهاد | كثف البا |
|-------------|---|----------------------------|
| صفحه | مضمون | شميره |
| ٧۵ | ن سعیدن | |
| Y7 | *************************************** | - ا |
| | *************************************** | |
| | *************************************** | |
| * * ******* | *********** | |
| | *************************************** | 1 1 1/ |
| | س رضي الله عنهما ترجمة الباب سره مطابقت: | د حدیث د |
| VV | | حديثباب |
| | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | رجال الحد |
| *********** | | ۱- مسدد: |
| ٧٨ | | ٢- خالد: . |
| ٧٨ | بن ابي عمره: بنت طلحه: | ۳- حبيب |
| ٧٨ | ، بنت طلحه: ، بنت ابي بكر: | ۴- عائشه |
| ٧٨ | ، بنت ابي بكر : . ترجمة الباب سره مطابقت: | ۵- عالت |
| | و رجمه ابب سره تعقبت | د حدیث د |
| ٧٨ | ······································ | |
| ۲۸ | ق بن منصور: | رجال الد ۱ ا ما: |
| /٩ | ى ين مسلم: | |
| /٩ | | |
| /٩ | . بن جحاده: | · · |
| /٩ | | ۵- ابوحه |
| ' 9 | ······································ | ۲- ذکوار |
| ' 9 | يره رضي الله عنه | ۷- ابوهر |
| | د ترجمة الباب سره مطابقت | د حدیث |
| اللهِ | د ترجمة الباب سره مطابقت ٢- بَاب: أَفْضَلُ النَّـاسِ مُؤْمِنٌ هُجَـاهِدٌ بِنَفْسِهِ وَمَـالِهِ فِي سَبِيلِ | • |
| • , | | دَنسخاخ |
| • | الباب مقصد: | |
| | · | _ |
| \ | ره آیت ترجمه | |
| 1 | ره ایت د در خونومنتصد | دمد دور |

| صفحه | مضمون | شميره |
|------|---|----------------------|
| ۸۲ | د بث | رجال الم |
| ۸۲ | يان | • |
| ۸۲ | | - - . |
| ۸۲ | | ۳- الزهري |
| ۸۲ | بن يزيد الليثي: | - |
| ۸۲ | يد الخدري:يد الخدري: | |
| ۸٣ | بوځائ کیدل افضل دی که خلوت نشینی؟: | |
| ۸٣ | ِدُ طرف نه جواب: | |
| ٧٤ | ترجمة الباب سره مطابقت: | د حدیث د |
| | ديث | رجال الح |
| ٨۴ | مان ۲- شعیب ۳- زهری: | ١- ابواليد |
| ۸۵ | بن المسيب: | ۴- سعید، |
| ٨٥ | ره رضي الله عنه: | ۵- ابوهري |
| ۸۵ | . ترجمة الباب سره مطابقت: | د حدیث د |
| | ٣- بأب: الدعاء بالجهاد والشهادة للرجال والنساء | |
| ۸۵ | اب سره ربط اومناسبت: ﴿ ` أَنْ الْمُنْ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ | دَ ماقبل بـ |
| ۸۵ | لباب مقصد: | د ترجمة ال |
| ۸۲ | هليق تخريج: | |
| ۸۲ | ، تعليق ذكر كولو مقصد: | |
| | دیث لَّه بن یوسف: ا | رجال الح |
| ۸٧ | له بن يوسف: السنينينينينينينينينينينينينينينينينينيني | ١- عبدالا |
| ۸٧ | | ۲- مالك: س |
| ۸٧ | ق بن عبدالله بن ابي طلحه: | ۲- اسحاز عداد |
| | ن مالك: | |
| | م حرام رضى الله عنها: | |
| Λ٩ | ••••••••••••••••••••••••••••••••••••••• | يواستان حماله ندن |
| ^\ | دې؟: | دليا څه |
| 7 \ | ې مختلف طرق کښې تعارض: | د حدیث، |
| 41 | ه تعارض حل: | دَ مذكوراً |
| 4 Y | ه تعارض حل: اشكال جوابوند: | اشكال: |
| 4 7 | اشكال جوابونه | دَمذكوره |

| صفحه | مضمون | شميره |
|---|--|--------------------------|
| 1.4 | | |
| ١.۴ | ن مالك | ۱ حمید |
| ١٠٥ | غوى تشريح غوى تشريح | ۲۰۱۰ اسس بر ۲۰۰۱ مارس |
| ١٠٥ | موی تسریح بطلب _. | د حدیث د آماد شاه |
| ١٠٥ | لطبب باښام دَتخصيص وجم | د حدیت د . ـ ـ ـ اه ه |
| ۱ . ۵ | ر بينام دولفليك ورف المسابقة | د سحراوه محادیث |
| | | |
| ١. ٢ | | رجال الم |
| ١. ٢ | م بن المنذر · | ۱- ابراهید |
| ١.٠٠ | بن فليح | |
| ١. ٢ | | ۳-ابي: مرات |
| ١. ٢ | بن علي: | |
| ١. ٢ | . ت | |
| \ \ \ \ | يره والشئاء | 7- ابوهري |
| * | د ترجمة الباب سره مطابقت | د حدیث د |
| | ······································ | رجال الح |
| \ \ \ \ | | ۱ - قبیص |
| \ · \ | ٠ ن: | ۲- سفیار |
| ```\` | ز ه:ن | ۳- ابوحار |
| \ \ \ | - ۱- بن سعد: | ۴- سهل |
| ١٠٨ | د ترجمة الباب سره مطابقت: | د حدیث |
| | ٠- بَأَبُ: الْحُورِ الْعِيْنِ وَصِفَتِهِنَّ يُحَارُ فِيهَا الطَّرُفُ شَدِيدَةً سَوَادِ الْعَيْنِ شَدِيدَةً بَيَاضِ الْعَيْنِ وَزَوَّجُنَاهُمْ بِعُورٍ أَنْكَحُنَاهُ | |
| , م | سَوَادِ الْعَابِ . شَدِيْكَ قُرْبَاضِ الْعَابِّرِ . وَزَوْجُنَاهُمْ بِحُورِ أَنْكَحُنَاهُ | |
| , - // | , ه ربط او مناسبت: | ماقىلس |
| ۱۰۸ | ترحمے مقصد:ترحمے مقصد | دُ باتُ دُ ز |
| ۱۰۹ | ر. لین لغوی تحقیق: | دُ حور الع |
| ١٠٩ | ه عبارت مقصد: | دَ مذکور |
| | | |
| ١١٠ | للهُ بَن محمد:،للهُ بَن محمد:، | ۱- عبدا |
| ١١٠ | ا نه ان عمل و : | ۲- معاو |
| ٠١٠ | ــــــــــــــــــــــــــــــــــــــ | ۳- ابداید |
| ١١٠ | | ۴- حميا |
| | بن مالك الله الله الله الله الله الله الله ا | _ |

| 1000 | |
|----------------|--|
| صفحه | شميره مضمون |
| 111 | د شهیداو غیرشهید د مرتبوفرق |
| 111 | د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت |
| 111 | د قاب او سوط د تخصيص وجه أو مراد: |
| 117 | د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت |
| | ر حديد و رسم بالسب السبادة و السبادة |
| 117 | ١٠٠١ ، ميين السهادة |
| 117 | سابقه باب سره ربط: |
| | دَّترجمة الباب مقصد: |
| 115 | رجال المديث |
| 115 | ۱ - ابوالیمان: |
| | ۲- شعيب بن ابي حمزه: |
| 115 | ۳- الزهري: |
| 114 | ۴- سعيدبن المسيب: |
| 110 | ۵- ابوهريره التَّاتُـُـُـ: |
| 110 | اشكال: |
| 110 | جواب: |
| 117 | آیا (روالذی نفسی بیده، لوددت) د حضرت ابوهریره رای مقوله ده ؟ د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت |
| • | |
| 117 | رجال الحديث |
| 117 | ۲- اسماعیل بن علیه: |
| 117 | |
| 117 | ۴- حمد: |
| 117 | ۵- انس بن مالك ظائمة |
| ف فأصب ثم | قوله: قال خطب النبي صلى الله عليه وسلم فقال: أخذ الرأية فأصيب، ثمر أخذها جع |
| برد حیب مر | أخذه عبد الله بن رواة فأصيب، ثمر أخذِه أخ الدبن الوليد عن غير إمرة ففتح له: |
| | قوله: وقال ما يسرنا أنهم عندنا قال ايوب: أوقال: ما يسرهم أنهم عندنا ، وعينا الاتذارة |
| 114 | د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت |
| | مُ بَابِ: فَضَٰلِ مَنْ يُصْرَعُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَمَاتَ فَهُوَمِنْهُمُ |
| | |
| ۱ ۱۸ | دسابقه باب سره ربط: |
| 1 1 4 | دُ ترجمة الباب مقصد : |
| فقل وقع اجر | • قوله: وقول اللهِ لعالى ومن يخرج مِن بيتِهِ مها جِرا إلى اللهِ ورسولِهِ تمريل إكه البورة - ٢٠٠٠ - ٢٠٠٠ - ١٠٠١ - ١٠٠١ - ١٠٠١ - ١٠٠١ - ١٠٠١ - ١٠٠١ - ١٠٠١ - ١٠٠١ - ١٠٠١ - ١٠٠١ - ١٠٠١ - ١٠٠١ - ١٠٠١ - ١٠٠١ |
| 19 | عَلَى اللَّهِ/النساء: ١٠٠/: |

| ادجلداول) | p فهرست(کتـابالجهـ | كشف البارى |
|-----------|---|--|
| صفحه | مضبون | شميره |
| 119 | | : آیت ذکر کولومقصد |
| 119 | ناسبتنست | ز زجمة الباب سره دُ آيت، |
| | •••••• | • |
| 119 | | نائده |
| ••••• | ······································ | رجال المديث |
| | | ١- عبدالله بن يوسف |
| | ••••••••••••••••••••••••••••••••••••••• | _ |
| | ••••••••••••••••••••••••••••••••••••••• | |
| | بان: | ۴. محمدّبن يحيي بن ح |
| ١٢٠ | ••••••••••••••••••••••••••••••••••••••• | ۵- انس بن مالك گ <i>انين:</i> |
| 171 | •••••• | ۲- ام حرام بنت ملحان: . |
| 171 | سره مطابقت: | د حديث د ترجمة الباب، |
| | ٩- بَابُ: مَنُ يُنْكَبُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ | |
| 17.1 | | سابقه باب سره مناسبت |
| 111 | *************************************** | ِ د ترجمی مقصد: |
| 171 | يح: | ر. دَترجمة الباب لغوي تشر |
| •••••• | | ر. رجال الحديث |
| 177 | | ١- حفص بن عمر: |
| 177 | •••••• | ۲- همام: |
| 177 | *************************************** | ٣- اسحاق: |
| 177 | | ع- انس لاکشن :۴ |
| بن: ۱۲۲ | سلى الله عليه وسلم أقواما من بنبي سليم إلى بنبي عـامر في سبعير | قوله: قـال:بعثالنبي، |
| 177 | | يووهم او دُهغي از اله: |
| ١٢٣ | سلى الله عليه وسلم أقوام أمن بنى سليم إلى بنى عـ أمر فى سبعير برخـ الى : | توله: فلماقدمواقال المر |
| 177 | | حضرت جراء بن ملحان |
| ١٢٣ | رج صعد الجبل: | قوله: فقتله هم الارجل أع |
| 174 | سره مطابقت | د حدیث د تر حمة الباب د حدیث د تر حمة الباب |
| | | رحاا المدنث |
| 144 | *************************************** | ۱- موسى بن اسماعيل |
| 174 | | ۲- ابوعوانه: |
| | | |

۳- اسودبن قیس: ۲- جندببن سفیان:

۱ - ابواليمان:

۲- شعب:......

| رست (كتاب الجهادجلداول) | فہر |
|-------------------------|-----|
|-------------------------|-----|

| بادجلداول) | كشفُ البَاري ١٢/ فهرست (كتاب الجه |
|-------------|--|
| صفحه | کشف الباری شمیره مضمون |
| 149 | |
| 149 | ٣- اسماعيل |
| 149 | ۴- اخي |
| 189: | ۵- سلیمان |
| 189 | ٢- محمد بن ابي عتيق: |
| 189 | ۷- ابن شهاب: |
| 149 | ۸- خارجه بن زید: |
| ع رسول الله | ٧- زيد بن ثابت:فقدت أية من سورة الأحزاب كنتُ أسم قوله: قال: نسختُ الصِحفِ في المصاحف، ففقدتُ آية من سورة الأحزاب كنتُ أسم |
| 189 | |
| 149 | صلى الله عليه وسلم يقرابها: |
| 149 | موله: فنم اجراف إلا معمور مداب وبعث الرابطة والمستسبب المستسبب المستسبد المستساء المستسبب المستسبب المستسبب المستساء المستسبد المستسبب المستسبب المستسبب المستسبب ال |
| 14. | حفرت حريمة بن القب وجه: |
| 147 | ت و النام المام ال |
| 147 | قوله: الذي جعل رسول الله صلى الله عليه وسلم شمادته شمادة رجلين، وهوقوله: |
| | د حدیث د ترجمهٔ الباب سره مطابقت تا د کان تا د الله تا الله |
| 147 | و المايان و المايخ الما |
| 147 | مِ اقبِل سره مناسبت: |
| | د ترجمه مقصد: تا به ما يو ما يو الما يو ما يو الما يو ما يو الما يو الم |
| 147 | نوله: وَقَالَ أَبُوالدَّدُدَاءِ إِنَّمَا تُقَاتِلُونَ بِأَعْمَالِكُمْ: |
| 144 | د آیت مبارك تعلق دعوی سره دی نه چه دعوت سره |
| ١٣٢ | دُ تَرْجِمةَ الباب سره دُ آیتُ مناسبتُ |
| | رجال العديث |
| 188 | ١- محمد بن عبدالرحيم: |
| 188 | ٢- شبابه بن سوار الفزاري: |
| 188 | ٣- اسرائيل |
| | ۴- ابواسحاق: |
| 188 | ۵- الْبَرَاء: |
| | قوله: يقول: أتى النبي صلى الله عليه وسلم رجلٌ مقنعٌ بالحديد: |
| | حضرت عمروبن ثأبت اشملي الطنيز: |
| ٠٤٧ | قوله: قال: أسلم ثمرقاتل: فأسلم ثمرقاتل فقتل: |
| ۳۲ | قوله: فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: عمل قليلاً وأجر كتيرا: |
| ۴Y | د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت: |
| K Y | |

١٢ بَابِ: مَرِ : أَتَاهُ سَهُمْ غَرُبٌ فَقَتَلَهُ

| 147 | د ترجمة الباب مقصد |
|---|--|
| | |
| 147 | رجال المديث |
| 149 | ١- محمد بن عبدالله |
| 131 | ······································ |
| 101 | ٣. شيبان |
| 131 | |
| 131 | و السابق على الماء الماء الماء الماء الماء الماء الله عليه وسلم: |
| ١٥١ | ٥- انس بن مالك ﴿ الله عليه وسلم: من الله عليه وسلم: الله عليه وسلم: اهمه تنسه: |
| 101 | <u></u> |
| ب فارس | قوله: حارثه بن سراقه الخائز: قوله: فقالت: يانبي الله، ألاتحدثني عن حارثة وكان قتل يوم بدر أصابه سمم غر |
| 107 | قوله: فقالت: يانبی الله: الإعمالتی عن حارته وست من يوم جار الحد و |
| 101 | كان في الجنة صبرت: |
| 10" | قوله: وإن كأن غيرذلك اجتهدت عليه في البكاء: |
| 107 | حدیث باب نه د علامه خطابی د ژړا په جواز باندې استدلال او د هغی جواب |
| 107 | قولم: قال: ياأمر حارثة إنها جناف في الجنة وإن ابنك أصاب الفردوس الأعلى: |
| 104 | 'إنّها ضميركنبي احتمالات: |
| · • · · · · · · · · · · · · · · · · · · | دُ حَدِيثُ دَ تَرْجَمَةُ البابِ سِرِهِ مطابقتَ ١٥ - بَابِ: مَنُ قَاتَلَ لِتَكُونَ كَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا اختلاف نسح |
| | ١٥. بَابِ:مَرِ ثُي قَاتُكَ لِتُكُونَ كَلِمُةَ اللَّهِ هِيَ الْعَلَيْ الْعَلَيْ الْعَلَيْ الْعَلَيْ ا |
| 104 | اختلاف نسح: |
| 104 | ماقیل سه مناست: |
| 104 | دُترجمة الباب مقصد: |
| *********** | رهال العديث أ |
| 100 | ۱- سليمان ين حرب: |
| 100 | ٧- شعبه: |
| 100 | |
| 100 | |
| 100 | ۵- ابر موسد : |
| روالرجل | روكي المسلمين النبى صلى الله عليه وسلم فقال: الرجل يقاتل للمغنم يقاتل للمعنم يقاتل للمعنم الله؟: |
| 100 | يعًا تل للذكروالرجل يقاتل ليرى مكانه فبن في سبيل الله؟: |
| 100 | رجل نه څوك مراد دې؟ |
| | T - |

٢٠ خالد

٢- مالك:

۴- قتاده: ۵- انس

| صفحه . | مضمون | شميره |
|---------------|--|---------------------------|
| | مضمون ٢٢- بَأَب: الْجَنَّةُ تَّحُتَ بَأَرِقَةِ السَّيُوفِ | |
| ١٧٥ | ه مناسبت: | ماقبلسر |
| ١٧٥ | باب مقصد | دُ ترجمة ال |
| ١٧٥ | باب لغوى تحليل | دترجمة ال |
| ر مِنَّاصَارَ | باب لغوى تحليل كَ الْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ أَخْبَرَنَا نَبِيُنَا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ رِسَالَةِ رَبِّنَا مَنْ قُتِلَ | قوله: وَقَالَا |
| 177 | | إِلَى الْجَنَّةِ: |
| 177 | نعليق تخريج: | د پورتني ت |
| 177 | تعليق ترجمة الباب سره مناسبت: | دَمذكورة ن |
| ١٧٧ | تعليق ترجمة الباب سره مناست: كَ عُمَرُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَلَيْسَ قَتْلَانَافِى الْجَنَّةِ وَقَتْلَاهُمْ فِى النَّادِ: | قوله: وَقَـالَا |
| ١٧٧ | تعليق تخريج | دَمذكوره |
| ١٧٧ | ب سره دُتعليق مناسبت | |
| | | رجال الح |
| ١٧٧ | | ١- عبدالله |
| ١٧٧ | ﻪﺑﻦ ﻋﻤﺮﻭ: | ۲- معاويا |
| ١٧٨ | حاق: | ۳- ابواسح |
| ۱۸۷ | بن عقبه: | ۴- موسی |
| ۱۸۷ | بوالنضر ابن ابي اميه:بين الميه المياه المي | ۵- سالم آب |
| \ | يُد بن ابيي او في الكَافِيْةِ | ٢- عبدالله |
| ١٧٨ | رسول الله صلَّى الله عليه وسلمرقال: واعلمواأن الجنة تحت ظلال السيوف: | قول ه:إن |
| ۱۷۸ | طلب: | د حدیث م |
| ۱۷۸ | ه الأويْسى عن ابن أبي الزنادعن موسى بن عقبة: | - ق ەل ە: تابعە |
| 179 | ······································ | د ما کید |
| 179 | نو ټول مقتولين جنتيان دی | دُمسلمانا |
| 174 | *************************************** | تنبيه: |
| ١٧٩ | ت حية الله ومطابقت | د حدیث د |
| | ، ترجمه الباب سره على بعث المن طلب الوكد للجيها د ٢٣ - باب: مَنْ طَلَبَ الْوَلَدَ لِلْجِهَادِ | |
| ١٨٠ | لباب مقصد:لياب مقصد: | دَة ح. تا |
| | | ••• |
| ١٨٠ | | ر جان اند ۱-لت: |
| ١٨١ | | ۲. جعف |
| ١٨١ | بن ربیت رحمن بن هرمز ، | يـر ٣- عبدال |
| ١٨١ | | ۴- ابوهری |

| جلداول) | نهرست(کتـابالجهـاد | كشف البارى |
|--------------|--|----------------------------------|
| صفحه | مضمون | شبیره |
| مرلأطوفن | لله صلى الله عليه وسلم قبال: قبال سليمان بن داود عليهما السلاد | |
| ١٨١ | لله الله الله الله الله الله الله الله | الله القرار من والموات الم |
| ١٨١ | | |
| ١٨١ | عروسعین. علیه السلام د بیبیانو په تعداد کښې د روایاتواختلاف | قوله: مائة امرأة أوت |
| ١٨٢ | عليه السارم د بيبيالو په صداد حبي د رو په تو | د خصرت سلیمان |
| ١٨٣ | حبه:قل:إنشأءالله: | _ |
| ١٨٣ | | دُ صاحب نه څوك ه |
| ١٨٣ | | قوله: فلم يقل: إن |
| | بن إلاامرأة واحدة جاءت بشق رجل:الا المفرسي أناأج عدد | قوله: فلم يحبل منه |
| 114 | معهد،بيده،لوقال: إن شاءالله لجاهدوا في سبيل الله فرسانا أجمعور | |
| 114 | •••••• | فائده |
| ١٨٤ | بدو وجه | دَ بچې دَ ناقص کي |
| ١٨٥ | | مودودی صاحب. |
| ١٨٢ | | رومېئى وجە دوئمە وجە |
| ١٨٢ | | دونعه وجه د بحث خلاصه |
| ۱۸۷ | الياب سره مطابقت | د جدیث د ترحمة |
| | الباب سره مطابقت | ., |
| ١٨٧ | ······································ | ئ جمة الياب مقع |
| ••••• | لملك بن واقد: | درجمه،بدب ر جال الحديث |
| ١٨٧ | لملك ب واقد : | رجال المعايد |
| | ******************** | ۲- حماد ب: زيد: |
| 188 | • | |
| ۱۸۸ | | عدانالأف |
| \ | ى صلى الله عليه وسلم أحس النياس وأشجع النياس وأجود النياس * دري صفته نه | قوله: كأن النب |
| \^^ | هم درې صفتونه | د نبي عليه السلا |
| ٠ | الدرينة فكان النبي صلى الله عليه وسلم سبقهم على قرس: | laicia := 1 |
| \ | ٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠ | مود: وقال: وج |
| ۱ ۸ ۲ | ناه بحرا: ناه بحرا: د الباب سره مطابقت | د حدیث د ترجما |
| | | |
| | | ١- ابراليمان: |
| | | • • • Y |

| صفحه | مضمون | شميره |
|---|---|-------------------------|
| 119 | | L |
| ١٨٩ | | ۴- زهري: م |
| 19 | ن <i>محمد ب</i> ن جبیر [.] | _ |
| 19. | و المناه | ۵- محمد |
| 19. | ن مطعم (تأثيرُ الماء الماء الماء معالناً سمقفله من حند | ۱- جبيربر د و أن |
| لعضاه نعما | ن مطعم 100 ينماهويسيرمعررسول الله صلى الله عليه وسلم ومعه النياس مقفله من حنين : ب النبي صلى الله عليه وسلم فقيال : أعطوني ردائي، لوڪيان عددهذه ا | مويه: انه <u>د</u> |
| 191 | ے ارتباری صلی الله علیه و سمر فعال: الصولی روانی الوسطات ۱۲۰۰۰. کے : | غوله: فوقف التناسب |
| 191 | | لقىمتەبىند كالىرىنىد |
| 197 | يم لغوى تحقيق | |
| 197 | | دَ نعم اعرا |
| 197 | لاتجِدوني بخيلاً ولاكِذوباً ولاجبانا: | |
| 198 | ن دَ وصف ده دَ مبالغي نه ده:نه ده وصف ده دَ مبالغي نه ده: | |
| 198 | ئوائد:ن | دُ حديث ف |
| • | د ترجمة الباب سره مطابقت: د ترجمة الباب سره مطابقت: | د حدیث د |
| | و المجانب مَا يُتَعَوَّدُمِنُ الْجُبُنِ | |
| 197 | ه ربط او مناسبت: | ماقبلسر |
| 197 | باب مقصد | |
| 194 | • | رجال الم |
| 194 | ي بن اسم عيل: | اً - موسى |
| 196 | ••••••• | |
| 146 | انه ملك بن عمير بن ميمون الأودي | ٣- عبدال |
| 194 | بن ميمون الأودي:بن ميمون الأودي: | ۴-عمرو |
| | | . A |
| به ۱۱۱ ۱۹۸ | ن كان سعد يعلم بنيه هؤلاء الكلمات كما يعلم المعلم الغلمان الكتا | قول ه: قـال |
| ۱ ۱ ۵ خ-تقالدند ک | ن: كان شعبا يعتم بنيه شوار فرانك بالمنطقة المنطقة الم | ق ول ه: ويقر |
| ، سبب، المعار 194 | ول. إن رسول العبي، ما الحبي وسيعر مراني أعوذ بك من الحبن، وأعوذ بك أن أردالي أرذل العبر، وأعوذ بك من | قول ه: الله |
| 190 | هر إلى الودبك من البيال و الراب في دارك المن المناب القبر: | واعوذبك |
| ' ' ' | من عرب بالعبر. باثت به مصعبًا فصدقه: | قوله: فحر |
| ` | ······································ | فائده: |
| * | ئت به مصعب فصدقه: | تنبيه |
| | <u>د ب</u> نام الله الله الله الله الله الله الله ال | رجال الـ |
| \ | | ۱- مسد |

د مذکوره تعلیق تخریج:

۲.۴

| 1000 | فهرست(کتابالجها | كشف الباري |
|---|---|---------------------------------------|
| صفحه | مضمون | شميره |
| 1.4 | للب | دمذ کوره تعلیق مع |
| ۲۰۴ | | ومد توره عمين ما قوله: يقال واحداا |
| ************** | | |
| ۲۰۵ | | رجال العديث |
| ۲۰۵ | | ۱- عمرو بن علي |
| ۲۰۵ | | ۲- يحيي: تا نان |
| ۲۰۵ | | ۳- سفیان: ع |
| ۲.۵ | | ۴- منصور: |
| ۲۰۷ | ••••• | ۵- مجاهد: |
| ۲.7 | ••••• | ۲- طاؤس: برزا |
| نية: ۲۰۷ | الناسيا و المالية و المالية و الفتح و | ٧-ابن عباس |
| ۲۰۷ | ملى الله عليه وسلم قال يوم الفتح: لاهجرة بعد الفتح، ولكن جها دونه | قو ل ه: ان النبي، |
| ۲۰۷ | | قول ه: وإذااستنفرته |
| ۲۰۷ | الفتح،ولكن جهادونية: | قوله: لاهجرةبعد |
| ۲۰۷ | | فائده: |
| . , | ألباب سره مطابقت . - بَاب: الْكَ افِرِيَقْتُلُ الْمُسْلِمَ ثُمَّ يُسْلِمُ فَيُسَرِّدُ بَعْدُ وَيُقْتَلُ | د حدیث د ترجما |
| | ـ بَأَبِ: الْكَ أُفِرِيَقُتُلِ الْهُسَلِمُ ثُمْ يُسَلِّمُ فيسدِ دبعد ويقتل | 47 |
| Υ·Υ | | |
| ۱۰۷ | | |
| | | اختلاف نسخ |
| · • • • • • • • • • • • • • • • • • | ************* | . 84 40 |
| · · /\ | | ÷11. |
| ' ' / \ | *************************************** | .111 🗸 |
| *************************************** | *************************************** | 1 11 . 1 . 10 |
| | | |
| ٠٨ | • | ۵- ایمه پیره: |
| · ^ | اللهصل اللهعلية وسلم قبال: يضحك الله إلى رجلين: | قملم أدر بسما |
| ٠٨ | ط ف نه د صحك د نسبت توضيحط ف نه د صحك د نسبت توضيح | دُ اللهُ تَعَالُمُ دُ |
| ٠٩ | ر بهاالآخريدخلان الجنة: | قولم: بقتل أح |
| ٠٩ | هذافي سبيل الله فيقتل: | قولم: بقاتا |
| ١٠ | مسلمان یا کافر؟: | د قاتل ندمراد |
| ١٠ | الله علم القاتل فيستشهد: | ت = -ن قدلم: ثم بتدب |

| وصاحب ها هراو السهيات الله عليه وساحب الله عل | دجسون | د المراسع (منا بالعرب) | 2001 |
|---|-------------|--|---|
| د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت | صفحه | · | |
| د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت | 77 | قبض النبي صلى الله عليه وسلم لم أرة مغطر أ إلا به م فط أو أضحه في | قوله: فلما |
| د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت. د ترجمة الباب مقصد : ٣٠ - بَاب: الشّهَا ذَةُ سَبُعٌ سِوَى الْقَتْلِ د الله بن يوسف : ٢٢١ - عبد الله بن يوسف : ٢٢١ - عبد الله بن يوسف : ٢٢١ - عبد الله بن يوسف : ٢٢١ - مالك : ٢٢٢ - ابوصالح : ٢٢٢ - ابوصالح : ٢٢٢ - ابوصالح : ٢٢٢ - ابوصالح : ١٤٤٤ - ابوصالح : ١٤٤٤ - ١٤٤٤ - ابوصالح : ١٤٤٤ - ابوصلح : ١٤٤٤ - ابوصالح : ١٤٤٤ - ابوصالح : ١٤٤٤ - ابوصالح : ١٤٤٤ - ابوصالح : ١٤٤٤ - ابوصلح : ١٤٤٤ - ا | 771 | بوطلحه دَ مذكوره عمل وجه: | دحضرت ا |
| رَجِمِة الباب مقصد بَاب: الشَّهَ اَدَةُ سَبَّرٌ سِوَى الْقَبْلِ | • | ت حمة البادء سيره مطارقت ن | د حدیث د |
| رجال العديث ١٠ عبدالله بن يوسف: ١٠ عبدالله بن يوسف: ٢٢ - مالك: ٢٠ - مالك: ٢٢ - برسول الله صلى الله عليه وسلم قال: الشهداء خمسة: المطعون، والمبطون والمبطون والغيطون المنافق المن | | ٣٠- بَأَبِ: الشَّهَا دَةُ سَبُعٌ سِوَى الْقَتْلِ | |
| رجال الحديث رجال الحديث رجال الحديث رجال المعالى وسف: ٢٢٦ - عبدالله بن يوسف: ٢٢٠ - ابوصالح: ٢٢٠ - الله صلى الله عليه وسلم قال: الشهداء خمسة: البطعون، والمبطون، والغريق، والمبطون، والغريق، المهداء وبسيل الله: ٢٢٠ - الشهيد تعريف أو حديث باب ٢٢٠ - المشر بن محمد المهابقة المهدان المهد | 771 | باب مقصد: | رُ ترجمة ال |
| اً عبدالله بن يوسف المحكوم الله عليه وسلم قال الشهداء شمة البطعون والبطين والغريق المحكوم المحكوم الله عليه وسلم قال الشهداء شمة البطعون والبطين والغريق والمحلم الله عليه وسلم قال الشهداء شمة البطعون والبطين والغريق والمحلم الله عليه وسلم قال الشهداء شمة البطعون والبطين والغريق والمحلم الله المحكوم ا | | <u>د</u> | رحال الحد |
| ٢٠٠ مالك: - ابوصالح - ابوصالح - ابوصالح - ابوهريره التاتية - ابوصالح - ابوهريره التاتية - ابوصالح الله صلى الله عليه وسلم قال: الشهداء خمسة: البطعون، والبطون، والغريق، وصاحب الهدم والشهيد في سبيل الله: - د شهداؤ په تعداد كنبي تطبيق - ١٠ د رواياتو په مينځ كنبي تطبيق - ١٠ د د يف د ترجمة الباب سره مطابقت - ١٠ - بشر بن محمد - ١٠ - بشر بن محمد - ١٠ - عدالله عد | 771 | | |
| ٣٠ سعي ٣٠٢٢ | 777 | , | • |
| ابوصالح الموهري المنافي الله عليه وسلم قال: الشهداء خمسة: المطعون، والمبطون، والغريق، والمبطون، والمبطون، والمبطون، والمبطون، والغريق، وصاحب الهده والشهده في سبيل الله: دَ شهداؤ به تعداد كنبي اختلاف ٢٢٣ دُ شهداؤ به تعداد كنبي تطبيق ٢٢٣ دُ رواياتو به مينځ كنبي تطبيق ٢٢٣ د شهيد تعريف او حديث باب ٢٢٣ د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت ٢٢٣ د عبدالله ٢٢٣ د عبدالله ٢٢٢ د عبدالله ١٤٠٤ د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت ٢٢٢ د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت ٢٢٢ د عبد ثن ترجمة الباب سره مطابقت ٢٢١ د عبيل الله يأمّوا لهِمُواْلَفُسِيمُ ١٤٠٤ د ترجمة الباب مقصد ١٤٠٤ في سَبِيلِ اللّه يأمّوا لهِمُواْلُفُسِيمُ ١٤٠٤ د ترجمة الباب مقصد ١٤٠٤ في سَبِيلِ اللّه يأمّوا لهِمُواْلُفُسِيمُ ١٤٧٤ د ترجمة الباب مقصد ١٤٠٤ في سَبِيلِ اللّه يأمّوا لهِمُواْلُفُسِيمُ ١٤٧٤ د ترجمة الباب مقصد ١٤٠٤ في سَبِيلِ اللّه يأمّوا لهِمُواْلُفُسِيمُ ١٤٧٤ د الوالوليد ١٩٧٤ د الوالوليد ١٤٧٤ د الولوليد ١٤٧٤ د الوليد ١٤٧٤ د الوليد ١٤٧٤ د الوليد ١٤٧٤ د الولي الله والوليد ١٤٧٤ د الولي الوليد ١٤٧٤ د الوليد ١٤٧٤ د الوليد الوليد ١٤٨٤ د الوليد | 777 | | |
| ه ابوه ربره الأثاثية الله صلى الله عليه وسلم قال: الشهداء خمسة: البطعون، والبيطون، والغريق، وما حبالهده، والشهيد في سبيل الله: د شهداؤ په تعداد كښي اختلاف ٢٢٣ د شهداؤ په تعداد كښي تطبيق ٢٢٣ د روايا تو په مينځ كښي تطبيق ٢٢٣ د شهيد تعريف او حديث باب ٢٢٣ د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت ٢٢٣ د عبدالله ٢٢٠ ٢٢٠ ٢٢٠ ٢٢٠ ٢٢٠ ٢٢٠ ٢٢٠ ٢٢٠ ٢٢٠ ٢٢ | 777 | | = |
| قوله: أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: الشهداء خمسة: البطعون، والبطون، والغريق، وصاحب الهده موالشهيد في سبيل الله: دَ شهداؤ يه تعداد كنبي اختلاف ٢٢٢ دروايا توبه مينځ كنبي تطبيق ٢٢٣ د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت ٢٢٢ د بشر بن محمد ٢٢٠ - بشر بن محمد ٢٢٠ - عبد الله ٢٢٠ - عبد الله ٢٢٠ - عاصم ٢٢٠ - تاب ن مالك ٢٢٠ - تاب ن مالك الله عليه وسلم قال: الطاعون شمادة لكل مسلم: ٢٢٢ د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت ٢٢٠ - تاب: قُوْلِ اللَّهِ تَعَالَى لَا يَسْتَوِى الْقَاعِدُ وَنَ مِنْ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُأُولِي ٢٢٠ - تاب: قُوْلِ اللَّهِ تَعَالَى لَا يَسْتَوِى الْقَاعِدُ وَنَ مِنْ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُأُولِي ٢٢٠ - تاب: قُوْلِ اللَّهِ تَعَالَى لَا يَسْتَوِى الْقَاعِدُ وَنَ مِنْ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُأُولِي دَ ترجمة الباب مقصد د ترجمة الباب مقصد ٢٢٠ - أب الوليد | 777 | i. 🐷 | |
| و احب الهده، والشهيد في سبيل الله: دَ شهدا وَ يه تعداد كنبي اختلاف دَ روايا تويه مينځ كنبي تطبيق د شهيد تعريف او حديث باب د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت ٢٢٧ - بشر بن محمد ٢٢٧ - بشر بن محمد ٢٢٧ - عدالله ٢٢٠ - عاصم ٢٢٠ - تاب نمالك د حديث د ترجمة الباب سره مطابقال: الطاعون شهادة لكل مسلم د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت ٢٢٠ - باب: قُوْلِ اللَّه تَعَالَى لَا يَسْتَوِى الْقَاعِدُونَ مِنُ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِي د ترجمة الباب مقصد ٢٢٠ - باب الفرو وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِالْمُوالْمِدُ وَالْفُسِيمُ | ر يوالغرن ، | يرب عارب من . ا الله صلى الله عليه وسلم قبأل: الشيدراء خمسة: البطعور: ، والمعطور: | قولهن أن |
| دَ شهداؤ په تعداد کښې آختلاف د رواياتوپه مينځ کښې تطبيق د رواياتوپه مينځ کښې تطبيق د شهيدتعريف او حديث باب د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت ٢٢٢ - بدالله ٢٢٧ - عدالله ٢٢٧ - عدالله ٢٢٧ - عدالله ٢٢٧ - عدالله ٢٢٧ - عاصم ٢٢٠ - السبن مالك ٢٢٠ - السبن مالك ٢٢٧ - عاصم ٢٢٠ - تابن قال الله عليه وسلم قال الطاعون شمادة لكل مسلم: ٢٢٠ - تاب قال الله تعالى لايستوى القاعدون مِن النومينين غَيْراً ولي ٢٢٠ - ترجمة الباب سره مطابقت ٢٢٠ - ترجمة الباب سره مطابقت ٢٢٠ - ترجمة الباب سره مطابقت ٢٢٠ - ترجمة الباب مقصد ٢٢٠ - ترجمة الباب مقصد ٢٢٠ - ترجمة الباب مقصد | 777 | | |
| دَ رواياتوپه مينځ کښي تطبيق تطبيق د شهيدتعريف او حديث باب د د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت المحديد الله المحديد الله المحديد الله المحديد الله عليه وسلم قال الطاعون شمادة الكروالفي منايد الله الله عليه وسلم قال الطاعون شمادة الكروالفي منايد الله والموالي الكيا منايد الله والموالي الكيا منايد الله والموالي الكيا منايد الكيا والموالي | 777 | | |
| دَ شهيدتعريف آو حديث باب دحديث د ترجمة الباب سره مطابقت المحديث د ترجمة الباب سره مطابقت المحديث د ترجمة الباب سره مطابقت المحديث الم | 777 | | |
| د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت ۱۹ بشر بن محمد ۱۰ بشر بن محمد ۱۰ عدالله ۱۰ عدال الله عليه وسلم قال: الطاعون شهادة لكل مسلم: ۱۰ عدیث د ترجمة الباب سره مطابقت ۱۰ باب: قَوْلِ اللّهِ تَعَالَى لاَیستُوی الْقَاعِدُونَ مِنُ الْمُؤْمِنِینَ غَیْرُأُولِی ۱۲ باب: قَوْلِ اللّهِ تَعَالَى لاَیستُوی الْقَاعِدُونَ مِنُ الْمُؤْمِنِینَ غَیْرُأُولِی ۱۲ د ترجمة الباب مقصد ۱۲ د ابوالولید ۱۲ بابوالولید | 777 | | |
| رجال العديث المحدث الم | 774 | | |
| ۱- بشر بن محمد ٢٢٧ عبدالله الله عليه وسلم قال الطاعون شمادة لكل مسلم الله عنه أول الله و قال ال | ••••• | | |
| ٢٠٠ عاصم ٢٢٧ عاصل الله عليه وسلم قال: الطاعون شهادة لكل مسلم: ٢٢٧ دحديث د ترجمة الباب سره مطابقت ٢٢٠ عَنْ النَّهُ وَمِنِينَ غَيْراً ولي ٢٢٠ عَاب: قُولِ اللَّه تَعَالَى لَا يَسْتَوِى الْقَاعِدُونَ مِنْ النَّهُ وَمِنِينَ غَيْراً ولي ٢٢٠ الضَّرَ وَالنَّهُ عَالَى لَا يَسْبِيلِ اللَّه بِأَمُوا لِهِمُ وَانْفُسِهُمُ ٢٧٠ دَترجمة الباب مقصد ٢٢٠ دَترجمة الباب مقصد ٢٢٠ دَترجمة الباب مقصد ٢٢٠ دُترجمة الباب مقصد ١٤٠٠ دُترب دُ | ۲۲7 | | |
| ٣- عاصم الله عليه وسلم قال: الطاعون شهادة الكل مسلم: ٢٢٧ و النبى صلى الله عليه وسلم قال: الطاعون شهادة الكل مسلم: ٢٢٧ و النبى صلى الله عليه وسلم قال: الطاعون شهادة الكل مسلم: ٢٢٧ و حديث د ترجمة الباب سره مطابقت المناوي القاعد و النبي المناوي و ا | YYY | | |
| المعدن الله عليه وسلم قال: الطاعون شمادة لكل مسلم: الله عليه وسلم قال: الطاعون شمادة لكل مسلم: الله عليه وسلم قال: الطاعون شمادة لكل مسلم: المناب سره مطابقت المناب وراب قول الله وتعالى لايستوى القاعد وراب والمناب في المناب في المناب مقصد الضرو والمناب مقصد المناب مقصد المناب مقصد المناب مقصد المناب المقال المناب ال | ۲۲7 | | • |
| ٥-انس بن مالك | YYY | 1 | _ |
| قوله: عن النبي صلى الله عليه وسلم قال: الطاعون شمادة لكل مسلم: ١٢٧ . ١٢٧ . د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت . ٢٦٠ . بَاب: قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى لَا يَسْتَوِى الْقَاعِدُ ونَ مِنْ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُأُولِى ٢٠ . بَاب: قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى لَا يَسْتَوِى الْقَاعِدُ ونَ مِنْ اللَّهِ بِأَمُوا لِهِمُ وَالْفُهِمِ مُ ١٢٧ . دَ ترجمة الباب مقصد . ١٢٧ . د جال الحديث . ٢٧٧ . ابوالوليد . ٢٧٧ . ٢٧٠ . ابوالوليد . ٢٧٧ . ٢٧٠ . ابوالوليد . ٢٧٧ . ٢٧٠ . الموالوليد . ٢٧٧ . ١٩٠٠ . ١٩٠٠ . ١٩٠٠ . ١٩٠٧ . ١٩٠٨ . ١٩ | YYY | | |
| وله: عن النبي صلى الله عليه وسلم الله عليه وسلم الله عن النبي صلى الله عليه الله عنه الله عنه الله عنه الله عنه الله عنه الله أولي الله عنه الله الله عنه الله الله عنه الله الله عنه الله الله عنه الله الله الله الله الله الله الله ال | Y Y Y | | . • |
| ٢١- بَابُ: قَوْلُ اللَّهِ تَعَالَى لَا يَسْتَوِى الْقَاعِدُونَ مِنُ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُاولِي اللهِ بِأَمُوا لِمِمُ وَالْفُسِومُ السَّرِوَ الْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللّهِ بِأَمُوا لِمِمُ وَالْفُسِومُ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللّهِ بِأَمُوا لِمِمُ وَالْفُسِومُ وَالْمُحَاهِدُ وَمَا لِللّهِ بِأَمُوا لِمِمُ وَالْمُولِيدُ وَمَا لَا لَهُ مُوا لِمُعْمَلِ وَالْمُولِيدُ وَمَا لَا لَهُ مُوا لَمُ مُعَالِمُ الْمُعَالَى وَمَا لَمُعَالَى وَمَا لَا لَهُ مِنْ اللّهِ فَا الْمُعَالَى وَمَا لَمُعَالَى وَمَا لَا لَا لَهُ مِنْ اللّهُ فِي اللّهِ مِنْ اللّهُ فَيْ اللّهُ مُوا لِمُعْمَلُولُولِي اللّهُ مِنْ اللّهُ فَي اللّهُ مِنْ اللّهُ فَي اللّهِ مِنْ اللّهُ فِي اللّهِ مِنْ اللّهُ فَي اللّهُ مُنْ اللّهُ مُوا لَمُعْمَلُولُولُولُولُولُولُولُولُولُولُولُولُول | YYY | النبي صلى الله عليه وسلمرفان التفاقون المقاتبات | |
| الضَّرَرِوَالُهُجَاهِلُونَ فِي سِيلِ اللهِ إِمُواهِمُوانَّقِسِهُمُ ٢٧٪ مَا اللهِ إِمُواهِمُوانَّقِسِهُمُ دَ ترجمة الباب مقصد | ووا | د ترجمة الباب سره مطابقت التي التي المواقع الموقع مدرك خا | |
| الضَّرَرِوَالُهُجَاهِلُونَ فِي سِيلِ اللهِ إِمُواهِمُوانَّقِسِهُمُ ٢٧٪ مَا اللهِ إِمُواهِمُوانَّقِسِهُمُ دَ ترجمة الباب مقصد | بزاويس | بَاب:قُولِ اللَّهِ تَعَالَى لايستوِى القَّاعِدُ وَبِ مِن النَّوْمِينِيثِ عَا | í- ۳ 1 |
| د ترجمة الباب مقصدً : | | الضَّيُّ وَالْمُحَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِامْوَالْهِمْوَانْفُسِهُمْ | |
| رجال العديث | TTV | *************************************** | د ترحمة |
| ۱- ابوالوليد: | | * * | • |
| 1 7 | | | |
| | T T Y | | 4.4 |

| الجهادجلداول) | فہرست(کتاب | (Y £ / | | كشف البًا |
|---|--|---|--|----------------------|
| صفحه | | مضمون | | شميره |
| TTV | ••••• | | | <u>. ابواسحا</u> |
| YYV | | •••••• | ••••••••••••••••••••••••••••••••••••••• | ٤- البراء |
| وسلمزین: ۱۱۸ ۲۲۸ | ﴾ دعارسول الله صلى الله عليه | اعدون من المؤمنين | : لمانزلت ﴿لايستوى الق | قوله : يقول |
| YYA | 11 • 0 | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | ڪتف فڪتبہا: | قول ه: فجاءب |
| المرية: ١١٨ | عدون من المؤمنين غيرأولر | »،فنزلت﴿لايستوىالقــا | أابن امرمكتومرضرارته | ق ول ه: وشك |
| 779 | •••••• | | | رجال المد |
| 779 | *************************************** | | يزبن عبدالله: | |
| 779 | *************************************** | ••••••••••••••••••••••••••••••••••••••• | بن سعد بن الزهري: . | • |
| 779 | *************************************** | | | ۳- صالح بر |
| 779 | | | ب: إسعدالساعدي: | |
| 779 | ••••• | •••••••••• | , سعد صفاحدي ن الحكم:ن | |
| 779 | | | , - 1: | |
| لمت إلى جنبه، | ئى المسجد، فأقبلت حتي ج | ن الحكم جالساً ف | ال: رأيت مروان بر | رية . قوله: أنه ق |
| بخ خر ا | ئى الهسجد، فأقبلت حتى ج لله عليه وسلمرأملى علىال | ب رسول الله صلي ا | يدبن ثابت أخبره: أن | فأخبرناأن |
| بج س.ت. | , يارسوك الله، لواستطعت الحب | وهويملهاعلى افقال | فجاءةابر امرمكتوم | قوله:قال: |
| نده علی مخندی، | يسوله صلى الله عليه وسلمروفح | رالله تعالى على ر | ن رجلا أعمىٰ، فأنزل | قوله: وكأ |
| ٠٠٠٠ | | _فخذى،ثمرسرىعنه | ِحتى خفت أَن ترضَّر | فثقلتعل |
| TT1 | | آبقت: | رجمة الباب سره مط | د حدیث د ت |
| 111 | | | .10 ± | حل كلّمات |
| | لْدُالْقِتَالِ | ٣- بَأْب: الصَّبُرِعِنُ | ۲ | |
| YF1 | •••••••••••••••• | •••••• | ابمقصد:اب | دَ ترجمة الب |
| | | · | | |
| 1 T T | | | | |
| | | | | |
| | | | - I | 1 1 1 |
| • | | | - | |
| 777 | | ************************* | النصر:النصر: | ۵- سالم ابو |
| فأصبروا: ۲۳۲ | الله الأنظرة الله المنظرة الله الله الله الله الله الله الله الل | ے۔ بقت آتھ۔ ان رسوا | بن ابي اوفي ت <i>نافق</i> | ٢- عبدالله |
| TTT | ل الله تَنْظُمُ قَالَ: إذا القيتموهم | . ا. ذر بعه ده: | بداللهبن ابی اوقی د ماله . د ر کت د حصو | توله : ان ع |

قوله: والنبى صلى الله عليه وسلم يجيبهم ويقول:

يواشكال اودً هغي جواب:.......

١- ابوالوليد :١٠٠٠ ٢- شعبه:

۰۳- ابواسحاق:

۴- البراء:

رجال العديث

444

744

TTF

TT3

YYX

7 7 7 7

| ادجلداول) | مضمون مضمون مضمون مأم المالية | كشف البارى |
|---|--|---|
| صفحه | مضمون | شميره |
| واجه: ۲۵۹ | ليه وسلم لم يكرب يت الله الله ينة غيرييت أمسليم إلا على از | نوله: أن النبي صلى الله عا |
| 789 | | دخول نه مراد څه دی؟ |
| 789 | | دکثرت دخول علت او وج |
| 739 | ، عنها | حضرت ام سليم رضي الأ |
| ۲۲ | | قوله فقال: إنى أرحمها |
| ۲7 | | يواشكال اود هغى جواب |
| ۲7 | | يوسوال اود هغي جواب: |
| ۲۲ | | د علامه قرطبی برداند یو ت |
| ۲۲۱ | | د حديث د ترجمة الباب م |
| TY1 | و لطيفه توجيه: | دُ علامه ګنگوهي <i>تخاطهٔ</i> يو |
| | ٣٩- بَاَّب: التَّعَنُّطِ عِنْدَ الْقِتَالِ | |
| ۲۲۱ | | دُ تحنط معنی: |
| 777 | | د ترجمة الباب مقصد |
| 777 | | د حنوط په استعمال کښ |
| *************************************** | | رجال العديث |
| 777 | | ٠١٠ عبدالله بن عبدالوها |
| 777 | | ٢-خالدبن حارث |
| T7T | ······································ | ۳ د د د د د د د د د د د د د د د د د د د |
| 777 | ••••••••••••••••• | ۴- موسر بن انسر: |
| 1 / 1 | | ۵۔ انتہ ∹ |
| 1/1 | *************************************** | ۲- ثابت بين قيس : |
| 1 / 3 | *************************************** | أمر الله منات |
| 170 | | شهادت: |
| 110 | | يوه عجيبه واقعه |
| ''' | لمامة: | ق هل م: قال مذک بیم ال |
| * * * 7 * | | قوله: يمامه: |
| YYV | ثابت بن قیس، وقد حسرعن فخذیه: | قوله:قال:أتى أنس |
| Υ 7 Υ | | رانستر دې که نه؟ |
| T7A | واء م انجسك أن لاتحم عن | قولم مهررته عارفة أأ |
| 1 / / | | دأن الأقعي مندًا على |
| YYA | ب تحقيق | فعلم قال الذي ال |

| ي ۴۰ دجلاراول | كشف البار |
|--|-------------------|
| · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | شميره |
| هكذاعن وجوهناحتي نضارب القوم: | توله: فقال: |
| ناكنانفعل معررسول الله صلى الله عليه وسلم: | _ |
| | فقدالحديث |
| جمة الباب سره مطابقت: | _ |
| دعن ثابت عن أنس: | |
| | د مذكوره تعل |
| لية مقصد الله مقصد المعالم الم | دَ مذكوره تعل |
| و الطَّلِيعَةِ ٢٠ وَأَب: فَضُلِ الطَّلِيعَةِ | |
| ل: | د طليعة مطا |
| • | دَترجمة الباب |
| | رجال الحديث |
| | ۱- ابونعیم: |
| | .ر. ۲- سفیان: |
| • | ٣- محمد بن |
| 777 | ۴- جابر: |
| ال النبي صلى الله عليه وسلم: من يأتيني بخبر القوم؟ يوم الأحزاب: ٢٧٢ | قوله: قال: ق |
| يير: أنا، ثمرقال: من يأتيني بخبرالقوم؟قال الزبير: أنا: | |
| رخو ځل ترغیب ورکړو؟۲۷۲ | |
| ، يوځائ ورکړوکه مختّلفو ځايونوکښې؟:۲۷۳ | 1 = |
| خبر راوړلودپاره کوم صحابي تلې وو السيسيسيسيسيسيسيسيسيسيس | د بنوقريظه د |
| الله ترغیب اود نوروضحابه کرامو سکوت | |
| نبى صلى الله عليه وسلم: إن لكل نبى حوارياً، وحوارى الزبير: | |
| YY¥ | دَ حواري معنې |
| لَّاتُوْ ته دَ حواري وئيلووجه | حضرتزبير |
| عمة الباب سره مطابقت: | د حدیث د ترج |
| مة الباب سره مطابقت | |
| ، مقصد | دُ ترجمة الباب |
| | ر. رجال العديث |
| | |
| | |
| | ۱- صدقه: |

د حدیث د ترجمة آلباب سرة مطابقت فائده فائده باب: الْجِهَادُمَاضِ مَعَ الْبَرِّوَالْفَاجِر ۴۴

| ۲۸۹ | ابونعي | ١ |
|-----|--------|---|
| YA9 | | |
| | | |

| ادجلداول) | ۳۳ ه. فهرست(كتأب الجهــــــــــــــــــــــــــــــــــــ | ڪثفُ البَ أرى · |
|----------------|---|--|
| صفحه | مضبون | شميره |
| ۲۸۹ | | ۴ عروه البارقي |
| ۲۸۹ | | تنبيه |
| Y A 9 | | فائده |
| Y A 9 | اسره مطابقت: | د حدیث د ترجمة الباب |
| ۲۸۹ | صالح او نیك كیدل ضروری نه دی | |
| | ١- بَأَب: مَنُ احْتَبَسَ فَرَسًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ | ۵ |
| ۲۹٠ | | دُ ترجمة الباب مقصد: |
| 79 | ِرِبَاطِ الْخَيْلِ:رِبَاطِ الْخَيْلِ: | قوله لِقُولِهِ تُعَالَى وَمِنْ |
| | | رجال الحديث |
| 791 | | رب ی ۱- علی بن حفص: |
| 791 | | ي.ن ٢ ماين المبارك |
| 791 | | ۳- طلحه بن آبی سعید |
| 797 | | ۴- سعيدالمقبرى: |
| ۲۹۳ | *************************************** | ۵- ابوهریره:۵ |
| ۲9 ٣ | صلى الله عليه وسلم: من احتبس فرسًا في سبيل الله: . | |
| T9T | | د احتبس صرفي او ن |
| | | قوله: إيمانًا بالله: |
| | | • -• |
| | و فضائل: | |
| | | د حدیث فوائد: |
| 79 0 | ب سره مطابقت: | |
| | ۴۷ بَاب: اسْمِرالْفَرَسِ وَالْحِمَارِ | · · · · · · |
| ¥ | ۱۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰ | د ترجمهال اربم قصر |
| | | |
| | | |
| | | رج ان استایت ۱- محمل برای ک |
| 17/ | | م معتقد بن ہي بسر منظم سايين سايره ان |
| 17/ Y4Y | | ۳ اوجاز و |
| 1 1 7 Y A Y | | ۴- عبدالله |
| Y 4 Y | | ٥ ابوقتاده |
| Y 9 Y | | تنبيه |
| , , | | |

| صفحه | مضمون | شميره |
|------------|---|---------------|
| ۲۹7 | ب فرسًا يقال لها: الجرادة: | <u> </u> |
| ۲۹7 | | |
| Y 9 Y | ر يوم څه وو ؟ | |
| | . ترجمة الباب سره مطابقت | |
| ۲۹۷ | • | إجال الح |
| Y9V | ن عبدالله بن جعفر | |
| 797 | ن عيسين | |
| ۲۹۸ | عباس | |
| 79 | , بن سهل | |
| | بن سعد | ۵-سهل، |
| Y9A | : كان للنبى صلى الله عليه وسلم في حانطنا فرس يقال له: اللحيف: | |
| | ضبط او معنی | |
| 799 | أبوعبدالله: وقال بعضهم: اللخيف: | |
| ۲۹۹ | د ترجمة الباب سره مطابقت:د | د حدیث، |
| | | رجال الم |
| ۳۰۰ | ق بن ابراهیم: | ۱ - اسحا، |
| ٣٠٠ | ې بن آدم: | ۲- يحيي |
| ٣٠٠ | خوص:خوص: | ٣- ابوالا |
| ۲۰۱ | ربن رزيق: | قوله: عما |
| ۳۰۳ | ــحاق: | ۴- ابي ا، |
| ۳۰۳ | ن ر میمه ن: | ۵- عمّ و |
| ۳۰۳ | : | ۲- معاذ |
| ۳۰۳ | ل:كنت ردف النبي صلى الله عليه وسلم على حماريقال له: عفير: | قوله: قال |
| 4.4 | | Α . |
| ••••• | د ترجمه الباب سره مطابقت | رجال ال |
| ۳۰۵: | د بن بشارد بن بشار | ا - محما |
| 1 Y 🐸 | | 112 |
| ۳۰۵ | | ٣- شعبه |
| ۳۰۵ | | ۴- قتاد، |
| ۳۰۵ | ه | ۵- انس |
| وب: ۲۰۵ | [;ك]ر_فزع بالمدينة،فاستعارالنبي صلى الله عليه وسلم فرسالنا يقال له المندر | ندله: قا |
| ۳۰۵ | ال: ماراينامن فزع،وإن وجدناه لبعرا: | - توله: نق |
| ٣٠٧ | رد ترجمة الباب سره مطابقت | مر د دارش |

| صفحه | مضمون | شميره |
|-----------|---|-----------------------------|
| | ۴۷ بَاب:مَايُنْكَرُمِنْ شُؤُمِرالْفَرَسِ حمه مقصد | |
| ۳۰۲ | جمه مقصد | ٔ باب د تر |
| | <u> </u> | رجال الحد |
| ٣٠٧ | ان. | ۱ - ابواليم |
| ۳۰۷ | | • - |
| ۳۰۷ | | ۲- الزهري |
| ۳۰۷ | | ۴- سالم بر |
| ۳۰۷ | ، بن عمر رضي الله عنهما : | |
| ۳۰۷ | • | خبرنيسا |
| ۳۰۷ | ر: سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول: انم أالشؤم في ثلاثة: في الفوس. | توله: قال |
| | ديث | رجال الحد |
| ٣٠٨ | ، بن مسلمه: | ١- عبدالله |
| ٣٠٨ | | ۲- مالك:. |
| ٣٠٨ | | ٣- ابوحاز |
| ۳۰۸ | ن سعدالساعدي:ن | |
| إة والفرس | رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: ان كان في شئ ففي المر | قول ه: ان |
| ٣٠٨ | · | والمكن |
| T· A | دَ هغې جوابونه: | يوسوالِ او |
| ۳۱۰ | ې دريو څيزونو ذکر کولو وجه نام | |
| | زکور په دې دريو څيزونوکښې محصور دې؟ | ایا شؤم ما |
| | زينب بنت أمرسلمة عن امرسلمة أنها حدثت بهذه الثلاثة وزادت فيهن والسيف: - ترجمة الباب سره مطابقت: | _ |
| 711 | . ترجمة الباب سره مطابقت: | د حدیث د |
| 1 1 1 | ۴۸- بَاب: الْخَيْلُ لِثَلَاثَةٍ | سيه: |
| ٣١١ | لياب مقصد :لياب مقصد : | رُت جہ تا |
| | بب سطعت هیره دی در به قسمه نه کشی منحص دی ک | اد ترجمه آیا اسمنه |
| ٣١٣ | هم په دې دريو قسمونوکښې منحصر دی؟ | يا مسوت قولم مُقَدُّلُهُ |
| ۳۱۳ | . نى بى ۋەتىن ۋەچەن ۋەخورۇرىدى بىلىنىدىنى بىلىنىدىن بىلىنىدىنى بىلىنىدىن بىلىنىدىن بىلىنىدىن بىلىنىدىن بىلىنىدى | فائده |
| | • | رجال الم |
| ٣١۴ | ندیث | - • |
| ٣١۴ | , - | ٢- مالك |

| | ۳۹ فهرست(کتابال | البارى |
|-------------|--|---------------------------|
| صفحه | مضمون | 0 |
| F14 | | |
| ٣١۴ | ـــــــــــــــــــــــــــــــــــــ | ـ بن اسلم ـ ـ الـ ـ ال |
| ٣١۴ | | |
| ٣١۴ | الله صلى الله عليه وسلم قال: الخيل لثلاثة: | مریره ر <i>ی د</i> ۱ |
| 714 | | |
| m14 | سمونو په مينځ کښې د حضر وجه | ود دريود ث باب تر- |
| ٣١٥ | | ت ب ب روری نیروری فو |
| ٣١٧ | وعلى فيهاالاهنهالاية الجامعة الفاذة: | |
| ٣١٧ | الراب سره مطابقت | |
| | | ے د ترجہ |
| T17 | ۴۹: بَاب: مَنْ ضَرَبَ دَابَّةَ غَيْرِةٍ فِي الْغَزُو | . 11 |
| 1 1 1 | | مة الباب م م |
| T1V | · | الحديث ا |
| TIV | | ـلم عقيل |
| T1V | الناجى» | |
| T1V | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | ہنمنوس بربن عبد |
| TIV | فرتمعەفى بعضِ اسفارة–قال بوعقيل:لاادرىغزوةامرعمرة: | |
| T1V | غزوې وو که د عمرې؟: | |
| ۳۱۷ | د؟ | مه غه و ه و |
| ٣١٨ | قاء به احده کیده دلایا | ه ذات اله : |
| ۳۱۹ | ت پارلىلى ئىلىلىلىلىلىلىلىلىلىلىلىلىلىلىلىلىل | فالجاب |
| ۳۱۹ | | ك معنى: |
| ۳۱۹ | | ، معنى |
| ۳۱۹ | | |
| ٣١٩ | ـة الباب سره مطابقت | .ث د ترج ه |
| ٣١٩ | | ••••••• |
| | مة الباب سره مطابقت - بَاب: الرُّكُوبِ عَلَى الدَّابَّةِ الصَّعْبَةِ وَالْفُحُولَةِ مِنُ الْخَيْرِا | ۵. |
| ٣٢٠ | | |
| r r1 | و علامه مخنگوهي ررحمهما الله رائي | مدعيني |
| ٣٢١ | الحديث رائي: كدبن سعد: كان السلف يستحبون الفحولة لانها اجرى واجسر: | ۔ ۔۔ ٹشیخ |

راجح شمير څه دي؟:.....

دَ ترجّيح وجوهات:

| ست(كتـأبالجهـأدجلداول | W/V | كشف البارى |
|------------------------|--|----------------------------|
| صفحة | مضمون | شميره |
| ۳۰ | | جمهورود دلاتلوجوابور |
| ٣١ | ن جواب | خضرت ابورهم د حدیث |
| ٣٢ | للخيل،والبراذين منها،لقوله: | نوله: وقال مالك: يسهم |
| | | ختلاف نسخ |
| Υ | | . مذكوره تعليق تخريج |
| Υ | | : براذین او هجین معنی |
| ۲ | | : آیت مبارك مقصد: |
| | •••••••••••••••••••••••••••••• | يَ مذكوره تعليق مقصد |
| Υ | *************************************** | دَ جمهورو دلائل |
| ٣ | ل او د هغې جوابونه: | دُ امام احمد او ليث دلار |
| ۴ | فرس:فرس | قوله: ولايسم لاكثرمن |
| . | ••••• | دَ جمهورودلانل |
| | ىغى جوابونە: | دُ دوئم فريق دلانل او د ه |
| ب | مَّى بَابِ: مَنْ قَادَدَابَّةً غَيْرِةٍ فِي الْحَرُّهِ ٥٢- بَابِ: مَنْ قَادَدَابَّةً غَيْرِةٍ فِي الْحَرُّه | |
| Υ | | دَباب دَ ترجمي مقصد : . |
| •••••• | | رجال الحديث |
| ٧ | | ۱ - قتیبه: |
| | | |
| | | ٣- شعبه: |
| ۹ | | ۴- ابي اسحاق۳ |
| | | |
| | ن عـازبرضي الله عنه: | |
| | اللهصلى اللهعليه وسلم يوم حنين ؟: | |
| ٩ | الله صلى الله عليه وسلم لم يفرّ: | قوله: ق ال لکن رسول |
| | ىنىڭ نەتىختەممكن نەدە | |
| بأنهزموا، فأقبل المسلم | نواقوما رماة وانما لما لقيناهم حملنا عليهمرف | |
| • | السهام: | على الغنائم، واستقبلوناً ب |
| | لى الله عليه وسلم فلم يفر: | قوله: فأمارسول الله ص |
| ١ | بغلته البيضاء: | قولم: فلقدرايته،وانه لعلر |
| ٠, | نبلجامها: | |
| | ، | |



| صفحه | مضمون | شميره |
|------------|--|-------------------------|
| | | رجال العد |
| TOY | ، بن محمد | ۱- عبدالله |
| 707 | | ۲- معاویه |
| 707 | عاق | ۳- ابواسح |
| TOV | بن عقبه : | ۴. موسى |
| TOV | | ۵ - نافع |
| TOV | ر:ر | ۲- ابن عم |
| TOV | | تنبيه |
| 737 | ••••••••••••••••••••••••••••••••••••••• | فائده: |
| | ٥٩- بَأَب: نَاقَةِ النَّبِيّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ | |
| TOV | المرقص المنافية المنا | دُ ترجمة ال |
| TOV | ابُنُ عُمَرَأُرُدَفَ النَّبِيُّ صَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أُسَامَةً عَلَمَ الْقَصْوَاءِ: | قول ە:قَالَ |
| T3V | بِ بِ الْمُنْ عُمْرَأَ رُدَفَ النَّبِيُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أُسَامَةَ عَلَى الْقَصُوَاءِ: الْمِسُورُقَالَ النَّبِيُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا خَلَاثُ الْقَصُواءُ: إِذِهِ تعليقاتُه تِنْ بِهِ: | تو ل ه: وَقَـالَ |
| 70V | ارو تعليقاتو تخريج | ۔ دیورتنودو |
| TOA | ليقاتو ذكركولومقصد: | |
| ۲۵۸ | | باب سره م |
| **** | | رجال الحا |
| TOA | | ١- عبدالله |
| ۳۵۸ | : | ۲- معاوي |
| TON | حاق: | ۳- ابواسه |
| ۳۵۸ | | ۴- حمید: |
| ۳۵۸ | •••••• | ۵- انس: . |
| | ديثد | رجال الح |
| | بن اسماعيل:بن اسماعيل: | |
| ۳۵۹ | •••••• | ۲- زهیر: |
| ۳۵۹ | _:كأن للنبى صلى الله عليه وسلم نأقة تسمى العضباء لاتسبق: | قوله:قا ل |
| ۳۵۹ | حميد:اولاتكأدتسبق:حميد: | قوله:ق ال |
| ۳۵۹ | راعرابي على قعود، فسبقُها: | قوله: فجاء |
| ٣٧٠ | معنی:معنی: | د 'قعود'، |
| ۳۲۰ | معنى دلك على المسلمين، حتى عرفه: | قوله :فشق |
| ۳۲۰ | ك:حق على الله ان لاير تفع شئ من الدنيا الاوضعه: | قوله: فقا ا |

| صفحة | ميره مضمون |
|-------------|--|
| | ٢١. بَأْب: جِهَادِ النِّسَاءِ |
| ۳۲۷ | رجمة الباب مقصد: |
| | ال العديث |
| TYV | محمد بن كثير |
| | سفيان |
| ٣٢٨ | معاويه بن اسحاق |
| ٣ 79 | عائشه بنت طلحه |
| ٣٢٩ | عائشه: |
| T74 | ه: قالت: استاذنت النبي صلى الله عليه وسلم في الجهاد، فقال: جهادكن الحجز: |
| T79 | مخودپاره جهاد واجب نه دی: |
| ٣٢٩ | مځودَپاره حج دَ جهاد نه ولي افضل دي؟ |
| ۳۷٠ | a: وقال عبدالله بن الوليد: حدثنا سفيان عن معاوية بهذا: |
| | ه: حدثناقبيصةحدثناسفيانعن معاوية بهذا: |
| | ال الحديث |
| ٣٧٠ | قىيصە |
| ۳۷٠ | سفيان: |
| ۲۷٠ | معاویه: |
| | حبيب بن ابي عمره: |
| ٣٧٠ | عائشه بنت طَلحه: |
| ۲۷۰ | عائشه: |
| ۳۷۱ | ذکوره تعلیق تخریج: ندیث د ترجمهٔ الباب سره مطابقت: |
| ۳۷۱ | ىدىث د تا حمة الباب سا ه مطابقت: |
| | ويون ربط مبالم المرابط |
| ۳۷۱ | رجمة الباب مقصد: |
| 4 | ال الحديث |
| ۳۷۱ | عبدالله بن محمد: |
| | معاویه بن عمرو |
| 477 | -1 1 1 |
| ۳۷۲ | ابواسعاق عبدالله بن عبدالرحمن الاتصاري |
| ۳۷۲ | المصورة المتارين الما |
| TVY | م: قـال: قـال نـــُل: فتزوجت عبـادة بن الصـامت فركبت البحرمع بنت قرظة: |

TV9

نوله: تنقزان القرب: ...

٢- بشرين المفضل:٢- بشرين المفضل: ٣٨٩٢ خالدىن ذكوان قوله: قالت: كنامع النبي صلى الله عليه وسلم نسقى، ونداوى الجرحي ونرد القتلى إلى : ... ٣٨٩

| دوم مدینه نه څه مراددې ؟ | صفح |
|---|-------------------|
| | V |
| a اذاسمعنا صوت سلاح، فقال: من هذا؟ فقال: اناسعد بن ابي وقـاص جئت ل | أص جئت لاحرسك ف |
| ى صلى الله عليه وسلم: | V |
| سوال اودَ هغي جوابونه | ۸ |
| بي اكرم كالظم محافظين صحابه كرام | ۸ |
| دیث نه مستنبط فائدی | ٩ |
| عدیث دَ باب دَ ترجمه سره مطابقت | ٩ |
| ال العديثا | |
| يحيي بن يوسف | • |
| ابويگر: | ١ |
| ابوحصين: | \ |
| ابوصالح: | \ |
| ٠٠٠٠ بي ترييره بن ح | \ |
| له: عن النبي صلى الله عليه وسلم قال: تعس عبدالديناً روالدرهم والقطيفة و | |
| طي رضي،وإن لمربعط لمربوض: | \ |
| له: قَـالَ أَبِوعِبِدالله: لمريرفعه إسرائيل وهجبدين جحـادةعن أبي حصين: | |
| پورتنی عبارت مطلب | · Y |
| جح موقوف دې که مرفوع؟: | |
| ب ال الحديث - عمرو: | · Y |
| . عدا حدد عدالله عددا | ٠ ٢ |
| - ار. ه | ٠٣ |
| - عمرو - عبدالرحمن بن عبدالله بن دينار - ابيه - ابوصالح - ابوهريره اللائن | ۰۳ |
| بو حاص - اب ها د د کافت | ٠٣ |
| بو تريره هاو المستسببين. إله: عن النبي صلى الله عليه وسلم قال: تعس عبدالديناً روعبدالدرهم وعبدالخميم | موعبدالخبيصة: ٣٠٠ |
| دې څيزونود غلامنۍ مطلبدې څيزونود غلامنۍ مطلب | ٠٣ |
| دې خيرونود خارمني مسبب له:إن أعطى رضى،وإن لم يعط سخط: | |
| | · ۴ |
| | . ۴ |
| انتكس صرفى اولغوى تحقيق إله: طوبي لعبد آخذ بعنان فرسه في سبيل الله أشعث رأسه مغبرةً قدماة: 'أشعث رأسه' اعراب: | ٠۵ |

سمع أبا النضر

قوله: قال: حدثنم أمرحرام أن النبي صلى الله عليه وسلم قال يوما في بيتها: ٢٢٧

٥- انس بن مالك

FYY

| دجلداول) | | كثف الب |
|--------------|---|--------------------------|
| صفحه | مضمون | شميره |
| ۴۲7 | | تنبيه |
| ۴ ۲7 | . ترجمة الباب سره مطابقت | د حدیث د |
| 417 | رَجِهُ البَّابِ الرَّبِهِ البَّنِيِّ السَّعَانَ بِالضَّعَفَاءِ وَالصَّالِحِينَ فِي الْحَرُبِ ٧٥- بَابِ: مَنُ اسْتَعَانَ بِالضَّعَفَاءِ وَالصَّالِحِينَ فِي الْحَرُبِ | |
| 44V | باب مقصد: | |
| 477 | تعلیق تخریج تعلیق مقصد او ترجمة الباب سره مناسبت | |
| | | |
| ۴۲۸ | | _ |
| ۴ ۲۸ | ن بن حرب بن طلحه: | = |
| ۴۲۸ | | |
| ۴۲۸ | ب بن سعد: | |
| ۴۲۸ | ب بن سعد. _:رأىسعدرضى الله عنه أن له فضلاعلى من دونه: | |
| 479 | ه رسل دې که متصل؟ | دا. ماست |
| 449 | ان ما الله عليه وسام: ها تنصور، وترزقون الابضعفائكم: | دا روایت |
| 449 | _ النبى صلي الله عليه وسلم: هل تنصرون وترزقون إلا بضعفائكم: دَ اللهُ تعالى دَ نصرت سبب دى: | سويده. فعان معدة فاند |
| ۴۳ | د الله تعالى و تصرف شبب دى كښې تواضع اود كبرنه بچ كيدلوترغيب | |
| ۴۳ | عبعي تو تام وه يې يا دو يا . باب کښې د فضل نه څه مراد دې؟: | پە دەيت بەجدىث |
| 471 | . ترجمة الباب سره مطابقت | |
| ······ | | رجال الح |
| 471 | له بن محمد : | ١- عبدانا |
| F11 | | ۲- سفيار |
| 441 | ••••••••••••••••••••••••••••••••••••••• | ٣- عمرو: |
| | | |
| ا | يدالخدري: | ۵- ابوسع |
| ريسمر ۴۳۲ | النبي صلى الله عليه وسلمرفاك: ياني زمان يعزوف فرمن العالم فيعاد | قوله :عن |
| 447 | يدالخدري النبى صلى الله عليه وسلمرقال: يأتى زمان يغزوف أمرمن الناس فيقا بالنبى صلى الله عليه وسلم؟ فيقال: نعم: يعنى | من صعب |
| م؟فيقال: | بعنى | د فنام م |
| 111 | | : : |
| عليه وسلم؟ | ر | تعمرانيسه قدلم ثم ر |
| ۴۳۳ | باری رفت | فيقال: |
| 477 | د ترجمة الباب سره مطابقت | دحدث |

| ادجلداول) | ر ۴ م فهرست (کتاب الجها | كشف البارى |
|------------------|---|----------------------------------|
| صفحه | مضبون | شميره |
| 444 | ماعيل | ۲- حاتم بن اس |
| 44T | عبيد | ۲- يزيد بن ابي |
| ۴۴۳ | کوع:کوع: | ۴- سلمة بن الأ |
| ۴۴۳ | رالنبي صلى الله عليه وسلم على نفر من أسلم ينتضلون: | فوله: قال: ه |
| , رامياً ارموا | ىرالنبى صلى الله عليه وسلم على نفر من أسلم ينتضلون: نبى صلى الله عليه وسلم: ارموابنى إسماعيل فإن أباكم كان | ن ول ه: فقال ال |
| 444 | | وأنامع بنى فلار |
| kkh | | بني فلان نه څو |
| kkk | 1 | ۔ حضرت محجز |
| ر: مالڪم | مسك أحد الفريقين بأيديهم، فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم | |
| kkk | | لاترمون؟قالو |
| 440 | - | جواب ورکونک |
| 440 | بى صلى الله عليه وسلم: ارموا فأنامعكم كلكم: | |
| 449 | | يواشكال اودَ ه |
| 440 | مة الباب سره مطابقت: | |
| 449 | | ۔ دَ حدیث نه مس |
| ********* | ······································ | رجال الحديث |
| 447 | | ۱- ابونعیم: |
| 444 | ن بن الغسيل: | |
| 44V | ي اسيد: | ٣- حمزه بن ابي |
| 44A | | |
| لِمُوالَناً: إذا | قـَال النبي صلى الله عليه وسلم يوم بدر حين صففنـاً لقريش، وص | بُول ه: قال: ا |
| 44V | يكم بألنبل: | أكثبوكمرفعا |
| 44V | مة الباب سره مطابقت: | د حدیث د ترج |
| የ ۴ለ | د دی؟ | رمى نەخەمرا |
| ۴ ۴۸ | ول فرض دی: | نوي وسله جور |
| ۴۴٩ | دل غوره دی که غشی ورول | پداسونو سوري |
| | يُدَلَّ غُورهُ دى كه غشى ورول | |
| 449 | مقصد: | |
| | | رجال العديث |
| 40 | موسي: | ربور ب <u>ست</u> ۱- اراهیم بن |
| 40 | | |

| · | كشفُ البّاري ع ٥ فهرست (كتاب الجها |
|-----------|---|
| صفحه | شميره مضمون |
| 40 | ۴- معمر: |
| 40· | ۵- زهری |
| 40 · | ۲- ابن الْمسيب: |
| ۴۵٠ | ٧- ابوهريره كانت |
| فأهوى الى | ٧- ابوهريره كَانْتُوْ قوله: قال: بيناالحبشة يلعبون عتدالنبي صلى الله عليه وسلم بحرابهم دخل عمر، ف الحصى فحصبهم بها: |
| 401 | الحصى فحصبهم بها: |
| 431 | قوله: فقال: دعهم يأعمر: |
| FD1 | يواشكال او دُ هغي جوابونه: |
| F37 | قوله: زادعلى: حدثناً عبد الرزاق أخبرنا معمر: في المسجد: |
| 434 | د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت: |
| 407 | دَ علامه عيني او حافظ صاحب تسامح: |
| FDY | تنبيه: |
| | ٧٩- بَاب: الْمِجَنِّ وَمَنْ يَتَتَرِسُ بِتُرْسِ صَاحِبِهِ دَةِ حِيدًا اللهِ مِنْ قَدِيدِ |
| 404 | دَترجمة الباب مقصد: |
| 404 | ر و |
| | رجال الحديث |
| 404 | ١- احمد بن محمد: |
| FOT | ٢- عبدالله: |
| 404 | ٣- الأوزاعي: |
| 404 | ٤- اسحاق بن عبدالله بن ابي طلحه: |
| 404 | ۵-انس بن مالك: |
| . أبوطلحة | قوله: قَالَ: كَانِ أَبُوطِلْحَةُ يَتْتَرَسِ مَعَ النبي صلى الله عليه وسلم بترس واحد، وكار |
| | حس الرمى فكأن إذارمي يشرف النبي صلى الله عليه وسلم فينظر إلى موضع نبله: |
| 404 | د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت: |
| | رجال الحديث |
| 400 | ۱- سعيد بن عفير: |
| 400 | ٢- يعقوب بن عبدالرحمن: |
| 400 | ۳- ابوحازم: |
| 400 | ۳- بيو درم ۴- سهل: |
| | توله:قال:لهاكسرتبيضةالنبي صلى الله عليه وسلم |
| | د رسول الله په محستاخانو باندې د الله عذاب |
| | د رسون الله په صفف فخو به دون |

| صفحه | مضمون | شميره |
|-------------|--|-----------------------|
| ξ ΔΥ | | |
| 407 | ن عبداللهن | ۱. علی ب |
| 40V | *** | ں اھمەتن |
| 40V | | |
| 401 | | ۳- عمرو: عدم م |
| 491 | بن اوس بن الحدثان: | ۲- رهري ۸- مالان |
| 491 | بن اوس بن العامل المستقدمة المستقدمة المستقدمة المستقدمة المستقدمة المستقدمة المستقدمة المستقدمة المستقدمة الم المراجعة المستقدمة ا | ں۔ مانت لاء عمد کا |
| 497 | رح ن-کانتأموال بنی النضیر: | |
| 491 | | توب ه: |
| 491 | د ترجمة الباب سره مطابقت:د | ىبىس د جدىث |
| | | . 11 11. |
| 40A | ······································ | ۱- قبيص |
| 401 | ن | ۲- سفیار |
| 494 | ن ابراهیم بن ابراهیم | |
| 409 | لله بن شداً د | ۵- عبدال |
| 409 | رور ثناقبيصةحداثناسفيان: | |
| 409 | ت بیندا قرات های است. رنعیم او مذکوره سند: | |
| 489 | د ترجمة الباب سره مطابقت: | دجديث |
| | ٨٠- بَاب: الدَّرَق | _ |
| ۴Y ۰ | لباب مقصد: | دُترجمة ا |
| ••••• | | رحاً ال |
| ۳7۱ دعر | عيل: | ۱- اسما |
| 47 \ | هب: | ۲- ابن و ۳ |
| | ر : | |
| | | |
| 477 | | ۲- عانیهٔ |
| ۴ 77 | لت: دخل على رسول الله صلى الله عليه وسلم: | _ |
| 477 | | ِ تنبيه: |
| 477 | ال أحمد: فلمَّاغفل: | نوله: ف |

| 1000 | | |
|---|---|-------------------------------|
| صفحه | | شميرة |
| ۴۷٠ | قاری بخالات ارشاد | دملاعلى |
| ۴۷۲ | می سره زر استعمالول او حدیث باب | په توره کښ |
| | سى سرە زر استعمالول او حديث باب | • |
| 477 | باب مقصد : | ذت حمة ال |
| | | |
| 474 | | رجال الد ١- ابواليم |
| ۴۷۳ | | , |
| 474 | · · | ۲- شعیب ۳- النجام |
| 474 | • | ۳- الزهري ع |
| 4 /4 | ن ابي سنان الدؤلي: | |
| 444 | · · | |
| 474 | ن عبدالله رضي الله عنهما: | ، جابربر |
| 4 /4 | نَأَنه غزامع رسولُ الله صلى الله عليه وسلم قبل نجد فلماً قفل | فويه: اخبرا |
| 474 | ال در ۱۰۰ ما | نبيه: |
| 440 | اب نه مستنبط فائدي: | |
| | ؛ ترجمة الباب سره مطابقت: | د حدیث |
| ۴۷۵ | باب مقصد:باب مقصد: | 11 T. ~ TS |
| | | |
| 477 | | رجال الم |
| | له بن مسلمه: | ۱-عبدال |
| 444 | عریر : | ۱- عبدال |
| ۴ ٧٧ | | ۱-۱بیه:. ۴. ما |
| TY/ | | • - |
| ۴۷۲ | د تے۔ تال ار یہ مطابقت: | د جدرت |
| | د ترجمه الباب المربير عند المربير الم | |
| ۴ ۷7 | 1 1 | 11 |
| ۴۷۷ | لباب مقصد: پی گذاکوهی مختلط رائب: | د ترجمه ا د حضه ت |
| • | | رحال ال |
| ۴۷۸ | عباس: | ۱۰ غمرو |
| TYA | لرحون:ل | ۲- عبدا |
| ۳۷۸ | ن:ن | ٣- سفيا |

| صَفحه | مضمون | شميره |
|-----------------|--|----------------------|
| የ ለን | تعليق دلته د ذكركولو مقصد | مذكوره |
| ••••• | | حال الم |
| ۴۸۷ | بن المثنى | ۱ - محمد |
| ۴۸۷ | رهاب | ۲- عبدالو |
| ۴۸۷ | | ٢- خالد |
| ۴۸۷ | ······································ | ۲- عکرم |
| | ا بي : | |
| ۴۸۷ | ر حملا | دُ حدیث ت |
| | ر. ه مستنبط فائدی: | |
| ۴۸۸ | كوهيب:حدثناً خالديوم يدر: | |
| ۴۸۸ | وقيه من المنازية المن | بود . د مذکه، د |
| ۴۸۸ | - بى حبى ، تعليق مقصد | |
| ۴۸۹ | دَ صحابو دَ مراسيلو نه دي: | دا حدیث دا حدیث |
| ۴۸۹ | د ترجمة الباب سره مطابقت | |
| ••••• | | رجال الد رجال الد |
| 44 | . بن كثير: | |
| F4 | •. | ۲- سفيار |
| ۴۹٠ | ئ ئىن: | ٣- الاعما |
| 1 7 | <u>ي</u> | ۴- اراهہ |
| 44 | | ۵- الأسوة |
| ۳۹۰ | · | ۲- عائث |
| 491 | کرشوو دواړو تعلیقاتو تخریج:کرشوو دواړو تعلیقاتو تخریج: | دَيورته ذَ |
| 171 | وا قاتہ ذکہ کہ اُن مقصد: | لأدمال مات |
| ۳۹۱ | د ترجمة الباب سره مطابقت: | د حدیث |
| | | |
| F71 | ي بن اسماعيل: | ۱- موسی |
| | ********* | |
| 1 1 1 | | ۳. ا. ۱ |
| 1 11 | *************************************** | . 1 16 |
| F71 | يره: | ۵- ابوهر |
| 1 71 | محملات ممالقت | د حدیث |
| | ر ترجمه الباب سره مطابعت السندية السندية السندية المارية المارية المارية المارية المارية المارية المارية الماري ٨٩- بَاب: الْجُبَّةِ فِي السَّفَرِ وَالْحَرُبِ | |
| 497 | الياب مقصد | رت حمة |

| _ | لبًاري ۲۲ فهرست (کتاب الجها | كشف |
|--------------|---|------------------|
| 0000 | | |
| صفحه | مضمون | شميره |
| 3.7 | ، يزيد بن معاويه باندې لعنت كولو حكم | <u>بەخلىفە</u> |
| ۵۰۸ | فلاصهفلاصه | • |
| ۵۰۸ | - 19 | • |
| | ، د ترجمة الباب سره مطابقت: | - |
| ۹۰ | الباب مقصدالباب مقصد | د ترجمة |
| | | رجال ال |
| 3.9 | ـــــــــــــــــــــــــــــــــــــ | • |
| ٥٠٩ | _ | ٢- مالك |
| 31 | | ٣- نافع |
| 31 | الله بن عمر رضى الله عنهما | |
| 31 | الله صلى الله عليه وسلم قال: تقاتلون البهود: | قولہ :أر |
| ۵۱۰ | ى رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: تقاتلون اليهود: في يختبئ أحده هم وراء الحجر فيقول: ياعبد الله، هذا يهودى ورائى فاقتله: | توله:حت |
| ۵۱۱ | ر دينا مطلب | د کانری |
| 311 | د ترجمة الباب سره مطابقت: | |
| ۵۱۱ | ن باب يو خصوصيت | - |
| ************ | | رجال ا |
| 317 | عاق بن ابراهيم: | - |
| DIY | ······································ | |
| ۵۱۲ | ارة بن القعقاع: | ۳- عما |
| ۵۱۲ | رعه َ | ۴- ابوز |
| ۵۱۲ | | ۵- ابود |
| ۵۱۲ | ن رسول الله صلى الله عليه وسلم قبال: لا تقوم الساعة: | ق وله :عر |
| ۵۱۳ | ه دَ عیسی علیه السلام دُ نازلیدوپورې باقی وي: | اسلام |
| | ث د ترجمة الباب سره مطابقت | |
| | ٩۴- بَأْب:قِتَـالِ التَّرُكِ | |
| 814 | ة الياب مقصد : | دَ ترجم |
| ۵۱۳ | انو د نسل باره کښي تحقيق | |
| | العديثا | |
| 614 | لنعمان | . • |
| 914 | بر بن حازم | •• |
| 914 | نن ن : | |
| 914 | | |

| مفحه | مضمون | شميره |
|--|--|----------------------|
| أينتعلون | .: قبال النبي صلى الله عليه وسلم: إن من أشراط الساعة أن تقياً تلوا قوم | نوله: قال |
| ۵۱۴ | | تعالالشه |
| ۵۱۵ | ئېلى اچولومطلب | ويښتو ځ |
| ۵۱۵ | مَنَّ أَشْرَاطُ السَّاعَةُ أَن تَقَاتُلُوا قُومًا عَراضِ الوجوة، كأن وجوهه مرالمجان: | نوله: وإن |
| ۵۱۵ | المطرقة معنى: | |
| ۵۱۵ | كوم څيز كښې ده؟ | شبيه په ک |
| ۵۱۲ | ترجمة الباب سره مطابقت | |
| ••••• | | رجال العا |
| ۵۱۲ | بن محمد: | ١-سعيد |
| 3 17 | : | ۲- يعقوب |
| 5 \V | | ۳- ابی: |
| ٥١٨ | | ۴- صألح: |
| ٥١٨ | ······································ | ٥- الاعرج |
| ۵۱۸ | | ۲- ابوهري |
| اعةحتى. | _ أبوهريرة رضى الله عنه: قـال رسول الله صلى الله عليه وسلم: لا تقوم ال | قوله: قـ ال |
| ٥١٨ | لِ صَعْار الأَعِين، حمر الوجوة، ذلف الأنوف، كأن وجوههم المجان المطرقة: | تقاتلواالتر |
| ۵۱۸ | أنوف تحقيق | |
| ۵۱۸ | قوم الساعة حتى تقاتلوا قومًا نعا لهم الشعر: | ق وله : ولاتة |
| ۵۱۹ | کښې ذکرشوي صفات د کوم قوم دي؟ | |
| | رمى اودً هغه فرقه: | بابك الخر |
| ۵۲۰ | د ترجمة الباب سره مطابقت | دِ حدیث، |
| ٠٠٠ | نعلق احادیثوباره کښې یو وضاحت نعلق احادیثوباره کښې یو رضاحت | د ترکو مة |
| | عنی معامیہ وہ ۹۵- بَاب: قِتَـالِ الَّذِينَ ٰ يَنْتَعِلُونَ الشَّعَرَ | |
| ۵۲۰ | لباب مقصد | دُ ترجمة ا |
| ************* | <u></u> | رجال الد |
| 5 77 | ئەيت ىن عبداللە | ۱ - علي ب |
| 217 | | ۲- سفيا، |
| AYY | | ۳ زهري م |
| AYY | المسيب | ۴- سعید |
| ΔΥΥ | ريره: | ۵- ابي ۵ د |
| 5 77 | حـر. د ترجمة الباب سره مطابقت | د حدیب |
| - · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | ه عبار ب مقصد | د مد به ر |

| ، (كتاب الجهاد جلداول | ه ۲ فهرست | كشف البارى |
|-----------------------|--|---|
| صفحه | مضمون | شميره |
| ۵۳۱ | | ۳ ابن ذکوان |
| ۵۳۱ | | ۴ الاعرج۴ |
| 351 | | ۵ ابوهریره۵ |
| 351 | · | دُ حديث ترجمه |
| ۵۳۱ | ، سره مطابقت | د حديث د ترجمة الباب ر حال العديث |
| 377 | | ١ احمد بن محمد |
| 377 | | ٢ عبدالله |
| 344 | الدا | ٣ اسماعيل بن ابي خا |
| 377 | دانش بر رقاعهٔ | ۴ عبدالله بن ابي او في |
| ين: | اللهصلي اللهعليه وسلم يوم الأحزاب على المشرك | |
| 3 77 | رالكتاب،سريع الحساب: | |
| 377 | | قوله: اللهم اهزم الأحزاب: |
| 377 | | دِ حدیث د ترجمة الباب |
| 377 | عاكښې يو حكمت | د نبی اکرم ترکی په بدد. |
| 57° | | رجال الحديث |
| 07f | | ا عبدالله بن ابي شيب |
| 57 | | ۲ جعفر بن عون |
| ۵۳۴ | | ٣- سفيان |
| 57F | | ۴ ابواسحاق ۸ م |
| ٥٢٥ | | - 2- عمروبن ميمون - ٢- عبدالله |
| ٥٢٥: | ببي صلى الله عليه وسلم يصلى في ظل الكعبة: | |
| 878 | يناس من قريش، ونحرت جزور بناحية مكة: | قوله:فقال:أبوجهل، |
| ۵۳۲ | سلاها: | موله: فأرسلوا فجياً وامن م |
| ۵۳۲ | نەرأىتەرفى قلىببەرقتلى: | توله: قال عبدالله: فلا |
| ۵۳۲ | : ونَسيت السابع: | قولاه:قال أبوأسحاق |
| ۵۳۲ | ـدد | د پورتنی عبارت مقص |
| | »: قال يوسف بن إسحاق عن أبي إسحاق: أه | |
| ۵۳۷ | ىيح: أمية: | شعبة:أميةأوأبي،والص |
| ۵۳۷ | سد | د ذکرشوی تعلّیق مقع |
| 5 77 | | دُ دول م تعل قاتم تحق |

| ت(كتـأبالجهـادجلداول) | م ۲۹ | كشف الباري |
|-----------------------|---|----------------------------------|
| صفحه | مضمون | شميره |
| ۵۳۸ | ـ ومصانفت | و حدیث و ترجمة الباپ |
| 5°7 | | فائده |
| ۵۳۸ | | ر جال المديث ١ - ا ا ا |
| ۵۳۸ | | ۱ - سلیمان بن حرب: ۲ ـ ح. اد: |
| ۵۳۸ | *************************************** | ٣. ا |
| 349 | | ۴ این ایہ ملیکہ: |
| ۵۳۹ | : | ۵- عائشه رضي الله عنه |
| ۵۳۹ | ••••• | قوله: أن اليهوددخلوا: |
| | • | ر د وعليڪمرواو متعلق يو |
| | • | د حدیث د تر حمة الباب س |

فهرس اسماءمن ترجم لهم على حروف الهجاء

| صفحه | مضمون | صفحه | مضمون |
|-------|-------------------------|--------------|-----------------------------|
| ۲۸۳ | عرولاين الجعد | ۲۱۳ | ابانبنسعيد |
| rqı | علىينحقص | T-91~ | حضرت ابوعامر |
| P•1 | عباربن رنميق | ۸۸ | حضرت امرحم امر رض الله عنها |
| 149 | عبرين محبدين جبير | 7 1/2 | حض ت امرسليط رض الله عنها |
| ira | حضرت عمروبن ثابت اشهلي | PAY | امركلثوم رض الله عنها |
| 2+1 | عبيرين الاسود العنسى | 110 | حضرت انس بن النضر |
| rir | عنبسةبنسعيد | ryr | ثابتبنقيس |
| P2r | بنتقهظه | ۳۸۳ | ثعلبه بن اب مالك |
| ויירי | حضرت محجن بن الادرع | ior | حارثهبنساته |
| ırı | محمدين سعيدالخزاعي | Irr | حضرت حرام بن ملحان |
| 152 | محبدينعيدالله | 1179 | حسين بن محمد بن بهرام تميى |
| 164 | محبدين البيارك | ۳۳۷ | حبزلابن ابى اسىد |
| PYA | معاديه بن اسحاق | 11-9 | حض ت خزیمه بن ثابت الانصاری |
| rer | حضرت ابوسفيان بن الحارث | rri | راشدينسعد |
| rma | نعبانهن ابعياش | IPT | زيادېنعبداللهالعامريالبكاني |
| rız | حضرت نعمان بن توقل | rıa | سعيدينمحبد |
| 112 | حض تنعمان بن قوقل | ראא | سليمان بن حبيب |
| III | يوسف بن يعقوب الصفار | r2r | سنان بن اب سنان الدولي |
| | | rr2 | سهلهنيوسف |
| | | rro | سهيلهنابصالح |
| | | 191 | ملحه بن انسعید |

بِسْمِ اللّهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

عرض مرتب

د اند تعالى حل شانه وعم نواله ډير زيات رحم وكرم او احسان دې چه حضرت شيخ الحديث رئيس المحدثين مولانا سليم الله خان صاحب دامت معاليهم د درس صحيح بخارى يو بل جلدترتيب. تحقيق اوتعليق سره ستاسو حضراتو په وړاندې د پيش كولو سعادت حاصليږي. د نن نه دوه كاله وړاندې د كشف البارى كار راته تفويض شوى وو، په هغه وخت كښى مي دا خيال او كمان هم نه وو چه په دومره كم وخت كښى به دا. جلد ستاسو په وړاندې د طباعت په كالى باندې ښانسته كړې شى او رابه شى. قلله الحدوله الشكى.

دا جلدد صحیح بخاری کتاب الجهاد متعلق دی په کوم کښی چه ټول د ۹۸ ابوابو تشریح، تعلیق، تحقیق او ترتیب په یوځائی راغلی دی. په دی جلد کښی هم د هغه ټولو امورو التزام شوی دی د کوم اهتمام چه په کتاب الایمان او کتاب العلم په جلدونو کښی شوی دی او د ترتیب او تعلیق په دوران کښی هم هغه طریقه برقراره ساتلو کوشش کړی شویدی د کوم اهتمام چه په دی پورتنو جلدونو کښی شویدی، البته په دی جلد کښی دوه امره داسی

دي د کوم ښکاره کونه چه ضروري ده.

دُ احادیتُو په تشریح کښی کله کله عربی عبارتوته نقل کولی شی بحمدالله په دی جلا کښی داسی دَ ټولو عبارتونو ترجمه هم کړیشوې ده، دې دَ پاره چه په عربئی کښې دَ کمزوری استعداد حاملین قاریان صاحبان هم دینه په آسانئی سره استفاده اوکریشی. تراجم رجال کښی رواة سند احوال او تذکره بیان کولو اهتمام کولی شی. کتاب الجهاد دَ صحیح بخاری جلد اول تقریبًا آخره کښی دې او د کتاب الوضوء نه ترکتاب الجهاد پورې د کشف الباری کار تراوسه نه دې شوې په دې وجه مونږ چه کوم ځائ هم په حاشیه کښی لیکلی دی چه دَ هغوی د حالاتود پاره اوګورئی کتاب الوضو پاب د هغوی حالاتود پاره اوګورئی کتاب الوضو پاب د بادی مذکوره کتاب او باب دې او که د یو راوی یا بزرګ نوم په اول ځل د کتاب الجهاد په یو باب کښی راغلی دې نو هم هلته د هغه تذکره هم لیکلی شویده او که د کشف الباری په پومبنو دریو جلدونوکښې د هغوی تذکره شته نو باقاعده د صفحې نشاندهی کړیشویده

احقر ته د خپلی علمی بی بضاعتی اود تحقیق په میدان کښی د خپلی ناتجربه کارئی او نوی راتلو دا صرف احساس دی بلکه د دی مکمل اعتراف هم دی، خو صرف په الله تعالی باندی توکل کول او د حضرت شیخ الحدیث صاحب دامت برکاتهم د حکم او د هغوی د توجیهاتو. عنایاتو او دعامحانو په وجه د دی عظیم خدمت کولو اراده ده، عین ممکن دی چه په دی کښی بغیر د قصد او ارادی غلطیانی شوی وی نو د اهل علم حضراتو په خدمت کښی داپه ډیر ادب سره عرض دی که په کتاب کښی په کوم قسم غلطئی نظر پریوزی نو احقر د هغی نه خبر کړئی.

د دی کتاب د شروع نه واخله تر آخری ترتیب او تحقیق په دوران کښی احقر ته چه د کومو حضراتو راه نمائی حصاله شوی ده په هغوی کښی د ټولونه لوئ نوم حضرت شیخ الحدیث صاحب دامت برکاتهم نه پس حضرت استاذ مکرم مولانا نورالبشر صاحب دامت معالیهم رنگران شعبه تخصص فی الحدیث، رفیق شعبه تصنیف واستاذ حدیث جامعه فاروقیه کراچئی، دی، چه د هغوی راه نمائی بنده ته قدم په قدم حاصله ده. په نورو صورتونوکښی د کتاب دومره زرد لوستونکو په وړاندې د راتلو امکان نه وو د کتاب مکمل پروف د کتاب مکمل پروف ریدنګ احقر پخپله کړیدې، البته د بعضو احادیثو تخریج، د فهرست وغیره تیاری او بعض حواله جاتو تخریج کښی محترم رور خرم سعید صاحب استاذ جامعه فاروقیه، عزیزم بعض حواله جاتو تخریج کښی محمد اسماعیل عاطف وغیره تعاون کړی دی اند تعالی دی تولو تعاون کونکوته جزائی خیر ورکړی او علمی او عملی ترقنی دی ورکړی سره د دی بنده د هغه ټولو حضراتو استاذانو مخلصینو او محبیو هم ډیره شکریه ادا کوی د چا حوصله ورکول او دعاګانی چه احقر ته حاصلی وی.

په آخره کښې ټولو لوستونکو ته د حضرت شيخ الحديث صاحب دامت معاليهم د پاره د خصوصي دعاګانو درخواست دې چه الله تعالى دې د هغوى د عاطفت سورې زمونې په سرونو باندې ترډير وخت پورې قائم او دائم اوساتى او په ملك كښې يا بهر ملكونو كښې چه د علمى افاداتو كومه سلسله (خاص كر جامعه فاروقيه كراچئى په صورت كښې) تقريبا د پنځوستو كالو راسې روانه ده، د قيامت پورې دې دغه شان جارى او سارى او ساتى او د هغوى د پاره دې صدقه جاريه جوړه كړى. آمين

دې سره سره د احقر مرتب د پاره هم خصوصی دعا اوکړئی چه باقی کار دې الله تعالی آسان اوګرځوی او د زر نه زر د پوره کولو توفیق راکړی او په خپل دربار کښې د قبولیت شرف ورکړی او زمونږ د پاره او زمونږ د استاذانو او مشائخو او والدینو او متعلقینود پاره د آخرت ذخیره او د خلاصی ذریعه جوړه کړی.

حبیب الله زکریا رفیق شعبه تصنیف وتالیف واستاذ جامعه فاروقیه کراچی

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

٠٠=كتاب الجهاد والسير

د نسخو اختلاف د بخاری شریف په اکثرو نسخو کښې عنوان کښې کتاب مذکور نه دې. صرف ابن شبویه او نسفي داسې عنوان ذکر کړیدې (۱)

بیا بسمله په ټولو نسخوکښی د مذکوره بالا عنوان نه روستوده، البته د نسفی په نسخه کښی بسمله د عنوان نه وړاندې ده. (۲)

دَ جَهَادُ لغوى معنى قَا دَبَابٌ مفَّاعله مصدر دى دَ دى معنى محنت مشقت او كوشش كول دى. په دى معنى كني كني كول دى. په فتحه سره په وزن دَ سحاب يعنى سخته شاړه زمكي ته وائى ١٠.٣)

اصطلاحی تعریف دَ جهاد اصطلاحی تعریف دی تتاللکفارالتقویةالدین (۴) یعنی دَ دین دَ مضبوطیا او استحکام دَ پاره کافرانو سره جنگیدل

حافظ ابن حجر مُوَاتَّةُ فرمائى وشهابدل الجهدى قتال الكفار (٥) او علامه عينى مُواتَّةُ العلاء كلية الله تعالى و در الله تعالى و سرلورئى و باره كافرانوسره و جناكيدو كوشش كول.

د جهاد صور تونه علماو د جهاد مختلف صور تونه بيان کړي دي.

جهاد مع الشيطان ﴿ جهاد مع النفس.

د دى تفصيل دا دى چه جهاد مع الكفار په لاس، مال، ژبه او زړه سره كيږى.

اوجهاد مع الفساق لأس، بيا ژبه او بيا زړه سره كيږي.

او د جهاد مع الشیطان مطلب دا دې چه هغه په زړه کښې شك شبهې پیدا کوی یا بد عملونه ښانسته کوی او پیش کوی نو چه د دې نه ځان اوساتي.

جهاد مع النفس دا دې چه د د ديني امورو ذده کړه اوپه دې عمل کولوکښې سړې خپل ځان مشغول اوساتي او بيا د دې په خودلوکښې لګيا شي. (٧)

۱) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ٧٨)-

۲) (حواله بالا-

۳) (تاج العروس (۲/مادة جهد، ص۳۲۹) وعمدة القارى (ج ۲ اص۷۸) د جهاد مشروعیت او مقصد او د دې ضرورت پیژندلودپاره کشف الباري کتاب المغازي (ص۱۲-۳۶) اوګورئ-

٤) (شرح الكرماني (ج١٢ ص٩٢)-

۵) (فتح الباري (ج۶ص۳)-

۶) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ٧٨)-

۷) (فتع الباري (ج۶ ص۸۷)-

دغه شان علماؤ لیکلی دی چه یو ظاهری جهاد وی او بل باطنی. ظاهری جهادخوهمدغه وی چه کافرانو وغیره سره وی او جهاد باطنی د خپل نفس ناجائزو اموروکښی مخالفت اود شریعت د تابعدارئی نوم دی.

غزوه نه واپس تشریف راورو اووئی فرمائیل رجعنامن الجهاد الاصغرالی الجهاد الاکبر (۳) جهاد فرض کفایه دی که فرض عین؟ دی نه پس په دی خبره پوهه شنی چه د امت د علماؤ د جهاد په حکم کښی اختلاف دی. جمهور علما ، جهاد ته فرض کفایه وائی یعنی هغه جهاد چه کافرانو سره وی هغه فرض کفایه دی چه د څه خلقو په ادائیکئی سره د ټول امت نه ساقطیږی او که څوك هم د کافرانو سره د جهاد د پاره اونه ځی نو ټول امت به ګناهګار وی. لیکن الله دې نکړی که کافرانو په دارالاسلام باندې حمله او کړه نو په هغه صورت کښی د هغه ځائ په خلقو باندې جهاد فرض عین دی. ترهغی چه د هغوی حمله زیاته شی نو بیا چه په کوم کوم ځائ کښی د هغوی رخ وی نود هغه ځائ د خلقو دپاره جهاد فرض عین دی. (۴) و یو وخت داسې هم راتلی شی چه جهاد به په ټولو مسلمانانو باندې فرض عین شی. او یو وخت داسې هم راتلی شی چه جهاد به په ټولو مسلمانانو باندې فرض عین شی. عمرو بن دینار ، عطا ، بن ابی رباح ، ابن شبرمة او سفیان علامه عینی مختلف کړی دی چه جهاد مطلقا واجب نه دې (۵) او د ابن المسیب مختلف مسلك دا دې چه جهاد په هر حال کښی فرض عین دې. (۶)

۱) (تعلیقات لامع الدراری (ج۷ ص۲۰۷–۲۰۸)-

٢) (اتحاف السادة المتقين (ج٨ص ٤٥٧) وتعليقات لامع الدراري (ج٧ص ٢٠٨)-

٣) (انظر كشف الخفاء للعجلوني (ج١ص٤٢) علامه عجلوني بَرَاتُكُ په دې حديث باندې كلام كولو سره فرمائي "قال الحافظ ابن حجر في تسديدالقوس: هو مشهور على الالسنة وهومن كلام ابراهيم بن ابي عبلة "-محمد بن زياد المقدسي فرمائي "سمعت ابن ابي عبلة وهو يقول لمن جاء من الغزو: قد رجعتهم من الجهاد الاصغر فما فعلتم بالجهاد الاكبر جهاد القلب؟" (سير اعلام النبلاء ج۶ ص٢٥٥) او شيخ السلام علامه تيميه بيمائي فرمايي "لااصل لهو ولم يروه احد من اهل المعرفة باقوال النبي صلى الله عليه وسلم" مقدمة مشارق الاشواق الى مصارع العشاق (ج١ص٣١). حضرت شيخ الاسلام مدني بيمائي په خپل يو مكتوب نمبر مصيح محدث ونيلي شويدي ليكن د عسقلاني (كشف الخفاء ج١ص٤٢٤) قول دي چه امام نسائي د حديث ونيلي شويدي ليكن د عسقلاني (كشف الخفاء ج١ص٤٢٤) قول دي چه امام نسائي د ابراهيم بن عبله كلام خودلي دي د الفاظو ركاكت يو زبردست قرينه ده چه دا د حضور نظم قول نه ابراهيم بن عبله كلام خودلي دي د الفاظو ركاكت يو زبردست قرينه ده چه دا د حضور نظم قول نه شي كيدي او نه د حديث متداول كتابونوكني شاه عبدالعزيز بَرَاتُهُ غوندي متبحر محدث كتلي دي..... (مكتوب شيخ الاسلام ٢٠٥٠)-

أ (بدائع الصنائع (ج ٢ص٩٨) فصل واما بيان كيفية فرق الجهاد..... والهداية (ج ٢ص٥٥٨) -

٥) (البناية (ج٢ص ٧٨٩)-

٤٠) (اوجز المسالك (ج٨ص١٩٩) وتنظيم الاشتات لحل عويصات المشكوة (ج٣ص٩٠)-

د نبی کریم نائل په زمانه کښې د جهاد څه حکم وو د دې متعلق تفصیل باب وجوب النفير كنبي راخى، انشاء الله به دى به هم هلته خبرى كيرى

مشروعیت جهاد د جهاد مشروعیت په مدینه منوره کښی شویدی په شروع کښی نبی کریم نازلیزی هغه ته په کریم نازلیزی هغه ته په ښكاره اعلان كود او بيانوه د الله تعالى ارشاد مبارك دى (فَاصْدَعْ بِمَاتُوْمَرُ وَاَعْدِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ٥٠) (١) نو واوروه په کولاؤ وينا سره دوي ته څه چه تاته حکم وي او د مشرکانو پرواه مه کوه.

دى نه پس حضور اكرم نائل ته د محادله حسنه اجازت وركړيشو اوفرمانيلې شو (أدْعُ إِلَى سَبِيلُ رَبِّكَ بِٱلْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ﴿ ٢) يعنى راغوا دِنى و خبل رب لارى ته پخو خبرو باندې ئې پوهه کړه او نصيحت ورته په ښه شان سره واوروه، او الزام ورتهٔ

ورکړه څنګه چه بهتر وي.

بيا د هغې نه پس مدينې طرف ته هجرت اوشونو په شروع کښې مدافعانه جهاد اجازت وركړيشو أيعني چه كله په تاسو باندې حمله اوشي يا په مسلمانانو باندې حمله اوشي نو دا حمله بندول او د دې د مقابلې كولو اجازت وركړيشو. ارشاد اوفرمائيلې شو ﴿أَذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقْتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوا ﴿ وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمُ لَقَٰدِينُ ﴾ چه حكم شويدي هغه خلقو ته چا سره چه كافران جنگيږي. په دې وَجَه چه په هغوي بَاندې ظلّم اوشو او الله تعالىٰ د هغوي په امداد کولو قادر دي. بيا دى نه پس ارشاد وشو ﴿ فَإِذَا انْسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْ تُمُوهُمُ وَخُذُوهُمْ وَاحْصُرُونُهُمْ وَاقْعُدُوالَهُمْ كُلُّ مَرْصَدٍ؟ (٣) بيا چه كله تيرې شي مياشتي د پناه نومشركان وژنني. چرته چه مومنی اود هغوی دَ نیولو راګیرولو دَ پاره هر ځای کښی په لتون کښی کینئی. دلته مطلقًا د اقدامي او دفاعي جهاد حكم نازل شو. (۴)

١- بَأَب: فَضُلِ الْحِهَا دِوَالسِّيرِ

دُ سيرلغوي معنى سير-بكس السين المهملة وفتح الياء -سيرة جمع دي. د دي معنى طريقه راخى اود دې باب ضرب دي. (۵)

دُ سير اصطلاحي معنى نبى اكرم ظلم أو صحابه كرام رضوان الله عليهم اجمعين به مختلفو غزواتو اوجنګونوکښې چه کومه حکمت عملي اوطريقه پاتې وه هغې ته سير ونيلې شي (۶)

۱) (الحجر: ۹۶)-

٢) (النحل:١٢٥)-

٣) (التوبة:٥)-

٤) (انظر البناية (ج٢ص ٧٨٩) وزادالمعاد في هدى خير العباد (ج٣ ص٤٩-٧٢)-

۵) (انظر تاج العروس (ج ٣ص ٢٨٤ - ٢٨٧) مادة "سار "وعمدة القارى (ج ١٤ ص ١٧) والكرماني (ج ١٢ ص ٩٢)

ع) (انظر عمدة القارى (ج ٤ اص ٧٨) والمغرب (ج ١ ص ٢٧) حيث قال الامام المطرزي: "و....الاانها غلبت في لسان الشرع على امور المغازي كالمناسك على امور الحج"-

د ترجمة الباب مقصد د امام بخاری بخان د دې باب د ترجمې نه مقصد د جهادفضيلت، د هغې اهميت او په دې باندې د اجراو ثواب بيانول دي (١)

وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَى مِنْ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَا لَهُمْ بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلَ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ وَعُدَّا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ وَمَنْ أَوْفَى بِعَهْدِةِ مِرْ اللَّهِ فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ إِلَى قَوْلِهِ وَبَشِرْ الْمُؤْمِنِينَ [التوبة: ١٠٠٠]

قَالَ ابْنُ عَبَّاسِ الْحُدُودُ الطَّاعَةُ

اختلاف نسخ دَ بأب دَ ترجمه لاندې ذكر شوې پورتني مذكوره آيت كښې دَ صحيح بخاري مختلف نسخو اختلاف دي، د نسفي او ابن شبويه روايت داسي دي چه د اصيلي آو كريمه نسخو کښې دواړه آياتونه مکمل ذکر دي. اود ابوذر په روايت کښې اول آيت (وَعُمَّاعَلَيْهِ حَقًا) بورى دى بيا د الى قوله: ﴿ وَالْحُفِظُونَ لِكُدُودِ اللهِ ﴿ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۞ دى (٢)

د آیت شان نزول امام قرطبی رئول د دی آیاتونو شان نزول بیانولوسره فرمانی چه دا آیاتونه د بیعت عقبه ثانیه په موقعه نازل شوی دی. داسې اوشوه چه کله د مدینې منورې نه اویا كسانوباندي مشتمل ډله د عقبه مقام ته راورسيده نو د حضور ترايخ د ملاقات د پاره حاضر شو نو په دې موقع باندې حضرت عبدالله بن رواحه الله د نبي کريم ناځ خبرې اوريدونه پس اوفرمائيل اشترطاريك ولنفسك ماشئت يعنى تاسو كالله د خپل رب د پاره اود خپل ذات دَ پاره كوم شرط په مونږ باندې منل غواړئ هغه ومنئي. حضور اكرم ناتي اوفرمائيل چه د الله تعالى د پاره خو شرط دا دى چه تاسو صرف د هغه عبادت كوئى او څوك د هغه شريك مه ګرځونی، او د خپل ځان د پاره شرط دا دې چه تاسو د خپل ځان او مال حفاظت کونی اوزما هم کوئی په دې باندې انصارو عرض اوکړو که دا شرطونه مونږ پوره کړل نو مونږ ته به څه ملاويږي؟ نو رسول الله تاليم اوفرمائيل "الجنة" هغه وخت د انصارو زړه د خوشحالئي نه باغ باغ شو او وئي وئيل دا سودا خو ډيره ګټندويه ده. اوس به نه دا سودا پخپله ضائع كوو آو ند به تاسو ند د دي ضائع كولو خواهش كوو (٣)

د آیاتونوترجمه بیشکه الله تعالی د مسلمانانونه د هغوی ځانونه اود هغوی مالونه د دې خبرې په عوض اخستې دي چه هغوي ته به جنت ملاويږي. هغه خلق چه د الله تعالى په لار کښې جنګیږی په کوم کښې چه قتل کیږی او قتل کوې په دې باندې رښتونې وعده اوکړې شوه په تورات کښې، انجیل کښې او قرآن کښې اود الله تِعالی نه زیات خپله وعده پوره كونكي بَلَ څوك دي؟ تاسو خلق په خپله دې بيع باندې د كوم چه تاسو معامله اودروله

خوشحالی او کړئی او دا لویه کامیابی ده

هغوی داسی دی چه توبه کونکی دی، عبادت کونکی دی حمد کونکی دی روژه ساتونکی

۱) (عمدة القاري (ج ۱ ۱ص۲۸)-

٢) (حواله سابقه-

٣) (بيان القران (ج١ص١٤٣) مع تغيير يسير-

کتاب الجهاد (جدراول کشف البّاری ۷ فرنگی او د بدو خبرونه منع کونگی دی. د نیکو خبرو تعلیم کونکی او د بدو خبرونه منع کونگی

دی، رو دوع او سجده توانی دی. د چه تو مبرد اود الله تعالی د حدودو خیال ساتونکی دی او داسی مؤمنانوته خوشخبری واورود نیمه از در بنام سرد . قدم من ارا میخارم مهیده ناکه حد معدوف عادت دی حد د خیر

د دې آياتونو ذکر ګولو مقصد د امام بخاري کښتې څنګه چه معروف عادت دې چه د خپل طرف نه ترجمه کولونه پس آياتونه ذکر کوي چه د دې خبرې دليل دې چه دا آياتونو د باب د ترجمه دپاره دليل دې (۱)

دلته هم د امام بخاری مناه مقصد د دی آیاتونو ذکرکولونه د جهاد په فضیلت باندې دلیل پیش کول دی.

قوله: قال ابن عباس: الحدود الطاعة:

دُ مذكوره تعليق تخريج دا تعليق ابن ابي حاتم د على بن ابي طلحه په طريق باندې موصولاً نقل كړيدي. (٢)

دَ مذكوره تعليق مقصد دَ حضرت ابن عباس الله مذكوره پورتنى تعليق ذكر كولو وجه دا ده چه سابقه آیت كښى چه حدود لفظ (وَالخفِظُونَ لِحُدُودِ الله) كښى ذكر كړيشويدې دينه مراد اطاعت الهى دې ځكه چه څوك د الله تعالى مطيع او حكم منونكى وى اود هغه هر حكم په ځائ راوړونكى وى او د كومو څيزونونه الله تعالى منع كړى دى د هغى نه خان ساتونكى وى نو لكه دا تفسير د باللازم د قبيل نه دتى. (٣) د مقرر حدودو حفاظت د الله تعالى د تابعدارئى نه بغير نشى كيدې په دې وجه د حدود د حفاظت كولود پاره اطاعت به لازم وى.

حدیث باب

[٢٦٣٠] حَذَّنَنَا الْحَسَنُ بُنُ صَبَّاجٍ حَدَّثَنَا فُحَمَّدُ بُنُ سَابِقِ حَدَّثَنَا مَالِكُ بُنُ مِغُولِ قَالَ سَمِغْتُ الْوَلِيدَ بُنَ الْعَيُزَادِ ذَكَرَعَنُ أَبِي عَمُروالشَّيْبَانِيّ قَالَ قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بُنُ مَنْغُودِ رَضِي اللَّهُ عَنْهُ (٣) سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ مَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قُلْتُ يَارَسُولَ اللَّهِ أَيُّ الْعَمَلِ أَفْضَلُ قَالَ اللَّهُ عَنْهُ (٣) سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قُلُوالِدَيْنِ قُلْتُ ثُمَّ أَيْ قَالَ الْجِهَا دُفِى سَبِيلِ اللَّهِ السَّلَاةُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلُوالسَّتَرَدُتُهُ لَوَادِنِي [ر:٥٠٠] فَسَكِتُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلُوالسَّتَرَدُتُهُ لَوَاذَنِي [ر:٥٠٠]

تراجم رجال

١-حسر بر صباح: دا ابوعلى الحسن بن صباح بن محمد بزار رَهُ دي، دَ دوى تذكره (كتاب الايبان بابزيادة الايبان و نقصانه) لاندې تيره شوې ده. (٥)

١) (كشف البارى (ج ١ص١٧) ومقدمة لامع (ص٣٢٩-٣٣٠)-

٢) (انظر فتح الباري (ج٤ص٤) وتغليق التعليق (ج٣ص٤٣)-

٣) (انظرعمدة الفارى (ج ٤ اص٧٩)-

٤) (قوله: عبدالله بن مسعود رضى الله عنه: الحديث: تقدم تخريجه في باب مواقيت الصلاة -

۵) (کشف الباری (ج۲ص۴۶)-

- همد بن سابق تمیمی: دا ابوجعفر محمد بن سابق تمیمی بنات دی (۱)

-- مالكبر مغول بر مغول : دا مالك بن مغول كوفي بينية دي. (٢)

م-الوليدبر عيزار: دا وليد بن عيزار بن حريث عبدي كوفي بيني دي. (٣)

<u>ه-ابوعمروالشيباني:</u> دا ابوعمروسعدبن اياس بن شيباني بياي دي. (۴)

<u>- عبدالله بر مسعود:</u> دا مشهور صحابی حضرت ابوعبدالرحمن عبدالله بن مسعود

هذلی المن دی. د دوی حالات ((کتاب الایهان باب ظلم دون ظلم))کښې تيرشوی دی. (۵)

د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت: د پورتنی حدیث د باب ترجمه سره مطابقت بالکل

واضح دې او ظاهره ده چه د حديث الفاظوكښې ((الجهادني سبيل الله)) هم دې كوم چه د مانځه او برالوالدين نه پس افضل عمل ګرځولې شوې دې. (۶)

او د حدیث باقی تشریح به (کتاب العبلاة کنبی باب مواقیت الصلاة) کنبی تیره شویده.

حدیث باب

[٢٦٣] حَدَّثَنَاعَلِيُّ بُنُ عَبُدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا يَعُنِى بُنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنِى مَنْصُورٌ عَنْ هُجَاهِدٍ عَنْ طَاوُسٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ (٤) رَضِىَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَاهِجُرَةَ بَعُدَالْفَتُحِ وَلَكِنْ جِهَادٌ وَنِيَّةٌ وَإِذَا اسْتُنْفِرُ تُمُ فَانْفِرُوا [ر:١٠٠]

تراجم رجال

-على بر عبدالله: دا مشهورمحدث امام على بن عبدالله ابن المديني المحمد دي المحمد وي در المحمد وي المحمد وي المحمد وي تذكره ((كتاب العلم، باب الفهم في العلم) به ذيل كنبي تيره شويده. (٨)

r- یحیی بر سعید: دا یحیی بن سعید بن فروخ القطان رئیسی دی، د دوی حالات ((کتاب الایهان)باب من الایهان ان یحب لاخیه) کښی تیرشوی دی (۹)

١) (دَ دوى دَ حالاتودَ ياره أوكورئ كتاب الوصايا باب قضاء الوصى ديون الميت....-

٣) (د دوى د حالاتود پاره او كورئ كتاب مواقيت الصلاة باب فضل الصلاة لوقتها-

^{\$) (}حواله بالا -

۵) (کشف الباری (ج۲ص۲۵۷)-

ع) (انظرعمدة القارى (ج ١٤ ص ٧٩)-

٧) (قوله: عن ابن عباس رضى الله عنهما مرتحريجه في الحج باب لا يحل القتال بمكة -

۸) (کشف الباری (ج۳)-

۹) (کشف الباری (ج۲ص۲)-

-- سفیان: دا مشهور امام حدیث، حضرت سفیان بن سعید الثوری مجافقهٔ دی. د دوی تذکره ((کتابالایهان بابعلامة البنائق)) کنبی تیره شوی ده (۱)

۳- منصور: دا مشهور محدث ابوعتاب منصوربن معتمرکوفی میاه دی د دوی حالات (رکتاب العلمهاب من جعل لاهل العلم ایام امعلومه) کښی تیرشوی دی (۲)

۵- هجاهن: دا ابوالحجاج مجاهد بن مکی قرشی تعافی دی. د دوی حالات ((کتاب العلم باب العهم فی العلم)) کښی راغلی دی. (۳)

٢-طأوس: دا مشهورتابعي حضرت طاؤس بن كيسان ميد دي. (۴)

2- ابر عباس رضى الله عنهما: 13 مشهور صحابى، حضرت عبدالله بن عباس في الله عنهما: 2 مشهور صحابى، حضرت عبدالله بن عباس في المنادي و كان منهور صحابى، حضرت عبدالله بن عباس في المنادي و كان مناسبة المناسبة المناسبة

قوله: <u>لاهجرة بعد الفتح:</u> دَ فتح مكه نه پس هجرت نشته دَ حدیث مطلب دادی چه هغه هجرت چه د مكي نه مدیني منوري طرف ته لازمي او ضروري وو هغه اوس دَ فتح مكه نه پس فرض او ضروري نه دي. (۵)

مطلب دا نه دی چه هجرت بالکل منقطع کریشو، سنن ابی داود کښی حضرت معاویه بن ابی سفیان التی نه روایت دی:

قوله: سمعت رسول الله على يقول: لاتنقطع الهجرة حتى تنقطع التوبة ولا تنقطع التوبة ولا تنقطع التوبة حتى تطلع الشمس من مغربها: (٢) مادرسول الله على نه اوريدلى دى فرمائيلى چه هجرت به نه موقوف كيږى تر هغه وخت پورې چه توبه نه وى موقوف شوى او توبه به هغه وخت پورې نه موقوف كيږى تركومي چه نمر د مغرب طرف نه وى راوتلى. د دى د پاره د باب په حديث كښى د هغه خاص هجرت ختميدلو ذكر مراد دى چه مكى نه مه كيدله.

به کید. و اول داحکم ووچه کوم سړې به کوم ځائ کښې مسلمان شود خضور د معاونت د پاره د هغه حصاریدل په مدینه منوره کښې ضروری او لازمی وو حافظ ابن حجر میشه د امام خطابی میشود نه نقل کړیدی چه د اسلام په شروع کښې په مدینه منوره کښې د مسلمانانو شمیر قوت او شوکت د کمیدلو په وجه باندې په هریو اسلام قبلونکی باندې مدینې منورې طرف

۱) (کشف الباری (ج۲ص۲۷۸)-

۲) (کشف الباری (ج۳ص ۲۷۰)-

٣) (كشف البارى (ج٣ص٣٠)-

٤) (د دوى د حالاتود پاره او گورئ كتاب الوضوء باب من لم يرالوضوء الامن المخرجين....-

ن) (انظر عمدة القارى (ج ٤ ١ص ٨٠)-

٤٠) (سنن ابي داؤد (ج١ص ٣٣٤) كتاب الجهالد باب في الهجرة هل انقطعت؟ رقم(٢٤٧٩)-

<u>ڪئ</u>البَاري ته هجرت فرض وو.دې دپاره چه د مسلمانانو تعداد قوت يو ځائ شي ليکن کله چه د الله مه هجرت توسل سره مکه مکرمه فتح شوه او خلق په اسلام کښې ډلې ډلې داخليدل او ټول حکاز د هغوی د حکم او فرمان لاندې راغلونو په هجرت کښې د مکې نه مدينې ته فرضيت ساقط شو او دا حكم منقطع شو (١)

یا داسی اووایه چه کوم ښاربه فتح شو د هغه ځای نه به د هجرت حکم اوچتیدلو ځکه چه هغه ښار به دُفتح نه پس دارالاسلام کښې شامل شو، د هغه ځايه به بيا د هجرت ضرورت باقى نەپاتى كىدو.

یا داسی اووایه چه د کوم هجرت نفی کولی شی هغه «هجرت مندوبه») دی او هغه هجرت چه كوم ثابتولي شي هغه هجرت مفروضه دي. نو ((هجرت مغروضه من دارالكغرال دارالاسلام))اوس هم باقی دې خو چه په دارالکغې کښې په احکام اسلام باندې عمل ممکن نه وي. (۲)

قوله: ولكر جهاد ونية او ليكن جهاد او نيت خالص باقى دى. مطلب دا دى چه هغه هجرت كوم چه د جهاد د پاره يا د خه ښه نيت د پاره وي مثلاً دارالكفي نه دارالاسلام ته وربدلیدل خو چه په دارالکف کښې په اسلامي احکامو عمل کښې نه وي، د علم په طلب کښې وتل وغیره د دې تواب او حکم باقي دې (۳)

قوله: واذا استنفرتمرف نفروا: او چه کله تاسو ته دَ جنګ دَ پاره اووئيلې شي نو اوځئي.

د دې جملې تشريح انشاء الله وړاندې ((باب وجوب الغزو)) لاندې راځي. د حديث د ترجمه الباب سره مطابقت: د پورته ذکر شوی حديث مناسبت د ترجمه دباب نه بالكل واضح دى كوم چه د ((ولكنجهادونية، اذااستنفى تمفانفى وا)) نه ظاهردى. (۴)

[٢٦٢٠] حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا خَالِدٌ حَدَّثَنَا حَبِيبُ بْنُ أَبِي عَمْرَةً عَنْ عَائِثَةً بِنْتِ طَلُحَةً عَنْ عَائِشَةً (٥) رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ يَارَسُولَ اللَّهِ ثُرَى الْجِهَادَ أَفْضَلَ الْعَمَلِ أَفَلَا نُجَاهِدُ قَالَ لَكِنَ أَفْضَلَ الْجِهَادِ حَجَّم مُبْرُورٌ [ر:١٣٣٨]

تراجم رجال

<u>-مسلاد:</u> دا مشهور امام حدیث مسددبن مسرهد بن مسربل براید دی. د دوی مختصراً

١) (انظر اعلام الحديث (ج ٢١٣٥٤-١٣٥٥) وايضاً فنح الباري (ج ١ص٣٨-٣٩)-

٢) (بذل المجهود (ج١١ص٣٧٣)-

۳) (انظرفتح الباري (ج۶ص ۳۹)-

 ^{4) (}انظر عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ٧٩) -

٥) (قوله: عن عائشة رضَّى الله عنها تقدم تخريجه في كتاب الحج باب فضل الحج المبرور -

حالات ((کتابالایهان، باب من الایهان ان یعب لاخیه....)) به ذیل کښی تیر شوی دی.(۱)

r-خال دا خالدبن عبدالله الطحاوي عليه دي (٢)

-- حبیب بر ابی عمره: دا حبیب بن ابی عمره اسدی میشد دی (۳)

٣-عائشه بنت طلحه: دا عائشه بنت طلحه تميميه قرشيه الميلاده (۴)

د-عائشه بنت ابى بكر: دا ام المؤمنين حضرت عائشه بنت ابى بكر الصديق في المؤمنين حضرت عائشه بنت ابى بكر الصديق

دوی حالات ((بده الوحی)) د دوئم حدیث په ذیل کښې راغلی دی. (۵)

د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت د پورته ذکر شوی حدیث د ترجمه د باب سره مناسبت ((نری الجهاد افضل العجهاب کنبی دی. (۶) اود حدیث مکمل تشریح ((کتاب العجهاب فضل العجهاب المجود)) لاندی تیره شویده.

حديث باب

[rvrr] حَدَّثَنَا إِسُمَاقُ بُنُ مَنْصُورٍ أَخْبَرَنَا عَفَّانُ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ حَدَّثَنَا هُمَّدُ بُنُ جُمَادَةً قَالَ أَغْبَرَنِي أَبُو حَصِينِ أَنَ ذَكُوانَ حَدَّثَهُ أَنَ أَبَا هُرَيُرَةً رَضِى اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثَهُ قَالَ جَاءَرَجُلْ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ دُلَنِي عَلَى عَمَل يَعْدِلُ الْجِهَادَ قَالَ لَا أَجِدُهُ وَاللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمَ فَقَالَ دُلَنِي عَلَى عَمَل يَعْدِلُ الْجِهَادَ قَالَ لَا أَجِدُهُ وَاللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ عَلَى عَمَل يَعْدِلُ الْجَهَادِ قَالَ لَا أَجِدُهُ وَاللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ عَلَيْهُ وَلَا تَفْتُومَ وَلَا تَفْتُرُو تَصُومَ وَلَا تُفْطِرَ قَالَ وَعَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى الْجَهَادَ قَالَ لَا أَجْهُ وَاللَّهُ عَلَيْهُ وَلَا تَفْتُومُ وَلَا تَفْتُرُو وَتَصُومَ وَلَا تُفْطِرَ قَالَ وَمَنْ يَلْمُ عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى اللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَلَا تَفْتُومُ وَلَا تَفْتُرُو وَتَصُومَ وَلَا تُفْطِرَ قَالًا لَا أَمُ عَلَيْهُ وَلَا تَفْتُومُ مَا لَى اللّهُ عَلَيْهُ وَلَا اللّهُ عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَمَل يَعْدِلُ عَلَيْهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَلَا كُولَ عَلَيْهُ وَلَا تَالُو هُرَيْرَةً إِنَّ فَرَسَ الْهُ جَاهِدِلَيْسُتَنِ فِي طِولِهِ فَيْكُنْتُ لِللّهُ عَلَيْكُ لَلْكُ عَلَيْهُ وَلَا لَا أَلُولُ وَلَا عَلْمَ اللّهُ عَلَيْكُ لَا عَلَالًا عَلَا لَا أَلُولُهُ وَلَا عَلَى اللّهُ عَلَيْهُ وَلَا عَلَيْكُ عَلَى عَلَى عَلَى اللّهُ عَلَى عَلَى اللّهُ عَلَا اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى عَلَى عَلْمَ اللّهُ عَلَى عَلْمَ اللّهُ عَلَى عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى عَلْمَ عَلَيْكُ عَلَى اللّهُ عَلَى عَلْمَ عَلَى اللّهُ عَلَى عَلْمَ عَلَى عَلْمُ عَلَى عَلَى اللّهُ عَلْمَ عَلَى اللّهُ عَلَى عَلْمُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلْمُ عَلَى عَلْمَ عَلَى عَلْمَ عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلْمُ عَلَى عَلَى اللّهُ عَلْمُ عَلَى اللّهُ عَلَى عَلْمَ عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلْمَ عَلَى عَلَى عَلَى عَلْمَ عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلَا عَلَا

تراجم رجال

ا اسماق بر منصور: دا ابویعقوب اسحاق بن منصور نوسج مُرَاثِیَّ دی، دُ دوی تذکره (رکتاب الایبان باب حسن اسلام المرم) کښی راغلی دی. (۲)

۱) (کشف الباری (ح ۲ ص۲)-

۲) (د دوى د حالاتود پاره او كورئ كتاب الوضوء باب من مضمض واستنشق....-

٣) (د دوى د حالاتود باره او كورى كتاب الحج باب فضل الحج المبرور -

^{\$) (}حواله بالا-

۵) (انظرفتح الباري (ج۶ص ٤-۵)-

۶) (قوله: أن اباهريرة الله الحديث اخرجه مسلم في صحيحة (ج٢ص ١٣٤) كتاب الامارة باب فضل الشهادة في سبيل الله تعالى رقم (١٨٧٨) والترمذي (ج١ص ٢٩١) في فضائل الجهاد باب ماجاء في فضائل الجهاد رقم(١٤١٩) والنساني في كتاب الجهاد باب ما يعدل الجهادفي سبيل الله عزوجل (ج٢ص ٥٤) رقم (٣١٣٠) (كشف الباري (ج٢ص ٤٠))

- عفان بر مسلم: دا عفان بن مسلم الصفار انصاری بین دی (۱)

--همام: دا همام بن يحيى بن دينار عوذي شيباني مُيَهِ دي (٢)

۳- همه برر جماده: دا محمد بن جحاده ایامی از دی بینی دی (۳)

٥-ابوحصين: دا ابوحصين بن عاصم اسدى مييد دي. (۴)

۲-ذكوان: دا ابو صالح ذكوان الزيات ميد دي.

٧- ابوهريره رضي الله عنه: دا مشهور صحابي حضرت ابوهريره النَّيْزُو دي. دَ دې دواړو حضراتوحالات ((کتابالایهان بابامورالایهان)) لاندی تیرشوی دی (۵)

قوله: ان ابأهريرة رضى الله عنه حدثه قال: جاءرجل الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال: دلني على عمل يعدل الجهاد: ذكوان بَيْنَةُ فرماني جه حضرت ابوهريره گانز ماته بيان اوکړو چه يو سړې د رسول اند نژيم په خدمت کښې حاضرشو او ِهغوی ظُرُمُ ته ئی عرض اوکړو چه تاسو زما يو داسې عمل طرف ته لارخودنه اوكرئى چه د جهاد مماثل او برابر وي.

حافظ ابن حجر مرسم فرمائی چه ماته د هغه سړی نوم معلوم نه شو الم اقف علی اسه (۶)

توله: قال: لااجرة: حضور تَهُم اوفرمائيل زه خوئي نه موندم،

مطلب دا دي چه د جهاد برابر يو عمل هم نشته (۷)

قوله: قال: هل تستطيع اذا خرج المجاهد ان تدخل مسجدك فتقوم ولاتفتر

وتصوهرولاتفطر؟: بيا هغوى ظُهُم د دي سړى نه تپوس او كړو چه كله مجاهد د جهاد د باره) اوځي نو ته دا کولي شي چه په خپل جمات کښي داخل شيې او مسلسل په مانځه اودريږي اوِ ستری نشی، مسلسل روژه اونیسی او روژی ماتی اونه گری؟ د حضور نایم د مذکوره فرمان مطلب دا دی چه د جهاد برابر یو عمل دادی

چه سړې مونځ کوی او په مینځ کښې آرام هم نه کوي، اودې ستړې هم نه وي. دغه شان مسلسل روژې ساتي او روژې ماتې نه کوی نو هله به د دې سړی عمل د مجاهدد جهاد

۱) (دَ دوى دَ حالاتودَ پاره اوګورئ کتاب الوضوء باب دفع السواک الى الاكبر -

۲) (دَ دوى دَ حالاتودَ پاره اوګورئ کتاب الوضوء باب ترک النبي نُرْمُخ والناس الاعرابي حتى....-

٣) (دَ دوى دَ حالاتودَ باره اوګورئ کتاب الاجارة باب کسب البغي والاما-

٤) (د دوى د حالاتود باره او گورئ كتاب العلم باب اثم من كذب على النبي تَنْظُر-

۵) (کشف الباری (ج ۱ص۶۵۸-۶۵۹)-

^ع) (انظرفتح الباری (ج۶ص۵)-

۷) (انظرعمدة القارى (ج۶ص۸۲)-

كتاب الجهاد (جلداول

برابر او مساوی کیدیشی گنی نونه کیږی

توله: قال: ومن يستطيع ذلك؟: نوهغه سرى اوونيل دا طاقت څوك لرلې شى؟ يعنى مسلسل مونځ كول او نه ستړې كيدل، مسلسل روژې ساتل او روژې ماتې نه كول څوك كولى شى؟

څوك كولې شي؟ حافظ ابن حجر ميند فرماني چه د الله تعالى په لاركښې د جهاد كونكي په نوروباندې دا حافظ ابن حجر ميند فرماني چه د الله تعالى په لاركښې د خباد بالكل واضح فضيلت او اوچتوالې دې اودا فضيلت د دې خبرې متقاضى دې چه د جهاد

برابر بل يو عمل هم نشته. (١)

كثف الباري

قوله: قال: أبوهريره: ان فرس المجاهدليستن (r) في طوله (r) فيكتب له

حسنات: حضرت ابوهریره اللی فرمانی چه د مجاهد اس چه په رسنی کښې ټوپوپه وهی په دې باندې هم مجاهددپاره نیکئی لیکی

امام بخارى منه دَ حضرت ابوهريره الشيئ دا قول موقوفاً نقل كړيدې او همدغه روايت «باب الخيل ثلاثة) لاندې «زييبن اسلمعن ابي صالح» په طريق مرفوعا ذكر كړيدې (۴)

د حدیث د ترجمهٔ الباب سره مطابقت د پورته ذکر شوی حدیث مناسبت د باب د ترجمی به بالکل واضح دی، په کوم کښی چه وئیلی شوی دی چه د جهاد مساوی او مماثل بل هیڅ عمل نشته (۵)

٢- بَاب: أَفْضَلُ النَّاسِ مُؤْمِنٌ هُجَاهِدٌ بِنَفْسِهِ وَمَالِهِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَسَالِهِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَنسخ اختلاف به تولونسخو كښې دمومن صفت كښې مجاهد اسم فاعل په وزن دې اود

کشمیهنی په روایت کښې دا لفظ صیغه مضارع سره یجاهده دې. (۶) د ترجمه الباب مقصد د دې باب د ترجمه مقصد د مجاهد فضیلت بیانول دې چه کوم سرې

د ترجمه الباب مقصد د دې باب د ترجمه مقصد د مجاهد فضيلت بيانول دي چه كوم سرې د الله تعالى په لاركښې خپل ځان او مال سره د صحيح نيت اوځي هم هغه د ټولونه افضل سري دي.

دَمُاقَبُل بَاب سره سره ربط او مناسبت په تيرشوی باب کښې امام بخاری رکيا دا خودلې ووچه د تتولو نه افضل عمل جهاد او قتال في سبيل الله دې. په دې باب کښې دا خودل

۱) (انظرفتح الباري (ج۶ص۵)-

٢) (قال العلامة الفتهى استن استنانا: اى عدالمرحه ونشاطه شوطا ولاراكب عليه..... فاستن بتشديد نون وهن ان يرفع يديه ويطرحهما معا.... انبر مجمع بحار الانوار (ت٣ص١٣٢-١٣٣) باب السن مع النوني-

٣) (الطول والطيل بالكسر: الحبل الطويل يشد احدطرفيه في وتداوغيره والطرف الاخرفي يدالفرس لبدور فيه ويرعى ولا يذهب بوجهه. انظرمجمع بحارالانوار (ج٣ص٣٢)وعمدة القارى (ج ١٤ص٨٣)-

⁺) (انظر شرح القسطلاني (ج۵ص۳۲) وعمدة القاری (-310 - 1)

ن) (انظر عمدة القار (ج ١٤ ص ٨٢)-

ع) (انظر فتح الباري (جعصع)-

غواړی چه د ټولونه افضل سړې هغه دې چه د جهاد او قتال في سبيل الله فريضې سره تړلې وي او هغه پوره کوي او په هغې کښې خپل ځان اولګوي.

وَقُولُهُ تَعَالَى يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُكُمْ عَلَى يَجِارَةٍ تُنْجِيكُمْ مِنْ عَذَابِ أَلِيمِ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَثُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ يَغْفِرْ لَكُنُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدُخِلُكُمْ جَنَّاتٍ تَعْرِى مِنْ تَعْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسَاكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتِ عَدُن ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ [الصف: ١٠-١١]

د مذکوره آیت ترجمه آی د ایمان خاوندانو! تاسو ته داسی سوداگری اونه ښایم چه تاسو د مذکوره آیت ترجمه آی د ایمان خاوندانو! تاسو خلق په الله تعالی باندی اود هغه په رسول باندی او د الله تعالی په لارکښی په خپل مال او ځان سره جهاد اوکړئی، دا ستاسو د پاره ډیره بهتره ده، که تاسو پوهیږئی (کله چه داسی کوئی نو) الله تعالی به ستاسو کناهونه معاف کړی او تاسو به (دَجنت) داسی باغونو ته داخل کړی د کومو د لاندی چه به نهرونه روان وی او په ښکلی مکانونو کښی به مو (داخل کړی) چه د همیشه اوسیدو باغونوکښی (جوړ) شوی وی، دا لویه کامیابی ده. (۱)

دَمذكوره أيتُ ذكر كولومقصد دَ باب دَ ترجمه په اثبات باندې دَ مذكوره آيت نه استدلال مقصود دې يعنى امام بخارى الميل واضح كول غواړى چه دَ ايمان نه پس دَ ټولو نه بهترين تجارت ((جهاد قسبيل الله بالمال والنفس)) دې. لكه چه دَ آيت نه واضحه ده، نو په خان او مال سره جهاد كونكى د ټولو نه افضل دي.

حدیث باب

[٢٣٣] حَدَّثَنَاأَبُوالْيَمَانِ أَخْبَرَنَاشُعَيْبٌ عَنْ الزُّهُرِيِّ قَالَ حَدَّثَنِي عَطَاءُبُنُ يَزِيدَ اللَّيْشُ أَنَّا السَّعِيدِ الْخُدُدِيَّ رَضِى اللَّهُ عَنْهُ (٢) حَدَّثَهُ قَالَ قِيلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ النَّاسِ أَفْضَلُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ مِنَفْسِهِ وَمَالِهِ قَالُوا ثُمَّمَنُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ مِنَفْسِهِ وَمَالِهِ قَالُوا ثُمَّمَنُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ مِنَفْسِهِ وَمَالِهِ قَالُوا ثُمَّمَنُ قَالَ مُؤْمِنٌ فِي شِعْبِ مِنْ الشِّعَا بِيَتَقِى اللَّهَ وَيَدَعُ النَّاسَ مِنْ شَرِّةٍ [٢١٣٩]

۱) (بیان القران (ج۱۲ص ٤)-

۲) (قوله: اباسعید الخدری رضی الله عنه الحدیث اخرجه البخاری ایضًا فی صحیحه (ج۲ص۹۶) فی کتاب الامارة کتاب الرقاق باب العزلة راحة من خلاط السوء رقم(۶۹۹۶) ومسلم فی صحیحه (ج۲ص۹۳۸) کتاب الامارة باب فضل الجهاد والرباط رقم (۴۸۷۷–۴۸۷۸) والنسائی (ج۱ص۳۵۸) کتاب الزکاة باب من یسال الله عزوجل ولایعطی به رقم (۲۵۷۰) و (ج۲ص ۵۵) کتاب الجهاد باب فضل من یجاهد فی سبیل الله بنفسه وماله رقم (۳۱۰۷) والترمذی (ج۱ص ۲۹۵) فی فضائل الجهاد باب ماجاء ای الناس افضل؟ رقم (۱۶۶۰) وابرداؤد (ج۱ص ۳۸۶) کتاب الجاهد باب فی ثواب الجهاد رقم (۲۶۸۵) وابن ماجه (ص۲۸۶) فی ابواب الفتن باب العزلة رقم (۳۹۷۸)-

تراجم رجال

ا- ابواليمان: دا ابواليمان الحكم بن نافع حمصي المناهم دي.

r-شعیب: دا ابوبشر شعیب بن ابی حمزه قرشی گیشت دی. د دی دواړو حضراتو تذکره ((۱۸۸۹ الوسی)) د شپیرم حدیث په ذیل کښې تیره شویده. (۱)

- الزهري: دا مشهور امام حدیث محمدبن مسلم بن شهاب زهری بیشی دې د مختصر حالات ((بده الوسی)) د دریم حدیث په ذیل کښې تیره شویدی (۲)

٣-عطاءبر يزيد الليثي: دا عطاء بن يزيدليشي مينية دي. (٣)

٥-ابوسعین الخدری: دا مشهور صحابی حضرت ابوسعید سعدبن مالك خدری التی دی. د دوی تذکره (رکتاب الایمان باب من الدین الغمار من الفتن) لاندې تیرشویدې (۴)

قوله: قيل: يأرسول الله: يوويونكي اووئيل يارسول الله تأليم

حافظ آبن حجر ﷺ فرمائی چه ماته د هغه ویونکی نوم معلوم نه شو، خو دومره خبره ده چه دا قسم سوال حضرت ابوذر اللائم نه هم مروی دی(۵)

قوله: ای الناس افضل ؟: کوم سړې د ټولونه افضل دې؟

قوله: فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: مؤمر يجاهد في سبيل الله

بنفسه واله: نو جناب نبی کریم کارارشاد اوفرمائیلو چه د ټولو نه افضل سړې هغه مومن دی چه د الله تعالى په لارکښي ځان او مال سره جهاد کوی

حافظ ابن حجر رکی فرمانی چه شاید مؤمن نه دا مراد وی چه کوم اولنی واجبات عینیه ادا کری بیا هغه ته جهاد فضیلت د ځان او مال سره حاصل وی. دا بالکل مراد نه دی چه جهادخو کوی لیکن نور واجبات او فرائض پریږدی، په دې صورت کښې به د مجاهد فضیلت ظاهریږی ځکه چه په دې کښې مجاهدد الله تعالی د رضاد پاره خپل ځان او مال لګولی دی او د دې نفع هم متعدی ده. (ع)

قوله: قَالُوا: ثمر مربي؟: صحابه كرامورضوان الله عليهم اجمعين سوال اوكرو بيا خوك افضل دى؟ يعنى دا مجاهد رجه خيل خان او مال د الله تعالى به لار كنبي اولكوي، نه پس د تولو نه

۱) (کشف الباری (ج ۱ ص ٤٧٩ - ٤٨٠)-

۲) (کشف الباری [۱ص۳۲۶)-

٣) (د دوى د حالاتود پاره او كورئ كتاب الوضوء باب لاتستقبل القبلة بغائط....-

٤) (كشف البارى (ج٢ص٨٢)-

۵) (انظرفتع الباري (ج٤ص٤)-

ع) (انظرفتع الباري (ج^{عصع)}-

افضل سړې څوك دې؟

قوله: قال: مؤمر. في شعب من الشعاب يتقى الله، فيدع الناس من

شره: هغوی ناش او فرمائیل بیا هغه سړې افضل دې چه په یو کنده کښې ناست وی اود الله تعالى نه ویریږی او خلق د هغه د شر نه محفوظ او په امن کښې دی.

(شعب-بکس الشین المعجمة وسکون العین المهملة)) کندې ته وائی د دې جمع شعاب ده (۱) خلقوسره يوځائ کيدل افضل دی که خلوت نشيني حديث باب کښې حضور نظيم د مجاهدنه پس د ټولونه افضل هغه سړې ګرځولې دې چه په کنده کښې د خلقو نه خان له او جدا ناست وي او هلته د الله تعالى عبادت کوي اود هغه نه ويريږي، دې نه معلومه شوه چه خلوت نشيني د جلوت نه افضل ده.

لیکن دا افضلیت علی الاطلاق نه دی بلکه دا هغه وخت دی کله چه د فتنودور وی، د سری د پاره خپل ایمان بچ کول گران شی نو خلوت نشینی افضل ده البته که یو سری په جلوت او خلقو سره اوسیدلو سره د خپل ایمان حفاظت کولی شی اوهغه ته په فتنوکښی د پریوتلو اندیښنه نه وی اود ایمان د حفاظت د پاره هم معاون ثابتیږی نو د هغه د پاره بیا دا خلوت نشینی به صحیح نه وی.

حافظ آبن حجر آو علامه نووی ایمین دامت د جمهور علماؤ مذهب همدغه نقل کریدې چه خلقو سره یو ځای اوسیدل افضل دی خو په دې شرط چه په فتنه کښې د پریوتلوویره نه وی

گنی نو ند.

د دې په خلاف يوه ډله دې طرف ته تلې ده چه خلوت نشينې افضل ده او هغه د حديث باب اود هغه احاديثو کوم کښې چه دا مضمون وارد شويدې نه استدلال کوي چه نبې کريم ترفي د لته د مجاهدنه پس د ټولونه افضل خلوت نشينې ګرځولې ده. (۲)

د جمهورود طرف نه جواب علامه نووی سلط د دې حدیث د جمهورود طرف نه دوه جوابونه ورکړی دی:

آ يو جواب خودا دې چه دا حديث د سختو فتنو او جنګونو زمانه باندې محمول دې چه کله د سړي خپل ايمان هم محفوظ نه شي.

و دونم جواب دا دې چه د دې حدیث محمل هغه سړې دې د چا د تکلیفونونه چه نور خلق محفوظ نه وې اوهغه د خلقو د تکلیف رسولونه صبرکیدې نشی. (۳)

ددې وجه علامه نووي مرائله دا ذكر كوى چه ټول أنبياء كرام صلوات الله وسلامه عليهم، جمهور صحابه كرام، تابعين او علماء او زاهدان خلقو سره هم په جلوت كښي اوسيدل او د اختلاط او جلوت فائدې به ئى حاصلولى لكه د جمعې د مانځه حاضرى، د جمع مونځ، د

۱) (انظر عمدة القارى(ج ۱ اص۸۳) وايضًا انظر مجمع بحار الانوار(ج۳ ص۲۲۳) حيث قال: هوما انفرج بين جبلين)

٢) (انظرفتع الباري (ج١٣ص٤٤) وشرح النووي على مسلم (ج٢ص١٣٤)-

۳) (انظرشرح النووي على مسلم(ج٢ص١٣۶)-

جنازي مونځ، د بيمار تپوس اود الله تعالى د ذكر حلقې وغيره (١)

اود جمهورود قول تائيد د دې حديث نه کيږي. ((البؤمن الذي يخالط الناس، ويصبرعلى اذاهم،

اعظم اجرامن البؤمن الذى لايخالط الناس، ولايمبرعلى اذاهم) (۲) يعنى هغه مؤمن خلقو سره اختلاط ساتونكي وى اود هغوى په تكليفونو وركولو صبر كوى نود هغه اجرد هغه مؤمن نه ډير زيات دې چه خلقو سره اختلاط نه ساتى او د هغوى په

تکلیفونو صبرنه کوی (۳)
داخبره په ذهن کښې ساتل پکار دی چه دا ټول اختلاف هغه وخت دی چه کله فتنه عام نه داخبره په ذهن کښې ساتل پکار دی چه دا ټول اختلاف هغه وخت دی چه کله فتنه عام نه وی او که چری فتنه عام وی نو هم خلوت افضل دی ځکه چه د عامو فتنو محظوراتوکښې پریوتلو قوی اندیښنه وی. خوداسی هم کیږی چه د الله تعالی عذاب هم د فتنوپه خلقو باندی راځی ولی د هغی اثر په غیر اصحاب فتن باندې هم واقع کیږی لکه چه ارشاد ربانی دی و واتفته لا تُصِیْبَنَ الّذِیْنَ ظَلَمُوا مِنْکُمْ خَاصَّةً ۴ (۴) یعنی ویریږئی د هغه فتنې نه چه په تاسوکښی به صرف ظالمانوخلقوته نه رسی بلکه غیرظالمانوته به هم هغه عذاب راځی (۵) د حدیث د ترجمې نه بالکل د حدیث د ترجمې نه بالکل ښکاره دې کوم کښې مجاهد په خلقو کښې افضل ګرځولې شویدې (۶)

[٢٦٢٥] حَدَّثَنَا أَبُو الْمَاْنِ أَخُبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنُ الزَّهُرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي شَعِيدُ بْنُ الْمُسَيِّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةً (٤) قَالَ شَعِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ مَثَلُ الْمُجَاهِدِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بَمِّنُ اللَّهُ لِلْمُجَاهِدِ فِي سَبِيلِهِ كَمَثَلِ الصَّامِ الْقَامِرِ وَتَوَكَّلَ اللَّهُ لِلْمُجَاهِدِ فِي سَبِيلِهِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بَمِّنُ لِللَّهُ لِلْمُجَاهِدِ فِي سَبِيلِهِ كَمَثَلِ الصَّامِ الْقَامِرِ وَتَوَكَّلَ اللَّهُ لِلْمُجَاهِدِ فِي سَبِيلِهِ فَي سَبِيلِهِ مَا أَجُوا وَعَنِيمَةً [ر:٣١]

رجال العديث

۱- ابواليمان ۲- شعيب ۳- زهري: د دې دريواړود پاره د سابقه سند اولنی درې حضرات اولاورنی. (۸)

١) (حواله بالا-

۲) (اخرجه الترمذی فی سننه (ج۲ص۷۷) فی کتاب صفة القیامة باب رقم(۲۵۰۷) وابن ماجه فی
 سننه(ص۲۹۲) فی ابواب الفتن باب الصبر علی الاذی رقم (٤٠٣٢)-

٣) (انظرعمدة القارى (ج ١٤ ص ٨٤)-

^{\$) (}الانفال(٢٥)-

۵) (انظرفتح الباری (ج۱۳ص۲۲) مزید او گورئ کشف الباری (ج۲یص۸۵-۸۸)-

ع) (انظر عمدة القارى (ج ٤ ١ص٨٣)-

٧) (قوله: اباهريرة رضى الله عنه الحديث تقدم تخريجه في كتاب الايمان باب الجهاد من الايمان انظر كشف الباري (ج٢ ص٣٠٥)-

٨) (كشف البارى (ج ١ص ٣٢٤) و (ج ١صض ٢٧٩ - ٤٨٠)-

-- سعیلبری الهسیب: دا امام التابعین، حضرت سعیدبن الهسیب قرشی بینی دی. د دوی حالات ((کتاب الایهای بازی من قال: ان الایهان هوالعبل)) کښی تیرشوی دی. (۱)

د-ابوهريرة رضى الله عنه: دا مشهور مكثرصحابى حضرت ابوهريره كالتي دي. د دوى تذكره «كتاب الايمان باب امور الإيمان» لاندې راغلى ده. (٢)

توله: سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول: مثل المجاهد في سبيل الله، والله أعلم بمن بجاهد في سبيله، كمثل ... إلخ: حضرت ابوهريره في وائى چه ما درسول الله تؤليم نه أوريدلى دى چه د الله تعالى په لاركنى د جهاد كونكى مثال راو هم الله تعالى بنه پوهيرى چه خوك د الله تعالى د پاره جهاد كوى، روژه دار او د شپى اودريدونكى او عبادت كونكى په شان دى.

دلته د پوهیدلو خبره دا ده چه والهاعلمهن بجاهدی سبیله جمله معترضه واقع شویده د کوم نه چه مقصد د نیت حال الله تعالی ته به مقصد د نیت حال الله تعالی ته به معلوم دی نو که د هغه نیت خالص د اعلاء کلمة الله د پاره وو نو هغه مجاهد فی سبیل الله دی. لیکن که د هغه نیت د دنیا مال او شهرت حاصلول وی نو هغه د الله تعالی د لاری سره دنیاهم شریکه کره اود هغه دا جهاد به نافع هم نه وی. (۳)

د پورتنی حدیث مکمل تشریح ((کتاب الایمان باب الجهاد من الایمان)) لاندی تیره شویده. (۴) د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت د پورتنی حدیث د باب د ترجمی سره انطباق واضح دی کوم کنیی چه مجاهد فی سبیل الله ته د روژه دار او عبادت گذار په شان گرځولی دی، او په دی باندی مرتبه او اجر او فضیلت بیان کریشویدی. (۵)

٣-بأب: الدعاء بالجهاد والشهادة للرجال والنساء

د ماقبل باب سره ربط اومناسبت: په وړاندینی بابونوکښی دابیان شوی وو چه جهاد د ټولو نه افضل عمل او مجاهد د ټولونه غوره سړی دی. نو چه کله د مجاهد او جهاد دا مرتبه او فضیلت دی نود دی مرتبی او فضیلت د پاره دعا هم کول پکاردی لکه څنګه رسول الله ترایخ او صحابه کرامو رضوان الله علیهم اجمعین او نورو تابعینو وغیره نه د جهاد او شهادت دعا نقل ده.

دَ ترجمة الباب مقصد د امام بخاری ﷺ د دی باب د ترجمی نه مقصد دا دی چه څنګه سړې

۱) (کشف الباری (ج۲ص۱۵۹)-

۲) (كشف الباري (ج ١ص ٤٥٩)-

٣) (انظرعمدة القارى (ج ١٤ ص ٨٤)-

^{؛) (}انظر کشف الباری (ج۲ص۳۰۵-۳۱۰)-

۵) (انظر عمدة القارى (ج ٤ ١ص ٨٤)-

11 د جهاد او شهادت د پاره دعا کولی شی دغه شان ښځې هم د جهاد او شهادت د پاره دعا کولی شی. د شهادت په دې دعاکښې ښځه او سړې دوآړه برابر دی او هیڅ فرق نشته (۱) او علامه ابن المنير کياي فرماني چه په دې امر باندې په خاص توګه د دې دپاره تنبيه فرمانیلی ده چه د شهادت دعا کولومطلب دا راوحی چه د کافرانو غلبه اوشی او مسلمانان مغلوب شي خو دا صورت مقصد نه دې نو په دې وجه که يوسړې د خپل ځان د پاره د شهادت دعا کوی نو په دې کښې هيڅ مضائقه نشته دا ځکه چه لوئ مقصد حاصلولو د پاره غيرمقصود برداشت کولې شي او د کافرانو غلبه مطلوب اومقصود نه ده ،بلکه غير مقصود غیرمطلوب ده، نود عظیم مقصد دَپاره دا غیر مقصود برداشت کولی شی (۲) دا هم وئیلی شی چه د شهادت دعا کولونه کله دا لازمیږی چه د کافرانو غلبه دی هم اوشی، زمونی مقصد خو شهادت دی، بس چه مون ته شهادت ملاؤ شی، پاتی شو کافران نو د هغوی د علاج د پاره زمون نور رونهه شته چه د هغوی د راګیرولود پاره کافی دی په دې وجه د شهادت په دعاسيه دا نه لازميږي چه د کافرانو د غلبي په دې کښي احتمال پيداشي او د هغوي تسلط لازم راشي.

شَهَادَةً فِي بَلَيِرَسُولِكَ: او حضرت عمر النَّتُوَّدُ دعا په **قوله**: وَقَالَ عُمَرُ اللَّهُمَّ ارْزُقُنِي توګه فرمائيلي وو چه اې الله ماته د خپل رسول کانتی په ښار کښې شهادت راکړي.

د مذكوره تعليق تخريج: دا تعليق امام بخارى بُولِيهُ د ((ديدبن اسلم عن ابيه عن عبر)) به طريق موصولاً ((كتاب فضائل المدينة باب كماهية النبى كالميلم ان تعرى المدينة)) ذيل كنبى نقل كړى دى او هلته په دې باندې کلام هم تیرشوې دې. (۳)

دَ مذكوره تعليق ذكر كولومقصد به دى تعليق كښى د حضرت عمر ترايم د شهادت د دعا ذكر دې د دې د پاره امام بخاري مُراكد خپل عادت موافق دا تعليق په توګه د استدلال على الترجمة ذکر کړې دې.(۴)

[٢٦٣٧]حَدَّثَنَاعَبُدُ اللَّهِ بُنُ يُوسُفَعَنُ مَالِكِ عَنْ إِسْحَاقَ بُنِ عَبْدِ اللَّهِ بُنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنْسِ بُنِ مَالِكِ (ه) رَضِىَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَهُ يَقُولُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

۱) (انظرعمدة القارى (ج ۱ ۱ ص ۸۵)-

۲) (انظر فتح الباری (ج۶ص۱۰)-

٣)(انظرصعيح البخاري(ج١ص٢٥٣-٢٥٤) كتاب فضائل المدينة باب كراهية النبي نظما تعرى المدينة رقم (١٨٩٠)-س

٤) (كشفُ الباري (ج ١ص١٧٧) ومقدمة لامع (ص٣٢٩-٣٣٠)-

٥) (قوله: عن انس بن مالك رضى الله عنه: الحديث اخرجه البخارى ايضًا (ج١ص٣٩٢) في كتاب الجهاد والسير باب فضل من يصرع في سبيل الله فمات فهو منهم رقم (٢٧٩٩-٢٨٠٠) و (ج١ص٣٠) باب غزوة المراة في البحر رقم (٢٨٨٧، ٢٨٨٧) و (ج١ص٥٠٤) باب ركوب البحر رقم (٢٨٩٤-٢٨٩٥) وفي كتاب التعبير (ج٢ص٣٤٠) باب الرؤيابالنهار رقّم (٢٠٠١-٢٠٠٢)....[بقيه حاشيه په راروانه صفحه....

بَدُّهُ لَ عَلَى أَمِّ حَرَامٍ بِنْتِ مِلْحَانَ فَتُطْعِبُهُ وَكَانَتُ أَمْ حَرَامٍ تَعْتَ عُبَادَةً بُنِ الصَّامِتِ فَلَهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَأَطْعَبَتُهُ وَجَعَلَتْ تَفْلِى رَأْسَهُ فَنَامَ رَسُولَ اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَأَطْعَبَتُهُ وَجَعَلَتْ تَفْلِى رَأْسَهُ فَنَامَ رَسُولَ اللَّهِ قَالَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَأَلْتُ فَقُلْتُ وَمَا يُضْحِكُكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلِم فَأَلَّتُ فَقُلْتُ وَمَا يُضْحِكُكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ اللَّهِ يَرْكَبُونَ ثَبَجَ هَذَا الْبَعْرِ مُلُوكًا عَلَى اللَّهِ قَالَتْ فَقُلْتُ وَمَا يُضْحِكُكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ اللَّهِ قَالَتُ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَمَ ثُمَّ وَضَعَ رَأْسَهُ ثُمَّ السَّيْفَظُ وَهُو يَضْحَكُ فَقُلْتُ وَمَا فَلَكُ وَمَا عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ ثُمَّ وَضَعَ رَأْسَهُ ثُمَّ السَّيْفَظُ وَهُو يَضْحَكُ فَقُلْتُ وَمَا فَلَكُ اللَّهُ أَن يَعْعَلَى مِنْهُمُ السَّيْفَظُ وَهُو يَضْحَكُ فَقُلْتُ وَمَا يَعْمَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَم نُو أُلِي اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَم نُولُ اللَّهُ عَلَى اللَّهِ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى مَا اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى ا

تراجم رجال

-عبدالله بريوسف: دا عبدالله بن يوسف تنيسي دمشقي مُنظم دي.

-مالك: داامام الهجرة، حضرت امام مالك بن انس المسالة دى دوارو حضراتو تذكره بدءالوى د دونم حديث لاندې راغلى ده . (١)

م- اسماق بن عبدالله بن ابی طلحه: داابویحیی اسحاق بن عبدالله بن ابی طلحه: طلحه بن عبدالله بن ابی طلحه بنتهی به البجلس...) لاندې طلحه بنتهی به البجلس...) لاندې تد شوی دی (۲)

توله: انه سمع يقول: كأن رسول الله صلى الله عليه وسلم يدخل على امر حرام بنت ملحان، فتطعمه: اسحاق بن عبدالله بن ابى طلحه م

^{...}دنیرمخ بقیه حاشیه] ومسلم فی صحیحة (ج۲ص۱۶۱)فی کتاب الامارة باب فضل الغزوفی البحر رقم ...دنیرمخ بقیه حاشیه] ومسلم فی صحیحة (ج۲ص۱۶) الغزوفی البحر رقم (۲۶۹) والترمذی (ح۱ص۲۹۶) والبحر رقم (۲۳۵) والبحر رقم (۲۲۵) والنسانی (ج۲ص۲۶) فی الجهاد باب فضل الجهاد فی غزوالبحر رقم(۱۶٤۵) والنسانی (ج۲ص۲۶) فی الجهاد باب فضل غزوالبحر رقم (۲۷۷۶)فی البحر رقم (۳۱۷۳) وابن ماجه (ص۱۹۹) فی ابواب الجهاد باب فضل غزوالبحر رقم (۲۷۷۶)۱) (کشف الباری (ج۱ص۲۸۹) اود امام مالک میشد د نورو حالاتودباره او گورئ کشف الباری (ج۲ص۸۰)-

۲) (کشف الباری (ج۳ص۲۱۳)-

۲) (کشف الباری (جس۲ص ٤)-

حضرت انس تان نه اوریدلی دی هغوی وئیل چه رسول الله ناش ام حرام بنت ملحان الله كره تشريف راوړولو نو ام حرام في الله به هغوى باندې خوراك كولو.

حضرت آم حرام رضی الله عنها دا مشهور صخابیه آم حرام بنت ملحان مالك بن خالد بن حضرت آم حرام بن جندب بن عامر بن غنم بن عدى الله الله ده د دوى تعلق د مديني منوري د انصارو د معروف قبيلي بنو النجار نه ده.

هغه د حضرت انس بن مَّالك اللَّهُ ترور ده (١) اود ام سُليم في الله عور ده (١) دا هم په خپل کنیت باندې مشهوره ده. اود هغیٰ په نوم کښې اختلاف دې، علامه ابن عبدالبر من فرمائي ((لااتف لهاعلى اسم صحيح))(٣) اوبعض حضراتود هغوى نوم "الرميماء" او بعض الغبيصاء بيان کړي. (۴) ليکن حافظ ابن حجر کاله په دوی باندې ردکولو سره فرمانی چه دا د ام سُلیم فی اوصاف دی نه چه د ام حرام نوم دی. (۵)

دُ صحیح قول مطابق د هغی رومبنئی نکاح حضرت عمرو بن قیس بن زیدبن سواد انصاری المانيخ سرة أوشوه (ع)

او عمرو بن قیس واقدي دَ بدريين نه شمير كړيدې او ابواسحاق ذكر كړي دي چه هغه دَ احد په شهیدانوکښې وو .(٧) اوحافظ ابن حجر مُشلط په هغوی باندې د اهل مغازی اتفاق نقل کریدی.(۸)

دَ هغه نه د ام حرام الله دوه جامن قيس او عبدالله پيداشو. (٩)

د حضرت عمرو بن قِيس الله و شهادت نه پس دا د حضرت عباده بن الصامت الله به نكاح كښې راغله اود هغې نه د ده يو ځوئ محمد پيداشو. (۱۰)

نبی کریم ﷺ به د هغی دیر اکرام کولو، هغی کره به ئی تشریف اوړلو او هلته به ئی کله كله قيلوله فرمائيله. (١١١)

اودا دُ هُغه صَحابياتونه وِه چا چهِ دُ رسِول الله كَالِيم په لاس باندې بيعت كړې وو.(١٢) دُ هغي دَ پاره نبي اکرم الله دَ هغي دَ پاره دَ شهادت دعا هم کړي وه. (۱۳)

۱) (انظر تهذیب الکمال (ج۳۵ص۳۳۸)-

٢) (سيراعلام النبلاء (ج ٢ ص ٣١۶)-

٣) (الاستيعاب بهامش الاصابة (ج ٤ ص٤٤٤)-

٤) (كذااخرجه ابونعيم كما في الآصابة (ج ٤ ص ١ ٤١)-

۵) (الاصابة (ج ٤ ص ١ ك ٤)-

۶) (تهذيب الكمال (ج۳۵س۳۲۹)-

٧) (الاصابة (ج٣ص١١) والمغزى للعلامة الواقدى (ج١ص١٤٢) باب تسمية من شهد بدراً من قريش والانصار

۸) (فتح البارى (ج۱۱ ص۷۳)-

٩) (الطَّبقات لابن سعد (ج٨ص٤٣٥)-

۱۰) (انظر الطبقات لابن سعد (ج۸ص٤٣٥)-

١١) (تهذيب الكمال (ج٣٥ص٣٣٩)-

۱۲) (الطبقات لابن سعد (ج٨ص٤٣٥)-

۱۳) (تهذیب الکمال (ج۳۵ص ۳۳۹)-

د حضرت عثمان کانو په زمانه کښې او د حضرت معاویه کانو په مشرنی کښې ۲۷یا ۲۸ د مصرت می دا د خپل خاوند حضرت عباده بن الصامت المائز سره د شام طرف ته د جهاد د

أُودًا دَ مسلمانانو رومبي لښكر وو چه د حضرت امير معاويه الله ي امارت كښي د رومیانو د ښکته کولو د پاره وتلې وو. دغه شان دا رومېې سمندرې جنګ هم وو، د کوم پیشن ګوئی چه هغوی نایم کړې وه او په دې جنګ کښې مسلمانانو قبرص فتح کړو ا واپستی کښې د ام حرام فاته د سورلنی د پاره قاچر وړاندې کریشو او په دې باندې سوریدو سره راپریوتله او شهیده شوه. او هم هلته خښ کړې شوه. (۲) د هغوی قبر عام زیارت ګاه او مرجع خلائق دې او هغه ئي "قبر المراة الصالحة" سره موسوم کړيدې (۳) علامه ذهبي المراة خوتردې پورې لیکلی دی چه انګریز او نور غیرمسلم هم د هغوی په قبر مبارك باندې حاضری ورکوی (۴)

دوی د نبی کریم نافظ نه د حدیث روایت کوی اود هغی نه روایت کونکوکښی د هغی خورى حضرت انس بن مالك المالي حضرت عطاء بن يسار، عمير بن الاسودا العنسي أو يعلي بن شُداد بن اوس أينهم شامل دى (٥) اود هغى خاوند حضرت عباده بن الصامت ألَيْنَ هم د هغی نه روایت کوی. (ع)

د هغې نه ډير احاديث مروى دى او په هغې كښې يو حديث متفق عليه دې. (٧) رض الله عنها وارضاها-

يواشكال د باب به حديث كنبى اوس ذكر شوچه حضور اكرم ترايخ به حضرت ام حرام رضي الله عنها كره تشريف اوړلو او هغې به حضوراكرم گانتم باندې خوراك خورولو. او هغې به د پيغمبر مَلِيُهُ په سر کښې سپاکي لټولي.

اوس دا اشکال پیدا کیږی چه دا خو پردئی ښځه وه، پردئی ښځې سره ځان له کیناستل خو جائز نه دى نو بيا به هغوى نائم څنګه هغې کره تشريف اوړلو؟

جوابونه علماود دې اشكال مختلف جوابونه وركړي دي. ابن وهب، ابوالقاسم جوهري، داودی او ابن عبدالبر ﷺ فرمائی چه حضرت ام حرام ﷺ د نبی کریم ﷺ رضاعی ترور وه.(٨) همدغه قول دَ مهلب رُهُ هُمَّ هم دي. (٩)

١) (حواله بالا-

۲) (انظر عمدة القارى (ج ۱ ۱ص۸۶-۸۷)-

٢) (حلية الاولياء (ج٢ص٤٢)-

٤) (سيراعلام النبلاء (ج٢ص٢٦)-

۵) (تهذيب الكمال (ج٣٥ص ٣٣٩)-

ع) (الاصابة (ج ٤ ص ٢ ٤ ٤)-

٧) (خلاصة الغزرجي (ص٩٧)-

۸) (فتع الباری (ج ۱ اص۸۷)-

۹) (شرح ابن بطالؔ (ج۵ص ۱۰)۔

بعض حضراتو داسی فرمانیلی دی چه حضرت ام حرام نظا د حضور اکرم نظاد پلار یا نیکه ترور وه، ځکه چه د هغوی نظا د نیکه عبدالمطلب مور د بنوالنجار نه وه (۱) نیکه ترور وه، ځکه چه د هغوی نظا د نیکه عبدالمطلب مور د بنوالنجار نه وه (۱) لیکن حافظ شرف الدین دمیاطی شیر فرمانی چه دا ټول تاویلات غلط دی او هغه وانی چه ام حرام نظا د نبی کریم نظا ترور کرخول که هغه رضاعی وی او که نسبی په یو شان هم صحیح نه ده. ځکه چه د هغوی تروریانی که رضاعی دی او که نسبی هغه مشهوری او معروفی دی، ام حرام نظا د هغوی نه نه ده. او د عبدالمطلب مور سلمی بنت عمروبن زید. بنوعدی بن النجار ضرور وه او ام حرام هم نجاریه دد، دا یوه رشته داسی ده چه په دی باندی د مجازی ترور اطلاق کیدیشی او د مجازی ترور کیدوسره د هغوی نظام حضرت باندی د مجازی ترور کیدوسره د هغوی نظام حضرت لازمیږی. او دا د هغوی نظام به د که چه د حضرت سعدبن وقاص نظا تعلق بنوزهره نه وو چه د هغوی نظام د مور بی بی آمنه د رشته دارانونه وو. نو حضرت سعد نظا نه د مخضرت آمنه نسبی رور وو او نه رضاعی (۲)

لیکن دا حافظ ابن خُجر ردکریدی او فرمائی چه دا واقعه د حجه الوداع سره نزدې نزدې ده او هغه وخت د حجاب حکم نازل شوې وو (۴)

او حافظ شرف الدین دمیاطی رئیلت د دې اشکال جواب دا ورکړیدې چه ممکن ده حضور نوځ هغې د یو محرم په موجودګئی کښې تشریف فرما ووځکه عادة د مُخدوم په راتلوباندې خادم او د هغه د کور خلق موجود وی (۵)

لیکن په دې جواب هم اشکال دې هغه دا چه په وړاندې حدیث کښې دی وجعلت تفلی داسه و چه حضرت ام حرام الله انه که که عند عضرت ام حرام الله انه که که هغه غیر محرمه وه نود حضور الله اس له نی څنګه لاس اوړلې شو ؟ (۶)

د دې اشکال قاضي ابوبرك ابن العربي د بعض علماؤ په خواله سره دا جواب وركريدې چه دا د نبي كريم ناليم د خصوصياتونه دى چه هغوى ناليم ته فتنه او فساد واقع كيدونه په امن كښي كيدلو په وجه د دې خبرې اجازت ووچه اجنبيات سره خلوت كوه. (٧)

قاضي عياض بيال به دې جواب باندې اعتراض کولوسره وائي چه د خصوصيت د پاره

١) (شرح النووى على مسلم (ج٢ص ١٤١) وعمدة القارى (ج٤١ص ٨٥)-

۲) (فتح الباری (ج۱۱ ص۸۷)-

٣) (الخصائص الكبرى (ج٢ص٢٤) باب اختصاصه صلى الله عليه وسلم باباحة النظر الى الاجتناب والخلوة بهن

٤) (فتح الباري (ج١١ ص٧٨)-

۵) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ۸۶)-

۶) (فتح الباری (ج ۱ ۱ص ۷۹)-

۷) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ۸۶)-

دعوی کافی نه ده. د دلیل ضرورت وی. (۱)

دليل عد دي؟ حافظ ابن حجر ميا قاضي ابوبكر ابن العربي ميد جواب ته احسن الاجهة و المانی دلائل واضح دی (۲) د غیرمحرم سره چه د کوم خلوت ممانعت کړې در موسود در هغه د فتنه د ویرې د وجه نه کړې دې او په دې وجه چه شیطان د ده په زړه کښې د درې د خوې دی هغه د فتنه د وسوسه یا ګناه وانچوی او هغوی ناتی خو معصوم وو. د هغوی ناتی په حق كنبي علوت بالاجنبيه جائزوو، هلته دننه هم څه د كناه ويره نه وه او نه د شيطان د وسوسي اچولو یا د غولولو او دهوکه کولو. نو علامه سیوطی الخوات (الخصائص الکبری) کنبی لیکی: (روقال ابن حجر: الذى وضح لنا بالادلة القوية ان من خصائص النبي صلى الله عليه وسلم جواز الخلوة بالاجنبية والنظر اليها وهوالجواب الصحيح عن قصة امر حهام بنت ملحان في دخوله عليها ودومه عندها وتغليتها راسه ولم يكن بينهما محرمية ولازوجية)) (٣)

سراج الدين ابن الملقن رُوالله چه د حافظ ابن حجر رُواله استاذ دى د خپلو بعض مشائخونه همدا نقل كړى دى. علامه جلال الدين سيوطى بُرَيْد (الخصائص الكبرى) كښې همدغه نقل کړي دي او هم دغه جواب مستندمعلوميږي.

توله: وكأنت امرحرام تحت عبادة بن الصامت : او ام حرام ظنَّهَا حضرت عباده بن

الصامت الماهية نكاح كنبسي وه.

د حدیث په مختلف طرق کمبنی تعارض د حدیث د مذکوره ټکړې نه معلومیږی چه حضرت ام حرام ظی د اول نه وه، لیکن راتلونکی روایاتوکښی د اول نه وه، لیکن راتلونکی روایاتوکښی راځی دې هغې نه معلومیږی چه هغه د حضرت عباده بن صامت طی په نکاح كښې روستوراغلى وه. ((باب غزوة ركوب البحر)) كښې ((محمد بن يحيى بن حمان بن انس)) په طريق كښى دى ((فتزوجههاعهادةفخرجههاالىالغزو)) (۴) دغه شان ((بابغزوةالمراة في الهجر)) كښې ((ابوطوالة عن ائس)) په روايت كښې ((فتزوجت عبادة بن الصامت)) دى (۵) اود مسلم په روايت کښې په صراحت سره ((محمد بنيحيه بنحمان

عنانس)) په طریق کښې ((فتروچت بهاعبادة بعد)) دی. د مذکوره تعارض حل: د حدیث شارحین د دې تعارض درې جوابونه فرمائی:

۱) (فتح الباری(ج ۱ ۱ص۷۸) -

۲) (حواله بالا(ج ۱ ۱ص ۸۹)-

٢) (الخصائص الكبرى (ج٢ص٢٤) باب اختصاصه صلى الله عليه وسلم باباحة النظر الى الاجتناب والخلوة بهن

٤) (انظر صحیح البخاری (ج ١ص٥٠٤) باب ركوب البحر رقم (٢٩٤، ٢٨٩٥)-

٥) (انظر صعيح البخاري (ج١ص٤٠٣) كتاب الجهاد باب غزوة المراة في البحر رقم (٢٨٧٧-٢٨٧٨)-

① علامه ابن التين روايد فرمائي كيديشي چه حضرت عباده بن صامت المايو اود هغي سرو نكاح كړى وي، روستو طلاق واقع شوى وي، بيا ام حرام في عمرو بن قيس تا فر سره نكار کړې وي، اود هغوي د غزوه احد د شهادت نه پس دوباره حضرت عباده اللي سره نکام شوې وي.(١)

🕜 علامه نووی او قاضی عیاض ﷺ دَ دی تعارض جواب دا ورکریدی چه دَ کومو روایاتونه دا معلومیږی چه هغه د حضرت عباده اللئو په نکاح کښې اول راغله . په دی کښې اخبار عمايوول دې يعني چه کومه واقعه روستو اوشوه د هغې ځېر ورکړيشويدې (۲) علامه مزی روای ایکلی دی چه ام حرام فات اول د عمرو بن قیس فات په نگاح کښې وه، هغې نه پس نی بیاحضرت عباده فات سره نکاح اوشوه. (۳)

د دې آخري جواب تائيد حافظ ابن حجر کالته هم کړيدې. هغوي فرمائي :

((والذي يظهرل ان الامربعكس ما وقع في الطبقات وان عبرو بن قيس تزوجها اولا فولدت له، ثم استشهر هورول الاقيس منها، وتزوجت بعد لا بعبادة)) (۴)

قوله: وجعلت تفلى راسه: او حضرت ام حرام الله أن نبى كريم الله الله عنه على الله عنه على الله عنه على الله عنه ا لټولي. تفلي: دا د باب ضرب نه د فعل مضارع مضارع معروف صيغه ده ((فليا)) د دې

مصدردي او ((فلی)) د سر نه سپګې راویستلو اولټولو ته وائی. (۵) اشکال د حدیث په مذکوره ټکړه کښې دا بیان شویدې چه حضرت ام حرام څنه د رسول الله ا مبارك سر نه سپائلى را ويستلى نو په دې كښى دا اشكال كيږى چه سپائلى خو د خولىي وغيره د بدبونى او خيرى نه پيدا كيږى او د حضور نائل خوله خو ډيره خوشبوداره وه نود هغوی په سرکښې د سپګو موجودګئي څه مطلب دې؟

دَمذكوره اشكال جوابونه (د دې جواب دا دې چه كيديشي د هغوي تانظ په سرمبارك كښې د کردوغبار په وجه سپکې پيدا شوي وي او هغه حضور ناهم ته څه تکليف نه رسوي (۶) اودا هم کیدیشی چه د نورو خلقو د کپرونه ورختلی وی (۷)

او دا هم کیدیشی چه په سرکښې سپګې وغیره نه وی او هسې حضرت ام حرام الله د هغوى ناهم دُ سر ويسته مبارك دُ آرام رسولو دُ پاره اخواديخوا كول (٨)

۱) (فتح الباری (ج^۶ص^{۷۶})-

۲) (انظر شرح مسلم للنووی (ج۲ص۲۶) وقتح الباری (ج۱۱ص۷۲)-

٣) (تهذيب آلكمال (ج٣٥ص ٣٣٦)-

٤) (انظر فتح الباري (ج١١ص٧٣) وكذاانظر الطبقات لابن سعد (ج٨ص ٤٣٤)-

۵) (انظر عمدة القارى (ج ٤ ١ص٨٥) ومجمع الانوار (٤ص٧٧٧) مادة "افلى" ـ

ع) (قال محمدطاهر الفتنى: ".... ولم يكن القمل يؤذيه تكريبًا له" مجمع بحار الانوار (ج ٤ ص١٧٧)-

٧) (الكوب الدرى (ج٢ص ٤٣١) وتعليقات بذلَّ الْمَجْهُود(جَّ ١ ١ ص ٤٣٩) -

٨) (حواله بالا وبذل المجهود (ج١١ص ٣٩٤) وايضًا انظر أوجز المسألك (ج٨ص ٣٧٤) وشرح المناوى على الشمائل المحمدية (ج٢ص١٨۶)-

نوله: فنامرسول الله صلى الله عليه وسلم ثمر استيقظ وهويضحك، قالت: فقلت: وما يضحك يا رسول الله؟ قال: "ناس من امتى عرضوا على غزاة في سبيل الله، يركبون ثبج(١) هذا البحر ملوكا على الاسرة، اومثل الملوك على

الاسرة: بیا حضور نظیم اوده شو او لر ساعت په په خندا راویښ شو.ام حرام نی فی فرمائی چه ما عرض اوکړو یا رسول الله! څه څیز تاسو اوخندولئی؟ هغوی نظیم اوفرمائیل چه زما د امت څه خلق ماته پیش کړیشو چه د الله تعالی په لارکښی جهاد کولو سره د هغه سمندر په شا باندې د بادشاهانو په شان به په تخت سواره وي.

ذمذ كوره عبارت مطلب حافظ ابن عبدالبر مُنَاسَة فرمانى چه حضور تاثیم ته د هغه مجاهدینو. په خوب كښې چه څوك به سمندرى جهاد كوى د مثالى صورت اوخودلى شو چه هغوى به په جنت كښې په تختونو د بادشاهانو په شان ناست وى. الله تعالى د جنتيانو په صفت كښې بيان كړى دى. (عَلَى سُرُ مِّتَقْبِلِينَ ٩) (٢) چه هغوى به په تختونو يو بل ته مخامخ ناست وى. اووئى فرمائيل (عَلَى الْرَابِكِ مُتَكِنُونَ ٩) (٣) چه په پالنګونو به ئى تكياګانى لګولى وى او همدغه قول د ابن بطال مُعَلَّمُ دى. (۴)

قاضی عیاض (۵) او علامه قرطبی رکزانیه (۶) فرمائی چه په دې کښې د هغه مجاهدینو دنیاوی صلاح او فلاح اود رزق د زیاتی او فراخنی طرف ته اشاره ده. حافظ ابن حجر رکزانیه د حافظ ابن عبدالبر رکزانیه د قول د تائید او قاضی عیاض رکزانیه باندې د رد د پاره فرمائی

((نقلت وفي هذا الاحتمال بعد، والاول اظهر) (٧)

ابن حجر منظم فرمائي قاضي عياض او علامه قرطبي خبره د ظاهر نه خلاف ده اود ابن عبدالبر خبره ډيره بهتره ده.

قوله: شك اسح أق : شك د اسحاق د طرف نه دي.

مطلب دا دې چه په حدیث کښی ((ملوکاعلی الاس قاومثل الملوث علی الاس ق)) کوم چه شك سره بیان شوې دې نودا شك د حضرت انس تاشي شاګرد اسحاق بن عبدالله ته شویدې.

۱) (قوله: ثبج بفتح الثاء والباء الموحدة بعدها جيم. قال الخطابى فى اعلام الحديث (ج Υ 0 البجم وقبج كل شئ: وسطه. وانظر عمدةالقارى (ج Υ 1 اص Υ 2) -

٢) (الصافات: ٤ ٤)-

٣) (المطففين:٢٢) -

 $^{^{2}}$) (التمهيد (ج ۱ 0 ص 0) وفتح البارى (ج ۱ 0 ص 0) وشرح ابن بطال (ج 0

۵) (فتع الباري (ج۱۱ص ۸٤)-

۶) (انظر عمدة القارى (ج ۱ ۱ ص ۸۶)-

۷) (فتع الباري (ج۱۱ص ۷٤)-

لیکن دغه روایت ((ابوطوالهٔ عن انس)) طریق نه هم مروی دی، په دې کښې بغیر د شك ممرا

الملوك على الأسمة وي. (١)

قوله: قالت فقلت: يارسول الله ادع الله ان يجعلني منهم فدعا لها رسول الله

ياره دعا اوفرمائيل.

قوله: <u>ثمروضع راسه ثمراستيقظ وهويضحك فقلت ومايضحكك يأرسول الله؟ قال</u>

ناس من امتى عرضواعلى غزاةً في سبيل الله كماقال في الاول: بيا دوباره هغوى الله كماقال في الاول: بيا دوباره هغوى الله كماقال في الاولى المادية والمادية والمادية المادية المادي يارسول الله! تاسو ولي اوخندل؟هغوى عُلِيْمُ دَ اولني قُولَ په شان اوفَرمَائيلَ چه زمّا دَ آمَنْ څه خلق زما په وړاندې پیش کړیشو. چه د الله تعالی په لارکښې جهادکوی

قوله: قالت فقلت يارسول الله ادع الله ان يجعلني منهم، قال انت من

اولين: حضرت ام حرام ظِنْهُما فرمائي چه ما اووئيل يارسول الله!د الله تعالى نه ماله دت اوغواره چه زه هم په دوي کښې شامله شم. هغوي تانځ ارشاد اوفرمائيلو نه، ته به د اولنني

قوله: فركبتِ البحر في زمر معاوية بن ابي سفيان فصرعت عن دابتها

حين خرجت من البحر فهلكت : هغه دَ حضرت معاويه بن ابي سفيان كَيْݣُمَّا بِه زِمَانِه كښې د هغه سره په سمندري سفرباندې اووتله او د سمندر نه واپس راتلوباندې د خپل ځاروی نه پريوتله او شهيده شوه.

په پورتنی عبارت کښې دا اوخودلې شوچه د حضرت معاویه لاکتر په زمانه کښې چه هغه د شام گورنر وو د حضرت عثمان الله و خلافت زمانه وه، هغه وخت د حضرت ام حرام في ا سِمندری سِفر واقعه پیښه شوې وه او هغې ته الله تعاليي شهادت نصیب کړو.

د حدیث د ظاهر سیاق نه دا معلومیږی چه دا واقعه د حضرت معاویه د خلافت د زمانې د ا ليكن د عام اهل سير رائي دا ده چه دا واقعه هغه وخت پيښه شوي چه څه وخت حضرت معاويه الله المالة و حضرت عثمان الله و طرف نه د شام كورنر وو (٢)

د قاضي عياض او بعض نورو حضراتو ميلان دې طرف ته دې چه د حضرت معاويه الله په دور خلافت کښي دا واقعه پيښه شويده. (٣)

١) (انظر فتح الباري (ج١١ص ٧٤) وايضًا الصحيح للبخاري (ج١ص٣٠٢) كتاب الجهاد باب غزو العرامة في البحر رقم (٢٨٧٧-٢٨٧٨)-

٢) (فتح الباري (ج١١ص٧٥) وعمدة القاري(ج١٤ص٧٥)-

٣) (فتع الباري (ج ١ ١ص٧٥)-

خو په تاريخي حيثيت سره دا خبره صحيح نه معلوميږي ځکه چه تاريخ دانانو د دې واقعې متعلق درې تاريخونه ليکلي دي:

آبن الکلبی، خلیفه بن خیاط او ابن ابی حاتم وغیره وائی چه دا واقعه د کال ۲۸هجری ده (۱) و یعقوب بن سفیان او ابن زید وغیره وائی چه دا واقعه د کال ۲۷هجری ده (۲) ابن جریر طبری د واقدی، ابن لهیعه او ابومعشر المدنی السندهی نه نقل کپی دی چه دا واقعه د حضرت عثمان تاتئ د خلافت به زمانه کبنی به کال ۳۳هجری کبنی وه (۳) بهرحال د کومی زمانی چه هم دا واقعه وی هم د حضرت عثمان تاتئ د خلافت به زمانه کبنی پیبه شویده ځکه چه د هغوی شهادت به کال ۳۵هجری دی الحجه کبنی شویدی او حافظ صاحب رومبنی قول راجح محرخولی دی هغه د دریواړو تاریخونو لیکلو نه پس لیکی: ((والاول اصح، وکلهافی ځلافة عثمان ایفیالانه تتل فی اخرست شدیسه وثلاثین)) (۴)

د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت: علامه ابن التین گراید د حدیث باب په ترجمه باندې اعتراض کولو سره فرمائی چه په حدیث او د باب په ترجمه کښې مناسبت نشته، ځکه چه په ترجمه کښې د شهادت خواهش او په حدیث کښې د غزوې د خواهش ذکر دې. (۵) د دې اعتراض جواب دا ورکړیشویدې چه د غزوې د خواهش ثمره عظمی هم شهادت دې څکه چه په جهاد کښې د شرکت کولومقصد دالله تعالی په لارکښې د شهادت حصول دې. (۶)

م-بَاب: دَرَجَاتِ الْمُجَاهِدِينَ فِي سَبِيلِ اللهِ يُقَالُ هَذِهِ سَبِيلِي وَهَذَا سَبِيلِي

دَماقبل باب سره ربط او مناسبت په مَاقبل باب کښې د شهادت د دعا ذکر وو اوس په دې باب کښې د شهادت په نتيجه کښې چه مجاهد ته کوم درجات او انعامات حاصليږي د هغې ذکردي.

د ترجمة الباب مقصد: امام بخاری رئالته د دی باب د ترجمه نه دا خودل غواری چه هغه مجاهد چه خاص د الله تعالى د پاره جنگ او جهاد كوى اود دنيا د شهرت وغيره طرف ته د هغه نظر نه وى د هغه د پاره الله تعالى په جنت كښى او چتى درجى تيارى ساتلى دى. (٤)

١) (حواله بالا وشرح ابن بطال(ج ٩ص١١)-

٢) (فتح الباري (ج ١ص ٧٥) وعمدة القاري (ج ١ ١ص ٧٨)-

۳) (فتح الباري (ج۱۱ص۷۶)-

۱) (قطح البارى رج ۱ الص ۱۷) -4) (حواله بالا: واليه مال اعلماة الابى المالكى انظر اكمال اكمال المعلم (ج۵ص ۲۶۰) وايضًا انظر هذاالبحث فى الكامللائن الائير (ج٣ص٤٨) ذكر فتح قبرس-

۵) (فتح الباري (ج۶ص۱۱)-

ع) (انظر عمدة القآرى (ج ٤ ١ص٧٥) وفتح البارى (ج ٤ص١١)-

٧) (عمدة القارى (ج ٤ أص٨٨)-

قوله: يقال: هذه سبيلي، وهذا سبيلي: وئيلي شي هذه سبيلي (تانيث سره) او منه

سبیلی (تذکیرسره).

دُ دَى عَبَارِتَ دَ ذَكُو كُولُومَقَصَد دَ امام بخارى بَهُ الله دَ دَى عبارت نه دا غرض دى چه لفظ سبيل مذكر او مؤنث دواره شان لوستلى شى او همدغه دَ امام فراء مذهب دى، فرا، دَ قرآن كريم آيت (يَايَهَا الّذِينَ امْنُوا لَا تَكُونُوا كَالْذِينَ كَفَرُوا وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمُ اِذَا ضَرَيُوا فِي الْأَرْضِ اَوْ كَالُوا عَرَان كريم آيت (يَايَهَا الّذِينَ امْنُوا لَا تَكُونُوا كَالْذِينَ كَفَرُوا وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمُ اِذَا ضَرَيُوا فِي الْأَرْضِ اَوْ كَالْوَيْن كَفَرُوا وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمُ اِذَا ضَرَيْوا فِي الْأَرْضِ اَوْ كَالْوَيْن عَرَان دَ آيت طرف ته واپس كيبى او كه تاسوغوارئي نودادسيل طرف ته هم واپس كولى شى حُكه چه هغه كله كله مؤنث كيبى (٢) قوله: قَالُ أَبُو عَبْل اللّهِ غُزًّا [آل عمران: ٢٥١] وَاحِدُهَا غَازٍ هُمْ دَرَجَاتُ [آل عمران: ٢٥١] وَاحِدُهَا غَازٍ هُمْ دَرَجَاتٌ [آل عمران: ٢٥١] واحد عزا جمع ده او دَ دى واحد عاز دى.

دَ امام بخارى رُحَالَةُ دَ دى قول مطلب دا دي چه دَ قرآن كريم آيت ﴿ يَاكَيْهَا الَّذِيْنَ امَّنُوا لَا تَكُوْنُوا كَالَّذِيْنَكَفَرُوْا وَقَالُوْالِاِخُوَانِهِمُ اِذَا ضَرَبُوا فِي الْأَرْضِ اَوْكَانُوا غُزَّى ... الخ﴾ (٣) كښى غزى كوم لفظ راغلى دى هغه دَ غاز جمع ده.

[٢٦٢٠] حَذَّثَنَا يَعُنَى بُنُ صَالِحٍ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ عَنْ هِلَالِ بْنِ عَلِي عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَادٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةً (ه) رَضِى اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَبِرَسُولِهِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَصَامَ رَمَضَانَ كَانَ حَقًّا عَلَى اللَّهِ أَنْ يُدُخِلَهُ الْجَنَّةَ جَاهَدَ فِي وَبِرَسُولِهِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَصَامَ رَمَضَانَ كَانَ حَقًّا عَلَى اللَّهِ أَنْ يُدُخِلَهُ الْجَنَّةَ جَاهَدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَفْلَانُبَقِّرُ النَّاسَ قَالَ إِنَّ فِي الْجَنَّةِ مِائَةَ دَرَجَةٍ أَعَدَهُ اللَّهُ لِلْمُجَاهِدِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ مَا بَيْنَ الدَّرَجَتَيُنِ كَتَا بَيْنَ اللَّهُ لِلْمُجَاهِدِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ مَا بَيْنَ الدَّرَجَتَيُنِ كَتَا بَيْنَ اللَّهُ لِلْمُجَاهِدِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ مَا بَيْنَ الدَّرَجَتَيُنِ كَتَا بَيْنَ

۱) (لقمان:۶)-

۲) (عمدة القارى (ج ۲ ص ۸۹) وفتح القارى (ج ۶ ص ۱۱) وانظرالنهاية لابن الاثير (ج ۲ ص ۳۳۸)قال ابن الاثير بير المجارية ويذكر ويؤنث، والتانيث فيها اغلب ـ

٣) (ال عمران:١٥۶)-

٤) (فتح البارى (ج۶ص ١١)-

۵) (قوله: عن ابي هريرة رضى الله عنه: الحديث اخرجه البخارى ايضًا (ج٢ص١٠٣) كتاب التوحيد باب (وكان عرشه على الماء) رقم (٧٤٢٣) والحديث من افراده-

النَّمَاءِ وَالْأَرْضِ فَإِذَا سَأَلْتُمُ اللَّهَ فَاسْأَلُوهُ الْفِرُدَوْسَ فَإِنَّهُ أَوْسَطُ الْجَنَّةِ وَأَعْلَى الْجَنَّةِ أَرَاهُ فَوْقَهُ عَرْشُ الزِّحْن وَمِنْهُ تَفَجَّرُ أَنْهَا رُالْجَنَّةِ

فَالَ مُعَمَّدُ بْنُ فُلَيْحِ عَنْ أَبِيهِ وَفَوْقَهُ عَرْشُ الرَّحْمَنِ [١٨٨]

تراجم رجال

ا- يحيى برب صالح: دا يحيى بن صالح وحاظى شامى بيني دي (١)

r-فليح: دا ابويحيى فيح عبدالملك بن سليمان بينيد دي.

- هلال بر على: داهلال بن على بن اسامه قرشى بها دى د دى دواړو حسراتو تفصيلى تذكره ((كتاب العلم باب من سئل علما وهومشتغل ف حديثه) لاندې راغلى دى (٢)

۳- عطاء برب یسار: دا ابومحمدعطاء بن یسار هلالی مدنی مینید دی. د دوی حالات (کتاب الایمان باب کغمان العشیرو کفر دون کفر)) به ذیل کنبی تیرشوی دی (۳)

۵- ابوهریره رضی الله عنه: دا مشهورصحابی حضرت ابوهریره خاتی دی. د دوی تفصیلی حالات (رکتاب الایمان باب امور الایمان) کښی راغلی دی. (۴)

توله: قال النبي صلى الله عليه وسلم: من امن بالله ورسوله، واقام الصلاة وصام رمضان كان حقاً على الله ان يدخله الجنة: نبى كريم تأثيم ارشاد فرمائيلي چه كوم سړى په الله تعالى باندى اود هغه په رسول باندى ايمان راوړلو، مونځ ئى اوكړو او د رمضان روژې ئى وساتلى نو په الله تعالى باندې واجب دى چه هغه جنت ته داخل كرى.

یواشکال اود هغی جوابونه دلته په حدیث کښی د صلاة او صوم ذکر خو شته لیکن د حج او زکوة ذکر نشته، سره د دی چه څنګه مونځ او روژه د اسلام بنیادی ارکانونه دی دغه شان زکوة او حج هم بنیادی ارکان دی.

علامه کرمانی برای او ابن بطال برای دا توجیه بیان کریده چه د باب په حدیث کښې زکوة او حج نه ذکرکیدو وجه د دې دواړو د هغه وخت پورې نه فرض کیدل دی (۵)

حافظ صاحب جواب ورکړيدې چه دلته د زکوة او حج ذکر د يو راوي نه حذف شويدې ځکه

١) (د دوى د حالاتود باره او محوري كتاب الصلاة باب اذاكان الثوب ضيقا-

٢) (كشف البارى (ج٣ص٥٣)-

۲) (کشف الباری (ج۲ص ۲۰۶)-

٤) (کشف الباری (ج ۱ ص ۶۵۹) -

٥) (انظر شرح الكرماني (ج١٢ص٩٨-٩٩) وشرح ابن بطال (ج٥ص١٣)-

كشفُ البَارى . عشفُ البَارى . ٩٨

چه د ترمذی په روایت کوم چه حضرت معاذ بن جبل ناتن نه مروی دې په هغې کښې د حج ذکر موجود دې (۱) او هم په دې کښې حضرت معاذ کاتن فرمانی (لاادری اد کرالز کا تام لا؟) (۲) او حافظ صاحب دونم جواب دا ورکړیدې چه د حدیث مقصد د ارکان اسلام استیعاب نه دې وجه په مونځ او روژه اکتفاء او کړیشوه . (۳)

ررکان حقاعلی الله ان یدهله الجنة) کښی حق په طریقه د فضل وکرم دی، دا مطلب نه دی چه الله تعالی به تعالی به تعالی به تعالی به خپل فضل او کرم سره هغه په جنت کښی داخل و اجب دی، بلکه مطلب دا دی چه الله تعالی به په خپل فضل او کرم سره هغه په جنت کښی داخل کړی (۴)

قوله: جاهد في سبيل الله اوجلس في ارضه التي فيها : كه د الله تعالى به لاركښي جهاد آوكړي يا هغه ځائ كښي كيني چرته چه پيدا شويدې

په دې غبارت کښې حضور ناځ هغه سړی ته چه څوك جهاد نشي کولې تسلی ورکوی چه هغه هم د اجرنه محروم نه دې ځکه چه په ايمان باندې استقامت او نور فرائضو ادا کولو التزام به هغه جنت ته رسوی، ځير دې که د هغه درجه د مجاهدينو د درجې نه کمه وی (۵) د في سبيل الله مطلب اوس په دې ځان پوهه کړئي چه د سبيل الله لفظ په دوو معنوکښې استعماليي:

آ يوه معنى د دى عام ده، د خير هغه كار دكوم مقصد چه د الله تعالى رضا او تقرب الى الله وى په هغى د سبيل الله اطلاق كيږى لكه د فرائضو ادا كول، نوافل او د نورو عباداتو او طاعاتو اهتمام وغيره، دا اطلاق فى سبيل الله عام دى. امام بخارى مُحَالَيْهُ هم په (كتابالجعة) كنبى ((عهاية بن رفاعة)) په طريق يو حديث نقل كوى، په دې كښى دى:

((ادركنى ابرعبس وانا اذهب الى الجبعة فقال: سبعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول: من اغبرت قدماة في سبيل الله حرمه الله على النار) (۶)

حضرت عبایه بن رفاعه فرمانی چه زه د جمعه د ادا کولود پاره جمات ته روان ووم، ماته حضرت ابوعبس المائز ملاؤ شو او وئی فرمائیل ماد رسول الله گالم نه اوریدلی دی چه د کوم سری قدمونه چه د الله تعالی به په لارکښی په دوړوککړ شی نو الله تعالی به په هغه باندې د دوزخ اور به هغه ته نه رسی.

دلته ذهاب الى الجمعة باندى حضرت ابوعبس المؤنز د حضور اكرم كالم حديث واورولو او هغه

١) (انظر الجامع للترمذي (ج٢ص٧٩) ابواب صفة الجنة باب ماجاء في صفة درجات الجنة رقم (٢٥٣٠)-

۲) (انظرفتح الباري (ج۶ص۱۲)-

٣) (انظرفتح الباري (ج٤ص١٢)-

ا (حواله بالا –

۵) (انظر فتح الباری(ج۶ص۱۲) وشرح ابن بطال (ج۵ص۱۳)-

٤) (انظر صحيح البخاري (ج ١ص ١٢٤) كتاب الجمعة باب المشي الى الجمعة رقم (٩٠٧) _

دمابال الجمعة سبيل الله سره تعبير كره، دا اطلاق عام دي.

﴿ دُوئِمه معنى دَ في سبيل الله خاص ده، هغه جهاد أو قتال دي، نو چه كله في سبيل الله مطلق ذكر شي نو دينه مراد قتال وي. (١)

توله: فقالوا: يارسول الله افلانبشرالناس؟ ضحابه كرامو رمر (ه رق مبه رمه عرض اوكرو يارسول الله! آيا مونو خلقو ته ددې زيرې وركړو. حضور خلفي ته مخاطب كونكې صحابي حضرت معاذ بن جبل خلفو و لكه چه د ترمذي په روايت كښې دي (قال معاذ: الا اغبر به ناالناس؟) ۲۰، يا حضرت ابوالدرداء خلفو و لكه چه د طبراني په روايت كښې دي (۳) قوله: قال: ان في الجنة مائة درجة اعمها الله للمجاهدين في سبيل الله مابين الدرجتين كمابين السهاء والارض: حضور خلفي ارشاد اوفرمانيلو چه په جنت كښې سل منازل دي كوم چه الله تعالى د هغه په لاركښې د جهاد كونكود پاره تيار كړى دى. د دوو منزلونو په مينځ كښې فاصله دومره ده لكه د زمكې او آسمان په مينځ كښې فاصله.

د جنت خومره درجی دی د جنت خومره درجی دی په دې کښی اختلاف دې، د حدیث باب نه خو دا معلومیږی چه د جنت ټولی درجی سل دی ، د عبدالله بن عمر گان په روایت کښی فرمانیلی شوی دی ((یقال یعنی لصاحب القهان: اقها وارق ورتل کها کنت ترتل فی الدیا، فان منزلتك

عنداخراية تقرؤبها)(۴)

ملاعلی قاری براید و رمائی چه په حدیث کښی راغلی دی چه د جنت درجی د قرآن کریم د آیاتونو برابر دی. د پورتنی حدیث نه هم دی طرف ته اشاره کیږی چه د جنت درجی د قرآن کریم د آیاتونو برابر دی. د شمیر مطابق دی او د قرآن مجید آیاتونه (۱۲۲۲) خو معروف دی، نو صرف سل درجات په جنت کښی کیدل څنګه قبول کړیشی؟ د دی اشکال جواب حضرت شیخ الحدیث صاحب دا ورکړیدی چه ((۱۳ الجنة ماتة درجة)) روایت نه لوی درجات مراد دی او د درجات صغائر تذکره دلته نه ده شوی اود جنت ټول منازل د قرآن پاك دآیاتونو برابر دی (۵) حافظ ابن حجر فرمانی چه د حدیث د سیاق نه دا معنی نه لازمیږی چه د جنت درجی هم

١) (انظر النهاية لابن الاثير الجزرى (ج٢ص٣٣٨-٣٣٩) مادة سبل وشرح القسطلاني (ج٥ص٩٩)-

٢) (انظر الجامع للترمذي (ج٢ص٧٩) آبواب صفة الجنة باب ماجاء في صَفة درجات الجَنة رقم (٢٥٣٠)-

۲) (فتع الباري (ج۲ص۱۰۲)-

أ) (انظر الجامع للترمذي (ج٢ص١٩) ابواب فضائل القران باب (ان الذي ليس في جوفه من القران كالبيت الخرب) رقم (٢٩١٤) وسنن ابي داؤد (ج١ص٢٠٤) كتاب الصلاة باب استحباب الترتيل في القراءة رقم (٢٤٤٤)۔

^{2) (}تعليقات الشيخ الكاندهلي على الكوكب الدرى (ج٣ص ٣١٠)-

معابری سل دی بلکه نورې هم دی لیکن ذکر د مجاهدینو کیږی نو صرف هم د دوی د درجو تعیین شویدی (۱)

دَ جنت دَ دوو درجومينځ کښې څومره فاصله ده؟ دَباب په حديث کښې راغلی دی ((مايين الدرجتين كما بين السماء والارض)) چه د جنت د دوو درجو په مينځ كښې به څومره فاصله وي څومره چه د آسمان او زمکې په منيځ کښې ده.

اوس د زمکې او آسمان په مينځ کښې څومره فاصله ده؟ په دې سلسله کښې مختلف روایات دی. دُ ترمذی شریف په روایت کښې دی چه د زمکې او آسمان په مینځ کښې د پنځوسوو کالو فاصله ده .

«... ثم قال: هل تدرون كم بينكم وبينها ؟قالوا: الله ورسوله اعلم، قال: بينكم وبينها رمسين خمس مائة

د ابن ماجه، سنن ابی داؤد او هم ترمذی یو روایت کوم چه حضرت عباس بن عبدالمطلب **دی** نه مروی دی:

«قال: فان بعدماً بينها اما واحدة واما اثنتان اوثلاث وسبعون سنة... بهم و رمكي او آسمان به مينخ كښى ٧١. ٧٧يا ٧٧كالوفاصله ده.

دَتعارض جوابونه علامه انورشاه كشميري أينية د حضرت عباس بن عبدالمطلب المنود د

روایت باره کښې فرمائی چه دا روایت وهم دې، چه یو راوی د روایت نه ۲۰ نه زیات کالونه ساقط کړی دی صحیح دا دی چه د دې دواړو په مینځ کښې د پنځو سوو کالو فاصله ده. (۴)

لیکن حافظ ابن حجر مراد په دواړو روایتونوکښې جمع او تطبیق لار اختیارولوسره فرمانی چه په کوم روایت کښې ۷۲، ۷۲ یا ۷۳ کالوذکر دې هلته سرعت سِیر مراد دې او چه کوم ځائ کښې پنځه سووکالوذکر دې هلته بطوء سیر مراد دې، یعنی د سرعت سیر په اعتبار سره ۷۱، ۷۲ یا ۷۳ کالوفاصله جوړیږی او د بطوء سیر په اعتبار سره پنځه سوو کالو فاصله جوړيږي. (۵)

علامه خلیل احمدسهارنبوری مربع دا جواب ورکریدی چه د روایتونو په مینځ کښی دا تفاوت د سائر (تلونکی) په اعتبار سره دی. ځکه چه د انسان او اس په چال کښی خو ښکاره

۱) (فتع الباری (ج۶ص۱۲)-

٢) (انظر الجامع للترمذي (ج۶ص ١۶۵) ابواب تفسيرالقران (باب ومن) سورة الحديد رقم (٣٢٩٨)-

٣) (انظر سنن ابن ماجه باب في الجهمية رقم (٤٧٢٣) والجامع للترمذي (ج٢ص١٥٩) ابواب تفسير القران (باب) ومن سورة الحاقة رقم (٣٣٢٠)-

٤) (انظر فيض الباري (ج٣ص٢٤)-

۵) (انظر فتح الباري (ج١٣ص١٣ ٤ - ١٤) -

خېره ده چه فرق دي. (۱)

بیا د ترمذی یو روایت کوم چه «محمد بن جعادة عن طاعین ای هریرة)) په طرق سره مروی دی . کنبی وارد شوی دی چه د جنت د هرو دوو درجو په مینځ کنبی د سلوکالو فاصله ده. «قال رسول الله صلی الله علیه وسلم: فی الجنة مائة درجة، مابین کل درجة مائة عام» صاود طبرانی په یوروایت کنبی دی چه د پنځوسوو کالو فاصله ده. (۳)

دا د پنځو سوو کالو روایت د دې روایت تائید کوي کوم کښې چه د زمکې او آسمان په مینځ کښې پنځو سوو کالو فاصله بیان شویده لیکن د سلو کالو روایت مشکل جوړیږي اوس به یا دا په تکثیر باندې عمل کولې شي یعنې دا به وئیلې شي چه سل کاله د تحدید د پاره نه دې بلکه کثرت بیانول مقصد دې، نو اشکال به ختم شي، یا بیا هم هغه د حافظ صاحب جواب اختیار کړیشي کوم چه مونږ اوس پورته ذکر کړو

قوله: فأذا سألتم الله فأسألوه الفردوس: او چه كله تاسو د الله تعالى نه غواړنى نو فردوس غواړئى.

•ڼ دوس هغه باغ ته وائي په کوم کښې چه هر څيز وي، ګلونه او ميوې په دې کښې وي. د خوارك څښاك سامان هم په دې کښې وي او نهرونه هم په دې کښې وي.(۴)

د دې جمع فراديس راځي. (۵)

قوله: فأنه اوسط الجنة واعلى الجنة: بي شكه فردوس دَ جنت غوره او اعلى حصه ده علامه ابن بطال فرمائي چه اوسط نه مراد متوسط وى يعنى فردوس دَ جنت په مينځ كښې واقع دې او جنت دا دَ خلورو واړو طرفونونه راګير كړيدې (۶)

قوله: ارالاقال: وفوقه عرش الرحمر. دا د امام بخاری رئید شیخ یحیی بن صالح قوله: ارالاقال: وفوقه عرش الرحمر. دا د امام بخاری رئید شیخ یحیی بن صالح قول دی، هغه فرمائی چه زما په دی کښی شك دی چه زما استاذ فلیح کیدیشی داسی وئیلی ((وفوته عرش الرحمن)) لیکن دا روایت د یحیی بن صالح نه علاوه د فلیح نورو شاگردانو بغیر د شك نه نقل کړیدې لکه چه اسماعیلی په نسخه کښی یونس بن محمد وغیره روایت دی (۷)

قوله: ومنه تفجر انهار الجنة او هم د فردوس نه د جنت نهرونه جاري شوى دى.

۱) (بذل المجهود (ج۱۸ص۲۵۷)-

٢) (انظر الجامع للترمذي (ج٢ص) ابواب صفة الجنة باب ماجاء في صفة درجات الجنة رقم (٢٥٢٩)-

٣) (انظر مجمع الزوائد للهيثمي (ج١٠ص١٠) كتاب اهل الجنة باب في درجات الجنة -

٤) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ٩٠)-

٥) (مجمع بحار الانوار (ج ٤ ص١١٥) ((مادة فردس-

۶) (انظر شرح ابن بطال (ج۵ص۱۲)-

٧) (انظر عمدةالقاري (ج٤ ١ص٩١)-

بعضي حضراتو منه ضمير عرش ته راګرځولې دې په دې صورت کښې به مطلب دا وي چه د عرش نه د جنت نهرونه راوځي (۱)

لیکن ابن حجر مرایی خه همنه ضمیر د عرش طرف ته افرخول وهم دی بلکه دا ضمیرد فردوس طرف ته افرخول وهم دی بلکه دا ضمیرد فردوس نه د فردونه راوځی. (۲)

تفجر په اصل کښې تتفجر وو، د دې نه يوه تاء حذف کړيشويده. او التفجر معني راوتل يعني راخوټکيدل . (۳)

قوله: قال محمد بن فليح على ابيه: وفوقه عرش الرحمر. محمد بن فليح دَ خپل پلار نه نقل كړيدى چه هغوى وئيلي دى چه دَ فردوس دپاسه دَ الله تعالى عرش دى. دَ تعليق ذكر كولومقصد او تخويج: د امام بخارى رُولاي مقصد دَ دې تعليق نه دا بيان كول دى چه دا روايت كله دَ فليح ځوى روايت كړو نو هغه بغيردَ شك نه په جزم سره ((وقوته عش الرحمن)) اوفرمائيلو. او يحيى بن صالح په شان شك سره ئى بيان نه كړو. (۴))

دا تعلیق امام بخاری میشیکتاب التوحید کښی (عن ابراهیم عن محمد بن قلیح عن ابیه)) په طریق سره موصولاً نقل کړیدی، دینه علاوه امام اسماعیلی میشی هم دا حدیث ((یونس بن محمد عن قلیح)) په طریق باندې بغیرشك نه روایت کړیدې. (۵)

توله: وفوقه عرش الرحمر : دَ اكثرو راويانو په روايت كښې نوته د ظرفيت په بنا، باندې نصب سره دي. (۶)

البته به مشارق کښې دی چه ابومحمد اصیلی کښت دا لفظ مرفوع نقل کړیدې لیکن حافظ ابن حجر کښتادا مرجوح ګرځولي دې. (۷)

بین خبر سده دې نو د مذکوره جملې مطلب به داوی چه د فردوس د پاسه د الله تعالی عرش دې او که رفع سره دې نو هغه وخت به دا معنی وی چه د فردوس چت عرش الرحمن دې په دې صورت کښې الوقع معنی به چت وي.

۱) (انظرفتح الباري (ج۶ص۱۳)-

۲) (انظر فتح الباري (ج۶ص۱۳)-

٣) (انظر عمدة القارى (ج ١٤ اص ٩١)-

٤) (حواله بالا-

٥) (تغليق التعليق (ج٣ص٤٣١) واخرجه البخارى(٢ص١٤) في كتاب التوحيد باب﴿وكان عرشه على المام﴾ رقم ٧٤٢٣)-

ع) (انظرفتح الباري (ج١٣ص ١٤٤)-

٧) (انظرفتع الباري (ج١٢ص ١٤)-

عنف البارى . سره مطابقت: دُ باب دُ تَرجمه دُ حدیث سره مناسبت دُ رسول الله ناتیم ارشاد ((ان في الجنة مائة درجة)) نه واخله ((مايين الدرجتين كبايين السباءوالارض)) پورې كښې دي. او مناسبت بالكل واضح دي.

[٢٦٢٨] حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثِنَا جَرِيرٌ حَدَّثَنَا أَبُورَجَاءٍ عَنْ سَمُرَةً (١) قَالَ النَّبِيُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَيْتُ اللَّيْلَةَ رَجُلَيْنِ أَتَيَانِي فَصَعِدَا بِي الشَّجَرَةَ فَأَدْخَلَانِي دَارًا هِيَ أَحْسَنُ وَأَفْضَلُ لَمْ أَرَ قَطُ أَحْسَ مِنْهَا قَالَا أَمَّا هَذِهِ الدَّارُفَدَارُ الشُّهُدَّاءِ [ر.٨٠٩]

تراجم رجال

ا-موسى: دا موسى بن اسماعيل تبوذكي بصرى مُناتِ دي. د هغوى حالات ((بده الوحي)) خلورم حديث لاندې نقل شويدي. (٢)

۲-جريد دا جرير س حازم کشک دي. (۳)

--ابورجاء: دا ابورجاء عمران بن ملحان عطاردی بصری مید دې (۴)

م-سمری: دا مشهور صحابی حضرت سمره بن جندب عاشی دی. (۵)

قوله: اماهن الدارف ارالشهداء: دا جمله به دى خبره دلالت كوى چه د شهداو منزلونه د جنت ارفع واعلى منازل دى (۶) داحديث بعينه هم په دې سند سره كتاب الجنائز كښې تيرشويدي آود دې نور تشريحات هم. (٧)

د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت في حديث مناسبت ترجمه سره د رسول الله تَهُمُ ارشاد

((**هیاحسن وافض**ل الخ)) سره دې. (۸)

٥- بَاب: الْغَدُوقِ وَالرَّوْحَةِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَابِ قَوْسٍ أَحَدِكُمْ مِنْ الْجَنَّةِ وراندینی باب سره مناسبت: په مخکینی باب کښی د مجاهدینودپاره الله تعالی چه کومی درجی اومنازل تیارکړی دی د هغی بیان وو. اوس په دې باب کښی امام بخاری واید دا وئیل

١) (قوله: عن سمرة رضى الله عنه: الحديث مرتخريجه في كتاب الاذان باب يستقبل الامام الناس اذا سلم رقم (۸٤۵)-

۲) (کشف الباری (ج۱ص۲۳)-

٣) (دَ دوى دَ حالاتو دَ پاره اوګورئ کتاب الصلاة باب الخوخة والممر في المسجد-

^{1) (}دَ دوى دَ حالاتو دَ پاره او كورئ كتاب التيمم باب الصعيدالطيب وضوء المسلم....-

۵) (دَ دوى دَ حالاتو دَ پاره اوګورئ کتاب الحيض باب الصلاة على النفساء وسنتها-

۶) (شرح القسطلانی (ج۵ص۳۸)-

٧) (كتاب الجنائزباب بلاترجمة بعد باب ماقيل في اولادالمشركين رقم (١٣٨٤)-

۸) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ٩١)-

كتاب الجهاد (جلداول كشفالكاري

کشف الباری عواړی چه مجاهدین دا درجې صرف سحریا صرف ماښام وخت د الله تعالی په لارکښې وركولو سره حاصلولي شي.

دُ ترجمة الباب مقصد دلته امام بخارى مُنالة د سحر او ما نسام په وختونو كښې د الله تعالى په لارکښي د وتلو فضيلت بيانوي(١)

او بله دا چه په جنت کښې د يودراع برابر ځای څه فضيلت دې؟ (٢)

[٢٦٢٩] حَدَّثَنَا مُعَلِّى بْنُ أَسَدِ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ حَدَّثَنَا مُمَيْدٌ عَنْ أَنْسِ بْنِ مَالِكِ (٢) رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَغَدُوةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُوْرَوْحَةٌ خَيْرٌ مِنْ الذُّنْيَا وَمَا فِيهَا[٢٦٣٣]

تراجم رجال

ا- معلی بر اسن: دا معلی بن اسدالبصری رواند دی. (۴)

r- وهیب: دا وهیب بن خالدبن عجلان باهلی روی د دوی حالات (رکتاب الایهان باب تفاضل اهل الايبان في الاعبال)) لاندې تيرشوي دي. (۵)

-- حمین: دا ابوعبیده حمیدبن ابی حمیدالطویل خزاعی مُواند در دوی تذکره (رکتاب الايبان، باب خوف البؤمن من ان يحبط عبله) به ذيل كښې راغلى دى. (۶)

م- انس بر مالك : حضرت انس بن مالك المن حالات ((كتاب الايمان باب الايمان ان يعب لاخيه مايحب لنفسه) لاندې راغلي دي. (٧)

قوله: عن النبي عَلَيْمُ قَال: لغدوة في سبيل الله اوروحة، خير من الدنيا ومافيها: حضرت انس بن مالك الله و رسول الله تها نه نقل كوى چه هغوى تها ارشاد فرمائيلي، دَ الله تعالى په لاركښي يو سحريا يو ماښام لګول د دنيا نه او څه چه په دې



۱) (عمدة القارى (ج ۱ اص ۹۱)-

۲) (فتح الباري (ج۶ص ۱٤)-

٣) (قوله: عن انسَ بن مالك رضى الله عنه: الحديث اخرجه البخارى ايضًا (ج١ص٣٩٢) كتاب الجهاد والسير باب الحور العين وصفتهن رقم (٢٧٩۶)ت وكتاب الرقاق (ج٢ص٩٧٢) باب صفة الجنة والناررقم ۶۵۶۸) ومسلم (ج٢ص ١٣٤) كتاب الامارة باب فضل اغدوة والروحة في سبيل الله رقم (٤٨٧٣) والترمذي (ج ١ص ٢٩٤) ابوآب الفضائل الجهاد باب ماجاء في الغدو والرواح في سبيل الله رقم (١٤٥١)-

٤ دوى د حالاتود پاره او گورئ كتاب الحيض باب المراة تحيض بعد الافاضة _

۵) (کشف الباری (ج۲ص۱۱۸)-

۶) (کشف الباری (ج۲ص۵۷۱)-

۷) (کشف الباری(ج۲یص٤)-

کښي دی د ټولونه بهتردي.

د حدیث لغوی تشریح "غدوة" - بالفتح – معنی ده، د سحر وخت یوخل راوتل او عدو لفظ د سحر نه تر زوال پورې وخت شامل دي. (۱)

٠روحة - بالفتح - معنى ده يو ځل ماښام راوتل او ١٠و١٥٠ لفظ د زوال نه پس تر شپې پورې وخت شامل دې. (٢)

د حدیث مطلب ابن المهلب مید فرمائی چه ((خیرمن الدنیا)) مطلب دا دی چه د دی لبی غوندی زمانی ثواب او بدله په جنت کښی د دنیا د ټولوزمانونه بهتر ده. (۳)

ابن دقیق العید روحه فرمائی چه د حدیث مطلب دا دی چه عموه او روحه په ذریعه به کوم ثواب حاصلیری هغه بهتر دی د هغه ثواب نه کوم چه دنیا او مافیها د الله تعالی د طاعت د پاره خرخ کولوسره حاصلیری (۴)

حافظ رَهُ اَبنَ دقیق العید رَهُ و قول ذکر کولونه پس فرمانی چه د دی قول تائید د دی در حسن حسن حسن میدی کوم چه عبدالله بن المبارك رَهُ الله کمی کناب الجهاد کنبی د حضرت حسن بصری رُه الله نه مرسلاً نقل کریدی.

((قال: بعث رسول الله صلى الله عليه وسلم جيشًا فيهم عهدالله بن رواحة، فتأخى ليشهد الصلاة مع النبى صلى الله عليه وسلم: والذى نفسى بيدا لو انفقت مأنى الارض مأدركت فضل غدوتهم)) (۵)

نبی کریم تاکیم این کو لبنکر اولیگلو، په دې کښی عبدالله بن رواحه تاکی هم وو، هغه روستو د رسول الله تاکیم سره په مانځه کښی د شریکیدود پاره حصار شو (کله چه هغوی تاکیم ته معلومه شوه) نووئی فرمائیل، د الله قسم! ته چه څه په زمکه کښی دی هغه صدقه کړې نو بیا هم د هغوی د غدوې فضیلت نشی حاصلولی.

قُسطراوماښام دُتخصيط وجه: دلته د سحر اوماښام ذکر غالبًا صرف د دې د پاره شويدې چه هم د سحراوماښام په سفرباندې د تلو رواج وو ، ګڼې که سرې د ورځې په مينځينئي حصه کښې د دين د خدمت په سلسله کښې لاړشي نو يقينًا د هغه د تک هم هغه فضيلت دې . (۶) ه حديث د ترجمه الباب سره مطابقت د خديث د باب ترجمه مناسبت بالکل واضح او ښکاره دې . (۷)

۱) (مجمع بحارالانوار (ج۲ص۳۸۸) مادة روح وعمدة القارى (ج ۱ اص۹۱)-

٢) (مجمع بحار الانوار (ج ٤ ص١٣) مادة غدا وعمدة القارى (ج ٤ ١ ص ٩١)-

٣) (شرح ابن بطال (ج٥ص١٣)-

٤) (انظر فتح الباري (ج٤ص ١٤)-

۵) (انظر فتح الباري (ج٤ص ١٤)-

ع) (معارف الحديث (ج ١ص ١٤١)-

۷) (عمدة القارى (ج ١٤ ص٩١)-

كشف البارى رو المحاول

[٢٦٣٠] حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بُنُ الْمُنْذِرِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بَنُ فَلَيْحٍ قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ هِلَالَ بُن عَلَى اللَّهُ عَنْهُ (١) عَنْ النَّبِي صَلَّى عَلْمَ اللَّهُ عَنْهُ (١) عَنْ النَّبِي صَلَّى عَلْمَ اللَّهُ عَلَيْهِ النَّهُ عَنْهُ (١) عَنْ النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُ لَعَابُ وَقَالَ لَعَلُوا اللَّهُ عَلَيْهِ الشَّمُ اللَّهُ عَلَيْهِ الشَّهُ اللَّهُ اللَّهُو

تراجم رجال

ا- ابراهیم بر المنذر: دا ابواسحاق ابراهیم بن المنذر بن عبدالله قرشی اسدی کانو دی.

r- هجمد بن سليمان ميلي دي ابوعبدالله محمد بن فليح بن سليمان ميلي دي.

-- أي : "اب" نه فليح عبدالملك بن سليمان خزاعي اسلمي يُزاي مراد دي.

م-هلال برعلى: دا هلال بن على بن اسامه قرشى مدنى مُسَلَّة دى. دَ دې څلورو واړو حضراتو تذكره ((كتاب العلم باب من سئل علما وهومشتغل فحديثه) لاندې تيره شويده. (۲)

۵-عبدالرحمر بر ابی عمود: دا عبدالرحمن بن ابی عمره عمرو بن محصن انصاری عظارهٔ دی. (۳)

٢- أبوهريرة طَيْنُونَ: دَ ابوهريره طَيْنُو حالات ((كتاب الايمان باب امور الايمان)) به ذيل كنبي راغلى دى. (۴)

قوله: قال : لقاب قوس فی الجنة خیر مها تطلع علیه الشهس و تغرب : حضرت ابوهریره نگات فرمائی چه نبی کریم نگام ارشاد فرمائیلی دی په جنت کښی د یوکمان برابر خای هم د د دې ټول کائنات نه بهتر دې په کوم چه نمر راخیژی او ډوبیږی ((تاب: پتخفیف القاف واخی هموحدة)) مقدار ته وائی (۵)

اوعلامه خطابی گُناری فرمائی: ((قاب القوس: مایین السیة والبقیس)) (۶) یعنی د کمان قبضی او د کوټ په مینځ کښی فاصله ته تاب وائی.

ع) (اعلام الحديث (ج٢ص١٣٥٧)-



١) (قوله: عن ابى هريرة الماهي العديث اخرجه البخارى ايضًا (ج١ص٣٤١) كتاب بدء الخلق باب ماجاء فى صفة الجنة وانها مخلوقه رقم (٣٢٥٣) و (ج٢ص٩٧٢) كتاب الرقاق باب صفة الجنة والنار رقم(٤٥٤٨) والترمذى فى جامعه (ج١ص ٢٩٤) ابواب فضائل الجهاد باب ماجاء فى الغدوة والروحة فى سبيل الله رقم (١٩٤٩)

۲) (کشف الباری (ج۳ص۶۲)-

٣) (د دوى حالاتود باره او كورى كتاب المساقاة باب حلب الابل على الماء-

٤) (كشف البارى (ج١ص ٥٥٩)-

۵) (انظرفتح الباري (ج۶ص ۱٤)-

اود امام مجاهد نه د دې معنی تد دراع مروی دې، په دې صورت کښې توس معنی دراع به وی د قبیله از د شنوءة په لغت کښې توس دراع ته وانی په څه چه ناپ کولې شی. (۱) د وړاندینی باب په روایت کښې یو لفظ تیه په کسمالقاف وېعدها تعتادیة هم راغلې دې. د دې معنی هم مقدار دې. (۲)

اود حدیث د دې جمله مطلب دا ددې چه جنت دومره بهترین او پاکیزه ځائ دې چه د هغه ځائ یو لاس هومره یا د یوکمان برابر ځائ هم د دنیااو مافیها نه بهتردې (۳)

او ((غيرمباتطلع الشبس وتغرب)) نه مراد هم ((غيرمن الدياوم اليها))دي. (۴)

توله: وقال: لَغدوة أو روحة في سبيل الله خير مما تطلع عليه الشمس

وتغرب: اووئی فرمائیل، د الله تعالی په لارکښی یو سحر یا ماښام د پاره وتل بهتردی د دې ټول کائنات نه په کوم چه نمر راخیژی او ډوبیږی. د دې جملې تشریح اوس د ماقبل د باب اولنی حدیث کښې تیره شوه.

دحدیث د ترجمة الباب سره مطابقت: دَ حدیث دَ ترجمی دَ اولنی جز عسره مطابقت ((لغدوة او روحة فی سبیل الله)) کښی دی او دَ دوئم جز عسره مناسبت ((لقاب توس فی الجنة ، الخ)) کښی دی (۵) [۲۲۳] حَدَّثَنَا قَبِیصَةُ حَدَّثَنَا سُفُیانُ عَنْ أَبِی حَازِمِ عَنْ سَکُلِ بُنِ سَعُدِ (۲) رَضِیَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِی صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ الرَّوُحَةُ وَالْغَدُ وَةُ فِی سَبِیلِ اللَّهِ أَفْضَلُ مِنْ الدُّنْیَا وَمَا فَیْهَا وَسَلَّمَ قَالَ الرَّوْحَةُ وَالْغَدُ وَةُ فِی سَبِیلِ اللَّهِ أَفْضَلُ مِنْ الدُّنْیَا وَمَا فِیهَا [۲۰۵۲٬۲۰۲۸۲۲۵]

تراجم رجال

ا-قبیصه: دا ابوعامر قبیصه بن عقبه بن محمد کوفی میشد دې.

۱) (انظرعمدة القارى (ج ۲ اص ۹۱)-

٢) (فتح الباري (ج٤ص ١٤)-

٣) (الابواب والترجم للكاندهلوى (ج ١ص ١٩٤)-

٤) (انظرعمدة القارى (ج١٤ ص٩١)-

٥) (حواله سابقه-

۶) (قوله: عن سهل بن سعد رضى الله عنه: الحديث اخرجه البخارى ايضًا (ج١ص٥٠٤) كتاب الجهاد والسير باب فضل رباط يوم في سبيل الله رقم (٢٨٩٢) و (ج٢ص٩٤١) كتاب الرقاق باب مثل الدنيا في الاخرة رقم (٤٤١٥) ومسلم في صحيحه (ج٢ص٤١٤) كتاب الامارة باب فضل الغدوة والروحة في سبيل الله رقم (٤٨٧٣) والترمذي في جامعه (ج١ص٤٩٤) في فضائل الجهاد باب ماجاء في الغدووالرواح في سبيل الله رقم (١٩٤٨) وباب ماجاء في فضلالمرابط رقم (١٩٤٤) والنسائي في الصغرى (ج٢ص٥٥) في كتاب الجهاد باب فضل غدوة في سبيل الله رقم (٣١٢٠) -

كتأب الجهاد (جلداول)

-- سفیان: دامشهور امام محدث حضرت سفیان بن سعید ثوری میدید دی. د دی دوارو حضرات و دی دوارو حضرات و دی. د دی دوارو حضرات و حضرات و حالات (رکتاب الایبان باب علامة البنافق)) به ذیل کښی راغلی دی. (۱)

-- ابوحازم سلمه بن دينار مدنى مياد دي. دي.

م- سهل بن سعد: دا صحابی رسول تا خطرت سهل بن سعد ما در (۲) د حدیث تشریح به ماقبل کنی تیره شوه.

د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت: د حدیث مطابقت ترجمه سره بالکل واضح او ښکاره دې په دې کښې هم د غمادة او روحه ذکر او په دې دواړو وختونوکښې د الله تعالى په لارکښې د وتلو فضیلت بیان شویدې. (۳)

،-بَاب: الْحُورِ الْعِينَ وَصِفَتِهِنَّ يُحَارُ فِيهَا الطَّرُفُ شَدِيدَةُ سَوَادِ الْعَيْنِ شَدِيدَةُ بَيَاضِ الْعَيْنِ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ أَنْكَحُنَاهُمْ

ماقبل سره ربط او مناسبت په سابقه باب کښې ((درجات المجاهد)) ذکر وو او دا خودلې شوی ووچه الله تعالى د مجاهد د پاره په خاص توګه سل درجې او منازل تيار ساتلې دى. اوس په دې باب کښې ضمنا دا خودل غواړى چه په دې منازلو کښې به حورې هم وى او د هغې صفت دا دې چه په دې کښې که يوه هم دنياته اوګورى نو ټوله دنيا به روښانه شى او کائنات به د خوشبونه ډك شي (۴)

د باب د ترجمی مقصد دامام بخاری شیر مقصد د دی باب د ترجمی نه دا بیان کول دی چه الله تعالی د شهیدانود پاره قسم قسم انعامونه تیارساتلی دی په هغی کښی حوری هم شاملی دی بیا د دی حورو مختلف صفتونه بیان کړیشوی دی.

قوله: یک رفیه الطرف: ستر کی (چه هغی ته او کوری) نو حیرانی به پاتی شی. امام بخاری تخطی د حوری د تسمیه وجه بیانوی چه حوری ته حوره په دی وجه وائی چه ستر کی د هغی په کتوحیرانیږی (۵) لکه چه حور ((حیرة)) نه مشتق ده. خو په دی باندی علامه ابن التین تخطی اعتراض کریدی او وئیلی دی چه دا صحیح نه دی ځکه چه ((حیرة)) خو اجوف یائی دی او حور اجوف واوی دی نو اجوف یائی د اجوف واوی نه مشتق کرځول به څنګه صحیح وی؟ (۶)

۱) (کشف الباری (ج۲ص۲۷۵-۲۸۰)-

٢) (د دې دواړو حضراتو د پاره اوګورئ کتاب الوضوء باب غسل المراة اباها الدم عن وجهه-

٣) (عمدة القاري (ج ١٤ ص٩٢)-

٤) (انظر عمدة القارى (ج ١٤ ص٩٣)-

ن) (ارشاد الساری(ج۵ص۳۹)-

ع) (انظرفتح الباري (جعص١٥)-

د دې اعتراض جواب حافظ صاحب دا ورکړیدې چه دلته اشتقاق اکبرمراد دې او په دې کښې اکثرو حروفوکښې د مشتق او مشتق منه اتحاد کافي کیږی او د ټولو حروفو په مینځ کښې اتحاد ضروري کیږی نه او اشتقاق صغیرمراد نه دې (۱)

قوله: شديدة سواد العين، شديدة بياض العين: مستركو ډير توروالى اوډير سپنوالى والا دا د ((عين)) تفسير دې او دا د امام بخارى بيات استاذ ابوعبيده بيات كلام دى (۲)

د خورالعین لغوی تحقیق لفظ ((حور)) د ((حوراء)) جمع ده، امام ابن سیده رئیلی فرمائی چه حوراء هغه ده د کومو د ستر کو سپینوالی چه ډیر زیات وی اود هغوی د ستر کو توروالی هم ډیر زیات وی، د رخو کیرچاپیره سپینوالی پیر زیات وی، د شتر کوکاکئی ئی کول وی، ورځی نرئی وی اود ورځو کیرچاپیره سپینوالی

وی (۳) اود حورا مغنی ((بیضام)) هم کریشویده یعنی هغه ښځه چه سپینه وی (۴) عین - بکسر العین المعجمۍ وسکون الیاء - دعینا ، جمع ده اود عینا ، معنی هغه ښځه د کومې چه غټې غټې سترګې وی اود سترګوکومه حصه چه سپینه وی د هغې سپینوالې ډیرزیات وی او کومه حصه چه توره وی په هغې کښې ډیرزیات توروالې وی (۵)

قوله: وزوجناهم [الدخان: ۵۳] أنحكناهم: او مونږ به د هغوى نكاح (حورو) سره اوكرو_

دَ مذكوره عبارت مقصد د دي جملي نه امام بخاري المام نورة وخان آيت طرف ته اشاره كريده (وزوجنا هم بحورعين) اود دي مناسبت ترجمه الباب سره بالكل واضح دي ځكه چه په دي كښي د ((حورعين)) تذكره ده. (۶)

او ((وروچناهم)) کوم تفسیر چه ((انکحناهم)) سره امام بخاری رئیسی کریدی، دا د هغه د استاذ ابوعبیده رئیسی قول دی اود دی یو بل تفسیر ((وروچناهم)):جعلنا هم آزواجًا آزواجًا یعنی مونږ هغوی جوړی جوړی پیدا کړلی، هم کړیشویدی. (۷)

[rwr] حَدَّثَنَا عَبُدُ اللَّهِ بُنُ هُعَنَّدٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بُنُ عَمْرُوحَدَّثَنَا أَبُو إِسْعَاقَ عَنْ مُمَيْدٍ قَالَ سَمِعْتُ أَنْسَ بُنَ مَالِكِ رَضِى اللَّهُ عَنْهُ (٨) عَنْ النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَامِنُ عَبُدٍ سَمِعْتُ أَنْسَ بُنَ مَالِكِ رَضِى اللَّهُ عَنْهُ (٨) عَنْ النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَامِنُ عَبُدٍ

١) (حواله سابقه وانظر التفصيل أنواع الاشتقاق مراح الأررواح (ص ٤-٥)-

۲) (فتح الباری (ج۶ص۱۵)-

٣) (انظرعمدة القارى (ج ١٤ ص٩٣)-

أ (المعجم الوسيط (ج ١ص ٢٠٤)-

٥) (انظرفتح البارى (ج ٤ص ١٥) وانظر النهاية لابن الاثير (ج٣ص ٣٣٣) مادة عين -

ع) (انظر عمدة القارى (ج ٤ ١ص٩٣)-

٧) (حواله بالا

٨) (قوله: أنس بن مالك رضى الله عنه: الحديث أخرجه البخاري أيضًا ...[بقيه حاشيه به راروانه صفحه...

كتاب الجهاد (جلداول كشف البارى

يَمُوتُ لَهُ عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ يَسُرُّهُ أَنْ يَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا وَأَنَّ لَهُ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا إِلَّا الشَّهِيدَ لِمَا يَرَى مِرِ إِ فَضُلِ الشَّهَا دَةِ فَإِنَّهُ يَسُرُّهُ أَنْ يَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا فَيُقْتَلَ مَرَّةً أُخْرَى [٢٢٢]

تراجم رجال

ا- عبدالله بر. هجمد: دا ابوجعفر عبدالله بن محمدمسندی مبید دی، د دوی حالات ((کتابالایهان ۱۱ امور الإیهان)) په ذیل کښې تیرشوی دی. (۱)

r-معاویه بر عمرو: دا معاویه بن عمروازدی مید دی.(۲)

-- ابواسحاق: دا ابواسحاق ابراهیم بن محمدالفزاری میشد دی. (۳)

٣- حمين: دا ابوعبيده حميد ابي حميدالطويل مينيد دي. د دوى تذكره ((كتاب الإيمان ماب خوف المؤمن من أن يحمط عمله) به ذيل كښې راغلى دى. (۴)

٥- انس برر مالك المنين و حضرت انس المني حالات (ركتاب الإيبان باب من الأيبان أن يعب لأخيه....) ذيل كښې تيرشوى دى. (٥)

دَ حضرت انس بن مالك ظُرُرُون نه نقل دي چه نبى اكرم ظُرُرُاوفرمائيل هريو دَ الله تعالى بند؛ چاته چه دَ مرك نه پس دَ الله تعالى د دربار نه خيراو ثوابِ ملاؤشويدي دنيا او مافيها موندلو نه پس به هم دلته دوباره راتلل خوښ نه كړى، كه د هغه د پاره د دنيا او مافيها

خیرون سی د الله تعالی د نعمتونو د حدیث مطلب دا دې چه کله جنتی په جنت کښی داخل شی د الله تعالی د نعمتونو مشاهده به اوکړی ، د هغې نه خونداو مزه اوچته کړی نو هغه به دې باندې راضی نه شی چه دوباړه دنیاته واپس شی سره د دې که ده ته د دنیا ټول څیزونه ورکړیشی.

قوله: الاالشهيدلما يري من فضل الشهادة، فإنه يسره أن يرجع إلى الدنيا، فيقتل مرة أخري: دُ شهيدنه بغير چه هغه دُ شهادت فضيلت او مرتبه اوګوري نود ده

...بقيه حاشيه دتيرمخ] (ج١ص٣٩٥) كتاب الجهاد باب تمنى المجاهد أن يرجع إلى الدنيا رقم (٢٨١٧) ومسلم (ج٢ص ١٣٤) كتاب الإمارة باب فضل الشهادة في سبيل الله رقم (٤٨٥٨) والترمذي (ج١ص ٢٩٣) أبواب فضائل الجهاد باب ماجاء في ثواب الشهداء رقم (١۶٤٣) والنسائي (ج٢ص ٤٠) كتاب الجهاد باب ميتمني أهل الجنة رقم (٣١۶٢)-

١) (کشف الباري (ج ١ص٥٧) -

٣) (ذ دوى د حالاتود پاره او كورى كتاب الجمعة باب القائلة بعدالجمعة ـ

٤) (كشف البارى (ج٢ص٥٧١)-

۵) (کشف الباری (ج۲ص ٤)-

٢) (قد دوى د حالاتو د باره او محوري كتاب الذان باب أقبال الإمام على الناس -

کفالباری دپاره به دا خبره د خوشحالئی وی چه دوباره دنیا ته واپس کریشی او بیا شهید کریشی. وَ شُهِيداو غيرِشهيد وَ موتبوفوق به پورتني حديث كښي وَ شُهيداو غيرشهيدو مرتبودفرق ذکر دې چه د عام جنتي نه يو شيهد په فضيلت او مرتبوکښي ډير زيات به وي، په دې وجه كُلُّهُ حِهُ شُهِيد دَ الله تعالى دَ نعمتونو او احساناتو مشاهده آوكړي نود هغه خواهش به وي چه دوباره دنیاته واپس کریشی او بیا شهید کریشی.

دلته د باب په حدیث کښې ((نیقتل مرة اخرای)) واردشویدې، او د هم د بخاري شریف په یو روایت کښی ((فیقتل مشمرات)) راغلی دی (۱)

د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت علامه مهلب بینی فرمائی چه امام بخاری بینید د حضرت انس کانو دا روایت د ترجمه لاندې داخل کړیدې چه په دې جدیث کښې د هغه سبب ذكر دى د خه د وجه چه شهيد دوباره دنيا طرف ته واپس كيدل او د شهادت آرزوكوي ځكه چه د شهید په مشاهده کښې به د الله تعالى هغه نعمتونه راځي او الله تعالى به د هغه خوروسره نکاح کوی، په کوموکښې به چه د هرې حورې صفت دا وی که هغه دنياته او گوری نو ټوله دنيا به روښانه شي، همدې نعمتونو او حورو ته کتلوسره به هغه بيا دنيا ته د راتلو او شهادت خواهش كړوي، دې دپاره چه د الله تعالى اكرام، د هغه نعمتونه او فضل نور هم حاصل کړی. (۲)

[٢٣٣] قَالَ وَسَمِعْتُ أَنْسَ بُنَ مَالِكٍ (٢) عَنْ النَّبِيّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَرَوْحَةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْغَدُوةٌ خَيْرٌمِنُ الدُّنْيَا وَمَا فِبِهَا وَلَقَابُ قَوْسِ أَحَدِكُمْ مِنُ الْجَنَّةِ أَوْمَوْضِعُ قِيدٍ يَعْنِي سَوْطَهُ خَيْرٌمِنُ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا وَلَوْأَنَّ امْرَأَةً مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ اطَلَعَتْ إِلَى أَهْلِ الْأَرْضِ لَأَضَاءَتُ مَا بَيْنَهُمَا وَلَمَلاَّ تُهُرِيحًا وَلَنَصِيفُهَا عَلَى رَأْسِهَا خَيْرٌمِنُ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا [ر:٢٢٩]

بعض حضراتو در (رقید)) په لفظ اعتراض کولو سره وئیلی دی چه دا تصحیف دی، په حقیقت کښې دا لفظ ((تد)) دې او ((تد)) هغه کوړې ته وائي چه د غيرمد بوغ څرمن نه جوړه شوې وي (۴) علامه كرماني مُرَالِيَّهُ وَ دي اعتراض جَوْالِ وركولو سره فرمائي چه و دَوَائي تصحيف هدو ضرورت نشته ځكه چه و كلام معنى صحيح ده.(۵)

اودا خبره به تیرشوی باب کښی تیره شویص چه د ((تاب))او ((تید)) معنی مقدار هم راځی (۶) د قاب او سوط د تخصیص وجه أو مراد: حضرت مولانا منظوراحمدنعمانی ﷺ فرمائی :

١) (انظرالصحيح للبخاري (ج١ص٣٩٥) كتاب الجهاد والسير، باب تمنى المجاهد أن يرجع إلى الدنيا رقم (٢٨١٧)

۲) (شرح ابن بطال (ج۵ص۱۵)-

٣) (قوله: انس بن مالك رضى الله عنه مرتخريج هذاالحديث في الباب السابق-

أشرح الكرماني (ج١٢ص ١٠١) -

٥) (حواله بالا ـ

^ع) (فتح البارى (ج⁸ص ١٤)-

کشف البّاری ۱۱۲ د عربودا رواج وو چه کله به د یو خو سورو قافله تله نو چه کوم سور به په منزل د کوزیدلر وخت کښې چرته قيام کول غوښتل هلته به ئي خپله کوړه غورزوله بيابه هغه ځائ د هغه ګڼړلي شو آو بل چا به په هغې قبضه نه کوله. نو په دې حدیث کښې د کوږې د ځائ نه مړاړ په حقیقت کښې دومره مختصر ځای دې چه د کوړې غورزونکي د پاره د کوړې والا د سور د پاره به مخصوص کیدلو کوم کښې چه هغه بستره خوره کړي یا خیمه اولګوي. دغه شان یو دستور دا وو چه هلته به ئی کمان غورزولو اودغه شان به هغه ځائ د هغه دپاره مخصوص کیدلو نو په دې حدیث کښې د کمان په ځای د سړی منزل دې (۱) قوله: ولوأن امرأة من أهل الجنةاطلعت إلى أهل الأرض لأضاء<u>ت ما</u> بينهماولملأته ريحاً، ولنصيفها على رأسما خير من الدنيا ومافيها: او كه د جنن

يوه ښځه هم د دنياطرف ته اوګوري نود هغې د مينځ ټولې حصي به روښانه کړي او هغه به

دَ خوشبونه دك شي اود هغي د سر لوپته هم د دنيا آو مافيهانه بهترده. دلته د حورو صفت بيان كړيشو كه يوه حوره هم دنيا ته اوكورى نود زمكي او اسمان مينځ به روښانه کړي ۲) دا د هغې د حسن بيان دې

دوئم صِفت ئی دا بیان کړو چه دنیا به خوشبویه کړی یعنی هغه چه کومه خوشبو استعمال كوى د هغى خاصيت دا دې چه هغه ټوله دنيا د خوشبونه ډكولې شي.

نصيف - بغتج النون وكس الصاد المهملة - خمار يعنى لوبتي ته وائي. (٣)

د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت د باب ترجمه سره د حدیث انطباق ((ولوأن امرأة....)) كښې دې ځكه چه ((الحور العين وصفتهن)) راغلې دې او دلته ((امرأة)) نه مراد هم حوره ده. بيا دحوروبعض صفتونه بيان كړيشو نو يوصفت ئى دا دى ((ولوان امرأة من أهل الجنة اطلعت إلى أهل الأرض لأضاءت)) دې او د بل صفت بيان (ولنصيفهاعلى راسها خيرمن الدنيا و مافيها) كښې دې (۴)

٥- بَأَب: تَمَيِّى الشَّهَادَةِ

سابقه باب سره ربط په مخکينوبابونوکښې قتآل في سبيل الله د فضيلت، اهميت او مرتبي مختلف طريقوسره بيان اوكړيشو اود شهيد د درجو وغيره ذكر كړيشوې وو. اوس په دې باب کنبی امام بخاری میند دافرمائی چه په قتال کنبی شرکت او د شهادت خواهش کول پکار دی اُودَ دې خواهش او تمنا د نبي اکرم تُنځ نه هم ثابته ده.

دُترجمة الباب مقصد امام بخاری برشد د دی ترجمه قائم کولو سره دا خودل غواری چه د

١) (معارف الحديث (ج ١ص ٦٦ ١٦٢) كتاب الإيمان -

۲) (ارشادالساری (ج۵ص ۲)۔

۳) (انظر عمدة القارى (١٤ ص٩٥)-

٤) (حواله بالا (ج ١٤ ص ٩٤) -

ے مفالکاری كت ب انجها دا جنداول،

کشالباری کتب انجها داخنداول ۱۲۳ کتب انجها داخنداول شهادت خواهش لرل جائزدی (۱) نوامام بخاری دا ترجمه قائمه کړه او وئی خودل چه د شهادت د تمنا خو ترغیب ورکوشویدې په دې وجه د دې خواهش کول جانز دی او پورته ذکر شوی توهم او اشکال نی لری کریدی د مرک خواهش خو ممنوع دی کله چه د دنیاوی مصیبتونو نه سړې تنګ شي او د مرګ خواهش کوي (۲)

منطبه را د پورتنی اشکال باره کښې دا هم ولیلې شې چه په اصل کښې ډیر ځیزونه داسې وی چه په و پور کی قصد او بالذات صحیح نه وی خو که تبعا آو ضمنا اوموندلی شی نو صحیح کیوی لکه د جهاد په وخت کښيې د کافرانو بچې او ښځې قتل کول جانزنه دې آو نبي کريم نوڅ د دې نه منع فرمائیلی لیکن که حملی کولو کښی پته نه وی او ضمنا ښځی هه قتل کیږی او ماشومان هم وژلې کیږی نو همیڅ مضائقه نشته. دغه شان د شبادت په خواهش کولوپه ضمن کښې که د مرګ خواهش راشي نو هم څه مضائقه نشته.

[٢٦٣٠] حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِي قَالَ أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيِّبِ أَنَّ أَبَ هُرَيْرَةُ (٣) رَضِى اللَّهُ عَنْهُ قَالَ سَمِعْتُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ وَالَّذِي نَفْس بِيَدِ إِنَّوْلًا أَنَّ رِجَالًا مِنْ الْمُؤْمِنِينَ لَا تَطِيبُ أَنْفُهُمْ أَنِ يَتَعَلَّفُوا عَنِي وَلاَ أَجِدُمَا أَخْمِلُهُمْ عَلَيْهِمَ إِنَّفُهُمْ أَنْ يَتَعَلَّفُوا عَنِي وَلاَ أَجِدُمَا أَخْمِلُهُمْ عَلَيْهِمَ إِنَّا تَعَلَّفُتُ عَنْ سَمِيَّةٍ تَغُزُوفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِي نَفْسِي بِيُدِةِ لَوَدِدُتُ أَنْيَ أَقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ أَخْبَ ثُمَّ أُقْتَلُ ثُمَّ أُخْيَا ثُمَّ أَقْتَلُ ثُمَّ أُخْيَا ثُمَّ أَقْتَلُ [٢٠١٠:١٢٥،١٠١٠وانظر:٢٦]

تراجم رجال

- ابواليمان: دا ابواليماني حكم بن نافع حمصي بصري مُرِينَةُ دې.

<u>- شعیب بن ایی حمزه:</u> داابویشر شعیب بن ابی حمزه بُرِینیم دی د دی دوارو حضراتو تذكره ((بدهالوحى)) به شبرم حدیث كنبى تیره شویده. (۴)

<u>-- الزهري:</u> دا محمد بن مسلم ابن شهاب زهری *رئینیا دې. ددوی مختصر حالات «بده* الوص)) په دريم حديث کښې تير شويدي. (۵)

م- سعيدبن المسيب: دامشهور تابعی حضرت سعيدبن المسيب قرشی مخزومی برينيم دې . د دوی حالات ((کتاب الإیبان باب من قال ان الإیبان هوالعبل)) لاندې تیرشوی دی (۶)

۱) (انظرعمدة القارى (ج ۱ ۱ص۹۵)-

۲) (لامع لدراری (ج۷ص۲۱۲)-

٢) (قوله: أن أباهريرة رضى الله عنه: الحديث مرتخريجه في كتاب الإيمان باب الجهاد من الإيمان انظر کشف الباری (ج۲ص۲۰۵)-

^{؛) (}كشف الباري (ج ١ص ٤٧٩ - ٤٨٠)-

۵) (کشف الباری (ج۱ص۳۲۶)-

۶) (کشف الباری (ج۲ص۱۵۹)-

٥- ابوهريرة المنزز: دحضرت ابوهريره المنزز تفصيلي حالات (ركتاب الإيهان باب أمور الإيهان)، به ذيل كنبي راغلي دي. (١)

قوله: قَالَ:سَمِعت النبي عَيْمُ يقول: والذي نفسي بيدة، لولا أن رجالامر

المؤمنين..في سبيل الله: حضرت ابوهريره الله فرمائي ما درسول الله تلفظ نه اوريدلي هغوى تلفظ ارشاد فرمائيلو چه د الله قسم د چا په قبضه کښې چه زما روح دې، که چرې داخبره نه وې چه د مسلمانانونه د څه خلقو زړه زمانه په روستوپاتې کيدو نه خوشحاليږي او ماسره هم د هغه خلقو د سورولودپاره څه نه وې نو زه به د يو داسې سريه نه کوم چه د الله تعالى په لارکښې اوځي روستونه پاتې کيدم.

دَ حدیث شریف مطلب دا دی چه دَ مسلمانانو نه دَ څه خلقو زړه دَ جهاد نه په پاتې کیدو باندی خوشحاله نه وی او هغه خلق دَ جهاد په تیاری هم قدرت نه لری یاخود سورلئی د نشتوالی په وجه او یا د بل څه په وجه اود سورلئی وغیره انتظام دَ حضور ناهٔ سره هم نه وو (۲) په دې وجه به رسول الله ناهٔ د هغوی د زړونود تسلئی دپاره کله کله روستوپاتې کیدلو چه د هغوی زړونه خفه نشی.

دلته په حدیث شریف کښې ((لاتطیب انفسهم)) واردشویدې، دا حدیث که یوطرف ته ابوزرعه(۳) او ابوصالح (۴) نقل کړیدې نو په دې کښې ((ولولاان اشق علی امقی)) راغلی دې روایت باب د دې نورو دوو طرق تفسیر دې یعنی مشقت نه مراد دا دې چه د دې مسلمانانو زړونه به خفه شی ځکه چه د سفر آلات په غیرموجودګئی د وجه د جهاد د تیاری طاقت نه لری او بله دا چه حضور تالیخ کیاره هم د هغوی انتظام کول ګران وو (۵)

دَ دې مضمون نور تائيد دَ دې طريق نه هم کيږي کوم چه همام بن منبه روايت کړيدې: ((لکن لااچه سعة فلحملهم، ولايچهون سعة فيتبعون، ولاتطيب انفسهم ان يقعه وا بعدى)) (۶) يعني ماسر؛ دومره مخنجائش نشته چه هغوى سواره کړم، نه هغوى سره دومره مخنجائش شته چه هغوى ماسره لاړشي اود هغوى زړونه هم په دې خبره خوشحاله نه دى چه زمانه پس هغوى ناست وى قوله: والذى نفسى بيه لاه، لوددت أنى أقتل في سبيل الله، ثمر أحيا، ثمر أقتل؛ ثمر أقتل في سبيل الله، ثمر أحيا، ثمر أقتل نورا خواهش دې چه زه د الله تعالى په لار کښې قتل کړيشم، بيا ژوندې

۱) (کشف الباری (ج۱ص۶۵۹)-

۲) (فتح الباری (ج۶ص۱۶)-

٣) (صحيح البخاري (ج ١ص ١٠) كتاب الإيمان باب الجهاد من الإيمان رقم (٣٤)-

٤) (صحيح البخاري (ج ١ص١٤) كتاب الجهاد باب الجعائل ولالحملان في السبيل رقم (٢٩٧٢)-

۵) (انظرفتع الباري (جعص ۱۶)-

۶) (انظرالصحيح لمسلم (ج٢ص١٣٣) كتاب الإمارة. باب فضل الجهاد والخروج في سبيل الله رقم (٤٨٩٣)

کف الباری کیشم،بیاقتل کریشم،بیاژوندی کریشم،بیاقتل کریشم،بیاژوندی کریشم،بیاقتل کریشم اشگال دلته دا اشکال پیداکیوی چد حضور اکرم نظم تدخو په یقین سره معلومه وه چه مغوی به قتل کیږی نه نوبیا هغوی داخواهش ولی اوکړو؟

جواب شارحينو دُ دې اشكال مختلف جوابونه وركري دى:

٠ رومبي جواب دادې چه د يوفضل اوخير آرزو كول د دې واقع كيدو ته مستلزم نه وي (١) 🕜 دونم جواب دا دې چه په دې کښې د جهاد فضيلت اود دې په شهادت کښې مبالغه مقصود ده. لکه چه هغوی ترای د جهاد فضیلت د مبالغی سره بیانول غوښتل او مسلمانان نې د دې دپاره تيارول (۲)

أياً ﴿ وَالذَّىٰ نفسى بيده، لوددت ﴾ و حضرت ابوهريره ظائرٌ مقوله ده ﴿ حافظ ابن حجر بَيْكَ استاذ شيخ ابن الملقن الملقن المعنى على المعضو خلقو دا خيال دى چه دا كلام (الوددت أن التل الخ)، مدرج في الخير دي اود كلام د حضرت ابوهريره الله دي. بيا شيخ ابن الملقن بيه فرمائی ((وهوبعید)) یعنی دا دعوی بعیدازقیاس ده. (۳)

او حافظ صاحب هم د خپل استاذ موافقت فرمائيلي دي (۴)

زمون بداسلافو كښلى علامه انورشاه كشميري براته هم دا فرماني چه دا د حضرت ابوهريره الله مقوله ده أو امام ترمذي ركين به دې باندې تنبيه هم فرمانيلي ده. (٥)

لیکن دا د حضرت کشمیری را تسامح ده ځکه چه په ترمذی شریف کښې چرته هم د امام ترمذی را د طرف نه په دی باندې هیڅ تنبیه موجود نه ده چه هغوی دا ونیلې وی چه دا د حضرت ابوهریره النو کلام دی (۶)

هاؤ دا خبره ده چه د بعض روایاتونه معلومیږی چه دا د حضرت ابوهریره کانت قول نشی كيدى لكه چه امام مالك مُنت به موطا كنبى ((عن أبى الزناد، عن الأعرج، عن أبي هريرة، أن رسول الله صلى الله عليه وسلم....) د صراحت نه پس دا روايت نقل كړيدې (٧)

۱) (انظرفتح الباري (ج۶ص۱۷)-

۲) (حواله بالا. وعمدة القارى (ج ۱۴ ص ۹۶) د حدیث نورتفصیل د پاره اوګورئ کشف الباری (ج۲ص۲۰۱) –

۳) (فتح البارى (ج۶ص۱۷)-

٤) (حواله بالا-

۵) (فیض الباری (ج۳ص۲۳)-

۶) (بلکه معلومه دې وي چه امام ترمذي پيځ د سرنه دا روايت په خپل سنن کښې اخستې هم نه دى نو چرته په دى تنبيه او كورى المعجم المغهرس لألفاظ الحديث النبوى (ج٧ص١٥٤) وتحفة الإشراف (ج١ص٢٠)و كشف البارى (ج٢ص٣٥)-

٧) (انظر المؤطاللإمام مالك بن أنس (٤٤٢-٤٤٣) كتاب الجهاد باب الترغيب في الجهاد الحديث الثاني من الباب)_

كتاب الجهاد (جلداول) كشف الباري

د دې نه صفامعلوميږي چه دا مدرج في الخبر نه دې بلکه د حضور اکرم تالظم ارشاد دې او

((كتاب الإيبان باب الجهادمن الإيبان)) كنبي هم دا روايت تيرشويدي (١) بهرحال په فيض الباري کښې حضرت شاه صاحب بياته سره منسوب کولوسره چه دا وينا كړيشوې ده چه دا كلام مدرج في الخبر دې صحيح نه معلوميږي

د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت د حدیث مناسبت د ترجمه الباب سره ((والذی نفس

بيدة لوددت ال أقتل في سبيل الله ثم أحيى ثم أقتل الخ)) نه ظاهر دي.

[٢٦٣٥] حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ يَعْقُوبَ الصَّفَّارُ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عُلَيَّةً عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُمَيْدِ بْن هِلَالٍ عَنْ أَنَسِ بْرِنٍ مَالِكٍ(٢ٍ) رَضِىَ اللَّهُ عِنْهُ قَالَ خَطَبَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلِيْهِ وَسُلَّمَ فِقَالَ أَخَذَ الرَّايَةَ زَيْدٌ فَأَصِيبَ ثُمَّ أَخَذَهَا جَعْفَرٌ فَأُصِيبَ ثُمَّ أَخَذَهِا عَبْدُ اللَّهِ بُنُ رِوَاحَةَ فَأُصِيبَ ثُمَّ ٱَخَذِهَا خِالِدُبْنُ الْوَلِيدِعَنُ غَيْرِإِمْرَةٍ فَفُتِحَلَّهُ وَقَالَ مَا يَسُرُّنَا أَنَّهُمْ عِنْدَنَاقَالَ أَيُّوبُ أَوْقَالَ مَا يَسْرُهُمْ أَنَّهُمْ عِنْدَنَا وَعَيْنَا أُدُوفَانِ [ر:١٨٩]

تراجم رجال

ا يوسف بن يعقوب الصفار: دا يوسف بن يعقوب الصفار مُنْ اللهُ دي (٣) د دوى كنيت آبويعقوب دي ۴۱) د کوفي اوسيدونکي وو په دې وجه په کوفي باندې مشهور دې او دې د بننی هاشم آزاد کریشوی غلام وو ،(۵)

دى دابواسحاق بن سليمان الرازى،اسماعيل بن عليه،بكربن سليم الصواف،حمادبن اسامه،عاصم بن على، عبدالرحمن بن محمدالمحاربي، محمد بن اسماعيل البجلي، وكيع بن الجراح، يحيى بن سعيدالاموى او ابوبكر بن عياش بين وغيرة نه دَ حديث روايت كوي. دُ دوى نه د حديث په راويانوكښي شيخين، ابراهيم بن ابي داود البرلسي، عبدالله بن احمد بن حنبل، عبدالله بن عبدالرحمن الدارمي، ابو ابي الدنيا، ابوزرعه عبيدالله بن عبدالكريم الرازي، عثمان بن سعيد الدارمي، ابوحاتم محمدبن ادريس الرازي او يعقوب بن شيبة الميلغ وغيره شامل دي. (ع)

ابوحاتم مريد فرمائي ((لفة))(٧)

۱) (انظر کشف الباری (ح۲ص۲۹۹)-

٢) (قوله: عن أنس بن مالك رضى الله عنه: الحديث مرتخريجه في كتاب الجنائز باب الرجل ينعي إلى أهل الميت

٣) (تهذيب الكمال (ج٣٢ص ٤٨٤)-

٤) (طبقات ابن سعد (ج 6ص ١٤)-

٥) (تهذيب الكمال (ج٣٢ص٤٨٥)-

ع) (دَ شيوخ او تلامذه و تفصيل دَ پاره او گورئ تهذيب الكمال (ج٣٢ص٤٨٥ -٤٨٤) _

٧) (تهذيب الكمال (ج٢١٢ص٤٨٤)-

ابوبكر بن عاصم مُراثِدُ فرمائى ((كان تقة من أهل الخير)) (١)

ابوب را المورد و الم

ابن قانع بخالة فرماني ((صالح، وليس له في الهخاري سوى موضع واحدفي الجهاد)) (٣)

ابن حبان روسید هغه په کتاب الثقات کښې ذکر کړیدې او وئیلي دي ((يغرب)) (۴)

سبط ابن العجمي برات فرمائي ((العجمي ما المعاني ((العجمي الماتة عليه الماتية الماتية الماتية الماتية الماتية الم

حافظ ابن حجر مينية هم دُردي توثيق كريده. (ع)

شيخينو د هغه نه روايتونه اخستي دي. (٧)

امام بخاری مُرْبِية لکه څنګه چه اوس د ابن قانع په حواله سره تيرشو د هغه نه په کتاب

الجهاد کښې صرف هم دغه روايت اخستې دي. (۸)

ابوالعباس الأحول مُراثية أو حافظ موسى بن هارون رُعالية فرمائي چه د هغوي

وفات په کال ۲۳۱ ه کښې شوې (۹) والله اعلم رحمه الله تعالى رحمة واسعة.

-- ايوب: دا ايوب بن ابى تميمه كيسان سختيانى رُوالَةُ دى. دَ هغوى تذكره ((كتاب الإيبان بابحلاوة من الإيبان)) راغلى ده. (۱۱)

۳- حمیل: دا حمیدبن هلال بن هبیره عدوی بصری مربید دی. (۱۲)

٥- انس بر مألك النيز: خادم رسول حضرت انس بن مالك النيز حالات ((كتاب الإيمان باب

١) (حواله بالا-

٢) (حواله بالا-

٣) (تهذيب الكمال (ج١١ص٤٣٢)-

ك) (الثقات لابن حبان (ج ٩ص ٢٨١)-

۵) (حاشية سبط ابن العجمي على الكاشف (ج٢ص٢٠٤)-

۶) (نقريب التهذيب (ص۲۱۷) رقم الترجمة (۷۸۹۷)-

٧) (الكاشف (ج٢ص٢٠٤) رقم الترجمة (٤٤٥١)-

٨) (نور اومحوري خلاصة الخزرجي (ص٠٤٤) وعمدة القاري (ج١٤ص٩٥)-

٩) (تهذيب الكُمال (ج٣٢ص ٤٨٤) والكاشف (ج٢ص٢٠٤)-

۱۰) (کشف الباری (ج۲ص۱۲)-

۱۱) (کشف الباری (ج۲ص۲۶)-

۱۲) (دَ دوى دَ حالات دَ پاره اوګورئ کتاب الصلاة باب يردالمصلي من مربين يديه-

من الإيان أن يحب لأهيه) لاندې تيرشوی دی. (١)

قوله: قال خطب النبي صلى الله عليه وسلم فقال: أخذ الرأية فأصيب، ثمر أخذها جعفر فأصيب ثمر أخذها عبدالله بررواة فاصيب ،ثمر اخذها خالدبر الوليل عرب غير إمرة ففتح له:حضرت انس بن مالك الماثئ فرمائي چه نبي كريم كلي خطم اولولستله او وي فرمائيل جنه و زيد بن حارثه واخستله بيا هغه شهيدشو بيا جنها جعفر بن ابي طالب واخستله ،هغه هم شهيد شو بيا هغه عبدالله بن رواحه په لاس كښي واخستله هغه هم شهيد شو بيا هغه خالد بن وليد په لاس كښې واخستله ددې نه بغيرچه هغه چا امير جوړ کړې وي اوهغوي ته فتح ورکړې شوه دا واقعه د غزوه موته ده ددې پوره تشريح او وضاحت به انشاء الله په کتاب المغازي کښي

قوله: وقال ما يسرنا أنهم عندنا ووال أيوب: أوقال: ما يسرهم أنهم عندنا»

وعینا لاتن رفان او نبی گیراوفرمائیل زمون دپاره دا خبره د خوشحالی نه ده چه هغوی زمونږ سره وې ايوب فرمائي چه يا نبي نهم داسې ارشاد اوفرمائيل د هغوي دپاره دا خبره د خوشحالئ نه ده چه هغوی زمونږ سره وې او د نبی تایم د سترګو نه اوښکې بهیدلې دلته په حدیث کښې د ایوب نه سختیانی مراد دې د هغوی شك دې چه نبی نکای څه فرمائيلي وو «مايس ناأنهم عندنا» او كه «مايس هم أنهم عندنا، وعينالاتذرفان» په دواړو صورتونو کښې چه د حديث کوم مهفوم راوځي هغه مونږ د ترجمه الباب لاندې واضح كرو. دالله اعلم

د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت: د حديث مناسبت د ترجمة الباب سره ((مايسهم أنهم عندنا) كښي دي، او هغه داسې چه كله هغه خلق د شهادت او كرامت او فضيلت مشاهده اوکړي نود که فغوی به دا خبره خوښه نشي چه دوباره دې دنيا ته واپس شي مګرغواړي چه دوباره شهیدان شی.(۳)

٨- بَاب: فَضْلِ مَنْ يُصْرَعُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَهَاتَ فَهُ وَمِنْهُمْ

دُسابقه باب سره ربط به سابقه بابونوكښي بار بار د مجاهدينو او شهداء في سبيل الله فضیلتونو ذکر راغلی دی په دې باب کښې د هغه سړي د فضیلت او مرتبت بیان دي چه د الله تعالى په لاركښې د سورلئي نه پريوځي او مړ شي هغه هم شهيد دې او هغه ته به هم د

١) (كشف البارى (ج٢ص٤)-

۲) کشف الباری کتاب المغازی (ص،۷۷)

٣) (حواله بالاوفتح البارى (ج۶ص١٧) ولامع الدرارى(ج٧ص٢١٣)-

119,

شهيدانو اجرملاويږي.

دَ ترجمة الباب مقصد د ترجمه الباب مقصد بالكل واضح دى او هغه دا چه كوم سرى د الله تعالى به لاركښى اوځى اوهغه د سورلئى نه پريوځى اومړشى نوهغه ته به د شهيدغوندى فضيلت حاصليږى. (١)

د دې نه قطع نظرچه د جهاد د پاره تلوکښې مړشوې وي او د جهاد موقع هم نه وي راغلې او يا په واپستي کښې هغه سره دا واقعه پيښه شوې وي.

قوله: وقع: وجب: امام بخاری ﷺ شیخ ابوعبیده ﷺ کلام دی هغوی په پورتنی آیت کښی وآرد شوی لفظ ((وقع)) تفسیر ((وجب)) سره کړیدی، یعنی الله تعالی باندې د هغه ثواب واجب دی. (۶)

فائده علامه ابن بطال مُرَاثِدَ فرمائی چه د حضرت انس الله علامه ابن بطال مُرَاثِدَ فرمائی چه د حضرت انس الله علی مصداق د الله تعالی قول: ((ومن بخرج من بیته مهاچرا...)) کښی دی چه په دا شان موقع باندې دا آیت نازل شوې وو چه څوك د الله تعالى په لارکښې مړشو هغه شهید دې.

نوهغوى د ابن وهبعن عقبة عامرالجهن نه مرفوعا (٧) نقل فرمائيلي دى چه رسول الله كُلُمُ اللهُ كُلُمُ

۱) (عمدة القارى (ج ۱ ۱ص۹۶)-

۲) (فیض الباری (ج۳ص۲۶)-

٣) (بيان القران (ج١حز ٢٠ ص١٥٠)-

 ^{4) (}فتح البارى (ج۶ص۱۸)-

٥) (عمدة القارى (ج ١٤ ١ص٩٧)-

۶) (فنع الباری (ج۶ص۱۸)-

۷) (مجمع الزواند (ج۵ص۲۸۳، ۳۰۱)-

فرمائیلی دی ((من صرع عن دابته رقی سبیل الله) قبات فهوشهید)) (۱)

چونکه دا حدیث د امام بخاری رئید شرط نه پوره کیدو په دې وجه د دې طرف ته نې په ترجمه کښي اشاره فرمائیلې ده. (۲)

[٢٦٣٨] حَدَّانَا عَبُكُ اللَّهُ بُنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنِي اللَّيْثُ حَدَّثَنَا يَعْيَى عَنْ هُخَمَّدِ بُين يَعْيَى بُنِ
حَبَّانَ عَنْ أَنْسِ بُنِ مَالِكِ (٣) عَنْ خَالَتِهِ أُمِّرَ حَرَامٍ بِنُتِ مِلْحَانَ قَالَتُ نَامَ النَّبِيُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ يَوْمًا قَرِيبًا مِنِي ثُمَّ الشَّيُقَظَ يَتَبَسَّمُ فَقُلْتُ مَا أَضْحَكَكَ قَالَ أَنَاسٌ مِنْ أَمَّتِى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ يَوْمًا قَرِيبًا مِنِي ثُمَّ اللَّهُ عُرَالاً فَعَالَتُ المُعْلَقِ الْأَسِرَةِ قَالَتُ فَادُعُ اللَّهَ أَنْ يَبُعُننِي عَنْهُمُ فَكَ اللَّهُ أَنْ يَعْفَلَ مِثْلَ الْمَعْلَى الْأَسِرَةِ قَالَتُ الْمُعْلَى الْأَسِمِ اللَّهُ أَنْ يَعْفَلَ مِنْكُمَ الْأَوْلِينَ فَغَلَى الْأَسِمِ اللَّهُ اللَّهُ أَنْ يَعْفَلَ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى الْأَسِمِ فَاللَّهُ أَنْ يَعْفَلَى اللَّهُ اللَّهُ أَنْ يَعْفَلَ مِثْلُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللللْ

تراجم رجال

ا-عبدالله بر. يوسف: داعبدالله بن يوسف تينسى ركيه دي. د دوى مختصر تذكره ((بدء الوحي)) د دوئم حديث لاندې نقل كړيشوې ده. (۴)

r- الليث: دا امام ابوالحارث ليث بن سعدبن عبدالرحمن فهمي ﷺ دي. دَ دوي حالات (بدّ الوحي)) په دريم حديث كښي تيرشوي دي. (٥)

-- یحیی: دا یحیی بن سعید بن قیس انصاری مدنی رسته دی. د دوی حالات ((کتاب الإیهان باب صوم رمضان احتسابا من الإیبان)) لاندی راغلی. (۶)

٣- هجمل بن حبان علي دا محمديحيى بن حبان بريد دى (٧)

۵-انس بر مالك المن النواني انس بن مالك النواني تذكره ((كتاب الإيمان بأب من الإيمان أن يحب...)) به ذيل كنب تيرشوى دى (۸)

۱) (شرح ابن بطال (ج۵ص۱۷-۱۸)-

۲) (فتع الباری (ج۶ص ۱۸)-

^{؟ (}قوله: عن أنس بن مالك رضى الله عنه: الحديث قدمر تخريجه آنفافي باب الدعاء بالجهاد والشهادة للرجال والنساء-

ع) (کشف الباری (ج ۱ ص ۲۸۹)-

۵) (کشف الباری (ج ۱ ص ۲۲۶)-

ع) (كشف الباري (ج ٢ص ٣٢١) وكشف الباري (ج ١ص ٢٣٨)-

٧) (د دوي د حالاتود باره او مورئ كتاب الوضوء باب من تبرزعلى لبنتين -

۸) (کشف الباری (ج۲ص ٤)-

- ام حرام بنت ملح أن : حضرت ام حرام بنت ملحان في تفصيلي تذكره روستو ((باب المعاء بالجهاد والشهادة...)) به ذيل كنبي مونو نقل كريده. اود دى حديث مكمل تشريح به ماقبل كنبي تيره شوي.

د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت د حدیث ترجمه الباب سره مطابقت ((فصهعتهافهاتت)) کښې دې ځکه چه ام حرام اللخ هم د الله تعالى په لارکښې غورزیدلې وه (۱)

٩- بَأَب: مَنْ يُنْكَبُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ

سابقه باب سره مناسبت به و راندینی باب کښی د هغه سړی فضیلت بیان شوې وو چه د الله تعالی به لارکښی د سورلئی وغیره نه پریوځی او وفات شی او په دې باب کښی دالله تعالی په لار کښی چه د کوم سړی څه اندام زخمی شی او په وینورنګ شی یا هغه په نیزه باندې اولګی د هغه د فضیلت ذکر دې.

د ترجمی مقصد امام بخاری مُشَاهِ به دی باب کښی د هغه سړی فضیلت بیانول غواړی د چا چه یو اندام په جهاد کښی د وینو شی یا هغه په نیزه اولګی (۲)

دُترجمة الباب لغوى تشريح دلته به ترجمه كنبي دوه لفظونه راغلي دي.

ا-ينکب۲-يطعن بنکب نکه نه مشتق دې او ((نکبه)) دا ده چه اندام د يو څيز په لګيدو باندې زخمی شی او د وينو شی ((القتل بالرمام)) نه مشتق دې او ((طعن)) وائی ((القتل بالرمام)) ته يعنی څوك په نيزه باندې وهل (۴)

[٢٦٣٠] حَدَّثَنَا حَفُصُ بُنُ عُمُرُ الْحَوْضِ حَدَّثَنَا هَبَامٌ عَنْ إِسْحَاقَ عَنْ أَنَس (٥) رَضِ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ بَعْتَ النَّبِي سُلَيْمِ إِلَى بَنِي عَامِرِفِي سَبْعِينَ عَنْهُ قَالَ بَعْتَ النَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقُوامًا مِنْ بَنِي سُلَيْمِ إِلَى بَنِي عَامِرِفِي سَبْعِينَ فَلَمَّا قَيْمُ مُوافَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَإِلَا كُنْتُمْ مِنِي قَلْهُ مَنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَإِلَا كُنْتُمْ مِنِي قَلْهُ فَا فَقَالَ اللَّهُ أَكْبَرُ فُوْتُ وَرَبِ الْكَعْبَةِ ثُمَّ مَا لُوا عَلَى بَقِيَّةِ أَوْمَنُوا إِلَى رَجُلِ مِنْهُمْ فَطَعَنَهُ فَأَنْفَذَهُ فَقَالَ اللَّهُ أَكْبَرُ فُوْتُ وَرَبِ الْكَعْبَةِ ثُمَّ مَالُوا عَلَى بَقِيَّةٍ أَوْمَنُوا إِلَى رَجُلِ مِنْهُمُ وَطَعَنَهُ فَأَنْفَذَهُ فَقَالَ اللَّهُ أَكْبَرُ فُوْتُ وَرَبِ الْكَعْبَةِ ثُمَّ مَالُوا عَلَى بَقِيَّةٍ أَوْمَنَا إِلَى وَبِ الْكَعْبَةِ ثُمَّ مَالُوا عَلَى بَقِيَّةٍ أَوْمَا اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْهُ مُوادًى اللَّهُ أَكْبَرُ وَلَا اللَّهُ عَلَيْهِ السَّلَامِ وَلَا مَا عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْهُ مُ قَلُ لَقُوا رَبَّهُ مُ وَالْ صَاهُمُ وَكُنَا اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ أَنْهُ مُ قَلُ لَقُوا رَبَّهُ مُ وَلَى عَلَيْهِ السَلَامُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ أَنْهُ مُ قَلُ لَقُوا رَبَّهُ مُ وَلَا عَلَى عَنْهُمُ وَأَرْضَا هُمُ وَكُنَا نَفُرا أَنُ بَلِغُوا قَوْمَنَا النَّهِ مَا لَلْهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْهُ مُ قَلُ لَقُوا وَهُ مَنَا اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْهُ مُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْهُ مُ قَلُ لَهُ مُوادًى عَنْهُ مُوادًا فَا عَلَى اللَّهُ مَا لَا لَا عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ مِلْ اللَّهُ مُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَلَالُهُ عَلَيْهُ وَسَلَمَ أَنْ مُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ أَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَلَا مُعَلِّلُهُ وَلَا عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ مَا اللَّهُ عَلَيْهُ وَالْمُ الْمُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ مُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَالْمُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ مُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّه

۱) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص٩٧)-

۲) (فنع البارى (ج عَص ١٩)-

٣) (فتع البارى (ج٤ص١٩) وقال ابن الأثير الجزرى رحمة الله فى النهاية (ج٥ص١١٣): النكبة: وهى ما يصيب الأنسان من الحوادث، فتكون أعم-

أ (النهاية لابن الأثير (ج٣ص١٢٧)-

^{3) (}قوله: عن أنس رضى الله عنه: الحديث مرتخريجه في كتاب الوتر باب القنوت قبل الركوع وبعده-

كشف البارى كتاب الجهاد (جلداول)

أَنْ قَدُلَقِينَا رَبِّنَا فَرَضِى عَنَّا وَأَرْضَانَا لُمَّ لَمِنْ بَعْدُ فَدَعَا عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ صَبَاحًا عَلَى رِعْلِ وَذَكُوانَ وَبَنِي لَحْيَانَ وَبَنِي عُصَيَّةَ الَّذِينَ عَصَوْا اللَّهَ وَرَسُولُهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ [٢٦٥٩، ٢٩٥٩، ٣٨٦٠ - ٢٨٩٩، رانظر: ٩٥٧]

تراجم رجال

ا-حفص برعمر: دا حفص بن عمر حوضی بغدادی میسددی (۱)

- همام: دا همام بن یحیی بصری کاهی دا د

-- اسماق: دا سحاق بن عبدالله بن ابی طلحه بیشت دی. د دوی حالات ((کتاب العلم باب من تعدیث ینتهی به المجلس....) لاندی راغلی دی. (۳)

قوله: قال: بعث النبى صلى الله عليه وسلم أقواماً من بنى سليم إلى بنى عامر في سبعين: حضرت انس بن مالك الله في فرمانى چه نبى كريم تاليم د بنى سليم قبيلى اوياكسان بنوعامر قبيلى طرف ته اوليكل

قبیلی آویاکسان بنوعامر قبیلی طرف ته اولیکل. یووهم اودهنی ازاله: حافظ شرف الدین دمیاطی ریسی فرمائیلی دی چه دا وهم دی ځکه چه د چا طرف ته ئی لیګلی وو هغه بنی سلیم دی او کوم ئی چه لیګلی وو هغه قاریان دی چه انصارو سره ئی تعلق لرلو. (۵)

حافظ آبن حجر مجالت فرمانی تحقیقی خبره دا ده چه د کومو خلقو طرف ته د اویاو کسانو قاریانو جماعت روان کریشوی وو هغه بنوعامر دی، پاتی شو بنو سلیم نو هغوی دی قاریانو سره غدر کری وو او هغوی نی شهیدان کری وو او چه دلته کوم وهم شویدی هغه د امام بخاری شیخ حفص بن عمر ته شویدی ځکه چه همدغه روایت امام بخاری مجالت کتاب المغازی کښی «موسی بن اسماعیل عن همام» په طریق سره نقل فرمائیلی دی په دی کښی دی (ان النبی صلی الله علیه وسلم بعث عاله آخ لأم سلیم فی سبعین داکها وکان رئیس الهش کین عامر بن الطغیل ۱۰۰۰) (۶) کیدیشی چه اصل عبارت داسی وو ((بعث اقوام امعهم اعوام سلیم الله بن عامر))

١) (د دوى د حالاتو دَپاره أو كورى كتاب الوضوء باب اليممن في الوضوء والغسل-

۲) (د دوى د حالاتو دَپار و او كورى كتاب الوضوء باب ترك النبي كالله والناس الأعرابي-

٣) (كشف البارى (ج٣ص٢١٣)-

٤) (كشف البارى (ج٢ص ٤)-

۵) (فتح الباری (ج۶ص ۱۹)-

٤) (الحديث أخرجه البخاري في كتاب المغازي باب غزوة الرجيع ورغل.... رقم (٩١)-

لېكن عبارت داسې جوړ شو من پښسليم. (١)

د دې دپاره دا وینا چه ((بعث النبی صلی الله علیه وسلم اتوامًا من بنی سلیم إلى بنی عامن) صحیح نه دې (۲)

نوله: فلماقدمواقال هم خالى : كله چه هغه راغلو نو زما ماما اووئيل.

«هال» نه مراد حضرت حرام بن ملحان الله دې (۳) چه د حضرت انس الله ماما او د حضرت انس الله ماما او د حضرت ام سليم الله کانو دې ا

حضرت حرام بن ملحان دا د رسول الله نظام جانثار صحابی حضرت حرام بن ملحان مالك بن خالدبن زیدبن حرام بن ملحان مالك بن خالدبن زیدبن حرام نجاری انصاری نگانی دی. (۴)

د ا د بدر صحابی دی او خپل رور سلیم بن ملحان الله سره دی په غزوه بدر کښی شریك وو او په غزوه احد کښی شریك وو او په غزوه احد کښی هم هغه ته د شرکت شرف حاصل دی.(۵)

غزوه بنرمعونه کښی دی د نورو ملګرو سره حضرت منذربن عمر او عامر بن فهیره نگان سره په شهادت سرفراز شو او عامر بن طفیل هغوی قتل کړې وو. (۶)

علامه ابن عبدالبر مُسَلِمُ يو قول دا هم نقل كريدي چه داد بئرمعونه واقعه كښې صرف زخمي شوې وو او يو صحابي ضحاك بن سفيان كلابي چه خپل اسلام به ئي پټولو د هغه د علاج معالجي د پاره د خپل قوم يوه ښځه حواله كړې وه ، او هغه څه شعرونه وئيلي وو په څه سره چه د هغه حقيقت په هغې ښكاره شو او هغوى هغه قتل كړو ليكن هم رومبي قول صحيح دي. (٧)

قوله: فقتلوهم إلا رجل أعرج صعد الجبل: نوهغه ټول قتل كړل بغيرد يو ګوډسړى نه چه غرته ختلى وو. مطلب دا دې چه دې غدارانو هغه ټول قاريان صحابه كرام څ*اڅې شهيدان* كړل د يو ګوډصحابى نه علاوه چه غر ته ختلى وو په دې وجه بچ شو.

۱) (فتح البارى (ج۶ص۱۹)-

٢) (دُ دَى واقعى دُ تفصيل دَپاره او كورئ كشف البارى كتاب المغازى (ص٢٤١)-

٣) (عمدة القاري (٤٤ ص٩٨) -

إلاستيعاب بهامش الإصابة (ج١ص٣٥٢) ومعرفة الصحابة (ج٢٥٧)-

۵) (الاستيعاب بهامش الإصابة (ج١ص٣٥٢)-

۶) (حواله بالا او غزوه بنر معونه تفصيل د پاره او گورئ كشف الباري كتاب المغازي (ص۲۶۱)-

٧) (وقيل: إن حرام بن ملحان ارتث يوم بئر معونة، فقال الضحال بن سفيان الكلابي – وكان مسلما بكنم اسلامه – لامأة من قومه: هل لك في رجل إن صح كان نعم الراعي؟ فضمته إليها فعالجته فسمعته يقول:

أتت عامر ترجو الهوادة بيننا ألم وهل عامر إلا عدو مداجن

إذا مارجعنا ثم لم تك وقعة ♦ بأسيافنا في عامر أو نطاعن

فلا ترجونا أن يقاتل بعدنا أن عشائرنا والمقربات الصوافن

فوثبوا عليه فقتلوه. انبرالاستيعاب بهامش الإصابة (ج١ص٣٥٣) والإصابة (ج١ص٣١٩)-

«رجل اعرمی نه مراد حضرت کعب بن زید الله دې او د بنودینار بن نجار سره د هغه تعلق وو. (۱)

«رجل اعرجی منصوب هم لوستلی شویدی یعنی ((رجلا اعرجی)) دلته چه کوم مرفوع نقل شویدی د هغی باره کنبی علامه کرمانی میشید فرمانی چه دا د عربو د قبیلی ربعی لغت دی چه هغوی مستثنی مرفوع لولی. (۲)

د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت د حدیث ترجمه سره مطابقت ((فطعنه فأنفنه)) کښی دی چه دی غدارانو نه یو سړی حضرت حرام بن ملحان الله کانو په نیزه اووهلو چه د هغه د بدن نه تیروبیر شوه.

[٢٣٨] حَدَّثَنَا مُوسَى بُنُ إِسُمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُوعَوَانَةَ عَنْ الْأَسُودِ بُنِ قَيْسٍ عَنْ جُنْدَبِ بُنِ سُفْيَانَ (٣) أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ فِى بَعْضِ الْمَشَاهِدِ وَقَدُ دَمِيتُ إِصْبَعُهُ فَقَالَ هَلْ أَنْتِ إِلَا إِصْبَعٌ دَمِيتِ وَفِى سَبِيلِ اللَّهِ مَا لَقِيتِ [٣٤٨]

تراجم رجال

ا- موسى بر اسماعيل: دا ابوسلمه موسى بن اسماعيل تبوذكى بصرى مُرَاثِيَّة دې د ابوعوانه: دا ابوعوانه وضاح بن عبدالله يشكرى مُرَاثِهُ دې د دواړو حضراتو تذكر ؛ (ربد الوحي) څلورم حديث لاندې تيره شوې ده (۴)

<u>--اسودبر قيس يوني</u> دا مشهورتابعي حضرت اسود بن قيس يوني دي. (۵)

م-جندب بن سفيان الله عليه وسلم كان في بعض المشاهد وقد قوله: أن رسول الله عليه وسلم كان في بعض المشاهد وقد دميت إصبعه: حضرت جندب بن سفيان المشاهد وايت دى چد نبى كريم المشاهد يوه غزوه

۱) (فتح الباري (ج۷ص۳۸۷)-

۲) (شرَّح الکرمانی (ج۱۲ص۱۰۵) دَ حدیث باب نور تفصیل او په دې کښې ذکر شوې واقعه دَ پاره اوګورئ کشف الباري کتاب المغازي (ص۲۶۱–۲۶۸)۔

٣) (قوله: عن جندب بن سفيان رضى الله عنه: الحديث أخرجه البخارى أيضًا (ج٢ص٩٠٨) كتاب الأدب باب مايجوز من الشعر والرجز والحداء ومايكره منه رقم (١٤۶) ومسلم (ج٢ص٩٠١) كتاب الجهاد والسير باب مالقى النبى صلى الله عليه وسلم من أذى المشركين والمنافقين رقم (٤٤٥٤) والترمذى فى جامعه (ج٢ص١٧٢ أبواب تفسير القر آنباب ومن سورة والضحى رقم (٤٣٣-٤٣٤)_

٤) (کشف الباری (ج۱ص۳۳۶ - ۴۳۶) -

٥) (دُ دوى دُحالاتودَپاره أو گورى كتاب العيدين باب كلام الإمام والناس في خطبة العيد...-

٤) (حواله بالا-

کښې شریك ووچه د هغوی یوه ګوته د وینوشوه.

«مشاهد» نه مراد مغازی دې اودې ته د مشاهد وئيلووجه دا ده چه غزوه د شهادت ځائ دی. (۱)

او په حدیث شریف کښې بیان شوې واقعه د غزوه احد ده په کوم کښې چه د نبي کریم تالیم یوه ګوته زخمې شوې وه. (۲)

قوله: فقال: هل أنتِ إلا إصبح دَميت: وفي سبيل الله مالقيت: نو هغوى الله ما الله مالقيت: نو هغوى الله ما الله تعالى به لاركنبي اورسيدو هغه دُ الله تعالى به لاركنبي اورسيدو.

یواشکال اود هغی جوابونه دلته هغوی نظیم یو شعر اوفرمائیلو او په قرآن کریم کښی درسول الله نظیم په صفت کښی راغلی دی (وماعلمنالا الشعروماینها له) (۳)مون هغه ته نه د شعر تعلیم ورکړی او نه شعر وئیل د هغوی دپاره مناسب دی.

دُ دَى اشْكَالُ مختلف جوابونه وركړيشوي دي:

① علامه کرمانی رُوالی فرمائی چه دا رجز دی او رجز شعر نه دی لکه چه امام اخفش رُولی مذهب دی. ځکه چه رجز ویونکی ته "راجز" خو وائی مګر شاعر نه، د دی دیاره چه په شعر کښی دا ضروری دی چه هغه بیت تام وی او د عروض مسلمه وزنونو مطابق مقفی وی. دغه شان دا هم ضروری دی چه د شعر وئیلو اراده ئی هم کړی وی، اتفاقی توګه باندی د ژبی وتلی شوی مقفی عبارت ته شعر نشی وئیلی (۴)

﴿ بعض حضراتوآیت شریف (وماعلمناه الشعر) باره کښی فرمائیلی دی چه په دې کښی د مشرکین مکه د دی قول رد دی کوم کښی چه هغوی حضور گائم ته شاعر ګرځولی وو، اودا ښکاره ده چه چه هغه په معروف معنی کښی شاعر وو او نه شعر وئیل د هغوی معمول وو. واوکه د حضور پورته ذکر شوی کلام شعر هم اومنلی شی نو وئیلی به شی چه د هغوی په حق کښی انشاء شعر ممنوع دی انشاد شعر نه. او انشاء شعر او انشاد شعر دوه جدا جدا څیزونه دی. شاعر هغه وی چه د شعر جوړول کوی، د تشبیب اشعار وائی، مدح او ذم کوی او د فن مختلف شکلونه ښائی خو الله تعالی خپل رسول ناهم د دی نه بری ساتلی اود هغه د مرتبی حفاظت ئی کړیدی. (۵)

به دي باره كنبي نور تفصيل انشاء الله ((كتاب الأدب باب مايجوز من الشعر)) كنبي راخي د حديث مناسبت ((وقد دميت أصبعه))

۱) (عمدة القارى (ج ۱ ۱ ص ۹۹)- ً

٢) (حواله بالا وشرح الكرماني (ج١٢ص ١٠۶)-

۴) (یس:۶۹_

٤) (شرح الكرماني (ج١٢ص١٠٥)-

۵) (حواله بالا وشرح ابن بطال (ج۵ص۱۹-۲۰)÷

كتاب الجهاد (جلداول كشف الباري

م کښې دی چه د هغوی ناه گلاوته مبارکه د کانړی لګیدو په وجه زخمی شوې وه. (۱)

٨- بَاب: مَنْ يُجُرَحُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ

دُترجمة الباب مقصد دلته امام بخارى مُناهَ دُ اللهُ تَعالَى په لاركښى زخمى كيدونكى سړى

فضیلت ښائی (۲)

دَ الله تعالى به لاركښى زخم راتلو لوئ د فضيلتِ خبره ده، د الله تعالى به نزد د دې ښكلى خوشبو وی او د دې نه چه کومه وینه وتلی وی د هغې به هم ډیر عظمت وی لیکن شرط دا دی چه هغه زخم د الله تعالی په لارکښې لګیدلې وی. نو چه کوم سړې د الله تعالی په لارکښې لګیدلې وی. نو چه کوم سړې د الله تعالی په لارکښې د جهاد د پاره په خلوص سره ځی د هغه دافضیلت دې اوکه د ریاکارنی او ځان خودلو دپاره ځی نو ښکاره خبره ده چه هغه په دې کښې شامل نه دې.

[٢٦٣٩] حَدَّثَنَا عَبُدُ اللَّهِ بُنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةً (٢) رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنِّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ وَالَّذِى نَفْسِى بِيَدِهِ لَا يُكْلَمُ أَحَدٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَنْ يُكْلَمُ فِي سَبِيلِهِ إِلَّاجَاءَيُوْمَ الْقِيَامَةِ وَاللَّوْنُ لَوْنُ الذَّمِ وَالرِّيحُ رِيعُ الْبِسُكِ [ر:٢٣٥]

تراجم رجال

ا-عبدالله بن يوسف: دا عبدالله بن يوسف دمشقى تنيسى ويات دې.

-مالك: دا امام مالك بن انس اصحى مدنى بريات دي، دَ ددې دواړو حضراتو تذكره ((بدم الوحی)) دوئم حدیث کښې راغلی دی.(۴)

-- ابى الزناد: دا ابوالزناد عبدالله بن ذكوان رواله دي.

٣- اعرج: داعبدالرحمن بن هرزمزالاعرج مُؤللة دي. دُ دي دواړو حضراتو حالات «كتاب الإيهان باب حب الرسول تُلْقِيم من الإيهان)) به ذيل كنبي تيرشوى دى. (٥)

٥- ابوهريرة الله المائيز: دَ حضرت ابوهريره الله عن طلات ((كتاب الإيمان باب أمور الإيمان))لاندې بنه تفصیل سره تیرشوی دی. (ع)

۱) (عمدة القارى (ج ۱ کس۹۹)-

۲) (عمدة القارى (ج ۱ ۱ ص ۱۰۰)-

٣) (قوله: عن أبي هريرة رضي الله عنه: الحديث مرتخريجه في كتاب الطهارة باب ما يقع من النجاسا^{ت في} السمن والماء–

٤) (كشف البارى (ج١ص٢٨٩-٢٩٠) امام مالك د پاره نور او مورئ كشف البارى (ج٢ص٨٠)-

۵) (کشف الباری (ج۲ص۱۰-۱۱)-

۶) (کشف الباری(ج۱ص۶۵۹)-

ددیث ترجمه دحضرت ابوهریره ناش نه روایت دی چه رسول الله نظم ارشاد فرمائیلی چه د مغه دات قسم د چا د قدرت په قبضه کښی چه زما ځان دی، یو سړی هم د الله تعالی په لارکښی نه زخمی کیږی او الله تعالی ته ښه پته ده چه د هغه د پاره څوك زخم خوری مګر دا چه د قیامت په ورځ به داسې حال کښې راځی چه رنګ خو به هم د وینې وی ولې دینه تلونکې خوشبو به د مشك وی.

په حدیث شریف کښی د الله تعالی په لارکښی د زخمی کیدونکی سړی فضیلت بیانیږی چه د الله تعالی په لارکښی زخمی کیدونکی به د قیامت په ورځ په دې داسې حال کښی د الله تعالی په دربارکښی حاضریږی چه د الله تعالی د پاره ورکړیشوې قربانی به د هغه په بدن باندې وی او هغه به د وینو رنګ بدن واخلی او د الله تعالی په دربارکښې به حاضریږی اود هغه وینې نه به د وینې بوی نه د مشك خوشبو روانه وی.

په حدیث کښې کوم زخم مراد دې؟ «ښسبیل الله»: نه مراد خو هم جهاد دې چه زخمې شوې خو په جهاد کښې وی لیکن لفظ هر هغه زخم ته شامل دې چه د الله تعالی دپاره لګیدلې وي او هغه ته هم کوم کښې چه سړې د خپل حق دفاع کولو سره زخمي شي (۱)

اود دې خبرې هم احتمال دې چه د زخم نه مراد هغه زخم وی د کوم د وجه نه چه د زخم جوړيدونه وړاندې سړې مړ شی، نه هغه زخم چه په دنياکښې جوړ شوې وی ځکه چه د زخم جوړيدونه زخم اود وينې بهيدلو اثر آخر ختم شی ليکن دا د دې خبرې نفی نه کوی چه د زخم د جوړيدو په صورت کښې هغه ته هيڅ فضيلت نه حاصليږی خو ظاهر خو هم دغه دی چه د لته هغه سړې مراد دې چه د قيامت په ورځ په داسې حالت کښې حاضر شی چه د هغه د زخم نه وينه بهيږی او دا په هغه وخت کښې ممکن دی چه کله د دنيا نه د رخصت کيدو په وخت زخم په خپل حالت باندې وی (۲)

قوله: والله أعلم بمر يكلم في سبيله: او هم الله تعالى ته معلومه ده چه څوك په دې لاركښي زخمي كيږي.

ر رسبی رحمی سپری . دا په حدیث کښی جمله معترضه ده ، دینه مقصود دا دې چه د نیت اخلاص هم وی ، زخمی کیدل صرف د الله تعالی د پاره وی ریاکارئی د پاره نه وی نو ده ته به داثواب ملاویږی ګنی نو نه به ملاویږی (۴)

ر ــ بــ ـــرويږي. ر ٠٠) علماء ليکي دي چه شهيد به په هم دغه حالت کښې کوم کښې چه شهيد شوې وي د

۱) (عمدة القارى(٤ اج ١٠٠) وشرح ابن بطال (ج۵ص ۲۰)-

۲) (فتح الباري (ج۶ص ۲۰)-

۳) (مجمع الزواندلُّلهيثمي (ج۵ص۲۹۷)-

٤) (عمدة القاري (١٤ ص٠٠١)-

کشف البّاری کتاب الجهاد (جداول ا

اوچتولو حکمت دا دې چه د هغه سره د خپل فضیلت ګواهی او سند هم وی چه هغه خپل ځان د الله تعالی په تابعدارئی کښې قربان کړې وو (۱)

د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت د حدیث ترجمه سرد مناسبت ((لایکلم أحد في سبیل الله

الخ» کښې دې ځکه چه د کلم معنی هم جرح ده. (۲) د باب په حدیث کښې په صراحت سره د الله تعالی په لارکښې زخمي کیدلو فضیلت. مرتبه او ثواب بیان کړیشویدې

اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا وَالْدَوْ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا إِلَا إِحْدَى الْحُسْنَيَيْن وَالْحَرْبُ سِجَالُ وَاللَّهُ وَالْحَرْبُ لِللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى ال

ماقبل سره ربط: په وراند ینوبابونو کښې امام بخاری مختلفو طریقو سره دمجاهد او شهید فضیلت او اهمیت بیانولو، په دې باب کښې امام صاحب دا خودل غواړی چه مجاهد بهر حال کامیاب دې که هغه د جنګ د میدان نه غازی راشی یا د الله تعالی په لارکښې شهید شي.

دَترجمهٔ الباب مقصد د ترجمه مقصد دا دی چه کوم خلق جهاد ته ځی هغوی ته دوو خوبیانو کښې یوه ضرور ملاویږی که هغه ګټه بیامومی او کامیاب شی نو هغوی ته الله تعالی اجر ورکوی او بعض وخت غنیمت هم ملاویږی او ثواب خو بهر حال ملاویږی او که چرې هغه شهید شی نود شهادت او چت او عظیم منصب هغه ته ملاویږی. (۳)

قوله: والحرب سجال: اوجنګ د ډولچود راښکلوغوندې دې. د دې جملي پوره تشريح خو تيره شويده. (۴)

خودلته د دې د ذکر کولو مقصد دا بیانول دی چه جنګ د ډولونو د راښکلو پشان ده لکه څنګه چه په کوهی باندې ډول وی چه د یوې ډلې په لاس کښې وی نو بله ډله انتظار کوی دغه شان ددې په عکس ،دغه شان د جنګ حال هم دې چه کله یوه ډله غالبه راشي اوکله بله ،نو که مسلمانانو ته غلبه حاصله شي نو دوی ته فتح حاصله شوه اوکه مشرکانو او کافران غالب شول نومسلمانانو ته به د شهادت مرتبه ملاؤ شي مسلمانان په هرحال کښې کامیاب دی

دمذكوره جمله آیت سره ربط آیت مبارك كښې ((الحرب سجال)) مناسبت واضح دې د دې د پاره (رخسنیکن)) نه مراد ظفراو شهادت دې او مذكوره جمله دواړو معنوته متضمن ده. (۵)

۱) (فتح الباری (ج۶ ص۲۰)-

٢) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٠٠)-

٣) (عمدة القاري (ج ٤١ ص ١٠٠) وشرح ابن بطال (ج٥ص ٢١)-

انظر کشف البآری (ج۱ص۵۰۰)۔

د) (عمدة القارى (ج ٤ اص ١٠١)-

الله بن عبد الله أن عبد الله فن عباس () أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا سُفِيانَ بْنَ حُرْبُ أَخْبَرَهُ أَنَّ اللهُ فَنِ عَبْدِ اللهِ فَنَ عَبْدَ اللهِ فَنَ عَبْدِ اللهِ فَنَ عَبْدِ اللهِ فَنَ عَبْدِ اللهِ فَنَ عَبْدَ اللهِ فَنَ عَبْدَ اللهِ فَنَ عَبْدَ اللهِ فَنَ عَبْدِ اللهِ فَنَ عَبْدَ اللهِ فَنَ عَبْدِ اللهِ فَنَ عَبْدِ اللهِ فَنَ عَبْدِ اللهِ فَنَ عَبْدَ اللهِ فَاللهِ فَنَ عَبْدَ اللهِ فَا عَبْدَ اللهِ فَاللهِ فَا فَا عَبْدَ اللهِ فَاللهِ فَا فَا عَلَى اللهِ فَا فَاللهِ فَا فَا عَلَى اللهِ فَا عَبْدَ اللهِ فَا فَا عَلَى اللهِ اللهِ

تراجم رجال

<u>- يحيى برب بكير:</u> دا يحيى بن عبدالله بن بكيرمخزومي ميهيد دي.

-الليث: داابوالحارث ليث بن سعدبن عبدالرحمن فهمي منه دي. د دې دواړو حضراتو حالات ((بدهالوحي)) دريم حديث كښي راغلي. (٢)

۳- ابر شکاب: دا محمد بن مسلم ابن شهاب زهری برای د دوی حالات مختصراً (۱۲۰ می د دوی حالات مختصراً (۱۲۰ می دوی) د دریم حدیث په ذیل کښی راغلی دی. (۴)

٥-عبيدالله برعبدالله: داابوعبدالله عبيدالله بن عبدالله هذلي مُنِيد دي. دَ دوى حالات (كتاب العلم باب متى يصح سماع الصغير؟)) به ذيل كنبي نقل شوى. (٥)

۲-عبدالله برعباس: حضرت عبدالله بن عباس المن الما تا دربد الوحی) څلورم حدیث او ((کتاب الإیبان باب کفران العشیر ۱۰۰۰) کښې تیرشوی دی (۶)

2- ابوسفیان: دا مشهور صحابی ابوسفیان صخربن حرب بن امیه گان دی. د دوی حالات ((پده الوحی)) شپرم حدیث لاندی راغلی دی.(۷)

د دې حدیث مکمل تشریح ((۱۷۹ الوحی))شپږم حدیث لاندې تیره شوې ده (۸)

۱) (قوله: أن عبدالله بن عباس رضى الله عنهما: تقدم تخريجه فى أول الكتاب (بدءالوحى) انظر كشف البارى) ج ١ صن ٤٧٧) الحديث السادس-

۲) (كَشْفُ البَّاري (ج ١ص٣٢٣-٣٢٤)-

م) (كشف الباري (ج٣) وكشف الباري (١ص٩٤)-

٤) (كشف الباري (ج ١ص٣٢٥)-

 $^{^{(4)}}$ (کشف الباری (-7) و کشف الباری (-7)

ع) (کشف الباری (ج ۱ص۴۵۵) و (ج۲ص۲۰۵)-

۲) (کشف الباری (ج ۱ ص ٤٨٠)-

أنظر كشف البارى (ج١ص٧٧٤) الحديث السادس-

كتاب الجهاد (جداول ا

٣- بَاب: قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى مِنُ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالُ صَدَقُوامَا عَاهَدُوااللَّهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَنُ تَعْلَمُ فَعَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَنُ تَعْلَمُ وَمِنْهُمُ مَنُ يَنْتَظِرُومَا عَاهَدُوااللَّهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمُ مَنْ يَنْتَظِرُومَا بَدَّ الْأَحْزَاب: ٢٣]

بَدَّلُوا تَبْدِيلًا [الأحزاب: ٢٣]

ماقبل سره مناسبت: په تیروشوو بابونوکښی په جهاد کښی شرکت اود دی د فضیلت بیان وو، په دې باب کښی په میدان جنګ کښی د کلک اودریدو ذکردی. ځکه چه د جهاد فضیلت په ثابت قدمنی او د ثبات قلبنی په ذریعه حاصلیدیشی. ګنی دا شرکت د وبال صورت هم اختیارولی شی چه اوتختی،اوبیا د دنیا اوآخرت دخساری موجب جوړ شی. د ترجمة الباب مقصد امام بخاری گواید د لیه باب کښی دا خودلی دی چه سړی الله تعالی سره د دی خبری عهد اوکړی چه زه به د جهاد د پاره ځم اود الله تعالی په لارکښی به جنګ کوم، نو هغه له په دې باندې کلک اودریدل هم پکاردی ځکه چه الله تعالی د داسی خلقو تعریف، توصیف او مدح فرمائیلی ده.

۱) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ١٠١) وفتح البارى (ج ۶ ص ٢١)-

۲) (المتوارى (ص ۱۵۰)-

٣) (فتع البارى (ج٤ص٢١)-

ا (حواله بالا وعمدةالقارى (ج ٤ ١ص١٠١)-

[١٢٥] حَدَّثَنَا مُحَدِّدُبُنُ سَعِيدِ الْحُزَاعِيُ حَدَّثَنَا عَبُدُ الْأُعْلَى عَنْ مُمَيْدِ قَالَ سَأَلْتُ أَنْسَاقًا لَ مَا تَعْلَى عَنْ مُمَيْدَ الطّويلُ عَنْ أَنْسِ (١) رَضِى اللّهُ عَنْهُ قَالَ غَابَ عَيْمِ أَنْسُ بُنُ النَّصْرِ عَنْ قِتَالِ بَدْرِ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللّهِ غِبْتُ عَنْ أَوَّلِ عَنْ قَبَالَ قَاتَلُتِ الْمُثْمِرِكِينَ لَيْرَينَ اللّهُ مَا أَصْنَعُ فَلَا اللّهُ مَا أَصْنَعُ فَلَا اللّهُ مَا أَصْنَعُ اللّهُ مَا أَصْنَعُ فَلَا اللّهُ مَا أَصْنَعُ اللّهُ مَا أَصْنَعُ فَلَا اللّهُ مَا أَصْنَعُ اللّهُ مَا أَصْنَعُ مَلُولِ يَعْنِي اللّهُ مَا أَصْنَعُ مَلُولِ عَنْ اللّهُ مَا أَصْنَعُ مَلًا عَنْ اللّهُ مَا أَصْنَعُ مَلَا عَلَى اللّهُ مَا أَسْلَمُ وَالْكَيْفِ أَوْ مَنْ اللّهُ مَا أَلْكُولُ اللّهُ مَا أَصْنَعُ مَلَا عَنْ اللّهُ مَا أَصْنَعُ مَا اللّهُ مَا أَنْ اللّهُ مَا عَنْ اللّهُ مَا عَلَى اللّهُ مَا عَنْ اللّهُ مَا اللّهُ مَا عَلَى اللّهُ مَا عَنْ اللّهُ مَا عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ مَا عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ مَا عَلَى اللّهُ مَا عَلَى اللّهُ مَا عَلَى اللّهُ مَا عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ مَا عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ مَا عَلَى اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَل

تراجم رجال

ا- همه البري سعيد الخزاعي: دامحمد بن سعيد بن الوليد خزاعي برياد و دوى كنيت البوعمرو ياابوبكر دى ، د بصرى اوسيدونكى وو (٢) او مردويه د هغه لقب دى (٣) دوى د عبدالاعلى بن عبدالاعلى، زياده بن الربيع، خالد بن الحارث، زكريا بن يحيى بن عمارة، عون بن عمرو القيسى، هشام بن محمد بن كلبى او ابوتميله المريخ وغيره نه د حديث روايت كوى.

د دوی نه روایت کونکو کښی امام بخاری، امام ابوزرعه، ابوحاتم، حرب بن اسماعیل د دوی نه روایت کونکو کښی امام بخاری، امام ابوزرعه، ابوحاتم، حرب بن اسماعیل ،یعقوب بن سفیان، محمدبن ابراهیم بن سعید البوشنجی، محمدبن غالب تمتام، محمدبن یوسف بن الترکی او احمدبن محمد الاصبهانی التحقیره شامل دی (۴) ابوحاتم میشید فرمائی ((کان تقد صدوقا)) (۵)

ا (قوله: عن أنس رضى الله عنه: الحديث أخرجه البخارى أيضًا (ج٢ص٥٧٩) كتاب المغازى باب غزوة أحدرقم (٤٠٤٨) وفى (ج٢ص٥٠٥) كتاب التفسير باب (فمنهم من قضى نحبه ومنهم من ينتظر، وما أحدرقم (٤٠٤٨) ومسلم (ج٢ص١٣٩) كتاب الإمارة باب ثبوت الجنة للشهيد رقم (٤٩١٨) بدلواتبديلاً وقم (٤٩١٨) أبواب تفسير القرآن باب ومن سورة الأحزاب رقم (٣٢٠٠)-

۲) (تهذيب الكمال (ج۲۵ص۲۷۷)-

۳) (فتح الباری (ج۶ص۲۲)۶) (شیوخ و تلامذه تفصیل د پاره او گوری تهذیب الکمال (ج۲۵ص۲۷۸)-

[،] ريس وحدد سيس عهر درور و العجمى العجمى العجمى العجمى العجمى على ((ثقة))) (حاشية سبط ابن العجمى على كان العجمى على الكاشف (ج٢ص١٧٥))

حافظ ابن حجر برايد فرمائي ((لقة))(٢)

ابن حبان المنطقة هغوى بدكتاب الثقات كنبى ذكركريدي (٣)

په آصحاب اصول سته کښې صرف امام بخاري پښتو د دوی نه روایتونه اخستې دی. (۴) او هغه هم صرف په دوو موقعوباندې، یو دلته او بل کتاب المغازی کښې. (۵)

دَ هغه انتقال په کال ۲۳۰ ه کښې شوې. (۶) رحمه الله رحمه واسعة.

-عبدالاعلى: داعبدالاعلى بن عبدالاعلى السامى مينيد دى. (٧)

٣- عمروير زراره: دا عمرو بن زرارة واقدهلالي سير دي. (٨)

م- زيادبر عبدالله العامري البكائي: دا زياد بن عبدالله بن الطفيل ميني دي (٩) ابومحمد د هغوى كنيت دي (۱۰) دوي د بنوعامر بن صعصعه شاخ بنوالبكاء سره تعلق لرلو په دې وجه هغوي ته العامري او البكائي وائي. (۱۱) دكوفي اوسيدونگې وو په دې وجه کوفی به ئی ورته وئیل (۱۲)

دوى د عبد الملك بن عمير، حميد الطويل، عاصم الاحوال، اعمش، منصور، حصين، محمد بن اسحاق، يزيد بن ابي زياد اوحجاج بن ارطاة المنظم وغيره نه روايت حديث كوي.

اود مغه نه روايت كونكوكښي امام احمد بن حنبل، احمدبن عبدة الضبي، ابوغان النهدى، اسماعيل بن توبه، سهل بن عثمان، يوسف بن حماد، معمروبن زرارة، عبدالملك بن هشام السدوسي النحوي، عبدالله بن سعيد بن ابان الأموى المنام وغيره شامل دي. (١٣)

امام وكيع بن الجراح وملي فرمائي ((هواشماف من أن يكذب في الحديث)) (١٤)

١) (حاشية تهذيب الكمال (ج٢٥ص٢٧٩)-

٢) (تقريب التهذيب (ص٤٨٠)-

٣) (الثقات لابن حبان (ج٩ص ٤٤)-

٤) (تهذیب التهذیب (ج۹ص ۱۶۰)-

۵) (فتح الباری (ج۶ص۲۲) -

۶) (تهذیب التهذیب (ج۹ص۱۹۰) –

٧) (دُ دوى دُحالاتودُپاره اوګورئ کتاب الغسل باب إذاذکر في المسجد أنه جنب....

٨) (د دوى د حالاتود پاره او گورئۍ كتاب الصلاة أبواب سترة المصلى باب قدر كم ينبغى أن يكون...-

٩) (تهذيب الكمال (ج ٩ص٤٨٥)-

۱۰) (طبقات ابن سعد(ج۶ص۳۹۶)-

١١) (الأنساب للسمعاني (ج١ص٣٨٢)-

۱۲) (سيرأغلام النبلاء (ج٩ص٥)-

١٣) (شيوخ او تلامذه تفصيل دَپاره او كورئ تهذيب الكمال (ج ٩ ص ٤٨٧ - ٤٨٧) -

١٤) (تهذيب الكمال (ج٩ص٤٨٧) وحاشية سبط ابن العجمى على الكاشف (ج١ص٤١١)-

امام احمدبن حنبل مولي فرمائي ((ليسهههاسحديثهمديث اهل المدين)) (١)

دغه شان امام ابوداود می امام احمدبن حنبل می و هغوی باره کنبی نقل کوی: «مااریکان پهلکان این اور در این الرای فیه....کان صدوقا» (۲)

ابوزرعيمية فرمائى ((صدوق)) (٣)

ابن عدى مُرَثِيرَ فرمائى ((ولريادبن عبدالله....أحاديث صالحة وقد روى عنه الثقات من الناس وما أرى برواياته بأسا)) (۴)

ابن حبان مركية فرمائى ((كان فاحش الخطأكثيرالوهم، لايجوزالاحتجاج بخبرة إذا انفهد وأما فيا وافق الثقات في الروايات فان اعتبريها معتبرفلاضير... وكان يحيى بن معين سئ الرأى فيه))(۵) ابوحاتم ويهيئ فرمائى (ريكتب حديثه ولايحتج به)) (۶)

امام نسائی مُرَاثِی ورمائی ((ضعیف)) دغه شان یو بل ځائ کښې فرمائیلی ((لیس بالقوی)) (۷) ابن سعد مُرَاثِی فرمائی ((...وکان عندهم، نعیفا، وقد حداثواعنه))(۸)

عبدالله بن على ابن المديني ويهاي فرمائي ((سألت أب عنه نضعفه)) (٩)

دغه شان على ابن المديني محطة فرمائي ((كتبت عنه شيئا كثيرا، وتركته))(١٠)

امام ترمذی و فرمائی ((کثیرالبناکین) (۱۱)

امام عقیلی مسلم هغه ((الضعفاء الکهیر)) کښی ذکر کړیدی (۱۲) تاسو د زیادبن عبدالله متعلق اقوال جرح او تعدیل اوکتل چه بعضو محدثینو د هغوی توثیق او تعدیل کړیدې نو بعضو تضعیف او تجریح، تردې چه ابن حبان مسلم چه په خپل

١) (تهذيب الكمال (ج ٩ص٤٨٧)-

٢) (حواله بالا-

٣) (سيرأعلام النبلاء (ج٩ص٥٩)-

ع) (الكامل لأبن عدى (ج٣ص١٩٣)-

۵) (تعليقات تهذيب الكمال (ج٩ص٤٩)-

۶) (تهذیب الکمال (ج۹ص۴۸)-

٧) (حواله بالا-

۸) (طبقات ابن سعد(ج۶ص۳۹۶)-

٩) (تهذيب الكمال (ج ٩ ص ٤٨٨)-

١٠) (حواله سابقه-

۱۱) (سیرأعلام النبلاء (ج۹ص۶)-

۱۲) (الضعفاء الكبير (ج٢ص٧٩-٨٠)-

تساهل کښې معروف دې هغه هم د دوی باره کښې ((فاحش الخطأ)) او ((کثیرا لوهم)) غوندې الفاظ استعمال کړی دی خو دلته د پوهې خبره دا ده چه

() زیادبن عبدالله مطلقا ضعیف نه دی، بعض حضراتود هغوی توثیق هم فرمائیلی.

امام بخاری رواند و هغوی دا حدیث د مغازی او جهاد په باب کښی ذکر کړې او زیاد بن عبدالله مغازی کښی ثقه دې. نو حافظ صالح بن محمد رواند فرمائی:

((لیس کتاب المغازی عند احد اصح منه عند زیاد البکائی، وزیاد فی نفسه ضعیف، ولکن هومن اثبت الناس فی منه البال الم فی مذا الکتاب، و ذلك انه باع دار به و خرج یدور مع ابن إسحاق حتی سبع منه الکتاب) (۱)

يعنى د زياد بكائى نه زيات صحيح كتاب المغازى بل چا سره نشته. هغه الارچه فى نفسه ضعيف دى ليكن دى كتاب المغازى كښى هغه د ټولونه زيات د اعتماد قابل دى. د دې وجه دا ده چه هغه خپل كور خرڅ كړو او محمدبن اسحاق سره سره اوسيدو، تر دې چه د هغه نه ئى ټول كتاب واوريدو.

امام ابوداؤد مُرَامَةُ فرمائى: ((سبعت يحيى بن معين يقول: زيادالبكائى ابن إسحاق ثقة، كأنه يضعفه ل غيرة)) (٢)

دغه شان عثمان بن سعید مرید فرمائی (رسالته عن البکالی؟ فقال: لاباس به فی البغازی واما فیره فلا » رسالت یحیی قلت: عین اکتب امغازی مین یروی عن یونس اوغیره؟ قال: اکتبه عن اصحاب البکافی)

او یحیی بن آدم گُونِهٔ ابن ادریس گُونهٔ نه نقل کوی چه هغوی فرمائیلی دی ((ماأجداثبت فی ابن اسحاق منه، لأنه أملى علیه الملاح مرتبن))(۴)

او صالح جزری المناع فرمائی: ((هوعلى ضعفه أثبتهم في المغازى))(٥)

دَدې ټولو اُقُوالونه دامعلومه شوه چه زیاد بن عبدالله البکائی امرچه ضعیف دې لیکن (رمغلای)) کښې ثقه دې.

امام بخاری میه انحرچه د هغه روایت نقل کریدی لیکن متابعه او د عبدالاعلی بن
 عبدالاعلی روایت سره(مقرونا) ذکرکریدی او بیا په بخاری کښی همدغه یو روایت دی.(۶)

١) (تهذيب الكمال (ج٩ص٤٨٩)-

۲) (تاریخ عثمانی بن سعیدالدارمی (ص ۱۱۶)۔

٣) تاريخ عثمان بن سعيد الدارمي (ص. ١١٤)

٤) (تهذيب الكمال (ج٣ص٣٧)-

۵) (الكاشف (۱ج۲۱)-

۶) (هدى السارى (٤٠٤)-

هغه د بخاری نه علاوه د مسلم، ترمذی او ابن ماجه هم راوی دی. (۱)

دُهارون الرشيدية زمانه كښې په كال١٨٣ه كښې د هغوى انتقال اشو (٢) رحمه الله رحمة واسعة.

٥- حميد الطويل: دا ابوعبيده حميد بن ابى حميد خزاعى بصرى ركيد دى. دَ هغوى حالات ((كتاب الإيبان) بابعوف البؤمن من أن يحبط عبله....) لاندې تير شوى دى. (٣)

۲-انس الليز: دا مشهور صحابی حضرت انس بن مالك الليز دی. د دوی حالات (ركتاب الایدان با به من الایدان ادید با میدان می دی (۴)

قوله: قال: غاب عمى أنس بر. النضر عر. قتال بدر: حضرت انس النشر فرمائي چه زما تره انس بن النظر د بدر د میدان نه غائب وو، دلته غیبوبت نه مراد تخلف دی یعنی روستو پاتی شوی وو، دا مطلب نه دی چه هغه بدر کښی شریك شوی وو او غائب شوی وو. (۵)

حضرت انس بری النضر طالتی: دا حضرت انس بن مالک طالتی تره حضرت انس بن النضر بن ضمضم بن زید بن حرام بن جندب انصاری خزرجی طالتی دی (۶)

د ده نه حضرت سعد بن معاذ او حضرت انس الما الد حديث روايت كوي (٧)

دې په غزوه احد کښې شهید شو او د شهادت په وخت کښې د هغوی په بدن باندې د اتیاؤ(۸۰) نه زیات زخمونه وو او مشرکانو د هغه مثله هم جوړه کړې وه. کمانی حدیث الهاب

قوله: فقال: يارسول الله غبت عن أول قتال قاتلت المشركين لئن الله أشهدنى قتال المشركين لئن الله أشهدنى قتال المشركين ليرين الله ما أصنع: ابن النضر رسول الله تأثيم ته اووئيل يا رسول الله! زه د دى اول جنك نه كوم چه تاسو مشركانو سره قتال اوكرو غائب پاتى ووم، اوس كه الله تعالى د مشركانو خلاف قتال كنبى ماته د حاضرئى موقع راكره نوالله تعالى به اوكورى چه زه څه كوم؟

«اول قتال» نه مراد غزوه بدر ده ځکه چه دا رومبنی غزوه وه په کوم کښې نبی کریم گلگا بنفس نفیس شرکت فرمائیلی وو (۸)

١) (الكاشف (١ص١١٤)-

۲) (طبقات ابن سعد (۶ص۳۹۶)-

٣) (كشف البارى (ج٢ ص٥٧١)-

^{4) (}كشف الباري (ج٢ص ٤)-

۵) (فیض الباری (ج۳ص ۲۶)-

^{› ﴿} بِسَنَّ الْجِرَى مِنْ الْحِرِي اللهِ عَلَيْهِ ﴾ ﴿ اللهِ عَلَيْهِ ﴿ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ ﴿ اللهِ اللهِ عَلَ ع ﴾ (الأصابة (ج اص ٧٤) والإستيعاب بهامش الإصابة (ج اص ٧١) ومعرفة النصحابة (ج اص ٢٢٤) -

٧) (معرفة الصحابة (ج١ص٢٢٣)-

۸) (عمدة القارى (ج ۱ ۱ ص ۱۰۳)-

تقارم، فاستقبله سعابر معاذ: نو چه کله جنگ احد اوشو مسلمانان اخوا شو نوهغوی او فرمائیل ای الله زه د خپلو ملگرود طرف نه څه چه هغوی او کړه په هغی باندی ستا په وړاندی معذرت کوم او زه د برات اظهارکوم د دی مشرکانود حرکاتونه، بیا هغه وړاندی شو نود حضرت سعدبن معاذ نامی سره د هغه مخامختیا اوشوه.

«انکشف المسلمون» کښې د عبارت حسن او ګورئی ((انکشف)) ئی اوفرمائیلو یعنی اخوا شو او د(انهزم) ئی اونه وئیل چه مسلمانانو شکست اخوړلو. (۱)

قوله: فقال: ياسعتبن معاذ، الجنة ورب النضر، إنى أجد ريحها من دون أحد: وفي أحد: وفي أحد: وفي أحد: وفي فرمائيل اى سعد بن معاذ! چرته؟ دَنضردَ رب قسم! جنت خو زما مطلوب دى زه خود آحد دَ خوانه د جنت خوشبو محسوسوم.

«الجنه» یا خو منصوب دی نود عبارت تقدیربه داسی وی ((اریدالجنه)) یا مرفوع او د مرفوع کیدو په صورت کښی تقدیر عبارت ((مطلوبی الجنه)) به وی (۲)

«نض»نه مراد یا خود هغه پلار دې او داهم احتمال دې چه نضر د هغه ځوئ وي نود هغه یو ځوئ هم وو چه د هغه نضر نوم وو. (۳)

ابن بطال مونی فرمائی چه حضرت انس بن النضر اللي قول ((إن اجد ريحها من دون احد)) كنبي دوه احتماله دى:

چه د هغوی داقول په حقیقت باندې محمول وی چه د جنت خوشبو واقعی هغه له راتله
 ځکه چه د جنت خوشبوخود پنځوسوو کالود مسافت نه محسوس کیږی.

که د هغه دا قول په مجاز باندې محمول وی په هغه صورت کښې به مطلب وی چه ماته دامعلومه ده چه جنت هم په دغه ځائ دې کوم څائ چه جنګ کیدو، ځکه چه د جنت حاصلول هم په دغه ځایونو کښې کیږی. (۴)

قوله: قال سعد: فها استعطعت يارسول الله ماصنع: حضرت سعد كالن فرمائى: يارسول الله هغه چه خه اوكره هغه ما اونه كريشو. مطلب دا دى چه حضرت انس بن النضر كالن چه كوم قسم كار اوكرو په دې اقدام كنبى هغه ته كوم خطرناكو سختو سره مخامخ والى وشو او هغه ته د هغى نه ډير زخمونه راغله نو داسى اقدام مانه اونه شو او هغه چه

۱) (شرح الکرمانی (ج۱۲ص۱۰۸)-

٢) (حواله بالا-

۳) (فتح الباري (ج۶ص۲۳)-

٤) (شرح ابن بطال (ج۵ص۲۳)-

ځنګه په میدان جنګ کښې ثابت قدمي خودلې وه هغه ما اونه خودلې شوه. (۱)

(منان)د کوتی بند ته وائی. (۲)

دلته په روایت کښې ((پنان)) لفظ راغلې دې او د کتاب المغازی په روایت کښې شك سره (رېشامه او پښتانه)) وارد شویدې.(۳)

علامه عینی او حافظ صاحب فرمائی چه اکثر رواة هم بنان روایت کریدی (۴)

قوله: قال أنس: كنا نُرى أونظر أن هن الآية نزلت فيه وفي أشباهه ﴿ مِنْ اللّهُ مِنِينَ رَجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللّهُ عَلَيْهِ ﴾ إلى اخرالآية: حضرت انس وَاللّهُ عَلَيْهِ ﴾ إلى اخرالآية: حضرت انس والله فرمائي چه زمون خيال وو د هغوى او د هغوى په شان د خلقو باره كنبي چه دا آيت نازل شو: (من المؤمنين...) چه په مسلمانانو كنبي داسي خوانان سړى شته چه هغوى الله تعالى سره كړى وعده رښتوني كړه او وئي خودله، په دې خوانانو سروكنبي خو خوكسانو خپل نذر پوره كړو او بعض د دې (ساعت سعيد) په انتظاركنبي دى. (د جنك ويرونكي خطرو باوجود) د هغوى په رويوكنبي لې شان بدلون هم اونه شو.

«تفس نحمه» علامه زمحشری د (رنحب) معنی بیانولوسره لیکی:((...عهارة عن البوت، لأن كل میلایده من ان یبوت، فكأنه دنر رلاز مق رقبته فإذا مات فقد قض نحمه أی: نذره))(۵)

یعنی («تضاء النحب» دَ مر ک نه کنایه ده، ځکه چه هر یو ژوندې څیز به مړ کیږی لکه چه دا دَ هغه په سټ باندې لازم نذر دې او چه کله هغه مړشو نو هغه خپل نذر پوره کړو. وَقَالَ (١) إِنَّ أُخْتَهُ وَهِیَ تُسَمَّی الرَّبَیِّمَ گَسَرَتْ ثَنِیَّةً امْرَاقِ فَاْمَرَرَسُولَ اللَّهِ صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ بِالْقِصَاصِ فَقَالَ أَنْسَ یَا رَسُولَ اللَّهِ وَالَّذِی بَعَثَكَ بِالْحَقِّ لَا تُکْسَرُ ثَنِیَّتُهَا فَرَضُوا بِالْأَرْشِ

۱) (فتح الباری (۲ ج۲۲) -

۲) (شرّح الكرماني (ج ۱۲ص ۱۰۹)-

۲) (انظر الصحيح للبخاري (ح٢ص ٥٧٩) كتاب المغازي باب غزوة أحد رقم (٣٨٢٢)-

٤) (عمدة القارى (ج ١٤ ص.٣٠٠) فتح البارى (ج ٢٥ ص ٢٣)-

۵) (الكشاف (ج٣ص٥٣٢)-

⁶) (الحديث مرتخريجه في كتاب الصلح باب الصلح في الدية -

وَتَرَكُوا الْقِصَاصَ فَقَالَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ مِنْ عِبَادِ اللَّهِ مَنْ لُو أَنْمُ

عَلَى اللَّهِ لِأَبْرَةُ [٢٥٥٠٥٥٠٨٢٠]

فر حدیث ترجمه حضرت انس بن مالك ناتش فرمائی: د دوی (انس بن النضر) خور د یوی بخیر مدیث ترجمه حضرت انس بن مالك ناتش فرمائی: د دوی (انس بن النضر د هغه د خور هم بنخی غابن مات كردی نو رسول الله تالی د قصاص حكم وركرو (قصاصا د هغه د خور هم یو غابن مات كرئی) نو حضرت انس بن النضر ناتش اوونیل یارسول الله! قسم دی د هغه ذات چا چه ته په حقه سره رالیكلی ئی د هغی غابن به نشی ماتولی نو د هغه بنځی وارثان په دیت باندی راضی شو او قصاص ئی پریخودلو نو رسول الله ناتیم اوفرمائیل په تحقیق سره د الله تعالی څه بندیكان داسی وی كه هغوی په الله باندې قسم اخوری نو الله تعالی د هغوی قسم یوره كوی.

دپورتنی حدیث تشریح مکمل تفصیل سره (کتاب الصلح باب الصلح فی الدیة) کښی تیرشویدی د حدیث د ترجمه الباب سره د حدیث شریف مناسبت په پورته ذکر شوی آیت کښی دی ځکه چه مذکوره آیت هم د دی حضراتو باره کښی نازل شوی وو چا چه وعده پوره کړی وه او د ثابت قدمئی او ثابت قلبئی مظاهره ئی کړی وه او چه څوك د وعدې پوره کولو په انتظار کښې وو (۱)

[٢٦٥٠] حَدَّثَنَا أَبُوالْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهُرِي وحَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ حَدَّثَنِ أَخِي عَنُ سُلُمُانَ أَرَاهُ عَنُ هُحَمِّدِ بُنِ أَبِي عَتِيقٍ عَنْ الْبِي شَهَابٍ عَنْ خَارِجَةَ بُنِ زَيْدٍ النَّ زَيْدُ بُنَ ثَابِتٍ رَضِى اللَّهُ عَنْهُ (٢) قَالَ نَسَخْتُ الصَّحْفَ فِي الْمَصَاحِفِ فَفَقَدُتُ آيَةً مِنْ سُورَةِ الْأَخْزَابِ ثَابِتٍ رَضِى اللَّهُ عَنْهُ مَنَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُرأُ بِمَا فَلَمُ أَجِدُهَا إِلَّا مَمَ خُزَيْمَةَ بُنِ ثَابِتٍ كُنْتُ أَسُمَعُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُرأُ بِمَا فَلَمُ أَجِدُهَا إِلَّا مَمَ خُزَيْمَةَ بُنِ ثَابِتٍ الْأَنْصَارِيِ الَّذِي جَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَهَا ذَتَهُ شَهَا دَةَ رَجُلَيْنِ وَهُوَ قُولُهُ مِنْ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالُ صَدَةُ وَامَاعًا هَدُوا اللَّهُ عَلَيْهِ [٣٨٦٣، ٢٥٠٩، وانظر: ٢٠٠٤، ٢٠٠٤]

تراجم رجال

ا-ابواليمان: دا ابواليمان حكم بن نافع حمصى مَرَاهَ دي.

r-شعیب: دا ابوبشرشعیب بن ابی حمزه گرای دې د دې دواړو حالات ((پدوالومی)) د شپېم حدیث لاندې تیرشوی دی. (۳)

۱) (عمدة القارى (ج ۱ ۱ ص ۱۰۲)-

٢) (قوله: زیدبن ثابت رضی الله عنه: الحدیث أخرجه البخاری أیضًا (ج٢ص۵۸۰) کتاب المغازی باب غزوة أحد رقم (٤٠٤٩) و (ج٢ص٧٠٥) کتاب التفسیر باب (فمنهم من قضی نحبه ومنهم من ینتظر...) رقم (٤٧٨٤) و (ح٢ص٧٤٤) کتاب فضائل القرآن باب جمع القرآن رقم (٤٩٨٨) والترمذی فی جامعه (ج٢ص٢٤) أبواب تفسیر القرآن باب ومن سورة التوبة رقم (٣١٠٤)-

189.

م-اسماعیل: دا اسماعیل بن ابی اویس بیشی دی د دوی حالات ((کتاب الإیان باب تفاضل المرابیان فاضل المرابیان فالله دی در ۱)

م- اخي: ((أم)) نه مراد ابوبكر عبدالحميدبن عبدالله ابى اويس مُنِيدٍ دې. (٢) د- سليمان: دا ابومحمدسليمان بن بلال قرشى مُنِيدٍ دې د دوى مختصر تذكره ((كتاب الإيبان) لاندې تيره شويده. (٣)

- همه برب ابی عتیق: دا محمد بن عبدالله بن ابی عتیق پید دی. (۴) ۷- ابرب شیماب: دا محمد بن مسلم ابن شهاب زهری پید دی. د دوی مختصر تذکره ((بدم الومی)) په دریم حدیث کښی تیره شوه (۵)

۸-خارجه بن زين: دامشهور تابعى حضرت خارجه بن زيدبن ثابت انصارى بيني دې (ع) ٢-زيل بن ثابت: دا مشهور صحابى كاتب وحى حضرت زيدبن ثابت التائي دې (٧) قوله: قال: نسختُ الصحف فى المصاحف، ففقلتُ آية من سورة الأحزاب كنتُ أسمع رسول الله صلى الله عليه وسلم يقرأ مها: حضرت زيدبن ثابت التائي فرمائى چه

اسمع رسول الله صلى الله عليه وسلم يقرامها : حضرت زيدبن ثابت الأثنى فرمائي چه صحيفي ما په مصاحف كښي ليكلى چه د سورة الاحزاب يو آيت كوم چه نبى كريم تؤخم نه تلاوت كولو كښى مااوريدلى وو اونه موندلو. دلته د (جمع قرآن) سره متعلق مشهورې واقعى طرف ته اشاره ده د كوم تفصيل چه به وړاندې راځى. (۸)

قوله: فلمرأجه الامع خزيمة بر ثابت الأنصاري : خو هغه آيت ماته حضرت خزيمه بن ثابت الانصاري المنتظ سره ملاؤشو

حضرت خزیمه بری ثابت الانصاری داشی: دا مشهورانصاری صحابی حضرت خزیمه بن ثابت بن الفاکه بن تعلیه بن ساعدة الخطمی تاشی دی. (۹) ابوعماره د هغه کنیت دی. (۱۰)

۱) (کشف الباری (ج۲ص۱۱۳)-

٢) (دَ دوى دَ حالاتودَباره اوالكورئ كتاب العلم باب حفظالعلم-

٣) (كشف البارى (ج ١ ص ٤٥٨)-

أ (دَ دوى دَ حالاتودَپاره او گورئ كتاب الأذان باب مكث الإمام في مصلاه بعد السلام-

۵) (کشف آلباری (ج ۱ ص ۳۲۶)-

ع) (دَ دوى دَ حالاتودَ پاره او كورى كتاب الجنائز باب الدخول على الميت بعدالموت....-

٧) (دَ دوى دَ حالاتودَبار، او كورى كتاب الصلاة باب مايذكر في الفخذ-

إنظر كشف الباري كتاب فضائل القرآن باب جمع القرآن (ص١٤)-

٩) (تهذيب الكمال (ج٨ص٢٤٣)-

١٠) (الثقات لابن حبآن (ج٣ص١٠٨)-

كشف الساري

او په دوالشهادين باندې مشهور دې (۱)

د هغه مور كبشة بنت اوس الساعدية ده. (٢)

د هغه يوه بي بي جميله بنت زيد بن خالد ده، د كومي نه چه د حضرت خزيمه الله دو، د هغې نه خامن عبدالله او عبدالرحمن دي او دونمه بي بي صفيه بنت عامر بن طعمه ده، د هغې نه د حضرِت خزيمه اللي خوى عماره دي (٣)

وور٥) ليکن د ده په بدرې کيدوکښې اختلاف دې امام ترمذی، ابن عبدالبر او لالکائی این فرمائی چه هغه بدری دی (ع).

خو اصحاب المغازى دې بدريينو نه نه دې شمير کړې ابن البرقي او هغه د غير بدريين

نه شمیرلی دی اوعلامه ذهبی منافق فرمائی (قیل: إنه بدری والصواب: انه شهد احدا وما بعدها) (۷)

او عسكرى وغيره خو هغه به اهل احدكنبي هم نه دى شميرلي. (٨) ددوالشهادتين لقب وجه هغه به د دوالشهادتين وئيلو وجه دا ده چه يو ځل رسول الله تا يو اعرابي نه اس واخستلو اود قيمت ادا كولودپاره ئي اعرابي ته ځان سره د تلو اوفرمائيل. په دې دوران کښې څه نورو خلقو د اعرابي نه هغه اس په زياتو پيسو باندې د اخستلو دپاره اووئيل، كله چه حضور تَالِيم هغه ته قيمت ادا كولو نو هغه د آس په بيع باندې گوا، اوغوښتلو، حضرت خزيمه هلته موجود وو. هغه ګواهي ورکړه چه رسول الله کالله دا اس اخستى دى حضور مُنظم حضرت خريمه اللي ته اوفرمائيل چه ته خو د بيع په وخت كښى موجودنه وي نو تآڅنګه ګواهی ورکړه؟ هغه عرض اوکړو چه د آسمان خبرې خوتاسو له راځی په هغې کښې مونږ ستاسو تصدیق کوو نو دا واقعه خو د زمکې ده په دې کښې به مُونَنِ سَتَاسُو تَصَدَيْقَ خُنْگُهُ نَهُ كُوو. هغه وختِ حَضُور عُلِيُمُ دُ حَضَرَت خُزيمهُ ۖ كُلُوا هَيْ دُ دوو سرو برابر او قائمقام او کرخوله (٩) او دا د هغوی خصوصیت دی.

دَ فَتَح مُكُهُ بِهُ وَرَحْ دَ بني خَطَمَه جَهندا دَ هغوى به لآس كښى وه. او په جنګ جمل او صفين كښى هغه د حضرت على اللئ سره وو ليكن په قتال كښى شريك نه وو كله چه حضرت

۱) (عمدةالقاری (ج ۱ اص ۱۰۹)-

٢) (الإصابة (ج١ص٢٤)-

٣) (الطبقات لابن سعد (ج ٤ ص ٣٧٨)-

٤) (الإصابة (ج١ص٢٥)-

٥) (تهذيب الأسماء واللغات (ج١ص١٧٥)-

ع) (تهذيب التهذيب (ج٣ص١٤١)-

٧) (سير أعلام النبلاء (ج ٢ص ٤٨٥) وتهذيب التهذيب (ج ٣ص ١٤١)-

٨) (تهذيب التهذيب (ج٣ص١٤١)-

٩) (انظر سنن أبي داؤد (ج٢ ص١٥٢) كتاب القضاء باب إذا علم الحاكم صدق الشاهد الواحد يجوزله أن يحكم به رقم (٣٤٠٧) وسنن النسائي (ج٢ص٢٢) كتاب البيوع باب التسهيل في ترك الإُشهاد على البيع رقم (٤۶٥١)

عمار بن یاسر نگانا شهید شونو هغه په جنگ کښې شریك شو.(١)

عادط ابن حجر بيط د واقدى په طريق روايت نقل کړيدې چه عماره بن خزيمه بن ثابِت فرمائی چه حضرت خزیمه بن ثابت مان په جنګ جمل کښې شریك خو شو ولې هغه د تیکې دره عمار نه توره راونه ویستله او په جنگ صفین کښې هم شامل شو او وئي فرمانیل چه زه د عمار رابن باسر) قتل کیدو پورې به توره نه راوباسم دې د پاره چه اوګورم چه هغه څوك قتل كوى خكه چه ما د رسول الله كالله اوريدلى دى هغوى فرمائيل ((تقتله الغثة الهاغية)) نو چه كله حضرت عمار كالمن شهيد كړيشو نو هغوى اوفرمائيل ((قدمانت لى الضلالة)) چه د چا غلطى ده دا خبره ماته ښکاره شوه بياميدان جنګ ته داخل شو او قتال ئي اوکړو تر دې چه شهيد شو. (۲) د هغوی د شهادت دا واقعه ۳۷ ه ده. (۳)

دمسنداحمد روايت دې چه حضرت خزيمه بن ثابت اللي خوب اوليدو چه هغه د نبي اکرم ﷺ په تندی مبارك باندې سجده كوي د دې ذكر هغه نبي كريم تراثیم ته اوكړو نو هغوي سملاستل او وئى فرمائيل ((صَدِّئ بنلك رؤياك)) چه خپل خوب رښتونى كړه. نو هغه د نبى کریم گان په مبارك تندی باندی سجده او کړه .(۴) یعنی خپل تندې ئې د هغوی تریم په تندی مبارك باندې لوگه په تندی مبارك باندې کیخودو . لکه چه د رطبقات په یو بل روایت کښې راغلی دی. (۵)

هغه د نبي كريم نا نه روايت كوي.

دَ دوى نه روايتُ كونكوكښي د هغوى ځوئ عماره، حضرت جابر بن عبدالله الانصاري التينو عماره بن عثمان بن حنيف، عمرو بن ميمون الاودى، ابرهيم بن سعد بن ابي وقاص، ابوعبدالله الجدلي، عبدالله بن يزيد الخطمى، عبدالرحمن بن ابى ليلى، او عطاء بن يسار المناخ وغيره شامل دي. (ع)

علامه وأقدى مُؤلِدُ هغه به طبقه ثالثه كښى ذكركړيدى. (٧)

هغوی د نبی کریم نظم نه ۳۸ احادیث روآیت کړی دی (۸)

او په اصحاب اصول سته کښې د امام بخاري نه علاوه باقي ائمه حضراتو د دوي نه روايات اخستې دی. (٩) رض الله عنه وارضالا.

١) (تهذيب الأسماء واللغات (ج ١٣٥)-

٢) (الإصابة (ج١ص٢٤) وأيضًا انظر مسندالإمام أحمد (ج٥ص ٢١٤)-

٣) (سيرأعلام النبلاء (ج٢ص٤٨٥)-

٤) (مسندأحمد (ج٥ص٢١٥) وكذا أخرجه ابن سعد بسنده انظر الطبقات (ج٤ص٣٨٠)-

۵) (طبقات ابن سعد (ج ٤ ص ٣٨١)-

ع) (دَ شيوخو او تلامذه دَ تفصيل دَ پاره او گورئ تهذيب الكمال (ج٨ص ٢٤٤)-

٧) (حواله بالا_

 ^{^ (}۱۷۶سماء واللغات (ج١ص١٧۶) -

٩) (تهذيب الكمال (ج٨ ص٢٤٥)-

كتأب الجهاد (جدارل كشفُ البّاري

قوله: الذي جعل رسول الله صلى الله عليه وسلم شهادته شهادة رجلير وهوقوله: (مِنُ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَنَقُوا مَا عَاهَدُوا اللّه عَلَيْهِ): دَ جا كواهي جه رسول الله نَافِظُ دَ دوو سرو دَ كواهن برابر كرخولي وه (هغه آيت چه حضرت زيدبن ثابن طائع ته مصاحف كنبي نه ووملاؤ ليكن د حضور اكرم نَافِظُ نه هغه اوريدلي وو) دَ الله تعالى قول (مِنُ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللّهُ عَلَيْهِ) دي.

ون رین عوییون به واقعی خواله چه په حدیث باب کښې ورکړیشویده هغه اوس په ماقبل ک

کښې تيره شويده. د حديث د ترجمه الباب سره مطابقت ترجمه الباب سره د حديث مطابقت بالکل واضح او ظاهردې چه په دې حديث کښې هم ددې آيت ذکردې په کوم چه ترجمه قائم کړې شويده(١)

٣- بَابَ عَمَلٌ صَالِحٌ قَبْلَ الْقِتَالِ

ماقبل سره مناسبت: په تيروشوو بابونوکښې په مختلفو عنواناتوسره د جهاد او قتال اهميت، فضيلت او په دې باندې مرتب اجر ذکر دې اوس په دې باب کښې د دې عمل قتال د قبليدو طريقه خودلې کيږي چه د قتال نه وړاندې څه نيك كار هم كول پكار دى دې د پاره چه بركت وي.

د ترجمه مقصد: حضرت گنگوهی میشید فرمائی چه د امام بخاری میشید مقصد د دې ترجمه نه دا دې چه صالح او دیندار سړی ته چه د هغه په اعمالو کوم اجر ورکولې شی هغه فاسق او گناه کارته نشی ورکولې. په دې وجه عمل صالح وړاندې کول پکار دی دې د پاره چه د نورو نه د زیات اجر حقدار شی. نود حدیث باب دلالت په دې بالکل ښکاره دې ځکه چه اسلام عمل صالح دې او په حدیث کښې د دې د تقدیم حکم ورکړیشویدې (۲)

قوله: وَقَالَ أَبُو الدَّرْدَاءِ إِنَّمَا تُقَاتِلُونَ بِأَعْمَالِكُمْ : اوحضرت ابودردا، عَلَيْهُ فرمانى تاسو د خيلو عملونو په وجه قتال كوئى

مطلب دا چه الله تعالى تأسو ته د خو او نيكو اعمالو توفيق دركوى اود دى په وجه په جنگ كښى كاميابيوئى او په دې كښى بركت وى. په خلاف د هغى چه كه د قتال كونكو اعمال خراب وى نو بيا هغه ناكامه كيږى. (٣)

دا تعلیق امام عبدالله بن مبارك من (سعید بن عبدالعربوعن ربیعة بن یورد عن ابن حلبس عن أن الدردام)) به طریق به (کتاب الجهاد) کنبی موصولاً نقل کړی دی. (۴)

په اصل کښې د حضرت ابودرداء کاڅځ د ارشاد دوه حصې دی يوه حصه خو هغه ده کومه چه

١) (عمدة القارى (ج ١٠٤ ص ١٠٤)-

۲) (لامع الدراري (ج٧ص٢١٧)-

٣) (فیض الباری (ج٣ص ٢٤)-

[·] **٤) (تغليق** التعليق (ج٣ص٤٣١)-

حضرت عبدالله ابن مبارك خپل (كتاب الجهاد) كنبى نقل كريده، دوئمه هغه ده چه امام بخارى معظم ترجمه جوړه كړيده، نو حافظ ابن حجر ميني (تغليق التعليق) كنبى په خپل سند سره نقل كوى ((...عن سعيد بن عبدالعزيزعن ربيعة بن يويد، أن أباالدرداء قال: أيهاالناس، عبل صالح تهل الغزد، فإنها تقاتلون بأعبالكم))(١)

نو آمام بخاری میلی داخصه چه متصل ده د خضرت ابوالدردا و این طرف ته منسوب کریده او کومه حصه چه سندمنقطع سره وه هغه نی ترجمه ذکر کرد، د دی خبری طرف ته اشاره

كولو سره هغه د دې نه غافل نه وو. (۲)

((وَقُولُهُ يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوالِمَ تَقُولُونَ مَالاَ تَفْعَلُونَ كَبُرَمَقَتُ اعِنْدَاللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَالاَ تَفْعَلُونَ اللَّهُ يُعِبُ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفَّاكًا نَّهُمُ بُنْيَانٌ مَرْصُوصٌ) [الصف: ٢-٣] أود الله تعالى عزوجل ارشاد دى، اى د ايمان خاوندانو! داسى خبره ولى كوئى چه هغه كار نه كوئى، دَ الله تعالى په نزد دا خبره ډيره د خفكان ده چه داسى خبره كوئى چه هغه كار نه كوئى. الله تعالى خو هغه خلق خوښوى چه د هغه په لاركښى داسى يوځائ جنګيږى لكه چه هغوى يو عمارت وى په كوم كښى چه سيسه اچولى شوى وى (٣)

دَ اَيت مبارک تعلق دعوې سره دې نه چه دعوت سره د اکثرو خلقو دبې عمله عالم په وعظ او نصيحت نه دی او نصيحت نه دی

كولٍ پكار. دا د (لم تقولون مالاتفعلون) خلاف دى.

نود دی جواب دا دی چه د آیت تعلق دعوی سره دی دعوت سره نه دی. نو د خه داسی کار دعوی کول جائز نه دی په کوم چه عمل نه وی، لیکن دعوت ورکول او وعظ او نصیحت

کول جائز دی هغه په دې کښې داخل نه دی. فافهمولاتغفل.

دُ ترجمة الباب سره دُ آیت مناسبت: علامه ابن المنیر رُوَاللهٔ فرمائی چه آیت او ترجمه سره مناسبت داسی دی چه الله تعالی په اولنودوو آیاتونوکښی په هغه سړی باندې غندنه کړیده چه دا وائی چه زه به ښه کار کوم بیا ئی نه کوی. اود دې نه پس آیت (ان الله یعب الذین...)

١) (حواله بالا-

۲) (فتع الباري (ج۶ص ۲۶)-

٣) (ترجمه ازبيان القرآن (ج٢ سورة الصف)-

مقدم کریدی.(۱)

او علامه کرمانی مُنْ فرمائی چه په مقصود آیات کښې د (رَصَفًا)) لفظ دې چه هغوی صفونه جوړوی اود هغوی د قتال نه وړاندې صف جوړول عمل صالح قبل القتال دې (۲) [٢٦٥٠] حَدَّثَنَا هُحَمَّدُ بُنُ عَبُدِ الرَّحِيمِ حَدَّثَنَا شَبَابَةُ بْنُ سَوَّادِ الْفَزَادِيُّ حَدَّثَنَا إِسْرَابِيلُ عَنْ أَبِي إِسْمَاقَ قَالَ سَمِعْتُ الْبَرَاءَرَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ (ع) يَقُولُ أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلُ مُقَنَّعٌ بِالْحَدِيدِ فَقَالِ يَارِسُولِ اللَّهِ أَقَاتِلُ أَوْأُسُلِمُ قَالِ أَسْلِمُ ثُمَّةً قَاتِلُ فَأَتِل فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَمِلَ قَلِيلًا وَأَجِرَكَ ثِيرًا

تراجم رجال

ا- محمد بن عبدالرحيم: دا ابويحيى محمد بن عبدالرحيم بن ابى زهير العدوى البزاز مير العدوى البزاز عبدالرحيم بن ابى زهير العدوى البزاز مير ۴)

r-شبابهبر سوار الفزاري: دا ابو عمرو شبابه بن سوار الزارى المدائني ركيد دي. (۵)

-- اسرائيل: دا ابويوسف اسرائيل بن يونس بن ابي اسحاق كوفي رُوَافِي دي. (ع)

م- ابواسحاق: دا ابو اسحاق عمروبن عبدالله سبيعي الله دي.

٥-البراء: دا مشهور صحابي حضرت براء بن عازب انصاري مُنِيدٍ دي. د دي دواړو حضراتو حالات ((كتاب الإيبان باب الصلاة من الإيبان)) لاندى تيرشو. (٧)

قوله: يقول: أتى النبي صلى الله عليه وسلم رجل مقنعٌ بالحديد: حضرت برا، بن عازب گانژ فرمائی، چه نبی کریم تانیم سره د اوسپنی یو خود اچولی سړی راغلو. علامه کرمانی پُښته د دې سړی نوم اصرم عمروبن ثابت الاشهلی خودلې.(۸)

۱) (المتوارى (ص۱۵۱)-

۲) (شرح الکرمانی (ج۱۲ص ۱۱)-

٣) (قوله: البراء: الحديث أخرجه مسلم (ج٢ص١٣٨) كتاب الإمارة باب ثبوت الجنة للشهيد رقم

أ (د دوى د حالاتود باره أو گورئ كتاب الوضوء باب غسل الوجه باليدين من غرفة واحدة -

۵) (د دوى د حالاتود باره او كورئ كتاب الحيض باب الصلاة على النفساء وسنتها ـ

٤) (دّ دوى دّ حالاتودّ باره أو كورئ كتاب العلم باب من ترك بعض الاختيار... ـ

۷) (کشف الباری (ج۲ص ۳۷۰-۳۷۶)-

۸) (شرح الکرمانی (ج۱۲ص۱۱۱)-

حضرت عمروبر. ثابت اشکلی ناشی: داعمرو بن ثابت بن وقیش بن زغبة بن زعورا ، بن عبدالاشهل ناشی دې کله کله به د نیکه ظرف ته منسوب کیدو نو عمروبن وقیش به بللی شود حضرت حذیفه بن یمان ناشی خورد هغه مور ده اصرم یا اصیرم د هغه لقب دی. (۱) ابن اسحاق په مغازی کښی د حضرت ابوهریره ناشی په صحیح سند سره د حضرت عمرو بن ثابت واقعه نقل کړیده چه حضرت ابوهریره ناشی فرمائیل (۱ اخبن عن رجل دخل الجنة ، ولمیسل صلای) چه ماته د داسی سری باره کښی اوښایه چه جنت ته داخل شوی او هغه یو مونځ هم نه وی کړی بیا هم پخپله فرمائی ((هوعمروبن ثابت)) (۲)

دغه شان أبن اسحاق د حصين بن محمد نه او هغه د محمودبن لبيدنه روايت كوى چه حضرت عمرو بن ثابت المنتخ د اسلام نه منكر وو، د جنگ احد په ورخ د اسلام حقانيت په هغه باندې ښكاره شونو هغه خپله توره راوچته كړه او قوم ته راغلو او په خلقو كښې ورننوتلو او ښه جنگ ئى اوكړو تردى چه زخمى شو او پريوتلو. د هغه قوم چه كله هغه په زخمى حالت كښې په ميدان جنگ اوكتلو نو تپوس ئى اوكړو چه ته دلته څنگه؟ تا په خپل قوم باندې شفقت خوړلې راغلى ياپه اسلام كښى د رغبت د وجه؟ نو حضرت عمرو بن ثابت خات اوفرمائيل په اسلام كښى د رغبت په وجه راغلى يم او ما د رسول الله تريخ په ملكرتيا كښى جنگ كړى او چه د څه زخم وغيره لكيدل وو هغه اولكيدل. رسول الله تريخ چه ټول احوال واوريدل نو وئى فرمائيل (رائه من أهل الجنة) (٣)

د «مقنع بالحدید» معنی دا ده چه هغه پخپله اغوستی وه. (۴) دا د قناع نه دی او قناع هغه لوئ څادر ته وائی په کوم باندې چه ښځې خپل سر پټوی.(۵) ځکه چه پخپله سر پټولې شی نو چه څوك ئی پخپله واغوندی هغه ته ((مقنع)) وائی.(۶)

اود دې معنی ((المتغطی بالسلام)) هم ده. يعنی چه ټولو خپل ځانونه د وسلې په ذريعه پټ کړې وي.(۷)

سړې وي.(۲) او حافظ صاحب فرمائي چه دا د دې خبرې نه کنايه ده چه هغه خپل مخ په جنګي آلاتو باندې پټ کړې وو.(۸)

١) (الإصابة (ج٢ص ٥٢٥)-

٢) (حواله بالأوفتح الباري (جعص ٢٥)-

٣) (حواله بالا-

أ (النهاية لابن الأثير (ج إ ص ١١٤) مادة قنع -

٥) (معتار الصحاح ص٥٥٣) مادة قنع-

۶) (النهاية (ج ؛ ص ١١٤)-

٧) (حواله بالاّ-

٨) (فتع الياري (ج۶ص٢٥)-

ررتقال:يارسول الله، اقاتل أو أسلم :) ، نو هغم اووليل يا رسول الله! جنگ او كړم كه اسلام قبول كرم؟ قوله: قال: أسلم ثمر قاتل: فأسلم ثمر قاتل فقتل: رسول الله كلهم اوفرمائيل اسلام قبول كروبيا ني جنك اوكرو او شهيد شو سرم نبون مرد بیت جدت کوه کو حد سری است م جون کرد بید کی بیت و کرد و سهید سو نبی کریم نام اول هغه سری ته د اسلام قبلولو اووئیل ځکه چه د اعمالو قبلیدودارومدار پر ایمان باندې دی. نو هغه اسلام قبول کړو او جهاد کښی شریك شو، تردې چه شهید شو. پر ماقبل کښې د ابن اسحاق مُراید په حواله سره دا خبره راغلې ده چه دا د غزوه احد واقعه ده. قوله: فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: عمل قليلاً وأجركثيرا: رسول الله تايم اوفرمانيل چه هغه خو عمل لو أوكرو خو هغه ته پرې اجر ډير ملاؤشو. علامه مهلب بينيم فرمائی چه په حدیث شریف کښی د دې خبرې دلیل دې چه الله تعالی په لږ شان عمل باندې هم ډیراجرورکوی اودادالله تعالی په خپلو بندیګانو باندې احسان او مهربانی ده. (۱) د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت ترجمة الباب سره د حدیث مناسبت ((أسلم، ثم تاتل، فأسلم ثم قاتل)) كښى دى. هغه غزوه كښى د شركت نه اول نيك عمل اوكړو بلكه افضل الاعمال يعنى اسلام ئي اختيار كړو اود اسلام قبولولو نه پس ئى جهاد اوكړو. (٢) تنبیه علامه عینی (٣) او علامه عبدالغنی نابلسی المنام (۴) په حدیث باب کښی د امام بخاری روالحدیث من افرادو نه شمیر کریدی. علامه عینی فرمائی ((والحدیث من إنهاده)) چه د دی روایت تخریج کښې امام بخاري متفرد دې لیکن څنګه چه په تخریج کښې تیرشو دا حدیث صحيح مسلم (كتاب الامارة باب ثبوت الجنة) كنبي هم موجود دي(٥) دغه شان علامه نووي يويي په رياض الصالحين كښې حديث باب ذكر كړيدې اوفرمائيلي دى ((متفق عليه وهذا لفظ البخارى)) (ع) نود حديث باب متعلق دا وينا چه دې د بخارى د افرادو نه دې صحيح نه معلوميري.

٣- بَاب: مَنْ أَتَاهُ سَهُمْ غُرْبٌ فَقَتَلَهُ

د ترجمه الباب مقصد د ترجمه الباب مقصد دا وهم لری کول دی چه که چری په میدان جنگ کنبی د جنگ به دوران کنبی مرشی او دا معلومه نشی چه د چا په غشی لګیدلی دی، د مسلمان په غشی یا د کافر، نو امام بخاری مرشه دا مذکوره ترجمه او حدیث باب ذکر

۱) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ١٠٤)-

۲) (شرح ابن بطال (ج٥ص ٢٤)-

٣) (عمدة القارى (ج ٤ اص١٠۶)-

٤) (ذخائر المواريث في الدلالة على مواضع الحديث (ج١ص١٢٢)-

۵) (صعیح مسلم (ج۲ص۱۳۸) رقم (۲۹۱۳-۳۹۱۶)-

ع) (رباض الصالحين (ص ٢٩٤) كتأب الجهاد رقم (١٣١٠)-

کولوسره د دې خبرې طرف ته اشاره او کړه چه د جنګ مړشوې شهید دې سره د دې چه قاتل نامعلوم وی $(^{f \Lambda})$

[٢١٥٠] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَبُو أَحْمَدَ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ قَتَادَةً ُ حَذَّثَنَا أَنْسِ بْنُ مَالِكِ(٢) أَنَّ أُمَّ ِالرُّبَيِّعِ بِنْتَ الْبَرَاءِوَهِيَ أُمِّرَا ثِمَّةَ بْنِ سُرَاقَةَ أَتَثَ النَّبِيِّ صَلَّى علامة عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتُ يَانَبِي اللَّهِ أَلَا تَعَيَّرُنُنِي عَنْ حَارِثَةَ وَكَانَ قُتِلَ يَوْمَ بَدْدٍ أَصَابَهُ سَهُمْ غَرُبٌ فَإِنَّ كَانَ فِي الْجَنَّةِ صَبُرُتُ وَإِنْ كَانَ غَيْرَذَ لِكَ اجْتَهَدْتُ عَلَيْهِ فِي الْبُكَّاءِ قَالَ يَا أُمِّحَارِثَةَ إِنَّهَاجِنَانٌ فِي الْجَنَّةِ وَإِنَّ ابْنَكِ أَصَابَ الْفِرْدَوْسَ الْأَعْلَى [٢١٥٩،٢١١٥٠-٢١]

تراجم رجال

۱- هجمد بر عبد الله: په دې کښې د بخاري شريف د شارحينو اختلاف دې چه دلته په سندكښي محمدبن عبدالله نه څوك مراد دي. علامه كرماني ميايي خودا فرمائيلي چه دا محمدبن يحيى بن عبد الله الذهلي رئيلي أو امام بخارى رئيلة هغه دلته نيكه طرف ته منسوب كريدي. يعنى محمدبن عبدالله، أو هغه محمدبن يحيى بن عبدالله دي. (٣) اوکلابازي هم په دې جزم کړيدې.(۴)

اود ابوعلى بن السكن يه روايت كښى دى: ((حدثنامحمدين عبدالله ين المبارك المخمى)) دينه معلوميږي چه دا بلِ څوك راوي دې. اوس كه چرې ابن السكن د خپل طرف نه دا نسبت بیان کړي دې نو د د دې هیڅ اعتبار نشته تحني نو معتبر دې. هم دا روایت ابن خزیمه په خپل صحیح کښې (کتاب التوحیه) کښې ((محمه بن یعیی الذهلی عن حسین بن محمد دهو المروزى)) په طريق سره نقل کړی دی.

نُوكه مراد چرته محمدبن يحيى بن عبدالله الذهلى دې نو د ده حالات ((كتاب العيدين باب التكهيراياممنى وإذاغداإل عرفة)) لاندى تيرشوى دى.

اوكه مراد ترينه محمد بن عبدالله بن المبارك المخرمي دي نو په ذيل كښي د هغه مختصر تذكره نقل كولى شى. دا حافظ محمد بن عبدالله بن المبارك القرشى المخرمى رواية دى، المعفرد هغه كنيت دى او د حلوان قاضى وو (٥)

۱) (الأبواب والتراجم للكاندهلوي (ص۱۹۵)-

٢) (قوله: أنس بن مالك رضى الله عنه: الحديث أخرجه البخارى أيضًا (ج٢ص٥٤٧) كتاب المغازى باب فضل من شهد بدرا رقم (٣٩٨٢) و (ج٢ص ٩٧٠و ٩٧٢) كتاب الرقاق باب صفة الجنة والنار رقم (٥٥٥٠) و(۶۵۶۷) والترمذي(ج٢ص ١٥١) أبواب تفسير القرآن باب ومن سورة المؤمنون رقم (٣١٧٤)-

۳) (شرح الكرماني (ج١٢ص١١١)-

٤) (عِمدة القارى ج ٤ ١ ص ١٠٤)-

٥) (تهذيب الكمالَ (٢٥ص ٥٣٤)-

د ۱۷۰ ه نه پس د هغوی ولادت شویدې. (۱)

دوی د ابومعاویه الضریری، یحیی القطان، ابن مهدی، ابوعامر العقدی، ابواسامه،اسحاق بن یوسف الازرق،حسن بن موسی الاشیب، شبابه بن سوار ، اسود بن عامرشاذان، زکریا بن عدی، صفوان بن عیسی،معلی بن منصور الرازی، حجیین بن المثنی، ابونوم عبدالرحمن بن غزوان، یحیی بن سوسف، یزیدبن هارون، حسین بن محمدبن بهرام او یعقوب بن ابراهیم بن سعد منظم واغیره نه روایت کوی.

اود هغوی نه د حدیث روایت کونکوکښی امام بخاری، ابوداؤد، نسائی، ابوحاتم، ابراهیم الحربی، یعقوب بن سفیان، ابن خزیمه، ابن بجیر، ابن ابی الدنیا، عبدالله بن محمد الفرهیانی، محمد بن محمدبن سلیمان باغندی، یحیی بن محمدصاعد او حسین بن اسماعیل محاملی النظام وغیره شامل دی (۲)

عبدالله بن احمد بن حنبل رئيل فرمائى چه ماته زما والدصاحب اووئيل آيا تا در (عبيدالله عن نافع عن ابن عمر الله الله عن (ركنانغسل البيت منايغتسل ، ومنامن لايغتسل)) مونو مړى ته غسل وركولو نو په مونو كښى به چاروستو غسل كولو او چا به نه كولو) ليكلى دى؟ ما وئيل چه نه. هغوى اوفرمائيل چه د مخرم طرف ته يو خوان دې چاته چه محمد بن عبدالله وئيلى شى او هغه دا حديث د ((ابوهشام المخزومى عن وهيب)) په طريق سره نقل كړيدى، د هغه نه هغه حديث اوليكه (۳)

ابوبكر الباغندي رئيد فرمائي ((كانحانظامتقنا))(۴)

نصربن احمدبن نصر مُرَيْنَةُ فرمائى ((كان محمد بن عبدالله البخي من الحفاظ المتقنين المأمونين))(۵) عبد الرحمن بن ابوحاتم مُرَيْنَةُ فرمائى ((كتبأبي عنه، وهوصدوق ثقة، سئل أبي عنه، فقال: ثقة ثقة))(۶) امام دار قطنى مُرَيْنَةُ فرمائى ((ثقة كان حافظا))(۷)

يو خُل امام على بن المديني رَبُيْكِ بغداد ته تشريف راوړو نو خلق د َ هغه نه گيرچاپيره راجع شو، بيا چه كله يَول لاړل نو على بن المدينى تپوس اوكړو ((من وجدت أكيس القوم؟قال: هذاالغلام المخمى))(٨)

١) (سيرأعلام النبلاء (ج١٢ص٢٥٥)-

٢) (د شيوخ او تلامذه د تفصيل دَباره او محورئ تهذيب الكمال (٢٥ ص ٥٣٤-٥٣٤) _

٣) (تهذيب الكمال (ج٢٥ص٥٣٥)-

^{\$) (}حواله بالا-

۵) (حواله بالا-

۶) (تهذیب التهذیب (ج۹ص۱۲۱)-

٧) (حواله بالا وقال أيضًا: ثقة مأمون، تعليقات تهذيب الكمال (ج٢٥ص٥٣٧)_

۸) (سيرأعلام النبلاء (ج١٢ ص٢٤٧)-

ابن حبان برسته هغه په کتاب الثقات کښې ذکر کړيدې (۱)

امام نسائی رئید فرمائی ((ثقة)) (۲)

نور فرمائی ((کان أحدالثقات مار أینابالعراق مثلة))(۳)

ابن عدى برسم فرمانى ((كان حافظا))(۴)

مسلمه بن قاسم مولية فرمائي ((كان أحدالثقات جليل القدر))(۵)

ابن ماكولا ميد فرمائي ((كان ثبتاعالما))(ع)

امام ذهبي ميد فرمائي ((من أثبة الأثر) (٧)

دا د صحیح بخاری ابوداود او نسائی راوی دی. (۸)

د دوی په کال ۲۵۳ کښې انتقال شوې دې. (۹) رحمه الله رحمة واسعة.

r-حسین بری هجمد بری جهرام تمیمی: دا حسین بن محمدبن بهرام تمیمی مروزی مؤدب برانی دی.(۱۰)

ابواحمد د هغه کنیت دی ۱۹۰۰ لکه چه په سند کښی هم ذکر دی ، د بغداداوسیدونکی وو ۱۹۰۰ هغه د اسرائیل، جریر بن حازم، ابوغسان محمد بن مطرف، شیبان النحوی، ابن ابی ذئب، مبارك بن فضالة، ایوب بن عثبه، خلف بن خلیفه، شریك النخعی او ابواویس المدنی مین وغیره نه د حدیث روایت کوی. او د هغه نه روایت کونکو کښی امام احمدبن حنبل، احمدبن منبع، ابراهیم سعید الجوهری، عبدالرحمن بن مهدی، چه د هغه نه ډیر وړاندی وفات شوی وو، ابوخیشمه، محمد بن رافع، یحیی ،ابن ابی شیبه، ذهلی ابراهیم حربی، اسحاق حربی، مجمد بن عبدالله بن مبارك او عباس الدوری این وغیره شامل دی (۱۳)

١) (الثقات لابن حبان (ج٩ص١٢١)-

۲) (تهذیب الکمال (ج۲۵ص۵۳۷)-

۲) (تهذیب التهذیب (ج۹ص۲۷۳)-

٤) (تهذيب التهذيب (ج٩ص٢٧٣)-

۵) (تهذیب التهذیب (ج۹ص۲۷۳)-

^ع) (حواله بالا (ص ۲۷۶)-

۷) (الكاشف (ج٢ص١٨٩)-

٨) (حواله بالا-

٩٠) (حواله بالا، وسير أعلام النبلاء (ج١٢ص٢٤٧)-

١٠) (تهذيب الكمال (ج٤ص ٤٧١)-

۱۱) (طبقات ابن سعد (ج۷س۳۳۸)-

۱۲) (تهذيب الكمال (ج٥ص٧١)-

١٣) (شيوخ او تلامذه د پاره او گورئ تهذيب الكمال (ج٤ص ٤٧١-٤٧٢)-

ابن سعد مسيد فرمائی: ((کان کفه))(۱)

امام نسائی بخالات فرمائی ((لیسبههاس)) (۲)

معاویه بن صالح الدمشقی مرای (وقال احدین حنیل: اکتبواعنه، جاء معی الیه، وسأله ان یحدثنی) (۳)

ذهبی بریش فرمائی ((وکان یحفظ)) (۴)

سبط بن العجمي رئيس فرمائي ((لقة))(٥)

ابن قانع مريد فرمائي ((دهولقة))(ع)

ابن وضاح ركي فرماني ((سبعت محمد بن مسعود يقول: (حسين بن محمد لقة) وسبعت ابن نبير يقول: (حسين بن محمد بن بهرام صدوق))(٧)

خو ابو حاتم من المحمد بن بهرام مجهول کرخوانی المحوری کرای کرد الله المحمد بن بهرام مجهول کرخولی حافظ ذهبی گرای (الاعتدال) کبنی فرمائی ((مجهول، کذا قاله أبوحاتم)) (۸) مجهول کرخولی حافظ ذهبی گرای الاعتدال) کبنی یوطرف ته حسین بن محمد ذکر کری نو بل طرف ته حسین بن محمد المروزی البغدادی التمیمی المعلم او حسین بن محمد بن بهرام په مینځ کبنی فرق کړیدی او د اول باره کبنی لیکلی دی ((سبعت ابی یقول: اتیته مراز ابعد فراغه من تفسیر شیبان وسالته ان یعید علی بعض المجلس فقال: بکی، بکی، ولم اسم منه ایتیته مراز ابعد فراغه من تفسیر شیبان نه اور کاریدونه شیئا)) یعنی ماد خپل پلار نه اوریدلی دی چه خوځل د هغوی تفسیر شیبان نه اوز کاریدونه شروع کړه نو (هغوی هرځل همدغه) اوونیل چه سحر راشه او د هغوی نه ما هیڅ واونریده، شروع کړه نو (هغوی هرځل همدغه) اوونیل چه سحر راشه او د هغوی نه ما هیڅ واونریده، حضرات هم یودی لیکن ابوحاتم هغوی اونه پیژندلی شوپه دی وجه ئی مجهول او کرخول (۹) دی د اصول سته راوی دی (۹)

۱) (طبقات ابن سعد (ج۷ص۳۳۸)-

٢) (ُتهذيب الْكُمال (ج٤ص٤٧)-

٣) (حواله بالا-

٤) (الكاشف (ج١ص٣٣٥)-

۵) (حواله بالا (حاشية سبط ابن العجمي على الكاشف)-

ع) (تهذيب الكمال (ج٢ص٣٦)-

٧) (ُحُوالُه بالا-

٨) (ميزان الاعتدال (ج ١ص ٥٤٧) وتعليقات تهذيب الكمال (ج ٤ص ٢٧٤) _

٩) (أتعليقات تهذيب الكمال (ج عُص ٤٧٣ - ٤٧٤) وتهذيب التهذيب ي (ج ٢ ص ٣٥٧) _

۱۰) (الكاشف (ج١ص٣٣٥)-

په کال ۲۱۳ه یا ۲۱۳ باندې وفات شو._(۱)

- شيبان: دا ابومعاويه شيبان بن عبدالرحمن ميني دي. (٢)

م-قتاده: دا قتاده بن دعامه سدوسي ميد دي

د- انس بر مالك الماني دا مشهور صحابی حضرت انس بن مالك المانی دی د دوی حالات (ركتاب الإیبان باب من الایبان آن یعب) لاندی راغلی دی (۳)

نوله: أن أمر الربيع بنت البراء وهي أمر حارثة بن سراقة أتت النبي صلى الله

علیه وسلم: حضرت انس بن مالك فرمائی چه د نبی كريم ناتی به خدمت اقدس كښی ام الربیع بنت البراء چه د حارثه بن سراقه مور وه تشریف راوړو.

یواهمه تنبیه دبخاری شریف په ټولونسخوکنی ((ام الربیع بنت البراء)) راغلی دی لیکن دا وهم دې په دې باندې حافظ شرف الدین دمیاطی پینیځ وغیره تنبیه کړیده او فرمانیلی دی چه صحیح ((امحارثة بنسماتة بن الحارث بن عدی ...)) ده. او ام حارثه ربیع بنت النضر ده کومه چه د حضرت انس کانو ترور وه، د دی د پاره ربیع نه اول ((ام)) لفظ صحیح نه دی. (۴) دوئم وهم په روایت کښې ربیع بنت البراء وینا ده. او صحیح بنت النضر دې ځکه چه ربیع بنت النضر څانه په نسب کښې یوهم براء نومې سړې نشته دې. کیدیشی دا لفظ ((ربیع عنه البراء)) دې او براء بن مالك حضرت انس بن مالك کانو رور دې او دا دواړه د حضرت ربیع بنت النضر څانه اوریرونه دی. (۵)

همدغه روایت امام ترمذی مین هم د سعیدین اب عردیه عن قتادة به طریق سرد نقل کریدی. فرمانی ((عن انس ان الربیع بنت النفی اتت النبی صلی الله علیه وسلم و کان ابنها حارثة بن سراقة اصیب پوم بدر....)(۶)

د مذكوره روایت نه معلومه شوه چه صحیح ربیع بنت النضر دې نه چه ام الربیع بنت البراء. دې نه علاوه ابن الاثیر الجزری مُنافقت هم فرمانی چه انساب، مغازی او اسماء الصحابة كتابونه هم په دې دلالت كوى چه ام حارثه ربیع بنت النضر عمة انس فَنْ الله ده. (2)

۱) (حواله بالا. والكامل لابن الأثير (ج۵ص۲۱۹)-

۲) (دَ دوى دَ حالاتودَپاره اوګورئ کتاب العلم باب کتابة العلم-

۳) (کشف الباری (ج۲ص۳-٤)-

^{4) (}عمدة القارى (ج ٤٠١ ص ١٠٧ وفتح البارى (ج ٤ص ٢٤)-

⁽⁾ (فتع الباري (ج۶ص۲۶)-

 ⁽الجامع للترمذي (ج٢ص ١٥١) أبواب تفسير القرآن باب ومن سورة المؤمنون رقم(٣١٧٤) (أسد الغابة (ج٧ص ١٠٩) اود هغوى د حالاتودباره او ګورئ کتاب الصلح باب الصلح في الدية-

قوله: حارثه برسراقه ظائن: دا حارثه بن سراقه بن الحارث بن عدى الانصارى النجاري النجاري في النجاري النجاري النجاري في النظر في النجاري النجاري النجاري في النظر في النظام النظر في النظر سر چې د سور و سرت سرت سرت سرت بخاری، نسائی، ترمذی این اد دی د بدر په ورځ شهید شوی وو، امام احمد، طبرانی، بخاری، نسائی، ترمذی این اد دی دی دی چه دی په بدر کښې شهید شوی. او ابن اسحاق موسی بن عقبه او ابنالسود هم دی په صحابه کرامو کښې شمیرلی چه کوم په بدرکښې شریك شوی او دم ابوالاسود هم دی په صحابه کرامو کښې شمیرلی چه کوم په بدرکښې شریك شوی او دم هلته شهیدان شوی هم دی، او د اهل مغازی په دې کښې اختلاف نشته (۲) لیکن د ابن منده رسید قول دا دې چه دې په احدکښې شهید شوې (۳) اود هغه په دې قول باندې ابونعیم اصفهاني رسید د خپل عادت موافق سخت رد کړیدې (۴) بهرحال رومبي قول صحيح دي لكه چه حافظ ابن حجر رواني ((والمعتمدالأول (٥) قوله: فقالت: يانبي الله، ألاتحدثني عن حارثة وكان قتل يومربدر أصابه سهم غرب فإن كأن في الجنة صبرت: نو حضرت ربيع بنت النضر في العنه الوونيل اي د الله نبی! آیا تأسو به ماته د حارثه باره کښی نه ښایئی؟ او حارثه د بدر په ورځ شهید شوې وو چه هغه دَچا نامعلومه سړي په غشي لګيدلې ووکه هغه په جنت کښې وي نوزه به صبر اوکړم. ((سهمغرب)) کښې غرب يا خو د سهم صفت دې يا د دې مضاف اليه دې. (۶) اود دي معنى ابن بطال رواية د ابوعبيده مواية نه دا نقل كريده. (ريقال: سهم غرب: إذاكان لايعلم من رمای) چه کله دُغشی ویشتونکی علم نه وی چه چاویشتلی دې نووئیلی شی سهمغیب (۷) اود ابوزید مید ندروایت دی ((قال: سهم غرب-ساکنة الراء-إذا أتالامن حیث لایدری وسهم غرب-بفتح الراء -إذا رمالافأصاب غيرلا)).(٨)

یعنی چه ((غړب)) د را ، په سکون سره وی نو معنی به دا وی چه کله څوك په نامعلومه غشی اولګی او که د را ، په فتح سره وی نومعنی به داوی چه غشی د یود پاره اولی اولګی بل چاته. قوله: وان کان غیر ذلك اجتهدت علیه فی البکاء: او که د دې نه علاوه بله څه خبره وی نو زه به په دې باندې ښه او ژاړم.

١) (الإصابة (ج١ص٢٩٧)-

٢) (الإصابة (ج ١ ص٢٩٧)-

٣) (حواله بالآ-

٤) (حواله بالا -

۵) (الإصابة (ج١ص٢٩٧)-

۶) (شرح الكرماني (ج۲۲ ص۱۱۱)-

۷) (شرح ابن بطال (ج۵ص۲۵)-

۸) (شرح ابن بطال (ج۵ص۲۵)-

امام ترمذی منه همدغه روایت نقل کریدې. او په دې کښې (راجتهات علیه في المعاء))(۱) واقع شویدی، لیکن دا غلطه ده او صحیح روایت هم د باب دی یعنی ((فالهکاء)) (۲)

مدیث بآب نه دَ علامه خطابی دَ ژرا په جواز باندی استدلال اودَ هفی جواب علامه خطابی بینید دَ حدیث باب نه دَ نوحه(ژړا) په جواز باندې استدلال کړیدې. هغوی فرمائی :((و**نیه ا**نه لم

رعنقهاعلى تولها: اجتهدت عليه في البكام) (٣)

مافظ ابن حجر او علامه عینی انتها به هغوی باندی رد کولو سره لیکی چه دا تحریم د نوحه نه وړاندې واقعه ده ځکه چه نوحې حرمت د غزوه احد نه پس دې او دا د غزوه بدر واقعه ده نو په دې وجه دا مذكوره استدلال صحيح نه دي. (۴)

ليكن علامه قسطلاني ﷺ دَ دي دواړو حضراتو اعتراض او جواب ردكولو سره واني چه دَ دوی په دې خبره کښې نظردې چه مخفی نه دې ځکه چه حارثه نځنځ ((اجتهدت عليه في النوم)) نه دى وئيلى بلكه ((اجتهدت عليه في المكاء)) وئيلى او اجتهاد في البكاء نه نوحه لازم نه ده. په نوخه او بکاء کښی لوئ فرق دی، د نوخی مطلب خو دا دې چه وینا کوی او ژاری. اود بکاء وجه خودا وی چه سړی خفه شی نو د ده د خُلی نه آواز اوځی، چغه هم اوځی او دا ناجائز نه دی، او دا بکاء ده نوحه نه ده. علامه قسطلانی پیکی نورفرمائی چه د علامه خطابی مُنْ مَذَکوره قول نه دې دواړو حضراتو چه کوم استدلال کړې او د هغې چه کوم مفهوم بیان کریدی، هغه هم صحیح نه دی ځکه چه هغوی ((لم یعنفُها علی قولُها)) په ذريعه په حديث كښې ذكرشوې بكاء طرف ته اشاره كړيده او په دې خبره كښې هيڅ شك نشته چه په مړي باندلې د خښولو نه وړاندې اود هغې نه پس په دواړو وختونوکښې ژړا په اتفاق سره جائزٌ ده. (۵)

قوله: قال: يا أمر حارثة إنها جنان في الجنة وإن ابنك أصاب الفردوس الأعلى :رسول الله تُنظِم اوفرمائيل اي ام حارثه په جنت كښې ډير باغونه دى او ستاځوي خو د فردوس اعلى ته رسيدلې دې.

انها ضمير کښې احتمالات: (رانها)) کښې چه کوم ضمير دې هغه ضمير مبهم دې او د دې تفسير د مابعد په قول کښې دی لکه چه عرب وائی ((هی العرب تقول ماتشام))(۶) نو په دې مثال کښې ((هی)) ضمير مبهم دې، د دې تفسير د مابعد په کلمه يعني ((العرب)) کوي چه ((هی))

١) (الجامع للترمذي (ج٢ص ١٥١) أبواب تفسير القرآن باب ومن سورة المؤمنون رقم (٣١٧٤)-

۲) (عمدة القارى (ج ۱ ۱ ص ۱۰۷)-

٣) (اعلام الحديث (ج٢ص١٣٤)-

٤) (فنع البارى (ج عُص ٢٧)-

٥) (شرح الكرماني (ج٢١ص١١) وأيضًا انظر موسوعة النحووالصرف والأعراب (٢٩) بحث الضمير -

ع) (شرح القسطلاني (ج۵ص٤١)-

كتاب الجهاد (جلداولي كشف البارى

نه مراد (رالعرب)) دې دغه شان (رانها)) چه کوم ضمير دې د هغې تفسير د مابعد په کلمه

یعنی ((مہنان)) کوی

اودا هم کیدیشی چه ضمیرشان وی او جنان مبتدا، وی او ددی تنکیر تعظیم د پاره وی ۱۱) عَلَامِهُ عَينَى مُرَاكِمَ نَقَلَ كُرِى دَى چَهُ كُلُهُ رَسُولَ اللهُ نَائِلُمُ آمَ حَارِثُهُ فَيْ اللهُ دَا خُوشُخْبِرَى واوروله نو حضرت ام حارثه فَيْ إِلَيْهُا بِهُ دَى حالت كَسِي دَ هَغُهُ خَائُ نَهُ وَاپِس شُوهُ چِهُ خَنْدُلُ نِي او فرمائيل ئى ‹‹بخبخلكياحارثه››(٢)

د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت د حديث باب ترجمة الباب سرد مناسبت بالكل واضح دې چه ترجمه کښې ((سهم غړب)) ذکر دې او په حديث باب کښې هم د ((سهم غړب)) ذکر موجود دي.

۵- بَاب: مَنْ قَاتَلَ لِتَكُونَ كَلِمَةُ اللَّهِ هِمَ الْعُلْيَا

اختلاف نسح دلته کښې د صحيح بخاري په ټولو نسخوکښې د باب نه اول بسمله هم ذکر ده او د ابوذر په نسخه کښې بسمله ساقط ده. (۳)

ماقبل سره مناسبت به تیروشوو بابونوکښې په مختلفو طریقوسره د شهید فضیلت او مرتبې بيان کړی شوی دی او په دې باب کښې د حقيقي شهيد نښې بيانولې شي چه حقیقی شهید هغه دی د چا قتال چه د کلمه الله د اعلاء د پاره وی نو هله به هغه مرتبی او فضيلتونه حاصل كړيشي د كوم چه شهيد سره وعده كړيشويده كني نو هيڅ نه.

وترجمة الباب مقصد أد ترجمه الباب مقصد د اعلاء كلمه الله د باره قتال كونكى فضيلت المناس ا بيانول دي او د شرط جزاء محذوف ده يعني ((فهوالمعتبر)) كه قتال د الله تعالى د كلمي د اعلاء د پاره وي نو معتبر به وي. (۴)

[٢٦٥٠] حَدَّثَنَا سُلَمُانُ بُنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرٍوعَنْ أَبِي وَابِلِ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ (٥) قَالَ جَاءَرَجُلْ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ الرَّجُلُ يُقَاتِلُ لِلْمَغْنَمِ وَالرَّجُلُ يُقَاتِلُ لِللِّكْرِ وَالرَّجُلُ يُقَاتِلُ لِيُرَى مَكَانُهُ فَمَنْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ قَالَ مَنْ قَاتَلَ لِتَكُونَ كَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا فَهُوَفِي سَبِيلِ اللَّهِ [ر: ١٣٣]

۱) (عمدة القارى (ج ٤ ١٠٧)-

٢) (حواله بالا-

٣) (شرح القسطلاني (ج۵ص٤٨)-

٤) (فتح الباري (ج۶ص۲۸)-

۵) قوله: عن أبى موسى رضى الله عنه:الحديث مرتخريجه فى كتاب العلم باب من سأل وهو قائم الماجاناً

تراجم رجال

-سليمان بر حرب: دا ابوايوب سليمان بن حرب مريد دوى تذكره (ركتاب الإيمان با مرب مريد دوى تذكره (ركتاب الإيمان باب من كره الكفر الماريد دور (١)

م- شعبه: دا امیرالمؤمنین فی الحدیث شعبه بن حجاج عتکی بصری میای دی. د دوی حالات (رکتاب الریمان باب المسلم من سلم المسلمون....) لاندی تیر شو.(۲)

- عمرو: دا عمرو بن مره بن عبدالله بن طارق همداني ميد دي. (٣)

م- ابووائل: دا ابووائل شقیق بن سلمه بهتائی دی. د دوی حالات (رکتاب الإیبان باب عوف البؤمن من ان یحمط) ذیل کښی راغلی دی (۴)

٥- ابوموسى: دا مشهور صحابى حضرت ابوموسى عبدالله بن قيس اشعرى المنتي دي. د د د وي تذكره ((كتاب الإيمان باب أي الإسلام أفضل؟)) لاندى تيره شويده. (٥)

قوله: قال: جاء رجل إلى النبى صلى الله عليه وسلم فقال: الرجل يقاتل للمغنم والرجل يقاتل للمغنم والرجل يقاتل ليرى مكانه فمر. في سبيل الله؟: حضرت ابوموسى اشعرى المنز فرماني چه نبى عَيْرِي سره يو سړى راغلو نوونى وئيل سړى د غنيمت د باره قتال كوى او سړى د مشهورتيا د باره قتال كوى او سړى د مشهورتيا د باره قتال كوى او سړى د خان خودلو د باره جنګيږى نود دوى نه فى سبيل الله څوك دى؟

رجل نه خوک مراد دی؟: دلته د باب په روایت کښی رجل راغلی دی او همدغه روایت (غندر عنه موشعه هی) په طریق هم امام بخاری نقل کړی دی، په هغی کښی ((قال اعرابی)) دې (۶) اودا د اعرابی لاحق بن ضمیره په نوم یادولی شی.د هغه حدیث ابوموسی المدینی (المحابة) کښی عفیر بن معدان په طریق نقل کړیدې. او په دې کښی ((سبعت لاحق بن ضمیرة الهاهلی قال: وقدت علی النبی صلی الله علیه وسلم، فسألته عن الرجل یلتبس الا جروالن کې، فقال: وولاشي له، وقل اسناده ضعف) (۷)

۱) (کشف الباری (ج۲ص۱۰۵)-

۲) (كشف البار (ج ١ص ٤٧٨)-

٣) (دَ دوى حالاتودَپارهُ اوګوري کتاب الأذان باب تسوية الصفوف عند الإقامة وبعدها-

ع) (كشف الباري (ج٢ص٥٥٥)-

۵) (کشف الباري (ج۱ص ۶۹)-

⁶) (انظر الصحيح للبخاري (ج ١ص ٤٤) كتاب فرض الخمس باب من قاتل للمغنم هل ينقص من أجره؟ رقم (٣١٢٣)-

۷) (فتع البارى (ج۶ص۲۸)-

داسې روايت د حضرت معاذ بن جبل اللي نه هم نقل دې: ((عن معاذبن جبل انه قال: يارسل الله، كل بنى سلبة يقاتل، فمنهم من يقاتل رياء....) كه چرته دا حديث صحيح وى نو د دى خبرى الله، كل بنى سلبة يقاتل، فمنهم من يقاتل رياء...) كه چرته دا حديث صحيح وى نو د دى اعرابي احتمال دى چه حضرت معاذ بن جبل المان به همدغه سوال كړى وى كوم چه دى اعرابي اوکړو ځکه چه د حضرت معاذبن جبل اللیز سوال خاص دې. یغنی په دې کښې د سوال تعلق بنوسلمه سره دې خود اعرابي سوال عام دې. او دا خوکیدې نشی چه حضرت معاذ بن جبل اولیات په مختلفو قصو باندې جبل اللی ته اعرابي اووئیلې شی، په دې وجه مذکوره روایات په مختلفو قصو باندې محمول كولى شي. (١)

ریاء او سمعه دواړه مذموم دی: د باب په روایت کښې (روالرجل یقاتل لیری مکاند)

واردشویدې اود اعمش عن ابي وائل په طریق کښې ((ویقاتل دیاء)) راغلې دې (۲) د باب روایت خو سمعه (شهرت) دی او دوئم روآیت ریا، سره متعلق دی لیکن بهر حال

دواړه مذموم دی. (۳)

قوله: قال: من قاتل لتكون كلمة الله هي العلياً فهوفي سبيل الله: نبي اکرم تائیم فرمائیلی چا چه د دې د پاره قتال اوکړوچه د الله تعالی کلمه دې اوچته شی نو هغه في سبيل الله دي. ((كلمة الله)) نه مراد كلمه توحيد ده، نو چه كوم سړې د توحيد كلمې د سرلوړئي دُپاره جنګ کوي هغه مقاتل في سبيل الله دې نه چه د غنيمت. شهرت، بهادرئي او مړاني غوښتونکې دې (۴)

دَحديث باب دَ طرق مختلفه و حاصل د حديث باب مختلف طرق وراندې كيخودو سره دا خبره حاصلیږی چه د قتال پنځه اسباب کیدیشی (د غنیمت طلب (د بهادرئی څرګندونه ﴿ ځان خودل ﴿ حميتِ ﴿ غضب او په دې کښې هر يو سبب دَ مدح او ذم ارځ لری د دې د پاره نبی کریم گائم د سوال کونکی د سوال جواب په او یا نه کښې ورنه کړو بلكه دائي إوفرمائيل ((من قاتل لتكون كلمة الله هي العليافهو في سبيل الله)) (٥) د چا جنگ چه د الله تعالى د كلمي د سرلوړئي د پاره وي هم هغه قتال في سبيل الله دي.

وَحضور تَالِيم جواب جوامع الكلم نه دي د حضور تَالِيم بورته ذكر شوى جواب د بلاغت أو ایجاز د اعلی پیمانی حامل دی او دا جمله د جوامع الکلم نه ده ځکه چه که هغوی تاهاد سوال کونکی د ذکر شوی امورو جواب ورکولو چه هغه په في سبیل الله کښې داخل نه دی نود دې خبرې احتمال وو چه د هغوي نه علاوه قتال که د څه بل څه د سبب نه وي نو هغه

١) (حواله بالا-

۲) (انظرِ الصحيح للبخاري(ج۲ص١١١) كتاب التوحيد باب قوله تعالى:﴿ولقد سبقت كلمتنا لعبادنا المرسلين €رقم (٧٤٥٨)-

۳) (فتح الباری (ج۶ص۲۸)-

٤) (شرح الكرماني (ج١٢ ص١١٣)-

۵) (فتح الباری (ج۶ص۲۸)-

نی سبیل الله دې خو داسې څه خبره نشته د دې دپاره هغوی نظیم جامع او مانع جمله اختیار اوفرمائیله او په جواب کښې ئې د ماهیت قتال نه د مقاتل د حال طرف ته عدول اوكړو.(١)

د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت ترجمة الباب سره د حديث باب مناسبت بالكل واضح اوظاهر دي اودا مناسبت د حضور ترايم دې قول ((من قاتل لتكون كلمة الله هي العليا)) كښې دې (۲)

١٠- بَأْب: مَنُ اغْبَرَّتُ قَدَمَ الْأَفِي سَبيلِ اللَّهِ

ماقبل سره مناسبت تیرشوی باب کښی د هغه سړی د فضیلت ذکر وو چه خالص د اعلا، کلمه الله دَ پاره جهاد اوکړی او په دې باب کښې دَ الله تعالى په لارکښې د قدمونو په خاورو ككړيدو فضيلت ذكر دي.

دَترجمة الباب مقصد درترجمة الباب مقصد واضح دي چه به دي كښي امام بخاري بيد قتال في سبيل الله كښي د قدمونو په خاورو ككريدو فضيلت بيانوي.

اود قدمونو په خاورو د ککړيدو مطلب د کافرانو سره په جنګ ورخښيدل دي او په دي خبره کښې هيڅ شك شبه نشته چه د خلقو په خپل مينځ کېښې جنګ کولو سره خاورې الوزی او دا دوړې سره د دې چه په ټولو اندامونو پريوځی خود قدمونو د خاص کولو وجه دا ده چه په ټولو حرِکتونوکښي هم قدم اصل، ښکلي او عمده وي. (٣)

قُولِهِ: وَقُولِ اللَّهِ تَعَالَى مَاكَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِنْ الْأَعْرَابِ أَنْ

يَتَغَلَّفُوا عَرِيْ رَسُولِ اللَّهِ إِلَى قَوْلِهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ [التوبة:١١] **دُ أيت ترجمه**: دُ الله تعالى قول دي دُ مديني خلقو ته أو كوم چه دُ هغوى خاوشا إوسيږي دُ هغوی دَپاره دا ښه نه وو چه دَ رسول الله ﷺ ملګرتیا اونه کړی او نه دا ښه وو چه خپل ځان دَ هغوي دَ ځان نه خوښ اوګنړي، دا د دې سبب نه دې چه هغوي ته د الله تعالى په لار يعني جهاد کښی کومه تنده اولګیّده او کومه کمزوری اورسیده او چه کومه اولږه اوشوه او چه کوم تک ئلی اوکړو اود کافرانو د پاره د غصی سبب شو او د دښمنانو ئی چه کوم خبر واخستو په هغه ټولو باندې د هغوي په نوم يوه

يوه نيكي اوليكلي شوه يقينًا الله تعالى دُ نيكوكارو اجر نه ضائع كوي. (۴) د أيت ترجمة الباب سره مطابقت: علامه ابن بطال رُسَلَجُ فرمائي چه د آيت ترجمة الباب سره مطابقت د آیت په دې جز کښې دې (ولایطنون موطئایغیظ الکفار ولاینالون من عدونیلا إلا کتبلهم به عمل صالح) نو حضور نظم د عمل صالح دا تفسير بيان كړلو چه د كوم سړى قدمونه د الله

۱) (فتح الباری (ج۶ص۲۹)-

۲) (عمدة القارى (ج ٤ ١٠٨)-

٣) (عمدة القارى (ج ٤٤ ص ١٠٨) وشرح القسطلاني (ج٥ص٤٨)-

إبيان القرآن (ج ١ سورة التوبة. الآية: ١٢٠)-

تعالی په لارکښې په دوړو ککړشی هغه به د دوزخ په اُور نه لګی او دا د حضور نها وعدو ده او ښکاره خبرهٔ ده چه د هغوي وعده پخه ده (٦)

او ابن المنير برنيد فرماني چه د آيت مطابقت ترجمه سرد داسې دې چه الله تعالى د فعديد لار کښې اوچتیدونکی قدمونوباندې هم د تواب وعده کړیده سره د دې چه هغه قتال اونه

[٢٦٥٦] حَدَّثَنَا إِمْعَاقُ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا يَغْيَى بْنُ حَمْزَةً قَالَ حَذَثَنِي يَزِيدُ بُنُ أَبِى مَرْيَمَ أُخْبَرَنَا عَبْايَةُ بْنُ رِفَاعَةَ بْنِ رَافِعِ بْنِ خَدِيجِ قَالَ أَخْبَرَنِى أَبُوعَبْسِ(٣) هُوَعَبُلْ الرِّحْمَنِ بْنُ جَبْرِأَنَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَا اغْبَرَتْ قَدَمَا عَبْدِ فِي سَبِيلِ اللَّه فَتَمَـَّهُ النَّارُ [ر:٢٦٥]

تراجم رجال

<u>- اسمحاق:</u> دا اسحاق بن منصور بن بهرام كوسج بُرِيمَةُ دې. دَ دوى تذكره ((كتابالإيمان باب حسن اسلام المرحى لاندى تيرشو. (۴)

r- هجهربن المبارك: دا ابوعبدالله محمد بن المبارك بن يعلى قرشي صوري قلانسي مند دی. ددمشق اوسیدونکی وو (۵)

په کال ۱۵۳ ه کښې پيدا شوې وو. (۶)

هغه دُ معاويه بن سلام، عظاء بن مسلم الخصاف، صدقة بن خالد، يحيى بن حمزة الحضرمي، هثيم بن حميد الغساني،اسمعيل بن عياش،مالك، دراوردي ، مغيره بن عبدالرحمن الحزامي، عمرو بن واقد، عيسى بن يونس او ابن عينيه المنظم وغيره نه د حديث روایت کوی.

دُ هغوي نه دَ حديث روايت كونكوكښي د هغوي ځوئ محمد، اسحاق بن منصور كوسج. عبدالله بن عبدالرحمن الدارمي، عبدالسلام بن عتيق، عمران بن بكار، محمد بن يحيى الذهلي، عبيد الله بن فضاله، محمد بن عوف، محمدبن محمدبن مصعب الصورى، وحشى، محمدبن مصفى، على بن عثمان نفيلى، احمد بن يوسف سلمى، عباس بن محمد ترقفی، ابوزرعه دمشقی، موسی بن عیسی بن المنذر نیم او نور حضرات هم شامل دی (۷)

۱) (شرح ابن بطال (ج۵ص۲۶)-

۲) (التواري (ص۱۵۲)-

٣) (قوله: أبوعبس رضى الله عنه: الحديث مرتخرجه في كتاب صلاة الجمعة ياب المشي إلى الجمعة-

٤) (كشف البارى (ج٢ص٢٤)-

۵) (تهذیب الکمال (ج۲۶ ص۲۵۲) -

۶) (الثقات لابن حبان (ج ۹ص ۷۱)-

۷) (شيوخ او تلامذه د باره او گورئ تهذيب الكمال (ج۲۶ س۳۵۲-۳۵۴)-

ابوزرعه د ولید بن عقبه نه نقل کری دی هغوی فرمانی: ((سبعت مروان بن محبدیقول: لیس نینامثله، یعنی محبد بن البهارك)) (۱)

حضرت ابوزرعه مريي فرمانى: ((شهرت جنازته في شوال سنة عبس عشرة ومئتين، وصلى عليه أبومسهر بهاب الجهاية، فلما فرغ أثنى عليه، وقال: يرحمه الله، فأنه..... فن كرجبيلا))(٢)

يحيى بن معين بواطي فرمائى: ((محمدين البهارك شيخ الشام بعد ابي مسهن) (٣)

امام ابوداؤد بين فرمائى ((هذا رجل الشام بعداب مسهر) (۴)

عجلي او ابوحاتم مناهد ((لقة)) (٥)

دارقطنی مید هم هغه ته تقه وئیلی (ع)

ابن شاهین مواند هغه په کتاب الثقات کښی ذکر کړیدې.(۷)

ابن حبان مُحَافَّة هم هغه په کتاب الثقات کښې ذکر کړیدې او فرمائیلی: ((وکان من الْعُبّاد))(۸) ابونعیم اصفهانی مُرَفِی فرمائی ((دوالعقل الوانی، والورع الصانی، والبیان الشانی)) (۹)

علامه ذهبي ميه هغه په دې جليل القدر الفاظو سره ياد كړيدې. ((الإمام، العابد، الحافظ،

الحجة، الغقيه، مفتى دمشتى)) (١٠)

خلیلی بخشی فرمائی ((**لقة**))(۱۱)

ذهلی مید فرمائی ((کان افضل من رایت بالشام) (۱۲)

حافظ ذهبی براید نور فرمائی ((ولَقه جماعة)) (۱۳)

دا د اصول سته راوی دی.(۱۴)

١) (تهذيب الكمال (ج٢٤ص ٢٥٤)-

٢) (حواله بالا-

^{7) (}حواله بالا-

٤) (حواله بالا ـ

٥) (حواله بالا-

ع) (سنن الدار قطني (ج ١ص ٣٢٠ وج ٢ص ١٨٤)-

٧) (تهذيب التهذيب (ج٩ص٤٢٤)-

٨) (الثقات لابن حبان (ج ٩ص٨١)-

٩) (حلية الأولياء (ج ٩ ص ٢٩٨)-

١٠) (سير أعلاًالنبلاء (ج١٠ ص٢٩٠)-

١١) (تهذيب التهذيب (ج٩ص٤٢٤)-

١٢) (حواله بالا-

۱۳) (تذكره الحفاظ (ج١ص٣٨٧)-

۱٤) (الكاشف (ج٢ص ٢١٤)-

او امام بخاری به د ده نه صرف یو روایت اخستی دی (۱) لکه چه نن د آبوزرعه مُراه په خواله سره اوس تيرشو. د هغه وفات کال ۲۱۵ ه کښې شون

رحبه الله تعالى رحبة واسعة. تنبیه حافظ ابن حجر بیمان د هغوی باره کښې دحافظ ذهبی نبیمیا دا قول نقل کړیدنې

((وأحاديثه تستتكن)) (٢)

لیکن دا غلط دی ځکه چه حافظ ذهبی د هغوی بیاته ترجمه (میزان الاعتدال) کښې اسلا هدو نقل کړي نه ده او په اصل کښې د هغه پورته ذکرشوې قول د محمد بن المتوکل العسقلاني باره کښې دې او حافظ صاحب ته دلته تسامح شویده (۳)

فائده عبدالله بن محمد الدمشقى بينا فرمائى: ((سبعت محمدين البهارك يقول: ماآمن بالدمن رجا مخلوقا فيها ضبن الله له)) (۴)يعني د كوم څيز ضمانت چه الله تعالى وركړيدې په هغي باندې چه چا د مخلوق نه اميد اوساتلو نو هغه په الله تعالى باندې ايمان نه دې راوړې. مطلب دا چه د انسان جمله ضروریاتو او حاجاتو دمه الله تعالی اخستی ده. آوس که یو سړې دَ مخلوق نه دَ ضِرورتونو دَ حاصلولو خواهش مند وی نو دَ هغه ایمان په الله تعالی باندې هډو دې ند. ځکه چه که د هغه په الله تعالى ايمان وې نو مخلوق نه به نی خپل اميدونه نه ترل

-- یحیی بر. حمزه: دا ابوعبدالرحمن یحیی بن حمزه بن واقد حضرمی بلتهی بیج

م-يزيدبر ابي مريم: دا ابوعبدالرحمن يزيد بن ابي مريم انصاري الماري المار ه-عبايهبر رافعبر خديج ادا عباية بن رفاعة بن رافع بن خديج انصاري ميد دي. ٢- ابوعبس : دا ابوعبس عبدالرحمن بن جبر بن عمرو بن زيد كانتخ دي. (ع) قوله: أ<u>ن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: مااغبرتاقي ماعبد في سبيل</u> الله فتمسه النار: حضرت ابوعبس عبدالرحمن بن جبر الماثنة فرماني چه رسول الله الماثنة <u>فرمائیلی چه دکوم</u> یو سړی قدمونه دَ الله تعالی په لار کښې دَ دوړو شی نو دَ دوزخ ^{آوربه} يه هغه نه لګی

۱) (سيرأعلام النبلاء (ج۱۰ص۳۹۱)-

۲) (تهذیب التهذیب (ج۹ص ۲۶)-

٣) (تعليقات تهذيب الكمال (ج٢٢ص٣٥٥)-

٤) (حلية الأولياء (ج ٩ص ٢٩٩)-

٥) (د هغوى د حالاتودپاره او كورئ كتاب الجنائز باب ماينهي من الحلق عندالمصيبة -

۶) (د دي دريواړو حضراتود حالاتودپاره او ګورئ کتاب الجمعة باب المشي إلى الجمعة -

حموی او مستملی په روایت کښې ((اهبرتا)) تثنیه سره دې دا یو لغت دې اود نورو په نزد (۱) دې او همدغه فصيح دی. (۱)

د الله تعالى به لاركسى و حركاتو اوتصرفاتو عظمت د حديث مطلب دا دي چه د دوړو په موجودګنی سره به نی د دوزخ اور نه سوزوی او په دې کښې د الله تعالی په لارکښې تصرفاتو او حركاتو ته آشاره ده. لره شان اندازه اولګوني چه صرف په قدمونو باندې د دوړو لګیدو په وجه د دوزخ اور حرامیږی نو د هغه سړی به څه مرتبه او فضیلت وی چا چه خپل پوره طاقت، قوت او کوشش د الله تعالی پدلاړ کښی لګولی وی ۲۰)

د حدیث باب هم معنی نوراهادیث ابن حبان میلید د حضرت جابر الثنی نه د روایت باب د معنی په شان روایت نقل کړیدې. چه حضرت جابر اللی فرمانی چه هغه په غزوه کښې وو نو رسول الله تَوْلِيمُ أوفرمائِيل: ((من اغبرت قدَما تا في سبيل الله حرمه الله على النار)). حضرت جابر الماثين فرماني چه کله خلقو د نبي کريم نالل ارشاد مبارك واوريدو نو هغوي د خپلو خپلو سورلونه راؤدانګل او د دغه ورځ نه وړاندې مونږ خلق دومره پیدل تلونکی نه دې لیدلی ۳۰)

دغه شان علامه طبرانی میشد هم د حصرت ابوالدرداً، گاتئ نه مرَّفوعاً نقل کړی دی چه نبی كريم تُلْيُمُ ارشاد اوفرمائيلو ((من اغبرت قدمه في سبيل الله باعدالله منه النار مسيرة الف عام لله اكب مستعجل))(۴)

يعني دَ چا قدم چه دَ الله تعالى په لار كښې دَ دوړو شو نو الله تعالى به دَ هغه نه دَ دوزخ أور دومره لرې کړي څومره چه د يو تيز سور د زرو کالو مسافت وي.

مطلب دا چه يو تيز رفتار سور په زركاله كښې څومره فاصله كوي د هغې په اندازه به الله تعالى دَ دغه سړى نه دَ دوزخ أور لرې كړى دُ چا قدمونه چه دَ الله تعالَى په لاركښى دَ دوړوشوې وي.

د حديث أن ترجمة الباب سره مطابقت: د حديث شريف ترجمة الباب سره مناسبت ظاهر دي او هغه ((مااغبرتاقدماعبد....)) کښې دې. (۵)

١- بَأَب: مَسْحِ الْغُبَارِعَنُ الرَّأْسِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ

ماقبل سره ربط به تیرشوی باب کښی د الله تعالی په لارکښېي د قدمونو د دوړوکیدو د فضیلت ذکر وو. په دې باب کښې امام بخاری سُرائت دا خودل غواړی چه قدمونه کوم چه په دوړو ککړ شوی وي، د فضيلت څيز دې خود دې صفاکول جائز او مباح دي.

۱) (فتح الباری (ج8ص9) وشرح القسطلانی (ج8ص9) -

۲) (فتح الباري (ج۶ص ۳۰)-

٣) (الإحسان بنرتيب صحيح ابن حبان (ج٨ص٢٦)-

 $^{^{2}}$) (مجمع الزوائد للهيثمي (ج 0 ٢٨٥) -

۵) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٠٩) -

دُ ترجمة الباب مقصد علامه عيني مُرَادَةُ فرماني چه دُ امام بخاري مُرَادَةُ مقصد دي ترجمي نه د سر نه د جهاد دوړود مسح عدم کراهیت بیان دې یعنی د الله تعالی په لارکښې په سر وغيره لكيدلى دوري صفا كولو عدم كراهيت بيانول غواري (١)

آبن المنير على فرماني چه په اسلام كښي بعضو حضراتو د اودس نه پس مسح بالمنديل مکروه او ناخوښه ګڼړله، د دې د پاره متبادرالي الذهن دا کیږي چه د جهاد آثار یعنی دوړې وغیره مسح هم ناخوښه اومکروه به وي نود دې وهم لرې کولو د پاره امام بخاري پرځ

دا ترجمه الباب قائم كرو (٢)

حافظ صاحب د ابن المنير مُنِيد د قول نور وضاحت كولو سره ليكي چه د جهاد آثارو او اودس آثارو کښې فرق په دې اعتبار سره دې چه نظافت مطلوب شرعي دې، غبار د آثار و جهاد نه دی، نو چه کله جهاد ختم شونود هغی د آثار باقی ساتلو هیڅ معنی نشته او د اودس نه مقصد مونځ دی نو دا مستحب پاتی شو چه د مقصود د حصول پورې آثار هم باقی پاتې کړیشی. دغه شان په دواړو مسحوکښې واضح فرق دې (۳)

[٢٦٥٠]حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَابِ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةً (٣) أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ قَالَ لَهُ وَلِعَلِيّ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الْتِيَا أَبَاسَعِيدٍ فَاسْمَعَا مِنْ حَدِيثِهِ فَأَتَيْنَا لَا وَهُوَ وَأَخُوهُ فِي حَامِطٍ لَهُمَا يَسْقِيَانِهِ فَلَبَّا رَآلًا جَاءَفَا خُتَبَي وَجَلَسَ فَقَالَ كُنَّا نَنْقُلَ لَبَ الْمَسْجِبِ لَبِنَةُ لَبِنَةُ وَعَلَى كُنَا نَنْقُلَ لَبِنَةُ لَبِنَةً وَعَلَى عَمَّارٌ يَنْقُلُ لَبِنَتَيْنِ لَبِئَتَيْنِ فَمَرْبِهِ النَّبِي صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ وَمَسَحَ عَنْ رَأْسِهِ الْغُبَارُ وَقَالَ وَيْحَ عَمَّا رِتَقْتُلُهُ الْفِئَةُ الْبَاغِيَةُ عَمَّارْيَدُ عُوهُمْ إِلَى اللَّهِ وَيَدْعُونَهُ إِلَى النَّارِ [ر:٣٠٢]

تراجم رجال

۱-ابراهیم بریموسی: داابواسحاق ابراهیم بن یزید الفراء رازی تمیمی مینه دی. (۵) - عبدالوهاب: داعبدالوهاب بن عبدالمجيد ثقفي مُوالله دي. در دوى تذكره (ركتاب الإيان باب حلاو ۱۱ الإيمان) لاندې راغلې ده. (۶)

٣-خالن: داخالدبن مهران حذاء ميلية دي.

٣-عكرمه: دا مشهورمفسر حضرت عكرمه مولى ابن عباس رُوالله دي. د دي دواړو حضراتو تذكره ((كتاب العلم باب قول النبي صلى الله عليه وسلم...)) لاندى تيره شوه أراك)

۱) (عمدة القارى (ج ۱ اص ۱۰۹)-

۲) (المتوارى (ص۱۵۳)-

۳) (فتح الباري (ج۶ص ۳۰)-

٤) (قوله: عن عكرمة مُؤورة: الحديث مرتخريجه في كتاب الصلاة باب التعاون في بناء المسجد-

۵) (د دوی د حالاتود پاره او گوری کتاب الحیض باب غسل الحائض رأس زوجها ـ

۶) (کشف الباری (ح۲ص۲۶)-

۷) (کشف الباری (ج۳ص۳۶۱)-

د-ابر عباس: دَ حضرت عبدالله بن عباس الله عالات ((بدم الوحى)) خلورم حديث او (ركتاب الإيبان باب كفران العشير....) لاندى راغلى دى. (١)

و حدیث ترجمه حضرت عکرمه میشی فرمائی مآنه آو حضرت علی بن عبدالله ته حضرت ابن عباس نگاها اووئیل چه حضرت ابوسعیدالخدری نگاش له لارشئی او د هغوی نه د هغوی حدیث واورئی. نومونو هغوی له راغلو هغه اود هغه رور په خپل باغ کښی وو او باغ ئی اوبه کولو. کله چه هغوی مونو اولیدو نو د احتباء په صورت کیناستل او وئی فرمائیل چه د مسجد نبوی د تعمیر په وخت مونو به یوه یوه خښته او چتوله او عمار به دوه دوه خښتی او چتولی نبی کریم نظیم د هغه خواکی تیرشو او د هغه د سر نه ئی دوړی صفا کړی او وئی فرمائیل د عمار بی کسی د افسوس قابله ده، دی به یو باغی ډله قتل کوی، دی به هغوی د الله تعالی طرف ته راغواړی او هغوی به دی دوزخ طرف ته راغواړی.

دَ الله تعالى طرف ته راغوارى او هغوى به دى دوزخ طرف ته راغوارى. د روايت باب د بعض اجزاء توضيح: په روايت كښى د على بن عبدالله نه مراد د حضرت ابن عباس ځوئ على دى. (٢)

((فلحتبی))دا د باب افتعال نه دی او احتباء معنی دا ده چه په سرین یعنی د کوناټو په سر کیناسته او زنګونونه ئی اودرول اود هغی نه چاپیره سهارا اخستلو د پاره دواړه لاسونه تړل یا د ملا او زنګونو نه چاپیره کېړه تړل (۳)

(رویح)) کلمه د ترحم ده او فعل محذوف مفعول مطلق کیدو په بناء باندی منصوب دی. (۴) د حضرت ابوسعیدالخدری رضی الله عنه دا رور څوک دی؟ حافظ شرف الدین دمیاطی گئید د

حدیث باب په الفاظو اشکال کولوسره فرمائی چه د حدیث الفاظ صحیح نه دی (وهوواغولا)
ځکه چه د حضرت ابوسعید الخدری الله صرف هم یو نسبی رور قتاده بن النعمان الظفری
الله و چه د دوی د شریکی مور نه پیدا شوی رور وو. خود هغوی وفات د حضرت عمر
فاروق الله دخلافت په زمانه کښی شوی وو، هغه وخت د علی بن عبدالله بن عباس
پیدائش هم نه وو شوی. ځکه چه هغه د حضرت علی الله د دورخلافت په آخری ورځوکښی
پیداشوی وو.نو د علی بن عبدالله ملاقات قتاده بن النعمان الظفری الله سره ځنګه صحیح
کیدیشی؟ (۵)

دغه شان دَ حضرت، عكرمه بَهُوني ملاقات هم دَ حضرت قتاده بن النعمان الظفري الله نه نه نه شان دَ عَلَيْنَ نه ثابت نه دې ځكه چه هغه هم عهدفاروقي نه پس پيدا شوې دې.(۶)

۱) (کشف الباری (ج۱ص۳۵ او۲۰۵)-

٢) (فتح البارى (ج ١ص ١ ٥٤) او دَعلى بن عبدالله دَباره او كورى كتاب الصلاة باب التعاون في بناء المسجد

٣) (عمدة القارى (١٠٩ ص ١٠٩) والقاموس الوحيد (ص ٣٠٩) مادة حبى -س

^{\$) (}عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٠٩) وموسوعة النحو ومالصرف والإعراب (ص٧١٧)-

٥) (حواله بالا وعمدة القارى (ج ١٤ص ١٠٩) وإرشاد السارى (ج٥ص ٩٠)-

ع) (شرح الكرماني (ج١٢ص ١١٤)-

كشف البارى كتاب الجهاد (جلداول)

د دې اشکال جواب علامه کرمانی يو خودا ورکړې دې چه کيديشی چه دا د هغه څول رضاعی رور وي. هم دا جواب حافظ صاحب هم اختيار کړيدې.(۱)

اودونم جواب علامه كرماني دا وركړې چه مراد ((أغنى الإسلام) هم كيدې شي (٢) د الله تعالى ارشاد دې: ﴿ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ اِخْوَةٌ ﴾ (٣)

الفئة الباغية نه كومه دله مراد ده؟ پد حديث باب كښى راغلى دى چه حضرت عثار به باغى جماعت قتل كوى چه دى به هغوى د الله تعالى طرف ته راوغواړى او هغوى به دې د دوزخ د أور طرف ته اوس سوال دا دې ((الفئة الباغية)) نه كوم باغى جماعت مراد دې؟ () علامه ابن بطال مُنات فرمانى ((الفئة الباغية))نه اهل مكه مرادى چا چه حضرت عماربن ياسر رضى الله عنهما دمكى نه بهر اوويستلو او سخت تكليف ئى وركړو.

پاتی شو دا سوال چه په حدیث کښی فعل مضارع استعمال کړیشوی دی یعنی «تقتله. یدعوهم» او «یدعونه» چه په مستقبل کښی د دی ټولو حالاتو په وقوع کیدو باندی دلالت کوی نو د دی جواب دا دی چه فعل مضارع دلته د ماضی په معنی کښی مستعمل دی او دا استعمال د اهل عرب په نزد شائع او ذائع دی (۴)

﴿ علامه كرمانى مُنِيْلَةُ فرمائى چه په حديث كښى په مستقبل كښى واقع كيدونكى يو واقعى طرف ته اشاره كړيشويده اوهغه واقعه په جنګ صفين كښى پيښه شوه كومه چه د رسول الله كالله معجزه وه . په هغه جنګ كښى يو طرف ته حضرت على الله او بل طرف ته حضرت معاويه الله او كومه ملكرى وو . د دى وجه ((الغثة الهاغية)) معنى ((الجماعة المخطئة)) به وى، چه حضرت على الله په وه او حضرت معاويه الله نو اجتهادى غلطى شوى وه ، په دى جنګ كښى حضرت عمار الله شهيدشو چه د حضرت على الله د ملكرونه وو . (٥)

اوبعضو حضراتو وئيلى دى ((الفئة الهاغية)) نه خوارج مراد دې ليكن دا توجيه په هر لحاظ سره بديهي البطلان ده ځكه چه د خوارجو د حضرت على التائز خلاف خروج بالاتفاق د حضرت عمار التائز د شهادت نه پس شوى دى. علامه قسطلانى مُسِيدٍ فرمائى:

((ولايسح أن يقال أن مرادة ١٠٠ لخوارج،)الذين بعث على عمارا يدعوهم إلى الجماعة لأن الخوارجرإنا خرجواعلى على بعد قتل عمار بلاخلاف، فإن ابتداء أمرالخوارج كان عقب التحكيم، وكان التحكيم عقب انتهاء القتال بصفين، وكان قتل عمار قبل ذلك قطعا)) (ع)/

۱) (حواله بالا وفتح البارى (ص۱۱۵۵)-

٢) (شرح الكرماني (ج١٢ص ١١٤)-

٣) (الحجرات:١٠)-

٤) (شرح ابن بطال (ج٥ص٢٧)-

۵) (شرح الكرماني (ج١٢ص١١٣) وعمدة القاري (ج١٤ص١٠٩)- ١١١)-

۶) (ارشاد الساري (ج۵۲ص۵۰)-

عنالباری کتاب الجهاد (جلداول الم عنی او علامه قسطلانی شیخ فرمائی چه دلته راجح جواب د علامه کرمانی میاند ی خکه چه د حدیث ظاهر سیاق د هغی موافقت کوی، خو د علامه ابن بطال مناه قول مبنی برادب دی چه هغوی د ادب په توګه د اهل صفین طرف ته د بغاوت د نسبت نه احتراز کړیدې.(۱)

دَ حديث باقى تشريحات ((كتاب الصلاة باب التعاون في بناء المسجد)) لاندى تيرشوى دى. د مديث د ترجمة الباب سره مطابقت د حديث مناسبت ترجمة الباب سره به دي جمله كښي دي. ((ومسح عن رأسه القيار)) (٢)

١٨- بَأَبِ: الْغُسُلِ بَعْدَ الْحَرْبِ وَالْغُبَارِ

ماقبل سره مناسبت: په تيرشوي باب کښې د دوړو وغيره د مسح د عدم کراهيت بيان وو او په دې باب کښې د دغه دوړو د غسل او وينځلو د عدم کراهيت بيان دي.

د ترجمي مقصد علامه قسطُلاني رُئِيلَةٍ فرمائي جه امام بخاري رُئِيلَةٍ دَ جنګ نه پس د دوړو دَ وينځلو جواز بيانول غواړي. (٣) بلكه دا د فعل نظافت په نقطه نظر سره هم بهتر او اولي دې لکه چه وړانديني باب کښې چه تيرشو خو علامه عيني انترفرمائي چه پورتنئي ترجمه په دوو څيزونوباندې مشتمل ده. يو غسل او دوئم دوړې. نو يو امر خو دا دې چه نبي کريم نه و جنګ نه پس غسل فرمائيلي وو ، دوئم د دې امر بيان دې چه د جبرائيل امين سر په دې جنګ کښې د دوړو شوې وو.(^{۴)})

[٢٦٥٨] حَدِّثَنَا مُحُمَّدُ بُنُ سَلَامٍ أَخْبَرَنَا عَبُدَةُ عَنْ هِشَامِ بُنِ عُرُوةً عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِثَةَ (٥) رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَهَّا رَجَعَ يَوْمَ الْخَنْدَقِ وَوَضَعَ السِّلَاحَ وَاغْتَسَلَ فَأَتَّاهُ جِبُرِيلُ وَقَدُعَصِبَ رَأْسَهُ الْغُبَارُ فَقَالَ وَضِعْتَ السِّلَاحَ فَوَاللَّهِ مَا وَضَعْتُهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلِّي اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَيْنَ قَالَ هَا هُنَا وَأَوْمَأَ إِلَى بَنِي قُرَيْظَةً قَالَتْ فَخَرَجَ إِلَيْهِمْ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ [٣٨٩]

تراجم رجال

ا- هجمن: دا ابوعبدالله محمدبن سلام بيكندى مواليه دي.

-عبلة: دا عبده بن سليمان بن حاجب كلابي مين در در در در در واړو حضراتو تذكره ((كتاب

۱) (عمدةالقاري (۱۶ج ۱۰) وشرح القسطلاني (ج۵ص ۵۰)-

۲) (عمدة القارى (ج ۱ ۱ ص ۱۰۹) -

۳) (شرح القسطلانی (ج۵ص۵۰)-

٤) (عمد القارى (ج ١٤ ص ١١٠)-

٥) (قوله: عن عائشة رضي الله عنها: التحديث مرتخريجه في كتاب الصلاة باب الخيمة في المسجد للمرضى وغيرهم

الإيبان باب قول النبى صلى الله عليه وسلم أنا أعلم كم بالله) لاندى را غلى ده . (١)

٣-هشامر: دا ابوالمنذر هشام بن عروه بين دي.

م-عروان دا حضرت عروه بن زبير بن عوام المالة دي.

٥-عائشه: دا ام المؤمنين حضرت عائشه بنت ابى بكر صديق گُوَّا ده. دَ دې دريواړو حالات ((بده الوس)) دَ دونم حديث لاندې راغلى (٢)

قوله: أن رسول الله صلى الله عليه وسلم لما رجع يوم الخندق ووضع السلاح واغتسل فأتاه جبريل وقد عصب رأسه الغبار: حضرت عائشه في في فرمائى چه كله رسول اله تلظم د غزوه خندق نه واپس راغلو نو وسله نى كيخوده او غسل ئى اوفرمائيلو. به دې دوران كنبى حضرت جبرائيل تايي راغلو اود هغه په سر باندې دوړې جمع شوې وې «تدمعب راسه» دا جمله حاليه ده او مطلب دا دې چه څنګه په سر باندې پټئى تړلې وى او دې پټئى ټول سر راګيركړې وو «۳) دې پټئى ټول سر راګيركړې وو «۳) او حديث باب سره متعلق نور تفصيلات به مغازى كنبى راځي (۴)

د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت: ترجمة الباب سره د حدیث باب مناسبت به دې الفاظوکښې دې. ((واغتسل، فأتاه جبريل وقدعصب راسه الغیار)) (۵)

٩- بَاب: فَضُلِ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَىٰ : وَلَا تَعْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوافِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمُواتًا بَلُ أَحْيَاءٌ عِنْدَرَةٍ مِمْ يُرْزَقُونَ فَرِحِينَ سَبِيلِ اللَّهِ أَمُواتًا بَلُ أَحْيَاءٌ عِنْدَرَةٍ مِمْ يُرْزَقُونَ فَرِحِينَ

يمَ آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضَلِهِ وَيَسْتَبْشِرُونَ بِإِلَّذِينَ لَمْ يَلُحَقُوا بِيَمْ مِنْ خَلْفِهِمُ الْاَخَوْفَ عَلَيْهِمُ وَلَا هُمُ اللَّهُ وَفَضُل وَأَنِّ اللَّهَ لَا يُضِيمُ الْجُرَالُمُومِنِينَ آل عمران: ١٦٩-١٧١] ماقبل سره مناسبت: په وړاندينو بابونو گښې د الله تعالى په لار کښې د شهيد کيدو مختلفو فضيلتونو ذکر وو، په دې باب کښې هم د شهيد في سبيل الله د يو خالص فضيلت ذکر دې، هغه دا چه شهيد مړ نه دې بلکه ژوندې وي، او د هغه د رب د طرف نه هغه ته رزن ورکولې شي.

۱) (کشف الباری (ج۲ص۹۳-۹٤)-

۲) (کشف الباری (ج ۱ ص ۲۹)-

٣) (عمدة القارى (ج ٤ اص ١٠) وقال العلامة الخطابي كُلُطَةُ في أعلام الحديث (ج ٢ ص ١٣٥٣) قوله: عصب رأسه الغبار، معناه: ركب رأسه الغبار وعَلقَ به. يقال: عصب الريق بفمي: إذا جف، فبقيت منه لزوجة تمسك الفم

٤) (كشف الباري كتاب المغازي (ص ٢٩٩و ٣٠-٣٠)-

۵) (عمدةالقاری (ج ۱۹ ص۱۹)-

ع ف البّارى كتاب الجهاد (جداول)

د ترجمة الباب مقصد: امام بخاری رئیلت به دی باب کښی د هغه حضراتو فضیلت ذکر کول غواړی، د چا باره کښی چه آیات (ولاتحسبن اللین تتلوا....)(۱)

اود ترجمه الباب تقدیری عبارت داسی دی ((باب نشل من در دنیه تول الله تعال) ځکه چه د ترجمه الباب ظاهری الفاظ دلته مراد نه دی، په دې وجه اسماعیلی د ترجمې نه د فضل لفظ حذف کړې دې. (۲)

په توجمة الباب گښی د مذکوره آیات خلاصه: په پورته ذکر شوی آیت کښی د دې امر ذکر دې چه کوم خلق د الله تعالی په لارکښی د شهادت او چته مرتبه مومی نو هغوی ته نه مره وئیل پکاردی نه دا ګڼړل پکار دی ځکه چه هغه احیاء او ژوندی دی او هغوی ته د هغوی د رب د خوانه رزق هم ورکولی کیږی او الله تعالی چه کوم فضل او کرم هغوی سره کړیدې هغوی په دې خوشحاله او راضی دی او دا چه الله تعالی د محسنینو اجر نه ضایع کوی.

أحيات الشهداء حقيقت: په ترجمة الباب كښى ذكركريشوى آياتونو كښى عامو مسلمانانو ته خطاب كولو سره اوفرمائيل چه تاسو خلق د الله تعالى په لاركښى قتل كريشوو خلقو ته مړه مه وائى، همدغه ممانعت سورة البقرة كښى هم راغلى دې د الله تعالى ارشاد دې

(ولاتقولوالمن يقتل في سبيل الله أموات بل أحياء ولكن لاتشعرون (٣)

د شهید متعلق دا وئیل چه هغه مرشو صحیح او جائز دی خود هغه مرک د نورو مرو په شان ګڼړلو ممانعت کړیشویدی. د دی وجه دا ده چه دمرګ نه پس لکه د برزخ ژوند د هرسری روح ته حاصل دی. اوهم د دی نه د سزا او جزا ادراك کیږی لیکن شهید ته په دې حیات کښی د نورو مړو نه یو قسم امتیاز حاصل دی او هغه امتیازدا دې چه د حیات آثار هغه کښی د نورو نه قوی دې. لکه څنګه چه په انمله کښی د ذکاء حس کوم چه د آثار حیات نه دې په نسبت د پوندې هها او حسا قوی دې. تردې پورې چه د شهید د دې حیات د قوت یو اثر په خلاف د معمولی مړو د هغه جوسه ظاهری پورې چه د شهید د دې حیات د قوت دې چه د غوښی نه جوړدې زمکه نی نه متاثر کوی او په مثال د ژوندنی جوسی صحیح او دې چه د غوښی نه جوړی. لکه څنګه چه احادیث او مشاهدات ګواه دی نو د دې امتیاز او مسام پاتی کیږی. لکه څنګه چه احادیث او مشاهدات ګواه دی نو د دې امتیاز او خصوصیت د وجه شهداؤ ته احیاء اووئیلی شو او هغوی ته د مړو وئیلو ممانعت کړی شویدې او همدغه هغه ژوند دې کوم کښی چه انبیا علیهم السلام د شهداؤ نه هم زیات امتیازی قوت لری. تردې چه د ظاهر مرګ نه پس د صحیح بدن سره یو اثر د دې حیات د دې عالم په احکاموکښی دا هم ظاهریږی چه په مثال د ژوندو خاوندانو د هغوی بیبیانوسره دې عالم په احکاموکښی دا هم ظاهریږی چه په مثال د ژوندو خاوندانو د هغوی بیبیانوسره نکاح کول جائز نه دی او د هغوی مال په میراث کښی نه تقسیږی، نو په دې حیات کښی د تولو نه زیات قوی انبیاء علیهم السلام دی بیا شهداء دی او بیا نور مړی. (۴)

۱) (آل عمران:۷۹-۸۱)-

٢) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١١)-

٣) (البقرة: ١٥٤)-

^{\$) (}بيانّ القر آنْ(ج١ص٨٧-٨٨)−

شهداو ته د رزق ملاویدلو مطلب شهداء ته د رزق ملاویدلو کیفیت په احادیث صحیح کښې راغلې دې چه د دوی ارواح د عرش په قنادیلو کښې اوسیږی او د جنت د نهرونونه اوبه ځکی، او د هغې ميوې خورې مسند احمد، ابوداود، ترمذې او ابن ماجه کښې د حضرت عبدالله بن مسعود كالثن نه روايت دې

«قال رسول الله صلى الله عليه: لما أصيب إخوانكم بِلحد جعل الله عزوجل أرواحهم في أجواف طيرخض، تردانهار الجنة، تأكل من أثبارها، وتأدى إلى قناديل من ذهب في ظل العرش.٠٠٠)\

یواشکال اود هفی جواب: اودا اشکال چه کله هغه په جنت کښې وی نو د حشر په ورخ به ځنګه راویستلې شي؟ نو د دې جواب دا دې چه هغه به په جنت کښې نه وي بلکه هم په خپلو قبرونوکښې په وي ليکن دا حصه د نهرونو او ميوو به د يوداسې مقام نه ملاويږي چه جنت سره به متعلق وي لکه څنګه چه به کافران هم په قبرونوکښې وي ليکن هغوي ته به عذاب د دوزخ ورکړې کیدیشی. (۲)

[٢٦٥٩] حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنْسِ بْنِ مَالِكِ رَضِىَ اللَّهُ عَنْهُ (٢) قَالَ دَعَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الَّذِينَ قَتَلُوا أَصْحَابَ بِثُرِمَعُونَةَ ثَلَاثِينَ غَدَاةً عَلَى رِعُلٍ وَذَكُوانَ وَعُصَيَّةً عَصَتْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ قَالَ أَنَسُ أُنْزِلَ فِي الَّذِينَ قُتِلُوا بِبِثْرِمَعُونَةَ قُرُآنٌ قَرَأْنَاةُ ثُمَّ نُسِخَ بَعْدُ بَلِغُوا قَوْمَنَا أَنْ قَدُلَقِينَا رَبَّنَا فَرَضِي عَنَّا وَرَضِينَا عَنْهُ [ر:٢١٣٥]

تراجم رجال

- اسماعيل برعبدالله: دا ابوعبدالله اسماعيل بن ابى اويس عبدالله بن عبدالله بن اويس بن مالك بن ابى عامر اصبحى برايد دى د ده حالات ((كتاب الإيمان باب تفاضل أهل الإيبان في الأعبال) لاندى راغلى دى. (۴)

-- ما لك: دا امام مالك بن انس بن مالك بن ابى عامر الاصبحى المدنى مَرْسَدُ دي. دُ ده

١) (مسندالإمام أحمد (ج١ص٢٤٥) ومسلم ٩ج٢ص١٣٥) كتاب الإمارة. باب بيان أن أرواح الشهداء في الجنة، وأنهم أحياء عندربهم يرزقون رقم(٤٨٨٥) وسنن أبي داؤد (ج١ص١٣١) كتاب الجهاد باب في فضل الشهادة رقم (٢٥٢٠) والجامع للترمذي (ج٢ص ١٣٠) أبواب تفسير القرآن باب ومن سورة آل عمران رقم (٣٠١١) وابن ماجه (ص٢٠١) أبواب الجهاد باب فضل الشهادة في سبيل الله رقم (٢٨٠١)-

٢) (بيان القرآن (ج ١ سورة آل عمران) والجامع لأحكام القرآن للقرطبي (ج ٤ ص ٢٥٩)-

٣) (قوله: عن أنس بن مالك رضى الله عنه: الحديث مرتخريجه في كتأب الوتر باب القنوت قبل الركوع وبعده رقم (۱۰۰۱)-

٤) (كشف البارى (ج٢ص١١)-

حالات ((بده الوحي)) ذ دوئم حديث په ذيل كښي راغلي. (١)

م- اسعاق برعبدالله برابي طلحه: دا اسحاق بن عبدالله بن ابي طلحه انصاري ميد دري و حالات (ركتاب العلم باب من تعدميث ينتهي به البجلس...) (٢)

م-حضرت انس بر مالك المن دا مشهور صحابی خادم رسول النظم حضرت انس بن مالك النظم دی د ده حالات (ركتاب الإيمان باب من الإيمان أن يحب الأخيه مايحب لنفسه) لاندې راغلی دی (۱)

و حدیث ترجمه حضرت انس بن مالك الله فرمائی چه رسول الله د دی خلقو د پاره د دیرشو ورخو (یوی میاشت پوری) بددعا او فرمائیله چا چه اصحاب بئر معونه قتل کړی وو. قبیله رعل، ذکوان او عصیه باندی چا چه د الله تعالی او د هغه د رسول نافرمائی کړی وه. حضرت انس الله فرمائی چه کوم اصحاب بئرمعونه کښی قتل کړیشوی وو د هغوی باره کښی د قرآن کریم آیت نازل شوی وو، کوم چه مونږ هم لوستلی وو خو یو څوورځی پس منسوخ شو. هغه آیت مبارك دا وو. (بلغواقومنائن تدالهینا دبنا، فرض عناورضیناعنه).

په حدیث کښې د دکر شوې واقعی تفصیل په کتاب المغازی کښې غزوه بئرمعونه لاندې راغلی دې. (۴)

د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت: د حدیث ترجمه الباب سره مطابقت داسی دی چه په ترجمه الباب کښی مذکوره آیت هم د هغه صحابه کرامو رضوان الله علیهم اجمعین په حق کښی نازل شویدی کوم چه په بئر معونه کښی شهیدان شوی وو (۵)

فائده ابن بطال رئيل فرمائي چه په ترجمه الباب كښې مذكوره آيت د دې خبرې دليل دې چه كوم سړې په دهوكه كوم سړې په دهوكه سره قتل شي هغه شهيددې، ځكه چه اصحاب بئرمعونه هم په دهوكه سره قتل شوې وو .(۶)

[٢٦٠] حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْدٍ وسَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِى اللَّهُ عَنْهُمَا (٤) يَقُولُ اصْطَبَحَ نَاسٌ الْخَبْرَ يَوْمَ أُحُدٍ ثُمَّ قُتِلُوا شَهَدَاءَ فَقِيلَ لِسُفْيَانَ مِنْ آخِرِ ذَلِكَ الْيَوْمِ
قَالَ لَيْسَ هَذَا فِيهِ [٣٣٣٣٨٨]

۱) (کشف الباری (ج۱ص۲۹۰) و کشف الباری (ج۲ص۸۰)-

٢) (كشف الباري (ج٢ص٢١)-

۲) (کشف الباری (ج۲ص٤)- `

^{2) (}كشف الباري كتاب المغازي (ص ٢٤١)-

۵) (عددة القارى (ج ١٤ ص ١١١)-

ه ۶) (شرح ابن بطال (ج۵ص ۲۹)-

۲ (قوله: جابربن عبدالله رضى الله عنهما: الحديث أخرجه البخارى أيضًا (ج٢ص٥٧٩) كتاب المغازى باب غزوة أحد، رقم (٤٤٠٤) و (ج٢ص۶۶۶) تاب التفسير سورة المائدة باب (إنما الخمروالميسر والأنصاب والأزلام رجس من عمل الشيطان) رقم (٤۶١٨) والحديث من إفراده-

تراجم رجال

-على برب عبدالله: داامير المؤمنين في الحديث امام على بن عبدالله ابن المدين ميد دي. در عبدالله ابن المدين مين دي. در در هغوي حالات ((كتاب العلم باب العهم في العلم) لاندې را غلى دى. (١)

رود مشهور محدث سفیان بن عُیینه بن ابی عمران کوفی مینیه دی و دون در دون اسفیان دی در دون اسفیان در دون اسفیان بن عُیینه بن ابی عمران کوفی مینیه دی در دون البحدث حالات ((کتاب العلم باب تول البحدث حدیث الاندی (۲) او تفصیلی حالات ((کتاب العلم باب تول البحدث حدیث الواعبریا و افغان دی (۳)

م- عروبر . دينارالمكي : دا عمرو بن دينار جمعى ابومحمدالمكى الاشرم مُنظم دي را الله عنهما : دا عمرو بن دينار جمعى الله عنهما : دا مشهور صحابى، حضرت جابر بن عبدالله الانصارى الله عنهما دي (۵)

قوله: يقول: اصطبح ناس الخبريوم أحد، ثمر قتلوا شكد اع: عمرو بن دينار نه روايت دى چه هغه فرمانيل، دى چه هغه فرمانيل، دى چه هغه فرمانيل، د احد په ورځ ډيرو مسلمانانو شراب څكلې وو بيا هم په هغه ورځ شهيدان شول.

((اصطبح ای شهب الخبر صبوحا)) یعنی هغوی د سحر په وخت کښې شراب څکلې وو (۶)

((صهوم)) وائی دَسحر وخت کښې شراب څکلوته او ((غبوق))دَمانبام شراب څکلوته وائی (۱۷) دَحدیث مطلب دا دې چه د احد په ورځ کوم مسلمانان شهیدان شو هغوی کښې ډیو حضراتو دَ سحر په وخت کښې شراب څکلې وو او هم په هغه ورځ هغوی شهیدان شو ځکه چه په هغه وخت کښې دَ شرابو دَ حرمت حکم نه وو راغلې. دَ دې تصریح په کتاب التفسیرکښې موجود ده. حضرت جابر تالی فرمانی ((صبح اداس فدالا احدالخبر، فقتلوا من پیمها) (۱۸)

چېپغاسه ۱۹۸۸ و دند ته تا تا ۱۹۸۸ و دند ته پس حرام کړې شوی دی. (۹) د دند پس حرام کړې شوی دی. (۹)

۱) (کشف الباری (ج۳ص۲۹۷)-

۲) (کشف الباری (ج۱ص۲۳۸)-

۳) (کشف الباری (ج ۳ ص ۱۰۲)-

٤) (د دوى د حالاتود پاره او كورئ كتاب العلم باب العلم والعظة بالليل-

۵) (دَ دوى دَ حالاتودَ پاره گورئى كتاب الوضوء باب صب النبى صلى الله عليه وسلم وضوءه على المغمى علبه على (دَ دوى دَ حالاتودَ پاره گورئى كتاب الوضوء باب صب النبى صلى الله عليه وسلم وضوءه على المغمى علبه على (دَ حالات ۱۲هـ ۱۹ ص ۱۶) -

٧) (عددة القارى (ج ٤ أصض ١١٣)-

۰ / رصحیح البخاری (ج ۲ص ۶۶۶) کتاب التفسیر باب قوله ﴿إنما الخمر والمیسر والأنصاب والأزلام دجن ٨) (صحیح البخاری (ج ۲م (۶۶۸) و شرح ابن بطال)ج۵ص ۲۹) – من عمل الشیطان € رقم (۶۱۸ ع) و شرح ابن بطال)ج۵ص ۲۹) –

۹) (فتح الباري (ج٧ص٣٥٣)-

قوله: فقیل لسفیان: من اخرذلك الیوم؟ قال: لیس هذافیه: حضرت سفیان بن عینیه مختله ته اووئیلی شو چه په حدیث كنبی ((من آخرذلك الیوم)) الفاظ هم شته؟ نو هغه اووئیل چه په روایت كنبی دا الفاظ نشته. په اصل كنبی دلته د حضرت سفیان میگیای نه سهو شوی ده. گنی نو اسماعیلی ((قواریری عن سفیان)) په طریق سره همدغه روایت نقل كریدی او

په هغی کښې دا الفاظ موجود دی. ((وقتلوا آخرالنهارشهدام))(۱)

دغه شآن د کقاب التفسير په روايت کښې هم دا الفاظ موجود دي (۲)

نولکه چه حضرت سفیان کو نه اول سهو شوی بیا ورته یاد شو. (۳)

دُ حديثُ د ترجمة الباب سره مطابقت: علامة أبن المنير اسكندراني ميد اود مغه به اتباع

کښې علامه عینی گُوانی فرمائی چه د حدیث ترجمه الباب سره مناسبت په لفظ ((شهدام)) کښې دې. ځکه چه هغه شراب کوم چه هغوی په هغه ورځ سحر څکلې وو هغې دوی ته هیڅ نقصان اونه رسولو، سره د شرابو څکلو هغوی شهدا، بللې شو ځکه چه هغه وخت مباح وو. د دې وجه نه الله تعالى د هغوی د شهادت نه پس د هغوی مدح او تعریف او کړلو، ویره او پریشاني ئې د هغوی نه لرې کړه. (۴)

اُوحافظ مَرَائِي فرمانی چه کیدیشی امام بخاری مُرائِی دا روایت د هغه آیاتونو د نازلیدلو د اسبابو نه یو طرف ته د اشاری د پاره ذکر کړی وی. امام ترمذی مُرائِی فرمائی(۵) د حضرت جابر الله نه روایت کریدی:

(قال: ماكلم الله أحداقط إلا من وراء حجابه، وأحيى أباك فكلمه كفاحا، فقال: ياعبدى، تبنّ على أعطيك، قال: يارب، تحييني فأقتل فيك ثانية، قال الرب: إنه قدسيق مني ﴿أنهم لايرجعون ﴾ وأنزلت هذه الآية:

(ولاتحسين الذين تتلوالى سبيل الله أمواتا)))(ع)

حضرت جابر گان فرمانی چه الله تعالی چاسره هم خبری فرمائی د پردی نه اخوا ئی فرمائی، لیکن الله تعالی زما پلار ژوندی کرو او هغه سره ئی مخامخ خبری اوکری، وئی فرمائی، لیکن الله تعالی زما پلار ژوندی کرو او هغه سره ئی مخامخ خبری اوکری، وئی فرمائیل ای زما بنده اوغواره چه خه ته غواری دربه کرم. عبدالله وئیل ای ربه ته ما ژوندی کری راو دنیاته می اولیگه، دی د پاره چه ستا په لارکښی بیا شهید شم. الله تعالی اوفرمائیل ردا خو نشی کیدی، ځکه چه مانه دا خبره اول صادر شوی ده چه رد دنیانه واپس راغلی، به نه واپس کیږی او دا آیت نازل شو. (ولاتحسین البین تتلوالی سبیل الله آمواتا)

 $^{^{1}}$) (فتح الباری (ج 2 2 3 3) وعمدة القاری (ج 1 1 1

٢) (صعيح البخاري (ج٢ص ٤۶۶) كتاب التفسير باب قوله ﴿إنما الخمر والميسر...) رقم (٤٤١٨)-

۳) (فتح الباري (ج۶ص۳۲)-

^{4) (}حواله بالا وعمدة القارى (ج ٤ ١ص١٦)-

۵) (الجامع للنرمذي (ج٢ص ١٣٠) أبواب تفسيرالقرآن، باب ومن سورة آل عمران رقم (٣٠١٠)-

ع) (فتع الباری (ج۵ص ۳۱)-

كشفُ البَارى كتاب الجهاد (جلال

او د وهب بن کیسان بیش په روایت کښې دی چه حضرت جابر نگات د هغه شهیدانو نومون او د وهب بن کیسان بیش په روایت کښې د حضرت جابر نگات په رو او په هغې کښې د حضرت جابر نگات پلار عبدالله هم وو، چا چه د غزوداور په ورځ شراب څکلې وو (۱)

چاری سرب می و در این به در حدیث جابر طانت او ترجمه الباب کښی ذکر شوې آبز (دان الله الایفیع اجرالبؤمندن) په مینځ کښی مناسبت ظاهر دی. او هغه داسی چه که د در دوران الله الایفیع اجرالبؤمندن) په مینځ کښی مناسبت ظاهر دی. او هغه داسی چه که د در دوراتو په شرابو څکلوباندی نیول شوی وی نو د مومنانود فعل اضاعت به شوی وو ځکه چه هغوی د څه حرام څیز ارتکاب نه وو کړی. چه په هغی ئی نیولی وی (۲)

٢٠-بَاب: ظِلِّ الْمَلَابِكَةِ عَلَى الشَّهِيدِ

ماقبل سره مناسبت په تیرشوی باب کښی د دې ذکر وو چه شهیدان ژوندی دی اوهغوی نه د هغوي د رب د طرف نه رزق هم ملاویږی او په دې باب کښی د دې خبرې ذکر دې چه د شهید د تعظیم او تکریم د پاره فرښتې د هغوی د پاسه په خپلو وزرو سره سورې کوی. د ترجمه الباب مقصد دلته امام بخاری دا فرمائی چه د شهداؤ مقام دومره اوچت دې په ملاتکې هم د هغوی خادمانې جوړیږی او د هغوی د پاسه سورې کوی. د دوی په سورې کولوکښې د شهید اجلال او تعظیم دې. (۳)

[٢٦٦] حَدَّثَنَا صَدَقَهُ بُنُ الْفَضُلِ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةً قَالَ سَمِعْتُ هُعَنَّدَ بُنَ الْمُنْكَدِرِأَنَّهُ سَمِعْجَابِرًا (٣) يَقُولُ جِيءَبِأَبِي إِلَى النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدُمُ ثِلَ بِهِ وَوُضِعَ بَيْنَ بَدَبُهُ فَهَمُ النَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدُمُ ثَلِّ بِهِ وَوُضِعَ بَيْنَ بَدَبُهُ فَكُمُ وَلَا يَنْهُ عَمْرُوا أَوْ أَخْتُ عَمْرُو فَكَمْ فَعَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدُمُ فَقِيلَ ابْنَةً عَمْرُوا أَوْ أَخْتُ عَمْرُو فَلَا تَبْكِي مَا زَالَتُ الْمَلَابِكَةَ تُظِلَّهُ بِأَجْنِعَتِهَا قُلْتُ لِصَدَقَةً فَقَالَ لِمَ تَبْكِي أَوْلَا تَبْكِي مَا زَالَتُ الْمَلَابِكَةَ تُظِلَّهُ بِأَجْنِعَتِهَا قُلْتُ لِصَدَقَةً أَنْ اللّهُ الْمَلَابِكَةَ تُظِلّهُ بِأَجْنِعَتِهَا قُلْتُ لِصَدَقَةً أَلْ رُبِّمَا قَالَهُ [ر: ١٨٤]

تراجم رجال

۱-صدقه بن الفضل: داحافظ حدیث ابوالفضل صدقه بن الفضل مروزی پر الفردی دی ده دوی میدودی دی ده دوی نود ابر عینیه: دا مشهور محدث سفیان بن عُیینه بن ابی عمران کوفی پر الفی دی د دوی نه حالات ((بد و الومی)) د اولنی حدیث لاندی (۶)

۱) (فتح الباري (ج۷ص۳۵۳)-

۲) (لامع الدراري (ج٧ص٢١٩)-

٣) (فيض الباري (ج٣ص٤٢٤)-

أ (قوله: جابراً رضى الله عنه: الحديث مرتخريجه فى كتاب الجنائز، باب الدخول على الميت بعدالهوت إذا أدرج فى أكفاته -

٥) (د دوى حالات د پاره او كورى كتاب العلم باب العلم والعظة بالليل ـ

ع) (کشف الباری (ج ۱ ص۲۳۸)-

اومفصل حالات كتاب العلم باب قول المحدث: حدثنا أو اعبرنا وأدبانا) په ذيل كښې راغلى دى. (١) معدد المنكدر بن عبدالله المدنى بينيد. (٢) محدث شهير محمد المنكدر بن عبدالله المدنى بينيد. (٢) محدث شهير محمد الله عنهما: دامشهور صحابى حضرت جابر بن عبدالله الانصارى الم بن عبدالله الانصارى الله عنهما: دامشهور صحابى حضرت جابر بن عبدالله الانصارى الم بين محدد الله عنهما:

قوله: قلت لصاقة: أفيه حتى رفع؟ قال: ربما قاله: ما صدقه نه اووئيل چه حديث كني « (حتى رفع)) هم شته؟ نو هغوى اوفرمائيل او ، كله كله به سفيان هم دا وئيل. دئيه قائل امام بخارى بيني دي ، هغه دخپل استاذ صدقه بن الفضل نه معلومول چه آيا حديث كنبي «حق رفع) الفاظ هم شته؟ نوجوابًا صدقه بن الفضل اووئيل او ، سفيان به دا هم وئيل . (۴) ليكن همدغه روايت په (كتاب الجنائن) كنبي «على بن عهدالله وهوابن المهيفي عن سفيان) طريق سرد هم مروى دى او د دى په آخر كنبي «حق رفعتمون» الفاظ موجود دى . (۵) د ركتاب دغه شان حميدى او نورو حضراتو هم د سفيان نه دغه شان نقل كړى دى . (۶) د ركتاب انغازى په روايت كنبي هم «ابوالوليلاعن شعبة عن ابن المنكدر) په طريق سرد «حقى رفع» الفاظ نقل كړيشوى دى . (۷)

نومعلومه شوه چه عدم جزم سره دا روایت صرف صدقه بن الفضل روایت کړیدي. (۸) د حدیث په جمله د حدیث په جمله (مازالت البلاتکه تظله بأجنحتها)) کښې دې. (۹)

١٦- بَأَب: تَمَيِّي الْمُجَاهِدِ أَنْ يَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا

ماقبل سره ربط او مناسبت په ورآندينوبابونوکښې دا بيان شوې وو چه مجاهدته به د هغه د شهادت نه پس د الله تعالى د طرف نه رزق ورکولې شى او هغوى ژوندى وى. نور دا چه

۱) (کشف الباری (ج۲ص۲۰)-

۲) ددوى دَ حالاتِودَپارَه اوكوري كتاب الوضوء باب صب النبي صلى الله عليه وسلم وضوءه على المغمى عليه ۲) (حواله بالا-

أ (عمدة القارى (ج ١٤ ص١١٦)-

²) (الشحيح البخاري (ج ١ص١۶۶) كتاب الجنائز باب الدخول على الميت بعد الموت إذا أدرج في أكفانه رقم (٤٤٢٤) -

ع) (فتح الباري (ج ٤ ١ص١١٣)-

٧) (صحيح البخاري (ج ٢ص ٥٨٤) كتاب المغازي باب من قتل من المسلمين يوم أحد رقم (٥٨٠ ٤)-

٨) ١٠ حديث باب د تيولو تشريحاتود باره او ګورئ کتاب الجنائز باب الدخول على الميت بعد الموت إذا أدرج فى اکفانه و کشف البارى کتاب المغازى (ص٢٥٠-٢٥١) -

٩) (عددة القارى (ج ١٤ ص١١٣)-

ملاتکی د هغوی د تکریم او تعظیم د پاره په خپلو ورزو باندې په هغوی سورې وی دې ملاتکی د هغوی د تکریم او تعظیم د پاره په خپلو ورزو باندې په هغه دې بیا په دونم وا ټولو انعاماتو او فضیلتونه اوکرامتونه دې حاصل کړی لکه چه د حدیز

باب نه واضح دی

وَترجمة الباب مقصد دَترجمة الباب مقصددادې چه کله شهید په خپل خان باندې دَایِ تعالى نعمتونه او مهربانئى اووینى نو دَ هغه خواهش به دا وى چه هغه دنیا ته واپس شى جهاد او کړى او شهید شى،اودا دَ دې دَ پاره چه هغه ته نور ډیر نعمتونه حاصل شى. (۱) جهاد او کړى او شهید شى،اودا دَ دې دَ پاره چه هغه ته نور ډیر نعمتونه حاصل شى. (۱) [۲۹۲۳] حَدَّثَنَا هُعَنَّا فُعْنَا غُنْدَرْ حَدَّثَنَا هُعْبَةُ قَالَ سَمِعْتُ قَتَادَةً قَالَ سَمِعْتُ أَنْنَ بُعْتُ أَنْنَ بُعْتُ أَنْنَ مَا لِكُورَ مِنَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَا أَحَدُ يَدُخُلُ الْجُنَةُ بُهِ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَا أَحَدُ يَدُخُلُ الْجُنَةُ بُهِ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَا أَحَدُ يَدُخُمُ إِلَى الذَّنِي مَا لَكُورَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَا أَحَدُ يَدُخُمُ إِلَى الذَّانَ يَرْجِمُ إِلَى الذَّانَ اللَّهُ عَلْمُ مَرَّاتٍ لِمَا يَرَى مِنُ الْكُرَامَةِ [ر:۲۹۳۲]

تراجم رجال

r-غندر: دا ابوعبدالله محمد بن جعفر هذلی رکای دی. د غندر په لقب مشهور دی. ددود حالات (رکتاب الإیبان باب ظلم دون ظلم) لاندی راغلی دی. (۴)

د-انس: دا مشهورصحابی رسول الشراح حضرت انس بن مالك الشراخ دی. دور دواړو حضرانو حالات ((كتاب الإيبان باب من الإيبان أن يحب الأعيه مايحب لنفسه)) په ذيل كښې راغلى دى. (٧)

١) (عمدة القارى (ج ١٤ ص١١٣)-

٢) (قوله: أنس بن مالك رضى الله عنه: الحديث مر تخريجه آنفافي باب الحور العين وصفتهن-

٣) (کشف الباری (ج٣ص ٢٢١)-

٤) (كشف البارى ج٢ص ٢٥٠)-

۵) (کشف الباری (ج ۱ ص۶۷۸)-

۶) (کشف الباری(ج۲ص۳)-۸۷ (المالا (۲۵ م)

٧) (حراله بالا(ص ٤)-

تنبیه د حدیث باب تشریحات ((باب الحور العین دصفتهن)) لاندی تیرشوی دی.

و هدیث و ترجمه الباب سره مطابقت و حدیث ترجمه الباب سره مطابقت کنبی دا اشکال دی چه ترجمه خو و مجاهد و تمنا اوخواهش ده لیکن امام بخاری چه کوم روایت نقل کریدی په هغی کنبی و ((حب)) لفظ وارد شویدی؟

د دی جواب دا دی چه همدغه روایت امام نسائی او امام حاکم انتها هم روایت کریدی او هلته د تمنی لفظ واردشویدی، نو حضرت انس انتائز فرمانی :

(قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: يؤل بالرجل من أهل الجنة فيقول الله عزوجل يا ابن آدم، كيف وجدت منزلك؟ فيقول: أى رب خيرمنزل، فيقول: سل وتبنّ، فيقول: أسألك أن تردلى إلى الديا فأتتل في سبيلك عشى مرّات لمايرى من فضل بالشهادة)) (١)

رسول الله تاهی اوفرمائیل د جنتیانو نه به یو سری راوستلی شی او الله تعالی به هغه ته اوفرمائی ای د آدم خویه تا خپل د اوسیدو خائ څنګه بیاموندلو؟ هغه به وائی ای ربه ډیر ښکلی خائ دی. الله تعالی به اوفرمائی سوال او کړه او تمنااو کړه، نو هغه سړی به وائی زما خو ستانه هم دغه غوښتنه ده چه ته ما دنیا ته واپس کړه چه ستا په لارکښی لس خل قتل کړی شم (هغه به دا درخواست په دې وجه کوی) ځکه چه هغه د الله تعالی په لارکښی د قتل کیدو فضیلتونه لیدلی دی. اوس د نسائی او مستدرك د روایت نه دا معلومه شوه چه د حب نه مراد هم تمنا ده. (۲)

rr-بَاب: الْجَنَّةُ تَحْتَ بَارِقَةِ السَّيُوفِ

ماقبل سره مناسبت په مخکینویابونوکښې د جنت او د هغه ځائ د مختلفو نعمتونو او منازلو وغیره بیان شویدې او په دې باب کښې امام بخاری کښت د جنت او د هغه ځای د نعمتونو د حاصلولو طریقه ښائی چه جنت د تورو د سوری لاندې دې

د ترجمهٔ الباب مقصد: دُ ترجمهٔ الباب مقصد واضح دی او هغه دا جنت چه ملاویږی نو هم دُ تورو دَ سوری لاندې ملاویږی.

دُترجمة الباب لغوى تحليل: أمام بخارى منه دلته ترجمة الباب قائم كړيدې فرمائى چه ((باب الجنة تحت بارقة السيوف)) د بارقه اضافت د سيوف طرف ته ((إضافة الصفة إلى الموصوف)) د قبيل نه دې. او دا د ((السيوف الهارقة)) په معنى كښې دې (٣)

او ((بارقة)) د ((بروق)) نه مشتق دی وئیلی شی ((برق السیف بروقاإذا تلاًلاً)) اوس د ((بارقة))

١) (سنن النسانى (ج٢ص ٤٠) كتاب الجهاد باب مايتمنى أهل الجنة رقم (٣١٤٢) والحاكم فى مستدركه (ج٢ص٧٥) كتاب الجهاد باب مقام الشهداء-

۲) (فنع الباري (ج۶ص۳۲)-

٣) (شرّح الكرماني (ج١٢ ص١١)-

معنی پرقیدونکی شوه.(۱)

او کله کله بارقه وئیلی شی اود دې نه هم توره مراد وی، نو په دې صورت کښې به اضافز بيانيه وى لكه ((شجرالإراك)) چه وئيلې شى.

ابن بطال رئيلة فرماني چه دا د ((بريق)) نه ماخوذ دې او د دې معني د بجلني پړق دې (۲) او علامه خطابی رئید فرمائی چه دا د ((ابریق)) نه دې، وئیلی کیږی ((ابرق الرجل بسیفه إذاليم

به» او تورې ته هم ابریق وائی. (۳) حافظ ابن حجر فرمائی چه شاید د امام بخاری راه و اورجمه د دې روایت نه ماخو د د دې کومه چه طبرانی په صحیح سندسره د حضرت عمار بن یاسر گنام دوایت کړید د چه

حضرت عمار الله و خنك صفين به ورخ فرمائيلي ((الجنة تحت الأبارقة)) او علامه خطبي

رُهُ فَرَمَانَيلَى چه ((الأبارقة)) دا دَ ((الإبريق)) جمع ده. (۴) قوله: وَقَالَ الْمُغِيرَةُ بُرِ شُعْبَةَ أَخُبَرَنَا نَبِيَّنَا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ رِسَالَةِ رَبَنَا مَنُ قُتِلَ مِنْ أَصَارَ إِلَى الْجُنَّةِ: [ر: ٢٩٨٩] او حضرت مغيره بن شعبه الْمُنْ فرمانيلي دي

چه مونږ ته زمونږ نبي تاپیم زمونږ د رب په ذریعه خبر راکړې دې چه په مونږ کښې څوك نتا کیږي هغه به جنت ته ځي.

(عن دسالة دبنا)) الفاظ صرف د كشميهني په روايت كښې موندلې شي او نورو رواتو : صحيح بخاري هغه حذف كړى دى كيديشي چه مقصد ئي اختصار وى ځكه چه په موصول طريقه كښې هم دا الفاظ موجود دي.

د پورتنی تعلیق تخریج پورته بیان شوی تعلیق د اورد حدیث شریف حصه ده، کوم چه امه بخاری مُوالله موصولاً (کتاب الجریة والموادعة) کنیس (۵) او (کتاب التوحید) (۶) کنیسی نقل کری دی دمذکوره تعلیق ترجمه الباب سره مناسبت د مذکوره تعلیق مناسبت ترجمه الباب سره داسی دې چه د مسلمانانو نه کوم يو کس هم شهيد او مقتول شو نو جنت کښې به داخلېږي ښکاره خبره ده چه هغه به د تورې د پړق لاندې راځي. (۷)

١) (حواله بالا ومختار الصحاح مادة برق_

۲) (شرح ابن بطال (ج۵ص۳)-

۳) (شرح ابن بطال (ج۵ص ۳۱)-

٤) (فتح الباري (ج۶ص٣٣)-

۵) (صعبح البخاري (ج ١ص٤٤) كتاب الجزية والموادعة باب الجزية والموادعة مع أهل الذمة رقم (٣١٥٩) ع) (صحيح البخاري (ج٢ص١١٣) كتاب التوحيد باب قول الله تعالى ﴿ ياأيها الرسل بلغ ماأنزل اليك من ، بكإلخ ﴾ رقم (٧٥٣٠)-

٧) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ٤ ١١) -

وله وَقَالَ عُمَرُ لِلنَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَلَيْسَ قَتْلَانَافِي الْجَنَّةِ وَقَتْلَاهُمْ فِي النَّارِقَالَ عُمرُ لِلنَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَلَيْسَ قَتْلَانَافِي الْجَنَّةِ وَقَتْلَاهُمْ فِي النَّارِقَالَ بَلَى: الرا ٢٠١١ او حضرت عمر النَّوْ نبى كريم نَوْظُ نه عرض او كرو آيا زمون مفتولين به دوزخ كنبى نه دى! هغوى نَوْظُ اوفرمانيل ولى مفتولين به دوزخ كنبى نه دى! هغوى نَوْظُ اوفرمانيل ولى

دُمذکوره تعلیق تخریج دا تعلیق هم امام بخاری مینی په خپل صحیح کښې په مختلفو مقاماتو موصولاً نِقل کړیدې (۱)

ترجمة الباب سرة دتعلیق مناسبت د پورته ذکر شوی تعلیق ترجمه الباب سره مناسبت د تیرشوی تعلیق لاندې رانځلې دې. (۲)

[٢١١٠] حَدَّثَنَا عَبُدُ اللَّهِ بْنُ هُٰحَمَّدِ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَبْرُوحَدَّثَنَا أَبُو إِسْعَاقَ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةً عَنْ سَالِمِ أَبِي النَّهُ مُولَى عُمَرَ بُنِ عُبَيْدِ اللَّهِ وَكَانَ كَاتِبَهُ قَالَ كَتَبَ إِلَيْهِ عَبْدُ اللَّهِ بَنُ سَالِمِ أَبِي النَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ كَتَبَ إِلَيْهِ عَبْدُ اللَّهِ بُنُ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنْ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ (٣) وَاعْلَمُوا اللَّهِ بُنُ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ مُوسَى بُنِ عُقْبَةً أَنْ الْجِنَةَ تَحْتَ ظِلَالِ السَّيُوفِ تَابَعَهُ الْأُويِينُ عَنْ ابْنِ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ مُوسَى بُنِ عُقْبَةً أَنْ الْجِنَةَ تَحْتَ ظِلَالِ السَّيُوفِ تَابَعَهُ الْأُويِينُ عَنْ ابْنِ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ مُوسَى بُنِ عُقْبَةً أَنْ الْجَنَةَ تَحْتَ ظِلَالِ السَّيُوفِ تَابَعَهُ الْأُويُسِيُّ عَنْ ابْنِ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ مُوسَى بُنِ عُقْبَةً أَنْ الْجَنْهُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّا لِلللَّهُ مِلْكُولُ السَّيُوفِ تَابَعَهُ الْأُويُسِيُّ عَنْ ابْنِ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ مُوسَى بُنِ عُقْبَةً أَنْ الْجَنْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسُلَالِ السَّيُوفِ تَابَعَهُ الْأُولِي الْمُوسَى بُنِ عَلْمُ الْمُعْلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسُلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ الْمُعْلَى الْبَهُ عَلَى الْمَتَالَ عَنْ مُوسَى بُنِ عُقْبَةً أَلَاقًا لَهُ اللَّهُ الْمُعْلِى الْمُولُ اللَّهُ الْمُعْلِى الْمُعْلَى اللَّهُ عَلَى الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْرَالُ اللَّهُ الْمُعْلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعْلِى اللَّهُ الْمُعْلَى اللَّهُ اللَّهُ الْمُعْلَى الْمُلْسِلِي الْمُعْمَالَ اللَّهُ الْمُعْلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْمُولَى اللَّهُ الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلَى اللَّهُ اللَّهُ الْمُعْلَى الْمُؤْمِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعْلَى اللَّهُ الْمُعْلَى اللَّهُ الْمُعْلَى الْمُعْلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعْلَى اللَّهُ الْمُعْلِى اللَّهُ ال

تراجم رجال

ا-عبدالله بری هجمد: دا ابوجعفر عبدالله بن محمد بن عبدالله جعفی بخاری مسندی میلید دی. د دوی حالات ((کتاب الإیمان باب أمور الإیمان)) لاندی نقل کړیشوی دی. (۴)

r-معاویه بری عمرو: دا معاویه بن عمرو بن المهلب الازدی الکوفی رئالته دی. (۵) د ده نه. امام بخاری بغیر د واسطی نه هم روایت نقل کړی دی. (۶)

۱) (صحیح البخاری (ج۱ص ٤٥١) كتاب الجزیة والموادعة بابٌ رقم (۳۱۸۱–۳۱۸۲) و (ج۲ص ۶۰۲) كتاب المغازی باب غزوة الحدیبیة رقم (۱۸۹۹) و (ج۲ص ۷۱۷) كتاب التفسیر باب قوله (اف یبایعونک تحت الشجرة) رقم (۱۸۹۵) و (ج۲ص ۱۰۸۷) كتاب الاعتصام بالكتاب والسنة باب مایذ كر من ذم الرأی و تكلف القیاس رقم (۷۳۰۸)-

۲) (عمدة القاري (جُ ٤ ١صُ ١١٤)-

٣) (قوله: عبدالله بن أوفى رضى الله عنه: الحديث أخرجه البخارى أيضًا (ج١ص٣٩٧) كتاب الجهاد باب الصبر عندالقتال رقم (٢٨٣٣) و(ص٤١٤) باب كان النبى صلى الله عليه وسلم إذا لم يقاتل أول النهار أجر القتال حتى نزول الشمس رقم (٢٩٤٤) و (ص٢٤٤) باب لاتتمنوالقاء العدو رقم (٢٠٢٤) و (ج٢ص٥٠١) كتاب الجهاد باب كتاب التميى باب كراهية تمنى لقاء العدو رقم (٧٢٣٧) ومسلم في صحيحه (ج٢ص٨٤) كتاب الجهاد باب كراهة تمنى لقاء العدو رقم (١٤٥٤) وأبوداؤد في سننه (ج١ص٣٥٤) كتاب الجهاد باب كراهية تنمنى لقاء العدو رقم (٢٤٣١)-

٤) (کشف الباری (ج١ص ۶۵۷)-

٥) (د دوى د حالاتو د پاره او محوري كتاب الأذان باب إقبال الإمام على الناس عند تسوية الصفوف-

٤) (شرح الكرماني (ج١٢ص١١) وكتاب الجمعة باب إذا نفرالناس عن صلاة الجمعة -

م-ابواسیاق: دا ابواسحاق ابراهیم بن محمد بن حارث الفزاری پختافته دی. (۱)

م-موسى برن عقبه: داموسى بن عقبه الاسدى المدنى برات عقبه السرى المدنى برات عقبه المدنى المدنى برات عقبه المدنى المدنى برات عقبه المدنى المدنى المدنى برات عقبه المدنى المدنى

٥- سالم ابوالنضر ابر ابي اميه: داسالم بن ابي اميه ابوالنضر المدنى القرشي مولى عمرو بن عبيدالله روائد دي (٣)

٢- عبدالله بر ابي اوفي النيخ دامشهور صحابي رسول النيم حضرت عبدالله بن ابي اوفي علقمه الاسلمي النيخ (۴)

قوله: إن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: واعلموا أن الجنة تحت ظلال

السيوف: حضرت عبدالله بن ابي اوفي النائز فرمائي چه رسول الله نائظ ارشاد فرمائيلې دې راي خلقو) پوهه شئي چه جنت د تورو د سوري لاندې دې.

د حدیث مطلب: دا ((ظلال)) دا د ظل جمع ده اود سوری په معنی کښې دې اود رسول الله علی ارشاد د کنایه او استعاره د قبیل نه دې او په دې کښې د جهاد طرف ته ترغیب دې. ځکه چه د انسان فطرت دې چه د راحت او آرام حاصلولود پاره د سورې په لیون کښې وی او د همیشه والی سورې د جنت سورې دې نو که د دې طلب وی نو جهاد کول یکار دی. (۵)

او علامه ابن الجوزى مولي فرمائي چه د حديث شريف مراد دا دې چه د جنت د داخليدو ذريعه او سبب جهاد دي. کله چه د جنګ ميدان کښې يو سړې د بل په مقابله کښې راځې نو په هغې کښې هريو د بل د تورې د سوري لاندې راځي که په دې حالت کښې قتل کړيشو نو هغه ته به جنت ملاويږي. (۶)

او علامه ابن المهلب رُقَالَةُ فرمائي چه دَ حديث مطلب دا دې چه دَ الله تعالى دَ کلمې دَ اعلامُ د پاره جنګيږي که هغه قاتل وي که مِقتول جنتي دې. (٧)

قوله: تابعه الأويسى عرب ابر أبي الزناد عرب موسى برب عقبة: اويسى د معاويه بن عمرو به دې روايت كښى متابعت كريدى. ((ابن أب الزناد عن موسى بن عقبة)) به طريق سره د اويسى نه مرادد حضرت امام بخارى روست عبد العزيزبن عبد الله العامرى روست دې (۸)

١) (د دوى د حالاتو د پاره او كورئ كتاب الجمعة باب القائلة بعدالجمة -

٢) (د دوى د حالاتو د پاره او كورئ كتاب الوضوء باب إسباغ الوضوء-

٣) (د دوى د حالاتو د باره او كورى كتاب الوضوء باب المسح على الخفين -

٤) (دَ دوى دَ حالاتو دَ باره او محورئ كتاب الوضوء باب من لم يرالوضوء إلا من المخرجين....-

۵) (جامع الأصول (ج٢ص٥٤٨)-

۶) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٥)-

۷) (شرح ابن بطال (ج۵ص ۳۱)-

٨) (د دوى د حالاتود باره او كورى كتاب العلم باب الحرص على الحديث -

او مراد دا دې چه د حدیث باب راوی معاویه بن عمرو بن مهلب متابعت په دې روایت کښي اویسي کړیدې

دَ مذکوره متابعت تخریج دا متابعت امام بخاری مید صحیح بخاری نه علاوه چرته بل خائ کنبی موصولاً ذکر کریدی او ابن ابی عاصم دا په (کتاب الجهاد) کنبی نقل کریدی (۱)

دغه شان عمر بن شبه هم دا متابعت د اویسی نه خپل (کتاب اخهارالهندینه) کښی روایت کړیدې په هغې کښې د دې امر اضافه هم ده چه حضور ناتیم په حدیث کښې خودلې شوې خبره د غزوه خندق په موقع ارشاد فرمائیلې وه (۲)

دُمسلمانانو ټول مقتولین جنتیان دی ابن المهلب ترایی فرمائی چه دَ حضرت عمر اللی قول دې (رالیس تتلانا فی الجنة و تتلاهم فی النار) نه دا خبره معلومه شوه چه دَ مسلمانانو ټول مقتولان جنتی دی لیکن دا په اجمالی توګه باندې دی او دا ناممکن ده چه په هغی کښی چرته د یو تعین او کړیشی او اووئیلی شی چه فلانکی جنتی دی. ځکه چه دَ حضور نوایخ فرمان دې (روالله اعلم ببن یجاهد فی سبیله) نو مونږ په اجمالی توګه باندې دا ونیلی شو چه دَ مسلمانانو ټول مقتولین جنتیان دی خود تفصیل او تعین او نیتونو حال دَ الله تعالی په حواله دی. (۳) د دې مسئلی نور تفصیل (رباب لایقول فلان شهید)) لاندې به انشاء الله راځی.

تنبیه: د حدیث باب په سند کښی دا الفاظ راغلی دی ((وکان کاتبه)) دی کښی ((کان)) ضمیر ابوالنضر طرف ته واپس کیږی او ((کاتبه)) ضمیر عمربن عبیدالله طرف ته راجع دی او مطلب دا دی چه سالم ابوالنضر، عمر بن عبیدالله کاتب وو. (۴) هم (کتاب الجهاد) کښی د دی خبری تصریح موجود ده. موسی بن عقبه فرمائی ((حداثن سالم ابوالنض مول عبربن عبدالله کنت کاتباله))(۵)

دلته حافظ ابن حجراوعلامه عینی شیخ (۶) دا لیکلی دی چه سالم عبدالله بن ابی اوفی گرای کاتب و دا وهم دی.

دحدیث و ترجمهٔ الباب سره مطابقت علامه ابن المنیر رئیس فرمائی چه امام بخاری رئیس دلته ترجمهٔ الباب و حدیث و ترکی برق ترجمه الباب و حدیث و الفاظونه نه ده اخذ کړی، و دی وجه یا خودا ده چه کله و توری پرق او رنړا وی هم و هغی په حساب سره به و هغی سوری هم وی. دغه شان به مطابقت حاصل شی. یا که دا اووئیلی شی چه امام بخاری رئیس دا ترجمه و یو بل حدیث نه اخذ کړیده لیکن

۱) (فتح الباري (ج۶ص ۳٤)و هدى الساري (ص۳۶)-

۲) (فتح الباري (جَ 2 ص 2 ۳) و تغلیق العلیق (ج 2 ص 2 ۳) -

۲) (شرح ابن بطال (ج۵ص۳۱)-

٤) (شرح الكرماني (ج١٢ ص١١٨) وشرح القسطلاني (ج٥ص٥٦)-

٥) (صحيح البخاري (ج١ص ٢٤٤) كتاب الجهاد باب لاتتمنوالقاء العدو رقم (٣٠٣٤)-

۶) (فتح الباري (ج۶ص۳۲) وعمدة القاري (ج ۶ اص ۱۱۹)-

کتاب الجهاد (جندال کشف البّاری د کشف کنیم نمی تنبید او کرد ار د ترجمه لاندې نمی نقل نه کړو (۱)

مر-باب: مَنْ طَلَبَ الْوَلَدَ لِلْجِهَادِ

و ترجمهٔ الباب مقصد امام بخاری دی ترجمهٔ الباب قائمولوسره دا خبره بنائی چه یو سری خپلی بنخی سره د کوروالی په وخت کښی د جهاد د پاره د اولاد خواهش او تمنا او کړی نو هغه ته به ثواب ملاویږی که اولاد پیدا شی او که نه، اود اولاد پیدا کیدونه پس که هغه جهاد او کړی او که نه، بهرحال د نیت ثواب به خامخاملاویږی، (۲)

[٢٦٦٦] وَقَالَ اللَّهُ عَنَهُ مَنَ ثَنِي جَعْفَرُ بُنُ رَبِيعَةً عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بَنِ هُرُمُزَقَالَ سَمِعْتُ أَبَاهُرُيُورُ وَمِي اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ قَالَ قَالَ سُلَمُانُ بُنُ دَاوُدَ عَلَيْهِمَا اللَّهُ عَنَهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ قَالَ سَلَمُانُ بُنُ دَاوُدَ عَلَيْهِمَا اللَّهُ عَلَى مِائَةِ امْرَأَةٍ أَوْتِنْعِ وَتِسْعِينَ كُلُّهُنَّ بَأْتِي بِفَارِسٍ يُجَاهِدُ فِي الشَّالَ اللَّهُ فَلَمْ يَقُلُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ فَلَمْ يَعُلُ مِنْ إِلَا اللَّهُ فَلَمْ يَعُلُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ فَلَمْ يَعُلُ مِنْ اللَّهُ فَلَمْ يَعُلُ اللَّهُ فَلَمْ يَعْلَى مِنْ اللَّهُ فَلَمْ يَعُلُ اللَّهُ فَلَمْ يَعُلُ اللَّهُ فَلَمْ يَعُلُ اللَّهُ فَلَمْ يَعُلُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ فَلَمْ يَعُلُ اللَّهُ فَلَامُ يَعْلَى اللَّهُ فَلَمْ يَعْلَى مِنْ إِنْ شَاءَ اللَّهُ فَلَمْ يَعُلُ اللَّهُ فَلَمْ يَعُلُ اللَّهُ فَلَامُ يَعْلَى اللَّهُ فَلَامُ يَعْلَى اللَّهُ فَلَمْ يَعْلُ اللَّهُ اللَّهُ فَلَامُ يَعْلَى اللَّهُ فَلَامُ يَعْلَى اللَّهُ الْعَلَى اللَّهُ الْمُنْ اللَّهُ الْمُنْ اللَّهُ اللَهُ اللَّهُ الْمُنْ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُنْ اللَّهُ الْمُلْمُ اللَّهُ الْمُنْ اللَّهُ الْمُنْ اللَّهُ الْمُلْكُولُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُلْكُولُولُ

تراجم رجال

المحن دا امام ابوالحارث لیث بن سعد بن عبدالرحمن فهمی ﷺ دی. د ده حالات ((۱۲۸ الوحی)) د دریم حدیث په ذیل کښی راغلی دی. (۴)

المتوارى (ص١٥٣) قال الحافظ ابن حجر مُناتَة كأنه أشار بالترجمة إلى حديث عمار بن ياسر، فأخرج الطبرانى بإسناد صحيح عن عمار بن ياسر أنه قال يوم صفين: الجنة تحت الأبارقة (فتح البارى ج٤ص٣٦) وجمع الزوائد للهيثمى (ج٧ص ٢٤١)-

٢) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٥) -

٣) (قوله: أباهريرة رضى الله عنه: الحديث أخرجه البخارى أيضًا (ج١ص٧٨) كتاب أحاديث الأنبياء باب ووهبنا لداؤد سليمن نعم العبد إنه أواب € رقم (٣٤٢٤) و (ج٢ص٨٧٨) كتاب النكاح باب قول الرجل لأطوفن الليلة على نسائى رقم (٢٤٢٥) و (ج٢ص٤٩٩) كتاب الإيمان والنذور باب كيف كان يمين النبى صلى الله عليه وسلم؟ رقم (٤٩٣٩) و (ج٢ص٤٩٩) كتاب كفارات الإيمان باب الاستثناء فى الإيمان رقم (٤٧٢٠) و (ج٢ص٣٩) كتاب التوحيد باب فى المشيئة والإرادة رقم (٩٤٤٩) ومسلم (ج٢ص٩٤) كتاب الإيمان باب الاستثناء فى اليمين وغيرها رقم (٤٢٨٥) والترمذى (ج١ص٥٨١) أبواب النذور والإيمان باب ماجاء فى الاستثناء فى اليمين رقم (١٨٥٣) والنسائى (ج٢ص٨٤١) كتاب الإيمان والنذور باب إذا حلف ماجاء فى الاستثناء فى اليمين رقم (١٨٥٣) والنسائى (ج٢ص٨٤١) كتاب الإيمان والنذور باب إذا حلف فقال له رجل: إن شاءالله هل له استثناء؟ رقم (٢٨٨٣) والاستثناء رقم (٢٨٨٧) –

م-جعفربن ربيعه: دا امام جعفربن ربيعة بن شرجيل بيني دي الم

-عبدالرحم<u>ن بن هرمز:</u> دا ابوداود عبدالرحمن بن هرمز مدنی قرشی مینیم دی د دوی مختصرحالات ((كتاب الإيهان باب حب الرسول من الإيبان) لاندى تيرشوى ٢٠)

م- ابوهريرة اللهؤز: دا مشهورصحابي رسول نهيم حضرت ابوهرير، الميمؤو دي د دوي حالات (کتاب الإیان باب أمور الإیبان) لاندی تیرشوی دی. (۳)

توله: عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: قال سلمان بن عليهما السلام لأطوفن الليلة على مأنة امرأة أو تمع وتسعين كذبن يأتي بفارس يجاهدفي سبيل الله:حضرت ابوهريره فيترو د حضور ترفيخ نه روايت كوي جه هغوى فرمائيلي دى چه يو ځل حضرت سليمان تلاين اوفرمانيل د انه قسما زه به په يوه شپه کښې سلو يا يوکم سل ښځو له ځم. په هغوی کښې په د هرې يوې نه يو يو په اس سورلي كُونْكِي بِيداكيږي چه دُ الله تعالى په لاركښي به جهأد كوي.

((لأطونن)) كښې لام جواب قسم دې او قسم محذوف دې او تقدير عبارت داسې دې (رواغه لاطوفن) د دې تائيد د دې قول نه کيږي کوم چه د (کتاب النکام) په روايت کښې راغلې دې. ((لميحنث))(۴) ځکه چه سړې هم په قسم حانث کيږي او د قسم د پاره ضروري دي چه د د دې مقسم به هم وي. (٥)

او ((اطوفق)) مشتق د طواف نه دې د څه معنی چه ((الدوران حول الشئ)) ده او دلته د جماع نه

قوله: مائة امرأة أوتسع وتسعين: و حضرت سليمان عليه السلام و بيبيانو به تعداد كنس و روايا تواختلاف و حضرت سليمان عين دَ بيبيانو دَ شمير په رواياتوكښې سخت اختلافات دي. دلته دَ باب په روايت كښې سل يا یوکم سل شك سره راغلی دی.په یوروایت کښې ((ستين) ، ۷)اوپه یو روایت کښې ((سهوين یو ۸)

١) (د ده د حالاتو د بار ، او كورئ كتاب التيمم باب التيمم في الحضر إذا لم يجدالماء-

۲) (کشف الباری (ج۲ص۱۱)-

٣) (كشف البارى (ج ١ ص ٤٥٩)-

إنظر الصحيح للبخارى كتاب النكاح باب قول الرجل: لأطوفن الليلة على نسائى رقم (٥٢٤٢)-

۵) (فتع الباري (ج۶ص۶۶)-

۶) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٥)-

٧) (صحيح البخاري (ج٢ص١٦) كتاب التوحيد باب في المشيئة والإرادة رقم (٧٤٤٩)-

٨) (انظر صحيح البخاري (ج٢ص٤٨٧) كتاب أحاديث الأنبياء باب (ووهبنا لداؤد سليمن نعم العبد إنه أواب) رقم (۳٤۲٤

او په يو كښې «تسعين» او په يوبل روايت كښې بغيرد شك نه «ماثة» دى. او په يو عبتي روستون کښې د جمع يو صورت دا دې که دا اوونيلې شي چه په _{ډې} اوس په دې ټولو روايتونوکښې د جمع يو صورت دا دې که دا ښخوکښې شپيته (۲۰) خو آزادې وې او نورې وينځې او بالعکس او سبعين په مبالغه باندي محمول کړيشي، نو پاتې شوې مائة او تسعون نو چونکه هغه د سلونه کمې او لس کم سل نه زياتي وي چه د کسور اعتبار ئي نه دي کړې نو هغه خو تسعون اووئيل او چا چه اعتيار اوكرواو كسور ني بوره كړل او سل ئي اوونيل ((هذاماقالهالحافظ كوايد في ١٠٠ الفتح،،)) (٣) و پور در کابرر چې د د کافي نه خالي نه دې او په دې کښې په دې اعتبار هم لريوالي دي چه حدیث یو دې اود روایت د ټولو طرقو راوی هم یو یعنی حضرت ابوهریره کرانو دې ځکړ چه د روایاتو په مینځ کښې د جمع او تطبیق صورت په هغه وخت کښې اختیارولي شي چه کله دا معلومه وي چه دا ټول اعداد نبي الله وي کله دا معلومه وي چه دا ټول اعداد نبي الله وي

او داسي هيخ خبره نشته. نو راجح جواب دا معلومیږي چه د روایاتو په مینځ چه د اعدادو کوم اختلاف دې د رواتو د خپل تصرف نتیجه ده، کیدیشی نبی تایش یو داسی عدد ذکر کړې ووچه په کثرت باندې دال وي نو بعضو رُواتو دَ دې تعبير ستون سره اوکړوه او نورو سبعون يا تسعون سره. اود دیرو رُواهٔ حدیث دا عادت دی چه هغوی د اصل حدیث اود هغی د مغز یادولو اهتمام خو کوی لیکن د هغی حواشی او تفصیلاتو کښی نه بُختیږی د کوم چه په اصل حدیث کښی خه اثر نه وي نو دلته هم دغه شوى دى چه رواة خو اصل قصه ياده كړيده ليكن د تعداد نسود په معامله کښې هغوي هغه حيثيت ورنه کړو کوم ئي چه اصل قصي ته ورکړې. هم دې ځاي نه دلته اختلافات پیدا شو او دا اختلاف د اصل حدیث د صحت د پاره نقصانی نه دې ځکه چه د محدثینو په نزد دا قاعده مسلمه ده چه د حدیث په یوه حصه کښې د راوی وهم د اصل حدیث ضعف ته مستلزم نه دی او حافظ ابن حجر رضافته هم دا قاعده په خپله فتح الباري کښې په مختلفو موقعو استعمال کړيده .(۴)

يو بل صورت دا دې چه داسې اووئيلي شي چه د قليل په ذكر سره د كثير نفي نه لازميږي او دا مفهوم د عدد د قبيل نه دې چه د جمهورو په نزد حجت نه دي. (۵)

قوله: فقال له صاحبه: قل: إن شاء الله: نوهغه ته د َ هغه صاحب اووئيل إن شاء الله اووايد.

١) (انظر صحيح البخارى (ج١ص٩٨٢) كتاب الإيمان والنذور باب كيف كان يمين النبى صلى الله علبه وسلم؟ رقم (۶۶۳۹)-

٢) (انظر الصحيح للبخاري كتاب النكاح باب قول الرجل: الأطوفن الليلة على نسائى رقم (٥٢٤٢)-

۳) (فنع البارى (ج۶ص٤۶)-

٤) (فتح الباري (ج٩ص ٢٨٤) وتكملة فتح الملهم (ج٢ص٢٠)-

۵) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ١١٥) -

د صاهب نه خوک مراددې؟ علامه عینی حافظ آبن حجر او علامه نووی این فرمانی چه د صاحب نه مراد فرشته ده لکه چه په هغه باندې د رکتاب النکام، روایت هم دلالت کوی. ((نقال له الملك)) (۱) او هم دا قول دې حضراتو صحیح کرځولې دې. (۲)

او د بعضو نورو حضراتو وینا دا ده چه دلته د صاحب نه مراد آصف بن برخیادی چا سره چه د کتاب علم وو، لیکن حافظ صاحب دا قول مردود کرخولی دی ۳۱)

علامه قرطبی فرمائی چه د صاحب نه مراد د حضرت سلیمان تلایم وزیر دی، که انسان وی که پیری او که مراد ترینه فرښته وی نو دا هم هغه فرښته ده چه هغه له به نی وحی راوړله او چا چه د صاحب نه مراد خاطر قلب ګرځولی دی د هغوی قول د حقیقت نه لری دی. (۴) بهرحال قول همدغه دې چه د صاحب نه مراد دلته ملك (فرښته) ده کهامرالان.

توله: فلم يقل: إن شأء الله: نو هغه انشاء الله اونه وئيل.

مطلب دا چه حضرت سلیمان تلیاته په ژبه سره انشاء الله اونه وئیل دا مطلب بالکل نه دې چه هغوی تلیاته د زړه نه هم د الله تعالی طرف ته د تفویض نه غافل شوې وو ځکه چه دا د نبوت د منصب نه خلاف ده. ممکن دی چه څه بل څه امر پیښ شوې وی. ۵)

دغه شان معامله زمون نبی تلای آنه هم پیښه شوی وه چه کله د مکی مشرکانو د حضور تلایم نه د روح، خضر او دوالقرنین باره کښی سوال اوکرونو هغوی ترایم په جواب کښی اوفرمائیل چه زه به صبا تاسو ته جواب درکوم ځکه چه د هغوی الله تعالی سره په تعلق دا یقین وو چه څنګه هغه فرمائی همدغه شان به وی لیکن د هغوی د ژبی مبارکې نه انشاء الله دهول شو، دا مطلب نه دې چه د زړه نه هم غافل او داهل شوې وو (۶)

قوله: فلم يحمل منهر إلا امرأة واحدة جاءت بشق رجل : نو د هغه بخونه صرف يوه بنخه حامله شوه او هغى يو نامكمل بچى راوړلو. مطلب دا چه د سليمان مَليَّكِم انشاء الله نه وئيلو په وجه صرف د يوې بنځى حمل شو او هغه حمل هم ناقص وو

قوله: والذي نفس هجمه بيه به ألوقال: إن شاء الله لجاهه وافي سبيل الله فرسانا أجمعون: او مصمد خان دې كه جرى هغه (سليمان تايام) انشاء الله وئيلي وو نو هغه ټولو به د الله تعالى په لاركښي جهاد كولو. مطلب دا چه كه سليمان تايام د ژبې مباركې نه ان شاء الله وئيلې وو نو هغه مراد به پوره

١) (صحيح البخاري كتاب النكاح باب قول الرجل: لأطوفن الليلة على نسائى رقم (٥٢٤٢)-٠

٢) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٥) وفتح البارى (ج عَص ٤٤١) وشرح مسلم للنووى (ج ٢ص ٤٩)-

۳) (فتح البارى (جَعَص ٤٤١)-

ا) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٥) -

۵) (فتع الباري (ج ۶ص ٤۶۱)-

ع) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ١٥)-

كتىاب الجهاد (جلداول) كشف الياري

شوې وو او هغه ټولو ښځو به يو يو فارس راوړلې وې چه د الله تعالى په لارکښې به نی جهاد کولو.(١)

د دې مطلب تائيد د صحيح بخاري (کتاب النکام) د يو روايت نه هم کيږي کوم کښې چه ((وکان ارجی لحاجته)) الفاظ راغلی دی(۲)

د نبی کریم تافیم د دی ارشاد نه هم دا معلومه شوه چه دا ضروری نه ده چه د هرانسان خواهش دې پوره شي سره د دې چه هغه انشاء الله ونيلې وي بلکه د استثناء حاصل خو دا دی چه هغه څنگه هم خواهش کړی دی د هغی د واقع کیدلو توقع او امید ساتی او په ترك استثناء کښی د وقوع کیدلو امید نه وی. (۳) فائده علامه مهلب سند فرمانی چه په حدیث باب کښی د جهاد په نیت د اولاد غوښتلو

ترغیب دی کله داسی هم کیږی چه ماشوم د امید په خلاف مجاهد نه وی او کافر وی لیکن ده ته په خپل نيت او عمل ثواب ملاويږي. (۴)

دَ بچى دَ ناقص كيدو وجه: علامه رشيداحمد كنكوهي رُيَّاتُهُ دَحديث دَالفاظو (وإلا امرأة واحدة جاءت بشق. ...) تشریح کولو سره فرمائی چه کیدیشی د دې ښځې د ناقص ماشوم پیدا كيدو وجه د حضرت سليمان مَلِينهِ به اراده باندې وي چه هغوي مَلِينه اراده خو كړې وه د ان شاء الله وئيلو ليكن دا چه هغه نه عزم پوره كيدل ممكن نه شو نو دا عزم ناقص شو نو دغه شان د هغه بچی هم ناقص او نامکمل شو پوره نشو .(۵)

مودودی صاحب... او حدیث باب: مودودی صاحب خیل تفسیر (تفهیم القرآن) کنبی (دلقلا فتنا سليمان والقينا على كرسيه جسدًا ثم أناب....إنك أنت الوهاب) تفسيركولو سره د حضرت ابوهريره كالشخ حديث باب د عقل نه خلاف الارخولي او د دي قول د رسول ترفيل نه د تسليم كولونه ئى انكار كړيدې، هغه ليكي چه :

دريم ټولې وائي چه حضرت سليمان عَليُره ورځ قسم اوخوړلو چه نن شپه به زه خپلو اويا بيبيانوله ورځم او د هرې يوې نه به يو د الله تعالى د لارې مُجاهد پيداكيږي خو دې خبرې سره هغه انشاء الله اونه وئيل، د دې نتيجه دا شوه چه صرف يوه بي بي اميدواره شوه او د هغی نه هم یو نیمگری ماشوم پیدا شو، کوم چه دائی راوړلو او د حضرت سلیمان قلیلا په كرسى ئى كيخودو. دُا حديث حضرت آبوهريره كالنز د حضور تَلْظُ نه روايت كړيدې او دا بخارى. مسلم او نورو ډير محدثينو په مختلفو طريقو سره نقل کړيدې پخپله په بخاری . شریف کښې دا په مختلفومقاماتوکښې چه په کومو طریقوسره نقل کړیشوې دې په هغې

۱) (فتح الباري (ج۶ص ۶۶)-

٢) (صعبح البخاري تاب النكاح باب قول الرجل: لأطوفن الليلة على نسائى رقم (٥٢٤٢)-

۳) (فنح البارى (ج۶ص۶۶)-

٤) (شرح ابن بطال (ج۵ص۳۲)-

۵) (لامع الدراري (ج۲ص۲۲)-

کښې چا کښې د بيبيانو تعداد (۲۰) دې او چا کښې (۷۰) چا کښې (۹۰) چا کښې (۹۰) او په چاکښې (۱۰۱) ترکومې چه د سند تعلق دې په دې کښې د اکمتررواياتو سند قوی دې او په اعتبار د روایت د دې په صحت کښې کلام نشکی کیدلی لیکن د حدیث معنّمون صريح د عقل خلاف دي او په چغو چغو وائني چه دا خبره به رسول الله ناتهم هيڅ کله هم داسی نه وی فرمائیلی څنګه چه نقل شویده بلکه هغوی نالل به د غالبا د پهودیانو د فضول وينا ذکر کولو سره په يوه موقع دا د مثال په توګه بيان کړې دی او اوريدونکي ته دا غلط فهمی شویده چه دا خبره حضور نالل پخپله د واقع په توګه بیانوی داسې روایات صرف دَ سند دَ صحت په زور دَ خلقو د حلق نه تيرولو کوشش کول دين ټوقي مسخري جوړول دی. هر سړې پخپله حساب لګولې شی چه د ژمی په اوږده شپه کښې هم د ماسخوتن او سحر په مینځ کښې لس یولس ګینټو نه زیات وخت نه وی،که د بیبیانود کم نه کم تعداد (۲۰) اومنلی شی نود دې معنی دا شوه چه حضرت سلیمان میمیمی په هغه شپه بغیر د سا اخستلوفی الاینته دشپروبیبانوپه حساب سره مسلسل لس یایولس کینتی كِوروالي كولو. آيا دا عَملاً ممكن دي؟ او آيا دا توقع كولي شي چه حضور عَلَيْهُم به دا خبره دَ واقع په توګه بيان کړې وي. (۱)

په دې حديث باندې د هغه کلام او په احاديث صحيحه باندې غير اصولي تنقيد کولو چه ز کومه دروازه هغه پرانستې ده هغې ته په کتلو په الله تعالى قسم چه د زمونږ غونې زيږ شو او بدن مو اورپیدو. په دې خبره کښې هیڅ شك نشته چه په احادیثوباندې په ماضي کښې سلیمانه علمی نقدو بحث کیږی او بیا به هم کیږی لیکن د دې بحث او تمحیص څه اصول او قواعد هم دى د څه تفصيل محدثينو حضراتود اصول په كتابونوكښې كړيدې.

که هر سری ته د دی خبری اجازت ورکړیشي چه احادیث صحیحه د سند ، صحت او رجال ثقاهت باوصف هغه رد کړی، صرف د دې د پاره چه د هغې معنې د هغه د عقل موافق نه دى نو دَ دين بنيادونه به په ړقيدو شي او هر کس او ناکس دَ وړوکي او لوئې د پاره به دَ

تحریف دروازه یك دم كولاوشي. لاحول ولاتوا الا بالله العظیم

او دا مودوی صاحب چه د شپی د وختونو کوم حساب ذکر کړیدی او دا چه په دومره لږ وخت کښی شپیتو ښځو سره جماع کول ممکن نه دی نو دا د لاندینو وجوهاتو په بنا ، باندې

مدفوع (مسترد) دی:

رومبنى وجه روستودا خبره راغلى ده چه د حضرت سليمان عيمي د بيبيانو يومقرر شمير د حدیث نه ثابت نه دې، ښکاره همدغېه ده چه نبي اکرم ناتی یوداسې عدد ذکر کړې وو چه په كثرت باندى دال وول بعض رُواتو دُ دى تعبير شهيتوسره اوكرو، چا لس كم سلو سره يا دُ دى نه زياتو سره اوكرو، ځكه چه رواه خو د اصل حديث يادولو اهتمام كوى او د حديث د . دې اجزاؤ او تفاصيلوسره زيات كار نه لرى او د كوم چه په اصل حديث كښې څه اثر نه وى،

۱) (تفهيم القرآن (ج٣ص٣٣) -

نو مونږ ته دا حق څنګه حاصل دې چه يو عدد مقرر کړو بيا د دې په حساب د شپې اوقان تو مونږ ته دا حق

مقرر او متعین کرو؟

دونمه وجه که د شپیتو دا شمیر فرض کره موند صحیح او گنیو نو شپرو بنخو سره یو گینه کنبی جماع کول څرنګ محال دی؟ او که شپه په دولس گینتو باندې هم مشتمل شی نو صحیح حساب په یوه ګینته کښی پنځه ښځی شوې نو دا څنګه عقلاً محال شو چه د دې په وجه صحیح حدیث رد کړیشی؟ که د انبیاء علیهم السلام قصص او د هغوی په حکایاتو کښی مونږ داقسم قیاسونه شروع کړل نونه به د یونبی معجزه ثابته شی نه د هغوی نه علاو، د چا کرامت. انبیاء علیهم السلام خو څه بلکه بعض اولیاو نه څومره داسی امور ثابت دی چه هغوی په ډیر لږ وخت کښی ډیر کارونه کړی دی او نور خلق د هغی نه په دو چند وخن کښی هم هغه کارونه نشی پوره کولی. بعض فلاسفه د کې اسرخیل چه حضرت شپخ الاسلام مولانا محمد قاسم نانوتوی پیمید دې ثابت کړی چه د وخت د پاره طول او عرض دواږه وی. د کومو څیزونو چه مونږ په عامو احوالوکښی مشاهده کوو هغه د وخت و طول دې او د ډیرو کارونو په لږ وخت کښی پوره کولو چه کوم ذکر کولی شی هغه د وختونو په عرض کښی واقع کیږی.

د بعث خلاصه حاصل دا دی چه صرف د عقل بعضی امور واقع کیدل مستبعد گنرل د صحیح احادیثو د رد د پاره کافی نه دی معجزات او کرامات داسی امور دی کوم چه عقل

مستبعد کنړی ليکن دا بې شك او شبهې ثابت دی.

او ترکومې چه د بعضو اصولیینو د دنې خبرې تعلق دي چه د حدیث د صحت د پاره دا ضروری دی چه هغه دې د عقل خلاف نه وی نو د دې نه د هغوی مطلب دا وی چه د عقل نه خلاف په دې معنی وی چه د هغی نه محال عقلی لازم راځی، دا مطلب نه دې چه هغه صرف عقل مستبعد او کنړی. د دې دلاتلونه علاوه کوم چه د معجزاتو په ثبوت دلالت کوی.علامه سیوطی پیښته (تدریب الرادی) کښې فرمائی:

(ران من جملة دلائل الوضع أن يكون مخالفا للعقل بحيث لايقبل التأويل، ويلتحق به مايدفعه الحس والمشاهدة، أويكون منافيا لدلالة الكتاب القطعية أو السنة المتواترة أو الإجماع القطعي، أما لمعارضة مع إمكان الجمع فلا)، (١)

یعنی د حدیث د وضع په ادله کښی دا هم دی چه هغه به د عقل مخالف وی، په دی حیثیت سره چه بالکل تاویل قبول نه کړی، دې سره هغه هم شامل دې کوم ته چه حس یا مشاهده رد کړی. یا دا چه هغه د کتاب الله د قطعی دلالت یا سنت متواتره یا اجماع قطعی منافی کیږی. هغه تعارض کوم کښې چه د جمع بین الروایات امکان وی،نو هغه د وضع حدیث د دلیلونو نه نه دې.

علامه سخاوي بيعة (فتح المغيث) كنبي ليكي:

۱) (انظر تدریب الراوی (ج ۱ ص۲۷۶)-

روكان يكون مخالفا للعقل ضرورة أو استدلالاً، ولا يقبل تأويلا بحال، نحو: الإخبار عن الجمع بين الفندين، وعن نفى الصانع، وقدم الأجسام، وما أشهه ذلك لأنه لا يجوز أن يردالش عبما ينانى مقتدى العقل) (١)

لکه څنګه چه ضرورهٔ او استدلالاً د عقل مخالف وی او په هیڅ قسم تاویل نه قبلوی لکه جمع بین الضدین او نفی صانع او قدم اجسام او د هغې مشابه د یوڅیز خبر چه ورکړیشوی وی ځکه چه داخبره هډو صحیح نه ده چه حکم شرعی په یوداسې څیز کښې راشي چه د عقل د مقتضي منافي وي. (۲)

د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت د حدیث شریف ترجمه الباب سره مناسبت بالکل واضح او ښکاره دی چه په دې کښې د حضرت سلیمان تایا یو د جهاد د پاره د بچې غوښتلو دکر دې (۳)

٣٠- بَأَبِ: الشِّجَاعَةِ فِي الْحَرْبِ وَالْجُبُنِ

دَترجمة الباب مقصد امام بخاری رُوَالَة به دی باب کښی په جنګ کښی بهادری اختيارولو تعريف او په بزدلئی کښی خرابی بيانول غواړی. (۴)

[٢٦٢٥] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بُنُ عَبْدِ الْمَلِكِ بُنِ وَاقِدٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنْسِ (٥) رَضِى اللَّهُ عَنْهُ وَسَلَّمَ أَخْسَ النَّاسِ وَأَشْجَعَ النَّاسِ وَأَشْجَعَ النَّاسِ وَأَشْجَعَ النَّاسِ وَأَخْبَرَ النَّاسِ وَأَشْجَعَ النَّاسِ وَأَخْبَرَ النَّاسِ وَأَشْجَعَ النَّاسِ وَأَخْرَا إِنْ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَبَقَهُ مُ عَلَى فَرَسِ وَقَالَ وَجَدُنَا أُو بَعُمُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَبَقَهُ مُ عَلَى فَرَسِ وَقَالَ وَجَدُنَا أُو بَعُمُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَبَقَهُ مُ عَلَى فَرَسِ وَقَالَ وَجَدُنَا أُو بَعُمُ الْهُ وَلَا لَهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَبَقَهُ مُ عَلَى فَرَسِ وَقَالَ وَجَدُنَا أُو الْمَدِينَةِ فَكَانَ النَّيْنُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَبَقَهُ مُ عَلَى فَرَسِ

تراجم رجال

ا- احمابر عبد الملك بر واقد: دا مشهور محدث احمدبن عبد الملك بن واقد الاسدى بيادي دى (ع)

r- حماً دبر نین: دا ابواسماعیل حماد بن زیدبن درهم بصری مربید دی دوی حالات (رکتاب الإیمان باب (وان طائفتان من البؤمنین) لاندې ذکر شوی دی (۷)

-- تأبت بناني أني : دا مشهور تابعي بزرك ابومحمد ثابت بن اسلم بناني مُراك دي د دوي

١) (فتح المغيث شرح ألفية الحديث (ج١ص ٢٩٤) والناقد الحديث في علوم الحديث (ص٤٨)-

٢) (تكملة فتح الملهم (ج٢ص٢١٢-٢١٣) وأيضًا انظر الاستاذ المودودي من حياته وأفكار وللبنوري-

۳) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٥)-

 ^{4) (}عمدة القارى (ج ٤ ١ص١١) -

٥) (قوله: عن أنس رضى الله عنه: الحديث مرتخريجه في كتاب الهبة باب من استعاز من الناس الفرس-

۶) (د دوى د حالاتود پاره اوګورئ كتاب الصلاة باب الخدم للمسجد-

۷) (کشف الباری (ج۲ص۲۱۹)-

حالات ((كتاب العلم باب القرمة والعرض على المحدث)) لاندى تيرشوى دى. (١)

م-انس المنوز د حضرت انس بن مالك المنوز حالات (ركتاب الإيمان باب من الإيمان أن يعبر كويه ما يعبد المان المنافعة على المناف

د بونو نه ریاب بهادر او پونونه ریاب ساخی دو. د نبی علیه السلام دری صفتونه: په دې حدیث کښې د نبی نظیر درې صفتونه ذکر کړیشو.

(احسن (اشجع (اجود (٣)

دحکماء اسلام وینا ده چه د انسان درې قُلی دی، عقلیه، غضبیه او شهویه د قوت غضبیه د کمال ننداره شجاعت او بهادری ده. د قوت شهویه د کمال مظهر جود او سخاوت دې او د قوت عقلیه کمال د قوت عقلیه کمال او مظهر حکمت دی. او په لفظ احسن کښی هم د دې قوت عقلیه کمال ته اشاره ده ځکه چه حسن صورت تابع دی د مزاج د اعتدال او د مزاج اعتدال د نفر صفائی او پاکیزګئی ته او جودت طبع نه ماخوذ دې او دغه دریواړه صفات د امهان الاخلاق نه دی. (۴)

قوله: ولقى فزع أهل المه ينة فكان النبى صلى الله عليه وسلم سبقهم على فرس او د مدينى خلق اوويريدل نو نبى كريم خلق اله عليه وسلم سبقهم على الرسيدو ((فزع)) بكسمالزام ((الفزع)) نه مشتق دى او د دى معنى د ويريدلو ده (۵) قوله: وقال: وجه نالا بحرا: اوحضور خلال ارشاد اوفرمائيلو مونر دا اس د سمندر به شان اوموندلو. د ركتاب الههة به روايت كنبى راغلى چه پورته ذكر شوى اس د حضرت ابوطلعه المناز وو كوم چه نبى ماياي د هغه نه دعاريت به توگه اخستى وو او هم به دى روايت كنبى د هغه اس نوم (مندوب) وو (۶)

۱) (کشف الباری (ج۳ص۱۸۳)-

٢) (كشف البارى (ج٢ص ٤)-

٣) (عمدة القارى (ج آ ٤ ١ص١٧)-

٤) (شرح الكرماني (١٢ص١٩)-

٥) (مخبار الصحاح (ص٥٠٢) مادة فزع-

ح) (محیح بخاری (ج ۱ ص ۳۵۸) کتاب الهبة باب من استعار من الناس الفرس رقم (۲۶۲۷)-

د سمندر اوبه يو شان په تيزئي سره روانې وي دغه شان دا اس هم په يو رفتار منډې وهلې بالکل ستړې نشو.(١)

علامه مهلب نور فرمائی چه د ټولونه اول اس ته د سمندر تشبیه رسول الله تالیم ورکړه. (۲) د مدیث د ترجمه الباب سره مناسبت د حضرت انس د مدیث درجمه الباب سره مناسبت د حضرت انس دی ارشاد کښی دی ((داشج الناس))(۳)

[٢٦٦٦] حَذَّنَنَا أَبُوالْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنُ الزُّهُرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي عُمَرُبُنُ مُحَمَّدِ بُنِ جُبَيْرِ بُنِ مُطْعِمِ أَنَّ هُبَيْمَا هُوَيَسِيرُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى مُطْعِمِ أَنَّ هُبَيْمًا هُوَيَسِيرُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَعَلِقَهُ النَّاسُ يَسْأَلُونَهُ حَتَّى اضْطَرُّوهُ إلى سَمُرَةٍ لللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ أَعْطُونِي رِدَابِي لَوْكَانَ لِي عَدَدُ هُنِوالْعِضَاةِ نَعَبًا لَقَسَمُتُهُ بَيْنَكُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُونِي بَخِيلًا وَلَاكَذُوبًا وَلَا جَبَانًا [٢٩٤٩]

تراجم رجال

۱- ابوالیمان: داابوالیمان حکم بن نافع بصری ایکا دی. دَ ده حالات ((بدء الوحی)) الحدیث السادس لاندی تیر شوی. (۵)

r-شعیب: دا ابوبشر شعیب بن ابی حمزه القرشی الاموی مُرَاثِدُ دی د ده حالات ((بدوالوس)) د شیرم حدیث لاندی راغلی دی (۶)

<u>-- زهري:</u> دا امام محمدبن مسلم ابن شهاب زهری رُواند دو دو مختصر حالات ((بدء الوحی)) دریم حدیث په ذیل کښې راغلی دی. (۷)

٣- عمر بر هجمه بر جبیر: دا درسول الله تائیم مشهور صحابی حضرت جبیر بن مطعم التی عمر بن مطعم التی عمر بن محمد بن جبیر بن مطعم بن عدی القرشی النوفلی المدنی پیشته دی (٨) دوی د خپل والدصاحب محمد بن جبیر نه روایت کوی. د هغوی نه د حدیث روایت کونکی

۱) (شرح ابن بطال (ج۵ص ۳٤)-

۲) (شرح ابن بطال (ج۵ص ۳٤)-

٣) (عددة القارى (ج ٤ ١ص١٧)-

أ (قوله: جبير بن مطعم: الحديث أخرجه البخارى (ج١ص٤٤٤) كتاب فرض الخمس باب ماكان النبى صلى الله عليه وسلم يعطى المؤلفة قلوبهم وغيرهم من الخمس ونحوه رقم (٣١٤٨) والحديث من إفراده-

۵) (کشف الباری (ج۱ص۲۹)-

ع) (کشف الباری (ج ۱ ص ٤٨٠)-

۷) (کشف الباری (ج ۱ ص۳۲۶)-

٨) (تهذیب الکمال (ج۲۱ص۹۵) وقال الذهبی فی المیزان (ج۳ص ۲۲۰) ماروی فی علمی سوی الزهری-

صرف امام زهری پراند دی. (۱)

امام نسائی فرمائی ((کقة)) (۲)

ابن حجر مِنهم فرمانی ((ثقة)) (٣)

ابن حبان برید د هغه ذکر په رکتاب الثقات، کښې کړیدې (۴) دې په امهات سته کښې صرف د صحیح بخاری راوی دې او امام بخاری برید هم د دون صرف يو حديث (مذكورفي الباب) اخستى دى (۵)

د- محمل جبير دا ابوشعيد محمدبن جبير بن مطعم المدني برايد دي (۶)

<u>-- جبارير. مطعم التنوي:</u> دا د رسول الله من مشهور صحابي حضرت جبير بن مطعم بن عدى الثين دي. (٧)•

قوله: أنه بينما هو يسير مع رسول الله صلى الله عليه وسلم ومعه الناس مقفله من

حنان: حضرت جبیر بن مطعم فرمائی چه کله هغه رسول الله تائیل سره روان وو او په دې وخت کښې هغوی سره نور خلق هم وو د غزوه حنین د واپسنی په وخت کښې دلته په حدیث باب کښې د رسول الله تائیل یوه واقعه بیان کړې شوې ده چه د غزوه حنین نه په داد کې د کښې د رسول الله تائیل یوه واقعه بیان کړې شوې ده چه د غزوه حنین نه په داد کې کې د د کې د کې د کې د کې د کې د د کې د د کې د کې د کې د کې د کې د د کې د د کې د د کې د ک واپسئی کښې پیښه شوې وه. داسې اوشوه چه کله حضور انتیا په غزوه حنین کښې د فتح او نصرت نه پس د اهل حنین قیدیان د هغوی د کورونو والا ته واپس کولو نه فارغ شونو حضور تُلَیُمُ سور شو او روان شو، نور خلق هم هغوی پسی شاشا ته روان شو او د هغوی ترخیم نه نی د غنمیت د مال غوښتنه شروع کړد.

په دې موقع باندې هغوی نونځ ارشاد اوفرمائيلو (راعطون ردان....) (۸)

((مقفله)) مصدرمیمی دې یا ظرف زمان اود ((نقول)) معنی ((رجوع)) ده. (۹) او هم د بخاری شریف په یو روایت کښې ((مقبلامن حنین)) (۱۰) الفاظ راغلی دی یعنی دغه وخت کښې حضور نظیم د حنین نه واپس کیدلو، په دې روایت کښې دا حال واقع شوې دې. (۱۱)

١) (حواله بالا-

٢) (حواله بالا-

٣) (تقريب التهذيب (١٤) رقم (٤٩٤٣)_

٤) (الثقات لابن حبان (ج٧ص٩٤٥)۔

٥) (تهذيب الكمال (ج ٢٦ص ٩٩)-

ع) (دَ دوى دَ حالاتودَبّاره اوګورئ کتاب الأذان باب الجهر في المغرب-

٧) (دَ دُوْى دَ حَالَانُوْدَبَارُهُ أُوْكُورَى كَتَابُ الغَسُلُ بَابُ مِنْ أَفَاضَ عَلَى رأْسَهُ ثَلَاثًا -۸) (شیرة ابن هشام (ج۳-٤ص٤٩) ـ

٩) (شرح الطّيبي (ج١٦ س ٣١) وعدة القاري (ج١١ ص١١٨) وجامع الأصول (ج٥ص١٠)-

١٠) (صحيح بخارى (ج١ص١٤) كتاب فرض الخَمس باب ماكان النبي صلى الله عليه وسلم يعطى المؤلفة قلوبهم وغيرهم من الخمس ونحود رقم (٣١٤٨)-

۱۱) (فنع الباري (ج۶ص ۲۵۱)-

منعلقه الناس يسألونه حتى اضطرو كإلى سبرة ، فخطفت ردائه

خُلق حضور نائلًم پورې اونختل او د هغوی نه ئې غوښته کوله، تردې چه حضور نائلم د کیکړ اونی پورې په پناه اخستلو مجبورشو نو کیکر د هغوی څادر مبارد رانبکلو.

«علق» دادباب ((سمع)) نه دې او ((تعلق)) په معنی کښې دې يعنی اينختل او لازم نيول (۱) او د ((الناس)) نه مراد ((الأعماب)) يعني كلي وال دي. لكه چه (كتاب فرض الخمس) په روايت كښى ((الأعماب)) راغلى دى. (٢)

او (ريسالون)) الناس نه حال واقع كيږي. (٣)

او در « معنی ناخایی او چتولو ده. (۴)

او دلته مطلب دا دې چه د حضور څادر د کيکر په ازغوکښې ګډوډ شو او په هغه ازغو کښي اونختلو. (۵)

قوله: فوقف النبي صلى الله عليه وسلم فقال: أعطوني رداني، لوكان عددهن العضاة نعماً لقسمته بينكم نو نبي كريم تريم العضا اختيار كرو او وئي فرمائيل چه زما څادر ماته راکړئي، که زما د دې ازغو او ونو برابر څاروي وې نو ټول به ماپه تاسو خلقو کښې تقسيم کړې وې.

علامه قسطلاني دُ دي جملي مطلب دا بيان كړيدې چه زه خپل مال تاسو خلقو ته دركولوله تياريم نو تاسو خلقو چه دا كوم غنيمت حاصل كړيدې هغه خو زه په طريق اولى دركوم روي «عضای» دا د عضاه وعضه وعضه جمع ده. (۷) او عضاه هرهغه وني ته وائي چه ازغيژنه وي لکه کیکر وغیره .(۸)

ابن التين بميد فرمائي دا كلمه حالت وصل او وقف دواړو كښې د باء سره لوستلې شي (٩) د كلمه نعم لغوى تحقيق د ((نعم)) تحقيق كولو سره علامه ابوجعفر النحاس براية فرماني

۱) (عمدة القارى (ج ۱ ۱ ص ۱۱۸)-

٢) (صحيح بخارى (ج١ص١٤٥٤) كتاب فرض الخمس باب ماكان النبي صلى الله عليه وسلم يعطى المؤلفة قلوبهم وغيرهم من الخمس ونحوه رقم (٣١٤٨)-

۳) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٨)-

٤) (مختار الصحاح (ص١١٨) مادة خطف-

۵) (شرح الطيبي (ج۱۱ص۳۱)-

۶) (شرح القسطلاني (ج۵ص ۵٤)-

۷) (عمدة القارى (ج ۱ ۱ ص ۱۱۸)-

۸) (جامع الأصول (ج۵ص ۱۰)-

۹) (عمدةالقاري (ج ٤ ١ص١١)-

و د نعم اطلاق ابل، بقر او غنم باندې کیږی صرف اوښ ته نعم نشی وئیلې، دغه شان په غوا او بکرنی باندې هم د دې استعمال شائع نه دې (۱)

د نعم اعراب دلته ((نعما)) منصوب واقع شویدې، او د ابوذر په روایت کښې دالفظ مرفر : دی. (۳)

نوکه دا کلمه مرفوع ده نودا د کان اسم مؤخر دې او ((عددهدالعضالا)) خبر مقدم او که منصوب دې نو تعما بنا برتمييزمنصوب دې او کان تامه دې.

يا دا چه كان ناقصه دى او نعما د كان خبر او عدد د كان اسم دى.

قوله ثمرلاتجدوني بخيلاً ولاكذوباً ولاجباناً: بيا به نه ناسو ما بخيل اومومئي او مدروغژن او نه بزدل

مطلب دا چه که تاسو ما په مشکل او سخت وخت کښې هم ازمیښت کړئی نوصفات ردیله مثلاً بخل،کذب اوبزدلي وغیره سره به می متصف اونه مومئي (۴)

نفی مطلق د وصف ده د مبالغی نه ده دلته نبی کریم گریم گریم و دریو صفات رذیلو د خپل ذات مبارك نه نفی فرمائیلی ده او چه كوم الفاظ نی فرمائیلی دی په هغی كنبی كنب د مباغه مبارك نه نفی فرمائیلی ده او چه كوم الفاظ نی فرمائیلی دی په هغی كنبی كنب د مباغی نفی مراد جبان صفت د مشبهه صیغه دی، او بخیل د دواړو احتمال لری خودلته د مبالغی نفی مراد نه ده بلكه مطلقاً د وصف نفی ده محنی نو مشهور اشكال به پیښ شی چه په كذوب كنی نفی مطلقاً د كنب نه بلكه زیاتوالی د كنب دی، دغه شان په نورو الفاظو كنبی هم دغه اشكال دی او مطلب به داسی شی حه كاذب خو دی ليكن كنوب نه دی وهلم جوا-

اشكال دى او مطلب به داسې شى چه كاذب خو دې ليكن كنوب نه دې وهلم جوا-د دې د پاره دلته مطلقًا نفى د اوصاف ثلاثه ده نه چه دمبالغې. دا داسې ده لكه چه د انه تعالى په ارشاد كښې دى (ومارېك بظلام للعبيد) (۵) په دې آيت كښې هم نفى مطلق د ظلم ده ګنى نو الله تعالى به نعوذ بالله ظالم كيدل لازم راشى او دا بديهى البطلان دې (۶)

علامه طیبی میشی فرمائی چه دا کلمه ((ثم)) ترای فی الرتهه د پاره دی اود نبی کریم نظیم د ارشاد مطلب دادی چه زه په دی عطاء کښی مجبور نه یم بلکه پوره شوق او رغبت سره به

۱) (حواله بالا -

۲) (مختارالصحاح (ص۶۶۹)-

٣) (فنع الباري (ج٤ص٣٥)-

٤) (شرح الطيبي (ج١١ص٣٢)-

۵) (فصلت:۴۶)-

ع) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٨) وشرح القسطلاني (ج٥ص ٥٤)-

تاسوته دركوم او زه دروغژن هم نه يم چه اوس تاسو سره وعده اوكړم او تاسونه خان خلاص كړم، بيا روستو منكر شم او تاسو ته مال درنكړم او نه زه بزدل يم چه د چانه اوويريږم، نو لكه چه دا دواړه جملې ((ولاكنوباولاجهانا)) د كلام سابقه تتمه ده. علامه

کرمانی مُشَدَّ فرمائی چه رسول الله تالط د عدم کذب نه د قوت عقلیه کمال یعنی حکمت طرف ته او عدم بخل نه د قوت طرف ته او عدم بخل نه د قوت شهویه کمال یعنی بهادرئی طرف ته او عدم بخل نه د قوت شهویه کمال یعنی حضور تالط قوت عقلیه، قوت غضبیه او قوت شهویه کښی کامل وو او همدغه دریواړه د قوی اخلاق فاضله اصل دی،

رومبی صدیقین دوئم شهدا او دریم صلحا امرتبه ده اللهما جعلنامنهم (۱) دُ حدیث فوائد: علامه ابن بطال مُرَاثِی فرمائی چه دَ جبیر په حدیث کښی یوڅو فاندی دی مثلاً: (۱) که جاهلان د یو صاحب علم او فضل سړی باره کښی بدګمانئی ښکاروی نو هغه سری له پکار دی چه هغه سړی دی د خپلو ښو عاداتو او ښکلی خصلتونو سرعام ذکر اوگړی، دی د پاره چه بدګمانی ختمه شی.

٣ د حدیث نه دا هم معلومه شوه چه یو سړې چا کښې چه بخل، کذب او بزدلنی په شان صفات رذیله وی نو هغه د خلقو مقتداء او پیشوا نشی جوړیدې. او خلقو ته هم پکار دی چه په چا کښې د دې نه یو صفت هم وی نو امام او خلیفه دې نه جوړوی. (٢)

د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت: ترجمة الباب سره دَ حديث مناسبت دَ رسول الله تريخ به

دې مبارك ارشاد كښې دې. ((ثملاتجدون، بخيلا، ولاكدوبا، ولاجهانا))(٣)

٢٥- بَاب: مَا يُتَعَوَّذُمِنُ الْجُبُنِ

ماقبل سره ربط او مناسبت: په وړاندینی باب کښی د بزدلئی مذموم او قبیح کیدو بیان وو او په دې باب کښی د دی نو دینه پناه غوښتل یکار دی. غوښتل یکار دی.

دَترجمة الباب مقصد امام بخاری مُشَارِ به دی باب کښی دا خودل غواړی چه د بزدلئی نه پناه غوښتل پکار دی لکه څنګه چه رسول الله ناتی دې نه پناه غوښتې وه (۴)

[٢٦٦٤]حَدَّثَنَامُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَاأَبُوعَوَانَةَ حَدَّثَنَاعَبُدُالْمَلِكِ بْنُ عُمَيْرِسَمِعْتُ عَمُرُوبُنَ مَهُونِ الْأُوْدِيَّ قَالَ كَانَ سَعْدٌ (ه) يُعَلِّمُ بَنِيهِ هَوُلَاءِ الْكَلِمَاتِ كَمَا يُعَلِّمُ الْمُعَلِّمُ الْغِلْمَانَ

۱) (شرح الكرماني (۱۲ ص۱۲)-

۲) (شرح ابن بطال (ج٥ص ٣٤)-

٣) (عمدة القاوي (ج كم ١١٧)-

عُ) (عمدة القاري (ج ٤١ص ١١٩)-

۵) (قوله: سعد: الحديث أخرجه البخاري آيضًا (جص٩٤٢) كتاب الدعوات باب التعوذ من عذاب القبر رقم(۶۳۶۵) و(ض٩٤٢) باب التعوذ من البخل رقم (۶۳۰)

كتاب الجهاد (جلداول)

كشف البارى

الْكِتَابَةَ وَيَقُولُ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَتَعَوَّذُ مِنْهُنَ دُبُوالصَّلَاقِ اللَّهُ إِنِى أَعُوذُ بِكَ مِنْ الْجُبُنِ وَأَعُوذُ بِكَ أَنْ أَرَدَ إِلَى أَرْذَلِ الْعُنْرِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتُنَةِ الدُّنْيَا وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْعَبُرِ فَحَدَّ ثُتُ بِهِ مُصْعَبًا فَصَدَّقَهُ [٢٠٢٢٠٣٢٦٠٩٢٠٦]

تراجم رجال

- موسی بر اسمعیل: دا ابوسلمه موسی بن اسماعیل تبوذکی بصری میاید دی. د دوی حالات (۱۷ موسی) څلید دی. د دوی حالات (۱۷ موسی) څلورم حدیث په ذیل کښې راغلی دی. (۱)

r- ابوعوانه: ددوی نوم وضاح بن عبدالله یشکری مینید دی، ددوی حالات هم ((بدهالومی) څلورم حدیث به ذیل کښی راغلی دی (۲)

-عبر الملك بن عمير: دا ابوعمر عبدالملك بن عمير بن سويد الكوفي بينية دي. (٣) م-عمروبر ميمون الاودي: دا ابويحيي عمرو بن ميمون الاودى الخضرمي الكوفي منته دي. (۴)

قوله: قال: كان سعد يعلم بنيه هؤلاء الكلمات كما يعلم المعلم الغلمان

الکتابة:عمرو بن میمون لاودی برای فرمائی چه حضرت سعدبن ابی وقاص فات خبلو خامنوته دا کلمی داسی خودلی لکه څنګه چه معلم شاګردانوته کتابت بنائی. دلته د تمهید په توګه راتلونکی دعائیه کلماتو د اهمیت خودلو د پاره دابیان کریشوچه حضرت سعدبن ابی وقاص فاتو ددې کلماتو خپلوبچوته د زده کولو بی حده اهتمام کولو او راوی عمرو بن میمون د دې ماشومانوته تحریر خودلو سره تشبیه ورکړه لکه چه څنګه

^{....}دتيرمخ بقيه] و(ص٩٤٢) باب الاستعاذة من أرذل العمر، ومن فتنة الدنيا ومن فتنة النار رقم (٤٣٧٤) و الرمخ بقيه] و(ص٩٤٥) باب التعوذ من فتنة الدنيا رقم (٤٣٩٠) والترمذى فى سننه (ج٢ص١٩٥) أبواب الدعوات باب فى دعاء النبى صلى الله عليه وسلم وتعوذه فى دبر كل صلوة رقم (٣٥٤٧) والنسائى (ج٢ص٣١٥) تاب الاستعاذة باب الاستعاذة من البخل رقم (٤٤٤٩)-

۱) (كشف البارى (ح ١ ص٢٣٤)-

٢) (حواله بالا (ص ٢٣٤)-

٣) (د دوى د حالاتود پاره او كورى كتاب الأذان باب إهل العلم والفضل أحق بالإمامة -

کشف الباری ماشومانوته د تحریر اوکتابت خودل د دیر محنت او اهمیت متقاضی وی دغه شان دا کلمات هم خودلو کښې محنت او اهتمام کول پکار دي.

قوله: ويقول: إن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يدعو منهر . دير الصلاة : او حضرت سعد في فرماني چه رسول الله نظم به د دې كلماتوسره د هرمانځه نه يس دعا فرمائيله. او هغه كلمات دا دى:

توله: اللهم إني أعوذبك من الجبن، وأعوذبك أن أردإلي أرذل العمر، وأعوذ بك مر فتنة الدنيا، واعوذبك مر عذاب القبر: اى الله! زه ستا پناه غوارم د بزدلئى نه، ستا پناه غوارم چه راو گرځولى شم خراب عمر ته او پناه غوارم د دنيا د فتنې نه او پناه غوارم دُ قبردُ عذابُ نه.

«اردل العمر» نه د ژوند هغه دور مراد دې کله چه د بوداوالي د وجي نه د عقل او پوهي قوتونه کار پريږدي، د غور او فكر صلاحيتونه ختم شي او سړې د عقل د خفت او فهم د كموالى نه د ماشومانو په شان حركتونه كوي. (۱)

په نتیجه کښې د ده نه د فرائضو په ادا کولوکښې کوتاهي کیږي او د خپل بدن پاکني او صفائی نه عاجز شی او د خپل کور او خاندان د پاره مصیبت او بوج جوړشی او هغوي د ده دَ مراک ارزواگانی کوی او که خاندان وغیره نه وی نو بیا خو مصیبت او مصیبت دی نو سړی له د داسي وخت نه پناه غوښتل پکار دي. (۲)

«نته الدنیا» نه مراد دا دی چه د دنیا په بدله کښې آخرت خرځ کړی، د دنیا فانی ژوند ته د اخرت په ابدي ژوند باندې فوقيت ورکړي. (۳)

د كتاب الدعوات په روايت كښې ((iتنة الديا)) تفسير د راوى حديث عبدالملك بن عمير په ((**فتئةاللجال**)) سره كړيدې.(۴)

اوپه دې خبره کښې هم څه شك نشته چه د د جال فتنه به د ټولو نورو فتنونه خطرناكه وي (۵) قوله: فحدثت به مصعبًا فصدقه نو ما دا حدیث مصعب ته واورولو او هغوی د حدیث تصديق آو کړو.

د دی قول قانل راوی حدیث عبدالملك بن عمیر میشیم او مصعب نه مراد مصعب بن سعد بن ابي وقاص براية دي.

۱) (شرح الكرماني (ج۱۲ص۱۲۱)-

۲) (عمدة القاري (۲۱ ص۱۱۹)-

٣) (حواله بالا ـ

أ (صحيح البخارى (ج٢ص٢٤٩) كتاب الدعوات، باب التعوذمن عذاب القبر رقم (٤٣٥٥)-

٥) (شرح القسطلاني (ج٥ص٥٥)-

اوس مطلب دا شو چه راوی حدیث عبدالملُّك بن عمیر وانی چه ما دا حدیث د تصدیق په غرض حضرت مصعب ته واورولو نو هغوی د حدیث د صحت تصدیق او کرو. (۱) فائده ابن سعد مُنظِر (طبقات) كښې د حضرت سعد بن ابي وقاص اللي و اولاد شمير ٣١

خودلې دې په دې کښې ۱۳ځامن او ۱۷ لونړه وې (۲)

او په دې کښې پنځه محدثين وو او د خپل والد صاحب نه به ني روايت کولود هغوي نومونه دادی: عمر، عامر، محمد، مصعب اوعائشه (۳)

تنبیه: حافظ مزی میشیم به اطراف کښی فرمائیلی دی چه امام بخاری د صحیح بخاری په روایت کښې مصعب بن سعد بن ابی وقاص نه دې ذکر کړې او نساني ذکر کړیدې (۴) لیکن حافظ مزی مید ته دلته تسامح شویده ځکه چه د بخاری شریف په ټولو روایاتوکښی د مصعب تذکره موجود ده. (۵)

[٢٦٧٨] حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا مُعُتَمِرٌ قَالَ سَمِعْتُ أَبِي قَالَ سَمِعْتُ أَنْسَ بْنَ مَالِكٍ (١) رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْجُبْنِ وَالْحَرَمِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتُنَةِ الْمَحْبَ إِوَالْمَأْتِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ

[1.1. ۲. ۲. ۲. ۲. ۲. ۲. ۲. ۲.

تراجم رجال

ا-مساند: دا مسددبن مسرهد من دي دي، د ده حالات (ركتاب الإيبان باب من الإيبان أن يحب لأخيه مايحبلنفسه)) لاندې تيرشويدې. (٧)

r-معتمر: دا معتمر بن سلیمان تیمی بصری مطبیر دی. (۸)

۱) (عمدة القارى (۱۱۹ ص۱۹)-

۲) (طبقات ابن سعد (۲ص۱۳۷)-

۳) (فتح البارى (ج۶ص۳۶)-

٤) (تحفة الأشراف (ج٣ص٣٧)-

۵) (فتح الباری (ج۶ص۳۶)-

ع) (قوله: أنس بن مالك رضى الله عنه: احديث أخرجه البخارى أيضًا (ج٢ص٤٨٣) كتاب التفسير باب قوله تعالى: ﴿ومَنكُم من يرد إلى أرذل عمر ﴾ رقم (٤٧٠٧) كتاب الدعوات. باب التعوذمن فتنة المحيا والممات رقم (١٩٣٥) وباب الاستعادة من الجبن والكسل رقم (١٩٣٩) وباب التعوذ من أرذل العمر رقم (٤٣٧١) ومسلم (ج٢ص٣٤٧) كتاب الذكر والدعاء باب التعوذ من العجز والكسل وغيره رقم (٤٧٧٣) وأبوداؤد (ج١ص٢١٥) تاب الصلاة

۷) (کشف الباری (ج۲ص۲)-

٨) (د دوى د حالاتود باره او كورى كتاب العلم باب من خص بالعلم قوما دون كراهية أن لايفهموا-

- ابي: ((آب)) نه مراد ابوالمعتمر سليمان بن طرحان تيمي بصري ميد دي. (١) م- انس بر مالك الليو: دا مشهور صحابی حضرت انس بن مالك الليو دې، دَ دوی مالات ((كتاب الإيبان باب من الإيبان أن يحب لأعيه ما يحب لنفسه)) لاندى تيرشوى دى (٢) قوله: كأن النبي صلى الله عليه وسلم يقول: اللهم إنى أعوذبك من العجز والكسل والجبن والهرم، وأعوذبك من فتنة المحيـاً والمات، وأعوذ بك من عذاب القبر: حضرت انس بن مالك الله ومائى چه نبى كريم اله ومائيلى دى يا الله وه ستا د بناه غوښتلو طلبكار يم، د عاجزه كيدلو، سستنى، بزدلنى او بوداولى د انتهاء نه او زه ستادً پُناه غُوښتُونکي پام دَ ژونداو مرګ دَ فتنې نه او زه ستا دَ پناه غوښتونکې يم دَ قبر دَ عذاب نه.

دَ حديث شريف دَ كرانو الفاظووضاحت: «عجى» دَ قدرت ضد دې په يوكار باندې قدرت او طاقت نه لرونکی ته عاجز وئیلی شی. (۳)

او«كسل» وائى ضعيف الهمتئى او سستئى ته، د دى نه پناه غوښتلووجه دا دى چه دا

اوسد اعمال صالحو نه لری کوی (۴) صفت د اعمال صالحو نه لری کوی (۴) اوس د عجز اوکسل په مینځ کښې فرق دا شو چه کسل په یوکار باندې قدرت لرلوسره هغه پریخودل دی او په عجر کښې قدرت مفقود دې نبی کریم تایم د دواړو نه پناه غوښتې ده (۵) دَ «هرم» باره کښې علامه کرماني مُشَادِ فرمائي ((ضدالشهاب))(ع) چه د ځواننی ضد دې. او امام راغب اصفهانی مولی فرمائی چه ((هرم) هغه بودا ته وئیلی شی د چا عمر چه ډیر زیات شوې وي، د څه په وجه چه د هغه اندامونه د کمزورنی او ضعف ښکارشي. (٧)

د ((هرم)) نه پناه غوښتلو وجه دا ده چه دا د هغه بيمارونه دې د کوم چه څه علاج نه وي. (۸) «معیاومهات» دواړه مصدر میمی دی او د مراک او ژوند په معنی کښې دی. ((فتتةالبحیا)) دا ده چه سړې د دنيا په فتنه کښې اخته شي او په دې مشغول او غرقاب شي او آخرت شاته اوغورزوي (۹)

١) (حواله بالا-

٢) (كشف البارى (ج٢ص ٤)-

٣) (شرح الكرماني (ج ١٢١١٢)-

٤) (عمدة القارى (ج٤ ١٥ص١٩)-

۵) (فتع البارى (ج۶ص۳۶)-

۶) (شرح الکرمانی(ج۱۲ص۱۲۱)-

٧) (المغرب (ج٢ص ٣٨٣) وعددة القارى (ج١١ص ١١٩)-

۸) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١١٩)-

٩) (عددة القارى (ج ٤ ١ص١١٩ - ١٢٠)-

د مدیث د ترجمهٔ الباب سره مطابقت د حدیث شریف ترجمهٔ الباب سره مطابقت د حدیث به

دې لفظ ((والجين)) کښې دې. (۱)

كثفالباري

٢٠- بَأْب: مَنْ حَدَّثَ يَمَشَاهِدِةٍ فِي الْحَرْبِ

ماقبل سره مناسبت اول امام بخاری مین باب قائم کړې وو د ((بهاب الشجاعة في الحرب والجبن) او په دې کښې شجاعت وبسالت في الحرب تعریف وو او په دې باب کښې د دې خبرې بیان دې که یو سړې د خپلې بهادرئي او جانبازئي واقعات خلقو ته اوروی نو جائز دی خو په دې شرط چه ریاء او ځان خودنه نه وي

د ترجمه الباب مقصد د ترجمه الباب مقصد دا دی چه د اعلاء کلمه الله د پاره که چا څه تکلیف اوچت کړو او څه مشقت ئی برداشت کړو نود هغی خلقو ته بیانول جائز دی. ددی د پاره چه خلقو ته د دی ترغیب وی او هغوی د دی په اقتداء کښی فخر محسوس کړی خو که مقصد د بهادِرئی او ریاء کارئی وی نو ناجائز دی. (۲)

قوله: قَالَهُ أَبُوعُهُمَانَ عَرَى سَعْنِ: [ر:۳۵۱۷٬۳۰۱]دا (خبره) ابوعثمان د سعدنه نقل کریده دلته د آبوعثمان نه النهدی مراد دی آود سعدنه حضرت سعدبن ابی وقاص خاتی مراد دی (۳) اودا تعلیق امام بخاری مُرَاللَّهُ موصولاً ((کتاب نضائل اصحاب النبی صلی الله علیه وسلم و کتاب البغازی)) (۴) کنبی نقل کریدی (۵)

اود دې تعلیق مقصد دا دې چه حضرت سعد ظائر د خپلې بهادرئی واقعام بیانول (۶) [۲۱۲] حَدَّثَنَا قُتیبُه بُنُ سَعِیدِ حَدَّثَنَا حَاتِمْ عَنْ هُحَمَّدِ بُنِ یُوسُفَ عَنْ السَّابِ بُنِ یَزِیدَ (۱) قَالَ عَعِبْتُ طَلْحَة بُنَ عُبیدِ اللّهِ وَسَعُدًا وَالْمِقْدَادَ بُنَ الْأَسُودِ وَعَبْدَ الرَّحْمَنِ بُنَ عَوْفِ رَضِی قَالَ مَعِبْتُ طَلْحَة بُنَ عُبیدِ اللّهِ وَسَعُدًا وَالْمِقْدَادَ بُنَ الْأَسُودِ وَعَبْدَ الرَّحْمَنِ بُنَ عَوْفٍ رَضِی اللّهُ عَنْهُ مُنْ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ إِلا أَنِی سَمِعْتُ طَلْحَة اللّهُ عَنْهُ مُنْ يَوْمِ أَحُدِ [۲۸۲]

١) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١١٩ -

۲) (عمدة القارى (ج ۱ ۱۲۰) -

٣) (حواله بالا-

٤) (صحیح البخاری(ج١ص٥٢٧) كتاب فضائل أصحاب النبی صلی الله علیه وسلم باب ذر طلحة بن عبدالله رقم ٢٧٢٢-٢٧٢٣) و (ج٢ص٥٨١) كتاب المغازی باب (إذا همت طائفتان منكم أن تفشلا) رقم (٤٠٤-٤٠٤)-

۵) (تغليق التعليق (ج٣ص٤٢٣)-

۶) (فنح البارى (ج۶ص۳۶)-

٧) (قوله: عن السائب بن يزيد: الحديث أخرجه البخارى أيضًا (ج٢ص٥٨١) كتاب المغازى باب (إذهب طائفتان منكم أن تفشلا) رقم (٤٠٤٠) والحديث أخرجه البخارى فقط كما في جامع الأصول (ج٨ص٢٥٣)

تراجم رجال

-قتیبه بر سعین دا شیخ الاسلام، روایه الاسلام ابورجا، قتیبه بن سعید بن ثقفی تکشی در دوی حالات ((کتاب الإیبان باب افشاء السلام من الاسلام) لاندی را غلی (۱)

- حاتم: دا ابواسماعيل المدنى الكوفي بيه دي. (٢)

-- هجهل بر. يوسسف: دا محمد بن يوسف بن عبدالله الكندى ابن اخت النمر المدنى تمبيه دى. (٣)

م-السائب بن يزيد: دا سائب بن يزيد بن الكندى بين دن دا د اصاغر صحابه نه وو ۴۱ قوله: قال: صحبت طلحة بن عبيد الله وسعدا والهقداد بن الأسود وعبد الرحمن بن عوف رضى الله عنهم، فما سمعت أحداً منهم يحدث عن رسول الله صلى الله عليه وسلم: حضرت سائب بن يزيد المائخ فرمائى چه زه د حضرت طلحه بن عبيدالله عضرت سعد بن ابى وقاص، حضرت مقداد بن الاسود او حضرت عبدالرحمن بن عوف المائخ به صحبت كنبى باتى وم خو به دوى كنبى يو كس نه مى هم د رسول الله تراخ نه د حديث روايت كول نه دى اوريدلى.

دَّ صحابه كرامو په روايت حديث كښې د احتياط وجه علامه ابن بطال فرمانى چه دې حضراتو د رسول الله تالظانه د حديث روايت په دې وجه نه كولو چه چرته د هغوى نه په حديث كښې كمې زياتي اونه شي. او هغوى د رسول الله تالظ په دې وعيد كښې داخل نشى. «من يقل على مالم اتل قليبوا معقد لامن النار) (٥)

دا حضرات د حدیث په روایت کښې د حضرت عمر ناتن ارشاد «فاتلوا الروایة عن الرسول، ثم اداشهیککم» (۶) تاسو د رسول الله ناتی نه کم روایت کوئی او بیا زه هم تاسو سره په دې معامله کښې شریك یم. په دې وجه به هغوي محتاط اوسیدل. (۷)

هم د راوی حدیث حضرت سائب بن یزید کالی په ابن ماجه کښې روایت دې ((صحبت سعدین

۱) (کشف الباری (ج۲ص۱۸۹)-

۲) (دَدوى دَ حالاتودَپاره او گورى كتاب الوضوء باب (بلاترجمة) بعد باب استعمال فضل وضوء الناس

٣) (دَ دوى دَ حالاتودَباره اوګوري کتاب جزاء الصيد، باب حج الصبيان -

أ (د دوى د حالاتود پاره او گورئ كتاب الضوء باب (بلاتر جمة) بعد باب استعمال فضل وضوء الناس

۵) (العديث أخرجه البخاري (ج١ص٢١) كتاب العلم باب إثم من كذب على النبي صلى الله عليه وسلم رقم (١٠٩)_

ع) (سنن أبن ماجه (ص ٤) المقدمة باب التوقى في الحديث عن رسول الله صلى الله عليه وسلم رقم (٢٨)-

۷) (شرح ابن بطال (ج۵ص۳۶)-

مالك من المدينة إلى مكة، فما سبعته يحدث عن النبي صلى الله عليه وسلم بحديث واحد) (١) زه حضرت سعدبن مالك الناشخ سره د مديني نه ترمكي پورې په سفركښې وم. خو ما د هغوى نه د نهي كريم نهي يو حديث هم روايت كولو سره واونه ريده.

ديرو صحابه كرامو رضوان الله عليهم اجمعين به د نبى كريم تلك نه د حديث به رواين كولوكښي احتياط كولو. (٢)

قوله: إلاأني سمعت طلحة يحدث عن يومراحن مكردا چه ما دُحضرت طلحه اللهُ ندرُ

أُحددُ ورخي واقعات بيانول اوريدلي. مطلب دا چه حضرت طلحه بن عبيدالله الله كالتو كه څه بيان هم كولو نو د غزوه احد په موقع باندې چه هغوی کوم کارنامي کړې وې هغه ئی بیانولی ځکه چه هغه د جنګ احد په ورځ د ګړېړ په وخت کښې د هغه صحابه کرامو نه وو کوم چه ثابت قدم وو اود هغوی قدمونه الله و شوى نه وو. ليكن د نبى كريم تريم اله ني روايت نه كولو. عشية الريادة والنقسان. (٣) هم امام بخاری مینه که دکتاب المغازی کښې د قیس نه روایت نقل کړیدې. ((رایت په طلعه شلام وق بهاالرسول صلى الله عليه وسلم يوم أحدى) ماد خضرت طلحه النفي لاس شَل شوى اوليدلود كوم په ذريعه چه هغه دُ احد په ورځ دُ رسول الله ناپيم حفاظت كولو. (۴)

دغه شان يو بل روايت چه د ابوعثمان النهدي نه مروى دې په دې کښې دي (الميهقمع النبي صلى الله عليه وسلم في تلك الأيام الذي يقاتل فيهم غير طلحة وسعدى))((٥)

د حدیث د ترجمهٔ الباب سره مطابقت د حدیث شریف ترجمهٔ الباب سره مناسبت د حدیث به دې جمله کښې دې: ((سبعت طلحة يحدث عن يوم أحد)) ما حضرت طلحه اللي د خپلو جنگي كارنامو بيانولو سره اوريدلي دې كومي چه هغه په جنګ احد كښې سرته رسولي وئي. (۶)

٢٠- بَأَب: وُجُوبِ النَّفِيرِ وَمَا يَجِبُ مِنُ الْجِهَادِ وَالنِّيَّةِ

ماقبل سره ربط او مناسبت امام بخاری المنظم به ماقبل کښی د مختلفو عنواناتو لاندې د جهاد او قتال في سبيل الله فضائل نقل كړې وو ، اوس د څد احكامات جهاد ذكرئي هم كړې وو او د جهاد د وجوب متعلق نور احکامات بیانول غواړي.

دُ تُرجَمة الباب مقصد أمام بخارى مُنظة د دى ترجمة الباب نه نفيرعام په وخت كښي د جهاد

١) (ابن ماجه (ص ٤) المقدمة باب التوفي الحديث عن رسول الله صلى الله عليه وسلم رقم (٢٩)-

٢) (مرهذاالبحث مفصلا في كتاب باب إثم من كذب على النبي صلى الله عليه وسلم فراجعه إن شنت-۳) (عمدةالقاري (ج ۱ ۱ص ۱۲۰)-

^{؟ ›} رصحيح البخاري كتاب المغازي باب ﴿إذهمت طانفتان منكم أن تفشلا، والله وليهما ﴾ رقم (٤٠۶٣)-

۵) (حواله بالا رقم (۱۰۶۰ ۱ - ۲۰۶۱)-

۶) (عمدةالقاري (۱۲۰ ۱۲۰)-

د وتلو وجوب، د جهاد مشروع مقدار او د نیت مشروعیت بیانول غواری. (۱)

اوت المعديد أو المسيد المسيب المسيب المسيد المسيب الميام المام ال شروع کښې بيان کړي دي.

اود دې خبرې تفصيل هم چه جهاد د نفيرعام په وخت کښې فرض عين ګني فرض کفايه دې او دا چه د جهاد د نیت مشروعیت اوس هم باقی دی او دا موند د رکتاب الجهاد) په شروع

دبس کریم گرای کریم گرای کسی و جهاد خه حکم وو؟ باقی دا چه د نبی کریم گرای به مبارکه زنبی کریم گرای به مبارکه زمانه کسی خه حکم وو به دی کسی اختلاف دی. به دی کسی د جمهورو اتفاق دی چه جهاد د نبی کریم گرای د مدینی منوری د هجرت نه پس مشروع شو خو د دی نه پس آیا دا فرض عين وو كه فرض كفايه؟ '

عُلامه ماوردی محصل فرمائی چه د مهاجرینو په حق کښې فرض عین وو او د انصارو په ذمه فرض كفايه وو. په دې باندې دليل د فتح مكه نه وړاند ي په هر نوى مسلمان باندې مدينې منوري ته هجرت كول واجب وو دي د پاره چه د اسلام نصرت او معاونت اوكريشي (٣) ليكن علامه سهيلي مُربيد فرمائي چه په انصارو فرض عين وو او په مهاجرينو فرض كفايه. د دې قول تائيد د ليلة العقبه د بيعت نه کيږي چه په دې موقع د انصارو نه نبي تيايي د دې خبرې پيعت اخستې ووچه هغوي به ده ته پناه ورکوي او د هغه نصرت به کوي. (۴) اوس د واړو د اقوالو حاصل دا شوچه په انصارو او مهاجرينو دواړو باندې فرض عين هم وو او فرضٌ كفايه هم خو د دي باوجود دا حكم په خپل عموم باندې نه دې بلكه دلته دوه صورتونه دي:

۱۵ د مدينې نه باهر اوځي او جنګ اوکړي.

په مدينه کښې پاتې شي او جنګ اوکړي.

نو په دواړو اقوالوکښې داسې تطبيق ممکن دې که د مدينې نه بهر وتل او د جنګ صورت وي نو په مهاجرينو باندې فرض عين وو او په انصارو باندې فرض کفايه. او که جنګ هم په مدينه منوره کښې دننه وي نو په انصارو باندې فرض عين او مهاجرينو

باندې فرض كفايد. (۵)

غالبًاهم د دې د پاره حضور کاڅې د غزوه بدر په موقع روئې سخن د انصارو طرف ته کړې وو ځکه چه هغوي سره معاهده شوې وه چه هغوي به په مدينه کښې پاتې وي حفاظت او

۱) (عمدة القارى (ج ۲ اص ۱۲۰) وفتح البارى (ج ۶ص ۳۷)-

۲) (الأبواب واتراجم للكاندهلوى (ج١ص١٩٥)-

۳) (فتح الباري (ج۶ص۳۷)-

^{£) (}حواله بالا_

۵) (فنع الباری (ج۶ص۳۷)-

معض حضراتو خو دا وئيلي چه په كومه غزوه كښې حضور ناهم پخپله بنفس نفيس شريان وی په هغې کښي د ټولو شرکت د فرض عین په توګه دې ګنی فرض کفایه. (۲)

حافظ ابن حجر الله ترجيح دې خبرې له ورکړې چه نبي کريم تالي به څوك معين کول د هن

په حق کښې فرض عين وو سره د دې چه هغه ونه وتلو (۳) وَقُوْلِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ الْفِرُواخِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ذَلِكُ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ لَوْكَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا لَا تَبَعُوكَ وَلَكِنُ بَعُدَنُ

عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ وَسَيَعُلِفُونَ بِاللَّهِ الْآيَةَ [التوبة:٣٢-٣١] وَقُوْلِهِ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمُ انْفِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ اثَّاقَلْتُمْ إِلَى الْأَرْضِ

أُرَضِيتُمْ بِالْحَيَى الْآنْلَيَ الْمَا فِي الْآخِرَةِ إِلَى قَوْلِهِ عَلَى كُلِ شَيْءٍ قَدِيرٌ [التوبة:٢٩-٢٩] دَ رَوْمِبِي ايت تَرجمه أو تشريح أود الله تعالى ارشاد دى چه د جهاد د باره أوخني اكرى لرسامان سره وي او كه د چيرسامان سره وي اود الله تعالى په لاركښي په خپل ځان او مال سره جهاد اوکړئي، همدغه ستاسو د پاره بهتر دي که چرې تاسو يقين لرئي اوکه څه په لاس لګیدلی ملاویدل او معمولی شان سفر هم وې نو دا منافقان به خامخا تاسره وو لیکن دوي ته خو دا مسافت لرې معلوم شو (په دې وجه منع شو او چه کله تاسو واپس د جهاد نه راشئي) نود الله تعالى قسمونه به خوري (۴)

«عفافا واثقالا) معنی خو یا ((متأهبین أوغیرمتأهبین)) ده. یعنی که د تیاری حالت وی یاد ((نشاطاوغيرنشاط)) جه زړه ئي کوي او که نه ئې کوي يا د ((رچالااو رکهانا)) دې يعني که پياد: وي او که سور په هرحالت کښې اوځئي.

اودا دواړه کلمې د رانغهوا) ضمير د جمع نه حال واقع شوی دی په دې وجه منصوب دې (۵) حضرت سفیان ثوری مُشَرِّد فرمائی چه پورته ذکر شوی آیت ((انغهوا خفافا وانقالا)) د سورا التوبه د ټولونه اول نازل شوې آيت دې. د ابومالك الغفاري او ابن الضحاك همدغه قول دې او بله دا چه نور آیاتونه روستونازل شوی دی. (ع)

١) (سيرة ابن هشام مع الروض الأنف للسهيلي (ج٢ص٤٤) قال ابن اسحق.... ثم قال رسول الله ﷺ أشيروا على ياأيها الناس ...وإنما يريد الأنصار، وذلَّك أنهم عددالناس، وأنهم حين بايعوه بالعقبة ^{قالوا:} يارسول الله ظلم إنا براء من ذماماك حتى تصل إلى دورنا. فإذا وصلتَ إلينا فأنتَ فَى ذمتنا نمنعك ملَّ نمنع منه أبناءنا ونساءنا. ولمزيد من التفصيل انظر كشف البارى كتاب المغازى (ص٥٣)-

۲) (فتع الباری (ج۶ص۳۷)-

۳) (فتع البای (ج۶ص۳۷)-

٤) (بيآن القرآن سورة التوبة (ج١ص١١)-

۵) (عمدة القارى (ج ٤ اص ١٢١) وتفسير الطبرى (ج عجز م اص ٩٨)-

ع) (عمدة القارى (ج ٤ اص ١٢٠) وتفسير الطبرى (ج عجزء اص ٩٨)-

معضو صحابه کرامو لکه حضرت ابوایوب انصاری او مقداد بن اسود تفایم د دی آیت مبارك د ترون کې د میارك به نې په عموم باندې محمول كولو، تردې چه د دې حضراتو پور-انتقال هم د جهاد په ميدان کښې آوشو (۱)

توله: وقوله: يأأيها الذير ما لكم إذا قيل لكم انفروا في سبيل الله اثاقلتم إلى الأرض؟أرضيتم بالحياة الدنيامر الآخرة قدير:

د دوئم آیت ترجمه او تشریح د الله تعالی ارشاد مبارك دی: ای د ایمان خاوندانو!په تاسو خه شوی دی چه کله تاسو ته وئیلی کیږی چه د الله تعالی په لارکښی اوځنی نو تاسو په زمکه پورې اینخلنی؟ آیا تاسو د آخرت په عوض د دنیا په ژوند فناعت کړیدې، نود. دنياوي ژُوند تمتع خو هيڅ هم نه دي، ډير قليل دي. که تاسو د جهاد د پاره اونه ځنې نو الله تعالى به تاسو ته سخته سزا دركړى او ستاسو په بدله كښې به بل قوم پيدا كړي(اود هغوی نه به خپل کارواخلی) او تاسو به الله تعالى ته هيڅ نقصان آونه رسوئي او د الله تعالى په هرڅيز باندې پوره قدرت دي.(۲)

په دې آياتونوکښې په هغه خلقو عتاب نازل کړيشويدې کوم چه په غزوه تبوك کښې روستو پاتی شوی وو . (۳)

یو سوال أو دَ هغی جوابونه: اوس دلته سوال داپیداکیږی چه امام بخاری سید و قرآن کریم د ترتيب نه خلاف (انغهوا خفافا وثقالا) مقدم او (ياأيهاالذين آمنواإذا قيل....) ولى مؤخر كرو او په قرآن کښي خود دې عکس دي.؟

د دى اشكال څو جوابونه دى:

ن يوجواب دا وركولي شي چه امام بخاري ميني اصل ترتيب د نزول په اعتبار سره كړيدي او دا خبره اوس دَ طبري په حواله سره تيره شوې ده. چه دُ سورة البراءة آياتونوکښې دُ ټُولونهُ اول آيت (انغهوا خفافا ولقالا) نازل شوى دى. (۴)

العديث مولانا زكريا مين دا جواب وركريدي چه كيديشي امام بخاري مين د دوو حالتونو طرف ته اشاره کول غواړی کوم چه حافظ صاحب (فتح الباري) ښې ذکر کړيدي. (یعنی دَ نبی گاه په مبارکه زمانه کښی د جهاد حکم او د هغوی نه پس د جهاد حکم (۵) نوامام بخاری گه و رومبنی آیت د دی د پاره مقدم کړو چه په دې کښی مطلقا دلالت علی فرض الخروج موندلی شی، د دې نه ئی دا اشاره اوکړه چه د نبی کریم کاه په زمانه کښې

۱) (فتع الباری (ج۶ص۳۸)-

٢) (بيان القرآن سورة التوبة (ج١ص١١)-

٣) ((عمدة القاري (ج ١٤ ١ص ١٢١) -

أ (جامع البيان في تفسير القرآن (ج۶جز١٠ ص٩٨)-

۵) (فتح الباري (ج۶ص۳۷)-

كتأب الجهاد (جلداول) ت اب امجهاد (جلداول) معاد مطلقا فرض عین وو خو دوئم ایت ئی د مقدم کیدو باوجوځکه مؤخر کړو چه دفه مقید ((براذا قیل لکم انفره)) دی، نو په دوئم صورت کښې د جهاد فرضیت د نفیرعام سر قوله: يُذَكِّرُ عَنُ ابْنِ عَبَّاسِ انْفِرُوا ثُبَاتٍ [النساء: ١٠] سَرَايَا مُتَفَرِّقِينَ يُقَالُ أَحَلُ مقید دی نتأمل (۱) الثُّبَاتِ ثُبَةً: حضرت عبدالله بن عباس كَاثُون نه نقل دى چه هغوى (انغهوا اثباتٍ) كُنِّي

((ثبات)) معنی ((سمایامتفهدین)) بیان کریده. د مذكوره تعليق تخريج د حضرت عبدالله بن عباس المنود دا تعليق امام ابن جرير طبري منود

موصولاً په خپل تفسيرکښې ذکر کړيدې (۲) دَمَدْكُورَهُ تَعليقَ مطلب دَ حضرت عبدالله بن عباس المَّوَّ دَ دي تعليق مطلب دا دي چه دُقرآن كريم آيت (ياأيها الذين آمنوا عنوا حنوركم فانفه واثباتٍ أونغه واجبيعاً ﴾ (٣) كنبي دا كوم د ((ثهات)) لفظ وارد شويدې د دې معنى ((سماايا متفاقين))ده. اوس د آيت معنى دا شوه چه په مختلفو او جدا جدا ډلو کښې د جهاد د پاره اوځنی يا ټول په ټول هم په يو جماعت کښې د نبی کريم کالم سره اوځنی خو ځان سره وسله خامخا يوسنی د دې د پاره چه تاسو خپل حفاظت ادک شوره کې

- په س بعض حضراتو دا دعوی کریده چه د سورة النساء دا ذکر شوی آیت د سورة البراء آیت (انفه واخفافا واتفالا) د پاره ناسخ دې. لیکن حافظ مینی فرمائی چه په تحقیق سره خبره دا ده چه دلته نسخ نشته دې بلکه دلته معامله د امام وخت حواله ده چه کوم صورت اختیاروی اجازت دې او په حالاتوباندې موقوف دی چه د حالاتوکومه تقاضا وی هم په هغې باندې به

قوله: يقال واحد الثبات: ثبة: ونيلي شي جدد ((ثهات)) مفرد ((ثبة)) دي. دا قول د امام بخاری میلید د استاذ ابوعبیده میلید دی کوم کښې چه هغوی د ((ثهات)) لغوی تحقيق بيان كړي دې چه دا ثهة - بضم المثلثة وتخفيف الهاء المؤحدة بعدها هاء تانيث - جمع ده اود ((ثبة)) جمع ((ثبتين)) هم راځی اود دې معنی جماعت ده. (۶)

١) (الأبواب والتراجم (ج٤ص٣٧)-

٢) (قال الإمام ابن جرير الطبرى: حدثنى المثنى قال: ثنا عبدالله بن صالح قال:حدثنى معاوية عن على بن أبى طلحه عن ابن عباس قوله: (خذوا حذركم فانفروا ثبات) يقولك عصبا يعنى: سرايا متغرقين.... جامع البيان (م عند ١٠٠٠ م م ١٠٠٠) (ج ۽ جزء ٥ص ١٠٤ –١٠٥) –

٣) (النساء: ٧١)-

١٠٤ ص ١٠٤) (ج ٤ جزء ٥ ص ١٠٤)-

۵) (فتع الباري (ج٥٥ص٣٨)-

ع) (حواله بالا-

اود (رثهة)) دا کلمه ((ثهة یثبو ثبوا)) نه مشتق ده او وئیلی شی ((ثبیت الرجل: إذا أثنیت علیه فی حیاته)) کله چه ته د چا تعریف د هغه په ژوند کښې او کړې لکه چه تاد هغه ټول محاسن راجمع کړی دی. (۱)

امام نحاس میلی فرمانی چه در (ثبة) یوه بله معنی هم راځی ((ثبة الحوس)) معنی د حوض مینځ او دا د ((ثابیثوب)) نه راځی د څه معنی چه رجوع ده چونکه د حوض ټولې اوبه د هغې مینځ کښې واپس کیږی او راجمع کیږی په دې وجه دې ته ((ثبة)) وائی اود دې تصغیر ((ثبیة)) دې او ((ثبة)) په معنی د ((الجماعة)) تصغیر ((ثبیة))راځی. (۲) والله اعلم.

[٢٦٤٠] حَدَّثَنَا عَمُرُوبُنُ عَلِي حَدَّثَنَا يَعُنَى بُنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنِى مَنْصُورٌ عَنُ هُجَاهِدِعَنْ طَاوُسٍ عَنُ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِىَ اللَّهُ عَنْهُمَا (٣) أَنَّ النَّيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ يَوْمَ الْفَتْحِ لَاهِجْرَةَ بَعُدَ الْفَتْحِ وَلَكِنْ جِهَادٌ وَنِيَّةٌ وَإِذَا اسْتُنْفِرُ تُمْ فَانْفِرُوا [ر: ١٥١٠]

تراجم رجال

۱- عمروبر على : دا ابوحفص عمرو بن على بن بحربن يحيى بن كثير الباهلي البصري بين دي (۴)

r- یحیی: دا ابوسعید یحیی بن سعید بن فروخ القطان تمیمی ﷺ دی. د دوی حالات (رکتاب الإیبان باب من الإیبان ان یحب لأخیه مایحب لنفسه)) لاندی تیرشوی (۵)

-- سفیان: دا مشهور امام حدیث ابوعبیدالله سفیان بن سعیدبن مسروق ثوری کوفی میروی دی (۶) میروی کوفی میروی دی (۶)

٣- منصور: دا مشهور محدث ابوعتاب منصوربن المعتمر السلمى الكوفى مختر دي د دوى حالات ((كتاب العلم باب من جعل الأهل العلم أيام المعلومة)) لاندي تيرشوي (٧)

٥- هجاهن دا شيخ القراء والمفسرين ابوالحجاج مجاهد بن جبرمكي قرشي رفيلة دي

۱) (عمدة القارى (ج۶ص ۳۸)-

۲) (فتح الباري (ج۶ص ۳۸)-

٣) (قوله: عن ابن عباس رضى الله عنهما: الحديث مرتجريجه في كتاب الحج باب لايحل القتال بمكة-

أ (دَ دوى دَ حالاتودَپاره او گورئ كتاب الوضوء باب الرجل يؤضئ صاحبه -

۵) (کشف الباری (ج۲ص۲)-

ع) (کشف الباری (ج۲ص۲۷۸)-

۷) (کشف الباری (ج۳ص ۲۷۰)-

د دوي حالات ((كتاب العلم باب الفهم في العلم)) لاندې بيان كړيشوى دى. (١) - طأوس: دا طاوس بن كيسان اليماني الجُندي الحميري مُرَثِيْ دي. (٢)

<u>--ابر. عبـاس:</u> دا مشهور صحابی حضرت عبدالله بن عباس گنام دی. د ده حالار ((بدم الوحی)) د څلورم حدیث په ذیل کښې تیرشوی دی. (۳)

قوله: أن النبي صلى الله عليه وسلم قال يوم الفتح: لاهجرة بعد الفتح، ولكن جهادونية: حضرت عبدالله بن عباس الظها فرمائي چه نبي كريم الظه د مكي د فتح په ورځ ارشاد اوفرمائيلو چه د فتح مكه نه پس هجرت فرض نه دې ليكن د جهاد او نيت كي

دَ حديث شريف دَ دي ټکړې تشريحات (کتاب الجهاد) په شروع کښې ((باب فضل الجها: والسير)) په ذيل کښې بيان شوې دي.

قوله: <u>وإذا استنفرتمرفانفروا:</u>او چه کله تاسو ته دَ وتلو حکم درک_ویشی نو اوځئی. علامه نووی انته د دې جملې په تشریح کښې فرمائي چه مطلب دا دې چه د وخت امام تاسو ته د جهاد او نورو نیکو اعمالوحکم درکړي نو تاسو د هغه خبره منئي اواوځئي. (۴)

قوله: <u>لاهجرة بعد الفتح، ولكر جهاد ونية: تركيبي حيثيت نه دَ عبارت تقدير داسي</u> جوړيږي ((لاهجرة باتية بعد الفتح، ولكن جهاد ونية باتيان)) يعنى د وطن نه هجرت كول يا د كُفَارُو ۚ دَ تسلط نه دَ بچ كيدو دَ پاره كيږي يا دَ جهاد دَپاره يَا دَ علم دَ طلب دَپِاره نو اول صورت خو منقطع شو آو نور دواړه صورتونه اوس هم باقي دي نو دا غنيمت اوګنړني او په كور كښې مه كيننى، بلكه چه كله تاسو د جهاد د پاره راوبلى نود امام په آواز باندې لبيك

اود حدیث شریف د پورتد ذکر شوی جملی نه دا هم معلومه شوه چه امام وخت کوم سری مقرر کړی چه هغه دې د جهاد د پاره اوځی نو د هغه د پاره وتل واجب او ضروری دی اوس روستود پاتیکیدو اجازت نشته. (۶)

فائده به حدیث کښې د دې خبرې زیرې دې چه مکه مکرمه ((ژادهاالله شماقاو کمامة)) همیشه به دارالاسلام وي. (٧)

۱) (کشف الباری (ج۳ص۳۰)-

٢) (دَ دوى دَ حالاتودَ باره او محوري كتاب الوضوء باب (بلاترجمة) رقم الحديث (٢١٨)-

٣) (كشف البارى (ج ١ ص٤٣٥)-

٤) (شرح النووى على مسلم (ج٢ص ١٣٠)-

٥) (قال العلامة الطيبي، انظر شرح الطيبي على مشكوة المصابيح (ج٧ص٢٨٧) وفتح الباري (ج٤ص٣٩)-۶) (فتح الباري (ج۶ص ۳۹)-

۷) (فنع البارى (ج۶ص ۳۹)-

د مدیث د ترجمة الباب سره مطابقت د حدیث ترجمة الباب سره مطابقت ((ولکن جهادودیة وإذااستنفى ثم فانفروا)) به جمله كښى دى. (١)

٢٨-بَاب: الْكَافِرِيَقُتُلُ الْمُسْلِمَ ثُمَّ يُسْلِمُ فَيُسَيِّدُ بَعْدُ وَيُقْتَلُ

ماقبل سره ربط په تیرشوی باب کښې امام بخاری د نفیرعام په وخت کښې د جهاد فرض او واجب حکم بیان کړې وو او په دې باب کښې امام بخاري د هغه کافر حکم بیانوي چا چه يو مسلمان قتل كرى وى بيا الله تعالى هغه ذ ايمان به توفيق او نعمت سرفراز كرو، بيا عَنَّه بِخِيله م دُ اللَّه تعالى به لاركښى جنَّك كولوكښى شهيد شو نو هغه به هم جنت ته ځي. دُ تَرجَمةُ البابُ مقصد دُ تَرجمهُ البابُ مقصد دُ هغه كافر سرى دُ حكم بيانول دى چِه يو مسلمانِ قتل كرِي بيا اسلام قبول كرى اود هغي نه پس هغه پخپله هم شهيد شي، نود هغه كافر حكم هم ظاهر دې چه هغه هم جنتي دې چه د حديث باب نه مفهوم كيږي په دې وجه امام بخاری د هغی جواب ذکر نه کړو. (۲)

اختلاف نسخ د صحیح بخاری په ټولونسخوکښې ترجمه الباب داسې دې لکه چه مون ذکر كړيدې. خود علامه كرمانى بياية په روايت كښې داسې دى: ((باب الكافريقتل المسلم فيسلّم، فيسدد دينه بعدالقتل أوثم يصير مقتولا)) (٣)

دغه شان دنسفي په روايت کښې ((بعد))نه پس واو نشته بلکه ((أد)) دې او هم په دې باندې علامه ابن بطال مواتية (٤) او اسماعيلي مراتية جزم كريدي. (٥)

او حافظ ابن حجر مُراثِية فرمائي چه همدغه روايت د نسفي، د امام بخاري مُراثِية د مراد سره دیر مناسب معلومیری. (^ع)

[٢٦٠] حَدِّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ الْأَغْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللَّهُ عَنْهُ (٤) أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَهُ إِلَى رَجُلِيْنِ يَقْتُلُ أَحَدُهُمَا الْاَخَرَيَدُ خُلَانِ إِلْجَنَّةً يُقَاتِلُ هَذَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيُقْتَلُ ثُمَّ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَى الْقَاتِلِ فَيُسْتَثُهُدُ

۱) (عمدة القارى (ج ١٤ ص١٢٢)-

۲) (عمدة القارى (ج ۲ اص۱۲۲) وشرح القسطلاني (ج۵ص۵۷)-

٣) (شوح الكوماني (١٢٢ ج١٢١)-

⁴) (ابن بطال (ج۵ص۳۸)-

۵) (عددةالقاری (ج ۱ ۱ ص۱۲۲)-

۶) (فتع البارى (ج۶ص٠٤)-

٧) (قوله: عن أبي هريرة رضى الله عنه: الحديث أخرجه مسلم كتاب الإمارة باب بيان الرجلين يقتل أحدهما للقاتل والمفتول في سبيل الله الأخر يدخلان الجنة رقم (٤٨٩٤) والنسائئ في سننه، كتاب الجهاد، باب اجتماع القاتل والمفتول في سبيل الله في المدر المد في الجنة، وتفسير ذلك رقم (٣١٤٧-٣١٤٨) وابن ماجه في سننه المقدمة باب فيما أنكرت الجهمية رقم (١٩١)-

تراجم رجال

ا- عبدالله بری یوسف: دا عبدالله بن یوسف تنیسی دمشقی میار دی د ده حالات ((بدهالوسی)) دونم حدیث په ذیل کښې تیرشوی دی (۱)

r- مالك: دا مشهورامام مالك بن انس بن مالك الاصبحى مين دي.د دوى حالات هم «بهدالوم» دونم حديث په ذيل كښې تيرشوى دى.(٢)

-- ابوالزناد: دا ابوالزنادعبدالله بن ذكوان بين دكون بين دوى حالات ((كتاب الإيمان باب حب الرسول صلى الله عليه من الإيمان) (٣)

٣- الاعرج: دا ابوداودعبدالرحمن بن هرمز بَيْنَاتُ دي. دُدوي حالات هم دُ مذكوره باب لاندې تيرشوي دي. (۴)

٥- ابوهريره: دا مشهور صحابى رسول تَهْيَم، حضرت ابوهريره عبدالرحمن بن صخر الله الموريره عبدالرحمن بن صخر الله ادى. ددوى حالات ((كتاب الإيمان باب أمور الإيمان) لاندې راغلى دى. (٥)

قوله: أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: يضحك الله إلى رجلين: و خضرت ابوهريره الله الله روايت دى چه رسول الله الله الله الله عالى و دوو سرونه راضي كدى.

د الله تعالى د طرف نه د ضحک د نسبت توضيح دلته په حديث باب کښې د الله تعالى د طرف د ضحك نسبت كريشويدې او ضحك د مخلوق صفت دى. نود دې نه د خالق مخلوق سره تشبيه لازم راځى؟ علامه كرمانى فرمائي چه ضحك او دا قسم نور مثالونو اطلاق كه په الله تعالى باندې وى نو د دې نه مجازا د دې لوازم مراد كيږى او لازم الضحك د الله تعالى رضا ده. دلته به د ضحك نه مراد د الله تعالى رضاوى. (۶)

علامه خطابی میشی فرمانی چه هغه ضحك كوم چه د انسانی صفاتو نه دی اود سری د خه خوشحالنی او فرحت د اظهار د پاره كیږی، د دې اطلاق الله تعالى د پاره ناجائز دې. د دې ذكركولو وجه دلته دا ده چه دا د بشر په تعجب باندې دلالت كوى، د څه تعجب وغيره د وجه او د الله تعالى په صفت كښې كه چرې دا لفظ اووئيلې شى نو دا د رومېنى سړى په حق كښې اخبار عن الرضااود دوئم سړى په حق كښې اخبار عن القبول دې. يعنى الله تعالى د

۱) (کشف الباری (ج ۱ ص ۲۸۹)-

 $^{(-10^{-1})^{-1}}$) و کشف الباری $(-10^{-1})^{-1}$

۲) (کشف الباری (۲ص۱۰)-

٤) (حواله بالا(ص١١)-

۵) (کشف الباری (ج ۱ص ۶۵۹)-

ع) (شرح الكرماني (١٢ص١٢)-

امام بخاری میند (کتاب التفسیر) ۲) به روایت کښی د ضحك تفسیر ((الرحمة)) سره كړيدې. نو علامه خطابی کرانی فرمائی چه دا تفسیر قریب دی خو ضحك د رضا په معنی محمول کول اقرب واشبه دی. (۳)

امام خطابی مرید نور فرمائی چه د دی جملی معنی داهم کیدیشی چه الله تعالی فرښتی د

دې دواړو حضراتو په فعل بآندې په تعاجب کښې اچوی او هغوی خندوی. (۴) او ابن فورك پُوليځ فرمانی مطلب دا دې چه الله تعالی د خپل فضل اظهار فرمانی لکه چه

اهل عرب وائي ((ضحك الأرض من النهات)) كله چه زمكه خپل شينكي (بوټي) ښكاره كړي. (۵) علامه ابن الجوزي يُراثِي فرمائي چه په دې قسم جملوكښې د اكثرو سلفو صالحينو عمل دا پاتی شویدی چه هغه په خپل ظاهرباندی پریخودی شی اوعقیده صرف ددی خبری اوساتلی

شی چه الله تعالى د مخلوق د صفاتونه بری دی او په ظاهر باندی د پریخودلو مطلب دا دی مونږ ته د دی باره کښی څه علم نشته او الله تعالى د مخلوق د صفاتونه منزه دې (۶) علامه عینی او حافظ ابن حجر سُرائی چه د ضحك نه مراد دلته رضا ده او په دې

باندې د ضحك متعدى بالىكىدل دلالت كوى. نووئيلې كيږى ((ضحك فلاه إلى فلان))كله چه سړي بل چاته په خنده رويه مخ سره متوجه شي نو ښکاره خبره ده چه داسې متوجه کيدل په رضاً او قبولیت سره دلالت کوی. (۷)

قوله: يقتل أحدهما الآخريدخلان الجنة: به دوى كښې يوبل قتل كوى اودواړه به جنت کښی داخلیږی.

جمله (رید علان الجنة))محل جرکسی ده ځکه چه دا د رجلین صفت واقع کیږی (۸)

قوله: يقاتل هذا في سبيل الله فيقتل: دى اول دَ الله تعالى به لاركښې جنگ كوى

دَصحیت مسلم په روایت کښې د دې نه وړاندې داهم مذکوردی چه صحابه کرامورضوان الله

١) (أعلام الحديث للخطابي (ج٢ص١٣٢٥) وأيضًا انظر شرح ابن بطال (ج٥ص٣٨)-

٢) (هذاكما قال العلامة اخطابي في أعلام الحديث (ج٢ص١٣٤٧) في رواية الفربري وليس عن ابن معقل. قال العافظ في الفتح: لم أرذلك في النسخ التي وقعت لنا من البخاري انظر فتح الباري (ج٨ص٩٣٢)-

٢) (أعلام الحديث للخطابي (ج٢ص١٣٤٧)-

^{£) (} أعلام الحديث للخطابي (ج٢ص١٣٤٧)-

۵) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٢٣)-

^ع) (فتع الباري (ج⁹ص ٠٠)-

۷) (حواله بالا وعمدةالقارى (۱ ۱ ج ۱۲۳)-

۸) (عمدةالقارئ (ج ٤ ١ص١٢٣)-

علیهم اجمعین به حیرانتیا سره سوال او کرو ((تالوا: کیف یارسول الله؟))(۱) چه یا رسول الله دا به ځنګه وی چه مقتول به هم جنت ته ځی او ورسره قاتل هم

د قاتل نه مواد مسلمان یا کافو؟ علامه ابن عبدالبر او ابن بطال مولی فرمانی چه د اهل علم به نزد ددی حدیث مطلب دادی چه اول قاتل کافروویعنی مسلمان د کافردلاسه مرشوی وورای حافظ ابن حجر مولی فرمائی چه هم دا امام بخاری مولی په ترجمه الباب کښی بیان کړی دی. لیکن د دی نه هم څه مانع نه دی چه د اول قاتل نه مراد مسلمان وی ځکه چه په حدیث کښی د قاتل لفظ عام دی. ((ثمیتوبالله علی القاتل)) که چرې یو مسلمان بل مسلمان عمدا او بلاشبهه قتل کړی بیا توبه او کړی اود الله تعالی په لارکښی جنګ کولو سره شهید شی نو بنگاره خبره ده چه دی هم قاتل دی لیکن جنت ته به ځی.

لیکن دا دونم مطلب به د دی حضراتو په نزد صحیح او درست کیدیشی څوك چه د قاتل د توبي قبلیدو قائل دی، لکه حضرت ابن عباس، زیدبن ثابت، ابن عمر او حضرت ابوهریره رموره رسم خو چه كوم حضرات د قاتل د توبي د قبولیت قائل نه دی د هغوی په نزد هم رومبنی معنی صحیح ده. (۳)

دُ آبن عبدالبر او ابن بطال المنظم دَ قول تائيد دَ صحيح مسلم او مسند احمددَ روايت نه هم كيرى، په صحيح مسلم كښې په صراحت سره دا الفاظ ذكر دى: ((ثميتوب الله على الآخم فيه ديه الله الله الله الله الله الله على دى نه صفامعلوميږي چه دَ قاتل نه مراد دلته كافر دي.

اود مسنداحمد د روایت الفاظ دا دی: (رقیل: کیف یارسول الله؟قال: یکون احدها کافها، فیقتل الاخم، ثمیسلم، فیغزوفیقتل) (۵) به دی حدیث کنبی "خود صراحت سره د کافرلفظ ذکر دی (۶) قوله: ثمیتوب الله علی القواتل فیستشهد: بیا الله تعالی د دی دوئم توبه قبلوی، او هغه د شهادت به مرتبه باندی سرفراز کیری. د ((تاب الله علی داده چه الله تعالی د توبی توفیق ورکوی او قبلوی (۷)

علامه ابن بطال او علامه عینی انتها فرمائی چه د توبی نه مراد دلته اسلام دی. یعنی الله تعالی هغه ته د اسلام قبلولو توفیق ورکوی.(۸)

١) (صحيح مسلم كتاب الإمارة باب بيان الرجلين يقتل أحدهما الآخريدخلان الجنة رقم (٤٨٩٤)-

۲) (عمدة القارى (ج ۲ اص۱۲۳) وشرح ابن بطال (ج۲ص۳۸)-

٣) (فتح الباري (ج عص ٤٠) وانظر لمزيد من التفصيل في قبولية توبة القاتل عمدا وعدمها كشف البادى كتاب التفسير (ص ١٥٨)-

٤) (صحيح مسلم كتاب الإامارة باب الرجلين يقتل أحدهماالآخر يدخلان الجنة رقم (٤٨٩٤)-

٥) (مسندآحمد بن حنبل (ج٢ص ٤٤٤، ٥١١)-

۶) (فنح الباري (ج۶ص٠٤)-

٧) (مختار الصحاح مادة توب-

٨) (شرح ابن بطال (ج٥ص ٣٨) وعمدة القارى (ج ١٤ ص١٢٣)-

د دى دليل د مسلم شريف د روايت داالفاظ دى: ((فيهديه إلى الإسلام) (١)

فائده علامه ابن عبدالبر مينه فرمائي چه د حديث باب نه دا خبره مستفاد شوه چه هر هغه

سرى كوم چه دُ الله تعالى په لاركښى آووژلى شى هغه شهيد دى. (۲) د خديث د ترجمة الباب سره مطابقت: علامه ابن المنيراسكندراني سره فرمانى چه ترجمه الباب كښې ((فیسلاد)) دې او په حدیث کښې ((پستشهلا)) راغلې دې. نو لکه چه امام بخاري ميد په دې خبره تنبيه ورکول غواړي چه شهادت مل وچه التسديد وي. په صحيح طريقه او اخلاص سره وی نو دې به هم جنت کښې داخلیږی او هر هغه علم چه على وچه التسديد وی د هغې هم دغه حکم دې سره د دې چه شهادت افضل دې. لیکن د جنت داخلیدل شهید سره خاص نه دی او مصنف برای ترجمه الباب د حدیث شرح آکر خولی ده. (۳)

[٢٦٢٠] حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِي حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ قَالَ أُخْبَرَنِي عَنْبَسَةُ بْنُ سَعِيدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ (٣) قَـالَ أَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ بِعَيْبَرَ بَعْدَ مَـا اَفْتَتَعُوهَا فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَسْمِمُ لِى فَقَالَ بَعْضُ بَنِى سَعِيدِ بْنِ الْعَاصِ لَا تُسْمُ لَهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ أَبُوهُ رَيْرَةَ هَإِذَا قَاتِلُ ابْنِ قَوْقَلِ فَقَالَ ابْنُ سَعِيدِ بْنِ الْعَاصِ وَاعْجَبًا لِوَبْرِ رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ أَبُوهُ رَيْرَةَ هَإِذَا قَاتِلُ ابْنِ قَوْقَلِ فَقَالَ ابْنُ سَعِيدٍ بْنِ الْعَاصِ وَاعْجَبًا لِوَبْرِ تَدَلَّى عَلَيْنَا مِنْ قَدُومِ ضَالِ يَنْعَى عَلَىَّ قَتْلَ رَجُلِ مُسْلِمِ أَكْرَمَهُ اللَّهُ عَلَى يَدَى وَلَمْ مُبِيِّى عَلَى يَدَيْهِ قَالَ فَلَا أَدْرِى أَسْهَمَ لَهُ أَمُلَمْ يُسْهُمُ لَهُ

قَالَ سُفْيَانُ وَحَدَّثَنِيهِ السَّعِيدِي عُ عَنْ جَدِّةِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةً قَالَ أَبُوعَبُد اللَّهِ السَّعِيدِي عُهُوَعَمُرُو بْنُ يَعْيَى بْنِ سَعِيدِ بْنِ عَمْرِوبْنِ سَعِيدِ بْنِ الْعَاصِ [٢٩١٥٣٩٩٦]

تراجم رجال

ا- حميدي: دا مشهور امام حديث ابوبكر عبدالله بن الزبيرعيسي القرشي الحميدي المستهور امام دې د دوې مختصر حالات ((پدهالوحي)) اولني خديث لاندې او تفصيلي حالات ((کتاب العلم باب تول البحدث: حدثنا أو أخبرنا وأنبأنا) لاندى راغلي دى. (٥)

r-سفيان: دا ابومحمدسفيان بن عُيينه بن ميمون الكوفي برين در دوى مختصر حالات ((بدءالوس)) اولني حديث لاندې او تفصيلي حالات ((كتاب العلم باب قول البحدث: حدثنا

١) (صعيح مسلم كتاب الإمارة باب الرجلين يقتل أحدهما الآخر يدخلان الجنة رقم (٤٨٩٤)-

۲) (فتح الباری (ج۶ص ۱۱) وعمدة القاری (ج ۱۲۳ –۱۲۳)-

۳) (فتح الباري (ج۶ص ٤٠) والمتواري-

أبى هريرة رضى الله عنه: الحديث أخرجه البخارى أيضًا (ج٢ص/٤٠٨) كتاب المغازى باب غزوة خيبر. رقم (٢٣٧٤) وأبوداؤد في سننه كتاب الجهاد باب فيمن جآء بعدالغنيمة لاسهم له رقم (٢٧٢٣-٤٧٢٣) ۵) (کشف الباری (ج۱ص۲۳۷) و (ج۳ص۹۹) -

اوالعبرداوالها) لاتدې راغلي دي. (١)

--الزهرى: دا ابوبكر محمدبن مسلم بن عبيدالله بن عبدالله ابن شهاب الزهرى كُلُهُ دي. دُ دوى حالات ((بدحالومي)) دُ دريم حديث لاندې تيرشوى دى. (٢)

م-عنبه بن سعید: دا عنبسه بن سعید بن العاص بن سعید بن العاص بن امیه القرشی الاموی مختید دی. ابوایوب او ابوخالد د هغه کنیت دی. (۳)

دَ هغه مور ام ولد ود. (۴) دې

دَ حضرت انس بن مالك، حضرت ابوهريره او حضرت عمر بن عبدالعزيز تُعَالَمُ وغيره نه دَ حديث روايت كوى.

اود هغه نه د حديث روايت كونكوكبني اسماء بن عبيد الضبعي، حبيب بن ضمرة، محمد بن عمرو بن علقمه، امام زهري او ابوقلابه الجرمي المناع وغيره شامل دي. (٥)

امام یحیی بن معین، امام ابوداود او امام نسانی پینی فرمانی (ثقة) (ع) امام

امام دارقطنی میلی فرمائی ((لقة: وهوجلیس للحجاج بن یوسف)) (۷)

ابوحاتم كين فرمائي ((لاباسهه))(٨)

يعقوب بن سفيان کيايج هم د ده توثيق فرمائيلي دي. (٩)

حافظ ذهبی کید فرمانی ((ثقة، تابع، کان أحدالاشراف)) (۱۰)

حافظ ابن حجر کی فرمانی ((لعة))(۱۱)

ابن حبان منه معه په رکتاب الثقات کښې ذکر کړيدې. (۱۲) دې د صحيحين او سنن ابوداود راوي دي. (۱۳)

۱) (کشف الباری (ج۱ص۱۳۷) و (ج۳ص۱۰۲)-

۲) (کشف الباری (ج۱ص۲۲۶)-

٣) (تهذيب الكمال (ج٢٢ص٨٠٤) الثقات لابن حبان (ج٥ص٢٤٨)-

٤) (طبقات ابن سعد (ج٥ص٢٣٩)-

٥) (دَ شيوخ او تلامذه د باره او كورئ تهذيب الكمال (ج٢٢ص٤٠٩)-

ع) (حواله بالا-

٧) (حواله بالا-

 $[\]Lambda$) (حواله بالا والجرح والتعديل (ج0ص 3 1) رقم (1109، 1779) (

٩) (تهذيب التهذيب (ج٨ص١٥٤)-

۱۰) (میزان الاعتدال (ج۳ص۳۱)-

١١) (تقريب التهذيب (ص٤٣٢)-

۱۲) (الثقات لابن حبان (ج۵ص۲۶۸)-

۱۳) (الكاشف للذهبي)ج٢ص٩٩)-

يدكال ۱۰۰ه كښې د هغه انتقال اوشو. (۱) رحبه الله رحبة واسعة.

٥- ابوهریره: دا د رسول الله تراهم مشهور صحابی حضرت عبدالرحمن بن صخر المان دی، د دوی حالات ((کتاب الایمان باب أمور الایمان) لاندې تیرشوی دی. (۲)

نوله: قال: أتيت رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو بخيبر بعد ما افتتحوها،

فقلت: بأرسول الله، أسكمرلي: حضرت ابوهريره الأثن فرمائي چه زه د فتح خيبر نه پس حضور نالله هم په خيبر كښي وو د هغوى په خدمت كښي حاضر شوم نو عرض مي اوكړو چه په مال غنيمت كښي ماله هم حصه راكړئي.

یو تعارض اود هغی جواب: دلته حدیث بات کښی دا راغلی دی چه سائل حضرت ابوهریره دا و و او منع کونکی حضرت ابان بن سعید اللی و و او منع کونکی حضرت ابان بن سعید اللی و و او منع کونکی حضرت (۴) کښی دا ذکر دی چه سائل ابان بن سعید بن العاص اللی و و ، او منع کونکی حضرت ابوهریره اللی و و په دی کښی دی:

((نقال أبان: اقسم لنايارسول الله، قال أبوهريوة: فقلت: لاتقسيم له يارسول الله))

نود تعارض لری کولو د پاره محمدبن یحیی ذهلی کلی خو دا جواب ورکړو چه راجع حضرت ابوهریره کالی مانع کیدل دی او ابان بن سعید وو (۵)

او خطیب بغدادی کار افاقی چه د بخاری حدیث باب راجع دې په کوم کښې چه د حضرت ابوهریره نظیم سائل کیدل مذکور دی. (۶)

د حافظ ابن حجر او علامه عینی شخ رائی داده که د سنن ابوداود روایت صحیح اود بخاری شریف د روایت سره برابر او گرخولی شی نود دی خبری احتمال شته چه دوارو د یوبل د پاره منع کری وی. د حضرت ابان تاشی د پاره حضرت ابوهریره تاشی به دی دلیل باندی منع اوکره چه داد ابن قوقل قاتل دی اود حضرت ابوهریره تاشی د پاره د حضرت ابان تاشی دا دلیل پیش کرو چه دی د جنگ او جهاد قابل نه دی چه ده له حصه ورکریشی (۷) نو اوس په دی روایاتو کنبی هیخ تعارض پاتی نشو. اوس پوه بله خبره باندی پوهه شنی چه امام ابوداؤد میشی (۸) چه کوم روایت نقل کرو په دی اوس پوه بله خبره باندی پوهه شنی چه امام ابوداؤد میشی (۸) چه کوم روایت نقل کرو په دی

۱) (تقريب التهذيب)ص۲۳٤)-

۲) (کشف الباری (ج۲ص۶۵۹)-

٣) (صحيح البخاري كتاب المغازي باب غزوة حيبر رقم (٢٣٨ ٤)-

٤) (سنن آبي داود كتاب الجهاد باب فيمن جاء بعد الغنيمة لاسهم له رقم (٢٧٢٣)-

۵) (فتع الباري (ج٧ص٤٩)-

^ع) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٢٤)-

٧) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٢٤) وفتح البارى (ج٧ص٩٦)-

٨) (سنن أبي داؤد كتاب الجهاد باب فيمن جاء بعد الغنيمة لاسهم له رقم (٢٧٢٤)-

کښې د (رایان)) په ځای سعیدبن العاص ذکر دې حالانکه صحیح ابن سعید دې. خطیب بغدادی مختله فرمائی((وانهاهواین سعید)واسههایان)) (۱)

قوله: فقال بعض بنى سعيد بر العاص: لاتسهم له يارسول الله: نود سعيد بن العاص يو خوى اووئيل يارسول الله: د مال غنيمت نه ده ته حصه مه وركوه. ((بعد به سعيد بن العاص)) نه مراد حضرت ابان بن سعيد المن دي (۲)

قوله: ابان بر سعید: دا ابوالولید ابان بن سعید بن العاص بن امیه بن عبدشمس بن عبدشمس بن عبدشمس بن عبدمناف الاموی القرشی تالیخ دی (۳) د هغه مور صفیه یا هندبنت المغیرة ده چه د خالدبن ولید ترور وه. (۴) د دوی سلسله نسب نبی کریم تالیخ سره په شپږم پشت کښی ملاویږی (۵)

د هغوی والد ابواُحیحه سعید بن العاص د جاهلیت د سردارانو نه وو اود چیر شان اوشوکت مالك وو. د هغه اته خامن وو په كومو كښې چه پنځه په اسلام باندې مشرف شوې، حضرت ابان الله نوراندې د هغه دوه رونړه خالد او عمر اسلام راوړلې وو. (۶)

دَ علامه ابن عبد البري المرابية مطابق دوى دَ حديبيه او خيبر دَ جنتي په مينځ كښى ايمان راوړلى دى . (٧) اوابونعيم فرمانى چه د غزوه خيبر نه اول هغوى اسلام قبول كړواو ابن الاثير جزرى ريده . (٨)

دَ اسلام قبلولوسبب: دَ هغوی دَ اسلام راوړلو سبب دا جوړشو چه دَ تجارت په غرض دَ شام طرف ته اووتلو، هلته دَ هغه ملاقات يو راهب سره اوشو، دَ راهب نه ئي دَ رسول الله تالله باره کښې معلومات اوکړل او وئي وئيل چه زه دَ قريشو يو فرد يم او په مونږ کښې يو سړې راپيدا شوې دې چه د چاګمان او خيال دا دې چه هغه الله تعالى مبعوث کړيدي لکه څنګه چه ئي حضرت موسى تيايي مبعوث کړې وو. نودې راهب تپوس اوکړو ستاسو د دغه سړى نوم څه دې؟ هغه وئيل محمد. راهب وئيل زه د هغه اوصاف بيانوم. بيا هغه راهب دَ رسول الله تالله اوصاف حميده، د هغوى عمرمبارك او نسب وغيره ئي بيان کړل. نو حضرت ابان الله تالله اوصاف حميده، د هغوى عمرمبارك او نسب وغيره ئي بيان کړل. نو حضرت ابان الله تالله کانه دې باندې صاد اوکړو او وئي وئيل هغه هم دغه شان دې لکه څنګه چه تا بيان

۱) (عمدة القارى (ج ۱ اص ۱۲۱)-

٢) (حواله بالا (ص١٢٣)-

٣) (سيرأعلام النبلاء (ج١ص ٢٤١) وتهذيب تاريخ دمشق الكبيرلابن عساكر (ج٢ص١٢٧)-

^{؛) (}أسدالغابة في معرفة الصحابة (ج١ص١١)-

٥) (حواله بالا-

ع) (الاستيعاب في أسماء الأصحاب (ج ١ص٤٤)-

٧) (سير أعلام النبلاء (ج ١ص ٢٤٠) الاستيعاب في أسماء الأصحاب (ج ١ص ٤٤)-

٨) (أسدالغابة (ج١ص١٤٨)-

اوكرو راهب ونيل ((دالله، ليظهران على العرب، ثم ليظهران على الأدس)) به الله چد هغد بد بد عربو غالب راخى بيا يه به يوره دنيا غالب راخى،

بیانی حضرت آبان گان ته اووئیل چه رجل صالح یعنی نبی کریم نظیم ته زما سلام اورسوه حضرت آبان گان کله مکی مکرمی ته واپس شو نو نبی کریم نظیم خلقو نه خیرو عافیت معلوم کرواود اول نه د هغه عادت وو چه د رسول الله نظیم او صحابه کرامو بدگوئی به نی کوله، هغه نی پریخودل، دا د حدیبیه نه وړاندې واقعه ده.

بياً چه كله رسول الله ظهر د حديبيه طرف ته لارل أو واپس شونو حضرت ابان ظهر هم د هغه اتباع اوكره او اسلام ئى قبول كرو (١)

کله چه نبی کریم تُنظِیم حضرت عثمان بن عفان اللی ته د حدیبیه په ورځ د قریش مکه طرف ته لیکلی وو نو هم حضرت ابان اللی هغه ته پناه ورکړې وه. حضرت ابان الیکی حضرت عثمان اللیکی په اس سورکړو تردې چه هغه په مکه مکرمه کښې داخل شو اوعثمان کانی اووئیل:

قوله: أسبل وأقبل ولاتخف أحداً بنو سعيد أعزة الحرم: يعنى بهادرى بناينى او وراندي تيريزنى او د جا نه مه ويريزنى ځکه چه بنوسعيد د حرم د معززينونه دې (۲) هغه نبى کريم ترکم په بعض سرايا کښې د لښکر امير هم مقرر کړې وو په هغې کښې يو د نجد طرف ته ليګلې شوې سريه هم شامل ده. (۳)

او بیا نبی کریم مای حضرت علاء بن الحضرمی کان معزول کرو چه د بحرین والی وو حضرت ابان کان کان کی به ۱ هجری کنبی والی مقرر کرو او هغه په دې منصب باندې د نبی کریم کان د وفات پورې وو. د نبی تای او وفات نه پس هغه مدینې منورې ته واپس راغلو نو حضرت ابوبکر کان اراده او کره چه دې بیا بحرین ته اولیګی نو هغه اوفرمائیل ((لا عمل لاحلا بعد رسول الله کان کی د وفات نه پس به زه د چا د پاره هم د عامل فرائض نه پوره کوم. او دا هم روایت دې چه هغه په یمن کښې د حضرت ابوبکر کان د طرف نه والی مقرر کیدل قبول کړې وو. (۴)

دُ هُغُهُ دُ وَفَاتَ بِهُ وَخَتَ كُنِّنِي مُخْتَلِّفُ اقْوَالَ دَى:

ابن اسحاق مرائی (دفتل ابان وعبرو ابنا سعید بیوم البرموك)) خود ابن اسحاق د دې قول چا هم مطابقت نه دې كړې. او غزوه يرموك ۱۵ هجرى د حضرت عمر المان په دورخلافت كښې پيښه شوې وه (۵)

ودا هم اووئیلی شو چه دی د (مرج الصفر) په ورځ شهید شوی د مرج الصفر واقعه ۱۳هجری

١) (أسد الغابة (ج١ص١٤٩) وتهذيب تاريخ دمشق الكبير (ج٢ص١٢٨)-

٢) (الاصابة (ج ١ص ١٣) والاستيعاب (ج ١ص ٤٤)-

٣) (الاستيعاب (ج١ص٤١)-

^{4) (}سيرأعلام النبلاء (ج ١ص ٢٤١) أسد الغابة (ج ١ص ١٤٩)-

٥) (أسدالغابة (ج١ص١٥)-

کښې دور خلافت عمري کښې پیښه شوې وه. (۱)

. ب در مرا و صحیح قول د موسی بن عقبه دی د کوم تائیدچه مصعب، زبیر او اکثراهل نسبو م دریم او صحیح قول د موسی بن عقبه دی د کوم تائیدچه مصعب، زبیر او اکثراهل نسبو م کریدی چه حضرت ابان تائی خپل رور خالدبن سعید سره په (جنگ اجنادین) کښی شهید شوی .(۲) هم دا قول امام ذهبی هم صحیح محرخولی دی، هغوی لیکی:

(إثم إنه استشهدهووا عولايوم أجنادين على الصحيح)

دَ صحیح قول مطابق هغه اود هغه رور جنگ اجنادین کښې شهیدان شوي. هغه د نبي کريم تراج نه صرف يو روايت نقل كريدي او هغه دا دى: ((وضع الله عزوجل كل دم في الجاهلية، أوقال: کل دم کان قالحاهلیة، فهوموضوم (۴) یعنی هره هغه وینه چه د جاهلیت په زمانه کښې بهیولې شویده، هغه الله تعالی معاف کریده، یا ئې دا اوفرمائیل چه هره هغه ناحق وینه کومه چه په جاهلیت کښې بهیولې شوې وه هغه معاف ده.

قوله: فقال أبوهريرة: هذا قاتل ابر قوقل: حضرت ابوهريره المثنّة فرمائي دي ربعني ابان الثنّة د ابن قوقل قاتل دي

دَ حضرت ابوهريره فَالْمُؤَ دَ دې قول مقصددادې چه ابان فَالْمُؤ په حالت کفرکښې قوقل فَالْوُ قتل کړې وو په دې وجه هغه ته د غنيمت نه حصه نه دې ملاويدل پکار. اود ابن قوقل نه مراد حضرت نعمان بن مالك بن تعلبه الملك وي (٥)

١) (حواله بالا-

٢) (أسدالغابة (ج١ص١٥٠) الاستيعاب (ج١ص٤٧) "دَ جنك اجنادين مختصر پيژندګلو" اجنادين دَ فلسطين په علاقو رمله او بيت حبرون په مينځ کښي د يو مشهور ځائ نوم دې (معجم البلدان (ج١ص١٠)- په دې مقام دَ حِضِرت ابوبکر صَديقِ لَگاتُهُ دَ دوِر خلافت په آخری ورځو کښې دَ مسلمانانو او رومیانو په مینځ کښې یو خونړې جنګ اوشو د رومیانود فوځ مشر د هرقل رور تهیوډورس وو اود هغه لاندې یو لاکه رومی فوځ وو. د مسلمانانو لښکر په هغه دریو جدا جدا ټولو باندې مشتمل ووچه فلسطین او اردن سره خواوشا جنګې کاروایانو کښې مصروف وو. د دې بورو بامدی مستمل ووچه فستمین او اردن سره خواوسه جمعی فاروایانو دینی مصروف وو. د دی دریوارو لینکر مشری به ترتیب سره حضرت عمرو بن العاص، شرجیل بن حسنه او یزید بن ابی سفیان رضی الله عنهم کوله. د رومیانو او مسلمانانو به مینخ کنبی خو سرحدی جهرپونه شوی وو به کومو کنبی چه خوخل رومیان غالب راغلی وو، او آخر دا دریواره ډلی د حضرت خالد بن ولید داید تا کنبی راجمع شوی او د دوارو لینکرو به مینخ کنبی جمادی الاولی ۱۳ هجری کنبی فیصله کن جنگ اوشو. کوم کنبی چه د مسلمانانو متحده فوخ د دنیمن فوخ ته د اجنادین به مقام ماتی ورکره او اجنادین د همیشه د پاره د مسلمانانو د اثرلاتدی راغلو. (دائره معارف اسلامیه تحت ابی بکو: (ج۱ص۷۵۵ و تعت اجنادین (ج۱ص۱۰۱)- په دې جنګ کښې د مسلمانانوهم يو خاص تعداد شهيدان شو، په كوم كښى چه حضرت عبدالله بن زبير بن عبدالمطلب، عكرمه بن أبى جهل او حارث بن هشام رضى الله عنهم غوندي صحابه شامل وو. (معجم البلدان (ج١٠٣٥)-

٣) (سيراعلام النبلاء (ج ١ص ٢٤١)-

١٤) (الاستيعاب (ج١ص٨٤) و الإصابة (ج١ص١١)-

۵) (عبدة القارى (ج ٤ ١ص١٢٣)-

قوله: حضرت نعمان بر قوقل الملائظ: دا نعمان بن مالك بن ثعلبه بن اصرام بن فهدبن ثعلبه بن اصرام بن فهدبن ثعلبه بن قوقل په نوم ثعلبه بن قوقل په نوم ياديږي. (١)

او بعض حضراتو دا وئيلي چه قوقل د تعلبه يا مالك لقب دې د چا نوم نه دې. (۲) دې د بدرين نه دې. (۳)

دې د رسول الله ناهم نه د حدیث روایت کوی او د ده نه حضرت جابر بن عبدالله الله د حضرت جابر بن عبدالله الله د حضرت حدیث روایت کریدې. خود ده سماع د حضرت نعمان نه دام، په دې وجه به روایت مرسل وی. (۴)

دَ مسلم شریف په یو روایت کښې د هغه ذکر راغلې دې، حضرت جابر النځ فرمانی (الله النها صلیات المکتوبة ۱۰۰۰ النها صلیات المکتوبة ۱۰۰۰ النها صلیات المکتوبة ۱۰۰۰ النها صلیات المکتوبة ۱۰۰۰ النها مخاوه احد کښې شهیدشوې او قاتل حضرت ابان بن سعید النځو وو لکه چه په حدیث باب کښې ذکر دی. او بعض اهل مغازی قاتل صفوان بن امیه محرولې دې خو دا قول

مرجوح دی او دا هم کیدیشی چه دی شهید کونکوکښی دواړه شریك وی. (۶) قوله: فقال ابر سعیدبر العاص: واعجبالوبرتدلی علینا می قدومرضان

ینعی علی قتل رجل مسلم، اگرمه الله علی یدی ولم یه نی علی یدی ان حضرت آبان بن سعید ناش وائی حیرانیتا ده په دې پیشوګی باندې چه د ضان غر د خوکې نه راکوزشو راغلو، دې په ماباندې د پو داسې سړی متعلق عیب لګوی چاته چه الله تعالی زما په لاس عزت یعنی شهادت سره سرفراز کړو او هغه نی منع کړو چه هغه به زه په خپل لا دا د کا

د حضرت ابان بن سعید الله مطلب د دی قول نه دا دی که ما نعمان بن قوقل الله په خپله زمانه د کفر کښی شهید کړو نو هغه د ده د وجه نه د شهادت په اوچته درجه باندې فائز شو او ورسره په ما باندی د الله تعالی فضل او احسان اوشو چه الله تعالی زه د هغه د لاس نه د مي کولو نه بچ کړم. که هغه زه په هغه وخت کښی قتل کړې ووم نو په آخرت کښې به زه ذليل او خوار وم. ليکن الله تعالى زه د غه ذلت نه بچ کړم. نو په دې کښې د پيغور وغيره څه خبره ده؟ (۷)

۱) (أسدالغابة (ج00) وفتح البارى (ج00) - ۱

٢) (الإصابة (ج٣ص ٥٦٤)-

٣) (أسد الغابة (ج٥ص٣٢٠)-

^{\$) (}حواله بالا-

۵) (صعيع مسلم (ج١ص٣٢) كتاب الإيمان باب بيان الإيمان الذي يدخل به الجنة.... رقم (١٤-١٧)-

ع) (فتح الباري (ج عص ١ ٤) واسدالفابة (ج٥ص ٣٢٠)-

٧) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٢٥) وانظر لمزيد من التفصيل: كشف البارى كتاب المغازى (ص ٢٥٢ - ٤٥٤)

قال: فلاأدري أسهم له أمرلم يسهم له: وني فرمائيل ماته نه ده معلومه جد قال: فلاأدري أسهم له أمرلم يسهم له:

رسول الله تنظم هغه ته (د غنيمت نه) حصه وركړه اوكه نه لاندې د اوكه نه الله عينيه يا د هغه نه لاندې د اوكه نه عينيه يا د هغه نه لاندې د

امام بخاری برای خوك شیخ دی (۱) د حدیث باب لاندې یوه مسئله ذكر كولې شي چه په غنیمت كښې جهاد ته د روستو راتلونكي حصه شته كه ند؟ د دې تفصيل چونكه مونږ مغازي كښې ذكر كړيدې نو په دې وجه دې هم هلته اوكتلې شي (۲)

قوله: قال سفیان: وحدانیه السعیدی عرب جده عرب أبی هریرة: د دی عبارت مقصد دا دی چه حدیث باب د حضرت سفیان ابن عینیه مخطه نه دوو سندونو سره مروی دی یو خو هم هغه سند دی چه په ماقبل کښی تیرشو یعنی ((حداثنا الحبیدی، حداثناسفیان حداثنا الزهری الله عندی الزهری او عنبسه بن سعید یه ځای ((السعیدی عن جده)، او دا درئه طریق امام حمیدی په خپل سند کښی ذکر کړیدی. (۳).

قوله: قال أبو عبدالله: السعيدى: عمروبر يحيى د ابو عبدالله نه مراد امام بخارى بيني دى إو دلته هغوى د السعيدى نوم او نسب خودلى دى چه د سعيدى نوم عمرو بن يحيى بن سعيد بن عمروبن سعيد بن العاص دى. (۴)

د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت: د حدیث ترجمه الباب سره مطابقت د حضرت ا بان بن سعید کاشی به دی قول کاشی دی. «اکرمه الله بیدی» یعنی نعمان بن قوقل کاشی د خضرت ابان کاشی د کرو ابان کاشی د کرو ابان کاشی د کرو کرد ابان کاشی د کرو کرد ابان کاشی د کرد خو حضرت ابان کاشی د کرد به حالت کنبی نه دی وژلی شوی بلکه هغه د غزود احد نه پس هم ژوندی وو او هغه نه د توبی توفیق اوشو او اسلام ئی قبول کرو او همدغه د ترجمه مقصد هم دی. (۵)

٢٩-بَأَب: مَنُ اخْتَارَالْغَزُوعَلَى الصَّوْمِ

دَ ترجمة الباب مقصد: دَ ترجمة الباب مقصد دا دې چه يو سړې جهاد له په روژه باندې ترجيح ورکړي دې د پاره چه د روژې د وجه د هغه بدن د ضعف او کمزورئي ښکار نشي نو

۱ (عمدة القارى (ج ۱ ۱ ص۱۲۵)-

٢) (كشف الباري كتاب المغازي (ص٤٤٧)-

٣) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٢٥) وفتح البارى (ج ١٥ ص ١٤)-

٤) رالسعيدي أود هغه د نيكه حالات "كتاب الوضوء، باب الاستنجاء بالحجارة" لاندې بيان كړې شدى دى-

۵) (عمدة القارى (ج ۱۶ ص۱۲۳)-

د هغه دا فعل صحيح دې او په سنت کښې د دې اصل موجود دې

دونمه خبره دا ده که د مجاهد روژه نه هم وی نو بیا هم د هغه د پاره د روژه دار او د شپی د قیام کونکو برابر ثواب لیکلی کیږی. ځکه چه نبی ایم مجاهد ته د داسې روژه دار سره تشبیه ورکړیده چه تشبیه ورکړیده چه سترې کیږی نه. (۱)

[٢٦٤٠] حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُغْبَهُ حَدَّثَنَا ثَابِتُ الْبُنَانِيُّ قَالَ سَمِعْتُ أَنْسَ بُنَ مَالِكِ رَضِى اللَّهُ عَنُهُ (٢) قَالَ كَانَ أَبُوطَلُحَةَ لَا يَصُومُ عَلَى عَهُدِ النَّبِيِّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ مِنْ أَجُلِ الْغَزُو فَلَنَا قُبِضَ النَّبِيُّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمُ أَرَّهُ مُفْطِرً الْإِلَّا يَوْمَ فِطُرِ أَوْأَضْعَى

تراجم رجال

ا- آدم: داابوالحسن آدم بن ابی ایاس عبدالرحمن العسقلانی مید در در در حالات ((کتاب الإیمان) الایمان المسلمون من المسلمون من السانه ویده) لاندې راغلی دی. (۲)

r-شعبه: دا امیرالمؤمنین فی الحدیث شعبه بن الحجاج عتکی بصری مینه د هغه حالات هم د مذکوره باب لاندی راغلی دی. (۴)

-- ثابت البناني: دا مشهور تابعی بزرگ ابومحمد ثابت بن اسلم بنانی بصری بینی دې د د د حالات (رکتاب العلم باب القرامة والعرض على المحدث)) په ذیل کښې راغلی دی. (۵)

م- انس بر مالك: دا مشهور صحابى حضرت انس بن مالك الماشي دې. د د حالات (کتاب الإيبان باب من الإيبان ان ان يحب لأخيه مايحب لنفسه)) په ذيل كښې تير شوى دى (۶)

قوله: قَالَ كَانَ أَبوطلحة لايصوم على عهد النبى صلى الله عليه وسلم من أجل الغزو: حضرت انس بن مالك الله عليه فرمائى چه حضرت ابوطلحه التاثيّ به دَ نبى كريم الله يُللّ به زمانه كنبى به جهاد كنبى دَ شركت به غرض روژې نه ساتلې

دلته (رابوطلعة)) نه مراد حضرت زيدبن سهل الانصارى الله در عضرت انس ناسكه پلار وو. (٧)

١) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ١٢٥) وشرح ابن بطال (ج ٥ ص ٢ ٤) -

٢) (قوله: أنس بن مالك رضى الله عنه: الحديث أخرجه البخارى فقط في هذاالباب، قال العلامة العينى: والحديث من أفراده. عمدة القارى (ج ١٤٤ص ١٢٤) وجامع الأصول (ج ١٤٥ص ٣٤٥)-

۲) (کشف الباری (ج۱ص۶۷۸)-

^{4) (}حواله بالا ـ

۵) (کشف الباری (ج۳ص۱۸۳)-

^ع) (كشف الباري (ج٢ص ٤)-

٧) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٢٥)-

روژې به نې نه ساتلې لوژې به نې شویده هغه علی الاطلاق نه ده چه بالکل روژې به نې لیکن د روژو نه ساتلو چه کومه نفی شویده هغه علی الاطلاق نه ده چه همدغه روایت اسماعیلی نه ساتلې بلکه دا په اکثرو اوقاتومحمول ده، د دې وجه دا ده چه همدغه روایت اسماعیلی نه ساتلې بلکه دا په اکثرو اوقاتومحمول ده، د دې وجه دا ده چه همدغه روایت اسماعیلی نه ساتلې بلکه دا په اکثرو اوقاتومحمول ده، د دې وجه دا ده چه همدغه روایت اسماعیلی د ابوالوليد او عاصم بن على عن شعبه په طريق سره نقل کړيدې په يو کښې ((لايکاديموم)) او په بل کښې ((کان تلبایضوم)) نو معلومه شوه چه نفی الصوم علی الاطلاق نه ده بلکه فی اكثر الاوقات ده. (١)

قوله: فلماقبض النبي صلى الله عليه وسلم لم أره مفطراً إلا يوم فطر أو أضحى: حضرت انس نائر فرمائی چه نبی تایی د دنیا نه رخصت شو نو ما هغه بغیرد روژو نه نه دی

ليدلي ما کردا چه د وړوکي اختر او لوئي اختر په ورځ. يعني د نبي كريم علي د وفات نه پس حضرت ابوطلحه علي به هميشه په روژه سره وو مگر د وړوکی اختر او لوئی اختر په ورځ به ئې روژه نه وه. ځکه چه په دې ورڅوکښې د روژو ساتلو نه منع راغلې نو په دې وجه به هغه په دې ورځوکښې روژه نه وو او په حديث کښې ذکر شوی (ریوم اضحی) نه مراد همدغه ورځې دی کوموکښې چه روژه ساتل منع دی دې د د ایام تشریق ته لفظ ضحی شامل شی او څه اشکال پیش نه شي. (۲)

پورتني حديث کښې دې طرف ته اشاره شويده چه حضرت ابوطلحه تانځو . به د نبي کريم تَنْظُ دَ وَفَاتَ نَهُ بِسِ بِهُ غُزُواتُو كَنِي شُركت نَهُ كُولُو، أُودَ حضور تَنْظُ بِهُ عَهْدُمْبَارِكُ كَنِي هغه نفلی روژی ځکه پریخی وې چه په میدان جهاد کښې چرته کمزوري ښکاره نشې لیکن د حضور ته وفات نه پس هم هغه په غزوات کښې شرکت کړیدې لکه حاکم کښت (۳) او

ابن سعد (۴) وغیره ((حمادین سلمقمن ثابت من آنس)) په طریق نقل کړی دی:

(رأن أباطلحة قرامن والآية (انفروا خفافا وثقال) ، فقال: استنفرنا الله وأمرنا الله، واستنفرنا

شيوخا وشهانا، جهزون، فقال بنولا: يرحبك الله، إنك قد عزوت على عهدالنبى صلى الله عليه وسلم وألى بكروهوا ودحن لفزوعنك الأن فغزالهم، قمات، قطلبوا جزيرة يدفنونه فيها، قلم يقدر واعليه إلا بعد سبعة أيام وما تغير) يعنى حضرت ابوطلِحه اللُّمُوِّ دا آيتِ تلاوت كرو (الغروا عفافا وثقالا) نو هغه اوفرمائيل ٢٠ الله تعالى موند ته دَ جنگ دَ وتلودَپاره حَكم رأُكَري دَي اوكه موندِ بُوداُكان يو كه خواْنان هُ وتلوحكم دي. نو زما دَ پاره دَ سفر سامان تياركړني، دَ هغه ځامنو اووئيل الله تعالى دې په

۱) (فتع الباري (ج۶ص۲۶)-

٢) (فتع البارى (ج٤ص٢٤) و(عمدة القارى (ج٤ اص١٢٤)-

٣) (المستدرك للحاكم (ج٣ص٢٥٣)-

٤) (الطبقات الكبرى (ج٣ص٥٠٧)-

تاسو باندی رحم آوکړی. په تحقیق سره تاسو د نبی کریم تالیم حضرت آبوبکر تالیم او حضرت آبوبکر تالیم او حضرت عمر تالیم په غزواتوکښی شرکت کړیدی(په دې وجه ته تکلیف مه او چته وه) مونږ به ستاد طرف نه په غزواتوکښی شرکت کوو(خو هغه او نه منل) په سمندری جنګ کښی شریک شو، هلته هغه وفات شو نو د سفر ملګرو یوه جزیره لټوله چه په هغی کښی هغه خښ کړی لیکن د اوو ورځو پورې هغوی په خپل مقصد کښی کامیاب نشو(د دی نه پس ئی هغه خښ کړو) او د هغه مړی جوسه بالکل خرابه شوی نه وو.

دی ندپس نی هغه خبس کرو) اود هغه مری جوسه بالکل خرابه شوی نه وو. ا هغهرت ابوطلحه د مذکوره عمل وجه: علامه مهلب فرمانی چه نبی کریم تریخ مجاهد ته «الصائم القائم») سره تشبیه ورکړی ده «کمامن اوائل الجهاد») په دی وجه حضرت ابوطلحه کانو جهاد په روژه مقدم کړو. خو د نبی کریم تریخ د وفات نه پس کله چه اسلام بنه خور شو د هغه جرړی مضبوطی شوی او هغه اوکتل چه اوس د هغه خاص ضرورت پاتی نشو نوغوبنتل نی چه دروژو هم هغه سره ذخیره وی او د قیامت په ورځ جنت کښی «باب الریان» نه داخل شی «۱)

د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت: د حدیث باب ترجمة الباب سره مناسبت بالکل واضح دی (کان أبوطلحة لایصوم علی عهدالنبی صلی الله علیه وسلم من أجل الغزو)) نه معلومیږی.

٣٠-بَأَب: الشَّهَادَةُ سَبْعٌ سِوَى الْقَتُلِ

د ترجمه الباب مقصد علامه عینی گوان فرمائی چه د امام بخاری گوان د دی ترجمه الباب نه مقصد دا دی چه د مقتول فی سبیل الله نه علاوه هم نور ډیر شهیدان دی د کوم ذکر چه به امام بخاری گوان په دی حدیث باب کښی کوی (۳)

[٢٦٢] حَدَّثَنَا عَبُنُ اللَّهِ بَنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ سُمَى عَنْ أَبِى صَالِحٍ عَنْ أَبِى هُرَيْرَةً وَسَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ الشَّهَدَاءُ خَمْسَةٌ الْمَطْعُونُ وَالْمَبْطُونُ وَالْغَرِقُ وَصَاحِبُ الْمُتَدُمِ وَالشَّهِيدُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ [د: ١٢٣]

تراجم رجال

اعبدالله برب یوسف: دا عبدالله بن یوسف تنیسی دمشقی رکات دی. د ده حالات ((بدم الومی)) د دونم حدیث په ذیل کښې راغلی دی. (۵)

۱) (شرح ابن بطال (ج۵ص۲۶)-

۲) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٢٥)-

۲) (عددة القارى (ج ١٤ ص ١٢٥)-

أوله عن أبي هريرة رضى الله عنه: الحديث مرتخريجه في كتاب الأذان با بفضل التجهيز إلى الظهر -

۵) (کشف الباری (ج ۱ص ۲۸۹)-

r-مالك: دا مالك بن انس بن ابى عامر الاصبحى المدنى منه دي. د ده حالات هم د مذكوره حديث لاندې راغلى دى. (١)

-- سمي دا ابوعبدالله سمى مولى ابوبكربن عبدالرحمن ميد دي. (٢)

م-ابوصالح: دا ابو صالح ذكوان زيات ميد دى د ده حالات (كتاب الإيبان باب أمور الإيبان) په ذيل کښي راغلي دي. (۳)

٥- ابوهريرة ﴿ اللَّهُ عَلَيْمُ اللَّهُ عَلَيْمُ مشهورصحابي حضرت عبدالرحمن بن صخر ﴿ اللَّهُ عَلَيْمُ دې، د ده حالات ((کتاب الإيبان باب أمور الإيبان)) لاندې راغلی. (۴)

قوله: أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: الشهداء خمسة: المطعون، والمبطون، والغريق، وصاحب الهدم، والشهيد في سبيل الله: دَ حضرت ابوهريرهُ وَالمبطون ، والغريق ، وصاحب الهدم، والشهيد في سبيل الله: دَ عضرت ابوهريرهُ وَاللَّهُ عَلَيْكُمْ فَرَمَانَيلَى جِهِ شَهَيدان پنځه دى: يو هغه سړې چه دَ طاعون په وباکښی هلاك شي، دونم چه د خيټي د بيمارئي نه مرشى، دريم چه څوك ډوب شي مړشي، څلورم چه د ديوال راغورزيدو سره مړ شي او پنځم شهيدفي سبيل الله.

د شهداو په تعداد کښې اختلاف: دلته په حديث باب کښې («الشهداء خمسة») راغلي دي. او په موطاكښې د حضرت جابر بن عتيك الماني په روايت كښې ((الشهداء سبعة سوى القتل))(۵) او په ترمذي کښې د حضرت فضاله بن عبيد روايت دې هغه فرمائي ((سبعت عبربن الخطاب كَانْ يقول: سبعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول: الشهداء اربعة....)) (ع) اود صرت انس بن مالك كالثي په روايت كښې دى ((الشهداء ثلاثة)) ذكر دې. (٧)

د دې احادیثونه علاوه نور هم ډیر صحیح احادیث مبارك دی (۸) په كوم كښې چه د مقتول في سبیل الله نه علاوه مختلف كسان او اشخاص شهیدان ګرځولې دی. علامه زرقاني مند د هغوی تعداد اووه ویشت (۲۷) (۹)

۱) (کشف الباری (ج۱ص۲۹۰) و کشف الباری (ج۲ص۸۰)-

٢) (دَ دوى دَ حالاتودَ پاره اوګورئ کتاب الأذان باب الستهام في الأذان ـ

٣) (كشف البارى (ج١ص٥٥٨)-

٤) (کشف الباری (ج١ص ٥٥٩)-

٥) (المؤطا للام مالك (ص٢١٥) كتاب الجنائز باب النهى عن البكاء على الميت رقم (٣٤) وأيضًا أخرجه أبوداؤد في سننه كتاب الجنائز باب فضل من مات في الطّاعون رقم (٣١٦١) والنسّائي في الصّغرى كتاب الجنائز باب النهى عن البكاء على الميت رقم (١٨٤٧)-

ع) (جامع الترمذي أبواب فضائل الجهاد باب ماجاء في فضل الشهداء عندالله رقم (١۶٤٤)-

۷) (مجمع الزواند (ج٥ص ٢٩١) وكنزالعمال (ج٤ص٥٩٣) رقم (١١٧٣٤)-

٨) (انظر التفصيل تلك الأحاديث: عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٢٥-١٢٧) والأوجز (ج ٤ ص٢٥٧-٢٥٩)-

٩) (شرح الزرقاني على المؤطأ (ج٢ص٢٢) كتاب الجنائز باب النهي عن البكام...

علامه عینی مُنطَّة څلویښت (۳۰) (۱) علامه سیوطی مَیْنَهٔ په خپل کتاب (ابواب السعادة ق اسباب الشهادة) کښی دیرش (۳۰) (۱) او شیخ الحدیث (مولانا زکریا مُینَهٔ شپیته (۴۰) ذکر کړی دی (۳) او حافظ ابن حجر مُنشِهٔ شل (۲۰) ذکر کړی دی. (۴)

روایاتوپه مینځ کښې تطبیق اوس سوال دا پیدا کیږی چه د دې مختلفو روایاتو په مینځ کښې تعداد هم صراحتا ذکر دې، د تطبیق به څه صورت وي؟

علامه کرمانی اَنَّهُ دَ دی سوال جواب دا ورکریدی چه تخصیص بالعدد دَ دی نه دَ زیاتو په نفی دلالت نه کوی. (۵)

حافظ ابن حجر او علامه عینی میلی فرمائی چه د مختلفو اعدادو ذکر علی وجه التحدید والحصر نه دی بلکه دا د مختلفو احوالو او سوالونو په بنا باندی دی. یعنی په بعض حالات مخصوصه کښی نبی کریم تایم د سائل احوال په خیال کښی ساتلو سره جواب ورکړی او هغه دغه روایت کری.

هغه دغه روایت کړی . یا حضور ناهم ته اول د دریو علم ورکړیشوې وو بیا د علم د زیاتوالی سره سره د شهیدانو

تعداد هم زيات شو. (ع)

د شهیدتعریف او حدیث باب: اوس دلته دونم سوال دا پیداکیږی چه شهید خو د فقهاؤ په اصطلاح کښی هغه دې چه چرته په یوجنګ کښی قتل کړیشی او په هغه باندې نښی هم وی،یا هغه اهل حرب یا اهل البغی یا ډاکوانو قتل کړی وی یا مسلمانانو هغه په ظلم سره وژلی وی اودا تعریف مبطون، مطعون وغیره باندې نه صادق کیږی نوداڅنګه شهیدان شو؟ د دې جواب دا دې چه قتیل في سبیل الله نه علاوه چه د کومو حضراتو باره کښې په احادیثوکښی واردشوی دی چه هغوی شهیدان دی نود هغوی شهادت د اجر په اعتبار سره دې یعنی دی حضراتو ته به هم د حقیقی شهید په شان برابر اجر ورکولی شی (۷) علماؤ حضراتو لیکلی دی چه د شهید درې قسمونه دی:

() شُهيد في الدنياوالآخرة هغه دُي چه دُ الله تعالى دُ كلمي دُ اوچتوالى دَ پاره دَ جهاد دُ پاره لا جهاد دُ پاره لار شي او شهيد شي.

﴿ شَهِيد فَى الدُنْيَافَقِط، او هغه دا دې چه سړې ميدان جنګ کښې خو قتل کړې شي خو هغه د اعلاء کلمه الله د پاره نه وي تلي د نامې او ځان خودنې د پاره تلې وي اوهلته قتل شي يادا چه شاکړې تښتيدو اومړشو اويا د غنيمت په مال کښې ئې خيانت کولو او مړ کړيشو.

۱) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٢٣)-

٢) (أوجز المسالك (٤ ص٢٥٧)-

٣) (أوجز المسالك (٤ ص ٢٤٩)-

⁴) (فتح الباري (ج۶ص۲۶)-

٥) (شرح الكرماني (ج٥٥ص٢٤)-

۶) (عمدة القارى (ج ۱۴ ص ۱۲۷) وفتح البارى (ج۶ص ۴۳)-....

٧) (شرح الكرماني (ج٥ص٤٤) وعمدة القاري (ج٤ ص١٢٧)-

و شهیدفی الآخره چه یوسړې د دیوال راپریوتلو سره مړشی یا اوسوزی یا د خیتې د بیمارنی ښکارشی اومړشی وغیره وغیره، چه کوم صورتونه په جدیث باب کښې بیان

سریسوی دی. په دې دریم قسم به په دنیاکښې د شهید احکام نه جاری کیږی یعنی د حقیقی شهیر برخلاف په هغه ته کفن هم ورکولې شي او غسل هم. لیکن په آخرت کښې به هغه سره د شهید معامله کولې شي او هغه ته به د شهید په شان اجر ورکولې شي. (۱)

اودا د الله تبارك وتعالى په امت محمد يه على صاحبها العلوة والسلام باندې خاص فضل او كرم دې چه د قتيل فى سبيل الله نه علاوه كوم كسان د شهادت د درجې حامل كرخولي دى په هغى كښي هغه تكليفونه اوپه دغه تكليفونو باندې صبر په خيال كښې ساتلى دې اود دې په وجه ئى د هغوى ګناهونه معاف كړل اود هغوى په اجراو ثواب كښى ئى زياتوالى اوكړو (١) د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت: ابن بطال مونيد په ترجمة الباب باندې اعتراض كولو سره فرمائى چه د حديث باب نه دا ترجمه دسرنه ههو مستنبط كيږى نه، ځكه چه ترجمه د اوو (٧) ده او په حديث كښى سوى القتل شهداء څلوردى. دا د دې خبرې دليل دې چه امام بخارى موني ته د دې خبرې ههو موقع ملاؤ نشوه چه هغه د دې خپل كتاب تهذيب او تنقيع كرى وى (٣))

دَ دَى اعْتراض جواب وركولو سره علامه ابن المنير اسكندراني فرمائي چه د ابن بطال المُنِيَّةُ قول په ظاهره د دي خبري دلالت كوي چه امام بخاري المنتجود دي ترجمه الباب لاندي حضرت جابر بن عتيك المُنَّةُ داخلول غوښتل ليكن قضا هغه ته مهلت ورنه كړو خود ابن بطال دا

وينا د نظر نه خالي نه ده.

اوداخبره ده چه امام بخاری گُرهٔ په دې خبره تنبیه ورکول غوښتل چه شهادت هم په قتل کښی منحصر نه دې بلکه د شهادت اسباب نورهم دی. نوپه دې اسبابو کښې په احادیثوکښې په عدد باندې اختلاف دې چه په بعض کښې پنځه دې بعض اووه، نو چه کوم حدیث په دې شرائطو باندې پوره کیدو هغه خو ئې په باب کښې ذکر کړو او په ترجمه کښې د اووه عدد ذکر کړو او په دې خبره ئې تنبیه او کړه چه په احادیثو کښې مذکوره اعداد علی معنی التحدید نه دې (۴)

او علامه کرمانی دا جواب ورکړیدې چه دلته د یو راوی نه په حدیث باب کښې عده بیانولو کښې هیره شوې ده چه اصل عدد خو هم د اووه وولیکن د نسیان په وجه نې پنځه ذکر کړل. (۵)

۱) (عمدة القارى (ج ۱ ا ص ۱۲۷) شرح الكرماني (ج ۵ ص ۲ ۲)-

۲) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ١٢٨)-

٣) (شرح ابن بطال) ج٥ص٤٦)-

٤) (المتوارى (ج ١٥٤) ورجعه العينى انظر العمدة (ج ١٢٨ص١١)-

٥) (شرح الكرماني (ج١٢ص١٢٥)-

عنف الباري كتاب الجهاد (جلداول) حافظ ابن حجر او علامه عيني التنظيم دا احتمال بعيد ګرخولي دې (۱) خود علامه كرماني ماهه با ماه با ماه با ماه با ماه با مسلم او مسنداحمد د روایت نه کیږی چه په دی روایت نه کیږی چه په دی روایاتوکښې د نورو څه خصلتونو او عادتونوذکر هم شته نو په صحیح مسلم (۲) کښې هم دَ ابوهريره اللَّمْةُ به روايت كښې ((ومن مات في سبيل الله فهوشهيد)) اضافه وارد شويده. او د مسنداحمد په روایت کښې د دې الفاظو هم اضافه شویده ((والخارعن داېته ق سبيل الله شهيد، والهجنوب في سبيل الله شهيد)) (٣) يعنى د الله تعالى په لار كښې د خپلې سورلني نه غورزيدونكي شهيد دې اود الله تعالى په لار كښې ذات الجنب بيمارئي سره مړكيدونكې

سهید دی. حافظ صاحب د دی مذکوره بالا اشکال جواب دا ورکړی دی چه دا ترجمه موطا (۴) د یو روایت نه اخذ شویده چه د حضرت جابر بن عتیك اللاظ نه مروی دی. او په دی کښی شهدا، سوی القتل فی سبیل الله هم اووه قسمه بیان کړیشوی دی. (۵) او شیخ الحدیث مولانا محمدز کریا کاندهلوی میلید دا فرمائیلی دی چه زما په نزد خبره دا

ده چه لفظ ((سهع)) کله مطلقًا ذکر کریشی نود دې نه مراد کثرت وی، نود ترجمه الباب مطلب به اوس داشی چه(راتتل فی سبیل الله) نه علاوه هم دَشهادتُ اسباب دیر دی اود ((سبع)) لفظ به په خپله حقیقی معنی پاتې نشی بلکه په معنی مجازی (کارت) به محمول کیږی (۶) [٢٦٤٥] حَدَّثَنَا بِشُرُ بُنُ هُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبُدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا عَاصِمْ عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ سِيرِينَ عَنْ أَنْيِ بُنِ مَالِكٍ رَضِىَ اللَّهُ عَنْهُ (٤) عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ الطَّاعُونُ شَهَادَةٌ لِكُلِ مُسْلِمِ [٢٠٠٠]

۱) (فتح الباري (ج۶ص۴۶) وعمدة القاري (ج ۱۲۸ص۱۲۸)-

٢) (الصحيح لمسلم كتاب الإمارة باب بيان الشهداء رم (٤٩٤١)-

٣) (مسندالإامام أحمد (ج٢ص٤٤)-

ع) (روى الإمام مالك مسند بسنده أن أخبر جابر بن عتيك رضى الله عنه أن رسول الله صلى الله عليه وسلم.... قال: وما تعدون الشهيد؟ قالوا: القتل في سبيل الله، فقال: رسول الله صلى الله عليه وسلم: الشهداء سبعة سوى القتل في سبيل الله المطعون، شهيد، والغرق شهيد، وصاحب ذات الجنب شهيد، والمبطون شهيد، والحرق شهيد، والذي يموت تحث الهدم شهيد والمرأة نموت يجمع شهيدة. انظر المؤطأ للإمام مالك بن انس، كتاب الجنائز باب النهى عن البكاء على الميت (ص٢١٥-٢١٤) رقم (٣۶)-

۵) (فتع الباري (ج۶ص٤٦)-

۶) (الأبواب والتراجم للشيخ الكاندهلوى (ج١ص١٩٥)-

٧) (قولها: عن أنس بن مالك رضى الله عنه : الحديث أخرجه البخارى أيضًا (ج٢ص٨٥٣) كتاب الطب باب مايذكر في الطاعون رقم (٥٧٣٢) ومسلم كتاب الإمارة باب بيان الشهداء رقم (٤٩٤٤)-

ڪئف اب ري

تراجم رجال

- بشرین هجمد: داابومحمدبشرین محمدالسختیانی المروزی بیتانهٔ دی. د ده حالات «بهدهانوس» د پنځم حدیث په ذیل کښې راغلی دی. (۱)

-عبد الله: دااب. عبد الرحمن عبدالله بن المبارك بن واضح الحنظلى المروزى بيني دي وَ در عبد الله عبد الله عبد الله بن المبارك بن واضح الحنظلى المروزى بيني دي وَ د حالات هم دُ مذكوره باب لاندي تيرشوي. (٢)

-- عاصم: دا ابوعبدالرحمن عاصم بن سليمان التميمي الاحول بياية دي. (٣)

--حفصه بنت سيرين: دا ام الهذيل حفصه بنت سيرين الانصاريه الميزاده (۴)

<u>د-انس بر مالك:</u> دا در رسول الله ترفيخ صحابى حضرت انس بن مالك المنتن دي درد:

حالات ((كتاب الإيبان باب من الإيبان أن يحب لأخيه ما يحب لنفسه)) لاندى تيرشويدي. (٥)

قوله: عن النبي صلى الله عليه وسلم قال: الطاعون شهادة لكل مسلم: حضرت انس التاتي فرمائي چه درسول الله ترفيخ ارشاد مبارك دي طاعون د هر مسلمان د پر: شهادت دي.

دَ حدیث پاك مطلب دا دې چه كوم مسلمان د طاعون د وجه مړشو هغه به د شهادت اوچتې مرتبى ته رسى اود هغه مركى ته به د شهادت مرك وئيلى شى.

ظُعُون يود مشهورد بيماري ده كومه چه په وبائي شكل كُنبي خوريږي او په لاكهونو خلق هلاكوي.(۶)

د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت: د حدیث ترجمه الباب سره مناسبت په دې معنی دې چه دلته د طاعون ذکر دې او وکښې یو طاعون هم دې. (۷)

١) (كشف البارى (ج١ص٤٥٥)-

٢) (حواله بالا (ص٤٤٦)-

٣) دَ ده دَ حالاتودَپاره أو كورئ كتاب الوضوء باب الماء الذي يغسل به شعر الإنسان-

٤) (د دې د حالاتودپاره او ګوري کتاب الوضوء باب التيمن في الوضوء والغسل-

د) (کشف الباری (ج۲ص٤)-

انظر الفصيل في كشف البارى كتاب الطب (ص٠٤). قال جماعة الأطباء منهم أبوعلى سينا: الطاعون مادة سمية تحدث ورما قتالا يحدث في المواضع الرخوة والمغابن من البدن وأغلب ماتكون تحت الإبط، أو خلف الأذن أوعندالأرنية قال:وسببه دم ردى مائل إلى العفونة والفساد. يستحيل إلى جوهر سمى يفسد العفووبغير مايليه ويؤدى إلى القلب كيغية رديئة، فيحدث القي والخفقان.... قاله الحافظ في الفتح (ج١٤ص١٨٠)
 ٧) (عمدة القارى (١٤ ص١٢٨)-

تراجم رجال

-ابوالولین: دا ابوالولید هشام بن عبدالملك طیالسی باهلی بصری مین دی د ده حالات (ركتاب الإیبان بابعلامة الإیبان حب الأنصار) لاندې راغلی دی (۳)

۲-شعبه: دا امیرالمؤمنین فی الحدیث شعبه بن الحجاج عتکی بصری بیر دی د ده حالات ((کتاب الإیبان باب البسلم من سلم البسلبون من لسانه ویده)) په ذیل کښې تیرشو (۴)

- ابواسی آف: دا ابواسحاق عمرو بن عبدالله بن عبید سبیعی کوفی پر د ده حالات هم ((کتاب الإیبان باب الصلاة من الأیبان) لاندې تیرشوی دی. (۵)

٣-البراء: دا مشهور صحابي حضرت براء بن عازب الشيء دي. د ده حالات هم د مذكوره

۱) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٢٩)-

٢) (قوله: البراء رضى الله عنه: الحديث أخرجه البخارى أيضًا (ج٢ص ٤٤٠) كتاب التفسير باب (لايستوى القاعدون من المؤمنين) رقم (٤٥٩١-٤٥٩٤) و(ج٢ص ٧٤٠) كتاب فضائل القرآن باب كاتب النبى صلى القاعدون من المؤمنين) ومسلم كتاب الإمارة باب سقوط فرض الجهاد عن المعدورين رقم (٤٩١١) الله عليه وسلم رقم (٤٩٩٠) ومسلم كتاب الإمارة باب سقوط فرض الجهاد عن المعدورين رقم (٤٩١١) والواب التفسير باب ومن سورة والترمذي أبواب الجهاد باب ماجاء في أهل العدر في القعود رقم (١٤٧٠) وأبواب التفسير باب ومن سورة النساء رقم (٣٠٣١) والنسائي كتاب الجهاد باب فضل المجاهدين على القاعدين-

۳) (کشف الباری (ج۲س۳۸)-

٤) (كشف الباري (ج١ص٢٧٨)-

۵) (کشف الباری (ج۲ص ۳۸۰)-

باب لاندې تيرشوی دی.(۱)

قوله: يقول: لما نزلت: (لايستوى القاعدون من المؤمنين) دعا رسول الله صلى الله عليه وسلم زيدا: ابو اسحاق السبيعى عَيْنَا وانى چه ما د حضرت برا، بن عازب الله عليه وسلم زيدا، ولايستوى القاعدون من المؤمنين نازل شو نوحضور على حضرت زيد راوغونيتو.

دلته د زید نه حضرت زید بن ثابت الله مراد دی چه د حضور ترایم د وحی کاتب وو. (۲)

قوله: فجاءبكتف فكتبها: حضرت زيد بن ثابت الله و اودى يو هدوكي راورو اودا آيت ألي اوليكلو.

په هغه زمانه کښې د کاغذ کمې وو د دې د پاره به خلقو د خپل ضرورت ليك د ځناورو په لويولويو هډوكو ليكل كول.

کتف-بفتح الکاف دکس التام- د اوږې هغه هډوکې کوم چه پلن او خور وی که د انسان وی او که د خناور .(۳)

قوله: وشكابر ام مكتوم خارته، فنزلت: (لا يستوى القاعدون من البؤمنين غير أولى الضر): او ابن ام مكتوم خارج د خپل نابيناتوب كيله اوكړه نو (لا يستوى القاعدون من البؤمنين فيداول الفهر) نازل شو. د حضرت ابن ام مكتوم خارج نوم عمرو بن قيس دى، نابينا صحابى وولكه څنګه چه په وړاندې حديث كښى راځى چه كله نبى كريم خارج مذكوره آيت حضرت زيد خارج ته املاء كولو نو دې په موقع باندې راورسيدلو او عرض نى اوكړو كه چرې زما طاقت وې نو خامخابه جهاد كښى شريكدم نو الله تعالى دا استثناء نازل كره (فيداول الفهر).

[٢٦٤] حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدِ الزَّهْرِيُّ قَالَ حَدَّثِنِي صَالِعُ بْنُ كَيْسَانَ عَنْ ابْنِ شِهَابِ عَنْ سَعْلِ بْنِ سَعْدِ السَّاعِدِيِّ أَنَّهُ قَالَ رَأَيْتُ مَرُوانَ بْنَ الْحَكَمِ جَالِسًا فِي الْمَسْجِدِ فَأَقْبَلْتُ حَتَّى جَلَسْتُ إِلَى جَنْبِهِ فَأَخْبَرُنَا أَنَّ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ (م) أَخْبَرُهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمْلَى عَلَيْهِ لَا يَسْتَوِى الْقَاعِدُونَ مِنْ الْمُؤْمِنِينَ

١) (حواله بالا (ص٣٧٥)-

۲) (عمدة القارى (ج ۱ ۱ ص ۱۲۹)-

٣) (حواله بالا -

٤) (قوله: أن زيدبن ثابت رضى الله عنه: الحديث أخرجه البخارى أيضًا (ج٢ص ٤٥٠) كتاب التفسير لايستوى القاعدون من المؤمنين € رقم (٤٥٩٢) وأبوداؤد كتاب الجهاد باب الرخصة فى القعود من العذر رقم ٢٥٠٧) والترمد في أبواب التفسير باب ومن سورة النساء رقم (٣٠٣٣) والنسائى كتاب الجهاد باب فضل المجاهدين على القاعدين رقم (٣١٠١)-

وَالْهُ اللهُ عَلَيْهُ اللّهِ عَالَ اللّهِ قَالَ فَجَاءَةُ الْبِنُ أَمِّ مَكْتُومِ وَهُوَ يُمِلَّهَا عَلَى فَقَالَ يَارَسُولَ اللّهِ لَوْ أَسْتَطِيعُ الْحِهَا ذَكِهَا هَدُتُ وَكَانَ رَجُلًا أَعْمَى فَأَنْزَلَ اللّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى عَلَى رَسُولِهِ مِلّهُ لَنْ اللّهُ عَلَيْهُ وَسَلّمَ وَفَخِذُهُ عَلَى فَخِذِي فَتَقُلَتُ عَلَى حَتَّى خِفْتُ أَنَّ تَرُضَ فَخِذِي ثُمَّ سُرِي مَنْ اللّهُ عَلَيْهُ وَسَلّمَ وَفَخِذُهُ عَلَى الظّمَرِ [٣٢١٧]

تراجم رجال

م-ابراهیم بر سعل بر الزهری: دا ابراهیم بن سعد بن ابراهیم بن عبدالرحمن الزهری القرشی المدنی مُشَرِّ دی. د دوی تذکره مختصرا ((کتاب الإیمان باب تفاضل أهل الإیمان قل الاعمال)) لاندی(۲) او تفصیلی تذکره ((کتاب العلم باب ماذکر قفاب موسی ...)) لاندی تیره شویده. (۳)

-- صالح بر کیسان دا ابومحمدیا ابوالحارث صالح بن کیسان مدنی مینی دی د ده حالات (رکتاب الإیبان باب تفاضل اهل الإیبان فی الأعبال) لاندې تیرشوی دی (۴)

م-ابر شهاب: دا ابوبکر محمد بن مسلم بن عبیدالله بن عبدالله ابن شهاب زهری مخت دی. د ده حالات ((بدءالوحی)) د دریم حدیث په ذیل کښې تیرشوی. (۵)

ه- سيمل بر سعد الساعدى: دا مشهور صحابى د رسول الله تراث حضرت سهل بن سعدبن مالك ابوالعباس الساعدى المائخ دى (ع)

۲-مروان بن الحكم: دا مشهور اموى خليفه ابوعبدالملك مروان بن الحكم الاموى دى (۷) ٢-زيد بن ثابت: دامشهور صحابى رسول الله او كاتب وحى حضرت زيد بن ثابت الله دى (۸) قوله: أنه قال: رأيت مروان بن الحكم جالسافى المسجد، فأقبلت حتى

۱) (دُ دوى دُ حالاتودُپاره اوګورئ کتاب العلم باب الحرص على الحديث-

۲) (کشف الباری (۲۰ ص۱۲۰)-

۳) (کشف الباری (ج۳ص۳۳)-

٤) (كشف الباري (ج٢ص١٢١)-

۵) (کشف الباری (ج ۱ ص ۳۲۶)-

٤) (دَ دوى حالاتودَ پاره اوګورئ کتاب الوضوء باب غسل المرأة أباها الدم عن وجهه-

٧) (دَ دوى حالاتودَ پاره اوگوري كتاب الوضوء باب البُصاق والمخاط ونحوه في الثوب-

٨) (د دوى د حالاتود پاره او گورئ كتاب الصلاة باب مايذكر في الفخذ-

کشف الباری جنبه، فاخبرنا أن زیدبر ثابت أخبره: أن رسول الله صلی الله علیه وسلم املی علی (لایستوی القاعدون من المؤمنین والمجاهدون فی سبیل الله): د حضرت سهل بن سعد الساعدی تأثیر نه مروی دی هغوی فرمانی چه ما مروان بن حکم حمات کنبی ناست اولیدو، زه وروړاندی شوم او د هغه په اړخ کنبی کناستم نو هغه مونږ ته اوخودل چه حضرت زید بن ثابت تأثیر هغه ته خودلی دی چه رسول الله ناتی ماته دا آیت املا کړو (لایستوی القاعدون من البومنین والمجاهدون فی سبیل الله) دلته په سندکنبی یوه لطیفه دا ده چه حضرت سهل تأثیر صحابی دی او مروان تابعی، او صحابی دلته د تابعی نه د حدیث روایت کوی نو دا ((دوایة السحابی من التابی)) دی. (۱) او دونمه لطیفه دا ده چه ابن شهاب شیخ دی او صالح بن کیسان شاګرد او شاګرد د شیخ نه په عمر کنبی زیات دی، نو دا ((دوایة الاگابرعن الأصاغی)) دی. (۲)

قوله: قال: فجاء ابر أم مكتوم وهويملها على فقال: يارسول الله الواستطعت الجهاد لجاهدت: حضرت زيد بن ثابت التاثير فرمائى به دغه وخت كنبى چه رسول الله التاثير ماته د ذكرشوى آيت املا كوله، هغوى له ابن ام مكتوم التاثير راغلو او وئى وئيل، يارسول الله كه چرى ما جهاد كولى شو نو خامخا به مى كړى وى.

رملها» په اصل کښې ((يمليها)) وو، ظاهرهمدغه دې چه د کې دوئمه يا، په لام سره بدله کې يشويده بيا دواړه لامونه مدغم کړيشو. (۳)

قوله: وكان رجلا أعمى، فأنزل الله تعالى على رسوله صلى الله عليه وسلم

وفخنه على فخنى، فثقلت على حتى خفت أن ترض فخنى، ثمر سرى عنه، فأنزل الله عزوجل (غير أولى الضر): او ابن ام مكتوم نابينا سرى وو، نوالله تعالى خپل رسول الله عزوجل (الله عنول الفر) على حدد خضور بندئى زما به بندئى باندى برته وه، نو د حضور بندئى په ماباندى درنه شوه، تردى چه زما دا ويره پيدا شوه چه زما بندئى تكرى تهكرى نشى، بيا د وحى آثار د هغوى نه زائل شو نو الله تعالى عزوجل دا وحى نازله كړه. (غيراول الفر)

دَ حدیثُ باب نه معلومه شوه چه اول خو په دې مذکوره آیت کښې څه قسم استثناء نه وه،هم دوه ډلې وي، یوه د ابن ام مکتوم په ګیله دوه ډلې وي، یوه د مجاهدینو او دوئمه د قاعدین عن الجهاد، خو د ابن ام مکتوم په ګیله باندې د الله تعالى د طرف نه استثناء نازل کړیشوه چه د دې تفریق نه هغه خلق مستثنی



۱) (عمدة القارى (ج ۱ اص ۱۳۰)-

۲) (عمدةالقاری (ج۱۸ص۱۸۶)-

٣) (شرح ابن بطالَ (ج۵ص 1 1)-

دى چه معذوره وى. علامه مهلب ميالي فرمائى: ((فيه دليل على أن من حبسه العندر عن الجهاد وغيرة من أعبال البرمع نيته فيه فله أجر المجاهد والعامل، لأن نص الآية على المغاضلة بين المجاهد والقاعد، ثم المتنى من المغضولين أولى الضرر، وإذا استثناهم من المغضولين فقد الحقهم بالغاضلين) (١)

یعنی حدیث باب د دی خبری دلیل دی چه که یو سری د شرعی عذر په وجه د جهاد یا بل نیك اعمالوپوره کولونه پاتی شی نو ده ته به د مجاهد اود خیر عمل کونکی برابر ثواب ورکولی شی ځکه چه په مذکوره آیت کښی تصریح ده چه مجاهد ته په قاعد باندی فضیلت او ترجیح حاصله ده، بیا د مفضولینو نه د اولی الضرر استثناء او کریشوه، نو چه کله هغوی د مفضولینو نه مستثنی او جدا او محرولی شو نو هغوی په فاضلینو کښی شامل شو.

د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت د حديث باب ترجمة الباب سره مناسبت بالكل واضح او بنكاره دي، د تشريح محتاج نه دي. (٢) د آيت د نزول سبب بيانول وو، د حضرت ابن ام مكتوم الله د قصى نه هغه بيان كريشو.

حل کلمات مشکله: «ترض» دا د ,,رض، نه مشتق دی د خه معنی چه د دره دره دره ده. (۳) «سی» د راء په تشدید او تخفیف سره، دا دواړه قسمه لوستلی شی د دی معنی د زائل کیدو او اخوا کیدو ده. (۴)

٣٠-بَأَب: الصَّبُرِعِنْدَ الْقِتَالِ

دَ ترجمة الباب مقصد: امام بخاری مُراكم به دی باب كښی دَ گفارو سره دَ قتال او جهاد په وخت كښی د صبر فضیلت بیانوی. (۵)

[٢٦٤٨] حَدَّثَنِي عَبُدُ اللَّهِ بُنُ هُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَبُروحَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ مُوسَى بْنِ عُفْبَةَ عَنْ سَالِمِ أَبِى النَّفِرِ أَنَّ عَبُدَ اللَّهِ بْنَ أَبِى أَوْفَى (٢) كَتَبَ فَقَرَأْتُهُ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صُلَّى اللَّهُ عَنْ اللَّهِ عَنْ اللَّهِ عَبْدَ اللَّهِ عَبْدَ اللَّهِ مُنَا اللَّهِ عَنْ اللَّهِ عَنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ إِذَا لَقِيتُمُوهُمُ فَاصْبِرُوا [د: ٢٣٣٣]

تراجم رجال

-عبدالله بر. هجمد: دا ابوجعفر عبدالله بن محمد بن عبدالله بعفي بخاري مسند بينيا

۱) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٣٠)-

۲) (عمدة القارى (ج ۱۴ ص ۱۳۰)-

٣) (مختار الصحاح مادة ر،ض،ض-

⁴) (عمدةالقاری (ج ۱ ۱ص ۱۳۰) ومختار الصحاح مادة س،ر،ی، دَ احادیث باب دَ نورې تشریح دُپاره ^{او}ګورئ کشف الباری کتاب التفسیر(ص ۱۶۰) -

۵) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٣٠)-

 [﴿] قُولُه: أَنْ عَبِدَاللَّهُ بِنَ أَبِي أُوفِي رضى الله عنه: الحديث مرتخريجه آنفا -

دې. د ده حالات ((کتاب الإيان پاپ امور الإيان) لاندې تيرشوی دی. (۱)

r-معاويه برعمرو: دا معاويه بن عمروبن مهلب الازدى الكوفي ميني دي. (٢)

r-ابواسياق: دا ابواسحاق ابراهيم بن محمدبن الحارث الفزاري ميني دي. (٣)

۳-موسی بری عقبه: داموسی بن عقبه اسدی مدنی مطبع دی. (۴)

۵-سالم ابوالنصر: دا ابوالنضر سالم بن ابی امیه مولی عمرین عبیدالله قرشی مدنی پینی دی.(۵)

٢-عبدالله بر ابي اوفي الله: دا مشهور صحابي حضرت عبدالله بن ابي اوفي علقمه الاسلمي الله ي دي. (۶)

قوله: أن عبد الله بن أبي أوفي كتب فقرأته: إن رسول الله علم قال: إذا

القيتموهم فأصبروا:حضرت سالم ابوالنضر فرمائي چه عبدالله بن ابي اوفي الله علم خط اوليكلو نوما هغه اولوستلوريه هغي كښې وو چه رسول الله عليم فرمائيلي چه كله ستاسو

دښمن سره مقابله وي نو کلك اوسيږئي. د ((فاصبردا)) دوه مطلبه کيديشي:

① کله چه د قتال اوجهاد اراده او کرئی نود هغې په شروع کولو کښې صبر کوئي چه د نه روستوکيدو عزم مصمم او کړئي او د استقامت څرګندونه او کړئي.

﴿ دَ جنگ شروع كولونه پس كله چه ميدان دَ جنگ ښه گرم شي نو كلك اوسيوني او مه تښتئي. (٧)

صبرد آلله تعالى د بركت د حصول دريعه ده: علامه مهلب منظی فرمائی چه صبر د بولوكارونو د خير سبب او دريعه ده. الله تعالى په قرآن كريم كښى دا حقيقت په ډيرو ځايونوكښى بيان كريدې او خپل عزتمند حبيب تريم اهم د دې خبرې حكم وركړيدې چه كله دښمن سره مقابله وى نو صبر مه پريږدئى، د دې د پاره چه د الله تعالى بركتونه حاصل شى او خلق د سستئى او نارستئى عادت نشى. ځكه چه دا دواړه صفتونه په دنياكښى د حرمان او تاوان سبب دى اود صبر اختيارول د دنيا او آخرت د مطلوب امورو د حصول ضمانت دې. (٨)

۱) (کشف الباری (ج۱ص۶۵۷)-

٢) (دَ دوى دَ حالاتودَ پاره او كورى كتاب الأذان باب إقبال الإمام على الناس عند تسوية الصفوف-

٣) (دَ دوى دَ حالاتودَ پاره أو كورى كتاب الجمعة باب القائلة بعد الجمعة -

٤) (د دوى د حالاتود پاره او كورى كتاب الوضوء باب إسباغ الوضوء-

٥) (د دوى د حالاتود پاره أو كورئ كتاب الوضوء باب المسح على الخفين -

ع) (دَ دوى دَ حالاتودَ پاره أوكوري كتاب الزكاة. باب الصلاة الإمام. ودعائه لصاحب الصدقة....-

٧) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٣٠) وشرح الكرماني (ج١٢ ص١٢٧)-

۸) (شرح ابن بطال (ج۵ص٤٥)-

د مديث د ترجمة الباب سره مطابقت ترجمة الباب سره د حديث مطابقت د رسول الله ظلم به دې قول کښې دې:

((دامیردا)) چه کله کافرانو سره مقابله وی نو صبر او استقامت اختیار کرئی. (۱)

٣٣- بَأَب: التَّعُرِيضِ عَلَى الْقِتَ الِ

وَقُولِهِ تَعَالَى حَرِّضُ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى الْقِتَالِ [الأنفال: ٢٥]

دُترجمة الباب مقصد: امام بخاري مُعَلَّدُ به دي باب كنبى دا ښائى چه خلقو ته د جهاد ترغيب ورکول پکار دي، راؤچتول ني پکار دي او د دې د پاره خلق تيارول پکار دي. (۲)

دَآيِتُ مَبَارِكُ دَ ذَكر كُولُو وَجه أَدُ مَذَكُورَه آيت به ذريعه إمام بخارى بَهُ لكه خناكه چه دَ هغه عادت دي په ترجمه الباب باندي استشهاد پيش كُرْيَدي چه دا تحريص او ترغيب على

القتال د قرآن كريم نه هم ثابت دى امام شعبی روایت دی چه کله دامذکوره آیت نازل شوچه ای نبی، مسلمانانو ته د جهاد او قتال ترغیب ورکړه نو نبی کریم نایم به مجاهدین د جهاد د پاره او د دښمن په مَقَابِلُهُ كَنِينِ دَ بِهَادِرِنْيِ اوْ استَقَامَت كُولُو دَ پاره راؤچتُولَ. په غزوه بدركښې چه كله د مكي مشركانو خپل لښكر اوسامانونو سره د نبي كريم نالل او صحابه كرام رمر (ه (ت دمس دَ مَقَّابِلَي دَ پاره رَاغِلُل نُو نَبِي كَرَيْمَ ﷺ صَحَابِهَ كُرَامُوتُهُ تَرْغِيبُ وَرَكُولُو سُرهُ ارشَادُ اوفرمائيلو: ((قومواللجنةعمضهاالسبوات والأرض))(٣)

[٢٦٤١] حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرُوحَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ مُمَيْدٍ قَالَ سَمِعْتُ أَنْسًا (٣) رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى الْخَنْدَقِ فَإِذَا الْهُهَاجِرُونَ وَالْأَنْصَارُ يَحْفِرُونَ فِي غَدَاقٍ بَارِدَةٍ فَلَمْ يَكُنْ هَمْ عَبِيدٌ يَعْمَلُونَ ذَلِكَ هَمُ فَلَمَّا رَأَى مَا رِيمُ مِنُ النَّصَبِ وَالْجُوعِ قَالَ اللَّهُمَّ إِنَّ الْعَيْشَ عَيْشُ الْآخِرَةُ فَاغْفِرُ لِلْأَنْصَارِ وَالْمُهَاجِرَةُ

۱) (عمدة القارى (ج ۱ ۱ص ۱۳۰)-

۲) (عمدة القارى (۶ ۱ ص ۱۳۰) -

٣) (حواله بالا-

أ (قوله: سمعت أنسا رضى الله عنه: الحديث أخرجه البخارى أيضًا (ج١ص٣٩٨) كتاب الجهاد باب حفر الخندق رقم (٢٨٢٥)(ج١ص٤١) باب البيعة في الحرب على أن لايفروا رقم (٢٩٤١ و(ج١ص٥٣٥) كتاب مناقب الأنصار باب دعاء النبي صلى الله عليه وسلم: أصلّح الأنصار والمهاجرة رقم (٣٨٩٥-٣٨٩٥) و(ج ١ص ٥٨٨) كتاب المغازى باب غزوة الخندق وهي الأحزاب رقم ٩٩٠١-١٠١) و(ح ٢ص ٩٣٩) كتاب الرقاق بأب الصحة والفراغ ولاعيش إلا عيش الآخرة رقم (٤٤١٣) و (ج٢ص١٠٥٩) كتاب الأحكام باب كيف بيابع الإمام الناس؟(٧٢٠١) ومسلم كتاب الجهاد باب غزوة الأحزاب وهي الخندق رقم (٤٥٧٣-1571) والترمذي كتاب المناقب باب مناقب جابر بن عبدالله رضي الله عنه رقم (٣٨٥٧)-

كتاب الجهاد (مهارل كتاب الجهاد ما بقينا أبدا كفالوا مجمدا على الجهاد ما بقينا أبدا (١٧٧٠ ، ٢٥٠٠ ، ٢٧٠٥)

تراجم رجال

<u>ا-عبدالله برب هجمد:</u> دا ابوجعفرعبدالله بن محمدبن عبدالله جعفی بخاری مسندی بید دی د ده حالات ((کتاب الإیبان) المور الإیبان) لاندی تیرشوی (۱)

- معاويه برعمرو: دا معاويه بن عمرو بن مهلب الازدى الكوفي أيني دي. (٢)

-- ابواسحاق: دا ابواسحاق ابراهیم بن محمدبن الحارث الفزاری سیمید دی. (۳)

٣- حميل: داابوعبيدحميد بن ابى حميدالطويل الخزاعى البصرى مُنْهَ دى. دُ ده حالات (كتابالإيبان المومن من الله من المومن من المعلم والمولي المومن المومن من المومن المومن من المومن من المومن من المومن من المومن المومن

ه-انس بر مالك: دا د رسول الله ناتیم مشهور صحابی حضرت انس بن مالك التی دې د د د حالات (ركتاب الإيبان باب من الإيبان ان يحب لاخيه مايحب لنفسه)) لاندې تيرشوى دى. (٥)

قوله: يقول: خرج رسول الله صلى الله عليه وسلم إلى الخناق: حضرت حميد الطويل بخشة فرمائى چه ما حضرت انس التي به دې ويناكولو سره چه نبى كريم تايم د خندق طرف ته اووتلو واوريدو. په حديث كنبى بيان كړيشوې واقعه د غزوه احزاب (خندق) ده په دې غزوه كښې نبى كريم تايم د حضرت سلمان فارسى التي مشوره قبوله كړه او صحابه كراموته ئى د مدينى نه كير چاپيره خندق كنستلو حكم وركړې وو چه د مدينى منورې حفاظت اوكړيشى. امام طبرى او امام سهيلى التي فرمائى د ټولونه اول د جنك دپاره خندق كنستونكى منوجهر بن ايرج بن افريدون دې چه فارسى النسل وو اودا د موسى تايم د مانى واقعه ده (۶).

قوله: فإذالهها جرون والأنصار يحفرون في غداة باردة، فلم يكن لهم عبيد يعملون ذلك لهم: نوحضور ناللها اوكتل چه صحابه كرام د سختي يخنئي په سحر باندې خندق كنى، ځكه چه هغوى سره داسې غلامان نه ووچه د هغوى د پاره ئى كاركولو.

۱) (کشف الباری (ج۱ص۶۵۷)-

٢) (دَ دوى دَ حالاتود و پاره او كورى كتاب الأذان باب الإمام على الناس عند نسوية الصفوف-

٣) (د دوى د حالاتود باره اوكورى كتاب الجمعة باب القائلة بعد الجمعة -

٤) (کشف الباری (ج۲ص ۵۷۱)-

۵) (کشف الباری (ج۲ص ٤)-

۶) (عمدة القارى (جَ ٤ اص ١٣١) دَ مذكوره غزوه دَ تفصيل دَ باره او گورئ كشف البارى كتاب المغاذى (ص ٢٧٥)-

كلمه عذا دلته مفاجاتيه دد. فلما رأى مابهم من النعب والجوع، قال:

فاغفى الأنسار والمهاجرة

اللهمإن العيش عيش الأخرة

تقالوا محيين له:

على الجهادما بقينا أبدأ

نحن النبئ بايعوا محمدا

کله چه حضور د دوی مشقت او ولږه اوکتله نو وئی فرمائیل اې الله! اصل ژوند خو د آخرت ژوندون دې ته د انصارو او مهاجرينو مغفرت اوکړې.

صحابه کرامو به د دې جواب کښي وئيل:

مونږ هغه خلق يو چه مونږ د محمد گلظ نه بيعت کړيدې چه ترکومې مونږ باقي او ژوندي يو هميشه به جهاد کوو

داپورته ذکر شوی اشعار په رجزیه انداز کښی د لوستلوحکمت: علامه انور شاه کشمیر بیک فرمانی چه صحابه کرامو رضوان الله علیهم اجمعین به د خندق کنستلو په وخت کښی دا پورته ذکر شوی شعر ((نحن الذین....)) به د رجز په انداز کښی لوستلو، د دې وجه دا وه چه په مونږ کله هم یو سړی یو عمل کوی نو په خله ځان سره ګونړارې کوی، د دې د پاره چه ستړې والی او بیزاری شروع نشی، ځکه چه انسان کله څه د مشقت والا کار کوی نو په دې وخت کښی ګونړارې کوی، د ده دا ګونړارې د هغه کار مشقت غیر محسوس جوړوی. (۱) فائده د د دا فائده ولاړیږی چه د خلقو پټ صلاحیتونه او جنګی جذبات راښکاره کولودپاره اشعار او رجز وغیره استعمالول پکار دی. (۲)

د حدیث د ترجمهٔ الباب سره مطابقت: ترجمهٔ الباب سره د حدیث مناسبت ((اللهمإن العیش عیش الآخرة)) کښی دی چه د دی په ذریعه صحابه چه په کوم کارکښی مشغول وو(یعنی حفر خندق) په هغی ئی نور هم راؤچت کړی ځکه چه هغه هم د جهاد یوه حصه ده. (۳)

٣٠- بَأَب: حَفُرِ الْخَنْدَقِ

دَ ترجمة الباب مقصد: دَ علامه عینی مُرَاثِهُ وینا ده چه امام بخاری مُرَاثِهُ دَ دې ترجمة الباب لاندې دا بیانوی چه صحابه کرامو شَائِهُ دَ مدینې نه ګیرچاپیره خندق کنستې وو د دې د پاره چه دَ دې حفاظت او دفاع او کړیشي. (۴)

نو ښکاره خبره ده چه دا د اهل فارس طريقه وه او حضرت سلمان فارسي النانونو د دې مشوره ورکړې وه،نو ددې د پاره چه کله ضرورت پيښ شي نو خندق کنستلې شي اود نورو قومونو

۱) (فیض الباری (ج۳ص۲۲)-

۲) (شرح ابن بطال (ج۵ص۶۶)-

۲) (عمدةالقارى (ج ٤ اص ١٣١)-

٤) (عمدة القارى (ج ١٤ ص١٣٢)-

كتأب الجهاد (جلدائل)

د جنگ طریقی نه فائده حاصلولوکښی هیڅ بدیت نشته.

[٢٦٨٠] حَدَّثَنَا أَبُومَعُمْرِ حَدَّثَنَا عَبُدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ عَنْ أَنْسِ (١) دَضِى اللَّهُ عَنْهُ قَالَ [٢٦٨٠] حَدَّثَنَا أَبُومِعُمْرِ حَدَّثَنَا عَبُدُ الْوَارِثِ حَدُّلَ الْمَدِينَةِ وَيَنْقُلُونَ التُّرَابَ عَلَى مُتُونِهِمُ وَيَعُولُونَ وَالْأَنْصَارُ يَعُفِرُونَ الْخَنْدَقَ حَوْلَ الْمَدِينَةِ وَيَنْقُلُونَ التُّرَابَ عَلَى مُتُونِهِمُ وَيَعُولُونَ :

غَنُ الَّذِينَ بَايَعُوا مُحَمَّدًا عَلَى الْإِسْلَامِ مَا بَقِينَ آأَبَدَا وَالنَّيِنُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُجِيبُهُمْ وَيَقُولُ اللَّهُمَّ إِنَّه لَا خَيْرَ إِلَّا خَيْرُ الْآخِرَةُ فَبَارِكَ فِي الْأَنْصَارِ وَالْمُهَاجِرَةُ [د:٢١٤٩]

تراجم رجال

ا- أبومعمر: دا عبدالله بن عمرو بن ابى الحجاج منقرى بصرى مُرَامِرَ دى او دَ مقعد په لقب باندى مشهور دى. دَ ده حالات ((كتاب العلم باب قول النبى صلى الله عليه وسلم: اللهم عليه الكتاب) لاندى تيرشوى دى. (٢)

-- عبدالوارث: دا عبدالوارث بن سعیدبن ذکوان تمیمی عنبری بصری کرید دی د ده دادت هم په ((کتاب العلم)) کښې د مذکوره باب لاندې تیرشو. (۳)

-عبدالعزیز: دا عبدالعزیز بن صهیب بنانی بصری منه دی. د ده مختصر حالات ((کتاب الإیمان با بسول من الإیمان) لاندی تیرشوی دی. (۴)

۳- انس: دا د رسول الله گهر صحابی حضرت انس بن مالك گرون دی. د ده حالات ((كتاب الإيان با من الإيان ال من الإيان ال من الإيان النان با من النان

قوله: جعل المهاجزون والأنصار يحفرون الخندق حول المدينة، وينقلون

التراب على متونهم : حضرت انس نافئ نه مروی دی هغوی فرمائی مهاجرینو او انصاره د مدینی منوری نه گیر چاپیره خندق کنستلو او په خپلو شاگانوئی خاوره اوړله.

حول المدینة نه خه مراد دی؟ دلته د باب په روایت کښې ((حول المدینة)) د الفاظو نه په ظاهره باندې متبادر داکیږی چه خندق د مدینې د څلورو واړو طرفونو نه کنستلې ود

١) (قوله: عن أنس رضى الله عنه: الحديث مرتخريجه في الباب السابق-

۲) (کشف الباری (ج۳ص۳۵۶)-

٣) (كشف الباري (ج٣ص٣٥)-

٤) (کشف الباری (ج۲ص۹)-

۵) (کشف الباری (ج۲ص ٤)-

حالانکه حقیقت ددې نه برعکس دې. علامه ګنګوهی کښیځ فرمانی چه ((حول المدينة)) نه د دې يوه حصه مراد ده، ځکه چه خندق د مدينې منورې نه ګيرچاپيره نه وو تيارکړيشوې بلکه د اسلام د لښکر نه چاپيره تيار کړيشوې وو. او لښکرد مدينې منورې نه درې ميله فاصله باندې وو ليکن دا فاصله کمه ده په دې وجه د حديث راوي قرب په خيال کښې سائلو سره دا ((حول الهديئة)) سره تعبير كريدي(١)

شیخ الحدیث محمدز کریا کاندهلوی میشد د حضرت مینکوهی میند د ارشاد نوره تشریح سيع محمد . كولوسره فرماني چه دَحِضرِت ګنګوهي مُراثَة قول واضّح او ظاهر دې، ځكه چه خندق د اسلام دُ لَبْكُرُ او دُ كُفَارُو دُ لِسْكُر بِه مينځ كښې تيار كړيشوې وو. صاحب الخميس د خلاصة

الوفاء په حواله سره ليکي:

(كان أحد جانبي المدينة عورة، وسائر جوانبها مشتهكة بالبنيان والنخيل، لايتمكن اعدو منها، فاختار ذلك الجانب المكشوف للخنداق، وجعل معسكرة تحت جبل سلع، والخنداق بينه وبين البشركين))

يعني دُمديني منورې يوه حصه خالي اوكولاؤ وه، دُدې نه علاوه باقي ټولو طرفونوته آبادياني او د کهجورو باغونه وو، د هغه ځائ نه د دښمن حمله او غلبه حاصلول ممكن نه وو، په دې وجه نبي کريم کاله د خندق د تياري د پاره د کولاؤ حصي انتخاب اوکړو او خپل لښکرنې د جبل سلع په لمن کښې اودرولو اوخندق د هغوی او د مشرکانو ترمينځه وو. (٢) «على متونهم» دا د متن جمع ده، د دې معنى شا ده، اود زمكې سخت او اوچتې حصى ته هم

متن وائی. (۳)

نحن النك بايعوا محمداً على الإسلام ما بقيناأبدا

او هغوی به وئیل هم مونږ یو هغه خلق چا چه د محمد نایم نه بیعت کړې دې چه ترکومې مونږ ژوندی او باقی يو مدام به په اسلام باندې کلك يو.

دلته د باب په روایت کښې ((على الإسلام)) وارد شوې دې او د تیرشوی باب په روایت کښې ((على الجهاد)) وو. علامه عيني مُراك فرمائي چه موزون ((على الجهاد)) دي او ((على الإسلام)) سره په شعري وزن کښې خرابي راځي. (۴)

قوله: والنبر صلى الله عليه وسلم يجيهم ويقول:

اللهم إنه لاخير الاخير الأخراة فيأرث في الأنصار والمهاجرة

اونبي كريم بها هغوي ته جواب وركولو سره فرمائيل: اي الله خيګړه خو هم دَ آخرت خيګړه ده، ته په انصارو او مهاجرينو کښې برکت واچوه.

۱) (لامع الدراري (ج۷ص۲۲۲)-

۲) (تعلَّيْقات لامع الدّراري(ج٧ص٢٢٢)-

٣) (عمدة القارى رج ٤ ١ص١٣٢)-

أ (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٣٢) - .

یواشکال اود هغی جواب دلته یو وړوکی غوندی اشکال پیدا کیږی چه په سابقه باب کرو خوداوو چه جواب ورکونکی خو صحابه کرام وو او دلته دا دی چه نبی کریم ناتی جواب ورکوئ نود دی جواب دا دی چه دا اختلاف په او قاتوباندی محمول دی یعنی کله به شروع صحابه کرامو کوله او نبی کریم ناتی به جواب ورکولو او کله به شروع حضور ناتی کوله او صحابه کرامو به جواب ورکولو او کله به شروع حضور ناتی کوله او صحابه کرامو به جواب ورکولو (۱)

[٢٦٨٢-٢٦٨] حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ سَمِعْتُ الْبَرَاءَ (٢) رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كَالُهُ عَنْهُ كَاللَّهُ عَنْهُ وَسَلَّمَ يَنْقُلُ وَيَقُولُ لَوْلَا أَنْتَ مَا اهْتَدَيْنَا

تراجم رجال

ا- ابوالولید: دا ابوالولید هشام بن عبدالملك طیالسی باهلی بصری رسید دی. د ده حالات (ركتاب الإیمان با به مقالایمان حب الأنصار) لاندی نقل شوی دی. (۳)

r- شعبه: دا امیرالمؤمنین فی الحدیث شعبه بن الحجاج عتکی بصری مید دی در ده حالات ((کتاب الإیبان باب البسلم من سلم البسلمون من لسانه ویده) لاندی نقل شوی دی. (۴)

-- ابواسحاق: دا ابواسحاق عمرو بن عبدالله بن عبيد سبيعى كوفى مياية دي.د دوى حالات هم (ركتاب الإيمان باب الصلاة من الإيمان) لاندى راغلى دى. (٥)

۳- البراء: دا مشهور صحابی حضرت براء بن عازب التی دی د دوی حالات هم د دغه پورتنی مذکوره باب لاندی تیرشوی دی.

قوله: كأن النبى صلى الله عليه وسلم ينقل ويقول: لولاأنت ما اهتدينا: حضرت براء بن عازب الله عليه دى چه نبى كريم الله عاوره او له او وئيل به نى الله عليه كريم الله عليه عادت نه وي نو مونو به هدايت نه وي بياموندي.

١) (حواله بالا وشرح الكرماني (ج١٢ص١٢)-

۲) (قوله: سمعت البراء رضى الله عنه: الحديث أخرجه البخارى أيضًا (ج١ص٣٩٨) كتاب الهجاد باب حفر الخندق رقم (٣٩٨) و (ج١ص٢٩٥) و (ج١ص٢٩٥) و (ج١ص٤٨٥) و (ج٢ص٤٨) و (ج٢ص٤٨) كتاب المغازى باب غزوة الخندق وهى الأحزاب رقم (٤٠٤١-١٤٠٥) و (ج٢ص٩٧٩) كتاب القدر باب ﴿وماكناالنهتدى لولاأن هداناالله ﴾ رقم (٤٤٢٠) و (ج٢ص٤٧٠) كتاب التمنى باب قول الرجل للهمااحتدينا رقم (٧٢٣٥) ومسلم كتاب الجهاد باب غزوة الأحزاب وهى الخندق رقم (٧٢٣٥) -

۳) (کشف الباری (ج۲ص۳۸)-

٤) (کشف الباری (ج ١ ص ٤٧٨) -

۵) (کشف الباری (ج۲ص۲۷)-

[٢٦٨٠] حَدَّثَنَا حَفُصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُغْبَةُ عَنُ أَبِى إِسْحَاقَ عَنْ الْبَرَاءِ (١) رَضِى اللَّهُ عَنْهُ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ النَّرَابَ وَقَدُ وَارَى التَّرَابُ بَيَاضَ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ النَّرَابَ وَقَدُ وَارَى التَّرَابُ بَيَاضَ بَطْنِهِ وَهُو يَقُولُ لَوْلَا أَنْتَ مَا اهْتَدَيْنَا وَلَا تَصَدَّ قُنَا وَلَا صَلَّيْنَا فَأَنْزِلَنْ سَكِينَةً عَلَيْنَا وَثَيِّتُ الْأَقْدَامَ إِنْ لَا قَيْنَا إِنَّ الْأَلْى قَدُ بَغُوا عَلَيْنَا إِذَا أَرَادُ وافِتُنَةً أَبَيْنَا [٢٨٠٩،٢٣٨،٣٨٨،٣٨٨،٥٣٨]

تراجم رجال

ا-حفص بر، عمر: دا حفص بن عمربن حارث مُشَرَّة دی. (۲) د دوی نه علاوه د نورو رجالو حوالی اوس په تیرشوی حدیث کښی نقل کړیشوی دی.

قوله: على الله على الله صلى الله عليه وسلم يوم الأحزاب ينقل التراب،

وقد واري التراب بياض بطنه: د حضرت براء بن عازب نه مروي دی چه ما رسول الله عزوه احزاب او کتلو چه هغوی خاوره اوړله تردې چه هغې د حضور علیم د خیتې مبارکي سبن والي پټ کړي وو.

مبارکی سپین والی پټ کړی وو. علامه مهلب مُنه فرمائی د حدیث نه دا خبره معلومه شوه چه امام المسلمین له د مسلمانانود حفاظت د پاره که خپل حرمت او وقار هم ختمول وی نو پرواه نه دی کول پکار. د دی فائده به دا وی چه عام مسلمانان به هم دهغه اقتداء کوی. (۳)

لولا أنت ما اهتدينا ولا تصدقنا ولا صلينا

فأنزن السكينةعلينا وثبت الأقدام إن لاقينا

إن الأولى قد بغواعلينا إذا أرادوا فتنة أبينا

حضور ترايخ دا اشعار لوستل:

وهويقول:

 آلله تعالى رحمت نه وو نو مون به هدايت نه وو موندلې او نه به مون صدقه ورکوله او نه به مون صدقه ورکوله او نه به مون مونځ کولو.

ر تورب المعار مور. دا اشعار د حضرت عبدالله بن رواحه تاتؤ دی لکه چه په کتاب المغازی په روایت کښې ددې صراحت دې. (۴)

١) (قوله: عن البراء رضى الله عنه: الحديث مرتخريجه آنفا في الحديث السابق-

٢) (د دوى د حالاتودباره او كورى كتاب الوضوء باب التيمن في الوضوء والغسل-

٣) (شرح ابن بطال(ج۵ص٧٤)-

كتأب الجهاد (جلدائل)

د حدیث د ترجمهٔ الباب سره مطابقت ترجمهٔ الباب سره د دریواړو احادیثو مناسبت او مطابقت واضح دی، په اولنی او دریم کښی د حفرخندق اود هغی د خاوری اوړلو ذکر دی او دوئم حدیث د دریم اختصار دی او په دې کښی هم د خاوری منتقل کولو ذکر دی، چدو خندق د کنستلو لازمی حصه ده

م- بَاب: مَنْ حَبَسَهُ الْعُذْرُعَنُ الْغَزُو

د ترجمه الباب مقصد امام بخاری برای د دی ترجمه الباب لاندی دا ذکر کول غواړی که يو سړی معذوره دې او د هغه نيت صحيح او صادق دې خو هغه د دې عذر په وجه په جهاد کښې شرکت نشی کولې نو دې به نشی ملامت کولې او ده ته به د صادق نيت په وجه د غازی اجر او تواب ملاويږی (۱)

د عدر تعریف د بخاری شریف شارحینو د عدر تعریف دا لیکلی دی:

((هوالوصف الطارئ على المكلف المناسب للتسهيل عليه))(٢)

يعنى عذرمكلف ته پيښيدونكې هغه صف دې د خه په وجه چه په شرعى احكامو كښې هغه سره د آسانئي معامله كولي شي.

[rɪw-rɪw]حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بُنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا زُهَيُرٌ حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ أَنَّ أَنَسًا (r)حَدَّثَهُمُ قَالَ رَجَعُنَا مِنْ غَزُوَةِ تَبُوكَ مَعَ النَّبِيّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

تراجم رجال

ا- احمل بريونس: دا احمد بن عبدالله بن يونس تميمى يربوعى كوفى مُنِيدٍ دي. دَ ده حالات ((كتاب الإيبان باب من قال: إن الإيبان هوالعبل)) لاندې تيرشوى. (۴)

r-زهير: دا زهير بن معاويه بن حُديج بن زحيل بن زهير مَسَيْدُ دي. دَ ده حالات ((كتاب الإيهان مابالهان د) دَ ده حالات ((كتاب الإيهان مابالهان)) به ذيل كنبي بيان شوى (٥)

-- حميل: داابوعبيده حميدبن ابى حميد الطويل الخزاعى البصرى مُرَايِّة دى. دَ دوى حالات هم ((كتاب الإيمان باب خوف المؤمن من أن يحيط عمله وهولايشعر)) لاندى تيرشو.(ع)

۱) (عمدة القارى (۱۴ ص۱۳۳)-

۲) (حواله بالاو شرح الكرماني (ج۱۲ص ۱۲۹)-

٣) (قوله: أن أنسأ حدثهم: الحديث أخرجه البخارى أيضًا (ج١ص٣٩٨) كتاب الجهاد باب من حبسه العذر عن الغزو رقم (٢٨٣٩) و (ج٢ص ٤٣٧) كتاب المغازى باب بعد باب نزول النبى صلى الله عليه وسلم الحجر رقم (٢٨٣٩) وأبوداؤد كتاب الجهاد باب الرخصة في القعود من العذر رقم ٢٥٠٨)-

٤) (كشف البارى (ج٢ص١٥٩)-

^{2) (}کشف الباری (ج۲ص۲۶)-

۶) (کشف الباری (ج۲ص۵۷۱)-

م-انس: دامشهور صحابی حضرت انس بن مالك الله دی. د ده حالات (ركتاب الإیبان باب من الایبان الایبان الایبان الایبان الایبان ان من الایبان ان یعب لاعیه مایحب لنفسه)) به ذیل کنبی راغلی دی. (۱)

قوله: قال: رجعنا من غزوة تبوك مع النبي صلى الله عليه وسلم: حضرت انس فلا فرمائى چه مونو د غزوه تبوك نه نبى كريم نظام سره واپس راغلو. د صحيح بخارى په بعضو نسخو كنبى دلته د سند تحويل دى او په نورو نسخو كنبى تحويل د سند نشته (۲) بعضو نسخو كنبى تحويل د سند نشته (۲) حَدَّثَنَا سُلَمُانُ بُنُ حَرْبِ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ هُوَابُنُ زَيْدِ عَنْ حُمَيْدِ عَنْ أَنْسِ رَضِى اللَّهُ عَنْهُ (۲) أَنَّ النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ فِي غَزَاقٍ فَقَالَ إِنَّ أَقُوَامًا بِالْمَدِينَةِ خَلْفَنَا مَا سَلَكُنَا شِعْبًا وَلَا وَادِيًا إِلَّا وَهُمْ مَعَنَا فِيهِ حَبَسَهُمُ الْعُذُرُ

وَقَالَ مُوسَى حَدَّثَنَا حَمَّادٌعَنُ مُمَّيْدِعَنُ مُوسَى بُنِ أَنَسِ عَنْ أَبِيهِ قَالَ النَّبِيُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ أَبُوعَبُد اللَّهِ الْأَوَّلُ أَصَحُ [٣١١]

تراجم رجال

ا- سلیمان بر حرب: دا ابوایوب سلیمان بن حرب بن بجیل از دی بصری مید در در در میلیمان بن حرب بن بجیل از دی بصری مید در در در در در کتاب الإیمان باب من کرهان یعودنی الکفی در ۱۸ کندی تیر شوی دی (۴)

r- هماد: دا ابواسماعیل حماد بن زیدبن درهم ازدی بصری مُعَامَدُ دی. دُ دوی حالات هم (رکتابالإیمانباب ﴿وإن طائفتان من البؤمنین﴾ په ذیل کښی تیرشوی. (۵)

به خامخا زَمُونرِ سره وي. دُرهٔ الله ند مراد غزوه تبوك ده لكه چه دُ زهير په روايت كښې دي. (۶)

۱) (کشف الباری (ج۲س؟)-

۲) (شرح القسطلاني (ج٥ص ٤٣) وعمدة القارى (ج ١٤ ص ١٣٣)-

٢) (قوله: أنس رضى الله عنه: الحديث مرتخريجه في الحديث السابق من الباب-

^{4) (}کشف الباری (۲ص۱۰۵)-

۵) (حواله بالا (ص۲۱۹)-

^ع) (شرح القسطلاني (ج٥ص٤٣)-

«علقنا» نی په دوه قسمه ضبط کړې دې د لام په سکون يا لام په تشديد او فا، په سکون سرد. په اولنی صورت کښې به د دې معنی ((وراینا)) وی یعنی زمونو شاته. په دونم صورت کښې دا د باب تفعیل نه د جمع متکلم ماضی صیغه وی اود دې معنی مونو روستو پریخی

قوله: الاوهم معنافيه: جملي هم دوه مطلبه دي:

اکوم چه مونږ په ترجمه حدیث کښې اختیار کړیدې چه مونږ خلق د جهاد د پاره چرته هم لاړشو نودا روستو پاتې شوې په خامخا مونږسره په جهاد کښې شریکیدل که چرې د هغوی

څه عذريا مجبوري منع کونکې نه وې. 🕜 دوي مونږ سره د جهاد په تواب کښې شريك دى، سره د دې چه دا خلق د عذر د وجه په جهاد کښې خو شریك نه شول خو که مونږ کومې درې یا میدان ته لاړو هغوی ته به نواب خامخا ملاویږی ځکه چه دې حضراتو هم د جهاد د شرکت نیت لرلو. د دې معنې تائید د اسماعیلي د طریق نه کیږي د کوم په الفاظو کښې چه د نیت صراحت دې.

رلا وهم معكم فيه بالنية الدغه شان ابن حبان (٢) ابوعوانه او امام مسلم المنظم (٣) په روايت كنسى (الاكادوامعكم)) په ځائ (رالاش كوكم في الأجر)) دى. دينه هم د دوئمي معنى تانيد كيږي چه يوځانيوالي او شرکت په اجرکښې مراد دې نه چه يوځانيوالي په جهاد او قتال کښې (۴)

قوله: حبسهم العذر: عذر هغوى بند كړى.

عذرنه مرآد دلته مرض اوسفر باندې طاقت نه لرل دی.مسلم شریف (۵) روایت کښې عذر په ځای ((حبسهم العدر)) راغلي. نو هغه په غالب او اکثر حالاتو باندې محمول دي. دا مطلب نه دې چه عذر صرف هم په مرض او بيمارئي کښې منحصر دي. (ع)

قوله: وقال موسى: حدثنا حماد عن حميد عن موسى بن أنس عن ابيه قال النبي صلى الله عليه وسلم: د تعليق تخريج دا تعليق امام ابوداود (٧)

هم په دې سند سره خپل سنن کښې موصولاً نقل کړيدې او اسماعيلي هم د دې تخريج

١) (عمدة القارى (ج ١٤ اص١٣٣) وفتح البارى)ج ٢٥ص٧٤)-

٢) (الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان (ج٨ص ١١٢) كتاب السير ذكر تفضل الله على القاعد المعذور

٣) (الصحيح لمسلم كتاب الإمارة باب ثواب من حبسه العذر عن الغزو رقم (٩٣٢)-

٤) (عمدة القارى (ج ١٤ص١٣٣) وفتح البارى (ج ٢٥ص٤٩)-

٥) (الصحيح لمسلم كتاب الإمارة باب ثواب من حبسه العذر عن الغزو رقم (٤٩٣٢)-

۶) (شرح القسطلانی (ج۵ص۶۳)-

٧) (سننَ أبي داود كتاب الجهاد باب الرخصة في القعود من العذر رقم (٢٥٠٨)-

طريق نه کړيدې. (۱)

نوله: (قال أبوعبدالله: الأول أصح: امام بخاري بَيْنِيْ فرمائي رومبي سند زما په نزد

د مذکوره تعلیق مقصد امام بخاری است دلته دوه سندونه ذکر کری دی اوس دا فرمانی اولني سند زما په نزد ډير صحيح دې په نسبت د دوئم،اولني نه مراد هغه سند دې کوم کښې چه موسی بن انس نشته.

او د صحت وجه دا ده لکه څنګه چه تاسو ګورئي چه د موسي بن انس کوم روايت دې هغه مُعنعن دې او ړومبې سند د تحديثِ الفاظوسره دې لکه چه د زهير په روايت کښې دې. په دې معامله کښې اسماعیلی د حضرت امام مخالفت اوکړو او وئي فرمائیل حماد د

. حميد د احاديثو عالم دي او په دې سلسله کښي هغه ته په نورو ترجيح حاصله ده.

دا هم کیدیشی چه حمید دا روایت دوه ځل اوریدلې وی یو ځل د حضرت انس کاتو نه او په دوئم ځل د هغه د ځوئ موسى نه، په دې وجه دلته داسې څه خبره نشته چه اولني ته په دوئم باندې ترجيح ورکړيشي.(٢)

فائده آدلته لکه څنګه چه تاسوګورئي امام صاحب حدیث باب په دوو طرقوسره نقل کړې

دې اولنئي طريق د احمد بن يونس دي او دونم د سليمان بن حرب.

نو امام بخاری مید د زهیر روایت د حماد بن زید روایت سره مقرون کړیدې اود امام صاحب غرض دَ دې دِوو فائدو طرف ته اشارِه کول دی. هغه دا چه دَ زهير په روايت کښې د

غزوې تصريح ده او د حماد په روايت کښې د غزوې تصريح نشته . دونم دا چه د زهير په روايت کښې د حضرت انس اللي طرف ته د تحديث صراحت دې او د

حماد په روايت کښې عنعنه ده (۳)

يوه بله فائده: د حديث باب نه دا معلومه شوه كه يو سړې د خه نيك عمل نيت ساتلو باوجود د خه شرعی عذر په وجه د هغی پوره کولو نه پاتی شی نو بیا به هم ده ته د عمل کونکی اجر ورکولی شی. لکه چه حضور ناش نه مروی دی که یو سړی د شپی مونځ یعنی تهجد نه پاتی شی او په هغه د خوب غلبه شوی وی نو بیا به هم هغه ته د تهجد ثوآب ملاویږی اود هغه خوب به د هغه د پاره صدقه شمیرلی کیږی (۴)

ترجمة الباب سره مطابقت: د حديث باب ترجمة الباب سره مطابقت د نبى كريم كليم الشاد

مبارك ((حبسهمالعدر)) كښې دې. (۵)

١) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ١٣٣) و تغليق التعليق (ج ٣ ص ٤٣٤)-

۲) (فتح الباری (ج۶ص۷۶) وعمدة القاری (ج ۱۶ ص۱۳۳)-

^{3) (}حواله بالا -

 $^{^{1}}$) (عمدة القارى (ج 1 1 ص ١٣٣) وشرح ابن بطال (ج 0 ص 1) -

۵) (عمدة القارى (جَ ٤ ١ص١٣٣)-

٢٠- بَأَب: فَضْلِ الصَّوْمِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ

دَترجمة الباب مقصد امام بخاری مُنَالَة دَ دې ترجمې لاندې په جهاد کښې دَ روژې ساتلو فضیلت بیانول غواړی (۱)

یوتعارض اودهنی جواب دلته دا یو اشکال پیدا کیږی چه امام بخاری و اندی باب قائم کوی وو «باب من اعتاد الغزو علی الصوم» اوهلته ئی د روژی نه ساتلو اولیت بیان کری وو ځکه چه په روژه سره د دښمن مقابله کولو کښی کمزورئی اندیښنه پیدا کیږی. اود دی ترجمه الباب لاندی مصنف گښت په جهاد کښی د روژی ساتلو فضیلت بیانوی؟ خود دی تعارض جواب واضح دی هغه دا چه و راندی کوم باب قائم کړی وو هغه د هغه سړی په حق کښی دی چاته چه د ضعف او کمزورئی خطره وی بیا په هغه صورت کښی روژی نه دی ساتل پکار خو که یو سړی په جهاد کښی دی او د روژی ساتلو طاقت لری او په دی پوهیږی چه زما په روژه ساتلو سره د جهاد په مشاغلو کښی څه خلل نه واقع کیږی ، کمزوری کیږی نه، نو بیا خو یقیناً د ده د پاره لوی اجر دی. ځکه چه په دی کښی اجتماع الفضیلتین ده چه هغه دو و فضیلتونه راجمع کوی، د روژی او د جهاد فضیلت (۲)

[٢٦٨٥] حَذَّنَنَا إِسْحَاقُ بُنُ نَصْرِ حَذَّنَنَا عَبُدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْمٍ قَالَ أَخْبَرَنِي يَحْيَى بُنُ سَعِيدٍ وَسُحَيْلُ بُنُ أَبِي صَالِمٍ أَنَّهُمَا سَمِعَا النُّعْمَانَ بُنَ أَبِي عَيَّاشٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ (٣) الْخُدُرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ وَسَلَّمَ يَقُولُ مَنْ صَامَرَيُومًا فِي سَعِيدٍ اللَّهُ وَسَلَّمَ يَقُولُ مَنْ صَامَرِيُومًا فِي سَعِيلِ اللَّهُ وَسَلَّمَ يَقُولُ مَنْ صَامَرَيُومًا فِي سَعِيلِ اللَّهُ وَهُمَ اللَّهُ وَجُهَهُ عَنْ النَّا رِسَبُعِينَ خَرِيقًا

تراجم رجال

ا اسماق برن نصر: دا اسحاق بن ابراهیم بن نصرالسعدی المنجدی رئید دی (۴) - عبدالرزاق: دی (۴) - عبدالرزاق بن همام بن نافع صنعانی یمانی رئید دی د دوی حالات ((کتاب الإیهان باب حسن اسلام البرم) لاندی تیر شوی (۵)

۱) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٣٣)-

۲) (فتح الباری (ج۶ ص٤٨) د دې مضمون تفصیلی تشریح کتاب الصیام باب الصوم فی السفر لاندې تیره شوې. فلیراجع ثمه-

٣) (قوله: عن أبى سعيد الخذرى رضى الله عنه: الحديث أخرجه مسلم كتاب الصيام باب فضل الصيام فى سبيل الله سبيل الله لمن يطيقه رقم (٢٨١١) والترمذى غفى فضائل الجهاد باب ماجاء فى فضل الصوم فى سبيل الله رقم (١٤٢٣) وابن رقم (٢٢٣٧) وابن ماجه أبواب الصيام باب فى صيام يوم فى سبيل الله رقم (١٧١٧) وابن ماجه أبواب الصيام باب فى صيام يوم فى سبيل الله رقم (١٧١٧) -

٤) (دَ دوى دَ حالاتو دَ پاره اوګورئ کتاب الغسل باب من اغتسل عریانا وحده في الخلوة ـ

۵) (کشف الباری (ج۲ص۳۲۱)-

م-ابر جريج: دا عبدالملك بن عبدالعزيز بن جريج مين دي. (١)

م- یحیی بری سعید: دامشهور تابعی محدث یحیی بن سعید بن قیس انصاری میه دی. دی. در در کتاب الإیهان باب صوم رمضان احتسابا) لاندی تیرشوی دی. (۲)

ه- سهیل بر ابی صالح: دا ابویزید سهیل بن ذکوان السمان ابی صالح مولی جویریه بنت الاحمس المدنی ریالت دی د ده نور دری رونره هم محدثین وو. (۳) دی د خپل پلار ذکوان ، سعید بن المسیب، حارث بن مخلد انصاری، ابوالحباب سعید بن یسار، عبدالله بن دینار، عطاء بن یزید اللیثی، نعمان بن عیاش، ابن المنکدر، ابوعبیدصاحب سلیمان، عبدالله بن مقسم، قعقاع بن حکیم، سمی مولی ابی بکر، اعمش او ربیعة الرائی اعمش، یحیی بن ند د حدیث روایت کوی. د ده نه په روایت کونکوکنبی ربیعة الرائی اعمش، یحیی بن سعیدالانصاری، موسی بن عقبه، یزیدبن الهاد، امام مالك، زهیربن معاویه، زهیربن محمد، سعید الانصاری، موسی بن عقبه، یزیدبن الهاد، امام مالك، زهیربن معاویه، زهیربن محمد، علاء بن المسیب، ابوعوانه، یعقوب بن عبدالرحمن اسکندرانی کین وغیره شامل دی. (۴) علاء بن المسیب، ابوعوانه، یعقوب بن عبدالرحمن اسکندرانی کین وغیره شامل دی. (۴) امام ترمذی کین فرمائی (رعن سفیان بن عبدالرحمن اسکندرانی کین و فیره شامل دی. (۴)

ابوطالب مراثي وماثى: ((سألت أحمد بن حنهل عن سهيل بن أبي صالح، ومحمد بن عمرو، ققال: قال يحيى بن سعيد: محمد أحبهما إلينا، وما صنع شيئا سهيل أثبت عندهم))(٧)

ماد امام احمد بن حنبل رسل نه د سهیل بن ابی صالح او محمدبن عمرو باره کښی تپوس اوکړو نو هغه اوفرمائیل چه یحیی بن سعید رسل فرمائیلی ووچه په دی دواړو کښی مونږ ته زیات خوښ محمد دی. او یحیی بن سعید هیڅ هم اونه وئیل. سهیلی د هغوی په نزد اثبت دی. احمد بن عبدالله عجلی رسهیل شهیل فرمائی ((سهیل نقه))(۸)

امام نسائی روالت فرمائی ((لیسهههاس))(۹)

۱) (دّ دوى دّ حالاتو دّ پاره اوګورئ کتاب الحیض باب غسل الحائض رأس زوجها وترجیله -

۲) (کشف الباری (ج۲س۳۲۱)-

٣) (تهذيب الكمال (ج١٢ص٢٢)-

ع) (شيوخ و تلامذه د باره او گورئ تهذيب الكمال (ج١٢ص٢٢٦-٢٢٥)-

٥) (الجامع للترمذي أبواب الجمعة باب ما جاء في الصّلاة قبل الجمعة وبعدها رقم (٥٢٣)-

^ع) (تهذيب الكمال (ج١٢ص٢٢)-

٧) (حواله بالا ـ

٨) (تهذيب الكمال (ج٢٢ص٢٢)-

٩) (سير أعلام النبلاء (ج٥ص٤٥٩)-

كتىابالجهاد(جلدا_{ول}

ابن سعید رسید فرمانی ((کان تقه، کثیرالحدیث)) (۱)

ابن حبان مميد هغه په رکتاب الثقات، کښې ذکرکړيدې او فرمائي ((کانيخطئ))(٢) ابن شاهین برای هم د ده ذکر په خپل کتاب (الثقات)کښې کړې او فرمانی ((من المتقنين) انهاتوق فی غلط حدیثه مین یا عنه عنه) دی د اصحاب ضبط او اتقان نه دی د هغه د غلطر احادیثونه چه کوم پرهیز کریشوی دی د هغی وجه هغه خلق دی د چانه چه دی روایت اخذ کوی (۳)

یحیی بن معین ممیله فرمانی ((ثقة)) (۴)

علامه ذهبي براية د هغوى تذكره په دې الفاظوكښې شروع كړيده (الإمام المحدث الكبير السادق....)(۵)

مزيد فرمائي ((سهيل بن أبي صالح في عداد الحفاظ))(ع)

لكه څنګه چه تاسو اوكتل چه سهيل بن ابي صالح ډيرو محدثينو او نقاد ثقة او معتبر ګرځولې دې خو داسې هم ډير محدثين دي کومو چه دې ضعيف او غيرمعتبر اوګرځولو او په هغه باندې ئې کلام کړيدې. امام بخاري رئيلي د هغوي باره کښې فرماني ((کان لسهيل انه فهات فوجد عليه فنس كثيرامن الحديث)) (٧)

د سهیل یو رور وو نود هغه وفات اوشو، په دې باندې سهیل ته سخته صدمه اورسیده د څه په وجه چه هغه ډير احاديث هير کړل. ابوحاتم رُرالت فرمائي ((يکتب حديثه ولايحتج به))(۸) یحیی بن معین هم د یو ضعیف قول مروی دی. (۹) دغه شان امام عقیلی (۱۰) ابوزرعه (۱۱) اورازدی (۱۲) مختم وغیره هم په دوی کلام کړیدی. اوس دا دواړه قسمه اقوال د تعدیل او جرح په وړاندې کيخودو باندې دا خبره معلوميږي چه دا راوي معتبر دې او په هغه

۱) (طبقات ابن سعد (ج۶ص۲۲۷)-

۲) (تعليقات تهذيب الكمال (ج١٢ص٢٢)_

٣) (حواله بالا-

٤) (سيرأعلام النبلاء (ج٥ص٤٥٩)-

٥) (حواله بالا (ص٤٥٨)-

٤) (تذكرة الحفاظ (ج١ص١٦)-

۷) (تعلیقات تهذیب الکمال (ج۱۲ص۲۲۸) وهدی الساری (ص۰۸)۔

۸) (الجرح والتعديل (ج ٤ يص ٢٣٠) رقم (٤١٨٢)-

۹) (سيرأعلام النبلاء (ج۵ص٤٥٩)-

١٠) (الضعفاء للعقيلي (ج٢ص١٥٥) الجرح والتعديل (ج٤ص٢٣٠) رقم (٢٨٢)_

١١) (تهذيب الكمال (ج١٢ص٢٢٣)-

۱۲) (تعليقات تهذيب الكمال (ج۱۲ص۲۲۸)-

باندې د انمه جرح وتعدیل کلام د هغه درجې نه دې د کوم په وجه چه دوی مجروح، متکلم نیه او غیر معتبر اوګرځولې شي. د امام بخاري اینځ نه علاوه نور اصحاب خمسه د هغوی اصاله روایات نقل کړی دی چه په دې خبره باندې دال دی چه دا معتبر راوی دې.

امام ابن عدى مُنافئ فرمانى: ((ولسهيل أحاديث كثيرة وله نسخ، وروى عنه الأثبة مثل الثورى وشعبة ومالك وغيرهم من الأثبة وحدث سهيل عن جماعة عن أبيه، وهذا يدل على ثقة الرجل، حدث سهيل عن سبى، عن أبي صالح، وحدث سهيل عن الأعبش عن أبي صالح.... وهذا يدلك على تمييز الرجل وتمييزين ماسبع من أبيه، ليس بينه وبين أبيه أحد، وبين ماسبع من سبى والأعبش وغيرهما من الأثبة، وسهيل عندى مقبول الأخبار، ثبت، لابأس به) (١)

او د سهیل نه مروی احادیث ډیر دی... د هغه ډیرې نسخې هم دی. امام ثوری، شعبه او مال غوندې ائمه د هغوی نه روایت کوی او سهیل د یو جماعت نه د خپل والد په واسطه روایت بیان کړیدې او دا فعل دې سړی (یعنی سهیل) په ثقاهت باندې دال دې، او سهیل د عن سیءن ای صالح په طریق باندې تحدیث کړې او هغوی عن الأعمش عن ای صالح په طریق هم تحدیث کړیدې او هم دا څیز د دې خبرې طرف ته د هغه لارخودنه کوی چه دا سړې د روایاتو په مینځ کښې د ښه تمییز نه کار اخلی، هغه روایات کوم چه د خپل والد نه روایت کوی مستقل نقل کوی او کوم روایات چه هغه ((سیءن الأعمش)) په طریق یا د نورو انمو نه نقل کوی هغه هم واضح نقل کوی، سهیل زما په نزد ثبت دې د هغه احادیث مقبول دی او

لابأسبه دی.
بیا د پوهی خبره دا هم ده چه امام بخاری رُوان د هغه نه کوم روایات اخستی دی هغه نی مقرونا بالغیر اخستی دی او په هغی کښی ده سره یحیی بن سعید انصاری هم شامل دی، د دی د پاره په امام صاحب باندی هیڅ اعتراض نه واردیږی چه هغوی د یو متکلم فیه راوی روایت څنګه نقل کړلو؟(۲) امام بخاری رُوان د رکتاب الجهاد، نه علاوه په (کتاب المجهاد) کښی هم د هغه نه دوه روایتونه اخستی دی، مقروناوتهاللغیر-(۳) د ابن قانع رُوان مطابق هغه ۱۳۸ ه کښی انتقال شوی (۴) رحمه الله رحمة واسعة-

۲- نعمان بر ابی عیاش: دا ابوسلمه نعمان بن ابی عیاش زرقی انصاری مدنی کنتهٔ دی د هغوی والد مشهور صحابی حضرت زید بن صامت نامی دی ۵)

۱) (الكامل لابن عدى (ج٣ص٩٤٤)-

۲) (هدی الساری (ص۸۰۶)-

٣) (حواله بالا وعمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٣٤)-

^{4) (}تهذیب التهذیب (ج ٤ ص ٢۶٤)-

٥) (تهذيب الكمال (ج ٢٦ص ٤٥٤ –٤٥٥) -

د هغوی والده ام ولد وه (۱) دې د حضرت جابر بن عبدالله، عبدالله بن عمربن خطاب م مسوى والمديد مروي و مصرت خوله بنت عامر في الله نه د حديث روايت كوى د ده نه دَ حدّیث روایت کونکوکَښی یحیی بن سعیدانصاری، سهیل بن ابی صالح، ابوحازم سلمه بن دينار، أبوالاسود، محمد بن عبدالرحمن بن نوفل، محمد عجلان، سمى مولى أبى بكر أو عبدالله بن سلمة الماجشون وغبره شامل دى. (٢)

امام ابن معین رکھی فرمائی ((لعّة)) (۳)

علامه ذهبی رئید فرمائی ((ثقة،من ابناء کهار الصحابة)) (۴)

ابن حبان رواية هغه په (کتاب الثقات) کښې ذکر کړيدې. (۵)

امام بخاری او امام ابوبکر بن مجویه مینیم فرمائی ((کان سخیا، کبیرا، من أفاضل أبناء أسحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم، وكان أبولا فارس النبى صلى الله عليه وسلم)) (ع)

د امام ابوداود مراه المستم نه علاوه باقي اصحاب اصول سته د هغه نه روايت اخستي دي. (٤) رحمه الله ورحبة واسعةً

٥- ابوسعيد الخدري: دامشهور صحابي ابوسعيد سعد بن مالك بن سنان التاتي دي، د دوي حالات ((کتاب الإیبان باب من الدین الغمار من الفتن)) لاندی تیرشوی دی. (۸)

قوله: قال: سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول: من صام يوما في سبیل الله بعن الله وجهه عرب النار سبعین خریفاً: حضرت ابوسعید ظائر فرمائی چه ما د نبی کریم کالی نه اوریدلی دی هغوی فرمائیل چه چا د الله تعالی په لارکښی یوه ورځ روژه اوساتله، الله تعالی به د هغه مخ د دوزخ د اور نه اویا کاله لرې کړی. دُ مَبَاعَدَه نه شه مراد دي؟: امام نووي رَوِي عَدِيثَ باب كښي تاويل كولو سره فرمائي چه د مباعده نه مراددلته معافات دې يعني د دوزخ نه به هغه ته خلاص اومعافي ورکړې شي. (۹) او علامه عيني مختله فرماني که حديث شريف د هغې په خپله حقيقي معني باندې محمول

١) (طبقات الكمال (ج٢٩ص٢٧٧)-

٢) (شيوخ او تلامذه د تفصيل د پاره او گورئ تهذيب الكمال (ج ٢٩ ص ٤٥٥)-

٣) (تهذيب الكمال (ج٢٩ص٤٥٥)-

٤) (الكاشف للذهبي (ج٢ص٣٢٣)-

۵) (الثقات لابن حبان (ج۵ص۲۷۶)-

۶) (التاريخ الكبير (ج۸ ص۷۷) رقم (۲۲۲۹) وتهذيب الكمال (ج۲۹ص٤٥)_

٧) (الكاشف للذهبي (ج٢ص٣٢٣)-

۸) (کشف الباری (ج۲ص۸۲)-

۹) (شرح النووي على مسلم (ج ۱ ص ۳۶ ٤)-

کریشی نو بیا هم څه بدی نشته، که حقیقه د آویاو کالو مسافت مراد واخستی شی او دا اوونیلی شی چه د دې سړې مخ به واقعه د دوزخ نه اویا کاله لرې کولی شی. (۱) د دوزخ نه به رژوه دار لرې کولی شې که د هغه مخ بیا په حدیث شریف کښې دا راغلی دی چه د روژه دار مخ مه د دوزخ نه د اویاو کالو برابر په مسافت باندې لرې وی، بعض نورو طرق (۲) کښې د روژه دار د لرې کولو ذکر دې؟ د دې ظاهرې تعارض دوه جوابونه دي:

①((وجه)) نه مراد ذات دې لکه چه په قرآن کريم کښې ارشاد دې (کلشئ مالك إلا وجهه)(۳)

او دلته په اتفاق سره ((وچه)) نه ذات مراد دې په دې صورت کښې به معني هم يوه شي.

٠ ((وجه))نه دَ دِې حقيقي معني مراد ده او مطلب دا دې چه صرف مخ به د د دوزخ نه لرې كُولَى شَى، خُودَ دې مطلب دا هم نه دې چه د هغه په بدن پورې به د دوزخ اُور لگي بلكه (روجه) تخصیص بالذکر د وجه نه دا دې چلاد روژې د وجه نه سړي ته تنده لګي او د تندې ځائ مخ دې ځکه چه د تندې نه خروبوالې د مخ په دريعه کيږي. (۴) ((خريف)) په اردو کښې موسم خزان ته وائي ليکن مراد دلته کال دې، ځکه چه کال بغيرد خزان نه نه وي او دا د کنایه د قبیل نه دی. (۵)

او د خريف تخصيص بالذكر په وجه حافظ صاحب دا بيان فرمائي چه په دې موسم كښي د ميوو راغوندونه كولي شي او هغه د ونونه راكوزولي شي نو په دې وجه دا د كال د ټولونه بهترين موسم دي. (ع)

په روایاتوگښی اختلاف او په هغی کښی تطبیق او ترجیح: په روایاتوکښی د دوزخ نه لریوالی او ابعاد په موده کښی اختلاف موندلی شی. په روایت باب کښی د اویاؤ کالو ذکر دی او په نسائی شریف(۷) کښی حضرت عقبه بن عامر اوطبرانی کښی حضرت عمروبن عبسه(۸) اوِ عبدالله بن سفیان تُوَلِیم (۹) په روایاتوکښې د سلو کالو ذکر دې. ابن عدی (الکامل) کښې د حضرت انس اللي حدیث نقل کړیدې په هغې کښې د پنځو سوو کالو عدد دې (۱۰)

۱) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٣٤)-

٢) (سنن النسائي كَتاب الصيام باب ثواب من صام يوما في سبيل الله عزوجل..... رقم (٢٢٤٧، ٢٢٥١)-

۲) (القصص:۸۸) –

⁴) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٣٤)-

⁰) (حواله بالا ـ

۶) (فتح البارى (ج۶ص٤٥)-

٧) (سنن النسائي كتاب الصيام باب ثواب من صام يوما في سبيل الله عزوجل وذكر الاختلاف فيه على سفیان الثوری رقم (۱۱۵۶)-

^{۸)} (مجمع الزواند للثيثمي (ج٣ص ١٩٤)-

٩) (حواله بالا_

۱۰) (الكامل لابن عدى (ج۲)-

دغه شان طبرانی (البعجم الصغیر) کنبی د حضرت ابوالدرداء (۱) او حضرت جابر(۲) ندار امام ترمذی د حضرت ابوامامه (تأکیم نه یو حدیث روایت کریدی د هغی الفاظ دا دی ((جمل الله بینه وبین النار عندقا کها بین السهاء والأرض) (۳) ابن عساکر د حضرت ابن عمر الله نه روایت کریدی په هغی کنبی د اووسوو کالوذکر دی (۴) او هم ابن عساکر د حضرن ابوالدرداء (الفسنة) الفاظ هم نقل کړی دی. (۵)

اوس لکه څنگه چه تاسو اوکتل چه په دې روایاتوکښې سخت اختلاف موندلې شي او شارحینو د دې اختلاف د لرې کولودپاره مختلف قسم جوابونه ارشاد فرمائیلې دی:

- ① علامه عینی فرمائی اصل دایدې چه دا اوکتلې شی چه د چا طریق د تولونه زیان صحیح دې نو په هغې کښې اصح روایت د اویاؤ کالووالا دې کوم چه امام بخاری په حدیث باب کښې ذکر کړې او دا ځکه چه دا متفق علیه حدیث دې.
- دا جواب هم وركولي شي چه الله تعالى خپل حبيب ترايخ ته اول اقل المسافاة علم وركړو
 او بيا درجه په درجه په دې علم كښي زياتوالي اوكړو.
- وی د دی خبری هم احتمال دی چه د دی اختلاف بناء د روژه دارو په اختلاف باندی مبنی
 وی، د روژی د کمال صحت او نقصان په اعتبار سره چه د څه کسانو روژه په هر اعتبار سره
 کامله وی او د بعضو ناقصه وی. (۶)
- ا مام قرطبی مُنَالَةُ فرمائی چه دلته به حدیث باب کښی د سبعین لفظ د تکثیر د باره راغلی دی یعنی عدد که هرڅه وی خو مراد ترې کثرت دې، هم دا حافظ ابن حجر هم راجع کرخولی دې. (۷)

تنبیه: حدیث باب د سهیل بن ابی صالح نه نقل کولوکښی د تلامذو اختلاف دی ځکه چه اکثررواه حدیث باب د ((سهیل بن أبی صالح، نعمان بن أبی عیاش عن أبی سعید الخدری)) په طریق سره نقل کړیدې. لکه چه زمونږ په وړاندې حدیث کښی دی، لیکن امام شعبه دا ((سهیل بن أبی صالح عن صغوان بن یوید عن أبی سعید)) په طریق سره نقل کړیدې. لکه چه په نسائی شریف (۸) کښی راغلی دی، د دې د پاره ممکن دی چه د سهیل بن ابی صالح په دې حدیث کښی دوه

۱) (مجمع الزوائد للثيثمي (ج٣ص ١٩٤)-

٢) حواله بالا-

٣) (الجامع للترمذي أبواب الجهاد باب ماجاء في فضل الصوم في سبيل الله رقم (١٤٢٤)-

٤) (عمدة القارى (ج٣ص ١٣٤)-

۵) (تهذیب دمشق الکبیر لابن عساکر (ج۲ص٤٥٠)-

۶) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٣٥)-

۷) (فتح الباري (ج۵ص٤۹)-

٨) (سنن النساني كتاب الصيام باب ثواب من صام يوما في سبيل الله عزوجل رقم ٢٧٤٩)-

شیخان وی، نعمان بن ابی عیاش او صفوان بن یزید (۱)

ه مدیث د ترجمه الباب سره مطابقت ترجمه الباب نه د حدیث مناسبت بالکل واضح دی ۲۰ به ترجمه کښی د صومنی سبیل الله ذکردی او په حدیث کښی هم همدغه ذکر دی.

٣٥- بَأْب: فَضْلِ النَّفَقَةِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ

ذ توجمه الباب مقصد امام بخاری مُنْ الله دی ترجمه الباب لاندی د الله تعالی به لارکښی د خرج کولو فضیلت بیانوی. او ((سبیل الله)) نه مراد جهاد دی لیکن علامه عینی مینی فرمایی چه مناسب همدغه ده چه دا عام او گرولی شی که هغه جهاد وی که بل څه عبادت ځکه چه لفظ ((سبیل الله)) عام دی. (۲)

[٢٦٨٦] حَدَّثَنِي سَعُدُبُنُ حَفْصِ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَعْنِي عَنْ أَبِي سَلَمَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيُرَةً رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ (٣) عَنْ النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ أَنْفَقَ زَوْجَيْن فِي سَبِيلِ اللَّهِ دَعَاهُ خَزَنَهُ الْجَنَّةِ كُلُّ خَزَنَةِ بَابٍ أَيْ فُلُ هَلُمَّ قَالَ أَبُوبَكُ إِيَارَسُولَ اللَّهِ ذَاكَ الَّذِي لَا تَوَى عَلَيْهِ فَعَالُهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنِّي لَأَرْجُوا أَنْ تَكُونَ مِنْهُمْ [٣٠٣] فَقَالَ النَّبِيُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنِّي لَأَرْجُوا أَنْ تَكُونَ مِنْهُمْ [٣٠٣]

تراجم رجال

- سعد بن حفص الطلحي الكوفي بينية دي (۵) محمد سعد بن حفص الطلحي الكوفي بينية دي (۵) مسيبان عبد الرحمن النحوي بينية دي مسيبان بن عبد الرحمن النحوي بينية دي

<u>-- یحیی:</u> دا ابوالنضر یحیی بن ابی کثیر الطائی الیمانی رواند دی. (۶)

٣- ابوسلهه: دا دَحضرت عبدالرحمن بن عوف الله على ابوسلمه عبدالله المرابع دي. دَ ده حالات (ركتاب الإيبان) المنابع دي. (٧) حالات (ركتاب الإيبان) المنابع دي. (٧)

<u>د- ابوهریره ناتی:</u> داجلیل القدرحافظ وفقیه ومکثرصحابی حضرت ابوهریره ناتی دی، د دوی حالات هم(رکتاب۱لایمانهابامورالایمان)) په ذیل کښې بیان کړیشوی دی. (۸)

^{!) (}فتح الباري (ج۶ص ٤٨) وعمدة القاري (ج ١٤ص ١٣٤)-

۲) (عمدة القارى (ج ۱ اص ۱۳۶)-

٣) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٣٥)-

أ (قوله: ابوهريرة رضى الله عنه: الحديث مر تخريجه في كتاب الصوم باب الريان للصائمين -

٥) (د دوى د حالاتود پاره او مورئ كتاب الوضوء باب من لم يرالوضوء إلا من المخرجين...-

ع) (دَ شيبان او يحيى دَ حالاتودَ باره او كورى كتاب العلم باب كتابة العلم-

۷) (کشف الباری (ج۲ص۳۲۳)-

۸) (کشف الباری (ج ۱ص ۶۵۹)-

قوله: عرب النبي صلى الله عليه وسلم قال: مرب أنفق زوجين في سبيل الله دعاه خزنة الجنة، كل خزنة بأب: أي فل، هلم خضرت ابوهريره الله عالى و رسول الله الله نه روايت كوي چه هغوى فرمانى كوم سړى چه جوړه څيزونه د الله تعالى په لاركښي خرچ كوى هغه به د جنت د هرې دروازې دربان راغواړى چه اې فلانكى راشه.

د ((زوج)) اطلاق په يو هم کيږي او په دوو هم،خو دلته په متعين توګه باندې هم يو مراد دي. (۱)

او دلته نی دا خودلی دی که یوسری هر قسم دوه څیزونه یا د دوو مختلفو قسمونو دوه مختلف مختلفو مختلفو مختلفو مختلف مختلف مختلف مختلف د هرې دروازې دربان به هغه راغواړی چه راشه.

ر سوله و الله علامه خطابی و و الله و

((كل خزنة باب)) كښى قلب شويدې دا په اصل كښى ((خزنة كل باب)) دې. (٣)

د ای فل تحقیق نحوی: (رأی فل) کښی (رأی) حرف ندا دی او ((فل)) په اصل کښی ((فلان)) دی بغیر د ترخیم دینه الف او نون حذف کړیشویدې. د منادی کیدلو په صورت کښې به دا (ریافل) لوستلی شی. (۴)

او علامه خطابی مید فرمانی چه ((فلان)) ((فلان)) نه مرخم دی لکه چه ((حارث)) نه (ریاحادِ)) دی. (۵)

خو عُلامه عینی ایمینی ایمینی به دی باندی رد کولو سره فرمائی چه دا مرخم نه دی بلکه یو بل لغت دی کوم کښی چه دا مرخم نه دی کښی جاری دی کښی جاری شوی وی نو دا به فُلا وو، والأمربعکس ذلك. (۶)

قوله: قال أبوبكر: يارسول الله، ذلك الذي لاتوي عليه: حضرت ابوبكر الله اووئبل يا رسول الله؛ كوم ته چه څه خساره او ضياع نشته.

مطلب دا چه هغه ته خو به د هیخ قسم خساری او هلاکت اندیښند نه وی څوك چه به د هرې

۱) (فتح الباري (ج۶ص ۳۹)-

٢) (أعلام الحديث (ج٢ص١٣٧٣)-

۳) (فتح الباري (ج۶ص۹۶)-

٤) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٣٥)-

٥) (أعلام الحديث (ج٢ص١٣٢)-

ع) (عمدة القارى (٤ أص١٢٥)-

دروازې نه راغوښتې شي که په يوه داخل نشي نو په بله به داخل شي. (۱)

ټوييټوي توئ معنى د هلاك او ضائع كيدلو ده اود دې باب ضرب دې نو كه چرې مال ضائع ئىي نو وئيلى شى ((توى المال))(٢)

توله: فقال النبی صلی الله علیه وسلم: أنی لأرجو أن تكون منهم: نو نبی كريم نظم اوفرمائیل زما امید دې چه هم ته به د هغوی نه نی (څوك چه به د جنت د هرې دروازې نه راغوښتې شی)

په دې کښې د ابوبکر صديق الله کو د فضيلت ذکر دې او د دې تفصيل به (کتاب المناتب) کښې راشي.

دَروایاتوپه مینځ کښې تعارض اود هغې حل دا حدیث په (کتاب الصوم) کښې هم تیرشو، هلته دا دی چه د هر عمل خاوند به د هغې د خپلې خپلې دروازې نه راغوښتلې شي، اصحاب الصلاة به د صلاة والا دروازې نه، اصحاب الصوم د الصلاة به د صلاة والا دروازې نه، اصحاب الصوم د صوم د دروازې باب الریان) نه اواصحاب النفقات به دصدقې والا دروازې نه راغوښتلې شي (۳) خود باب په روایت کښې دا راغلی دی چه انفاق في سبیل الله کونکې به د جنت د هرې دروازې نه رابللې شي نو په دواړو روایتونو کښې ښکاره تعارض دې

علامه سندهی مین د دې تعارض د پاره درې حله بیان کړی دی:

(د باب روایت وهم دی، د یوراوی نه سهوه شویده او د دی قسم روایاتوکښی هم دغه ظاهر ده.

﴿ انفاق في سبيل الله كونكى خو به جنت كښى داخليږى د ((باب الصدقة)) نه ځكه چه دې هم د دي د اهل نه دى، كمالى رواية كتاب الصوم خو د دې سره به د هغه د اعزاز او تكريم د پاره د جنت د هرې دروازې دربان هم هغه رابلى او د هغه خواهش به همدغه وى چه دا سړې دې د هغه په دروازه جنت كښى ورداخل شى كمالى دواية الهاب-

© دواړه احادیث په دوو مختلف وختونوکښې نبی کریم نکال ارشاد فرمائیلی دی. اول حضور نکال د رکتاب الصوم حدیث بیان کړو لیکن د هغې نه پس حضور نکال ته د وحی په ذریعه د دونم حدیث په سلسله کښې اوخودلې شو نو هغوی تاپی هغه هم بیان کړه، په دې وجه اوس څه تعارض پاتې نشو (۴)

د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت د حديث مطابقت ترجمه الباب سره واضح دي او د

١) (أعلام الحديث (ج٢ص١٣٧٢)-

٢) (أعلام الحديث (ج٢ص١٣٧)-

۳) (صعيع البخاري (ج ۱ص ۲۵۶) كتاب الصوم باب الريان للصانعين رقم (۱۸۹۷)-

 $^{^{2}}$) (صحیح البخاری بحاشیة السندی (ج ٢ص 2 ١٤) دارالمعرفة، بیروت (صحیح البخاری بحاشیة السندی

بیانولو محتاج نه دې (۱) د انفاق فی سبیل الله ترجمه ده او حدیث باب کښې ^{د دې}

فضيلت بيان شويدي.

[٢١٨٠] حَدَّثَنَا هُعَمَّدُ بُنُ سِنَانِ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ حَدَّثَنَا هِلَاْ عَنْ عَطَاءِ بُنِ يَسَادِ عَنْ أَبِي سَعِيدِ الْخُدُدِيِّ (٢) رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَامَ عَلَى الْمِنْبُرِ فَقَالَ إِنَّمَا أَخْدَى عَلَيْكُمْ مِنْ بَوَكَاتِ الْأَرْضِ ثُمَّ ذَكَرَ وَهُرَةَ الدُّبُيَا فَبَدَا بَا حَدَاهُمَا وَتَنَى بِالْأَخْرَى فَقَامَ رَجُلْ فَقَالَ يَارَسُولَ اللَّهِ أَوْيَأْتِي الْخَيْرُ بِالشَّرِ فَسَكَتَ عَنْهُ النَّيْنُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قُلْنَا يُوحَى إِلَيْهِ وَسَكَتَ النَّاسُ كَأَنَ عَلَى دُو سِجِمُ الطَّيْرُ فَمُ النَّيْنِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قُلْنَا يُوحَى إِلَيْهِ وَسَكَتَ النَّاسُ كَأَنَّ عَلَى دُو سِجِمُ الطَّيْرُ فَمُ النَّامِ فَيَا اللَّهِ وَاللَّهُ الْمُعْرَفُومَ لَلْ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعْرَفُ مَنَعَ عَنْ وَجُهِ الرُّحَضَاءَ فَقَالَ أَيْنَ السَّابِلُ آنِفًا أَوْحَيْرٌ هُو ثَلَاثًا إِنَّ الْخَيْرُ لَا يَأْتِي إِلَيْهُ اللَّهُ الْمُعْرَفُ مَنَعَ عَنْ وَجُهِ الرَّحَضَاءَ فَقَالَ أَيْنَ السَّابِلُ آنِفًا أَوْحَيْرٌ هُو ثَلَاثًا إِنَّ الْخَيْرُ لَا يَأْتِي إِلَيْنِ الْمَالُ عَنْ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَمُو كَلَاثًا إِلَّهُ عَلَى اللَّهُ وَالْمَتَالُ مَنْ اللَّهُ عَلَيْهُ وَمُو كَالَتُ الشَّهُ اللَّهُ وَلَا لَكُ وَلَيْكُونُ عَلَى اللَّهُ وَالْمَنَا الْمُالُ حَفِرَةٌ خُلُوهُ وَلَوْمُ الْمُالُ حَفِرَةً وَلَا مَا اللَّهُ وَالْمَتَامَى وَالْمَالُ كَعْرَالُومَ الْقَيَامَةِ [ر:٢٥٥] وَمُنْ لَهُ اللَّهُ وَلَالِقَيَامَةِ وَلَوْمَالُقِيَامَةً وَالْمَالُ وَمُ الْفَيَامُ وَالْمَلَافُ مَلْمُ اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَالْمَنَا اللَّهُ عَلَى اللَّهُ الْمُلَامُ اللَّهُ الْمُعْرَالُ اللَّهُ الْمُعَلِي وَالْمَالُ وَالْمَالُ وَمُ اللَّهُ الْمُوالُولُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعْرَالُ اللَّهُ الْمُولُ اللَّهُ الْمُعَلَّى اللَّهُ الْمُعْلَى اللَّهُ اللَّهُ الْمُعْلَى اللَّهُ الْمُعْلَى اللَّهُ الْمُعْلَى اللَّهُ الْمُعَلَى اللَّهُ الْمُعْلَقُ اللَّهُ الْمُعُولُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعْلَى اللَّهُ الْمُعْلَى اللَّهُ الْمُعْلَى اللَّهُ اللَّهُ الْمُعْلَى اللَّهُ اللَّ

تراجم رجال

ا- هجمد بری سنان دا ابوبکر محمد بن سنان باهلی بصری عوقی مراید دی. دوه حالات (کتاب العلم باب من سئل علما و هومشتغل ق....) لاندی تیرشوی دی. (۳)

r-فليح: دا فليح بن سليمان بن ابى المغيره ريسيد دي.

-- هلال: دا هلال بن علی بن اسامه قرشی مدنی رئید دی. د دواړو حالات هم د ((کتاب العلم)) په مذکوره باب کښی بالترتیب تیرشوی دی. (۴)

٣-عطاءبر بيسار: دا ابومحمدعطاء بن يسار هلالى مدنى مُعَالَدُ دى. دَ ده حالات ((كتاب الإيمان باب كفران العشيرو كفرون كفر)) لاندى بيان كريشوى دى. (٥)

د- ابوسعیل الخدری طائع: دا مشهور صحابی حضرت ابوسعید سعد بن مالك بن سنان خدری طائع دی د ده حالات ((كتاب الإیمان باب من الدین الغمار من الفتن)) لاندی تیرشوی دی

۱) (عمدة القارى (ج ۱ ۱ ص ۱۳۵) -

٢) قوله: عن أبى سَعيد الخدرى رضى الله عنه: الحديث مر تخريجه فى كتاب الجمعة باب استقبال الناس الإمام إذا خطب-

۳) (کشف الباری (ج۳ص۵۳)-

٤) (کشف الباری (ج۲ص ١٠٤)-

۵) (کشف الباری (ج۲ص ۲۰۶)-

تنبیه: دَ حدیث مکمل تشریح ((کتاب الوکاة به الصلاقة على الیتامی) لاندې تیره شویده. د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت د حدیث ترجمه الباب سره مناسبت د حدیث په دې جمله کښې دې. ((فجله في سبیل الله))(۱)

٣٨-بَاب: فَضُلِ مَنْ جَبَّزَغَازِيَّاأَوْخَلَفَهُ بِغَيْرٍ

ذترجمة الباب مقصد دلته د ترجمة الباب امام بخارى بيني دود اجزاء ذكر كرى دى (١) من جهز غازيا المغلفه بخلا-

د اول جز وضاحت دا دې چه يو سړې بل سړی ته د جهاد سامان ورکوی، د وسلې انتظام کړي، د لارې توښه وغيره ورکوي.

اود دونم جز وضاحت دا دې چه د مجاهد شاته د هغه د کور دخلقو د خيريت معلومات کړی، د هغوی خبر وغيره اخلی، د هغوی د ضرورتونو انتظام کوی. نو دې دواړو سړو ته هم د مجاهد او مقاتل في سبيل الله غوندې ثواب ملاويږي. هم دغه د ترجمې مقصد دې چه امام بخاري مخيند دې دواړو فضيلت بيانوي. (۲)

تراجم رجال

ا- ابومعمر: دا عبدالله بن عمر بن ابى الحجاج منقرى مُرِيدٍ دې، دَ مقعد په لقب باندې مشهور دې، دَ ده حالات ((كتاب العلم باب قول النبى صلى الله عليه وسلم: اللهم عليه الكتاب)) په ذيل كښې راغلى دى. (۴)

r-عبدالوارث: داعبدالوارث بن سعیدبن ذکوان تمیمی عنبری مینید دی د ده حالات هم په مذکوره باب کښی بیان شوی دی. (۵)

١) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٣٤) وفتح البارى (ج ٤ص ٩٤)-

۲) (عمدة القارى (ج ۱۶ ص ۱۳۶)-

رقوله: زيد بن خالد رضى الله عنه : الحديث أخرجه مسلم كتاب الإمارة باب فضل إعانة الغازى فى سبيل الله بمركوب وغيره، وخلافته فى أهله بخير رقم (٤٩٠٢) وأبواؤد كتاب الجهاد باب مايجزى من الغزو رقم (٢٥٠٩) والترمذى فضائل الجهاد باب ما جاء فيمن جهز غازيًا رقم (١٥٢٨-١٥٣١) والنسائى كتاب الجهاد باب فضل من جهز غازيًا رقم (٢٧٥٩) وابن ماجه أبواب الجهاد باب من جهز غازيًا رقم (٢٧٥٩)

٤) (كشف البارى (ج٣ص٣٥٥)-

ن) (کشف الباری (ج۲ص۲۵۸)-

-- حسین: دا حسین بن ذکوان المعلم بصری منید دی. د دوی مختصر حالات ((کتاب الایهان الیمان الیما

م- يحيى: دا ابوالنضر يحيى بن ابي كثير الطائي اليمامي بيني دې. (۲)

- ابوسلمه: دا ابوسلمه عبدالله بن عبدالرحمن بن عوف بیشی دی. د ده حالات ((کتاب الإیال د- ابوسلمه) دا ابوسلمه عبدالله بن عبدالرحمن بن عوف بیشی دی. (۳) باب صوم رمضان ایمانا واحتسابا من الإیمان) لاندې نقل کړیشوی دی. (۳)

۲-بسرير سعيد: دابسربن سعيد المدنى مولى ابن الحضرمي بيت دې. (۴)

2-زير بر خالى: دا مشهور صحابى حضرت زيدبن خالدجهنى فاتو دې. د ده حالان (كتاب العلم باب الغضب في البوعظة والتعليم إذا رأى مايكرلا) لاندې تيرشوى (٥)

قوله: أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: من جبزغازياً في سبيل الله فقد غزا، ومن خلف غازياً في سبيل الله فقد غزا: حضرت زيدبن خالد جبني في في في الله فقد غزا ومن خلف غازياً في سبيل الله فقد غرم سرى مجاهد في سبيل الله ته و جهاد سامان وركري نو داسي ده لكه چه ده پخپله جهاد اوكرو او څوك چه د مجاهد في سبيل الله شاته د هغه د كور بنه خيال اوساتي نو لكه چه هغه پخپله جهاد اوكرو.

دَ تَجْهِيز نه څه مراد دې؟ دَ تَجهيز مُعنى چاته دُ سفر أسباب أو سامان وركولو ده.كه زيات وى اوكه كه زيات وى اوكه كم، تر دى چه چاته تار او ستن وركول هم په دې كښې داخل دى. طبراني (ع) د حضرت واثله بن اسقع اللي نه روايت نقل كړيدې،

(رقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: مامن أهل بيت لايغزو منهم غاز أو يجهز غازيا بسلك أو إبرة أد ما يعدلها من الورق أو يخلفه في أهل بخيرالا أصابهم الله بقارعة قبل يوم القيامة)) (٧)

که د یوی کورنئی نه یو کس هم غزوه کښی شرکت اونکړی یا د یوغازی د ستنی تاریا د دی برابر چاندئی سره تیاری اونکړی یا د هغه د بال بچ تپوس پوښتنه اونکړی نو د قیامت نه وړاندې به الله تعالی هغه په څه مصیبت کښی اخته کړی.

يواشكال أود هم جواب ليكن دلته يو اشكال پيدا كيږي او هغه دا چه امام بن ماجه سيد و

١) (كشف البارى (ج٢ص ٤)-

۲) (د دوى د حالاتود باره او كورى كتاب العلم باب كتابة العلم-

۳) (کشف الباری (ج۳ص۳۲۳)-

٤) (د دوى حالات كتاب الصلوة باب الخوخة والممر في المسجد لاندى تيرشوي-

۵) (کشف الباری (ج۳ص ۶ ۵۹)-

۶) (مجمع الزوائد (ج۵ص ۲۸۶) وقال العيني (ج ۱ ۱ ص ۱۳۷) وإسناده ضعيف_

۷) (عمدة القارى (١٤ ص١٣٧)-

حضرت عمر بن خطاب گانونه يو روايت نقل كړيدې د هغې الفاظ دا دى ((سبعت رسول الله ملى الله عليه وسلم يقول: من جهز فالياحق يستقِلُ كان له مثل أجرة حقى يبوت أويرجع)) (١) ماد رسول الله تلل نه اوریدلی دی که چا یو غازی ته د سفر مکمل سامآن آو اسباب ورکړل نود هغه دُباره به هم د دغه غازی په شان ثواب وی تر دې چه هغه غازی به یا شهیدشی یا به واپس راشی. به حدیث شریف کښې د (ریستقل)) الفاظ دی او د استقلال معنی خو پوره تیاری کول دی، د دى د پاره دا وئيل چه صرف ستن او تار وركول هم تجهيز دى صحيح نه دى.

علامه عيني المنات د دي دوه جوابونه ارشاد فرمانيلي:

٠ حديث واثله بن الاسقع ضعيف دي په دې وجه د احتجاج قابل نه دي.

واوكه د دې صحت اومنلې شي نو بيا هم د هغه سړي په حق كښې وعيد دې چه د سره د حيث قسمه سامان د مجاهد سره امداد اونکړي په دې وجه هيڅ تعارض نشته (۲)

قوله: فقدغزا: به تحقيق سره هغه هم جهاد اوكرو.

ابوحاتم آبن حبآن مُراثة فرماني چه مطلب دا دې چه ده ته به هم د غازي اجر ورکولي شي، سره دَ دې چه هغه په جهاد کښې شرکت نه دې کړې. (۳) بيا دَ يُو بل طَريقَ نه بسرين سعيد

مليد نه دا روايت نقل كړي: ((...كتبلهمثل اجراه،غيرانه لاينقصمن اجراه شئ...) ۴ ي

علامه کشمیری صاحب کرنیم فرمائی چه یوکارخو یا یو سړې پوره کوی یا د هغې د پوره کولو دَ پاره دَ يوپوره ډلې ضرورت وي، اوس که هغه کار دَ يو ډلې په کار کولوسره پوره کېږي نو په هغې کښې به هر يو کس ته د فاعل اجر حاصل وي که هغه په دې کار کښې پخپله شریك وي یا په څه طریقه ئی هم په دې كښې معاونت كړی لکه جهادچه دې دا يو داسې امر دې د څه دپاره چه د مجاهدينو د جماعت هم ضرورت دې چه اوجنګيږي، دغه شان د هغوي دَپاره د داسې سرو هم ضرورت وي چه د د دې مجاهدينو معاونت اوکړي او د هغوي شاته د هغوي په غيرموجودګني کښې د هغوي د کور مال حال خبرواخلي او د هغوي د پالنی خیال اوساتی. په دې وجه معاونت کونکې اود مجاهدینو شاته د هغوي د کور مال حال خبراخستونكي هم د الله تعالى په لاركښي د جهاد كونكي په شان دې

خلاصه دا شوه چه چا په جنګ کښې پخپله حصه واخستله او چا چه په څه طريقه سره هم د هغه مجاهد معاونت او کړو دا ټول په جهاد کښې مشترك دى، دا صحيح ده چه د اخلاص، سخاوت نفس، مال د خرج کولو او ځان قربانی کولو په وجه به د هغه په اجرکښې کمي زیاتی اعتبارکښی به اختلاف وی (۵) .

١) (أخرجه امام ماجه أبواب الجهادباب من جهز غازيا رقم (١٨٥٨)-

۲) (عمدة القارى (ج ۱ کس۱۳۷) وقد وردت أحادیث كثیرة فی تجهیز الغازی وخلفه بخیر، فمن أراد الاطلاع عليهافلينظر عمدةالقارى (ج ١٤ص١٣٧)-

٢) (الإحسان بتر تيب صحيح ابن حبان (ج٨ص٧١)-

٤) (حواله سابقه (ج٨ص ٧٢) كتاب السيرذكر البيان بأن المجهز إنما يأخذ كحسنات الغازى... رقم (٤٩١٤)

۵) (فیض الباری (ج۳ص۲۲)-

فائده امام طبرى ريا فرمائى: ((وفيه من الفقه أن كل من أعان مؤمنًا على عبل برفللبُعين عليه المرفعة المرفعة أمثل العامل، وإذا أعبر الرسول أن من جهز غزيا فقد غاز، فكذلك من قطم صائبا أوقوالا على صومه، وكذلك

من اعان حاجاً (۱) او معتبرا به ایتقوی به علی حجه او عبرته حتی یان ذلك علی تمامه فله مثل اجری (۲) بعنی د مذكوره حدیث نه دا فائده مستنبط شوه چه یو سړی د یو مؤمن په نیك كار كنی امداد او كړی نو هغه معاون او ناصر ته به هم د هغی په شان اجر حاصل وی، او چه كله نبی كریم ناتی د دی خبری خبر وركړوكه چا مجاهد له د جهاد سامان وركړو نو لكه چه هغه يخیله هم جهاد او كړو، دغه شان كه چا په يو روژه دار باندې روژې ماتى او كړو يا د روژې په سلسله كښى ئى هغه له تقويت وركړو، دغه شان چا چه د يو حاجى معتمر په خه داسې ځيز سره امداد او كړو چه هغه د حج يا عمرې سر ته رسولو د پاره په هغې قادر شو نو دې امداد كونكى ته به د جهاد، روژې، حج او يا عمرې برابر اجر وركولې شى.

د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت د حدیث ترجمة الباب سره مناسبت واضح دی (من جهزغازیا) د ترجمة الباب د اول جزء مطابق او (دمن خلف غاذیا) د دی د دوئم جزمطابق دی (۲) [۲۲۸] حَدَّثَنَا مُوسَى بُنُ إِسُمَاعِيلَ حَدَّثَنَا هَبًّا مُّعَنُ إِسُمَاقَ بُنِ عَبُدِ اللَّهِ عَنْ أَنْسِ (۲) رضِي اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمُ يَكُنُ يَدُخُلُ بَيْتًا بِالْمَدِينَةِ غَيْرَيَيْتِ أَفِي سُلَيْمِ إِلَا عَلَى أَزْوَاجِهِ فَقِيلَ لَهُ فَقَالَ إِنِي أَرْحُهُا قُتِلَ أَخُوهَا مَعِي

تراجم رجال

-- همام: دا همام بن يحيى الشيباني رواد دي. (ع)

م- اسحاق برعبدالله: دا اسحاق بن عبدالله بن ابی طلحه انصاری مید دی. د دوی حالات (رکتاب العلم باب من قعد حیث ینتهی به المجلس، ومن رأی فی چة الحلقة فجلس فیها) لاندې تیرشوی دی. (۷)

١) (إشارة إلى مارواه الرافعي، انظر تلخيص الجبير (ج ٤ ص١٠١)-

۲) (شرح ابن بطال(ج۵ص۵۱)-

٣) (عمدة القاري (ج ١٤ ص ١٣٥)-

٤) (قوله: أن أنس رضى الله عنه: الحديث أخرجه مسلم كتاب فضائل الصحابة باب من فضائل أم سُلبم رضى الله عنها....رقم(۶۲۱۹)-

۵) (کشف الباری (ج ۱ص۲۳)-

ع) (ددوى دحالاتود پاره او كورئ كتاب الوضوء باب ترك النبي صلى الله عليه وسلم والناس الأعرابي

٧) (كثف البارى (ج٣)-

توله: أن النبي صلى الله عليه وسلم لم يكن يدخل بيتًا بالمدينة غيربيت أم

سليم الاعلى أزواجه: حضرت انس التائز نه روايت دې چه نبي تايا هم مدينه منوره کښې به د حضرت ام سليم التائز د کورنه علاوه او د خپلو بيبيانو د کور نه علاوه به يو کورکښې هم نه داخليدلو.

مطلب دا دې چه که حضور ناهم به د خپلو ازواج مطهرات د کورونو نه علاوه د چا کور ته تلو، نو هغه هم صرف د ام سليم ناهم کره د بل چا کورته به نه تلو.

دخول نه مراد خمه دی؟ ابن التین آو امام حمیدی مُرَاثَةُ فرمائی د دخول نه مراد علی الدوام دخول ده مراد علی الدوام دخول دی یعنی اکثر به د حضرت ام سلیم نُرُاثًا کره تلو، گنی نو مخکسی دا خبره راغلی ده چدنبی کریم نَرُاثِمُ به د ام حرام فَرَاثُهُا کره هم تشریف اورلو. (۲)

دکثرت دخول علت او وجه ابن التين بين فرماني چه د دي کثرت دخول وجه يا خو دا ده چه شهيد د هغي سکه رور وو يا دا چه د ام حرام اله نسبت هغوي ته زيات غم رسيدلي وو (٣)

لیکن حافظ صاحب فرمائی د دی تاویل هدو ضرورت نشته چه ام سلیم فی ته د ام حرام فی په یو کور کښی فی په مقابله کښی د رور د شهادت غم زیات وو ځکه چه دا دواړه په یو کور کښی اوسیدلی او په دی کښی هیڅ منع نشته چه دوه خوئیندی په یوکور کښی اوسیږی او کور هم لوئ وی. د دخول نسبت کله د ام سلیم فی طرف ته وکړیشو او کله د ام حرام فی طرف ته وکړیشو او کله د ام حرام فی طرف ته وکړیشو او کله د ام حرام فی طرف ته وکړیشو او کله د ام حرام فی که د ام

حضرت ام سلیم رضی الله عنها حضرت ام سلیم - بضم السین وفتح اللام - د حضرت انس بن مالك اللی مور ده اود هغی په نومونو کښی مختلف اقوال دی سهلۍ، رمیلۍ، رمیثۍ، ملیکه، غمیضاء او رمضاء د هغی نومونه شمیرلی شوی دی. (۵)

«تقيلله»: نو نبي كريم كاللم ته اووئيلي شو.

حافظ روائی (رام اقف علی اسم القائل)) (۶) ماته د هغه قائل نوم معلوم نشو. او مطلب دا دی چه حضور تایخ به ام سلیم کره ولی په کثرت سره تشریف اوړی؟(۷)

۱) (کشف الباری (ج۲ص ٤)-

۲) (عمدة القارى (ج ۱ ۱ ص ۱۳۸) وفتح البارى (ج ۶ ص ۵۱) -

٣) (حواله بالا-

٤) (فتع الباري (ج۶ص۵۱)-

٥) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٣٨) د هغى د نورو حالاتو دباره او كورى كتاب العلم باب الحياء في العلم

^ع) (فتح الملهم (ج⁹ص ٥١)-

۷) (شرح القسطلاني (ج۵ص۶۶)-

موله: فقال: إنى أرحمها قتل أخوها معى: نو حضور تأثيم اوفرمانيل زه په هغي

باندې ترس خورم چه د هغې رور زما سره قتل شويدې. دا د سائل د سوال جواب اوام سليم ناځا کره په کثرت سره د تللوعلت دې چه زه ام سليم ناځا

خورم او د هغی د غم کمولو کوشش کوم پواشکال اود هغی جواب علامه کرمانی مشتر دلته یو اشکال پیش کریدی چه یو پردنی ښځی كره د تللو د پاره چه د هغى رور قتل شوى څنګه سبب او علت جوړيدې شى؟

دَدَى اشْكَالُ جَوَابُ وركولُو سَرَه عَلَامَهُ كُرمانِي رَجَيْكِ اوفرمائيلَ جُه دُ حضور عَلَيْمُ بِه حق کښې دا پردئي ښځه نه وه بلکه د هغوي رضاعي يا نسبي ترور وه، په دې وجه به حضور الله هغی کره په کثرت سره تشریف اوړلو (۱)

حافظ ابن حجر برائع فرمائى مناسب همدغه ده چه په حدیث کښې داذکر شوې علت راجح اوګرځولې شي چه زه په دې ترس خورم. (۲)

او پاتی شوه پردئی ښځی کره د تلو خبره نو ((بابالدرامهالجهادوالشهادة٠٠٠٠))

په ذيل کښې تيره شويده. چه دا د حضور نائل خصوصيت ووچه د هغوی د پاره څلوه بالاجنبيه جائز وو.(٣)

او ((أع)) نه مراد حرام بن ملحان تانيخ دې، او دې په بئر معونه کښې شهيد شوې وو (۴) يوسوال اود هغې جواب: اوس دلته يو سوال دا پيداکيږي چه حرام بن ملحان تانيخ خو په بئر معونه کښې شهید شوې وواو بئر معونه کښې حضور نظی پخپله شریك نه وو نو بیا حضور تهم دا څنګه اوفرمائيل ((تتلافوهامعی؟))

د دې جواب دا دې چه ما کومه سريه د بئر معونه طرف ته ليګلې وه په هغې کښې هغه شریك وو او هم په دغه دوران كښې شهید شو نو ((معی: أى مع عسكىى ارعلى امرى وفي طاعق))

په معنى كښې دى ((كباقال الحافظ اېن حجر، والعينى، والكرمانى رحبة الله عليهم)) (۵) د علامه قرطبی مُعَالَم يو تسامح: دلته علامه قرطبی مُعَالَم نه يو تسامح شويدي، هغوي فرمائي

((قتل اعوها معه في بعض حروبه، وأظنه يوم أحدى) يعنى د حضرت ام سليم في ور حضرت حرام بَن مَلْحَانَ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُمْ سره به يو جنكَ كښې قتل شوې دي او زَمَّا خيال دا دې چه دا غزوه "غزوه احد" وو. حافظ ابن حجر گنام په دې ردکولو سره فرمائي ((ولميمپل ظنه))

۱) (شرح الكرماني (ج۲۱ص۱۳۳)-

۲) (فتح الباری (ج۶ص۵۱)-

٣) (شرح للقسطُلاني (ج٥ص ٤۶) وانظر أيضًا باب الدعاء بالجهاد والشهادة للرجال والنساء.... من هذاالكتاب ٤) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٩٨)-

۵) (فتع الباري (ج عص ۵۱) وعمدة القاري (ج ۱ اص ۱۳۸) وشرح الكرماني (ج ۱ اص ۱۳۳)-

<u>ڪثف الباري</u>

یعنی د قرطبی پرست دا کمان صحیح نه دی (۱) دونه دشهادت ماقعه ساید است

دُمغه دَشهادت واقعه به ان شاء الله (كتاب المغازى)كنبى د غزوه بنرمعونه الاندى راخى (٢) د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت ابن المنير اسكندر آني كُور فرماني .

چه د حدیث ترجمه الباب سره مناسبت په دې قول کښې دې. ((او هلقه الهله)) هغه داسې چه دُ مَجَاهَدُ دَ كُور دَ خَيَالُ سَاتُلُو فَضَيَلْتُ دَلَتُهُ عَامَ دَي، كُهُ دَ هَغَهُ بِهُ رُوندُكُنِي وَي يَاكُهُ دَ هُغَهُ دَيَارِتَ او خَيَالُ سَاتُنهُ دَ هُغَى هُغَهُ دَيَارِتَ او خَيَالُ سَاتُنهُ دَ هُغَى هُغَهُ دَ شَهَادَتُ نَهُ بِسَ وَى، نَو نَبِي كَرِيم اللَّهُمُ بِهُ دَ أَمْ سَلَّيم اللَّهُمُ بِهُ دَي الفَاظُوكُنِي بِيانَ كُوو دَ زُرِهُ دَ تَسَلَّنَى دَبَّارِهُ كُولُهُ او دَ دَي تِسَلَّنَى عَلْتَ حَضُور اللَّهُمُ بِهُ دَي الفَاظُوكُنِي بِيانَ كُوو دَ زُرِهُ دَ تَسَلَّنَى دَبَّارِهُ كُولُهُ او دَ دَي تِسَلَّنَى عَلْتَ حَضُور اللَّهُمُ بِهُ دَي الفَاظُوكِنِي بِيانَ كُوو چه دُ هغی رور ماسره قتل شویدی د حضور علم په دې فعل کښې د مجاهد د شهادت نه پُس دَ هغة دَ كور او بال بنج خيال ساتل دى او دا د حضور على د حسن اخلاق نه دى. (٣)

خو علامه عینی مطالع د علامه اسکندرانی دا قول تیل سره تعبیر کریدی او فرمانی ((لايخلوهذا،عن بعض التكلف، ولكن له وجه أترب من هذا...))(۴)

او هغه چه څه اقرب محرځولي دي د هغې خلاصه دا ده چه يو غازې ته د جهاد اسباب ورکول او دَ هغه نه پس دَ هغه دَ كور بال بچ خيال ساتل دَ غاز ي غايت اكرام دې او نبي عايم د دې ترغيب هم وركړي.

نو دَ ام سليم فَيْ أَمُّا دَ رور په شهادت دِ هغي دَ تِسلني دَ پِاره په کِثرِت سِره هغي کره تِلل دَ دي خبری طرف ته اشاره کوی چه کله د غازتی د مری آو د کور د خلقو اکرام ښه او د اجر خبره ده نو د ژوندي غازي د کور بال يچ اکرام په طريقه اولي ډيره ښه او د اجر خبره ده. (٥)

دَ علامه كنكوهي وَيَنْ يو لطيفه توجيه: علامه كنكوهي وَيَنْ حديث شريف ترجمه الباب سره منطبق كولود وباره بالكل يو خان له توجيه ذكر كريده.

هغه فرمائی چه ممکن دی چه د حضرت ام سلیم ﴿ الله عُلَمُ الله عَيْر موجود الله عنه عنه جهاد له تلی وی اود هغه د کورد خلقو خبر اخستل نی کولو، او په دې وجه امام بخاری دا روایت دلته ذکر کړې وي. (۶)

٣٠-بَآبِ: التَّعَنَّطِ عِنْدَ الْقِتَـالِ

 ق تحنط معنى: تحنط د باب تفعيل نه مصدر دي د دي معنى د حنوط كولو ده، او حنوط د يو مرکب خوشبو نوم دې چه د مړی د پاره استعمالولي شي. (٧)

۱) (فتح البارى (ج۶ض۵۱)-

۲) (كشف الباري كتاب المغازي (ص۲۶۵)-

۲) (عمدة القارى (ج ٤ ١٥ ص١٣٨)-

٤) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٣٨)-

۵) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٣٨)-

ع) (لامع الدراري (ج٧ص٢٢٢)-

۷) (عمدة القارى (ج که ۱ س۱۳۸)-

بيازهري بين فرمائي (يدخل فيه الكافور و ذريرة القصب والصندل والأحمر والأبيض)) په دې كښې : كافور خوشبودار پوډر او سره او سپين صندل هم داخل دى (۱)

ت نور عوسبود از پوپار او سره که او در استعمال خوشبو ته او د بوندو د استعمال خوشبو ته حنوط نشی و نیلی. (۲) حنوط مرو سره خاص دی د ژوندو د استعمال خوشبو ته حنوط نشی و نیلی. (۲)

و ترجمه الباب مقصد آمام بخاری براید دلته دا خودل غواړی چه سړې د جنګ میدان ته خی د ترجمه الباب مقصد آمام بخاری براید د دلته دا خودل غواړی چه سړې د جنګ میدان ته خی

نو حنوط وغیره دې استعمالوي نو ځي دې (۳)

و حنوط په استعمال کښې حکمتونه علامه ګنګوهی پښت فرمائی چه سړې کله د جنګ د میدان طرف ته رخ اوکړی نو خوشبووغیره دې استعمال کړی ځکه چه کیدیشی الله تعالی هغه د شهادت په اوچته مرتبه باندې سرفراز کړی نو هغه به خوشبو سره خښولې شی او چه کله د هغه د انله جل جلاله سره ملاقات وې نو دې به پاك صفا او خوشبودار وی (۴) او علامه اندې شاه کشمه ي پښتي فرمائي د سلف صالحنو عادت او طریقه دا وه چه کله به

اوعلامه انور شاه کشمیری مینیم فرمائی د سلف صالحینو عادت او طریقه دا وه چه کله به هغوی د جنگ تیاری کوله نو حنوط به ئی هم استعمالول د دې ویرې چه د قتل کیدو نه پس د هغه بدن متغیر نشی ځکه چه د جنگ وخت وی او په جنگونوکښې اکثر خبولو کښې تاخیر هم کیږی.

په پخوانی زمانه کښې به اهل مصر د خپلو مړو په بدنونوباندې دوايانې مږلې دې د پاره چه د هغوي بدنونه خراب نشي.... بيا دا داروګان نه ملاويدل او د حنوط استعمال په خلتو

کبی باقی پاتی شو (۵)

اوبله دا هم چه دا دخوشحالئی موقع ده اود خوشحالئی په موقعوباندې خوشو استعمالوليکار دي. استعمالول پکار دي.

په دې کښې يو حکمت دا هم دې که سړې په بدن باندې تيل وغيره اولګوي اولاړشي نو سستي به نه وي سړې تازه وي، که کافر ئي اونيسي هم نو د هغه نيول به په آسانئي سره مضوط نه وي.

[rɪ٠٠] حَدَّثَنَا عَبُدُ اللَّهِ بْنُ عَبُدِ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ حَدَّثَنَا ابْنُ عَوْبٍ عَنُ مُوسَى بْنِ أَنَسِ قَالَ وَذَكَرَيُوْمَ الْيَمَامَةِ قَالَ أَتَى أَنَسْ (١) ثَابِتَ بْنَ قَيْسٍ وَقَدُحَى مَعَنُ فَخِدَيْهِ وَهُوَيَتَعَنَّطُ فَقَالَ يَاعَمِّمُ مَا يَعْبِسُكَ أَنْ لَا تَعِى ءَقَالَ الْآنَ يَا ابْنَ أَخِى وَجَعَلَ يَتَعَنَظُ يَعْنِهُ وَهُوَ يَتَعَنَّطُ لَكَابُنِ الْخَيْدِي وَالْحَدِيثِ الْحَدِيثِ الْمُعَلِّى الْحَدِيثِ الْمَنْ الْحَدْلُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْحَدْلُ اللَّهُ اللَّالَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّالَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّالَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللْفُولُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ الللللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللللّ

۱) (شرح القسطلاني (ج۲ص ۳۸۹)-

٢) (حواله بالا-

٣) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٣٨) والفتح (ج ٤ ص ٥١)-

٤) (لامع الدرارى) ج٧ص ٢٢٤)-

۵) (فیض الباری (ج۳ص۲۹)-

٤) (قوله: أنس: الحديث انفرد به البخارى انظر تحفة الأشراف (ج١ص١٢٢)-

رُجُوهِنَا حَتَّى نُضَارِبَ الْقُوْمَ مَا هَكَذَا كُنَّا نَفْعَلْ مَعَرَسُولِ اللَّهِ صَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ . بلس مَاعَوَّدْتُمْ أَقُرَانَكُمْ رَوَاهُ حَمَّادٌ عَنْ ثَابِتِ عَنْ أَنْبِ

تراجم رجال

- عبدالله بن عبدالوهاب: دا ابومحمد عبدالله بن عبدالوهاب حجبي بصرى بين

مدخال بن حارث: دا ابوعثمان خالد بن حارث بن سليم بصرى نينيد دى. ٢١،

م. ابر عون: دا عبدالله بن عون بن ارطبان مزنی بصری مینه دی د دوی حالات ۱۱ کتاب العلمهاب ولاالنبي صلى الله عليه وسلم: رب مهلخ أوع من سامع)) لاندى تيرشوى ٢٠١)

م- موسى بن انس : داد حضرت انس الأثن خوى. دبصرى قاضى موسى بن انس بَيْنَ دى ۴٠٠ د-انس: دا د رسول الله نائل خادم حضرت انس بن مالك النائز دي. د دوى حالات (ركتاب الإيان باب من الإيبان أن يحب لأخيه ما يحب لنفسه)) لاندى تيرشوى دى. (٥)

٢- ثابت بن قيس: ١٥ خطيب الانصار حضرت ثابت بن قيس بن شماس بن مالك بن امرئ القيس المدنى كاتف دي. ابومحمد او ابوعبدالرحمن د ده كنيت دې (ع)

دَ هغوي دَ موربي بي نوم هندالطائيه ده. (٧) او عبدالله بن رواحه او عمره بنت رواحه تُفَكُّمُ دَ هغه دُ مورشریك خور او رور دی (^۸)

دې د نبي کريم تاليم نه د حديث روايت کوي اود هغه نه د هغه ځامن محمد، قيس، اسماعيل، حضرت انس بن مالك او ابن ابي ليلي المناخ وغيره د حديث روايت كوي. (٩)

فضائل او مناقب د هغوی بی شمیره فضائل اومناقب دی. هغوی په (رعطیب الرسول صلی الله عليه وسلم)) سره يادولي شي لكه څنګه چه حضرت حسان بن ثابت نورت ته ((شاعر الرسول صلی الله مليه وسلم)) وثيلي شي (١٠)

١) (دَ دوى دَ حالاتودَپاره اوګوري کتاب العلم باب ليبلغ العلم الشاهد الغائب-

٢) (دَ دوى دَ حالاتودَپاره اوگوري كتاب الصلاة باب فضل استقبال القبلة -

۲) (کشف الباری (ج۳ص ۲۲۶)-

ع) (دَ دوى دَ حالاتودَپاره او گوري كتاب المكاتب باب المكاتب ونجومه وفي كل سنة نجم....-

٥) (كشف البارى (ج٢ص ٤)-

ع) (نهذيب الكمآل (ج ٤ ص ٣٥٨) والنقات لابن حبان (ج ٢ ص ٤٠)-

٧) (سيراعلام النبلاء (ج ١ص ٣٠٩)-

^{8) (}حواله بالا -

٩) (د شيوخ او تلامذه د پاره اوګورئ تهذيب الکمال (ج ٤ ص ٣٤٩)-

١٠) (أسدالغابة (ج١ص٤٥١)-

كتى الجهاد (جدا_{ول}

کشف البّاری کشف البّاری الله علی الله اهام رهری بخود (۱) نه روبیت دې په د و د خپل قوم بعض څیزونه نی د فخر په انداز کښې حاضرشو: د هغوی خطیب اودریدو او د خپل قوم بعض څیزونه نی د فخر په انداز کښې پیش کرل نو حضور ترایخ حضرت ثابت بن قیس النائی ته اوفرمائیل ((تم فاجب طیبهم)) دی اودریدو او چیر په بلاغت او فصاحت ئی د الله تعالی حمد او ثنا بیان کره، په دې سره رسول الله تراخ او نور مسلمانان دير خوشحاله شو.

دې سره د غزوه احد اود دې نه پس په ټولو غزواتو کښې شريك شوې وو. (۲)

حافظ ابن حجر مُنْ ته په دې كښې وهم شوې چه اول خو حافظ صاحب په (تهنيب التهنيب) كښې دااوفرمائيل ((شهد بدرا والمشاهدكلها)) (۳) ليكن په (اصابه) كښې ئې د دې ترديد اوكرو. ليكي ((لميذكر) المحاب المغازى في المدرين، وقالوا: أول مشاهدة أحد، وشهد مابعده الهرا) اوراجع دا دی چه دا بدری صحابی نه دې. (۵) نبی کریم کریم که هغه ته د جنت زیرې ورکړې وو. د خضرت انس التيني نه روايت دي:

(قال كان ثابت بن قيس بن شباس خطيب الأنصار، فلما نزلت هذه الآية: ﴿ يَأْمِهَا الذَّيْنَ آمنوا لاترفعوا أصواتكم فوق صوت النبي € قال: أنا الذي كنت أرفع صول فوق صوت رسول الله صلى الله عليه وسلم، فأنامن أهل التار، فنُكر ذلك لرسول الله صلى الله عليه وسلم، فقال: بل هومن أهل الجنة)) (ع)

حضرت انس الملي فرمائي چه حضرت ثابت بن قيس بن شماس د انصارو خطيب وو كله چه دا آیت مبارك نازل شو (یاآیهاالذین آمنوالاترفعواأصواتكم فرگ صوت النبی) نو وئی وئیل چه هم زه هغه یم چه خپل آواز د نبی کریم گلم په آواز باندی اوچتوم، نو هم زه د دوزخیانونه یم، د دی خبری ذکر خلقورسول الله گلم ته او کروهغوی او فرمائیل هغه د اهل جنت نه دی. دغه شان يو خل نبي كريم كلم ارشاد اوفرمائيلو.

((نعم الرجل أبويكر)، نعم الرجل عبر، نعم الرجل أبوعبيدالابن الجراح، نعم الرجل أسيد بن حضور نعم الرجل ثابت بن قيس بن شباس، نعم الرجل معاذبن جبل، نعم الرجل معاذبن عبروبن الجبوم)) بهترين سړې ابوبکر دې، بهترين سړې عمر دې، بهترين سړې ابوعبيده بن جراح دې، بهترين سري اسيد بن حضيردي، بهترين سرى ثابت بن قيس بن شماس دي، بهترين سرى

١) السيرة النبوية لابن هشام (ج٢ص٥٤٢) وسير أعلام النبلاء (ج١ص٣١٢) والطبقات الكبيري (ج١ص٢٩٤) ٢٠) (أسد الغابة (ج ١ص ٤٥١) والإستيعاب (ج ١ص ١٢٥)-

٣) (تهذيب التهذيب (ج٢ص١٢)-

٤) (الإصابة (ج١ص١٩٥)-

۵) (تهذیب الکمال (ج ۶ ص۲۷۱)-

ع) (رواه البخاري كناب المناقب باب علامات النبوة في الاسلام رقم (٣٤١٣) وكتاب التفسير باب ﴿يأيهاالذين آمنوا لا ترفعواأصواتكم فوق صوت النبي﴾ رقم(٤٨٤۶) ورواه مسلم كتاب الإيمان باب مخانة المؤمن أن يحبط عمله رقم (٢١٤-٣١٧)-

معاذبن جبل دی، بهترین سړی معاذ بن عمرو بن جموح دی. (رض الله منهم الهبعین) یوځل نبی کریم کانتی هغوی ته اوفرمائیل:

(رياثابت،أماترس أن تعيش حبيداً، وتقتل شهيدا، وتدخل الجنة)) (١)

رد دی کښی حضور نامی حضرت ثابت کانو ته د دريو څيزونو زيرې ورکړو: () د هغه ژوند به ښه تيريږی () هغه به د شهادت په اوچته مرتبه سرفراز کيږی () او په جنت کښې به داخليږی، او هم داسې اوشو کوم چه نبی کريم نامی فرمانيلې وو، راوی وانی ((فعاش حبيدا)، وتتل شهيدايوم مسيله الکذاب) (۲)

شهادت: حضرت ثابت بن قیس د حضور اکرم گاهم د پیشنگوئی مطابق شهادت اوموندلو ، ههادت: حضرت ثابت بن قیس د حضرت ابوبکر صدیق گاه په زمانه کنبی د مسیلمه کذاب خلاف شوی وو په هغی کنبی دوی د انصارو امیر وو او هم په دی جنگ کنبی هغه نبه په بهادرئی سره د جنگیدلو نه پس شهید شو (۳) او هم دا واقعه په حدیث باب کنبی ذکر کریشویده. یوه عجیبه واقعه: امام حاکم په مستدرك (۴) کنبی، امام طبرانی په معجم الکبیر (۵) کنبی، علامه ابن عبدالبر الاستیعاب (۶) اوعلامه الاثیرالجزری په اسدالغابه (۷) کنبی د هغوی سره متعلق یوه عجیبه واقعه ذکر کریده.

په جنګ یمامه کښی د مسیلمه کذاب او بنو حنفیه خلاف چه کوم لښکر حضرت ابوبکر صدیق ناتی ترتیب کړې وو په هغې کښی حضرت ثابت هم شامل وو. کله چه د دواړو لښکروخپل مینځ کښی مقابله اوشوه نو په دې کښی مسلمانان روستو شو،اوداسی دری ځل اوشو. چه کله حضرت ثابت او حضرت سالم مولی ابوحذیفه تناتی دا صورت حال اوکتلو نو د هغوی نه برداشت نه شوه او وئی فرمائیل «ماهکنا کنانتاتل مع رسول الله صلی الله علیه وسلم» او هغه حضراتو په زمکه کښی یوه کنده اوکنستله او په هغی کښی ئی خپل ځان قدد که اه حنګدا تری چه دها ده شهیدان شدا

قید کرو آو جنگیدل تردی چه دواړه شهیدآن شول. د حضرت ثابت د شهادت نه پس حضرت بلال اللا الله (۸) هغه په خوب کښې اولیدو چه فرمائیلې. زه هغه بله ورځ شهیدشوې وم نود مسلمانانو یو سړې زما خواکې تیریدو او هغه

۱) (رواه الحاكم فى مستدركه وصحيحه الذهبى (ج٣ص ١٣٤) وإسناده قوى. لكنه مرسل كما قاله الحافظ فى الفتح (ج۶ص ۶۲۱)-

٢) (السَّتدرك للحاكم (ج٣ص ٢٣٤)-

٢) (أسدالغابة (ج ١ص ٤٥١) والإستيعاب (ج ١ص ١٢٥) والمستدرك (ج٣ص٢٣٣)-

⁴) (المستدرك للحاكم (ج٣ص ٢٣٤)-

^{۵)} (المنجم الكبير للطبراني (ج ٢ص٧٠) رقم (١٣٢٠)-

ع) (الاستيعاب (ج١ص١٢٥)-

۷) (اسدالغابة (ج١ص٤٥٢)-

^{^) (}وأفادالواقدي أن رائي المنام هو:بلال المؤذن. فنح الباري (ج۶ص۵۲)-

حضرت خالدبن وليد الله لا له الداد اله المه او هغه ته اووايه چه زما زغره راپيداكري. بیانی اوفرمانیل چه کله مدینی منوری ته تاسو واپس شئی نود رسول الله نالل خلیفه به می در سوری پد ما باندی دوم. حضرت ابوبکر صدیق گاتؤ له لاړشه او هغه ته آوښایه چه د فلانکی په ما باندی دوم. قرض دی او په فلانکی باندې زما دومره پیسې دی او زما فلانکې غلام آزاد دې (۱) بیانې

اوفرمانيل چه ته دا د دروغو خوب مه ګنړه چه بيا زما دا ټولې خبرې ضائع شي.

حضرت بلال اللين زر راپاسيدو او خالدبن وليد اللين ته ني خوب بيان کړو. هغه چه د زغري باره کښې کوم څای خودلې وو هم هلته پرته وه او صورت حال بالکل هم هغه وو کوم چه حضرت ثابت کائن په خوب کښې ذکر کړې وو بيا چه کله مدينې ته واپس شو نو د حضرت ابوبكر صديق اللَّلِيُّ متعلق دَ اموَّرو ذكر نَى اوكرو نو حضرت ابوٰبكر اللَّهُ وَ وَفَاتَ نَهُ بِسَ دَ هغه وصيت نافذ كرو.

او دا دهغه خصوصیت دی. راوی فرمانی «فلانعلم احداً بعد ما مات انفذ وصیته غیرثابت بن تيس بن شباس رض الله عنه)) (٢)

د حره په جنګ کښې د هغه درې ځامن شهيدان شوې وو. (٣)

دُ امام بخاری نه علاوه امام ابوداود او امام نسانی ﷺ (الیوم واللیلة) کښی د هغه نه

احادیث اخستی دی. (۴) او په بخاری شریف کښی د هغه صرف یو روایت دی. (۵)

قوله: قال: وذكريوم اليمامة: فرماني چه د يمامه د جنګ د ورځې ذكر ني اوكړو. د بخاری شریف په اکثرو نسخوکښې د واو سره ((وډکم)) او واوحالیه دې او د حموی په نسخه کښې بغير د واو ((ذکم)) دې. (ع)

قوله: يمامه د يمن يو ښاردې چه د طائف نه د دوو مرحلو په فاصله واقع دې په دى مقام د تاريخ اسلام مشهور جنگ (حرب اليمامه) شوى وو. دا د ربيع الاول دولسم هجری واقعه ده یو طرف ته مسلمانان ووچه د نبی کریم تالی د ختم نبوت د حفاظت کولو د پاره راغلی وو او بل طرف ته مسیلمه کذاب او د بنو خنفیه خلق و وچه د مسیلمه کذاب د

١) (قال الحافظ: وسمى الواقدي في كتاب الردة من وجه آخر من أوصى بعنقه وهم: سعد وسالم، حواله بالا-

٢) (وانظر أيضًا لهذه القصة مجمع الزوائد)ج ٩ص٣٢٧) والإصابة (ج ١ص١٩٥)-

٣) (سيرأعلام النبلاء (ج١ص٣١٣)-

٤) (تهذيب الكمال (ج ٤ ص ٣٧١)-

۵) (خلاصة الغزرجي ص۵۷)-

۶) (عمدة القارى (ج ۱ اص ۱۳۹) وفتح البارى (ج ۶ص ۵۱)-

عن الباري دروغو په نبوت نې ايمان راوړې وو. حضرت آبوبکر کنانو د هغوې د سرښکته کولو د پاره د دروسي. حضرت خالد بن وليد اللهنو په مشرني کښي يو لښکر اوليګلو د يمامه په مقام باندې د دې هارو لښکرو مقابله اوشوه د سخت جنگی نه پس د حضرت وحشی بن حرب کانځ او ابو مری فتل کریشو او د مسلمانانو د طرف نه تقریباً پنځه سوه کسان شهیدان شو. (۱) په كوموكنسي چداويا انصاري صحابه كرام رموره رده وره وو (۲)

نوله: قال: أتى أنس ثابت بن قيس، وقد حسر عن فخذيه: حضرت موسى بن انس بينية فرمانى چه حضرت إنس فائل حضرت ثابت فائل كره راغلو او په دې وخت كښي مغه خپلې دواړه پنډني کولاوکړې وې.

انس فاعل کیدو په وجه مرفوع او ثابت مفعولیت په وجه منصوب دي (۳)

او((وتدحس،٠٠)) جمله حالیه ده، واو دُحال دُپاره دې. (۴) اود حس معني کشف ده اودا د باب ضرب نه دي. (۵)

ران ستر دې که نه؟: د حديث په جمله کښې ((وقلحسماعن فغنيه)) نه په ظاهره دا معلوميږي چه فغه سترنه دې ګنې که فغه ستر کښې داخل وې نو حضرت ثابت کرښځ به د هغې نه کېږه نداخواكولد.

ظاهريد او امام بخاري مُركِيةٍ چه دَ فخه ستر كيدلو قائل نه دې هغه دَ حديث باب سره په خپل مذهب باندی استدلال کریدی (۶)

اوس که د حضرت ثابت الليم مسلك همدغه وي چه د ظاهريه دې يعني فخن رېندني ستر کښې داخل نه دي نود حديث باب د توجيه هدو ضرورت نشته (٧)

اوكداد هغه مذهب هغه نه وي چه د ظاهريه دي نو علامه كنګوهي مُريم د حديث باب توجيه دا فرمائیلی ((وقداعلم ذلك براخهارد) لاأنه رآلاحاس افخذیه)) یعنی حضرت انس فی ته د عفه د پنډئي د کولاويدلو علم د هغه د خودلونه پس حاصل شو، نه چه هغه په ستر کولاويدلو سره اوليده. (۸)

مولانا حسین علی کالله د حضرت این اوهی کاله نه د حدیث باب توجیه دا نقل کریده چه

۱) (عمدةالقاري (ج ۲۴ص۱۳۹) وانظرأيضًا البداية والنهاية (ج۶ص۳۲۳–۳۲۷)-

۲) (عبدة القارى (ج ۱ ۱ ضص ۱ ۱ ۱) -

۳) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٣٩)-

أ (حواله بالا ـ

٥) (حواله بالا_

 $^{^{4}}$) (فتح الباری (ج 2 ص 2) ولامع الدراری (ج 2 ص 2)-

 $^{^{4}}$) (تعلیقات لامع الدراری (ج 7) –

^٨) (لامع الدراري (ج٧ص ٢٢٤)-

ونى ونيل (رياعم، مايحهسك أن لاتحىم؟)) بيا حضرت ثابت كانتخ دروازى له راغلو او حضرن

رسی رسی روح سید استه او کره او بیا دَ جهاد دُ پاره لاړل. (۱) انس گائؤ سره نی څه وخت ناسته او کړه او بیا دَ جهاد دُ پاره لاړل. (۱) مطلب دا شو چه حضرت انس دننه داخل شوې نه وو بلکه هم په دروازه کښې نی په ولاړه خبرې او کړې. اوس دا لازم نه راځی چه حضرت انس ناتانو دَ حضرت ثابت ناتانو کولاوشوې بندنه له دا د د د د

پنډنی لیدلی وې. حضرت شاه صاحب سُرنه فرمانی چه په دې کښې د فخذ د عورت او ستر نه کیدو څه دلېل نشته،ځکه چه د صحابي فعل په مختلف فیه مسئله کښې حجت نه دې. (۲)

قوله: وهو يتعنط، فقال: ياعم، ما يحسبك أن لا تجيع؟: دې وخت كښې هغه په حنوط لكولو كښې مشغول وو نو حضرت انس اللي اووئيل اې تره تاڅه څيز رابندوي چه ته نه راځي؟

((هويتحنط)) جمله هم حاليه ده او ثابت بن قيس الله وحضرت انس الله على نه مشر وودغه شان دَهغوي تعلق دَ قبيلُه خزرج سره وو، په دې وجه حضرت انسر اللئؤ هغه دَ تره سره مخاطب کرو. (۳)

علامه ابن الاثير مبارك الجزري ﴿ الله على الله على على الله على الله على على على الله على الله على على المعلى المعلى المعلى الله على المعلى الله على المعلى ا الحنوط في ثيابه عند خروجه إلى القتال كأنه أراد بذلك الاستعداد للبوت، وتوطين النفس عليه بالصبرعل القتال)) (۴) یعنی هغه د جنگ د پاره راوتلوکښې په خپلو کپړو حنوط (خوشبو) لګوله، لکه چه د هغه مقصد د دې نه د مرګ تیاری اود جنګ په وخت کښې نفس په صبر باندې ثابت د ساتا مه

دان لاتجيء و اعراب تحقيق به دې کښې دوه اعراب دی يو نصب، دونم رفع.

د نصب په صورت کښې ((الا))مشدددې او ((لا)) زانده دې د دې د پاره ((تعیم)) به منصوبوی

د رفع په صورت کښې ((الا)) کښې ((لام)) مخففه دې په دې وجه به مرفوع وي (۵)

قوله: قال: الآن يا ابن أخي، وجعل يتعنط. يعني من الحنوط: حضرت ثابت المنافع المنافيل وراره الوس دراوخم او بيا به حنوط لكولوكبني مشغول شو . ((يعنى من العنوط)

الفاظ تفسیریه دی چه په حدیث کښې کوم ((پنصط)) واردشویدې هغه د حنوط نه مشتق دې.

١) (تقرير الجنچجوهي على الصحيحين (ص٧١)-

٢) (فيض الباري (ج٣ص٤١) وانظر أيضًا التعليقات على فيض الباري المسمى البدر الساري-

٣) (فتح الباري (ج٤ص٥١) وعمدة القاري (ج٤١ص١٣٩)-

٤٥٠ (النهاية في غريب الحديث والأثر (ج ١ص ٤٥٠)-

۵) (شرح الكرماني (ج١٢ص ١٢٤) وعمدة القاري(ج ١٤ص ١٣٩)-

اود دی تفسیر وجه دا ده چه چاته دا وهم اونشی چه دا د ((حنطة)) نه مشتق دی (۱) علامه کرمانی بُولت د دی تفسیری جملی وجه دا بیانوی چه څوك په دې لفظ کښی تصحیف کولو سره د حناطی سره مشتق اونه ګرخوی (۲) د کوم معنی چه د غنمو خرڅولو ده (۳) بیا حضرت ثابت تالش راغلو او کیناستو نو حضرت انس اللی په خبروکښی د خلقو د نبتیدو ذکر اوکړو. یعنی حضرت ثابت بن قیس اللی حضرت انس اللی له راغلو اوکیناستو نو حضرت انس اللی د مسلمانانو حضرت انس اللی د هغه خلقو د خپل ځای پریخودو ذکر اوکړو او دا چه په مسلمانانو کښی د شکست آثار پیداکیږی (۴)

وله: فقال: هكذا عرب وجوهنا حتى نضارب القوم: نو حضرت ثابت الله القوم: الله عليه المائيل المائيل عليه المائيل المائيل على المائ

«مکذاعن وجوهنا» معنی ده ((افسحوالی) یعنی ماته لار راکره او زما د مخی نداخواشد. (۵) علامه کرمانی اوعلامه عینی آتیم دا جمله دحضرت انس التیم قول گرخولی دی او معنی نی دا بیان کریده چه زمون و او د دبسمن خلق یو بل سره یوځائ شو او مون د دبسمن بغیرد څه منع کونکی ند د وژلو قابل شو. (۶)

قوله: مأهكن اكناً نفعل مع رسول الله صلى الله عليه وسلم: مونو چه به كله درسول الله كله الله عليه وسلم: مونو چه به كله د

مُقصد دا چه کله به مونو رسول الله تُنهم سره به غزواتوکنی وو نو اولنی صف به خپل خائ نه پریخودلو بلکه په خپل خائ به کلك ولاړوو او دوئم صف به د هغوی امداد کولو. (۷)

شساعودتمانه، تاسو خپل حریف ته خراب عادت اچولی دی.

د اکثروپه روایت کښې هم داسې دی خو د مستملی په روایت کښې ((عودکم آنمانکم)) راغلې دې. په اول صورت کښې ((آنمانکم)) به منصوب وی اود مستملی د روایت مطابق به مرفوع وی (۸) (اقرانی کښې بې (اقرانی کښې بې مثاله دې. او بغتم القاف وسکون الراء – معنی مقابل یا بهادرنی کښې بې مثاله دې. او بغتم القاف وسکون الراء چه وی نو معنی یوشان عمر دې (۹)

۱) (فتح البارى (ج۶ص۵۲)-

۲) (شرّح الكرماني (ج ۱۳۲ص ۱۳۶)-

٢) (القاموس الوحيد(ص٣٨٣)مادة حنطا-

أ (شرح الكرماني (ج١٢ص ١٣٤) وشرح القسطلاني (ج٥ص٤٧)-

۵) (فنع البارى (ج۶ جس ۵۲)-

۶) (شرح الکرمانی (ج۱۲ص ۱۳۴) وعمدة القاری (ج ۱۴ ص ۱۴۰

۷) (شرح الكرماني (ج١٢ص ١٣٤)-

 ⁽فتح الباری (ج۶ص۵۲) وعمدة القاری (ج۱۱ص۱۶۰) شرح الکرمانی (ج۱۲ص۱۳۱)-

٩) (حواله بالا ومختار الصحاح (ص٥٣٧) مادة قرب-

او د حضرت ثابت الليؤ مقصد د دې قول نه د شکست خوړونکو توبيخ کول دی چه تاسو خپل مقابل ته خراب عادت ورکړو تاسو اوتښتيدئي د څه په وجه چه دښمن په تاس دلچسپی آخلی (۱) یا ستاسو ملّگرو تاسو ته د روستو کیدو خراب عادت درکړو چه ستاسو د پاره نقصانی او د دښمن د پاره فانده مند دی.

فقه الحديث د حديث باب نه يو څو فائدې مستنبط كيږي.

① په دې کښې د دې خبرې دليل دې چه د الله تعالى د پاره خپل ځان په هلاکت کښي اجول صحیح او جائز دی او په دې معامله کښې سختوالي هم کولې شي او که په رخصت باندې قادر وي نو په دې باندې عمل نه کول هم صحیح دي. (۲)

٠ مړى د پاره خوشبولګول سنت دى ځکه چه د مرګ نه پس به د مړى واسطه د فرښتوسره وي (٣) 🗇 په حديث باب کښې د جنګ نه تښتيدونکو د پاره سخت توبيخ بيان کړې شويدې. (۴) د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت: د حديث باب ترجمة الباب سره مطابقت ((دهويتعنط)) او ((وجعل يتحنط يعنى من الحنوط)) كښې دې. (۵)

قوله: روالا حماد عرب ثابت عرب أنس: حماد دا حدیث ((عن ثابت عن أنس)) به طریق سره روایت کریدی.

د مذکوره تعلیق تخریج: امام بخاری مید چه دا کوم تعلیق ذکر کریدی دا ابن سعد(۶)، طرانی (۷)، حاکم (۸)، او برقانی ایتیم په خپل مستخرج کښې موصولاً ذکر کړیدې. (۹) د مذکوره تعلیق مقصد حافظ صاحب فرمائی چه امام بخاری مجله د دی تعلیق په ذریعه د اصل حدیث طرف ته اشاره کړیده خو سره د حماد د روایت چه د موسی بن انس روایت نه اتم اواکمل دې خو هغوي د موسي بن انس مختصر حديث ذکرکړو او د اصل حديث طرف ته ئى تعليقاً اشاره اوكره. (١٠)

۱) (فتح الباری (ج 8 ص 0) وعمدة القاری (ج 1 1 ص 1 1) -

۲) (شرح ابن بطال (ج۵ص۵۲)-

٣) (حواله بالا (ص٥٣)-

٤) (حواله بالا-

۵) (عمدة القارى (ج ۱ ک ص ۱۳۹) -

ع) (كذاقاله الجافظ في افتح (ج٤ص٥١) ولكن لم أجده مع تتبعى الشديد عند ابن سعد-

٧) (المعجم الكبير للطبراني (ج٢ص٥٥) رقم (١٣٠٧)-

٨) (المستدرك للحاكم (ج٣ص ٢٣٥) كتاب معرفة الصحابة ذكر مناقب ثابت بن قيس....-

٩) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٣٩) وفتح البارى (٤ص ٥٢) وتغليق التعليق (ج٣ص ٤٣٤)-

۱۰) (فتح الباری (ج۶ص۵۲)-

٣٠-بَأَب: فَضُلِ الطَّلِيعَةِ

ذ طليعة مطلب طليعة د لسكر هغه حصى ته وائى چه د انتظاماتو او د حال احوال د تعقبى د پارد د لسكر نه وړاندى ليكلى شى، دا اسم جنس دى او دا حصه مختصر هم كديشى او لويه هم، په يو سرى باندې هم مشتمل كيديشى او په دوو هم (١) د ترجمة الباب مقصد امام بخارى بُرُشي دلته د طليعة فضيلت بيانوى چه د دى عمل ډير فضيلت دى نو كه چاته دا دمه وارى وركړيشى نو هغه له شاته كيدل نه دى پكار (٢) فضيلت دى نو كه چاته دا فمه وارى وركړيشى نو هغه له شاته كيدل نه دى پكار (٢) و نوكار وركړيشى نو هغه له شاته كيدل نه دى پكار (٢) و نوكالله عَنْ أَبُولُعَيْم حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مُحَمَّد بني الْمُنْكِد عَنْ جَابِر (٦) رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ النَّبِينَ بِخَبَرِ الْقَوْمِ يَوْمَ الْأُحْزَابِ قَالَ الوَّبَيْرُ أَنَا ثُمَّ فَالَ النَّبِينَ بِخَبَرِ الْقَوْمِ يَوْمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ إِنَّ لِكُلِ قَالَ مَنْ يَأْتِينِي بِخَبَرِ الْقَوْمِ وَاللَّه اللَّه عَلَيْهِ وَسَلَمَ إِنَّ لِكُلِ تَالَى مَنْ يَأْتِينِي بِخَبَرِ الْقَوْمِ وَاللَّه عَلَيْهِ وَسَلَمَ إِنَّ لِكُلِ تَالَى مَنْ يَأْتِينِي بِخَبَرِ الْقَوْمِ وَالِي النَّبِي صَلَى اللَّه عَلَيْهِ وَسَلَمَ إِنَّ لِكُلِ تَالَى مَنْ يَأْتِينِي بِخَبَرِ الْقَوْمِ قَالَ النَّبِي صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ إِنَّ لِكُلِ لَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ إِنَّ لِكُلِ لَهُ مَالِيْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ إِنَّ لِكُلِ لَهُ وَارِيًّا وَحَوَارِي الزُّبَيْرُ الْقَوْمِ قَالَ النَّيْ عَوْرَانِيًا وَحَوَارِي النَّه عَلَيْهِ وَسَلَمَ إِنَّ لِكُلُ لَكُ مَا لَهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ إِنَّ لِكُلُ لَا اللَّه عَلَيْهِ وَسَلَمَ إِنَّ لِكُولِ اللَّه عَلَيْهِ وَسَلَمَ إِنَّ لِكُولَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ إِنْ لِكُولُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسُولَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسُلَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسُلُمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسُلُمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسُلُو اللَّه اللَّه اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّه اللَّه اللَّه عَلَيْهِ وَالْكُولُ اللَّه عَلَيْهِ وَاللَّه اللَّهُ عَلَيْهِ وَالْوَالِمُ وَالْمَالِهُ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّه عَلَيْهِ وَاللَّه عَلَيْهِ وَالْمَا عَلَيْه وَالْمَا اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ الْمَاءَ اللَّه عَلَيْ

تراجم رجال

ا- ابونعیم: دا مشهور محدیث ابونعیم الفضل بن د کین کوفی میشید دی. د ده حالات (کتاب الإیان باب فضل من استبرالدینه) لاندی تیرشوی: (۴)

م-سفيان: دا امام حديث، تبع تابعی ابوعبدالله سفيان بن سعيد الثوری رئيخ دې د ده حالات (ركتاب الإيبان بابعلامة البنانق) لاندې راغلی دی. (۵)

- هجمه بريمنكلر: دا محمد بن منكدر بن عبدالله المدنى ميد دي (ع)

١) (فتح الباري (ج٤ص٥٢) وعمدة القارى (١٤٠ص١١) والنهاية في غريب الحديث (ج٣ص١٣٣)-

۲) (وعبدة القارى (١٤٠ص ١٤١)-

٣) (قوله: عن جابر رضى الله عنه: الحديث أخرجه البخارى أيضًا (ج١ص٣٩٩) كتاب الجهاد والسير باب طل يبعث الطليعة وحده؟ رقم (٢٨٤٧) و(ج١ص٤٤) باب السير وحد، رقم (٢٩٩٧ (و(ج١ص٥٢٩) كتاب فضائل أصحاب النبى صلى الله عليه وسلم باب مناقب الزبير بن العوام رضى الله عنه رقم (٣٧١٩) و(ج٢ص٠٥٠) كتاب أخبار و(ج٢ص٠٥٠) كتاب أخبار المغازى باب غزوة الخندق وهى الأحراب رقم (١٠٢٨) و(ج٢ص٨٠٠) كتاب أخبار الأحاد باب بعث النبى صلى الله عليه وسلم رقم (٧٢٤١) ومسلم كتاب فضائل الصحابة باب نمن فضائل طلعة والزبير رضى الله عنهما رقم ٢٤٤٥) وإلترمذى كتاب المناقب باب ماجاء فى مناقب الزبير بن العوام رضى الله عنه باب قوله صلى الله عليه وسلم كالذى قبل مع قصة فيه رقم ٢٧٤٥) وابن ماجه كتاب السنة باب فصل الزبير رضى الله عنه رقم ٢٧٤٥) وابن ماجه كتاب السنة باب فصل الزبير رضى الله عنه رقم (١٢٢)-

أ (كشف البارى (ج ٢ص ۶۶۹) - أ

٥) (حواله بالا (ص٢٧٨)-

ع) دَ دوى دَ حالاتودَپاره أو محوري كتاب الوضوء باب صب النبي صلى الله عليه وسلم وضوه على المغمى عليه-

م-جابر: دا مشهور صحابی حضرت جابر بن عبدالله المثن دی. (۱) قوله: قال: قال النبی صلی الله علیه وسلم: مر. یأتینی بخبر القوم؟ یوم

الأحزاب: حضرت جابر الله في فرماني چه نبي كريم نظم د غزوه احزاب په ورځ اوفرمانيل چه

ماله به د قوم خبر څوك راوړي؟

د قوم نه مراد دلته د بنوقریظه یهودیان دی اود یوم الاحزاب نه جنگ خندق مراد دی په دی جنگ کندق مراد دی په دی جنگ کنبی د قریشو نه علاوه نور قبائل هم مسلمانانو سره د جنگ د پاره راغلی وو او د مدینی یهودیانو دا معاهده ماته کړی وه کومه چه د هغوی اود نبی تلیکی په مینځ کښی شوی وه او د قریشو سره د مسلمانانو خلاف یوځای شوی وه (۲)

قوله: قال الزبير: أنا، ثمرقال: من يأتيني بخبر القوم؟ قال الزبير: أنا: حضرت زبير بن عوام الأثرة اوفرمائيل چه زه، بيا نبى كريم اللظم اوفرمائيل چه د قوم خبر به ماله څوك راوړي و خضرت زبير اللي اووئيل زه

نبي كريم تليخ شو عل ترغيب وركرو؟ د حديث باب نه معلوميږى چه د نبى تليخ او صحابه كرامو رضوان الله اجمعين په مينځ كښى سوال او جواب دوه ځل اوشو او دواړه ځل حضرت زبير التي خپل نوم پيش كړو. خوامام نسائى مينځ يوروايت نقل كړيدى. فرمائى چه:

(قال وهب بن كيسان: أشهد لسبعت جابربن عبدالله في يقول: لما اشتد الأمريوم بنى قريظه، قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: من يأتينا بخبرهم؟ فلم يذهب الربيد، فجاء بخبرهم، ثم اشتد الأمرايفا، فقال النبى صلى الله عليه وسلم: من يأتينا بخبرهم؟ فلم يذهب أحد، فذهب الربيد، ثم اشتد الأمرايفا، فقال النبى صلى الله عليه وسلم: من يأتينا بخبرهم؟ فلم يذهب أحد، فذهب الربيد، فجاء بخبرهم، فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: أن لكل بعى حواريا، وإن الربيد حواريا،

١) (د دوى د حالاتودباره أو محوري كتاب الوضوء باب باب من لم يرالوضوء إلامن الخرجين....

٢) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٤١)-

٣) (سنن النسائي الكبير (ج٥ص ٢٤٤) كتاب السير باب ذهاب الطليعة وحده، رقم (ج٣ص٨٨٤)-

نو په دې روایت کښې دا ذکر شو چه دا سوال جواب درې ځل شویدې او د بخاری شریف په روایت کښې اختصاردې علامه قسطلانی پښې فرمائی (دفیه ان الربیر توجه الیهم ثلاث مرات) (۱) ترغیب ئی په یوځائ ورکړوکه مختلفو ځایونوکښې دغه شان د حدیث باب نه دا هم معلومیږی چه د حضور او صحابه کرامو از الله د ترغیب ورکولو عمل هم په یومقام باندې شویدې، چه هغوی نایم په یومقام باندې تشریف فرماوو او د صحابو نه نی تپوس کولو چه (منیاتینی بخبرالقوم؟))

۱۳۰۰ دا صحیح نه دی بلکه په دریو ځایونوکښې داسې شویدې چه نبی نیای په دریو مختلفو مقاماتوکښې تپوس کړیدې او دریواړه ځل حضرت زبیر ناتئ وروړاندې شویدې او خپل ځان ئې پیش کړیدې. نو هم د سنن نسائي هغه روایت کوم چه مونږ اوس ذکر کړوپه دې دلالت کوي.(۲)

د بنوقریظه دخبر راوړلود پاره کوم صحابی تلی وو؟ علامه سراج الدین بن الملقن مید په التوضیح کښی د خپل استاذ حافظ فتح الدین یعمری پیکی نه دلته یو اشکال نقل کړیدې چه په اهل مغازی کښې خودا مشهوره ده چه د خبر راوړلو د پاره کوم سړې لیګلې شوې وو هغه حضرت حذیفه بن الیمان کاتی و او دلته د بخاری په روایت کښې ذکر دی د حضرت زیر کاتی ؟

آ په دواړو روايتونوکښي د تطبيق د پاره دا خبره کولي شي چه دا واقعه د يو وخت وي او بله واقعه د بل وخت وي په دې وجه هيڅ تعارض نشته.

و حافظ ابن حجرعسقلانی رئیلی دا جواب ارشاد فرمائیلی دی چه په اصل کښی دا جدا جدا واقعات دی، حضرت زبیر اللی هم نبی الیکلی وو او حضرت حذیفه بن یمان اللیک هم. لیکن حضرت زبیر اللی خو ئی د دی خبری د تحقیق د پاره روان کړی وو چه آیا بنوقریظه نقض عهد کړی دی که نه؟ او قریشو سره هغوی سازباز کړیدی او که نه؟ او هغوی د مسلمانانو سره د جنګ کولو د پاره تیاردی که نه؟ نو دا کار حضرت زبیر اللی ته سپارلی شوی وو.

ترکومی چه د حضرت حذیفه الله د واقعی تعلق دی نو د هغه قصه داسی ده چه کله د کفارو محیره په غزوه خندق کښی په مسلمانانو راتنګه کړیشوه او مختلف قومونه په هغوی راپریوتل. بیا روستو په دی قومونو کښی بی اتفاقی راغله او هریو قوم د بل قوم نه ویریدلو او الله تعالی په هغوی باندی سخته سیلئی راوستله اوحالات خراب شو نو هغه وخت حضور مشرکانو حالت معلوم کړه راشه.

په صحیح مسلم کښې د حضرت حذیفه ظائم قصه ذکر ده هغه فرمائی، سخته سیلئی او یخنی وه او د شپې وخت وو، نبی کریم ناتی مونږ صحابه کرامو ته اوفرمائیل ((الادچلیاتین

۱) (شرح القسطلانی (ج0ص۶۷)-

۲) (لامع الدراري (ج٧ص٢٢٧)-

پخبرالقوم، جعله الله معی يوم القيامة؟)) داحضور نظم درې ځل اوفرمائيل خو چا هم جواب ورنکړو نو رسول الله نظم ماته اوفرمائيل ((قم ياحديفه، فاتنا پخبرالقوم)) ورسره هغوى نظم فرمائيلي وو چه څوك به وژنې نه. دې وائي چه دومره سخته يخني وه چه تك ډير گران ووخو چه كله د حضور نظم په حكم باندې زه لاړم نو داسې معلوميدله لكه چه زه په گرم حمام كښي يم او د يخنني څه نوم او نښه باقي نه وه. دې نه پس زه هغه مذكوره مقام ته اورسيدلم نو اومي كتل چه ابوسفيان (فاتم خپله ملاكرموي، ما خيال راغلو چه ډيره ښه موقع ده چه دې خو ختم كړم ليكن د حضور نظم خبره راياده شوه چه څوك اونه وژنې نو ما هغه پريخودو. كله چه زه د هغه ځائ نه واپس راغلم او هغه كار چه ماته سپارلي شوې وو پوره شو نو دومره يخني مي اوشوه چه د هغې انتها نه وه. نو حضور نظم خپل خادر په ما باندې واچولو او زه اوده شوم بيا چه كله د سحر د مانځه وخت شو نو حضور نظم او

وفرمائیل ((قمیانومان)) ای ډیر خوب کونکیه پاسه. (۱)

نو چه کله دا دواړه جدا جدا واقعات دی نو د تعارض هډو څه سوال نه پیداکیږی. (۲) د نبی کریم نایم ترغیب اود نوروصحابه کرامو سکوت: دلته یو سوال دا پیدا کیږی چه کله

نبی مَایِّشِ (رمن یأتین بخبر القوم؟)) اوفرمائیل نود حضرت زبیر گائی نه علاوه نورو صحابه کرامو ولی لبیك اونه وئیل او چپ پاتی شو سره د دی چه هغوی خو د حضور تَایِّم د پاره خان هم قربانی كولو؟

حضرت کینگوهی سوال مختلف جوابونه ذکر کړی دی:

نه پریخودلوممکن دی چه د طلیعه فضیلت په خپل ځائ دې لیکن صحابه کرامو د حضور صحبت نه پریخودلوممکن دی چه د حالاتو دنزاکت د وجه د حضور ترایخ نه وی خوښ کړي.

و دا هم ممکن دی چه د حاضرینو نه هر یو جواب او لبیك وئیل غوښتل خو چه کله هغوی او کتل چه حضرات چپ شو. او کتل چه حضرات چپ شو.

بيا دا خبره هم ده چه په دې دريو موقعوكښې ټول صحابه د حضور تاپيم سره حاضر نه وو بلكه څه لږ شان خلق وي ټول بلكه څه لږ شان خلق وي ټول نه وي. (۳)

قوله: فقال النبي صلى الله عليه وسلم: إن لكل نبي حوارياً، وحواري الزبير: نو حضور تلكم اوفرمائيل د هريو نبي د پاره يو (خاص) حواري (امدادي) وي او زما حواري زبير دي.

د حواری معنی: د حواری معنی خاص امدادی او ناصر ده. د حضرت عیسی مایوم ملګروته په

١) (الحديث أخرجه مسلم كتاب الجهاد والسير باب غزوة الأحزاب رقم (٤۶٤)-

۲) (فتح الباري (ج۷ص۲۰ ٤)-

٣) (لامع الدراري ج١ ص ٢٢٨-٢٣٠)-

قرآن کریم کښې (الحوادیون) (۱) سره تعبیر کړیشوی دی. ځکه چه هغوی د حضرت عیسی فرآن کریم کښې (الحوادیون) (۱) سره وو. د دې اصل ((تحویر)) دې. د کوم معنی چه ((تبییش)) ده، یو قوم دا هم دې چه د حضرت عیسی تالی دا دوستان یا شاګردان دوبیان ووپه دې وجه مغوی ته (الحوادیون) اووئیلې شو. (۲)

علامه ابن منظور افریقی ایکی: ((التحویرالتبییض، والحواریون: القصارون لانهم کانواقصارین، فهاب منظور افریقی کانواقصارین، فه غلب حتی صارکل ناصروکل حبیم حواریا))(۲)

حضرت زبير النظر ته و حوارى و يبلووجه علامه مهلب و فرمائى چه و حديث باب نه معلومه شوه كوم سړى چه و د نسمن حال معلومولو و پاره لاړشى هغه ته ناصر و يبلى كيديشى، ځكه چه حضرت رسول الله النظر حضرت زبير الخاتر ته حوارى و بيلى دى. و دې تسميه مطلب دا دې چه كله حضرت عيسى الخرام دا او فرمائيل (من انسارى الى الله قال الحواريون دعن انسادالله) نو و حواريينو نه علاوه بل چا لبيك اونه و ئيل. دغه شان چه كله نبى الخرام د صحابه كرامو نه دا معلوم كړل ((من ياتينى بخبرهم؟)) نو و حضرت زبير الخرائر نه علاوه بل چا لبيك اونه و ئيل، و د حضرت زبير الحرائر و حواريينو سره تشبيه و ركړه او د هغوى په نوم ئى ياد كړو. (۴)

نو بيا چه داخبره ثابته او واضحه شوه چه طليعه ته ناصر وئيلې كيديشى نود دې ثواب هم هغه دې چه د مقاتل مدافع دې. (۵)

د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت د حدیث ترجمه الباب سره مناسبت بالکل واضح دی. (۶) چه په باب کښې د طلیعه ذکر دی او په حدیث کښې هم د دې بیان دې.

٣- بَابِ: هَلْ يُبْعَثُ الطَّلِيعَةُ وَحُدَةُ

د ترجمة الباب مقصد: دلته امام بخارى المخطئة داخودلى دي چه د طليعه په توګه يو سړې ليګل هم صحيح دى. لکه چه حضور الله عضرت زبير الله ليګلې وو او جواب د استفهام محذوف دې يعنى ((يجولېعثه وحده))(۷)

۱) (الصف: ۱۵) –

۲) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ١ ٤١)-

٣) (لسان العرب (ج ٤ ص ٢١٩-٢٢٠)-

أشرح ابن بطال (ج٥ص٥٥)-

۵) (حواله بالا(۵ ا) -

^ع) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ١ ٤١) -

٧) (عمدة القارى (ج ١٤٢ ص ١٤٢)-

[٢٦٩٣] حَدَّثَنَاصَدَقَةُ أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُنْكَدِدِ سَمِعَ جَابِرَبْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ النَّاسَ قَالَ صَدَقَةُ أَظُنَّهُ يَوْمَ الْخَنْدُو عَنْهُمَا () قَالَ نَدَبَ النَّبِيُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ النَّاسَ قَالَ صَدَقَةُ أَظُنَّهُ يَوْمَ الْخَنْدُو عَنْهُمَا () قَالَ نَدَبَ النَّبِيُ فَقَالَ النَّبِيُ فَقَالَ النَّبِيُ فَقَالَ النَّبِيُ فَقَالَ النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ لِكُلِ نَبِي حَوَارِيًّا وَإِنَّ حَوَادِيًّ الزَّبَيْرُبُنُ الْعَوَّامِ [ر: ٢٦٩١] صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ لِكُلِ نَبِي حَوَارِيًّا وَإِنَّ حَوَادِيًّ الزَّبَيْرُبُنُ الْعَوَّامِ [ر: ٢٦٩١]

تراجم رجال

ا-صِدقه: دا ابوالفضل صدقة بن الفضل المروزي بَرَاللهُ دي. (٢)

r- ابر عُیکینه: دا مشهور محدث سفیان بن عُیکینه بن ابی عمران کوفی مُراید دی.د در در مختصر حالات ((کتاب العلم باب تول مختصر حالات ((کتاب العلم باب تول المحدث حدیث کنبی (۴) او تفصیلی حالات ((کتاب العلم باب تول المحدث حدثنا اوا عبرها وانبانا) لاندی تیرشوی دی. (۴)

٣- ابر. المنكرر: دا محمدبن منكدر بن عبدالله مدنى معالم دي. (٥)

٣- جأبرير. عبدالله: دا مشهور صحابي حضرت جابر بن عبدالله الماشي دي. (ع)

قوله: قال: ندب النبى صلى الله عليه وسلم الناس: حضرت جابر بن عبدالله كُلُّهُا فرمائى چه نبى مَيْلِام خلقو ته آواز وركړو. ندب د باب ضرب نه دې د دې مصدر ندبا دې اود دې معنى څوك راغوښتل او متوجه كول دى.

قوله: فال صدقه: أظنه يوم الخندق صدقه راوى وائى چه زما خيال دى دَ جنگ خندق ورځ وه. يعنى صدقه بن الفضل چه په دې حديث كښى دَ بخارى رئيد شيخ دې هغه فرمائى چه زما خيال دا دې چه دا راغوښتل د جنگ خندق په ورځ وو، هغه ته دلته شك كيږى خو دغه روايت امام حميدى په خپل مسند كښى دَ ابن عُيينه رئيد وايت امام حميدى په خپل مسند كښى دَ ابن عُيينه رئيد وايت امام حميدى په خپل مسند كښى د ابن عُيينه رئيد وايت امام حميدى په دې كښى بغيرد شك نه يوم الخندق دى. (٧)

قوله: فأنترب الزبير: نو حضرت زبير الأثن جواب وركرو. مطلب دا دى چه كله حضور الله خلفوته آواز وركرو أو خبردار ئى كړل نود هغه آواز جواب صرف حضرت زبير الله وركړو.

١) (قوله: جابر بن عبدالله رضى الله عنهما: الحديث مرتخريجه في الباب السابق -

٢) (د دوى د حالاتود باره او كورى كتاب العلم باب العلم والعظة بالليل-

۳) (کشف الباری (ج ۱ ص۲۳۸) -

ئ) (کشف الباری (ج۳ص۱۰۲)-

۵) دُدوى دَ حالاتودَ پاره اوګوري کتاب الوضوء باب صب النبي صلى الله عليه وسلم وضوءه على المغمى عليه-

ع) (ددوى دحالاتودباره اومحوري كتاب الضوء باب من لم ير الوضوء إلامن المخرجين من القبل والدبر

٧) (عمدة القارى (ج ١٤ ١ص ١٤) ومصباح اللغات (ص٨٤٣) مادة ندب_

راتد ۱۸ اگری معنی د چا په راغوښتوباندې جواب ورکولو ته وائی. (۱)
د حدیث باب نه دا فائده مستنبط شوه چه یوازې سړی له ځان له سفرکول جائز دی او په دې
باره کښې چه څه هم وارد شوی دی هغه د څه ضرورت یا حاجت د نه کیدو په صورت کښې
دی. (۲) د دې سلسلې نور تفصیلات به ان شاء الله ((باب السیروحده)) لاندې راځی.
او په حدیث باب سره متعلق نور بحثونه په تیرو شوو بابونوکښې مونږ ذکر کړی دی.
د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت: د حدیث ترجمه الباب سره مناسبت واضح دې. چه حضور نایخ حضرت زبیر د تا تو هې د د نبیمن جاسوسنی د پاره روان کړې وو. د څه نه چه معلومه شوه چه په طلیعه کښې یو سړې لیګل هم جائز دی.

٣٠-بَأَب: سَفَرِ الْإِثْنَيْنِ

پاتی شو هغه د سنن حدیث نو حافظ ابن حجر فرمائی چه هغه حدیث شریف هم صحیح الاسناد دی. ابن خزیمه او حاکم بینیز (۸) هم دا صحیح کرځولی دی. او امام حاکم دا د حضرت ابوهریره ﴿ اللّٰهُونُونَهُ هُم روایت کړیدی. (۹)

⁽ ۱ (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ٢ ٤ ١) ومصباح اللغات (ص ٨٥٣) مادة ندب-

۲) (فتع البارى (ج ٤ص٥٣)-

٣) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ٢ ٤ ١) وفتح البارى (ج ٢ص ٥٣)-

٤) (سنن أبي داؤد كتاب الجهادباب في الرجل يسافر وحده رقم (٢۶٠٧)-.

ع) (رواه الإامام مالك بن أنس أيضًا في الوطأ (ج٢ص٩٧٨)في الاستنذان باب ماجاء في الوحدة في السفر رقم (٣٥)

۷) (فتع الباری (ج۶ص۵۳)-

٨) (المستدرك للحاكم (ج٣ص٢٠) كتاب الجهاد باب التشديد في السفر بدون الثلاثة-

٩) (العديث أخرجه الحاكم وصححه (ج٢ص٢٠) كتاب الجهاد باب التشديد في السفر بدون الثلاثة -

په دې وجه د دې روایت خو د سره ردکولې نشی خو د دې متعلق به دا اووئیلی شی چه دا په دې وجه د دې روایت خو د سره ردکولې نشی خو د دې متعلق به دا اووئیلی شی چه در په خاص حالاتو محمول دې. امام طبری به نیم فره در در الراکب شیطان والراکهان شیطان در در در در وارد شویدې هغه د ادب په توګه دې. ځکه چه یوازې سړې د ویرې او ځان له والی ښکار کیږی. په دې وجه دا نهی تحریمی نه ده چه دا سفر به حرام وی. ځکه که یوازې سړې په ځنګل تیریږی یا داسې که په ځان له څای کښې په یوخالی کور کښې شپه تیروی نو هغه د ویرې نه په امن کښې کیدې نشی خاص کر که د هغه زړه کمزورې وی او خیالات ئی خراب وی.

او د ٔ دې باره کښې د ټولونه ښه دا دی چه خلق په دې باره کښې مختلف دی څوك ويريږي او څوك باره کښې مختلف دی څوك ويريږي او څوك بالكادق او څوك بالكل نه ويريږي نو دا به وئيلي شي چه كومه نهى وارد شويده هغه ((حساللهادق) ده او دا نهى دې صورت ته شامل نه ده چه واقعى څه حاجت يا ضرورت پيش شي.(١)

په دې مسئله کښې نور تفصيل به ان شاء الله ((بابالسيروحده)) لاندې راځي.

[٢٦٩٣] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بُنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا أَبُوشِهَا بِعَنْ خَالِدٍ الْحَذَّاءِ عَنْ أَبِى قِلَابَةَ عَنْ مَالِكِ بُنِ الْحُونِدِثِ (٢) قَالَ انْصَرَفْتُ مِنْ عِنْدِ النَّبِي صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لَنَا أَنَا وَصَاحِبِ لِي أَذِنَا وَأَقِيمًا وَلَيَوُمَّكُمَا أَكُبَرُكُمَا [٢٠٠٠]

تراجم رجال

ا- احمل برب یونس: دا احمد بن عبدالله بن یونس تمیمی کوفی مید دی. لیکن د نیکه به نسبت یعنی احمد بن یونس سره مشهور دی. د ده حالات ((کتاب الإیمان باب من قال: آن الإیمان هواالعمل)) لاندی تیرشوی دی. (۳)

-- ابوشهاب موسى بن نافع الحناط مُشَاء دي. (۴)

- خالبالحناء: دا مشهور محدث ابوالمنازل خالدبن مهران حذاء بصرى مراي دي. دَ ده حالات (ركتاب العلم بابقول النبي صلى الله عليه وسلم: اللهم عليه الكتاب) لاندې تيرشوې دی. (۵) م- ابوقلابه: دامشهور تابعی عبدالله بن زيد جرمی مراید دې. دَ دوی مختصر حالات (ركتاب

١) (فتح الباري (ج ٤ ص ٥٣ - ٥٤) وعمدة القاري (ج ١٤ ص ٤١) -

٢) قُوله: عن مالك بن الحويرث: الحديث مرتخريجه في كتاب الأذان باب من قال: ليؤذن في السفر مؤذن واحد ٣) (كشف الباري (ج٢ص١٥٩)-

٤) (د دوى حالاتود باره او كورئ كتاب الحج باب التمتع والقران...)-

۵) (کشف الباری (ج۳ص ۳۶۱)-

الإيان اب حلاو ۱۱ الإيمان) به ذيل كښې راغلى دى. (١)

مُ مَ الكبر ب حويرت: دا د رسول الله تلظم صحابی حضرت مالك بن الحويرث ابوسليمان الله يوسليمان دي . د ده حالات ((كتاب العلم باب تحييض النبي صلى الله عليه وسلم وفد عبد القيس على أن يحفظوا الإيان)) لاندې تيرشو. (٢)

تنبیه: دا حدیث سره د تشریحاتو ((کتاب الأذان)) کښې تیرشو.

واحدیث و ترجمه الباب په ذیل کښې و فکر کولو مقصد آبن التین کیلیم فرمائی چه امام بخاری کیلیم د ترجمه الباب په ذیل کښې و فکر کولو سره دا اشاره فرمائی چه و دې کلیم دا بدی په بعض طرق کښې دا صراحت موجود دې چه حضور تلیم هغه ته اود هغه ملکری ته دا پورته ذکر شوې ارشاد هغه وخت فرمائیلی وو کوم وخت چه دې حضراتو و خپل قوم طرف ته و تلو اراده او کړه نو و هغوی تالیم دې اجازت سره و دوو سړو و سفر په جواز باندې به استدلال کولې شي. (۳)

دُ امام داودی غَلطَ فهمی او دَ هغی وضاحت ابن التین رئید فرمائی چه امام داودی دَ ترجمه الباب دَ الفاظونه دا گذرلی چه امام بخاری رئید دلته سفریوم الاثنین (یعنی دَ پیردَ ورځ سفر) بیانوی. بیائی په امام صاحب باندی اعتراض او کړو چه دلته خو په حدیث کښی دیوم الاثنین د سفر هډو تذکره نشته.

علامه عينى والمسابق و

الله صلى الله عليه وسلم يحب أن يسافي يوم الإثنين ويوم الخبيس)) (۴) يعنى د هغه دا اعتراض بالكل د توجه قابل نه دى ځكه چه د امام بخارى مقصد د دى نه صرف د دوو سړو د سفر بيان دي. د دى د پاره د دى نه وړاندى د يو سړى د سفر بيان اوشو بيائى د دى نه پس د دوو سړو د سفر ذكر اوكړو. كه چرې داودى د حديث متن ته كتلى وى نو هغه ته به د خپل اعتراض خلاف معلوم شوى وو.

تاتی شو سفر د یوم الاثنین نود دی دریو صحابه کرامو په حدیث کښی ذکر دی کوم چه د غزوه تبوك نه پاتی شوی وو. حضرت کعب بن مالك ناش فرمائی چه رسول الله ناش به د پیر او زیارت د ورځ سفر خوښولو.

۱) (کشف الباری (ج۲ص۲۶)-

۲) (کشف الباری (ج۳ص۵۰۸)-

۳) (فنع البارى (ج۶ص۵۳)-

٤) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ٢٤)-

د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت د حدیث مناسبت ترجمه الباب سره واضح دی (۱) چه حضرت مالك بن حویرث نگاری اود هغه ملګری ته هغوی تا الله د سفر کولو اجازت ورکړی وو د څه نه چه د دوو سړو د سفر جواز معلومیږی.

٣٣- بَاب: الْخَيْلُ مَعْقُودٌ فِي نَوَاصِيهَا الْخَيْرُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ

د ترجمهٔ الباب مقصد امام بخاری رئیلی دلته دا خودل غواری چه د اسونو په تندوکښی به د قیامت پوری خیر او برکت قائم وی. او دلته هغوی د خپل عادت موافق د حدیث الفاظ ترجمهٔ الباب جورکری دی. (۲)

اود دې ترجمه لاندې هغوی درې احادیث ذکرکړی دی کومو کښې چه ړومبې د حضرت ابن

عمر الكثير دي.

[rīw] حَدَّثَنَا عَبُدُ اللَّهِ بُنُ مَسْلَهَةً حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنُ نَافِعٍ عَنْ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ عُمَرَ رَضِى اللَّهُ عَنُهُمَا (٣) قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْخَيْلُ فِي نَوَاصِيهَا الْخَيْرُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ [٣٢٣] الْغَيْرُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ [٣٢٤]

تراجم رجال

١-عبدالله بن مسلمه: دا عبدالله بن مسلمه بن قعنب قعنبي ركاله دي.

<u>r-مالك:</u> داامام دارالهجرة امام مالك بن انس الاصجى مُطَيِّدُ دې. دَ دې دواړو حالات «كتابالإيبان بابمن الدين افرار من الغتن» لاندې تيرشوى دى. (۴)

٣-نافع: دا ابوسهيل نافع بن مالك بن ابى عامر اصجى رَوَالله دى. دَ امام مالك رَوَالله تره دي. دَ ده حالات ((كتاب الإيبان بابعلامة البنافق)) لاندې تيرشو.(٥)

م-عبدالله برعمر: دا مشهور صحابى حضرت عبدالله بن عمر بن الخطاب الشيء دي. دَده حالات ركتاب الإيبان باب تول النبي صلى الله عليه وسلم: بني الإسلام على عبس) لاندى را غلى دى (ع)

١) (حواله بالا(ص١٤٣)-

٢) (فتح الباري (ج٤ص ٥٤) وعمدة القاري)ج ٤ ١ص ١٤١) وكشف الباري (ج١ص ١٥٨)-

٣) (قوله: عن عبدالله بن عمر رضى الله عنهما: الحديث أخرجه البخارى أيضًا (ج ١ يص ٥٤) كتاب المناقب باب بعد باب سؤال المشركين أيريهم... رقم (٤٤٤) ومسلم كتاب الإمارة باب الخيل فى نواصيها الخبر إلى يوم القيامة. رقم (٤٨٤٥) والنسائى كتاب الخيل باب قتل ناسية الفرس رقم (٣۶٠٣) وابن ماجه أبواب الجهاد باب ارتباط الخيل فى سبيل الله رقم (٢٧٨٧)-

٤) (كشف البارى (ج٢ص ٨٠)وأيضًا انظر لترجمة مالك بن أنس: كشف البارى (ج١ص ٢٩٠)-

د) (کشف الباری (ج۲ص۲۷۱)-

ع) (کشف الباری (ج ۱ ص۶۳۷)-

نوله: قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: الخيل في نواصيه الخير

الى يوم القيامة: حضرت عبدالله بن عمر التائز فرماني چه رسول الله تاليم اوفرمائيل د المونو تندو سره د قيامته پورې خير تړلې دې

و خیل نه نحه مراد دی؟ دلته د خیل نه هغه اسونه مراد دی کوم چه د جهاد د پاره اوساتلی نی او په هغی جنگ او کریشی. په دلیل هغه حدیث شریف دی کوم چه څلور بابه پس راخی چه (رالخیل لثلاثة)). (١)

په مسند احمد کښې د حضرت اسماء بنت يزيد ظي مرفوع حديث دي:

ر الخيل في نواصيها الخير معقود إلى يوم القيامة، فين ربطها عُدَّة في سبيل الله، وأنفق عليه إحتسابا كان شبعها

رجوعها وربها وظبوها وأرواثها وأبوالها فلا من موازينه يوم القيامة) (٢) با بعني د اسونو تندو پورې د قيامته پورې خير او برکت تړلې دې. چا چه دا د الله تعالى په

پهلی د جهاد د پاره تيارکړې وی او د تواب نيټ لولو سره په دې باندې خرچه کړې وي نود هغه مړيدل، او د هغه خاشنړه او د هغه مړيدل، د هغه خاشنړه او د هغه مړيدل، د هغه خاشنړه او د هغه متيازې په د قيامت په ورځ په تله کښې کاميايي وي.

هغه متیازی به د قیامت په ورځ په تله کښی کامیابی وی. او تخصیص بالذکر وجه دا ده چه په هغه او خیل ئی ځکه ذکر کړو چه دا د جهاد سامان دی او تخصیص بالذکر وجه دا ده چه په هغه زمانه کښی د دی نه لوی د جهاد سامان نه وو ګنی مقصود د خیل تعیین نه دی بلکه د جهاد فضیلت بیانول دی چه په جهاد کښی د امت مسلمه د پاره خیر او برکت دی. (۳)

د نواص مطلب اود دې مراد نواص د داصية جمع ده اود دې معنی تندې دې. خو دلته په حدیث کښې داصية نه هغه ويښته مراد دی چه د اس په تندی باندې زوړند وی.(۴)

او بعض حضراتو فرمائیلی دی چه داصیه د اس د تول ذات نه کنایه ده د عربوخلق وائی «فلان مهارك الناصیة» او د دې نه پوره انسان یا ذات اخلی. (۵)

ولی حافظ ابن حجر مَرَانَهُ داخبره بعیده گرخولی ده چه د ناصیه نه پوره ذات مراد واخستلی شی نو د باب په دریم حدیث کښی دا معنی صحیح نه گرخی. نور فرماثی چه امام مسلم د حضرت جریر ماتی روایت نقل کړیدی په دی کښی : ((قال: رایت رسول الله صلی الله علیه وسلم یلوی نامیة فرسه پامیه ویقول....)(۶)

۱) (فتح الباری (ج۶جب۵۵) وعمدةالقاری (ج ۱ ۱ص۲۷۳)-

٢) (مسنداحمد (ج٤٥٥ ٢٥)-

۲) (فيض الباري (ج٣ص ٤٣٠)-

الفتح الباري (ج عص ۵۵) وعمدة القاري (ج ۱ ع ۱ ص ۱۹)-

۵) (حواله بالا وشرح الكرماني (ج ١٢ص ١٣٤) وابن بطال (ج۵ص ۵۷)-

ع) (صعيع مسلم (ج٢ص١٣٢) كتاب الإمارة بأب فضيلة الخيل وأن الخير معود بنواصيها رقم (٤٨٤٧)- ...

او پوره حدیث نی ذکر کروپه دې وجه هم نامیه مراد ده. اود دې د تخصیص بالذکر وجه دا ده چه د اس په ذریعه اقدام علی العدو اوکړیشی په خلاف د روستنی حصی ځکه چه په دې کښې د ادبار اشاره موندلې شی. (۱) څلاف د روستنی حصی ځکه چه په دې کښې د ادبار اشاره موندلې شی. (۱) د الخیرنه څه مراد دی؟ د الخیر نه مراداجر او غنیمت دې لکه چه د وړاندینی باب په حدید

كښې پخپله حضور تراخ اجر او غنيمت خير ګرځولې دې. ((الخيل معقود في تواصيها الغير لي يور القيامة: الأجروالبغنم)) (٢) أو ((الأجروالبغنم)) الفاظ خو يا دَ خير سره بدل دى يا دَ مبتدا،

محذوف خبر دي. (رأى هوالأجروالمغنم)) (۱۳)

اود مسلم شریف د روایت نه هم د د دې تاثید کیږي چه هلته د جریر عن حصین په رواین

كبسي دى ((قانوا: بمذاك يا رسول الله؟ قال: الأجروالبغنم))(۴) اوبعض حضراتو فرمانيلي دي دلته د خير نه مراد مال دي علامه خطابي ميكي فرماني چه به حديث کښې د دې خبرې خبر ورکړيشويدې چه کوم مال د اسونو په تيزو زغلولو حاصل شي هغه دَ ټولو آنه بهترين او پاك مال دې خكه چه عرب مال ته خير وائي هم دينه د الله تعالى

قول دى: (كتبعليكمإذاحض أحدكم الموت إن ترك خيرا) (٥) أى: ماذر (٤)

علامه أبن عبد البريجة به ، والتمهيد ، ، كنبي فرمائي.

په دې حديث کښې د اس حاصلولو ترغيب دې او دا اسونه د ټولو ځناورو نه غوره دي ځکه چه د نښې کريم کاڅ نه دا قسم ارشاد د بل يو ځناور د پاره سوا د اس نه نه دې نقل شوې په دې کښې د نښې کريم کاڅ د طرف نه د اس تعظيم دې د دې په حصول باندې ترغيب دې د دَ دي خبري تحريص دي چه د الله تعالى په لاركښي د جهاد د پاره دا تياره وه او تړلې انه ځکه چه دا د جهاد په قوي آلاتوکښې دې. دا اس کوم چه د جهاد د پاره تيارکړيشي هم هغه د کوم په تندې کښې چه خير دې (۷)

دَ نسائی شریف په روایت کښې راځی چه نبی کریم ترکی ته دَ ښځونه پس دَ ټولو نه ز^{یان} اسونه خوښ وو.(۸)

تنبیه دلته امام بخاری مید چه کوم حدیث د حضرت عبدالله بن عمر المی در کریدی به هغې کښې د معقودلفظ نشته د موطا په روايت کښې هم داسې دې (۹) چه په دې کښې خ

۱) (کشف الباری (ج۶ص۵۵-۵۶)-

٢) (صحيح البخاري (ج ١ص ٢٩٩) كتاب الجهاد باب الجهاد ماض مع البروالفاجر. رقم (٢٨٥٢)-

۳) (فتع الباری (ج۶ص۵۵)-

 ^{4) (}صحيح مسلم (ج٢ص١٣٤) كتاب الإمارة باب فضيلة الخيل وأن الخير معقود بنواصيها رقم (٤٨٥٠)

ع) (أعلام الحديث للخطابي (ج ٢ص ٢٧٤)-

۷) (التمهيد(ج ٤ ١ ص ٩۶)-

٨) (سنن النسائي (ج٢ص١٢٢) كتاب الخيل باب حب الخيل رقم (٢٥٩٤)-

٩) (الموطأ للإمام مالك بن أنس كتاب الجهاد باب ماجاء في الخيل....رقم (٤٤)-

عف الباري كتاب الجهاد (جلداول ٢٨٣) كتاب الجهاد (جلداول معقود لفظ نشته، خو اسماعيلي همدغه روايت عبدالله بن نافع عن مالك په طريق سره نقل کړو په دې کښې دا لفظ موجود دې دغه شان هم بخاري کښې علامات النبوة لاندې دا حدیث ((عن عبیدالله أخبرل دافع عن ابن عبر دالمن) (١) به طریق سره مروی دی به دې کښې هم دَ معقود لفظ موجود دې ليکن دا صرف د کشميهني په روآيت کښي دي. (۲) د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت ترجمة الباب سره د حديث مطابقت بالكل واضح دي. ٣) او هغه خير دُ اسونو تندو سره تړلې دې هم دُ دې په ترجمه کښې ذکر دې او همدغه دَ حديث مضمون دي. ٠

د باب دوئم حديث د حضرت عروة بن الجعدر المنور دي.

[٢٦٠] حَدَّثَنَا حَفُصُ بُنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ حُصَيْنِ وَابْنِ أَبِي السَّفَوِ عَنْ الشَّعْيِقِ عَنْ عُرُوَةً بْنِ الْجَعْدِ (٣)عَنْ النَّبِيّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَـالَ الْحَيْلُ مَعْقُودٌ فِي نَوَاصِيهَا الْحَيْرُ إِلَى يُوْمِ الْقِيَامَةِ قَالَ سُلَيْمَانُ عَنْ شُعْبَةً عَنْ عُرُولًا بْنِ أَبِي الْجَعْدِ تَابَعَهُ مُسَدَّدٌ عَنْ هُتَيْمِ عَنْ حُصَيْنِ عَنُ الشَّعْبِي عَنْ عُرُولَةً بُنِ أَبِي الْجَعْدِ [٢٩٥١، ٢٦٩٢]

تراجم رجال

ا-حفص برعمر: دا حفص بن عمر بن حارث رسيد دي. (۵)

r-شعبه: دا اميرالمؤمنين في الحديث ابوبسطام شعبه بن الحجاج عتكي بيايا دي. د دوي مختصر حالات ((كتاب الإيمان باب المسلم من سلم المسلمون من لسائه ويداه))لاندي تيرشوى دى. (ع)

r-حصين بن عبدالرحمن السلمى $\frac{\lambda_{n+1}}{2}$ دى.(٧)

م- ابر ابي السفر: دا عبدالله بن ابي السفر سعيد ثوري كوفي ميرية دي. د ده حالات هم

١) (صحيح البخاري كتاب المناقب باب بعد سؤال المشركين أن يريهم... رقم (٢٤٤٤)-

۲) (کشف الباری (ج۶ص ۵٤)-

۲) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ٢٥) -

^{؛) (}قوله: عن عروة بن الجعد: الحديث أخرجه البخاري أيضًا (ج١ص٣٩٩) كتاب الجهاد باب الجهاد ماض مع البر والفاجر رقم (٢٨٥٢) و (ج ١ص ٤٤) كتاب فرض الخمس باب قول النبي صلى الله عليه وسلم: أحلت لكم الغنائم رقم (٣١١٩) و(ج آص ٥١٤) كتاب المناقب باب بعد باب سؤال المشركين أن يريهم... رقم (٣۶٤٣)ومسلم كتاب الإمارة بآب فضيلة الخيل.... رقم (٤٨٤٩-٤٨٥) والترمذي أبواب الجهاد باب ماجاء في فضل الخيل رقم (١٤٩٤ والنساني كتاب الخيل باب قتل ناصية الفرس رقم (٣٤٠٧-٣۶٠٧) وابن ماجه ابواب التجارات باب اتحاذ الماشية رقم (٢٣٠٥) وأبواب الجهاد باب ارتباط الخيل في سبيل الله رقم (٢٧٨٦) ٥) (دَ دوى دَ حالاتودَپار، او كورى كتاب الوضوء باب التيممن في الوضوء والغسل-

۶) (کشف الباری (ج۱ص۶۷۸)-

٧) (د دوى د حالاتود بار ، او كورى كتاب مواقيت الصلاة باب الأذان بعد ذهاب الوقت-

(کتابالإیبان باب البسلم من سلم البسلبون من لسانه ویده)) لاندې تیرشوی دی. (۱)

ه-الشعبي: دا ابوعمروعامر بن شراحيل شعبي كوفي براه دكوره بالشعبي د ده حالات هم د مذكوره باب لاندي راغلي دي. (۲)

۲-عروه بر الجعد: دا عروة بن ابي الجعد الباري الازدى الله دي. ده ته د نبي كريم تا الله و الماري الازدى الله الم

خود علامه شاطبي اوعلامه ابن عبدالبر التين خيال دا دې چه دا عروه بن عياض بن ابي الجعد دې او د خپل نيکه طرف ته د ده نسبت مشهور دي (۴)

بارق قبیله دَ ازد یو ښاخ دی او بارق د حضرت عروهٔ النود جداعلی لقب دی او دهغه نوم سعدبن عدی به حارثه دی او بارق د یو غر نوم دی هغی سره نزدی د حضرت عروه النوی جداعلی اقامت اختیار کړی وو. د هغی طرف ته د نسبت په وجه هغه په بارق باندی یادیدلو. (۵) هغه د نبی کریم تالیم، حضرت عمر النوکو او حضرت سعدبن ابی وقاص النوکوند د حدیث روایت کوی.

اود هغه نه شبیب بن غرقده، امام شعبی، غیزار بن حریث، ابولبید لماذه بن زبار جهضمی، قیس بن ابی حازم، ابواسحاق سبیعی، سماك بن حرب، نعیم بن ابی هند او نور دیر محدثین روایت حدیث كوی (۶)

حضرت عمر الماثر هغه د کوفي قاضی مقررکړې وو، بياهم هلته اوسيدلواو هغه سره ئی سليمان بن ربيعه هم کړې وو، دا واقعه د قاضی شريح رُهُوليد د قاضی مقرر کولونه د وړاندې ده. (۷)

د شام وغیره په فتوحاتوکښې دې هم شامل وو، بیا هم هلته اوسیدلو، روستو حضرت عثمان الله هغه ته د کوفې د روانیدلو هدایت اوکړو. (۸) د هغوی شمیر په محدثینوکښې په اهل کوفه کښې کیږی.(۹)

دُ اسونوسره دَ هَغَهُ ډيره مينه وه،شبيب بن غرقده فرمائي چه هغه سره ما اويا اسونه ليدلې وو چه ټول په ټول د جهاد د پاره ئي تيار ساتلې وو. (۱۰)

۱) (کشف الباری (ج۱ص۶۷۸)-

۲) (کشف الباری (ج ۱ص ۶۷۹)-

٣) (تهذيب الكمال (ج ٢٠ص٥) تهذيب الأسماء واللغات للنووى (ج ١ص ٣٣١)-

٤) (الإصابة (ج ٢ص ٤٤) والإستيعاب (ج ٢ص ٢٨)-

۵) (طبقات ابن سعد (ج۶ص ۳۴) و تهذیب الکمال (ج۲ص۵) و تهذیب الأسماء (ج۱ص ۳۳۱) - ۶) (شیوخ او تلامذه د پاره او گورئ تهذیب الکمال (ج۲۰ص ۵-۶) -

٧) (تهذيب الكمال (ج٢ص٥) وتهذيب التهذيب (ج٧ص١٧٨)-

٨) (الْإصَّابُة (ج ٢صَّ ٤٧٤) - ﴿ أَ

٩) (الأستيعاب (ج٢ص٢١)-

۱۰) (طبقات ابن سعد (ج۶ص ۳۴) وتهذیب الأسماء للنووی (ج۱ص ۳۳۱) وصحیح البخاری (ج۱ص ۵۱۴) تاب المناقب باب بعد باب سؤال المشرکین أن یریهم.... رقم (۳۶٤۳)_

بو خل هغه يو اس واخستلو چِه د هغې قيمت لس زره درهم وو(۱) د هغه نه ټول ديارلس بو ص احادیث مروی دی چه په هغی کښی یو متفق علیه دې. (۲) تنبیه د حدیث عروه بن الجعد اللّٰمُؤ تشریح د تیرشوی حدیث د ابن عمر لاندې تیره شویده.

نوله: قال سليمان: عرب شعبة عرب عروة برب أبي الجعد:

د مذكوره تعليق تخريج دا تعليق حافظ ابونعيم مُنظم (المستخرج) كنبي، امام طبراني (المعجم الكهير، ٣) او امام نسائى خپل (سان) كښى (۴) موصولاً نقل كړيدى (۵)

و مذكوره تعليق مقصد د دي تعليق مقصددا دي چه سليمان بن حرب په دي سندكښي دُعروه د پلار نوم کښي اختلاف کړيدې نو حفص بن عمرخود عروه دپلارنوم جعد ګرځوي او سليمان بن حرب د هغه د پلار نوم أبي الجعد ونيلي دي. (ع)

اسماعیلی مُشِرَ فرمائی چه دُ شعبه نه روایت کونکی اکثر حضرات دَ هغه دَ پلار نوم (الجعد) ښائي سوا د سليمان بن حرب او ابن عدي نه. (٧)

صحيح كوم دى؟ علامه ابن عبدالبر مُعَنظَةُ فرمائي

((قال على بن المديني: من قال فيه: عروة بن الجعد فقد أخطأ، وإنها هو عروة بن أبي الجعد قال: وكان غندريهم فيه، فيقول: عروة بن الجعد)) (٨)

على بن المديني رُحُولِية فرمائي چاچه هغه ته عروه بن جعد اووئيل هغه غلطي اوكره، هغه خو عروه بن ابي الاجعد دي. فرمائي او غندر ته به د هغه باره کښې وهم کيدلو نو هغه به ده ته عروه بن الجعد وئيل.

اوعلامه ابن عبدالبر (٩)حافظ ابن حجر (١٠) حافظ جمال الدين المزي (١١) امام طبراني (۱۲) او پخُپله امام بخاری (۱۳) کیتیم واغیره دَ صنیع نه هم دَ دې خبرې تائید کیږی چه درست او صحيح ((عروة بن أبي الجعد)) دى نه چه ((عروة بن الجعد)).

١) (أسدالغابة (٤ ص٢٤)-

۲) (تهذیب الأسماء للنووی (ج ۱ص ۳۳۱)-

٣) (المعجم الكبير (١٧ص١٥٥) رقم (٣٩٧)-

 $^{^{4}}$) (سنن النسائى كتاب الخيل باب قتل ناصية الفرس رقم (8 و 8) -

۵) (فتح الباري (ج۶ص ۵٤)-

ع) (حواله بالا عمدة القارى (١٤ ص ١٤)-

٧) (فتح البارى (ج٤ص ٥٤)-

أ (الإستيعاب (ج ٢ص ٢٨)) وتعليقات تهذيب الكمال) ج ٢٠ص٤) -

٩) (الإستيعاب (ج٢ص٢٨)-،

۱۰) (فتح الباري (ج۲ص۵۵)-،

۱۱) (تهذّيب الكمالَ (ج۲۰ص۵)-،

۱۲) (المعجم الكبير (ج۱۷ص ۱۵٤)-،

١٢) (التاريخ الكبير (ج٧ص ٣٦) رقم (١٣٧) وانظر أيضًا للمزيد فتح البارى (ج٥ص٥٥)-

یوه تنبیه دلته د امام بخاری مید دا عبارت (رقال سلیمان: عن شعبه عن عروقهن آب البعد)) ندرا مغالطه او شبه نه دی کیدل پکار چه امام شعبه د حضرت عروه نه روایت کوی، حالانک شعبه د حضرت عروه زمانه نه ده لیدلی، نو د دې عبارت معنی به دا وی چه شعبه په خپل شعبه د خضرت عروه زمانه نه ده لیدلی، نو د دې عبارت معنی به دا وی چه شعبه په خپل روایت کښی د عروقه بن البعد نی روایت کښی د عروقه بن البعد نی نه دې وئیلی.

قوله: تابعه مسدعي هشيم عن حصين عن عروة بن أبي الجعد: مسدد (رمن

هشیم عن صین عن عردة بن آب الجه ۱) به طریق سره د سلیمان متابعت کریدی. د مذکوره عبارت مقصد ددی عبارت مقصد او مطلب دا دی چه د امام بخاری میشد شیخ مسدد بن مسرهد میشد هم د "اب" په اضافی سره د سلیمان متابعت او ملکرتیا کریده. (۲) د باب دریم حدیث د حضرت انس بن مالك میشود دی.

[٢٦٩٦]حَدَّثَنَامُسَدَّدٌحَدَّثَنَايَعُيَى عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَبِي التَّيَّاجِ عَنْ أَنِس بُنِ مَالِكٍ (٣) رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْبَرَكَةُ فِي نَوَاصِي الْحَيْلِ [٣۴٤٥]

تراجم رجال

ا-مساند: دا مسدودبن مسرهد بن مسرهل تراثير دي.

r- یحیی: دا یحیی بن سعیدبن فروخ القطان تمیمی رئالته دی. د دی دواړو حضراتو حالات (رکتاب الإیبان باب من الإیبان آن یحب لاخیه مایحب لنفسه) لاندې راغلی دی. (۴)

٣- شعبه: دا اميرالمؤمنين في الحديث شعبه بن الحجاج عتكى بصرى مُناهد دي. د ده حالات ((كتاب الإيمان بالبسلم من سلم البسلمون من لسائه ويده) لاندې تيرشوى دى. (۵) مالات ((كتاب البسلم بن حميد بصرى مُناهد دي. د ده حالات ((كتاب العلم باب ماكان النبي ملى الله عليه وسلم يتخولهم بالبوعظة والعلم كلاينغ وا) لانذې تير شوى دى. (۶)

١) (عمدة القارى (ج ١٤ ١ ص ١٤٤)-

۲) حواله بالا-

٣) قوله: عن أنس بن مالک رضی الله عنه: الحدیث: أخرجه البخاری أیضًا (ج١ص ٥١٤) كتاب المناقب باب بعد باب سؤال المشركین أن يريهم النبی صلی الله عليه وسلم آية.... رقم (٣٤٤٥) ومسلم كتاب الإمارة باب فضيلة الخيل وأن الخير معقودبنواصيها رئقم ٤٨٥٤) والنسائی كتاب الخيل باب بركة الخيل رقم (٣٤٠١)

٤) (کشف الباری (ج٢ص٢)-

۵) (کشف الباری (ج۱ص۶۷۸)-

۶) (کشف الباری (ج۳ص۱۶۸)-

ي-انس بر مالك: د حضرت انس بن مالك المن حالات ((كتاب الإيهان باب من الإيهان أن يبركيه ما يعب لنفسه)) (١)

نوله: قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: البركة في نواصى الخيل: دَ عضرت انس بن مالك المائي نه روايت دى چه رسول الله خال فرمانيلى دى د اسونو په تندوكني بركت ايخودې شوې دې.

فائده أَدَ باب لاندى ذَكر كريشوى حديث مبارك تقريبًا دَ شلو صحابه كرامو رضوان الله عليهم اجمعين نه مروى دي. (۴)

٣٣-بَأَب: الْجِهَادُمَاضٍ مَعَ الْبَرِّوَالْفَاجِر

دَ ترجمة الباب مقصد: علامه عینی الله فرمائی د دې باب لاندې امام بخاری المسلم د ا خودل غواړی چه دا خودل غواړی چه جهاد به د قیامت پورې باقی وی. (۵)

او علامه ابن التين فرمائى چه د ترجمه مقصد دا دى چه په هر سرى باندى د قيامته پورې جهاد واجب او ضرورى دې. كه نيك وى كه كناهكار. اود دې وجه داده چه د ابوالحسن قابسى په روايت كښى د ترجمه الباب داسى الفاظ راغلى دى: ((الجهاد ماض على البر والفاجر))(۶) خو حافظ صاحب ميناند فرمائى:

(إلا أنه لم يقع في شيء من النسخ التي وقفناً عليها، وقد وجدته في نسخة قديمة من رواية القابس كالجاعة، والذي يليق بلفظ الحديث ما وقع في سائر الأصول بلفظ "مع" بدل "على" (٧)

١) (كشف البارى (ج٢ص ٤)-

٢) (فتح البارى (ج٤ص٥٥) وعمدة القارى (ج١٤ص٩١)-

٣) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٤٤)-

إلامع الدراري (ج٧ص ٢٢٩) وهم: ابن عمر، وعروة، وأنس، وجرير، وسلمة بن نفيل، وأبو هريرة، وعتبة بن عبد، وجابر، وأسماء بنت يزيد، وأبوذر، والمغيرة، وابن مسعود، وأبو كبثة، وحذيفة، وسوادة بن الربيع، وأبو أمامة. غيرب المليكي، والنعمان بن بشير، وسهل ب الحنطلية، وعلى رضى الله عنهم. ذكر هم الحافظ مع تخريج رواياتهم (ج٤ص ٥٤)-

ك) (عمدة القاري (ج ٤ أص ١٤٥)-

ع) (حواله بالأوفتح الباري (ج٤ص٥٤)-

۷) (وفتع الباري (ج۶ص۵۶)-

د کوم خلاصه چه دا ده، زمونږ چه کومو نسخو ته رسیدل شوی دی په هغې کښې په يوا د کوم محارضه چه دا ۱۵۰ رسوم په دا در این شوی یوه زره نسخه ماته ملاوشوی وه نوبه نسخه کښی هم دا خبره نشته. د قابسی روایت شوی یوه زره نسخه ماته ملاوشوی وه نوبه هغی کښی هم د اکثر په شان مع دې نه چه علی او د حدیث الفاظو سره هم دغه مناس دې کوم چه په ټولو اصلو (نسخو) کښې دی چه مم سره وی نه چه علي سره.

حافظ ابن حجر نور فرمائی چه دا ترجمه د حضرت ابوهریره گاتئ د حدیث نه اخذ کر شویده کوم چه امام ابوداود او امام ابویعلی انتیم مرفوعاً او موقوفاً نقل کریدی او دَ رَیْ رواة هم مناسب دی خو دا چه د حدیث په سند کښی مکحول هم دې د چا سماع چه رُ ابوهريره كالثين نه ثابته نه ده. (١)او د امام ابوداود رُحالة د روايت الفاظ دا دى: ((الجهادواجب عليكم مع كل أمير، براكان أوفاجرا...وإن عبل الكبائر) (٢)

قوله: لِقُوْلَ النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْخَيْلُ مَعْقُودٌ فِي نَوَاصِيهَا الْخَيْرُ إِلَى يَزْمِ

الْقِيَـاَمَةِ: ٣) دَ نبي كريم تُلْظُمُ دَ دى ارشاد په وجه چه دَ اسونو تندو سره دَ قيامته پورې خير تړلې دې دا د امام بخاري پيايه ماقبل کښې د ذکر شوې دعوی دليل دې چه هغه په ترجمة الباب كښي دا وئيلي وو چه جهاد به د قيامته پورې باقلي وي. بيا دا دعوي ثابتولود پاره ئې دا پورته ذکر شوې حديث د دليل په توګه ذکر کړو.

دُ استدلال وجه دلته دَ امَّام بخارى رُوَاتِهِ أستدلال دا دي چه نبى اكرم مُلَاظِم به دى مذكور؛ حدیث کښې دا ذکر فرمائیلی دی چه د قیامته پورې د اسونوتندو پورې خیر تړلې دې هغوی عَلِيْكُم تُه دا خِبره معلومه وه چه د هغوی په امت کښې به عادل او ظالم دواړه قسم بادشاهان وی نو د دې حديث په رو د هغوی سره جهاد واجب شو او په دې کښې حضور عُلْظُ دُ دې خبرې تفريق نه دې کړې چه که جهاد امام عادل سره وي نو بيا خو هغه خير دې گنی نو نهٔ دی، نو معلومه شوه چه دا فضل او مرتبه په هر صورت کښی حاصلیدی شی که امام عادل وی که جائر. (۴)

حافظ ابن حجر فرمائي چه د دې حديث نه دا استدلال د ټولونه اول حضرت امام احمدبن حنبل موليد کړې وو . (٥) د ترمذي په روايت کښي دي:

قوله: قال أحمد بر حنبل: وفقُه هذا الحديث أن الجهاد مع كل إمام إلى يوم القيامة: (۶) د دې د پاره چه جهاد د قيامته پورې مشروع دې نوکه امام عادل او نيك وى

۱) (وفتح الباري (ج۶ص۵۶)-

٢) (الحديث أخرجه الإمام أبوداود في سننه كتاب الجهاد باب في الغزو مع أئمة الجور رقم (٢٥٣٣)-

٣) (الحديث مرتخريجه في الباب السابق-

٤) (شرح ابن بطال (ج٥ص٥٦) وفتح البادي (ج٤ص٥٥)-

۵) (وفتح الباري (ج٤ص٥٥)-

٤) (الجامع للترمذي أبواب الجهاد باب ماجاء في فضل الغيل رقم (١٤٩٤)-

کتاب الجهاد (جلداول کر می معد سره یوځائ کیدل او جهاد کول دی او که فاجر او فاسق دی نو هم د هغه سره يوځای کيدل او جهاد کول دی. ځکه که امام عادل وی که فاجر، هغه هم د جهاد د پاره رَآوتلي دې د هغه خرابوالي او فاجر کيدو سره هيڅ فرق نه پريوځي. د کفارو په مقابله کښي چه کوم جهاد مطلوب دې هغه په هرحال کښې کول ضروري دي.

[٢٦٨]حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا زَكَرِيّاءُ عَنْ عَامِرِحَدَّثَنَا عُرُوَةُ الْبَارِقِيُ (١) أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ الْخَيْلُ مَعْقُودٌ فِي نَوَاصِيهَا الْخَيْرُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ الْأَجْرُ وَالْمَغْنَمُ [ر:٢٩٥]

تراجم رجال

-ابونعيم: دا مشهورمحدث ابونعيم فضل بن دكين عام دي.

-- زكريا: دا زكريا بن زائده كوفي مُريني دي، د دي دواړو حالات (ركتاب الإيمان باب نضل من استبرالدينه)) لاندې تيرشوې دی.(۲)

-- عامر: دا مشهور تابعی محدث ابوعمروعامر بن شراحیل شعبی کید دی. د دوی حالات ((كتابالإيبان،ابالبسلممنسلمالبسلبون من لسانه ويدلا)) (٣)

٣-عروة البارقي: دا حضرت عروة بن ابي الجعد اللين دي. د ده حالات په تيرشوي باب کښې راغلی دی. او ((الهارق)) بارق طرف ته منسوب دې چه د یمن د پو غرنوم دې. (۴) تنبیه: د حدیث باب تشریح په تیرشوي باب کښې تیره شویده.

فائده: په حديث باب کښي د دې خبرې زيرې او خوشخبری ده چه اسلام او مسلمان به تر قیامته پورې باقي وي ځکه چه د جهاد بقاء د مجاهدینو بقاء د پاره مستلزم ده او ښکاره خبره ده چه مجاهدین به هم مسلمانان وی (۵)

د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت: د حديث ترجمة الباب سره مناسبت (الى تواصيها الخلا

السبب) کښې دې. (۶) د او نيک کيدل ضروري نه دی: علامه انورشاه کشميري کشت د يوجماعت ټول کسان صالح او نيک کيدل ضروري نه دي: علامه انورشاه کشميري کشت د کومو فرمائی چه د باب په حدیث کښې د یو اصل عظیم طرف ته اشاره ده هغه دا چه د کومو امورو مدار جماعت یعنی ډله وی په هغوی کښې آفرادو ته نشی کتلې ځکه چه په هره ډله

١) (قوله: عروة البارقي الحديث مرتخريجه في الباب السابق-

۲) (کشف الباری (ج۲ص۶۶۹و ۴۷۳)-

۳) (کشف الباری (ج۱ص۶۷۸)-

أ (عمدة القارى (ج ٤ ١ص٥٤١) وفتح البارى (ج ٤ص٥٥)-

۵) (فتع الباري (ج۶ص ۵٤)-

۶) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٤٥)-

منسی نبك او بد هر نسم خلق وی او د داسی جماعت پیدا کیدل هم متعذر دی چد د هنر بول کسان نبكان وی. که چرې دا شرط اولګولې شو چه د جماعت ټول خلق به نيك وی نود

خبر در اعمال به معطل شي او دا مثال خو مشهور دي ((مالايدرك كله، لايترك كله) د دې نه پس دا او کنړنې چه هرکله په جهاد د قبامته پورې باقي وي او دغه د جماعت کا دې رد بو ځان سړي د وس طاقت کار نه دې، او دا هم معلوم دي چه ټول عمر به د خير انمه موجود نه وي، نو آوس خو به يا جهاد معطل كيږي چه نيك امير موجود نه دې او يا به در

بو نیك او فاجر سره باقی وی.

نبی تریم نوالم به حدیث باب کښی دی خبری طرف ته تنبیه اوفرمانیله چه د امراو فسق او فجور ته په کتلو سره د جهاد نه مه منع کیرنی ځکه چه کله الله تعالی د دین کار د فاجرنه هم اخلی ددې د پاره د خلقو حالاتو پسې کيدل اود فاجر د فجور دوجه نه روستو پاتې کيدو تَاخِر راعن المريد المحض) دى او خير محض جهاد دى او دا هم كيديشى چه د جهاد نه د امير رُفسق او فجور دُ وِجه روستو پاتي کيدو سره هم جهاد ختم شي، په دې وجه دُ فاجر اطاعت دَ خير ختمولو اود هميشه د پاره د دلالت طوق په غاړه کښې د اچولو نه اولي دې (١)

٥٥- بَأَب: مَنُ احْتَبَسَ فَرَسًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ

د ترجمة الباب مقصد: دلته امام بخارى مُناتَدَّجهاد في سبيل الله دَپاره دَ اسونوتهِل او تيار ساتلو فضیلت بیانوی. (۲)

قوله: لِقَوْلِهِ تَعَالَمَ وَمِنْ رِبَاطِ الْخَيْلِ: [الانفال: ٦٠] دَ الله دَ دې قول دَ وجه نه او نړلی شوی اسونهٔ

دا دُ سورة الانفال دُ يوآيت حصه ده. دُ كوم چه رومبني كلمات دا دي: (وأعدوالهم ما استطعتم من توةومن رباط الخيل) (٣)

رباط مصدر دې اود مفعول په معني کښې دې.يعني هغه اسونه چه د جهاد په نيت تړلې شوی وی (۴) اود خیل لفظ دَجمهورو په نزد مذکر او مؤنث دواړو ته شامل دې خود

حضرت عکرمه مراه مراه میلان دې طرف ته دې چه دلته هم (راناث الخیل)) مراد دې. (۵) او په دې پورتني آيت مبارك كښې الله تعالى مسلمانانوته د دښمن د مقابلي د پاره د جنگ دَ سامان دَ تياري حکم ورکړې دې او د اسونو تړلو هم ځکه چه اسونه هم د ٔ جنګ دَ آلاتونه

دی د دې نه هم د اسونو تړلو فضيلت او اهميت ثابتيږي. (١)

۱) (فیض الباری (ج۲ص۲۶)-

۲) (عمدة القارى (۱۶ ص ٤٥) وفتح البارى (ج۶ ص ۵۷)-

٣) (الانفال: ٢٩)-

ع) (روح المعانى (ج عص ٤٥ تفسير قوله تعالى: ﴿ومن رباط الخيل﴾ -

۵) (عمدةالقارى (۱۶ص۱۶)-

۶) (حواله بالا(ص۱٤٥)-

[٢٦١٨] حَدَّثَنَا عَلِي بُنِ حَفْصِ حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ أَخْبَرَنَا طَلْحَةُ بْنُ أَبِي سَعِيدِ قَالَ سَمِعْتُ يُعِيدُ الْمَقْبُرِيَّ يُعَدِّثُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ (١) يَقُولُ قَالَ النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ احْتَبَسِ فَرَسًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ إِيمَانًا بِاللَّهِ وَتَصْدِيقًا بِوَعْدِةِ فَإِنَّ شِبَعَهُ وَرِيَّهُ وَرَوْنَهُ وَبَوْلَهُ فِي

تراجم رجال

-على بر حفص: دا ابوالحسن على بن حفص المروزى بُرَيْدٍ دى. (٢) دى دعبدالله بن المبارك بُرِيْدَ نه روايت كوى اودده نه امام بخارى بُرِيْدٍ روايت كړى دى. او فرمائیلی دی ((لقیته بعسقلان سنة سبع عشرة ومئتین)) (۳)

امام یحیی بن معین گریاد فرمائی ((لیسبشم))(۴)

اوحافظ ابن حجر ميني فرمائي ((مقبول))(٥)

او ابوحاتم مونيد هم هغه ثقه كرخولي دي او د هغه نه ئي روايات اخستي دي. (ع) او علامه ابن حبان هم هغه په (كتاب الثقات) كښي ذكر كړيدي. (٧)

په اصحاب سته کښې صرف امام بخاري براي د هغه نه روايت اُخستې دې او هغوي هم د ده نه صرف درې احادیث نقل کړی دی. (۸)

r- ابر المبارك: دا عبدالله بن المبارك بن واضع حنظلي بين دي، د دوى مختصر حالات ((بدهالوحی)) پنځم حدیث لاندې راغلی دی. (۹)

r-طلحه برب ابی سعیں: دا طلحه بن ابی سعید مدنی مصری مُزید دی ابوعبدالملك د هغه کنیت دی، د قریشو مولی دی. (۱۰)

دى د سعيد مقبرى، بكير بن اشج، صخر بن عيله، خالدبن ابى عمران المنظ نه د حديث

١) (قوله: أباهريرة رضى الله عنه: الحديث أخرجه النساني، كتاب الخيل.... رقم (٣٤١٢)-

۲) (تهذیب الکمال (ج۲۰ص۲۱)-

٣) (حواله بالا وتاريخ البخارى الكبير (ج٤ص ٢٧٠)-

أ (تعليقات تهذيب الكمال(م٠٢ص١١٤)-

۵) (النقريب (ص٤٠٠) رقم ٤٧٢٠)-

^ع) (تعليفات تهذيب الكمال (ج ٢٠ ص ٤١٢) -

۷) (كتاب الثقات (ج٨ص٤٩)-

٨) (حاشيه سبط ابن العجمى في الكاشف (ج٢ص٣٨) وفتح الباري (ج٤ص٥٧)-

۹) (کشف الباری (ج۱ص۲۶۲)-

١٠) (تهذيب الكمال (ج١٣٥ ص ٣٩٨) خلاصة الخزرجي (ص١٧٩)-

روایت کوی. او د ده نه حیوة بن شریح، لیث، آبن المبارك او ابن ذهیب نظیم وغیره د حدیث روایت کوی. (۱)

امام احمد مُراث فرمائی ((ماأریههاسا))(۲)

امام على بن المديني ميل فرمائي ((معروف))(٣)

ابوزرعه براد فرمائی ((تعة))(۴)

او امام ابوحاتم بريات فرمائي ((صالح))(٥)

امام ابو داود مرسله فرمائی ((روی عنه اللیث بن سعد، وقال فیه خیرا)) (۶)

ابن حبان المنهد د دوی تذکره په رکتاب الثقات کښې کړیده فرمانی: ((من أهل المدينة، جاء الله مصرمراراً)) (۷)

سبط ابن العجمي ميه فرمائي ((لعة)) (٨)

امام ذهبی مُشِیِّ فرمائی ((وُثِقِ))(۹)

امام بخاری مُولِی د ده نه صرف یو روایت اخستی دی چه په مذکوره باب کښی دی. بلکه د ابوسعید بن یونس وینا ده چه د ده نه صرف هم یو مسند حدیث مروی دی. ((قال أبوسعید بن یونس: ...لمیسند غیره ناالحدیث) (۱۰)

په کال ۱۵۷ ه کښې د دوي وفات شويدې (۱۱) رحبه الله رحبة واسعة.

٣- سعيد المقبري: دا ابوسعد سعيد بن ابوسعيد كيسان مقبرى المنائد دي. د ده حالات (ركتاب الإيبان باب الدين يسم) لاندي راغلى دى (١٢)

۱) (شيوخ او تلامذه د پاره او گورئ تهذيب الكمال (ج۱۳ ص۲۹۸)-

٢) (حواله بالا-

٣) (حواله بالا-

٤) (حواله بالا و خلاصة الخزرجي (ص١٧٩)-

۵) (تهذيب الكمال (۱۳ص۳۹۹)-

ع) (حواله بالا-

٧) (الثقات لابن حبان (ج٤ص٩٩٤)-

٨) (حاشيه سبط ابن العجمى في الكاشف (ج١ص٤٥١)-

٩) (الكاشف(ج١ص٤١٥)-

١٠) (تهذيب الكمال (ج١٣ ص٣٩٩)-

١١) (خلاصة الخزرجيّ (ص١٧٩)و حواله بالا-

۱۲) (کشف الباری (ج۲ص۳۳۶)-

ه-ابوهريرة: دا د رسول الله ترافي صحابى حضرت ابوهريره الله دي. د ده حالات (ركتاب الإيان امور الإيبان) لاندې تيرشوى دى. (١)

نوله: يقول: قال النبي صلى الله عليه وسلم: من احتبس فرسًا في سبيل

الله...: حضرت ابوهريره كالمن فرماني چه نبى كريم كالله فرمانيلي دي كوم سرى چه په الله تعالى باندى ايمان لرلو سره اود هغه د وعدى تصديق كولو سره د الله تعالى به لاركښى اس ترلي اوساته نود هغه اس خوراك څښاك، د هغه خاشنره او د هغه متيازي به د قيامت

په ورځ د هغه د عمل په تله کښې وي.

رُ حديث مطلب دا دي كه يو سري صرفِ هم دَ الله تعالى دَ رضادَ پاره دَ جهاد په نيت اِس اوترى نوده ته ثواب ملاويري اود مغه د خوراك خښاك، خاشنړو او متيازو هم به الله تعالى ئواب ورکوی غرض دا چه د ده به هرڅيز ثواب جوړ شي او د قيامت په ورځ به د جهاد كُونكي أو أس ترونكي په اعمالوكښي وزن كولي شي أو دا وزن به ډير دروند وي.

ذ احتبس صرفى او نحوى تحقيق أحتبس د باب افتعال نه د فعل ماضى مذكر غائب صيغه ده. د کوم معني چه تړل او منع کول دي اود دې د مجرد همدغه معني ده کله دا

بخبله متعدى شي او كله لازم.

اوس معنی دا شوه چه هغه سړې دا اس د خپل ځان دپاره منع کوی او تړلې ساتی که چرې صبا په سرحدونوباندې څه خطره پيدا شي نوچه د ده په کار راشي (۲)

توله: إيمانًا بالله: (طباقا)) په ترکیب کښې مفعول له واقع کیږی او مطلب دا دې چه هغه دا د اس تړلوکوم عمل اختیار کړیدې، هغه خالص دالله تعالی د پاره اود هغه د حکم امتثال او پوره کولو د پاره دې (۳)

قوله: تصديقًا بوعدة به دى احتباس باندى چه كوم ثواب مرتب كيرى د هغى نه عبارت دي، خلاصه دا ده چه د دې سړي عمل د احتباس د الله د حکم په خاي راوړلو آود تواب په نيت سره شوې دې. او هغه داسې چه الله تعالى د احتباس په عمل د ثواب او بدلې كومه وعده فرمائیلی ده، نوچه کوم سړې اس رامنع کړی لکه چه داسې وائی ((صدقت نهادعدتنی)) یعنی (ای اللهٔ) آتا چه د ٔ نواب کومه وعده کړی ده په هغی کښی ته رښتونې ئې. (۴) بیا په دې کلموکښې اشاره د معاد طرف ته ده لکه چه په ایمان کښې د مبداء طرف ته اشاره ده، نو نبی اکرم تلظ دا مختصر کلمات (رایانا بالله وتصدیقا بوعدی) کښی د انسان مبداء او معاد دوآړو طرف ته اشاره کړيده. (۵)

^{() (}کشف الباری (ج۱ص۶۵۹)-

۲) (عمدةالقارى (ج ٤ ١ص ١٤٥) وشرح طيبى (ج ٢ص ٣١٧)-

۲) (مسدة القارى (ج ١٤ ص ٤٤ أ) وشرح طيبي (ج ٧ص ٣١٧)-

ا (حواله بالاً -

۵) (شرح الكرمانی (ج۱۲ ص۱۳۸)-

كتأب الجهاد (جداول)

(شهعه)) د شین په کسره سره دې. د دې معنی ده په کوم څیز چه ځیټه ډکیږی، که هغه واڼه وغیره وی یا څه بل څه څیز. (۱)

((ریّه)) د را ، په کسره اویا ، په تشدیدسره دې یعنی هغه اوبه په کوموچه اس خړوب شی.(۲) ((روثقی) د اسر خاشنه و ته ، و ث و نبلې شي اود دی جمع ارواث ده. (۳)

((روثة)) د اس خاشنړه ته روث وئيلې شي اود دې جمع ارواث ده (۳) او مقصد ترينه دلته ثواب دې دامطلب نه دې چه د اس خړانچه او متيازې به په تله د اعمالوکښې تلي. (۴)

په اسونو د خوړلو څکلو فضائل د حديث باب په شان نور ډير احاديثوکښې په اسونو خوړلو څکلو اوپه هغې د خرچ کولو فضيلتونه وارد شوي دي.

ابن سعد په (طبقات) کښې د حضرت عریب اللي دا حدیث نقل کړیدې چه په اسونو خرځ کونکو مثال د هغه سړی په شان دې چاچه خپل لاس د صدقاتو دپاره کولاؤ کړې وی چه هغه نه بندوی اود هغه اس متیازې او یا خاشنړه به د قیامت په ورځ د الله تعالی په نزد د مشکو د خوشبو په شان وی.(۵)

په ابن ماجه کښی د حضرت تمیم الداری الله عدیث شریف دی چه رسول الله کله فرمائیلی دی چه کوم سړی د الله تعالی په لار کښی یو اس اوتړلو بیا ئی د کیا وغیره په خپلو لاسونو تیاره کړه نو هغه ته به د هرې یوې دانې په بدله کښې الله تعالی یو نیکی ورکوی. (۶)

دَ حديث فوائد: دَ حديث باب نه يو څو فائدې مستنبط شوی دی:

آ د ضرورت او حاجت په وخت کښې د یو مستقذر او ګنده څیز ذکر کولوکښې هیځ
 بدییت نشته لکه چه نبی کریم گلی دلته د خاشنړو او متیازو ذکر کړیدې. (۷)

صرف په نيت او اراده سره هم اجر ورکولي شي. (٨)

﴿ ابن ابی جمرة ﷺ فرمائی چه د حدیث باب نه دا خبره مستفاد کیږی چه په دې کښې ذکر کړیشوی حسنات به بهر حال مقبول وی ځکه چه په دې کښې نص د شارع موجود دې



۱) (عمدة القارى (ج 2 ۱ ص ۱۳۶) وشرح القسطلانى (ج 2 ص 2) -

٢) حواله بالا-

۳) (مختار الصحاح مادئ روث-

٤) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٣٤) وفتح البارى (ج ٤ص ٥٧)-

۵) (عزاه القسطلاني إلى ابن سعد (ج۵ص ۷۰) وأخرجه المنذري في الترغيب (ج٢ص ٢٤٧)-

۶) (سنن ابن ماجه، أبواب الجهاد بآب ارتباط الخيل في سبيل الله رقم (۲۷۹۱) وانظَر أيضًا إرشاد السادى للقسطلاني (ج۵ص۷۰-۷۱)-

٧) (شرح ابن بطال (ج٥ص٥٩) وعمدة القارى (ج١٤ ص١٣٥)-

٨) (حراله بالا-

په خلاف د نورو حسناتو چه هغه کله قبليږي هم نه نو په ميزان کښې به هم د ثواب په نيت نه راځی (۱)

« حديث د ترجمة الباب سره مطابقت د حديث شريف ترجمة الباب سره مطابقت او مناسبت ښکاره دي. (۲)

ئ اس د ترلی ساتلو فضیلت په باب کښې ذکر دې او په حدیث کښې په ده باندې د خوړلو ځکلو او د ده په فضلاتو باندې ثواب بيان کړيشوې دې.

٣٠-بَأَب: اسْمِرالْفَرَسِ وَالْحِمَـارِ

دَ ترجمة الباب مقصد امام بخاری میلی به دی باب کښی داښائی چه د اس او خر نوم کیخودل جائز دی او مشروع دی په دې کښې هیڅ حرج او خرابي نشته (۳)

أ نوم ايخودلو حكمت به اس او خر باندي د نوم كيخودلو حكمت دادي چه فرس او حمار اسم جنس دې په دې وجه د دوی نومونه کیخودل پکار دی. دې د پاره چُه دې د خپلو نورو هم جنسو نه ممتاز او جدا وي، په پیژندګلوکښې څه ګران نه وي، لکه څنګه چه په انسانانوکنی افراد جنس نه ممتاز کولود پاره نومونه کیخودلی شی (۴)

بیا دا جوازاو مشروعیت صرف د فرس او حمار د پاره نه دې بلکه نور څاروي په کښې هم

شامل دی.

[٢٦٨] حَدَّثَنَا هُحَمَّدُ بُنُ أَبِي بَكْرٍ حَدَّثَنَا فُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ أَبِي حَازِمِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بُنِ أَبِى قَتَادَةً عَنُ أَبِيهِ (ه) أَنَّهُ خُرَجَ مَعَ النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَعَلَّفَ أَبُوقَتَادَةً مَعَ بَعْضِ أَصْحَابِهِ وَهُمُ هُوْمُونَ وَهُوَ غَيْرُ هُوْمِ فَرَأُوا جِمَارًا وَحْشِينًا قَبْلَ أَنْ يَرَاهُ فَلِمَا رَأَوْهُ تَرَكُوهُ حَتَى رَآةُ أَبُو قِتَادَةً فَرَكِبَ فَرَسًا لَهُ يُقَالِ لَهُ الْجَرَادَةُ فَسَأَهَمُ أَنْ يُنَاوِلُوهُ سَوْطَهُ فَأَبُوا فَتَنَاوَلَهُ فَحَمَلَ فَعَقَرَهُ ثُمَّ أَكَلَ فَأَكَلُوا فَنَدِمُوا فَلَمَّا أَدُرَكُوهُ قَالَ هَلِ مَعَكُمُ مِنْهُ شَيْءٌ قَالَ مَعَنَا رِجُلُهُ فَأَخَذَهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَكَّلَهَا [ر:١٢٥]

تراجم رجال

ا- هجمد بن ابي بكر: دا محمد بن ابوبكر بن على بن عطاء المقدمي بريد دي. (ع)

۱) (فتح الباری (ج۶ص۵۷)-

۲) (عمدة القارى (ج ۱ ۱ ص ۱۳۶)-

۳) (فتح الباري (ج۶ص۵۸)-

أ (حواله بالا (عمدة القارى (ج ١٤ ١ص١٣٤)-

٥) (قوله: عن أبيه: الحديث مرتخريجه في كتاب جزاء الصيد، باب إذا صاد الحلال فأهديللمحرم الصيدأكله-

٤) (دَ دوى حالاتودَ پاره اوكورئ كتاب الصلاة باب المساجد التي على طرق المدينة....-

عشف الباري کتاب الجهاد (جدارل)

او همدغه صحیح دی، د ابوعلی جیانی بینا و پنا ده چه د ابوزید په نسخه کښی محمد بن بکر په نیر دی او هغه غلط دی ځکه چه د امام بخاری بینا په شیخانو کښی د محمد بن بکر په نور څوك شیخ نشته (۱)

r-فضيل بر سليمان : دا ابوسليمان فضيل بن سليمان نميرى بصرى بَيْنَ دې. (۲) م-ابوحازم: دا مشهور زاهدابوحازم سلمه بن دينارمولى الاسودالمدنى بَيْنَ دې. (۳) م-عبدالله: دا عبدالله بن ابى قتاده السلمى بَرَيْنَ دې.

۵-ابوقتاده: دا مشهور صحابی رسول گان حضرت ابوقتاده حارث بن ربعی گان دې (۴) تنبیه: د حضرت ابوقتاده گان دا حدیث خپل مکمل تشریحاتو سره د ((کتاب جزام المید)) په شروع کښی تیرشویدی.

شروع کښې تيرشويدې. په دې باب کښې حضرت امام بخاري ﷺ دا حديث صرف د دې د پاره ذکر کړيدې چه په دې کښې د حضرت ابوقتاده د اس نوم ذکر دې (۵)

قوله: فركب فرسًا يقال لها: الجرادة: نو هغه په يو اس سور شو، هغه اس ته به ني "جراده" وثيل.

نواوس خو به یا دا وئیلی شی چه د دغه اس دوه نومونه وو، جراده او حزوه. او یا دا اووئیلی شی چه په دې کښې یو غلط او تصحیف دی. د بخاری شریف په روایت کښې چه کوم نوم ذکر دی هم هغه معتمد او صحیح دی. (۷)

د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت: د حديث شريف ترجمة الباب سره مناسبت او مطابقت د حديث په دې جمله کښې دې: ((نرمک نرساله، يقال لهاالجرادة)) (۸)

۱) (فتح الباری (ج۶ص۹۹) وعدة القاری (ج ۱ ۱۵۷۵) -

٢) (دَ دوى حالاتود باره أو كورى كتاب الصلاة باب المساجد التي على طرق المدينة....-

٣) (د دوى حالاتو د پاره او كورى كتاب الوضوء باب غسل المرأة أباهاالدم عن وجهه_

٤) دُ حضرت قتاده أود هغه د خوى د حالاتود پاره او كورى كتاب الوضوء باب النهى عن الاستنجاء بالبيين

۵) (فتع البارى (ج۶ص۵۸)-

ع) (سيرة ابن هشآم (ج٣ص٢٩٤) غزوة ذي قرد-

٧) (فتح الباري (ج٤ص٥٩)-

۸) (عمدة القارى (ج ١٤٧ ص ١٤٧)-

Y9 V/

[٢٠٠١] حَذَّنَا عَلِي بُنُ عَبْدِ اللَّهِ بُنِ جَعْفَرِ حَدَّنَا أَمَعْنُ بْنُ عِيسَى حَذَّنَا أَبَي بْنُ عَبَاسِ بْنِ سَمْلِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّةٍ (١) قَالَ كَانَ لِلنَّمِيْ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَامِطِنَا وَرَسْ بُقَالَ لَهُ اللَّحَيْفُ قَالَ أَبُوعَبْدِ اللَّهِ وَقَالَ بَعْضُهُمُ اللَّعَيْفُ

, تراجم رجال

-على برب عبدالله برب جعفر: دا مشهور امام حدیث امام جرح وتعدیل حضرت علی بن عبدالله ابن المدینی مربی دی. د دوی حالات ((کتاب العلم باب الفهم فی العلم)) لاندی راغلی (۲)

۲-معرب برب عيسي: دا ابويحيى معن بن عيشى بن يحيى القزاز المدنى يميني دي. (۳)
 ۲- أبي برب عباس: دا أب بهم الهمزة وفتح اباء — ابن عباس بن سهل بن سعد الاتصارى الساعدى المدنى مسلمة دي. د عبد المهيمن بن عباس رور دي. (۴)

دى د خپل والد عباس او أبوبكر بن محمد بن عمرو بن حزم المنظم نه روايت كوى اود دوى نه زيد بن حبا ، عتيق بن يعقوب الزبيرى او معن بن عيسى قزاز المنظم وغيره د حديث روايت كوى. (٥)

امام بخاری او امام نسائی شیخ فرمائی ((لیس بالقوی)) (۶)

امام احمد ميلي فرمائي ((منكم الحديث))(٧)

امام یحیی بن معین المراث فرمائی ((ضعیف)) (٨)

امام عقيلي كيلي ((له احاديث لايتابع على صحمنها)) (٩)

او حافظ ساجی او ابو العرب قیروانی هم ((أبی)) ضعیف گرخولی دی (۱۰) البته بعض حضرات ائمه مثلاً امام دارقطنی، ابن حبان او امام حاکم شیخ هغه ته ثقه او قری وئیلی دی. (۱۱)

١) (قوله: أبي بن عباس بن سهل عن أبيه عن جده: الحديث هذا من إفراده عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٤)-

۲) (کشف الباری (ج۳ص۲۹۷)-

٣) (دَ دوى حالاتودَ باره أو كورى كتاب الرضوء باب مايقع من النجاسات في السمن والماء-

٤) (تهذیب الکمال(ج٢ص٢٥٩)-

٥) (حواله بالا-

ع) (تهذيبُ الكمال (ص٢٥٩)-

٧) (حواله بالا(ص ٢٤٠)-

۸) پورتنئ حواله)

١) (كتاب الضعفاء الكبير (ج١ص١٥)-

۱۰) (تعلیقات تهذیب الکمآل (ج۲ص۲۶۰)-

١١) (حواله بالا-

بهرحال ابي بن عباس د مضبوطي درجي راوي نه دې لکه څنګه چه تاسو اوکتل چه ائ انمه د جرح او تعديل په ده باندې جرح كړيدې.

خودلته دا خبره یاد ساتل پکار دی چه امام بخاری مجاهد د دې باب صرف هم دا یو حدیث اخستي دې او هغه هم د احكامو متعلق نه دي.

دونمه خبره دا ده چه د هغه نه د آمام بخاري مناه نه علاوه امام ترمذي او امام ابن ماجه وي هم روایت نقل کړي دی. او داهم د یو قسم توثیق او تعدیل دی (۱) نو که دې ثقه یا ثبت اُ هم وي ليكن حسن الحديث ضرور دي او د احتجاج قابل دي نو علامه دهبي أيني فرمالي ((أي وإن لم يكن بالثبت، فهرحسن الحديث)) (٢)

او ابن عدى مُرائى ((وهويكتبحديثه، وهوفي دالمتون والأسانيد))(٣)

٣-عباس بري سهل: دا عباس بن سهل بن سعد الساعدى المياه دي. (۴)

٥- سكول بر سعى: دا مشهو صحابى حضرت سهل بن سعدمالك الساعدى انصارى

قوله: قال:كان للنبي صلى الله عليه وسلم في حائطنا فرس يقال

له: اللحيف: حضرت سهل بن سعدالساعدى المنظ فرمائى د نبى كريم ترفي زمون به باغ كښى يو اس وو كوم ته به چه ئى "اللحيف" وئيلي.

مطلب دا دې چه د نبی کريم گه که اس د تربيت، پالنې او تړلو خای زمون باغ وو. (۶) «حائط» دَ کهجورو باغ ته وائي خوچه دَ هغې ديوالونه هم وي اودَ دې جمع حوائط ده، بيا

مطلق ديوال او جدال ته هم حائط وئيلى شى. آ د لحيف ضبط او معنى دلته د باب په روايت كښي لحيف حاء مهمله او تصغير سره دى. ابن قرقول مُرَامِينَ وائي چه دَ ابن سراج مُرَامِينَ نه دا كُلمه دَ رَغيف په وزن نقل كريشويده يعني لحيف، حافظ شرف الدين دمياطي والله هم دا راجح الرخولي دي او دَ علامه هروي الحيف همدغه رائي ده او هغه وائي چه د هغه اس لکئي اوږده وه نو ((کانه يحلف الأرښ پننهه))، لکه چه هغه به خپله لکئي په زمکه راښکله او تلوبه او په خپله لکئي به ئي زمکه پټه کړې وه (۷₎ په دې وجه ده ته الحيف وليلې شوی دی. (۸₎

۱) (هدی الساری (ص۷۸)-

۲) (ميزان الاعتدال(ج ١ ص ٧٨)-

٣) (الكامل لابن عدى (ج ١ص ٤٢١)-

٤) (دَ دوى دَ حالاتودَباره أو كورئ كتاب الزكوة. باب خرص التمر -

۵) (دَ دُوَى دَ حالاتودَباره أوګوري کتاب الوضوء باب غسل المرأة أباها الدم عن وجهه۔

۶) (فیض الباری (ج۳ص۲۳)-

٧) (النهاية لابن الأثير الجزرى (ج ٤ ص ٢٣٨) ولسان العرب (ج ٩ ص ٣١٥)-

۸) (فتح الباری (ج۶ص۵۹) وعمدة القاری (ج ۱۲ص۱۳۷)-

توله: قال أبوعبدالله: وقال بعضهم: اللخيف: ابوعبدالله وائي چه بعضو لخيف ونيلي دي.

مطلب دا دې چه بعض حضراتو دا لفظ خا، معجمه سره لخيف نقل کړيدې. په دې کښې هم هغه دوه صورتونه بيان کړيشوي دي کوم چه په لحيف کښې تيرشو چه يا خو مصغر دې يا په وزن د رغيف سره مکبر. (١)

أو دا د عبدالمهيمن بن عباس بن سهل مُولِين روايت دى چه د ابى بن عباس مُلِين رور دى. ابن منده مُولِين هم دا روايت نقل كريدى د كوم الفاظ چه دا دى: ((كان لرسول الله صلى الله عليه وسلم عند سعدين سعد والد سهل ثلاثة أفهاس، فسبعت النبى صلى الله عليه وسلم يسيِّيهن لِواز، وقريب، واللخيف) (٢)

خو د سبط ابن الجوزی الله وینا ده چه امام بخاری الله تصغیر او خاء معجمه سره مقید کړې دې اودغه شان ابن سعد الله هم د واقدی الله نه نقل کړی دی

لیکن څنگه چه پورته تیرشو چه اکثرو حضراتو دې ته ترجیح ورکړیده چه دا د رغیف په وزن مکبر او حاء مهمله سره دې او همدغه معروف دی. ابن الاثیر مُراید فرمائی ((دالمعروف بالحاء المهملة)) (۳) او قاضی عیاض مُراید فرمائی ((دبالأول ضهطناعن عامة شیوخنا)) (۴)

د دې لفظ دريم صورت ابن الاتير (۵) او صاحب (البغيث) دا بيان کړيدې چه دا جيم سره لجيف دې صاحب د (البغيث) بيا فرمائي چه چرې جيم سره دا لفظ صحيح وي نود دې معنى د هغه غشى ده د کوم مخ چه خور شوې وي نولکه د هغه اس د لجيف سره د هغه د تيز والى موسوم کړې شو. (۶)

او دا اس د امام ابن سعد عَنَالَةُ مطابق نبى كريم كُلُمُ ته ربيعه بن ابى البراء مالك بن عامر العام ي د هديه به تم كه بيش كريم و ٧٠)

العامرى دَ هديه په توګه پيش کړې وو. (۷) د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت: دَ حديث ترجمة الباب سره مناسبت ښکاره دې. ځکه چه دَ راوى دا قول ((فرس يقال له: اللحيف)) دَ امام بخارى رُواليَّ دُقول ((اسم الغرس)) مطابق دې. (۸)

۱) (فتع الباري (ج۶ص۵۹)-

٢) (حواله بالا واللَّخف: الضرب الشديد، لسان العرب (ج ٩ص٣١٥)-

٢) (النهاية (ج ٤ ص٢٣٨)-

ا (شرح القسطلاني (ج٥ص٧٧)-

۵) (النهاية (ج۵ص لا ۲٤)-

ع) (فتح الباري (ج٤ص٥٩)-

٧) (الطَّبقات الْكبير لابن سعد (ج١ص٤٩)-

٨) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ٤٧)-

كشف البارى روي المحاد (جلداول)

[١٠٠] عَدْثَنِي إِسْمَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ سَمِمَ يَغْنَى بْنَ آذَمَ حَدَّثَنَا أَبُوالْأَخُوصِ عَنْ أَبِي إِسْمَاقُ عَنْ عَمْوبْ مَيْمُونِ عَنْ مُعَاذِرَضِ اللَّهُ عَنْهُ (١) قَالَ كُنْتُ دِدْفَ النّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْه وَسَلَمَ عَلَى حِمَارِ بُقَالُ لَهُ عُفَيْرٌ فَقَالَ يَا مُعَاذُ هَلَ تَدْرِى حَقَّ اللّهِ عَلَى عِبَادِهِ وَمَا عَقْ الْعِبَادِ عَلَى اللّهِ قُلْتُ اللّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ قَالَ فَإِنْ حَقَّ اللّهِ عَلَى الْعِبَادِ أَنْ يَعْبُدُ وهُ وَلا يُشْرِكُ اللّهِ عَلَى الْعِبَادِ أَنْ يَعْبُدُ وهُ وَلا يُشْرِكُ إِنَّ حَقَّ اللّهِ عَلَى الْعِبَادِ أَنْ يَعْبُدُ وهُ وَلا يُشْرِكُ إِنْ حَقَى اللّهِ عَلَى اللّهِ أَوْلا أَنْفِي كُولُو اللّهِ عَلَى اللّهِ أَوْلا أَنْفِي وَلَا اللّهِ أَوْلا أَنْفِي وَلَا اللّهِ أَوْلا أَنْفِي لَهُ اللّهِ أَوْلا أَنْفِي لَا اللّهِ أَوْلا أَنْفِي اللّهِ أَوْلا أَنْفِي وَلَيْ اللّهِ أَوْلا أَنْفِي اللّهِ أَوْلا أَنْفِي اللّهِ أَوْلا أَنْفِي وَلَا اللّهِ أَوْلا أَنْفِي اللّهِ أَنْهُ أَنْفُولُ اللّهِ أَوْلا أَنْفِي اللّهُ اللّهُ أَوْلا أَنْفِي أَنْفُولُ اللّهُ أَوْلا أَنْفِي اللّهُ عَلَى اللّهُ أَوْلا أَنْفِي أَلَى اللّهُ أَوْلا أَنْفِي اللّهُ اللّهُ أَنْفُولُو اللّهُ عَلَى اللّهُ أَنْفُولُ اللّهُ أَنْهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ أَنْفُولُو الْعِبَادِ عَلَى اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ اللللّهُ اللللّهُ اللللّهُ الللّهُ الللّهُ اللللّهُ اللللّهُ اللللّهُ اللللّهُ الللللّهُ الللّهُ الللّهُ الللللّهُ الللّ

تراجم رجال

نو علامه كرمانى (۴) علامه عينى (۵) حافظ قسطلانى (۶) او حافظ جمال الدين مزي (۷) مَنْ رائى داده چه ابوالاحوص نه مراد سلام بن سليم كوفى ضبعى مُنْ و دى او هم دغه د جمهورو رائى ده.

ب کرن حافظ ابن حجر مینی فرمائی چه ابوالاحوص دعمار بن رزیق کنیت دی. نور فرمائی چه ما د یحیی بن آدم شیخ ابوالاحوص سلام بن سلیم گنړلو او هم په دې د مزی (۸) کلام هم

١) (قوله: عن معاذ رضى الله عنه: الحديث أخرجه البخارى أيضًا كتاب اللباس باب إردداف الرجل خلف الرجل رقم (٥٩۶٨) وكتاب الاستئذان باب من أجاب بلبيك وسعديك رقم (٤٢٤٧) وكتاب الرقاق بن من جاهد نفسه فى طاعة الله رقم (٤٥٠٠) وكتاب التوحيد باب ماجاء فى دعاء النبى صلى الله عليه وسلم أمنه إلى توحيدالله تبارك وتعالى رم (٧٣٧٣) ومسلم كتاب الإيمان باب الدليل على أن من مات على التوحيد دخل الجنة قطعاً رقم (٤٤١) والترمذي أبواب الإيمان باب ماجاء فى إفتراق هذه الأمة رقم (٢٥٤٣) وأبواؤه كتاب الجهاد باب فى يسمى دابته رقم (٢٥٥٩)-

۲) (کشف الباری (ج۳ص۲۹)-

٣) (دَ دوى دَ حالاتودَ پاره أوګورئ کتاب الغسل باب الغسل بالصاع ونحوه۔

٤) (شرح الكرماني (ج٢ص٢٩)-

۵) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ٤٨)-

۶) (شرح القسطلانی (ج۵ص۲۲)-

٧) (تحفة الأشراف (ج٨ص١١٤)-

٨) حواله بالا-

دال دى خو هم دغه حديث امام نسائى ميني (١) ((عن محبد بن عبدالله بن البهارك البغودي عن يعيه ١٥ آدم) په طريق باندې نقل کړيدې. په دې کښې د يحيي بن آدم شيخ عمار بن رزيق دي او امام بخاري روايت (ريعيه بن آدم من أبي الأحوص من أبي إسحاق)) په طريق سره نقل کړې دې او د عمار بن رزيق کنيت هم ابوالاحوص دې. ((ولم ارمن د همل ذلك)) (٢) دا خو د حافظ ابن حجر رائي شوه خو همدغه روايت امام مسلم (٣) او امام ابوداود (۴) المتعلم هم نقل كړيدې. د امام مسلم شيخ ابوبكر بن ابى شيبه او امام ابوداودهناد بن السرى دى او دا دواړه ((عن أبى الأحوص عن أبى إسحاق)) په طريق سره كوى. خو دلته د مسلم او ابوداود په روايت کښې د عمار بن رزيق په ځائ سلام بن سليم متعين دې. خُكُه جه ابوبكر بن ابي شيبه او هناد بن السرى ملاقات د سلام بن سليم نه خو ثابت دي، البته دُ عمار بن رزیق نه نه دې. (۵) خوعلامه عینی گُره د حافظ صاحب تردید کولو سره فرمائی:

((أبوالأحوص: اسمه سلامرين سُليم الحنفى الكوفى، قيل: أبوالأحوص هذاعمارين رنميت الضبى الكوفى، قلت:

لايمح هذالأن عباراهذا مباانفردبه مسلم، ولم يخرج له البخارى)(ع)

د علمائی رجال المنظم د صنیع نه همدغه معلومیری چه دلته سلام بن سلیم مراد دی نه چه عمار بن رزيق، ځکه چه په دې کښې اکثرو حضِراتو عمارِ بن رزيق د افراد بخاري نه نه دې شميرلي. (٧) په دې وجه دا معلوميږي چه دې د بخاري د افرادو نه نه دې.

بهر حال که مراد چرې د ابوالاحوص نه سلام بن سليم کياني دې نو د هغه حالات خو تيرشو (٨) اوكه مراد ترينه عمار بن رزيق وي لكه خناكه چه د حافظ صاحب خيال دي نومون دلته دَ هغه مختصر تذكره نقل كوو.

قوله: عماربر رزيق: دا عمار بن رزيق -بنم الراء وفتح الزاى مصغرا - النبى الكوني التبيى من د ده کنیت ابوالاحوص دی. (۹)

١) (سنن النسائي الكبرى (ج٣ص٤٤) كتاب العلم باب الاختصاص بالعلم قوما.... رقم (٥٨٧٧)-

۲) (فتح الباري (ج۶ص۵۹)-

٢) (صحيح مسلم كتاب الإيمان باب الدليل على أن من مات على التوحيد رقم (١٤٤)-

^{؛) (}سنن أبي داؤد كتاب الجهاد باب في الرجل يسمى دابته رم (٣٥٥٩)-

۵) (فتح الباری (ج۶ص۵۹)-

۶) (عمدة القارى)ج ٤ ١ص٨ ٤ ١)-

۷) (انظر تهذیب آلکمال (ج۲۱ص۱۸۹) ومیزان الاعتدال (ج۳ص۱۶۶) والکاشف (ج۲ص۰۵) وتهذیب التهذيب (ج٧ص٠٠) والتقريب (ج١)-

٨) (دَ دويَ دَ حالاتودَ پاره اوګورئ کتاب الأذان باب الالتفات في الصلاة -

٩) (تهذيب الكمال (ج١ص١٨٩)-

دى دابواسحاق السبيعى، اعمش، منصور، عبدالله بن عيسى، بن عبدالرحمن بن ابى ليلى، محمد بن عبدالرحمن بن ابى ليلى، محمد بن عبدالرحمن بن ابى ليلى، عطاء بن السائب، مغيره بن مقسم، فطر بن خليفدار نورو محدثينو المنظم نه د حديث روايت كوى.

و دوی نه روایت کونکوکښی آبوالجواب احوص بن جواب، ابوالاحوص سلام بن سلیم الکوفی، ابواحمد الزبیری، زید بن احباب، عبثر بن قاسم، یحیی بن آدم، معاوید بن هشام او نور محدثین حضرات شامل دی. (۱)

امام یحیی بن معین او امام ابوزرعه بین فرمائی ((ثقة)) (۲)

لوین رئید فرمائی چه ماته ابواحمد الزبیری اووئیل ((لواختلفت الیه لکفاك أهل الدیا)) (۳) که ته هغه له تلی راتلی نو هغه (عمار بن رزیق) به ستا د پاره د اهل دنیا د طرف نه کافی شی. یعنی بل چاله به د تلو هډو ضرورت نه وی.

امام احمدبن حنبل ميد فرمائي ((كانمن الأثهات))(۴)

امام ابن المديني ميل فرمائي ((تقة)) (٥)

ابوبكر البزار ميل فرمائي ((ليسهاسهه)) (ع)

ابوحاتم وكالله فرمائي ((لاباسهه))(٧)

نسائی ای فرمائی ((لیسبهباس)) (۸)

او ابن حبان د هغه ذکر په (کتاب الثقات) کښې کړيدې. (۹) سبط ابن العجمي سي هم د هغه ثقه ګرځولې دې. (۱۰)

دغه شان حافظ ذهبی مُشَالًا فرمائی ((لَعَة))(۱۱)

د هغوى انتقال په كال ۱۵۹ ه كښې شويدې (۱۲) رحبه الله رحبة واسعة.

١) (دَ شيوخو او تلامذه دَ تفصيل دَ پاره او گورئ تهذيب الكمال (ج٢١ص١٨٩ -١٩٠)-

۲) (تاریخ عثمان بن سعید الدارمی(ص۱۵۹)-

٣) (الكاشف (ج٢ص٥٠)-

٤) (تهذيب التهذيب (ج٧ص١٠١)-

٥) (حواله بالا-

۶) (حواله بالا-

٧) (تهذيب الكمال (ج ٢١ص ١٩٠)-

٨) (حواله بالا-

٩) (الثقات لابن حبان (ج٧ص٢٨۶)-

١٠) (حاشية الكاشف لابن العجمي (ج٢ص٥٠)-

١١) (ميزان الاعتدال (ج٣ص ١٩٤)-

۱۲) (الكاشف (ج٢ص٥٠)-

اسحاق: دا ابواسحاق عمرو بن عبدالله بن عبيد سبيعي كلط دي. د دوي حالات (۱) کتاب الإیدان باب الصلاقامن الإیدان) لاندی تیرشوی دی.

۵- عمروبر میمون: دامشهورتابعی عمروبن میمون الاودی ابویحیی کوفی میلید دی(۲) - معاذ: دا ممتاز انصاری صحابی حضرت معاذبن جبل بن عمرو اللي دی. د دوی مختصر حالات (ركتاب الإيمان باب الإيمان وقول النبي صلى الله عليه وسلم: بني الإسلام على عبس)> لاندې تيرشوي دي. (۳)

قوله: قال: كنت ردف النبي صلى الله عليه وسلم على حماريقال له: عفير: حضرت معاذ بن جبل المائز فرمائي چه زه د نبي كريم نظام شاته په يو خر باندې چه هغې ته عفير وائي سوروم. ((ردف)) د راء په کسراودال په سکون سره دي.

جوهري فرمائي چه «ردف» د مرتدف په معني کښې دې يعني هغه سړې چه سور پسې سور وی اوددی جمع ((أرداف)) ده. (۴)

«مفهر» دَعين به ضمه اوفاء به فتح سره دراعنی»تصغیردی. لکه چه د اسود تصغیرسید دی (۵) او قاضی عیاض دا لفظ د عین به ځائ غین سره ضبط کړیدې چه وهم دې ځکه چه اکثر حضراتو دا په عين سره نقل کړيدې. (ع)

او ((هفیر)) دُ ((هفها)) نه مشتق او ماخوذ دې د دې معنی سُوربخن سپین رنګې دې یعنی د خاورې د رنګ په شان، د دې خر نوم نی ((عفیر)) ځکه کیخودې وو چه د دې رنګ سربخن

بیادا خبره باندی پوهه شنی چه دلته د باب په روایت کښی د هغه خر نوم ((عفلار)) راغلی. دغه شان په مسلم شريف (کتاب الإيبان) (۸) اود ابوداؤد (کتاب الجهاد)(۹) په روايت کښې هم د ده نوم هم ((عفیر)) ذکر دی. لیکن علامه خطابی گُولی د امام واقدی مُکلی (۱۰) نه علامه

۱) (کشف الباری (۲۲ س۳۷۰)-

٢) (دَ دوى دَ حالاتودَ باره او كورى كتاب الوضوء باب إذا ألقى على ظهر المصلى قذر أوجيفة ...-

۳) (کشف الباری (ج۱ص۶۲۸)-

٤) (عمدة القارى (ج٤١ص٨٤١) ولسان العرب (ج٩ص١١٥)-

۵) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٤٨) -

 $^{^{(9)}}$ (عمدة القارى $^{(9)}$ ا $^{(9)}$ ا $^{(9)}$ ا $^{(9)}$ النووى على مسلم $^{(9)}$

 $^{(4.81)^{-1}}$ (فتح الباري (ج $(3.00)^{-1}$)وشرح ابن بطال (ج $(3.00)^{-1}$) (فتح الباري (ج $(3.00)^{-1}$) (صحيح مسلم كتاب الإيمان باب الدليل على أن من مات على التوحيد دخل الجنة قطعا رقم $(3.81)^{-1}$

٩) (سنن آبي داؤد كتاب الجهاد باب في الرجل يسمى دابته رقم (٢٥٥٩)-

۱۰) (قوله ابن بطال (ج۵ص۶۰) وهو في معالم السنن للخطابي (ج۳ص۳۰) وليس فيه ذكر الواقدي. وصنيع الخطابي دال على أنه قائل بكونهما واحداً-

طبری بیند (۱) او شیخ ابو محمد لونی بیند (۲) د دغه خر نوم ((یعفود)) نقل کریدی. طبری بیند (۱) اوس اختلاف دا پیدا شو چه آیا دا هم یو خر دی که دوه جدا جدا خرونه دی. د ابن عبدوس بیند او ابن القیم بیند خیال دا دی چه دا هم د یو خر دوه نومونه دی. او شرف الدین دمیاطی بیند فرمانی چه دا جدا دوه خرونه وو. حضور ناهم ته ((عفیر)) شاه مقوقس په هدیه کنی ور کړی وو او دوئم یعنی ((یعفود)) فروه بن عمرو حضور ناهم ته د هدیه په توګه پیش کړی ور او بالعکس (۳)

حافظ صاحب هم دا راجح ګرځولې دې چه دا دوه خرونه وو، فرمانی ((دهوغیرالعمارالنی یقالله:یعغور)) (۴)

((يعغور)) په اصل کښې د هوسنې د بچې نوم دې اودې دونم خر ته ((يعغور))د هغه د تيزوالي په وجه وئيلې شوې دې څنګه چه د هوسنې بچې په منډه کښې تيز وي.(۵)

دَ امام واقدى مُرَامِيْهِ وينا ده چه دا ((يعفور)) دَ نبى مَالِئِهِا دَ حجه الوداع نه په واپسنى باندې هلاك شوې وو اوهم داعلامه نووى مُرَامِيْهِ دحافظ ابن الصلاح په حواله راجح ګرځولې دې (۶) خود سهيلى وينا ده چه په كومه ورځ د رسول الله تَالِيْمُ وفات اوشوهم په هغه ورځ ((يعفود)) خپل ځان په يوكوهى كښې ورګذارولو سره هلاك كړې وو. (۷)

د حدیث باب نور تشریحات ((کتاب العلم باب من عض بالعلم قوما دون قوم) لاندی تیرشوی دی. د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت: د حدیث باب ترجمه الباب سره مناسبت واضح دی چه

دَ حدیث شریف په دې جمله کښې دې: ((یقال له:عنین) (۸)

[٢٤٠٠] حَدَّ ثَنَا هُحَمَّدُ بُنُ بَشَادِ حَدَّ ثَنَا غُنُدَرْ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ سَمِعْتُ قَتَادَةً عَنُ أَنِس بُنِ مَالِكِ (١) رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ كَانِ وَسَلَمَ فَرَسًا لَنَا لَهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَرَسًا لَنَا لَكُونُ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَرَسًا لَنَا لَا لَهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَرَسًا لَنَا لَكُونَا وَلَهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَرَسُونُ فَرَعُ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَرَسُونُ وَعَلَيْهِ وَسَلَمُ وَلَمْ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَرَسُ لَكُونُ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ فَرَسُونَ فَوْعَ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ فَا عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَلَمْ عَلَيْهُ وَلَهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَلَهُ وَمَنْ أَنّا مُعْرَا إِلَيْهُ عَلَيْهُ وَلَمْ عَلَيْهِ وَاللّهُ مَا لَكُونُ مَا لَكُونُ اللّهُ عَلَيْهِ وَلَمْ فَرَالُونُ وَعَلَيْهُ وَلَا فَاللّمَ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَاللّهُ عَلَالُهُ مَنْ مُ اللّهُ مَا مُؤْمِلًا لَا عَلَيْهُ وَلَا فَاللّمُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَلَا فَا عَلَيْهُ وَلَا فَا عَلَيْهُ وَاللّمُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهِ اللّهُ الْمُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الل

۱) (شرح ابن بطال (ج۵ص ۶۰)-

۲) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ١٤٨)-

٣) (حواله بالا وفتح الباري (ج٤ص٥٩)-

ا (وفتح البارى (ج۶ص۵۹)-

۵) (حواله بالا وعمدة القارى (ج ۱۴ ص ۱۹۸) ـ

۶) (حواله بالا وشنرح النووى عَلَى مسلم (ج١ص ٤٤)-

۷) (وعمدة القارى (ج ١٤٨٥)-

۸) (حواله بالا-

٩) قوله: عن أنس بن مالك رضى الله عنه: الحديث مر تخريجه في كتاب الهية باب من استعار من الناس الفرس

- همهابر بشار: دا مشهور امام حدیث محمدبن بشار عبدی بصری منه دی. د بندار په لقب باندی مشهور دی. د ده حالات ((کتاب العلم باب ماکان النبی مشهور دی. د ده حالات ((کتاب العلم باب ماکان النبی میل الله علیه وسلم یتخولهم...)) لاندی تیرشوی دی. (۱)

٢- غندر: دا ابوعبدالله محمدبن جعفر هذلی مُولِي دې.دَ غندرپه لقب مشهور دې. دَده حالات ((کتاب الإیبان باب ظلم دون ظلم)) لاندې راغلی. (۲)

-- شعبه: داامام شعبه بن الحجاج مُنَالِمُ دي. د ده حالات هم مختصراً ((كتاب الإيهان باب المسلم المسلون من لسانه ويدن) به ذيل كنبي راغلى دى. (٣)

٣-قتاده: دا قتاده بن دعامه بن قتاده سدوسی مید در ده حالات هم مختصرا ((کتاب الإیان الایمن الایمان الای

ه-انس بر مالك: حضرت انس بن مالك الماثيَّة حالات هم ((كتاب الإيبان)) د مذكوره باب لاندي تير شوى دى. (۵)

قوله: قال: كان فزع بالمدينة، فاستعارالنبي صلى الله عليه وسلم فرسالنا

يقال له المندوب: حضرت انس الله في فرمائي چه يو ځل په مدينه کښې دننه د ويرې حالات پيدا شو نو حضوراکرم تالله زمونږ اس واخستلود کوم نوم چه مندوب وو.

دلته حضرت انس گان داس نسبت خپل طرف کړو چه ((فرسالنا)) او همدغه روایت په ماقبل کښی هم راغلی په هغی کښی ((فرسامن ابلطحه))(۶) الفاظ وارد شوی دی. یعنی هغه اس د حضرت ابوطلحه گان وو. لیکن په دی دواړو روایتونو کښی څه تعارض او منافاة نشته ځکه چه حضرت ابوطلحه گان د حضرت انس تایم ناسکه پلار اود هغه د مور ام سلیم فرا کونم خاوندوو، نواس په اصل کښی د حضرت ابوطلحه گان وومګر په دی حیثیت سره چه د حضرت انس گان د تربیت لاندی وو نو خپل طرف ته ئی د اس نسبت او کړو. (۷)

قوله: فقال: مارأينامن فزع، وإن وجدناه لبعرا: نو حضور ترايم واپس راغلو او

۱) (کشف الباری (ج۳ص۱۵۸)-

۲) (کشف الباری (ج۲ص ۲۵۰)-

۳) (کشف الباری (ج ۱ ص۶۷۸)-

⁴) (كشف البارى (ج٢ص٣)-

٥) (كشف البارى (ج٢ص ٤)-

⁶) (صعيع البخاري كتاب اليهة باب من استعار من الناس الفرس رقم (٢٤٢٧)-

۷) (عددة القارى (ج ٤١ص١٤) و شرح القسطلاني (ج٥ص٧٢)-

ونی فرمانیل مون هیخ د ویری خبره اونه لیدله او مون هغه د سمندر په شان اوموندلو مندوب نومی دا اس اول بطئ السیروو د حضور اکرم نافظ د سوریدو په برکت تیز رفتار شو او سریع السیر شو. (۱)

اود علامه مهلب مرسي په حواله سره دا خبره اول راغلې چه د ټولونه اول د تيز اس تشبيه د سمندر سره نبي اکرم نظم ورکړيده. (۲)

د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت: د حديث شريف ترجمة الباب سره مناسبت به دى جمله كنبى دى: ((فرسالنا يقال له: مندوب)). (٣)

٢-- بَاب: مَا يُذُكَرُمِنُ شُؤُمِ الْفَرَسِ

و باب و ترجمه مقصد: د امام بخاری مینیم د دی باب د ترجمه مقصد دا دی چه په احادیثومبارکو کښی د اسونوباره کښی چه دا کوم راغلی دی چه په دی کښی شوم او نحوست دی هغه په خپل عموم باندی دی یا د بعضو اسونو سره مخصوص دی. هغه په خپل ظاهر باندی دی یامؤول باندی دی؟ (۴)

دَ سهل بن سَعْد الله حدیث عبدالله بن عمر الله انه پس ذکر کولو سره د دی خبری طرف ته اشاره کریده چه حدیث عبدالله بن عمر الله کنبی چه کوم حصر وارد شویدی هغه په خپل ظاهر باندی نه دی. د دی باب نه پس د باب ترجمه "الخیل اثلاثه...." کنبی هم د دی خبری ذکر دی چه شوم بعض اسونو سره خاص دی، د هر یو اس حکم دا نه دی او دا ټول د امام بخاری مختی د نظر لطافت او د فکر د دقت نتیجه ده (۵)

[ran] حَدَّثَنَا أَبُوالُمَّانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنُ الزُّهُرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي سَالِمُ بُنُ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بُنَ عُمْرَدَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ سَمِعْتُ (١) النَّبِيَّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ إِنَّمَ الثَّوُمُ فِي اللَّهِ بُنَ الْفَرْسِ وَالْمَرْأَةِ وَالدَّادِ [ر:mm] ثَلَاثَةٍ فِي الْفَرَسِ وَالْمَرْأَةِ وَالدَّادِ [ر:mm]

تراجم رجال

۱-ابواليمان: دا ابواليمان حكم بن نافع بصرى ميند دي.

۱) (شرح القسطلانی (ج0-0-0) ویدل علیه قوله: فرسالأبی طلحة بطیئا فی باب السرعة والرکض فی الفزع رقم (۲۹۶۹)-

۲) شرح ابن بطال (ج۵ص۳٤۵)-

٣) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٤)-

ا (فتح الباری (ج۵ ص۷۲) وعمدة القاری (ج ۱ ۱ ص ۱ ۱۹)-

۵) (فتح الباری(ج۶ص۶)-

۶) (قوله: أن عبدالله بن عمر تلكه : احديث، مرتخريجه في كتاب البيوع باب شراء الابل الهيم اوالاجرب-

م-شعیب: دا ابوبشر شعیب بن ابی حمزه قرشی اموی پیک دی، د دی دواړو مختصر حالت به الوحی د شپږم حدیث په زمره کښې راغلې دې. (۱)

- الزهري: دا امام محمدبن مسلم ابن شهاب زهری کیشی دی، د هغوی حالات هم د پهره الوم په دریم حدیث کښې تیرشوی دی. (۲)

م-سالمبر.عبدالله: دا ابو عمر سالم بن عبدالله بن عمر بن خطاب مَيَنْ دي، دَ هغه هم مختصر حالات كتاب الايمان باب الحيام من الايمان الاندى تيرشويدي. (٣)

٥-عبدالله بر عمر رضى الله عنهما: دا مشهور صحابى دَ رسول الله تراهم حضرت عبدالله بن عمر الله تراهم در الله عنهما در کتاب الایمان، باب قول النبی تراهم الاسلام علی عبدالله بن عمر الله تول النبی ترشویدی (۴)

اخبرنی سالم: دغه شان شعیب د زهری بینی نه نقل کړی دی چه سالم د زهری نه دا حدیث بیان کړو او ابن ابی ذئب د شاذ امر ارتکاب کړیدې چه د امام زهری او سلام په مینځ سند کښې ئې محمد بن زبید بن قنفذ داخل کړیدې: یعنی صحیح دا ده چه په دې سند کښې د امام زهری او سالم په مینځ کښې بل راوی نشته. (۵)

قوله: قال: سمعت النبى صلى الله عليه وسلم يقول: انما الشؤم في ثلاثة: في الفرس، والمراة، والدار: حضرت عبدالله بن عمر الله المرائي چه نبى كريم الله الفرس، فرمائيلوسره واوريده چه نحوست په اس كنبى، بنخه كنبى او په كوركنبى وى در شوم لفظ شين معجمه او همزه سره دى او كله په دى كنبى تسهيل كولى شى نو په خائ دهمزه واو كيږى (۶) اود دى معنى نحوست او بدفالى ده. (۷)

[٣٠٠] حَدَّثَنَا عَبُدُ اللَّهِ بُنُ مَنْ لَمَةَ عَنْ مَالِكِ عَنْ أَبِى حَازِمِ بِنِ دِينَا وَعَنْ سَمُلِ بُن سَعُدِ السَّاعِدِي وَسَلَمَ قَالُ إِنْ كَانَ فِي السَّاعِدِي وَسَلَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ قَالُ إِنْ كَانَ فِي السَّاعِدِي وَسَلَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ قَالُ إِنْ كَانَ فِي السَّاعِدِي وَالْمَسْكِنِ [٣٨٠٠]

۱) (کشف الباری (ت ۱ ص ۲۷۹ - ۴۸۰)-

٢) (كشف الباري (ج ١ ص ٣٢۶)-

۳) (کشف الباری (ج۲ص۱۲۸)-

الباري (ج١ص ٤٣٧) -

۵) (فتع الباري (ج ۶ص ۶۰) وعمدة القاري (ج ۱ ص ۱ ۱۹)-

ع) (فتع الباري (ج۶ص۶)-

۷) (التمهيد (ج٩ص٢٧٨)-

تراجم رجال

-عبدالله بن مسلمه: دا عبدالله بن مسلمه بن قعنب قعنبي ميد دي.

<u>-- مالك:</u> دا امام دارالهجرة امام مالك بن انس اصحى مُظِيدٍ دې. د دې دواړو حضرانو حالات ((کتابالایهان هاپ من الدین الغمار من الفتن)) کښی تیرشوی دی (۲)

-- ابوحازم: دا مشهور زاهد، ابو حازم بن دینار مولی الاسود مدنی بیست دی. ۳۱)

م- سهل بر سعدالساعدى وصحابى رسول ترفيخ حضرت سهل بن سعدالساعدى والمرفيخ حضرت سهل بن سعدالساعدى والمرفيخ حالات هم تيرشوى دى. (۴)

قوله: ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: ان كان في شئ ففي المراة والفرس والمسكن: حضرت سهل بن سعدالساعدى كَاتْتُو نه روايت دې چه رسول الله تَنْ فَرَمَانَى چِه (نحوست) كه په يو څيز كښې وې نو په ښځه كښې، په اس كښې او د

اوسيدو په ځای (مسکن) کښې به وو.

يوسوال اود هغې جوابونه: په دې باب کښې امام بخاري کښځ دوه احاديث ذکر کړی دی. په دې احادیثو پاندې دا اشکال کیږی چه د حضوراکرم نایم په یوبل حدیث کښې چه د حضرت انس کان نه روایت دې په دې کښې دی: "لاعدوی، ولاطيرة" (۵) او په دې حدیث کښې د بدفالنی نه منع کړې شوې ده، ښځه کوراو اس کښې د شوم دا تصور بدفالي او بدشکوني نه ده نو نور څه دی ؟ په ظاهره دواړو قسم رواياتوکښې تعارض دي. د دې تعارض دلرې کولود پاره مختلف حضرات او محدثين مختلف جوابونه ورکوي:

ن امام مالك او ابن قتيبه كلي د باب احاديث به خپله ظاهري معنى باندي محمول كړي دی اووئیلی دی چه دااحادیث په دې دوئم حدیث کښې بیان شوی عام قانون نه مستثنی دی (۶)

^{...}دتيرمخ حاشيه [١) (قوله: عن سهل بن سعدالساعدى المنافع الحديث اخحرجه الخارى ايضاً (ج٢ص٢٢) كتاب النكاح باب يتقى من شؤم المراة.... رقم (٥٠٩٥) ومسلم كتاب السلام باب الصئرة والفال ومايكون فيه الشؤم رقم (٥٨١٠) والترمذي ابواب الادب باب ماجاء في الشؤم رقم (٢٨٢٤) وابن ماجه ابواب النكاح باب ما يكون فيه اليمن والشؤم رقم (١۶۶٤)-

۲) (كشف البارى (ج٢ص ٨٠) وايضا انظر لترجمة الامام مالك بن انس كشف البارى (ج١ص ٢٩٠)-

٣) (د هغوى د حالاتود پاره او كورى كتاب الوضوء، باب غسل المراة اباها الدم عن وجهه-

٤) حواله بالا-

۵) (الحديث اخرجه البخاري كتاب الطب باب الفال رقم (۵۷۵۶) وباب لاعدوى رقم (۵۷۷۶ ومسلم كتاب السلام باب الطيرة والفال رقم (٥٨٠٠ ٥٨٠٠)و ابوداؤد ابواب الطب باب في الطيرة رقم (٣٩١٤) والترمذي ابواب السير باب ماجاء في الطيرة رقم(١٤١٥)-

۶) (فنح الباري (ج۶ص ۶۱)-

علامه ابن عبدالبر مربید فرمائی چه دا احادیث د قرآن کریم د آیت (مااصاب من مصیه فی الارض ولاقی انفسکم الاقی کتاب) (۱) سره منسوخ دی (۲) لیکن حافظ ابن حجر مربید په دې جواب باندې رد کړیدې او فرمائی والنسخ لایثهت بالاحتمال ۳)

آبن العربی برای دافرمائی چه دا کلام حرف شرط سره دی، لکه څنګه چه د باب بل روایت حضرت سهل بن سعد کښی ((ان کان الشؤم....)) حرف شرط سره دی او معنی دا ده چه شوم ونحوست که چرته په یو څیز کښی کیدیشی نو هغه ښځه، کور او اس کیدیشی (۴) (لیکن شوم یعنی سپیره والی په څه څیز کښی نه وی نود دی د پاره په دی دریو څیزونوکښی هم د دی تصور نشی کیدلی).

بعض علماؤ فرمائي چه په حقیقت کښي شؤم په دوه قسمه دي، يو شؤم په معني د عدم موافقت او دوئم شؤم په معني د نحوست.

نودشوم په حدیث باب کښې په معنی دَعدم موافقت دې او ((لاعدوی ولا طلاق)) کښې په معنی دَ نحوست دې. په دې صورت کښې به د کور بدفالنی مطلب دا وی چه هغه تنګ وی یا هلته ګاونډیان ښه نه وی یا دَهغه ځای آب وهوا خرابه وی دغه شان د شؤم مرأة مطلب دا دې چه دَهغې اولاد نه وی، اوږد ژبې وی، د پاك دامننی خیال نه ساتی او د شؤم فهس مطلب دا دې چه هغه په جهاد کښې په کار رانشي یاسرکش وی یا د هغې قیمت زیات وی. (۵) علامه ابن عبد البر مُنځې فرمائي:

((وتدفس معمر في روايته لهذا الحديث الشؤم تفسيراحسنا: قال معمر: سبعت من يفس هذا الحديث يقول:

شۇمالىراقاذاكات غيرولود، وشۇمالغىساذالىم يغزعليە ئىسبىل الله، وشۇمالدار جارالسۇ)). (۶) او معمر كۈنۈن د دى حديث په روايت كښى د شوم ښه تفسير بيان كړيدى. هغوى فرمانى چه د هغه نه مى اوريدلى چه د دې حديث تفسير او وضاحت ئى بيانولو چه د ښځى شوم دا دې چه د هغى بچى نه كيږى، د اس شوم دا دې چه په دې د الله تعالى د پاره جنگ نه كوى او د كور شوم دا دى چه د هغى كاوندى خراب وى.

دُ آخری جواب تائید د حضرت سعدبن ابی وقاص الله هغه مرفوع حدیث نه هم کیری کوم

۱) (الجديد۲۲) -

 $^{^{7}}$) (عمدة القارى (ج 1 ا 1 الس 10) والتمهيد (ج 9

⁽ ۳(فتح الباری (ج۶ص۶۶) -

^{4) (}حواله بالاً. وتكملة فتح الملهم (ج ٤ ص ٣٨١) وعدة القارى (ج ١٤ ص ١٥١) قال العينى وهنا اسم كان مقدر ان كان الشؤم في شئ حاصلا فيكون في المراة والفرس والمسكن فقوله ان كان في شئي الى اخره اخبار انهليس فيهن فاذالم يكنفي هذه الثلاثة فلايكون في شئ-

٥) (لامع الدراري (ج ٩ص ٢۶٧) ورجع هذا الجواب الشيخ الكاندهلوي انظر تعليقات لامع الدراري-

٤) (النمهيد لابن عبدالبر (ج ٩ص ٢٧٨ - ٢٧٩) والمصنف لعبدالرزاق (ج ١ ص ١١ وم (١٩٥٢٧)-

چه امام احمد پښتو روايت کړيدې. په دې کښې دی:

ر من سعادة البرم البراة الصالحة والبسكن الصالح والبركب الهنئ ومن شقاوة البرم البراة السؤ والبسكن السؤ والبركبالسۇ)). (١)

يعني د سړي په خوشبختئي کښې دا دي چه د هغه ښځه نيکه وي. دهغه د اوسيدو ځاي ښه وي او دُهغه سورلی ښه وی او د سړی بدېختنی نه دا دی چه د هغه ښځه بداخلاته _{وی د} . هغه دَ اوسیدو ځای خراب وی او دَ هغه سوړلی خرابه وی. او دا څیز دَ هرجنس بعنیٰ قسمونو سره مختص دي. (۲)

خاص د دي دريو غيزونو ذكر كولو وجه: د حضرت عبدالله بن عمر الله عن عديث باب اداة حسر سره وارد شویدې چه شوم هم په دریو څیزونوکښې وي ښځه اس او کور. (۳)،

بعض حضراتو مثلاً ابوالعباس قرطبي المناجع فرمائي چه د دي دريو څيزونو ذكر سره د خاص کولو وجه د ملازمت طول او اوږدوالي دي. يعنی د انسان هم دې څيزونو سره واسطه پريوزي ځکه چه آنسان په غالب أحوالوکښې د کور نه چه په کښې اوسيږي. د ښځې نه چاسره چه د ژوندتیرولو تعلق وی او تړلې شولی اس نه کوم چه ده د جهاد د پاره تیار ساتلي وی مستغنی کیدی نشی. (۴)

آیا شوم مذکور په دې دریو څیزونوکښې محصور دې؟ بیا دا خبره یاد ساتنې چه د باب حدیث طرق هم په دې دريو څيزونو متفق دی يعنی په ټولو طرقو کښې هم د نړس، مراڼه او دار ذكر دى البته مصنف عبدالرزاق (۵) كنبى معبرمن امسلمة به طريق ((السيف)) اضافه هم موجود ده. کوم نه چه معلومیږی چه توره هم شوم او نحوست وی او علامه ابن عبدالبر مريد فرمائى ((روالا جويرية عن مالك عن الزهرى ان بعض اهل امرسلية زوج النبى صلى الله عليه وسلم اخبرة ان امرسلية كانت توردالسيف)) (ع)

حافظ ابن حجر ﷺ چه د دې زياتوالي متعلق کوم کلام ذکر کړيدې دهغې خلاصه مونږ دلته ذكر كوو: دا حديث سره د دې زياتوالي امام دارقطني په عمالې مالك كښې نقل کریدی او د هغه سند تر زهری منطح پوری صحیح دی. بیا جویریه په دی حدیث کنی منفره هم نه ده بلکه سعید بن داود د هغی متابعت کریدی، دا متابعت هم امام دارقطنی نقل کړيدې او هغه فرمانيلي چه د جويريه په روايت کښې چه کوم مېهم راوي دې هغه ابو عبيده عبدالله بن زمعه دي، دغه شان امام ابن ماجه كلي دآ روايت سيف د زياتو آلي سره په خپل

١) (المسند الاامام احمدبن حنبل (ج١ص١٥٨)-

٢) (فتح الباري (ج ٢ص ٤٦) وانظر ايضا كشف الباري كتاب النكاح (ص ١٨١)-

٣) (حواله بالا وعمدة القارى (ج ١٤٥ص ١٤٩) وطرح التثريب في شرح التقريب (ج٧ص٢١٥)-

٤) (وعمدة القارى (ج ١٤٥ص ٩٤١) وطرح التثريب في شرح الثقريب (ج٧ص ٢١٥٣)-

۵) (المصنف لعبدالرزاق (ج ۱۰ص ۲۱) رقم (۱۹۵۲۷)-

۶) (التمهيد لابن عبدالبر (ج ٩ص ٢٧٩)-

سن کښې موصولا ذکر کړيدې دې. د هغه په سند کښې ابوعبيده عبدالله بن زمعه صراحت دې اود هغه روايت الفاظ دا دي:

توله: عن زينب بنت امرسلمة عرب امرسلمة انها حدثت بهذه الثلاثة وزادت فيهن

والسف: (١) زينب بنت ام سلمه دا د ابوعبيده عبدالله بن زمعه مور ده، حديث باب امام نسانی پیشتر (۲)هم دُسند په څه اختلاف سره نقل کړیدې.دې کښې هم د سیف زیاتوالې موجود

علامه ابن عربي ميلي فرمائي چه حصر په نسبت د عادت دې يعني خلق عادة په دې څيزونو عبر معامله نه ده چه به دی څیزونو کښی به خامخا کښی نحوست مخیرونو کښی به خامخا خامخا څه نحوست وي، دا مطلب حصر نه دې چه دا درې څیزونه پیدائشي مشوم او منحوس وي، څه نحوست وي، دا مطلب حصر نه دې چه دا درې څیزونه پیدائشي مشوم او منحوس وي، کله نحوست د دوو کسانو سره په اوسيدو سره کيږي، کله په سفرکښي کيږي او کله په هغه کپړا کښې وي کومه چه بنده نوې نوې اخلي، د دې د پاره نبي کريم ترکیم فرمائيلي دي ((اذاليس احدكم ثوبا جديدافليقل: اللهم اني اسالك من خيرة وخير ماصنح له، واعوذبك من شهة وشي ما منع له) (۴)

د مذيث د ترجمة الباب سره مطابقت: دَ باب دَ رومبي حديث مناسبت ترجمة الباب دَ حديث جملی ((ن الغرس)) په جمله کښی دی او د دوئم حدیث مناسبت هم ترجمه سره بالکل واضح او ظآهر دي. (٥)

تنبیه: دا د شوم مسئله (کتاب النکام) (۶) کښې هم تیره شویده او دلته هم امام بخاری کښو دا روایات نقل کړیدی، ترجمه ئی هم قائم کړیده او د جهاد په مناسبت سره شوم فرس ئی هم بیان کړیدې د کوم تفصیل چه په ما قبل کښې مونږ بیان کړیدې.

٣٨-بَأْبِ: الْخَيْلُ لِثَلَاثَةِ

د ترجمة الباب مقصد: امام بخارى دلته دا اوفرمائيل چه اسونه درې وى يعنى د اسونو پالونکو کسانود نوعیت په اعتبار سره درې قسمونه دی (۷)

١) (سنن ابن ماجه كتاب النكاح باب مايكون فيه اليمن والشؤم رقم ١٩٩٥)-

۲) (سنن النسائى الكبرى (ج۵ص٤٠٣) كتاب عشرة النساء ابواب حقوق الزوج شؤم المرءة رقم (ج۵ص ۹۲۸) ـ

۳) (فتع الباري (ج۶ص۶۶)-

أ (الحديث رواه ابوداؤد في كتاب اللباس باب ما يقول اذا لبس ثوبا جديا رقم (٤٠٢٠) والترمذي في كتااللباس باب ما يقول اذا ليس ثوباجديدارقم (١٧٩٧) وطرح التثريب في شرح التقريب (ج٧ص ٢١٥٣)-

۵) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٣٩و ١٥١)-

ع) (صحيح البخاري (ج٢ص٧٤٣) كتاب النكاح باب مايتقى من شؤم المراة وكشف البارى كتاب النكاح (ص۱۸۰–۱۸۲) –

۷) (عمدة القارى(ج ١٤ ص ١٥١)-

يو خيل خو هغه دې چه د اجر او ثواب سبب جوړيږي او دا هم هغه خيل دې چه د جهاد د پاره اوساتلې شي. دونم هغه دې چه ستر او پردې پټولو او د دوزخ د اور نه د حجاب سبب جوړيږي او هغه دا دې چه کوم سړې اس اوساتي او د هغه چه د الله تعالى د طرف نه کوم حقوق مقرر دې هغه ادا کړي. د ده ښه خيال اوساتي، او دريم اس هغه دې چه د اسلام سره د بښمنني د پاره اوساتلې شي.

بيا امام بخاري دَ حديث بآب په ړومېنئي حصه کښې باب دَ ترجمه جزء جوړکړيدې. (۱) لکه څنګه چه د هغه معروف عادت دي. (۲)

حضرت شيخ الحديث ميه و ترجمه غرض دا خودلى دى: ((ويحتمل عندى في وجه الغرض من الترجمة: انه الاشارة الى ما سبق من شؤم الغرس من حيث الحصر الوارد في الحديث، فانه لم يتعرض فيه الله الشؤم) (٣)

يعنى زما په نزد د باب د ترجمه په غرض كښې دا احتمال دې چه امام بخارى ميه د دې د دې ترجمه نه دې طرف ته اشاره كوى چه په ما سبق كښې په كومو دريو څيزونو كښې حصر وارد شوې وو چه په دې كښې نحوست دې په دې كښې اس هم شامل وو نو هغوى په سابق كښې د بيان شوى شؤم نه دلته تعرض نه دې كړې.

دکوم نه چه دا معلومه شوه چه په هريو اس کښې نحوست نه وی. کماسېق مناذکې تلي الهاب السابق ايا اسونه هم په دې دريو قسمونو کښې منحصر دی؟: دلته سوال دا پيدا کيږي چه نبی کريم نظيم د باب په حديث کښې د خيل درې قسمونه بيان فرمانيلي دی نو آيا د خيل صرف همدغه درې قسمونه دی که نور هم شته؟

حافظ ابن حجر میند د کی جواب کنبی فرمائی چه د باب حدیث نه بعض شراح حصر مراد اخستی دی چه د اسونوهم دری قسمونه دی. هغه داسی چه اس پالل او هغه ساتل خو به مطلوب وی یا به مباح وی او یا به ممنوع، نو په مطلوب کنبی واجب او مندوب دواره داخل دی او ممنوع کنبی حرام او مکروه دواره داخل دی. (۴)

بیا بعضو حضراتو په دې باندې اعتراض او گړو چه په حدیث کښې خو د مباح ذکر نشته، ځکه چه کوم دریم قسم د اسونودې هغه دې قید سره مقید دی ولمینس حق الله قیه نودا خو مندوب سره ملحق شو نو دلته د مباح قسم کوم څائ نه راغلو؟

دُدې اعتراض جواب دا دې چه د نبی کریم نالل غالب عادت دا وو چه هغوی نالل به هم د دې څیزونو اهتمام فرمائیلو په کوم کښې چه د څه څیز ترغیب وی یا د امر نه منع کړیشوې وی. ترکومې چه د خالص مباحاتو تعلق دې نود دې بیان نه هغوی نالل سکوت فرمائی،

١) (حواله بالا وفتح البارى (ج٤ص ٤٤)-

۲) (کشف الباری (ج۱)-

٣) (الابواب والتراجم للشيخ الكاندهلوى (ج١ص١٩٥)-

٤) (فتح البارى (ج۶ص ۶۶)-

نکه چه داخبره معلومه ده چه د دې مباحاتونه سکوت د عفواو معافني دليل دي. (۱) ار حافظ صاحب الله د مذكوره اعتراض جواب فرمانی چه دا هم ممكن دی چه دونم قسم نالس د مباح وی مگر دا چه د نیت د خلوص په وجه هغه کله کله د ندب درجی ته اورسی په خلاف د اول قسم ځکه چه هغه خو د شروع نه مطلوب دې ۲۱) يعنې په اول قسم کښې د اس تړلو نیټ هم د جهاد د پاره وو نو هغه خو د شروع نه مطلوب او مقصود دی. والله اعلم وَالْخَيْلَ وَالْبِغَـالَ وَالْحَبِيرَ لِتَرْكَبُوهَـا وَزِينَةً وَيَغْلُؤُ مَا لَا تُعْلَمُونَ: [النحل:٨] او دَ الله تعالى قول دى او(هغه)اسونه قچرې او خره پيداكړى دې دَ باره چه تاسو په دې سواره شئي او زينت هم دي.

درالغيل...) عطف دَماقبل والإنعام باندې دې په دې وجه دَمفعوليت په وجه منصوب دې ۲۲) اود قرآن كريم مذكوره آيت د ترجمه الباب دونم جزء دي او دا آيت هم د باب حديث كنبي به مذكوره تقسيم باندې دلالت كوي. اومطلب دا دې چه مذكوره څيزونه يعني اس قچر اوخر الله تعالى دَ سُورلني او ښانست دَ پاره پيدا کړي. اوس که يو سږې دا په څه کار کښې استعمالوي نود ده د پاره دا مباح دي. د دې نه پش که دې کار سره د غبادت نيت هم شامل شی نو هغه مباح نه ترقی کوی آو امر مندوب کښی شاملیږی او که د معصیت نیت اوکړی بعنی د فخر او مباهاتو نودا په ګناه کښې شامليږي (۴)

فَائده تاسو هُورئي چه دُ الله تعالى مذكوره بالآفول كښې معطوف او معطوف عليه په يوه طريقه باندې نه دې. معطوف عليه خو الترکبوها دې او معطوف ازينه کلمه ده. په دې کښې دې خبرې ته اشاره ده چه رکوب د مخاطبينو فعل دې او زينت، د زينت ورکونکي خالق فعل دي. (۵)

[٢٤٠٠] حَدَّثَنَا عَبُدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةً عَنْ مَالِكٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِي صَالِحِ النَّجَان عَنْ أَبِي هُرَيْرَةً رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ (٢) أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ الْخَيْلُ لِتَلَاثَةِ لِرُجُلِ أَجُرٌ وَلِرَجُلٍ سِثْرٌ وَعَلَى رَجُلٍ وِذَرٌ فَأَمَّا الَّذِي لَهُ أَجُرٌ فَرَجُلٌ رَبَطَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَامِّ إِلَى مِنْ جِ أَوْرَوْضَةِ فَمَا آصَابَتِ فِي طِيلِهَا ذَلِكَ مِنْ الْمَرْجِ أَوْالرَّوْضَةِ كَانَتْ لَهُ حَمَّنَاتِ وَلُوْأَنَّهَا قَطُعَتْ طِيلُهَا فَاسْتَنَّتْ شَرَفًا أَوْشَرَفَيْنِ كَانَتْ أَرْوَاثُهَا وَآثَارُهَا حَسَنَاتِ لَهُ وَلَوْأَنَّهَا مَرَّتْ

۱) (فتع الباري (ج۶ص ۶۶)-

٢) (حواله بالا ـ

٣) (عمدة القارى(ج ١٤ اص ١٥١)- .

⁴) (فنح البارى (جَ⁹ص ٤٤)-

٥) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٥١)-

ع) (قوله: عن ابي هريرة رضي الله عنه الحديث مر تخريجه في كتاب المسافاة باب شرب الناس وسقى الدواب من الانهار -

كتأب الجهاد (جلائل) كشف البارى يَ فَقَ مَ فِي الْهُ مَا مُن أَنْ لَهُ مَن أَنْ لَهُ مَا مُن أَنْ لَكَ حَسَنَاتٍ لَهُ وَدَجُلِ رَبَطَهَ الْخُواوَدِنَا عُونُواءُ إِذْ مَا

بِنَهِ فَشَرِبَتْ مِنْهُ وَلَمْ يُرِدْ أَنْ يَسْقِيَهَا كَانَ ذَلِكَ حَسَنَاتِ لَهُ وَرَجُلِّ رَبَطَهَا فَخُرَا وَرِنَا عُونِوا وَإِذْ لَلَهُ مَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ الْحُمُرِ فَقَالَ مَا أَنْ لَلَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ الْحُمُرِ فَقَالَ مَا أَنْ لَ لَا لَهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ الْحُمُرِ فَقَالَ مَا أَنْ لَا لَهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ الْحُمُرِ فَقَالَ مَا أَنْ لَلْهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ الْحُمُرِ فَقَالَ مَا أَنْ لَكُ مَا أَنْ لَكُونُ وَمَنْ يَعْمَلُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ وَمَنْ يَعْمَلُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فَمُرَّا يَرَهُ وَمَنْ يَعْمَلُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فَمُرَّا يَرَهُ وَمَنْ يَعْمَلُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فَيُرَّا يَرَهُ وَمَنْ يَعْمَلُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فَمُرَّا يَرَهُ وَمَنْ يَعْمَلُ مِثْقَالَ ذَرَةٍ فَمُرَّا يَرَهُ وَمَنْ يَعْمَلُ مِثْقَالَ ذَرَةٍ فَمُرَّا يَرَهُ وَمَنْ يَعْمَلُ مِثْقَالَ مَا يَعْمَلُ مِثْقَالَ ذَرَةٍ فَكُرًا يَرَهُ وَمَنْ يَعْمَلُ مِثْقَالَ مَا أَيْ وَالْمَا فَا فَا أَنْ أَلْ مُنْ يَعْمَلُ مِثْقَالَ ذَرَةٍ فَكُوا يَرَةً وَمُنْ يَعْمَلُ مِنْ يَعْمَلُ مِنْ فَالْ مَنْ يَعْمَلُ مَا مُنْ يَعْمَلُ مِنْ لَهُ وَمُنْ يَعْمَلُ مِنْ فَا لَوْ يَا يَوْهُ مِنْ إِلَا لَا مُنْ إِنْ وَالْالِكُ فَا لَكُونُ مِنْ يَعْمَلُ مِنْ لَا لَا مُعْمَلُ مِنْ عَمَلُ مَنْ عَمْلُ مِنْ عَالَى مَا يَعْمَلُ مِنْ عَلَيْهِ وَالْمَا فَا فَا فَا فَا فَا مَا مُنْ يَعْمَلُ مِنْ عَلَى مِنْ عَلَى مُعْلَى مُعْمَلُ مِنْ عَمْ لَا مُنْ عَلَى مُعْلَى مِنْ عَلَى مُعْلَى مُعْلَى مُعْلَى مُعْلَى مِنْ عَلَى مُعْلِى مُعْلَى مُعْلِى مِنْ عَلَى مُعْقَالُ مُنْ اللّهُ عَلَى مُعْمَلُ مِنْ عَلَى مُعْمَلُ مَا مُعْلِي مُعْلِمُ مِنْ عَلَى مُعْمَلُ مِنْ عَلَى مُعْمَلِ مُعْمَلًى مِنْ عَلَى مِنْ عَلَى مُوالْمَا فَا مُعْلِى مُعْمَلُ مِنْ مِنْ عَلَى مُعْمَالًا مِنْ عَلَى مُعْلَى مُعْمَلُ مِنْ مُعْلِى مُعْمَلُ مِنْ مِي مُوا مُوا مُعْمَلًى مُعْمَلُ مِنْ مُوا مُوا مُوا مُوا مُوا مُ

تراجم رجال

ا-عبدالله بن مسلمه: دا عبدالله بن مسلمه بن قعنب قعنبي الله دي.

r-مالك: دا امام مالك بن انس كيارة دى، د دى دواړو حضراتو حالات ((كتاب الايان باب من الدين الغمار من الفتن) لاندې تيرشوى دى. (١)

-- زيد بر اسلم: دا مولى عمرزيد بن اسلم العدوى دې. د دوى حالات هم په مذكوره بالا باب كښې تيرشوى دى. (۲)

م-ابوصالح السمان: دا ابوصالح ذكوان السمان الزيات عليه دي.

۵- ابوهریره اتانی: دا مکثر صحابی حضرت ابوهریره اتانی دې، د دې دواړو حضراتو حالات کتابالایمان، پاپامورالایمان کښې تیرشوی دی. (۳)

قوله: ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: الخيل لثلاثة: دَ بخارى شريف به تولونسخو كنبى "لثلاثة" دى، اود كشميهنى په روايت كنبى "الخيل ثلاثة" دى بغيرد لام نه (۴) دَ اسونود دريوقسمونو په مينځ كنبى و مسوود د د دې دريواړو قسمونو په مينځ كنبى و مسروجه دا دى چه اس به د سورلئى د پاره ساتلى شى يا دتجارت د پاره، بيا په دې دواډه كنبى د هريو قسم سره به څه عبادت مقترن وى، نودا اول قسم دى يا څه معصيت يا كناه مقترن وى نو دا دريم قسم دى. ياهر دوه قسمه د يو قسم نه خالى وى نو دا دوئم قسم دې او د دوئم قسم نه مراد هغه صورت دى كله چه هغه ستر جوړ شى (۵)

د حدیث باب ترجمه در حضرت ابوهریره کاتو نه روایت دی چه اس د دری قسم سرو سرا کیدیشی. د یو سری دپاره د اجر ذریعه دی، او د یو سری د پاره ستر دی او د یو د پاره د جرم سبب دی. هغه سری د چا د پاره چه اجر او ثواب دی هغه سری دی چه هغه د الله تعالی په لارکښی د جهاد د پاره اوساتی او د څرن په ځای یا باغ کښی هغه په اوږده رسنی باندې

١) (كشف البارى (ج٢ص ٨٠) وانظر ايضًا لترجمة الامام مالك بن انس كشف البارى (ج١ص ٢٩٠)-

۲) (کشف الباری (ج۲ ص ۲۰۳)-

٣) (كشف البارى (ج١ ص٢٥٨-٢٥٩)-

٤) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ٢٥٢) وفتح البارى (ج ۶ص ۶٤)-

د ٦ (فتح الباري ج۶ ص ۶۶)-

اوتری نو چه د هغه څرن د ځای یا باغ کومه کومه حصه په دې رسنی کښې دننه راشي نو د هغه هومره ډکوبرابر نيکئي به هغه ته ملاويږي. اوکه اتفاقي هغه خپله رسني اوشلوله او په بوه غوندئی یا دوو غوندو باندی تیرشو نود هغه د خاشنرو د وزن او د قدمونود نښوبرابر نیکنی به ورته ملاویږی. اوکه دا اس چرته په نهر باندې تیرشو اود هغې اوبه اوڅکی سره د دى چه مالك د اوبوڅكلو اراده نه وي كړې نوبيا به هم ده ته نيكني ملاويږي. اوكوم سړې چهٔ دُ خَان خودنی دَ پاره یادَ فخر په غرض اوتری اود اهل اسلام د دښمننی دَ پاره نی اوساتي نو هغه اس د ده د پاره د جرم سبب دي کله چه د رسول الله نکام نه د خرو باره کښې تبوس اوکړې شو نو هغوي کاللم اوفرمائيل د دوی باره کښې ماته څه حکم نه دې نازل سُوى مكردا آيت (فَكُن يَعْمَلُ مِثْقَالَ ذَرَّةِ خَيْرًا يَرَهُ هُومَن يَعْمَلُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ أَمَرًا يَرَدُهُ ﴾ حوك جه ذري برابر نیکی کوی هغه به وینی، او څوك چه د درې برابر بدې كوي هغه به ويني، دا آيت جامع او منفرد دی.

يوڅوضروري فوائد: حديث باب خو "کتاب المساقاة" کښې تيرشوې دې په دې وجه مونو دُلْتُهُ صَرَفٌ دَ حَدَيث په ترجمه اكتفا اوكړه، البته دَ يو څوضروري فوائدو ذكر كول به دُ فائدې نه ځالي نه وي او هغه دا دي:

لكه څنګه چه اوس مونو اوخودل چه دا روايت كتاب المساقاة كښې تيرشوې دې د دي د پاره امام بخاری کی حدیث باب دلته په اختصارسره ذکر کړو او دونم قسم نی اختصارا حذف كړو. د دونم قسم ذكر د كتاب المساقاة په روايت كښې داسې ذكر دې: ((درجل ربطها تغنيا وتعفقا ثملم ينسحق الله في رقابها ولاطهورها فعى لذلك سترى (١)

او يو سړې هغه دې چه د خلقو نه بې پرواه اوسيږي او د هغوي په وړاندې د سوال دپاره خپل لاس خورولو نه دَ أَجْ كيدلو دُ پاره آس ساتي أو بيا دَ هغه دُ سَټ أو دَ هُغه دُ شا په سلسله كښي د الله تعالى حق هم نه هيروي نو دا اس د خپل مالك دپاره پرده ده.

اد حدیث باب د جملی ((دلم بردان یسقیها)) نه معلومیدی چه بنده ته به د دی جزئیاتو هم ثواب او اجر ملاویری چه د طاعت او عبادت د فعل په مینځ کښې واقع وي په دې شرط چه اصل یعنی د عبادت قصد او ارادی نیت موجود وی دا د الله تعالی د طرف نه په خپلو مؤمنانو بنديكانو فضل او احسان دي. (٢) حافظ ابن حجر مُنظم فرمائي:

((وقيه أن الإنسان يؤجر على التفاصيل التي تقع في قعل الطاعة أذا قصد أصلها وأن لم يقصدتك التفاصيل)(٣)

©دَ اسوفو تندو سره خير او برکت تړلي وي خو چه کله دَ هغي ساتل دَ عبادت دَ پاره يا دَ

١) (صحيح البخاري كتاب المساقاة باب شرب الناس وشقى الدواب من الانهاررقم(٢٣٧١) وعمدة القارى (ج ۲۴ ص ۱۵۸)ولکرمانی (ج ۱۲ ص ۱۹۱)-

٢) (التمهيد (ج ٤ ص ٢٠٣) وشرح ابن بطال (ج ٥٥ ١٣٥)-

۲) (فتح الباري (ج۶ص ۶٤)-

كتأب الجهاد (جداول)

خه مباح كار د پاره وى كنى د دى ساتل مذموم او د كناه ذريعه ده. حافظ منه فرمانى: وروفى هذاالحديث بيان ان الخيل انبا تكون فى تواصيها الخيروالبركة اذا كان اتخاذهافى الطاعة اولى الامور البهاحةوالافهى الجامعة مذمومة)) (١)

قوله: فقال: ماانزل على فيهاالاهن الاية الجامعة الفاذة: نو نبى كريم تايم الفائية الجامعة الفاذة: نو نبى كريم تايم الوفي ما ثير النبي به ما خه حكم نه دى نازل شوى. مكر دا آيت (فَمَنُ يَعْمَلُ مِثْقَالُ ذَرَةً مُثَرِّا يَرَهُ فَا جامع او منفرد دى.

آبن التين ويني فرمانى مطلب دا دى چه دا آيت به دى خبره باندى دلالت كوى چه كوم سرى خره د عبادت او طاعت د باره اوساتى نو د هغى تواب به وينى او كه د دى خرو به ذريعه د خه معضيت او كناه كاركوى نو بيا به هم د هغى سزا او راګيرول وينى. (٢) د حديث د جديث د ترجمه الباب سره مطابقت د حديث ترجمه الباب سره مناسبت او مطابقت بالكل واضح دى او هغه ((الخيل لثلاثة)) دى. (٣)

٣٩- بَأَبِ: مَنْ ضَرَبَ دَابَّةَ غَيْرِةٍ فِي الْغَزُو

د ترجمه الباب مقصد دلته امام بخاری مُرَاثِهُ دا بیان کولَ غواری چه د سفریه دوران قافله کښی که د چا سورلئی د کمزورئی اولاغرئی په وجه اودریږی نو د سورلئی د مالك امداد او اعانت کولودپاره هغه وهل پکار دی چه هغه سورلی روانه شی. (۴)

[٢٠٠١] حَذَّنَنَا مُسْلِمٌ حَذَّنَنَا أَبُوعَقِيلٍ حَذَّنَنَا أَبُوالْمُتَوَكِّلِ النَّاجِىُ قَالَ أَتُبُ جَابِرَبْنَ عَبُدِ اللَّهِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ سَافَرْنُ مَعَهُ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ قَالَ أَبُوعَقِيلَ لاَأَدُرِى غَزُوةً أَوْعُمْرَةً فَلَمَّا أَنُ أَقْبَلْنَا قَالَ النَّيْ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنُ أَحْبَ أَنُ يَتَعَجَّلُ إِلَى أَهْلِهِ فَلْيُعَجِّلُ قَالَ جَابِرٌ فَأَقْبَلْنَا وَأَنَاعَلَى جَمَلِ النَّيْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَا عَلَى فَقَالَ لِي النَّيْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَنْ فَقَالَ لِي النَّيْ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَنْ فَقَالَ لِي النَّيْ وَسَلَّمَ الْمَنْ فَقَالَ لِي النَّيْ فَلَا اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَنْ فَقَالَ لِي النَّيْ فَقَالَ لِي النَّيْ فَلَا اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَنْ فَقَالَ الْمَنْ الْمَنْ فَقَالَ الْمَنْ فَقَالَ لِي النَّيْ فَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَنْ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَنْ فَقَالَ لَا عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَنْ فَقَالَ الْمَعْلِهِ الْمَنْ فَلَا الْمَا لَكُونِ الْمَالُوطِ فَقَلْتُ لَهُ هَذَا النَّهُ مَنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَنْ فَقَالَ الْمَعْلِيفِ وَالْمَالُولُ الْمَوْلُ الْمُ وَعَقَلْتُ الْمَالِولُولُ الْمَنْ فَي اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَالُولُ وَقَالَ الْمَالُولُولُ الْمَنْ وَقَيْمُ الْمَالُولُولُ الْمَالُولُ الْمَنْ وَيُعْلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ الْمَالُولُ الْمَنْ وَيَعْلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ وَالْمَالُولُ الْمَنْ وَيُعْلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَالْمَالُولُ الْمَنْ وَقَالَ الْمَالُولُ الْمَالُولُ الْمَالُولُ الْمَنْ وَلَيْمَ الْمَالُولُ الْمَنْ وَلَا اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ الْمَالُولُ الْمَالُولُ الْمَالُولُ الْمَالُولُ الْمَالُ الْمَالُولُ الْمَالُولُ الْمَالِ اللَّهُ وَلَا اللَّهُ مَلْ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الْمَالُولُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ الْمَالِمُ الْمَالِمُ الْمَالُولُولُ الْمَالُولُولُولُ الْمَالُولُولُولُولُ اللَّهُ عَلَيْهُ الْمَالِمُ الْمَا عَلَى الْمَالِمُ الْمَالِمُ الْمُلْمُ الْمَالِمُ الْمَالِمُ الْمَالِ

١) (حواله بالا(ص٤٥)-

٢) (حواله بالا-

٣) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ٥٥٢)-

^{* ؛) (}عمدة القاري (ج ؟ ١ ص ١٥٢) وفتح الباري (ج ؟ ص ٤٩)-

ي في الباري

تراجم رجال

- مسلم: دا مسلم بن ابراهیم القصاب فراهیدی بینی دی. د دوی حالات (رکتاب الایسان باب زیادة الایسان داری دی (۱)

ما ابوعقيل: دا ابوعقيل بشيرين عقبه السامي بينيد دي ٢٠،

- آبوالمتوكل الناجي: دا ابوالمتوكل على بن داود الناجي بينيد دي ٣٠،

-- جابر بن عبدالله: دا د رسول الله نزیم مشهور صحابی حضرت جابر بن عبدالله الاتصاری نام دی (۴)

نوله: قال: سأفرت معه في بعض اسفارة - قال ابوعقيل: لاادري غزوة امر

عمرة: حضرت جابربن عبدالله الانصاری النوسی خدما در رسول انه ترفیخ سره در هغوی په بعض سفرونوکښی سفراوکړو، راوی حدیث ابوعقیل پولیمی چه مانه دا معلومه نه ده چه مذکوره سفر د کومې عزوه وو یا د عمرې وو.

دا پورتنی سفرد غزوی ووکه د عمری؟ دلته راوی ابوعقیل پینی ته شك پیدا شوی دی چه سفرد خه خیز دَباره وو د غزوه دَباره یا د عمری د باره لیکن د روایاتو د تتبع نه هم دغه معلومیږی چه سفرد غزوه وو. همدغه حدیث امام بخاری پینی په کتاب البیوع کښی هم نقل کپیدی، په دی کښی د خزات لفظ صریح موجود دی. ر۵، دینه علاوه د غزوه د سفر کیدو کښی تائید د ابوعوانه عن مغیره په طریق روایت نه هم کیږی. د کوم په آخرکښی چه دا لفاظ واردشوی دی ((فاعطان ثبن الجمل والجمل وسهمی مع انقوم» (۶) ظاهر شان خبره ده چه سهم چه غزوه کښی کیږی.

دا کومه غزوه وه ۱: د غزوه په تعیین کښې د شراحو اختلاف دې چه دا کومه غزوه وه ؟ ځکه چه امام بخاری مینی د دا دیث په صحیح بخاری کښې موصولاً تقریبًا شپږویشت (۲۱) خل دکر کړیدی. په کوم کښې چه بعض کښې د سفر د غزوه کیدو تصریح خوشته لکه چه په اکثرو روایاتوکښې ابهام دې البته په یو تعلیق کښې د غزوه تعیین شته چه غزوه تبوك وه. په کتاب الشروط کښې داود بن قیس عن عبیدالله بن مقسم عن جابر په طریق کښې دی

۱) (کشف الباری (ج۲ص٤۵۵)-

٢) (وَ حَفُوى وَ حَالاتُودَ بِارِه أُوكُورَى كَتَابِ المظالم باب من عقل بعيره على البلاط أوباب المسجد

 ⁽ و مغوى د حالاتود بار او گورئ كتاب الاجارة باب ما يعطى فى الرقبة على احياء العرب...-

^{﴾)} دَهغوى دَ حالاتودَپاره اوگوري كتاب الوضوء باب من لم يرالوضوء الامن المخرجين من القبل والدبر

۵) (صحیح البخاری کتاب البیرع باب شراء الدواب والحمیر رقم (۲۰۹۷) ۶) (صحیح بخاری کتاب الاستقراض... باب الشفاعة فی وضع الدین رقم (۲٤۰۶)-

(اشترا» بطریق تبوك) (۱) اود داود بن قیس موافقت علی بن زیدبن جُدعان كریدې د هغوي په روایت کښې دی ((ان رسول الله صلی الله علیه وسلم مریح ابرقي غزو ۱۳ ټبوك)) (۲)

ليکن ابن اسحاق په دې باندې جزم کړيدې چه مذکوره واقعه د عود الا الواع ده (٣) اور ا واقدى مينية هم دغه خيال دى چه دا "غزولاذات الرقاع" واقعه ده. (۴)

اوحافظ ابن حجر ميد هم دا راجح كرخولي دي. حافظ ميد فرمائي: ((وهي الراجعة ل ظري الان اهل المقازى اضبط لذلك من غيرهم)) (۵)

او علامه بیهقی رئیلی هم د ابن اسحاق په قول باندې جزم کریدې (۶) د غزوه ذات الرقاع په راجح کیدودلائل حافظ ابن حجر رئیلی فرمانی په حدیث باب کښې غزوه

نه مراد ((غزوة ذات الرقاع)) ده، به دې ئې مختلف دلائل ورکړي دي:

🛈 د امام طحاوی مراز په روايت کښې راغلی دی چه حضرت جابر کانو او د نبي کريم نو په مینځ کښې مذکوره واقعه د مکې او مدینې په لارکښې پیښه شوې وه. او د تبوك لار ډ مکې لارې سره نه ملاويږي په خلاف د ((غزوة ذات الرقاع)) د لارې نه، نو معلومه همدغه شوه چه مذکوره واقعه در (غزوة ذات الرتاع)) ده. (۷)

🕜 دَحضرت جابر الله الله دي حديث ډير طرق راځي چه نبي کريم اله اله د که دې حديث کښې ذکر شوې واقعه کښې دا سوال هم کړې وو ((هل تردجت؟ ، ، ټال: نعم، ټال: ،، اتردجت ېکها امرثیها؟)) (٨) بیا هم په دې کښې د حضرت جابر لانځ دا اعتدار هم ذکر دې چه ما کونډې سره نکاح په دې وجه اوکړه چه زما پلار په غزوه احد کښې شهید شو او شاته ني زما وړې وړې خونیندې پریخودې نو ما کونډې سره نکاح اوکړه چه هغه زما د خونیندو خیال اوساتي. دینه همدغه معلومیږي چه د باب په حدیث کښې ذکر شوې واقعه د هغوي د پلار عبدالله د شهادت سره نزدې ده. نود دې سفر د ((غورة دات الرقاع)) په موقع باندې کيدل ډير ظاهریږی، نه چه د غزوه تبوك په موقع كیدل، ځكه چه دُصحیح قول مطابق ((**غزه؟ ذا**ت

١) (صحيح بخاري كتاب الشروط باب اذا اشترط البائع ظهرالدابة رقم (٢٧١٨)-

۲) (فتح الباری (ج۵ص ۳۲۰)-

٣) (السيرة النبوية لابن هشام (ج٣ص٢١٤)-

م ؛) (فتح الباري (ج۵ ص۳۲۰)-

٥) (حواله بالا-

٤) (دلائل النبوة للبيهقي (ج٣ص٣٨) وقدصرح فيه: في عزوة ذات الرقاع من نخل-

۷) (فتح الباري (ج۵ص ۳۲۱)-

٨) (انظرمثلاً الصيحى للبخارى كتاب الجهاد باب استئذان الرجل الامام رقم (٢٩٩٧) وكتاب المغازى باب "اذهمت طائفتان منكم ان تفشلا" رقم (٤٠٥٢)-

الرقاع)) وقوع د غزوه احد نه يو كال پس ده او عزوه تبوك اود عزوه احد په مينځ كښې د اوو كالوفاصله ده. (۱) والله اعلم.

نوله: قال جابر: فأقبلنا وانا على جمل لى ارمك ليس فيه شية والناس

خلفي: حضرت جابر المُنْ فرماني چه مونږ راغلو په دې حال کښې چه خپل يو اوښ باندې چه خاکې رنګ وو سور وم په هغه کښې هيڅ عيب نه وو او نور خلق زما نه شاته وو.

د ارمک معنی ۱۰ درمك د احمر په وزن دې امام اصمعی سیمی فرمانی چه ارمك هغه اوښ ته وانی د کوم په سوروالی کښې چه توروالی ملاوشوې وی (۲)

او علامه کشیمری مید د کی معنی به اردوکنی خاکستر اونت کریده. (۳)

دُشية معنی: "شية" معنی علامت ده، اومراد ترینه دا دی چه په هغه اوښ باندی دَ هغه دَ خپل حقیقی رنګ نه علاوه بل څه ټاکې وغیره نه وو. (۴) او دا هم احتمال دی چه په هغه اوښ کښې څه عیب نه وو او د دې احتمال تقویت او تائید دَ روستوتننی جملې نه هم کیږی (والناس ځلغی نبیناانا کثلك اد تام علی) چه خلق زمانه شاته پاتې شوې وو، زه هم په دې حال کښې ووم چه اوښ می او دریدو. دینه هم دغه ظاهریږی چه اوښ تیزرفتاروو او دَ رفتار په حواله سره په دې کښې څه عیب نه وو تردې چه هغه د نورو خلقو نه وړاندې اووتلو او بیا هغه دَ ستړیوالی په وجه او دریدو. (۵)

دغه شان امام المفسرين حضرت قتاده ركيل هم په قرآن كريم كښې وارد (لَّاشِيَةَ فِيهَا اللهُ عنى «لاميب فيها) (ع) معنى «لاميب فيها) نقل كريدي. (٧)

تنبیه د کریث با بنور جمید تشریحات ما قبل کنبی په مختلف بابونو کنبی تیرشوی دی. د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت د حدیث د باب ترجمه سره مناسبت د حدیث په دې جمله کنبی دی ((فریه بسوطه فریة)) وهونکی نبی کریم ترکی اواوښ د حضرت جابر تاکی وواود وهلو وجه د اوښ اودریدل وو . (۸)

فائده: علامه مهلب رُوَيْد فرمانی چه د باب د حدیث نه معلومه شوه چه جهاد کښی د خپل ملکری سره د خناور په شړلوکښی امداد کول پکار دی. نبی کریم ترکی اوکتل چه د یو

۱) (فتح الباری (ج۵ص ۳۲۱)-

 $^{^{7}}$) (عمدة القارى (ج 2 1 ص ۱۵۳) وشرح ابن بطال (ج 2 2 3) وكتاب الامالى (ج 3

٣) (فيض الباري (ج٣ص ٤٣١)-

أ (حواله بالا وفتح البارى (ج۶ص۶۶)-

۵) (فتع الباری (ج۶ص۶۶)-

ع) (البقره: ٧١-

٧) (عمدة القارى (ج ٤ ١٥٣٥٥)-

۸) (عمدةالقارى (ج^۲ ۱۵۲ص۱۵۲)-

عنف البارى كتأب الجهاد (جلدامل)

کمزوری سړی سورلنی له بل سړې دیکه ورکوی نو هغوی نظیم اوفرمائیل ((دهب مناابالام)) یعنی البعین دغه شان چه څوك د ځناور په شړلوکښې معین وی ده ته به په دې اجر او ثوار ملاویږی.(۱)

٥٠-بَاب: الرَّكُوبِ عَلَى النَّابَةِ الصَّعْبَةِ وَالْفُحُولَةِ مِنُ الْخُيْلِ
وَقَالَ رَاشِدُبْنُ سَعْدِ كَانَ السَّلَفُ يَسْتَعِبُونَ الْفُحُولَةَ لِأَنَّهَا أَجُرَى وَأَجْبَرُ
دُ تَرجمة الباب مقصد دلته دُ باب به ترجمه كنبى دُ شراح بخارى اختلاف دى چه دُ امام بخارى بُرِيْنَةِ مقصد دُ دى ترجمه نه څه دى؟

نود ابن حجر او ابن بطال مُشَلِّم رائی دا ده چه د نر اس او مست څناور سورلی افضل خودلی کیری. (۲)

حافظ صاحب برای فرمائی چه امام بخاری برای به ترجمه کښی کړی شوی دعوی په ډور طریقوسره ثابته کړی ده. یود راشد بن سعد د اثرنه چه په دې کښی دا راغلی دی چه سلفو به نر اسونه خوښول نو د دې نه امام بخاری برای د سرکش څاروی په سورلئی باندې استدلال کړې دې. دوئم د حضرت انس الرای حدیث په باب کښی ذکر شوی نه، په حدیث شریف کښې د اس د پاره د مذکر ضمیر استعمال شوی دی نو معلومه شوه چه د ابوطلعه الری مذکوره اس فحل(نر) وو (۳)

دغه شان علامه عینی مربع د مختلف صحابه کرامو رضوان الله علیهم اجمعین باره کنی ذکر کړی دی چه هغوی به اناث الخیل خوښول، خاص توګه باندې خالدبن ولید نگانی، چه د هغوی باره کښې راځی ((انه کان لایقاتل الاعلی ادی، لانهالات د مالهول، وهی اتل صهیلا والفحل یحبه

۱) (شرح ابن بطال (ج۵ص ۶۶)-

۲) (فتح الباري (ج۶ص۶۶) وشرح ابن بطال (ج۵ص۶۶)-

۳) (فتح البارى (ج٤ص ٤٤)-

٤) (شرح ابن بطال (ج٥ص ٤٤)-

^{2) (}عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٥٣)-

ح بن البَارى

ل مویه حق ینتفق، وتؤدی بصهیلة)) هغه به صرف په اسپه باندې جنګ کولو خکه چه هغه منیازې نه بندوی، هغه کمه هنړیږی هم په خلاف د نراس چه هغه د منډې په وخت کښې منیازې بند ساتي تردې چه (د متیازو پوکنړئی) اوشلیږی او هغه په خپل هنړاری سره تکلیف هم رسوی (۱)

د علامه عینی او علامه کنکوهی (رحمهما الله) رائی د علامه عینی بینی رائی دا ده چه امام بخاری د باب په ترجمه کښی په سخته سورلنی باندی سورلی کولو مشروعیت او جواز بیانول غواړی که سورلی کونکی د دی اهل وی ګنی نو نه ۲۱)

او علّامه گنگوهي مينية هم د دي قائل معلوميږي. شيخ الحديث محمدزكريا مينية فرماني

(ظاهركلام الشيخ قدس سماة العزيز إنه حمل ترجمة المخارى على بيان جواز الركوب على الصعبة)) ٢٠)

دُ حضرت شیخ الحدیث رائی د حضرت شیخ الحدیث محمد زکریا بینی رائی دا دو چه اما م بخاری مُشیخ دلته دا خودل غواری چه مجاهدله په داسی سورلئی باندی عادت جورول پکار دی چه سخت وی او نروی، دی د پاره چه په هغه کښی تکړه والی او بهادری وی او داسی اس د جهاد په میدان کښی ډیر فائده مند او په کار راځی. نو هغوی لیکی:

((والاوجه عنده فذا العبد الضعيف: ان غن ض الامام الهخارى ترغيب الركوب على الدابة المعبة والغولة، كما يدل عليه اثر راشد بن سعد) (۴)

أو دلته د حضرت شيخ الحديث صاحب رائي بهتر او مناسب معلوميني.

توله: وقال راش بر سعن: كان السلف يستحبون الفحولة لانها اجرى واجمر: او راشدبن سعد رُشَالِيَّ فرمائى سلفو نراسونه خوښول ځكه چه هغه د ډيرې بها درنى او جارت والا وى.

راش برب سعن: دا راشدبن سعد مرائی – یفتح الهیم وسکون القاف ۵ میران – بضم الحاء (۶) م حمص مینید دی.

هغه د حضرت ثوبان، حضرت سعدبن ابی وقاص، ابوالدردا، عمرو بن العاص. ذی مخبر حبشی، عبه بن عبد، عوف بن مالك، معاویه، یعلی بن مرة، مقدام بن معدی كرب. عبدالله بن بسر، ابوامامة، ابن عامر عبدالله بن لحی هوذنی او عبدالرحمن بن جبیر بن نفیر دفیالله تعالی عنهما جمعین وغیره نه د حدیث روایت كوی.

انظر تفصیل ذلک فی عمدة القاری (ج ۱ اص۱۵۳) وفتح الباری (ج ۶ ص ۶۶) وقال العلامة القرطبی انظر تفصیل ذلک فی عمدة القران (ج ۸ ص ۳۶) والمستحب منها الاناث قاله عکرمة وجماعة -

٢) (حواله بالا-

٣) (تعليقات لامع الدراري (ج٧ص٢٣٢) والابواب والتراجم (ج١ص١٩٤)-

ا (حواله بالا ـ

 $^{^{\}circ}$) (وقيل: بضم الميم والاول قول الاكثر انظر تعليقات تهذيب الكمال (ج $^{\circ}$ $^{\circ}$

۶) (تعليقات تهذيب الكمال (ج ٩ص٨)-

كتىأب الجهاد (جلداول)

مرب و این عمرو، معاوید بن عثمان، صفوان بن عمرو، معاوید بن اودهغوی نه د حدیث روایت کونکوکښی حریز بن عمره این مر ر۔ ۔۔وں ۔۔ صالح حضرمی،علی بن ابی طلحہ، ثوربن یزیداو ابوبکربن ابی مریم انتخا وغیرہ شامل دی (۱) ر ب ت ت ت ت ت ت المحمد بن عبدالله عجلى، يعقوب بن شيبة أو نسائى من المام يحيى بن معين (٢) أبوحاتم، أحمد بن عبدالله عجلى، يعقوب بن شيبة أو نسائى المنا فرمائی ثقة (٣)

امام دارقطنی مرد فرمانی ((لاباسبه اذالم یحدث عنه متوك)) (۴)

على ابن المديني مرايد فرمائي چه ماد يحيى بن سعيدنه تپوس اوكړو ((تروى عن راشه بن سعد؟قال: ماشانه هواحب الى من مكحول)) (٥)

مفضل مُناهَ فرمائى ((راشدبن سعدالبقمال من حبيرمن اثبت اهل الشام)) (ع)

اوابن سعد ملك فرمائي ((وكان تقة)) (٧)

البته ابن حزم مولك فرمائي ((هوضعيف)) (٨)

لیکن علامه ذهبی مواند به ابن حزم باندې رد کولو سره فرمائی ((فهذا من اقواله البردودة)) (۹) د صفین په جنګ کښې راشد بن سعد مواند د حضرت معاویه کانو سره شریك وو (۱۰) او په هغه جنگ کښې د هغه يوه سترګه هم ضائع شوې وه. (۱۱)

امام بخاری مرای د هغه نه په باب کښی صرف مذکوره اثر نقل کړیدې او هیڅ روایت ئی نه دي اخستي، البته إمام مسلم والم نه علاوه باقى حضراتو د هغه روايتونه اخستى دى (١٢) دَ اَكْثَرُو امَّامَانُو دَ جَرَحُ او تعديل دا خيال دي چه دَ هَغَهُ وفات دَّ خَلَيفَه هشام بَنْ عَبَدالملك په دور حكومت كښې په كالى ۱۰۸ه كښې شوې (۱۳)

. اودَ وفات په وخت کښې دَ هغه عمر تقريباً (٩٠) کاله وو. (١٣)رحمه الله تعالى رحمة واسعة.

١٤) (سيراعلام النبلاء (ج ٤٥٠ - ٢٩)-

1.5

١) (دَ شيوخ او تلامذه دَ تفصيل دَ پاره او گورئ تهذيب الكمال (ج٩ص٩-١٠)-

۲) (تاریخ عثمان بن سعید الدارمی)ص ۱۱۰) رقم (۳۲۸)-

٣) (تهذيب الكمال (ج٩ص١٠)-

٤) (حواله بالا و تهذیب تاریخ دمشق لابن عاسکر (ج۵ص۲۹۳)-

۵) (تهذيب الكمال (ج٩ص٠١)-.

ع) (حواله بالا-

٧) (الطبقات لابن سعد(ج٧ص٤٥٤)-

٨) (سيراعلام النبلاء (ج ٤ ص ٩٠)-

٩) (حواله بالا-

١٠) (حواله بالا وشرح الكرماني (ج١٢ص٢٧٣)-

۱۱) (تاريخ البخاري (ج٣ص٢٩٦)-، ۱۲) (تهذيب الكمال (ج٩ص١١)-

١٣) (ُعمدة القارى (ج ٤ ١ص١٥٠) وميزان الاعندال (ج ٢ ص٣٥) وتهذيب الكمال وتعليقات (جص١١)-

داجر او اجسر معنی ((اجرأ)) همزه او بغیرهمزه دواره شاند مروی دی. که همزه سره وی نود د اجر . دی معنی به د بهادر وی او دا به د جراءت نه مشتق وی. او که بغیرهمزه وی نو د دی معنی دې _{زېات} تيزمنډې وهونکی او دا به مشتق وې د جری ند.(۱₎

اد (راهس)) جسارة نه مشتق دې د دې معنی هم بهادری ده. (۲)

کړېشوې دې. مطلب دادې چه دا نراس داسپې اوخصني اس نه زيات بهادراوتيزر فتاره وي. (۳)، عُلامه کرمانی ﷺ فرمائی چه فحولة دَفحل جمع ده په دې کښې چه کومه تا، ده هغه دَ

حمعیت د تاکید د پاره راوړلی شویده لکه د ملك جمع چه ملائكة ده. (۴)

[٢٤٠٠] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بُنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبُدُ اللّهِ أَخْبَرَنَا شُغْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ سَمِعْتُ أَنْسَ بُنَ مَالِكِ رَضَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ كَانَ بِالْهَدِينَةِ فَزَعْ فَاسْتَعَارَ النَّبِيُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَسًا لِأَبِي طَلْعَةً يُقَالُ لَهُ مَنْدُوبٌ فَرَكِبَهُ وَقَالَ مَارَأَيْنَامِنُ فَزَعِ وَإِنْ وَجَدْنَاهُ لَبَعُوا [ر:٣٨٣]

تراجم رجال

- احمل بن هجمد: دا احمدبن محمدبن موسى ابوالعباس السمسارالمروزي تطبح دي، د مغوى لقب مردويه دي. (٥)

ری صحیح نه ده، ځکه چه دا د بخاری د رجالو نه نه دی بلکه د مروزی و بخاری د رجالونه دی بلکه د مروزی و بخاری د رجالونه دی. (۶) اود أمام دارقطني رُوالله دا وينا چه دا احمدبن محمدبن ثابت بن عصمان خزاعي شبويه رويم

-عبدالله: داعبدالله بن مبارك حنظلي مروزي مُركة دي، د هغوي مختصر حالات مهدم الوم په پنځم حدیث کښې تیرشوی دی.(۷)

-- شعبه: دا ابوبسطام شعبه بن الحجاج رُوليَّ دى د دوى هم مختصر حالات (ركتاب الايبان پابالىسلىمىن سلىمالىسلىون من لسائه ويدى) لاندې تيرشوى دى. (Λ)

۱) (شرح الكرماني (ج۱۲ص۱۶ (وفتح الباري (ج^۶ص^{۶۶)}-

۲) (حواله بالا -

۲) (فتح البارى (ج۶ ص۶۶) وعمدة القارى (ج ۱ اص۱۵۳)-

^{؛) (}شرح الكرماني (ج١٢ص١٤)-

٥) (دَ هَغُوى دَ حالاتُودَپاره اوگورئ كتاب الوضوء باب ماينفع من النجاسات في السمن والماء-

 $^{^{6}}$) (عمدة القارى (ج ۱ ک ص ۱۵۳) وفتح البارى (ج 8 ص 9) -

۷) (کشف الباری (ج۱ص۴۶۲)-

۸) (کشف الباری (ج ۱ ص۶۷۸)-

م-قتاده: دا قتاده بن دعامه بن قتاده سدوسی مید دی.

ه- انس بر مالك: دا حضرت انس بن مالك الثائث دي، دُ دې دواړو حضراتو حالان (ركتاب الايبان باب من الايبان ان يحب لاخيه لنفسه)) لاندې تيرشوى (١)

تنبیه د حدیث باب تشریحات ماقبل کښې په مختلف ابوابو کښې بیان شوی دی. (۲) دباب ترجمه سره د حدیث مناسبت به ماقبل کښې مونږ د باب د ترجمه د مقصد لاندي د شراحو اختلاف د ترجمه په مقصد کښې نقل کړی دی، همدغه اختلاف ترجمه الباب سره

حدیث کښې هم مناسبت دې چه د حدیث کوم جزء په ترجمه باندې منطبق دې؟

د حافظ ابن حجر مولد د کلام نه مستفادا کیږی چه ترجمه سره د حدیث مناسبت د ((فرسا)) په لفظ کښې دې او هغه داسې چه فرس د پاره نبي کريم گانځ کوم ضمير استعمال کړيدې نوهغه د مذكردي يعنى "وان وجمعنا للهجمال مونودا اس د سمندر په شان تيز رفتاره اوموندلو. نو دا معلومه شوه چه مذکوره اس مذکر یعنی نر وو، حافظ صاحب مین لیکی ((واخذ کونه کان

فحلامن ذكره بضيورالمذكر)) (٣) دَ علامه كِنكُوهِي مُرِيدِ ارشاد: حضرت كنكوهي مُرايدٍ فرمائي چه دَ روايت په ترجمه الباب باندې دلالت او انطباق په دې توګه دې چه څنګه سخت (او اړيل) څاروې په تلوکښې دُ فاصله وهلوکښې د خلل سبب جوړيږي دغه شان روتلونکې څاروې هم لار وهلوکښې د خلل ذریعه جوړیږي نو چه کله په روتلونکي څاوري باندې تلل جائز دي نو په سخت څاروي باندې به هم جائز وي (۴)

دَ شيخ الحديث صاحب رائم: حضرت شيخ الحديث محمد زكريا كاندهلوي براية فرمائي ((ودلالةالروايةعليه بها صار حال فيس ابي طلحة بعد ركوبه صلى الله عليه وسلم حتى قال: وجدناه رانحها)(۵)

یعنی د روایت باب سره دلالت په دې حال کښې دې چه د حضرت ابوطلحه النو اس باندې د رسول الله ناتیم د سوریدو نه پس اوشو تردې چه نبې کریم ناتیم اوفرمائیل مونږ خودا د سمندر په شان اوموندلو. دې نه په سخت او تیزرفتاره څاروی باندې د سوریدلو ترغیب معلومیږی.



١) (کشف الباری (ج٢ص٣-٤)-

٢) (انظرباب الشجاعة في الحرب والجبن وباب اسم الفرس والخمار من هذاالكتاب-

۳) (فتع الباري (ج۶ ص۶۶)-

٤) (لامع الدراري (ج٧ ص٢٣٢)-

۵) (تعلیقات لامع الدراری (ج۷ص۲۳۲)-

٥٥-بَأَب: سِهَامِ الْفَرَسِ

وَ ترجمة الباب مقصد يه دى باب كنبى امام بخارى بيد د غازى اس ته د مال غنيمت نه چه

د مرسه ملاویږي د هغې مقداراو کمیت خودل غواړی.(۱) کومه حصه ملاویږي د هغې مقداراو کمیت خودل غواړی.(۱) اود سهام اضافت د فرس طرف ته په دې اعتبار سره دې چه د اس په وجه مالك د اضافي حصی حقاد ارکیږی (۲)

هُ اللهُ عَنْهُ مُ اللهُ عَنْ أَبِي أَسَامَةً عَنْ عَبَيْدِ اللَّهِ عَنْ الْبِي عَمْرَ اللَّهِ عَنْ الْبِي عُمَرَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَعَلَ لِلْفَرَسِ سَحْمَدُن وَلِصَاحِبِهِ وَضَلَّمَ جَعَلَ لِلْفَرَسِ سَحْمَدُن وَلِصَاحِبِهِ وَضَلَّمَ جَعَلَ لِلْفَرَسِ سَحْمَدُن وَلِصَاحِبِهِ [ran] [**

وَقَالَ مَالِكٌ يُسْهَمُ لِلْحَيْلِ وَالْبَرَاذِينِ مِنْهَا لِقَوْلِهِ وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَلِتَرُكَبُوهَا وَلاَيُسْهَمُ لأَكْثَرَمِنْ فَرَسِ

تراجم رجال

-عبيدبن اسماعيل: دا ابومحمدعبيدبن اسماعيل هباري قري كوفي بينية دې (۴) ۲- ابواسامه: دا ابواسامه خماد بن اسامه بن زید قرشی کوفی بیات دی، د دوی حالات ((كتاب العلم باب فضل من علم وعلم)) لاندې تيرشوې دې. (۵)

- عبيد الله: داعبيد الله بن عمر بن حفص بن عاصم بن عمر بن الخطاب العمري يونية دي (ع) ٣-نافع: دا ابوعبدالله نافع مولى ابن عمر رئيس دې مشهور تابعي دې. (٧)

ه- ابر عمر: دامشهور صحابي حضرت عبدالله بن عمر بن الخطاب لِيَتَجُمُا دي، دَ دوي حالات ((كتابالايمان بابقول النبي مَنْ المُهُمُ بني الاسلام على عبس)) لاندې تيرشوى دى. (٨)

١) (عبدة القارى (ج ١٤ ص ١٥٣)-

 $^{^{4}}$ (حواله بالا وفتح الباری (ج 8 9) (

٣) (قوله: ابن عمر الله الحديث اخرجه البخاري ايضا كتاب المغازي باب غزوة خيبر رقم (٢٢٨) ومسلم كتاب الجهاد باب كيفيت قسمة الغنيمة بين الحاضرين رقم (٤٥٨٤) وابوداود كتاب الجهاد باب سهممان الخيل رقم (٢٧٣٣) والترمذي ابواب السير باب في سهم الخيل رقم (١٥٥٤) وابن ماجه ابواب الجهادباب

قسمة الغنائم رقم (٢٨٥٤)-أ (د دوى د حالاتو د پاره اوګورئ کتاب الحيض، باب نقض المراة شعرها عندغسل المحيض-

۵) (کشف الهاری (ج۳ص ۱٤)-

۶) (دَ دوى دَ حالاتودَ پاره اوګورئ کتاب الوضوء باب التبرزفي البيوت-

٧) (دَ دوى دَ حالاتودَپاره او گورئ كتاب العلم باب من اجاب السائل باكثر مما ساله-

۸) (کشف الباری (ج ۱ ص۶۳۷)-

قوله: ان رسول الله صلى الله عليه وسلم جعل للفرس سهبين ولصاحبه

سهماً: حضرت ابن عمر گنائه دوايت دي چه رسول الله تنظم دَ اس دَ پاره دوه حصي او رَ هغی مالك د پاره يوه د مال غنيمت نه مقرر کړې وه.

په مال غنیمت کښې د اس د پاره څو حصې وي دوه یا یوه؟: دا یوه مشهوره اختلافي مسئله

ده د کومی تفصیل چه (کتاب المغالی) کښی راغلی دی. (۱) امام مالك مخطه (۲) امام شافعی مخطه (۳) امام شافعی مخطه (۳) امام احمد، عمر بن عبد العزیز، حسن بصری. ابن سیرین، حسین بن ثابت، ثوری، لیث بن سعد، اسحاق، ابوثور ﷺ (۴) اوزاعی ﷺ ره)ابن حزم ظاهری روانه (۶) او صاحبین (۷) میزام وغیره مسلك دا دې چه د سور به درې حصى وى يود سور او دوه د هغه د اس.

خو په صحابه کرامو کښې حضرت عمر بن الخطاب، علی بن ابی طالب او ابوموسی اشعری تکافتر (۸)اود امام اعظم او زفر اغیره مذهب دا دې چه د سور به دوه حصی وی يوه دَ هغه او يوه دَ اس. (۹)

خو دا خبره دې واضحه وي چه د راجل (پياده) په سهم کښې هيڅ اختلاف نشته ، د جميع ائمه په نزد هغه ته به هم يوه حصه ملاويږي. (۱۰)

د ائمه ثلاثه دلائل: په دې باب کښې د جمهورو مستدل هغه احادیث دی کوم کښې چه ((للغمس سهمان وللفارس سهم)) الفاظ وارد شوى دى مثلاً باب كنبى دَ حضرت ابن عمر المجاهج روایت دی، همدغه روایت امام بخاری کشت کتاب المغازی کښکې ذکر کړیدې او د دې حدیث لاندی د حضرت نافع مید دا تفسیرهم دی. ((فقال: اذاکان مع الرجل فرس فله ثلاثة اسهم، فانلميكن له في سفله سهم)) (١١)

اود حضرت ابن عمر اللي په باب كښې ذكر شوې حديث د جمهورو صحيح ترين دليل دې.

۱) (کشف الباری کتاب المغازی (ص۲۶ ٤)-

٢) (بداية المجتهد (ج ١ص ٤ ٣٩) والمدونة الكبير (ج ٢ص ٣٢)-

٣) (كتاب الام للشافعي باب كيف تفريق القسم؟ (ج ٤ ص ٤ ٤ ١) و (ج ٧ ص ٣٣٧) -

٤) (المغنى لابن قدامة (ج٩ص٢٠٠) رقم(٩٣٩٧)-

۵) (تكملة فتح الملهم (ج٣ص١٤١)-

۶) (المحلى بالاثار (ج۵ص۳۹۲)-

٧) (الهداية مع فتح القدير (ج٥ص٢٣٥) كتاب السيرباب الغنائم وقسمتها-

 $[\]Lambda$) (او جز المسالک (ج Λ Λ) وروح المعانی (ج Λ Λ)

۹) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٥٥)-

۱۰) (اوجزالمسالک (ج۸ص۳۱۱)-

١١) (الصحيح للبخاري كتاب المغازي باب غزوة خيبر رقم (٢٢٨ ٤)-

که نی الباری کتاب الجهاد (جلدامل) د هغوی یو بل دلیل هغه روایت دې کوم چه علامه طبرانی او مام دارقطنی د حضرت

الورهم المان نه نقل كريدي ((شهدت اناواخی خيب معنافي سان فاسهم لناستة اسهم))(١)

مستدلات امام اعظم منظم عضرت امام اعظم منظم هم به دی مسئله کښی ډیر دلیلونه ورکړی

دی کوم کښی چه احادیث دی، او آثار هم دی او د هغوی قیاس هم مؤیددې. رومبې دلیل: د هغوی د ټولونه مشهور دلیل دحضرت مجمع بن جاریه گاتئ هغه روایت دې کوم چه امام ابوداود کنانځ په خپل سنن کښې نقل کړیدې، حضرت مجمع جاریه څاتئ فرمائی:

وشهدنا الحديبية مع رسول الله صلى الله عليه وسلم فلما انصرفنا عنها اذاالناس بهزون الاباعي.... فقسبت

عيبرعلى اهل الحديبية فقسمها رسول الله صلى الله عليه وسلم على ثمانية عشى سهما وكان الجيش الفاوخمس

مائة، فيهم ثلاث ماتة فارس فاعطى الفارس سهبين وللراجل سهبار) (٢)

رُسُول الله كَلْمُ سره مُونْنِ حَدَّيبِيه كُنِي شُرِيك شُو، كُله چه مُونْنِ دَهغه خَائُ نه واپس شوراوموكتل) چه خلق اوښان زغلوي ...نواهل حديبيه باندې دغزوه خيبرد غنيمت تقسيم اوشو، نو رسول الله ظائم د غنيمت اتلس حصى جوري كړې او د لښكر شمير پنځلس سوه وو په کومو کښې چه درې سوه فارس وو، نو هغوي فارس ته دوه حصې ورکړې او پياده ته دوه حصي ورکړې.

دوئم دليل: حافظ ابن ابي شيبه والمرات خيل تصنيف كښي دې لانديني سندسره د حضرت ابن

عمر الليج دا روايت ذكر كوى:

((حدثنا ابواسامة وابن تمير قالا: حدثنا عبيدالله عن نافع عن ابن عمر كَنْ الله الله على الله عليه وسلم

جعلللقارسسهبين وللراجلسهبا)) (٣)

مذكوره بالا روايت دَحضَرت ابن عمر الله و باب رواياتو صريح معارض دي اودَ دې رواة هم ثقه دى په كوم چه به مونږ انشاء الله نزدې كلام كوو.

دريم دليل دخصرت عمربن خطاب اللي باره كنبي امام جصاص رَامَة فرمائيلي چه د هغوى یو عامل منذربن ابی حمصه د حضرت امام اعظم د قول موافق په مجاهدینوکښی حصی تقسیم کړی چه په هغی باندې حضرت عمر اللي راضی شو او د څه قسم نکیر ئی اونه فرمائيلو. امام جصاص ليكي:

((روى مثل قول ابى حنيفة عن البندرين ابى حبصة -عامل عبر والمراعظ الله جعل للقارس سهدين وللراجل سهها، فراضیه عبر) (۴)

۱) (عمدة القارى (ج ۱۵۴ ص ۱۵۴) ومجمع الزواند (ج۵ص۲۴۲) دَ نورو دلانلودَپاره فتح البارى (ج۶ص۶۹) او محوری -

٢) (سنن ابي داؤد كتاب الجهاد باب في من اسهم له سهم رقم (٢٧٣۶)-

٣) (المصنف لابن ابي شيبة (ج۶ص٩٦٤) كتاب السير في الفارس كم يقسم له؟.... رقم (٣٣١٥٩-

أ (احكام لقران للجصاص (ج٣ص٥٨)-

کشف الباری در المال در قیاس همدغه تقاضا ده چه فرس ته یوه حصه ورکریشی نه چه دوه، ځکه چه په دونم صورت کښې د فرس په مسلم باندې اوچتوالي ظاهريږي.حالانکه مسلمان د ټولونه افضل دي، د امام صاحب نه روايت دې چه هغوى فرمائيلى ‹‹لايسهم للغارس الاسهم واحر وقال: اكمة ان افضل بهيمة على مسلم)) (١) چه فارس له (دُهغه اس ته) به يوه حصه ملاويري او ونی فرمانیل چه زه دا خبره نه خوښوم چه یو څاروی له په مسلمان باندې فضیلت _{او} اوچتوالي ورکړم

يوه اهمه تنبيه د غزوه خيبر نه اول د غنائمو تقسيم به د نبي كريم ناهم په اختيار كښې وو چه نبي كريم ناهم د خپلې رائې مطابق چاله څومره وركول غوښتل وركول به ئي. د ټولو نه مُخکبنی دَ عنائمو تقسیم دَ مُجاهدینودَ حق په روسره په غزوه خیبرکښی اوشو په کوم کِښې چه دا خبره مقرر شوي وه چه فارس ته به دومره حصي ملاويږي اوراجل ته دومره ر۲٪ و اختلاف سبب د ائمؤ په مينځ کښې چه فارس ته ملاويدلو حصه کښې کوم اختلاف اوشو د مغی بنیادی سبب د غزوه خیبر د شرکاؤ د شمیر اختلاف دی. په دې سلسله کښی په روایاتوکښي سخت تعارض موندلې شي چه د خیبر د شرکاو څومره تعداد وو؟ د شرکا، خيبرِ تعداد كنبي تقريبًا لس اقوال دي په كوم كنبي چه درې دير مشهور دى:

(د حضرت مجمع بن جاریه اللي په روايت کښي (چه له شان وړاندې تيرشو) معلوميږي چه د دوی تعداد پنځلس سوه وو، درې سوه سواره او نور دولس سوه پياده وو. (۳)

🕜 حضرت براً، بن عازب للشخ (۴) او حضرت جابر اللشخ (۵) دَ روایت نه معلومیری چه خوارلس سوه تعداد وو په کوم کښې چه دوه سوه سواره او نور پياده وو. (۶) امام مغازي موسى بن عقبه رئيد شپاړس سوه تعداد خودلې دې. (۶)

راجح شمير څخه دې؟ شوافعو وغيره المنام خوارلس سوه تعدآد راجح ګرځولې دې. علامه بيهقى مُنافَةُ وَحضرتَ جابر بن عبدالله المُنافِئ، حضرت ابن عباس المُنافِئ، صالح بن كيسان، بشير بن يسار اواهل مغازي قول نه استدلال كولوسره خوارلس سوه شمير ته راجح وئيلي دي. (٧) اوِ علماء احناف دَ حِضرت مجمع بن جاريه الله وايت راجح كرخوي.

دُترجیح وجوهات داحنافو په مذهب د راجح کیدو دا لاندینی وجوهات دلالت کوی.

① دُ ثقه زیاتوالی مقبول وی حضرت جابر گاتئ نه چه څنګه دا مروی دی چه دَ خیبر دَ شرکاؤ تعداد څوارلس سوا وو دغه شان دا هم مروی دی چه دَ هغوی شمیر پنځلس سوا

۱) (عمدة القارى (ج ۲ اص۱۵۵)-

٢) (بذل المجهود (ج ١٢ ص ٣٣٤) وتنظيم الاشتات (ج ٤ ص ١٢٠)-

٣) (سنن ابي داود كتاب الجهاد باب في من اسهم له سهم رقم (٢٧٣٤)-

٤) (صحيح البخاري كتاب المغازي باب غزوه الحديبية....، رقم (١٥٠)-

۵) (حواله بالا رقم (۱۵۳ ٤)-

٤) (فتح الباري (ج٧ص٠٤٤) واعلاء السنن (ج١٢ص١٥٧)_

٧) (عون المعبود شرح سنن ابي داؤد (ج٧ص ٣٢٥) رقم (٢٧٣٣) واعلاء السنن (ج١١ص١٥٠)-

ود، حضرت سالم بن ابي الجعد (۱) او حضرت سعيد بن المسيب المالية (۲) د حضرت جابر مالية نه روایت کړیدې "انهم کانواغیس مشرة ماند" (۳)

دزیادت اثبات کونکی، ددی دنفی کونکی په مقابله کښی راجح وی، د حضرت جابر ر بنگلس سوو روایت د زیادت اثبات کوی نو په دی وجه به هم دغه راجی وی (۴)

و دَحافظ ابن حجر الله و کلام نه هم دا مستفاده کیږی چه هغه هم د پنخلس سوو د شمیر راجح کیدو قائل دی،هغوی د این سعد میشه او د حضرت این عباس کی نام نقل کری دی چه د خيبر د شركاو شمير پنځلس سوا وو. (۵)

مافظ میاند بخیله مقدمه کښې ذکر کړی دی چه هغه په فتح الباری کښې هم هغه احادیث اخلی چه صحیح یا حسن وي او په ضعیفِ باندې به سکوت نه کوی. دینه معلومه شوه چه د علی ہے۔ حضرت ابن عباس کا مذکورہ روایت د هغوی په نزد صحیح یا حسن ضرور دې ګنی په ډې به ئی ضرور کلام کولو.(^۶)

رَ دٰي وجوهاتو بِه بنا معلومه شوه چه غزوه خيبرکښې رسول الله تُنظِم کومو لښکريانوته سهم ٔورکړې وو د هغوي شمير پنځلس سوا وو د دې نه غلاوه چه زياتي کسان وو هغه ښځې خادماًن او ماشومان وواو هغوی ته سهم نه وو ورکړې شوې. (٧)

دې نه دا هم متبادر کيږي چه موسى بن عقبه او عقبه او کوم د شپاړسو شمير خودلى دې غالبا په دې کښې ئې ښځې خادمان او ماشومان هم شامل کړي دي.

د دي دليل دا دي چه د خيبر غنائم ئي اول شپږويشت (٢٧) حصي کړې وو په کومو کښې چه اتلس حصى دُ مسلمانانو دَ عام ضَرورياتودَپاره ايخودې وې ّاو باقى اتلس حصّي پُهْ مجاهدینوکښی تقسیم کړیشوې (۸)

د سنن ابی داؤد روایت دی چه نبی کریم کالل د خیبر غنائم اتلس حصوکښی تقسیم کړې

وې، په هره حصه کښی سل خصی وې نو دا اتلس سوا حصی شوی (۹) اوس د خیبر د غنائمو په تقسیم کښی اختیار کړیشوې صورتونه دا لاندینی کیدیشی: که د اسلام لښکر په څوارلس سوو باندې مشتمل وي، په کوم کښې چه دوه سوا سواره

١) (صحيح البخاري كتاب المغازي باب غزوة الحديبية رقم (٣١٥٢)-

٢) (حواله بالا رقم (١٥٣٤)-

٣) (اعلاء السنن (ج١٢ص١٥٥)-

٤) (حواله بالا ـ

۵) (فتح الباري (ج٧ص ١ ٤٤)-

۶) (هدى الساري ُ (ص٤) واعلاء السنن (ج١٢ص١٥٧)-

۷) (اعلاء السنن (ج۱۲ص۱۵۷)-

^۸) (زادالمعاد (ج۳ص۳۲۸)-

٩) (سنن ابي داؤد كاب الخراج والفي والامارة باب ماجاء في حكم ارض خيبر رقم ٣٠١٠-٣٠١)-

كتاب الجهاد (جلداول) كشف الباري

وی او د سورو درې حصې وی اود پیاده یوه حصه یعنی . ۱۸۰۰-۱۲۰۰

 که د لښکر تعداد پنځلس سوا وی په کوم کښې چه درې سوا سواره وی او د سور دوه حصی او د پیاده یوه حصه وی نو ۳۰۰×۲=۰۰۰+۲۰۰۱ = ۱۸۰۰.

 که لښکر شپاړس سوا وی او دې کښې دوه سوا سواره وی اوهمدغه شان د سور دوه حصی او د پیاده یوه حصه نو، ۲۰۰۰×۲=۰۰۰+۱۳۰۰ =۱۸۰۰.

او دا خبره پورته معلومه شویده چه د لښکر په تعداد کښې راجح قول د پنځلس سوو دي نو

د سور هم دوه حصی شوی نه چه دری حصی، کماقاله مجمع بن جاریة گُونُونُو (۱) د جمهورود دلائلوجوابونه: د جمهورو د ټولو نه صحیح او قوی دلیل د حضرت ابن عمر گُونُو حديث وو ليكن دا حديث په بوجوه د جمهورو مستدل نشي جوړيدي، وضاحت دا دي:

آ په دې کښې د غنائمو د تقسيم چه کوم بيان دې د هغې باره کښې دا معلومه نه ده چه دا تقسيم د غزوه خيبرنه وړاندې دا تقسيم د غزوه خيبر نه وړاندې شوې وو که روستو، ممکن ده چه د غزوه خيبرنه وړاندې واقعه وي او منسوخ وي. (۲)

٣ عام قانون او ضابطه همدغه ده چه فارس ته هم د فرس په شان يو حصه ملاويدل پكار دى ليكن نبى كريم كريم كريم المجاهدينو ته د استحقاق د نفل په توګه زياتي حصى وركول هم ثابت دی، لکه چه حضرت سلمه بن الاکوع اللّٰتُؤ نه مِروّی دی چه هِغُوی تُهُ نبی کریم عُزُوه ذی قرد کښې دوه حصې ورکړې وې، یوه د فارس او یوه د راجل چه کله هغه راجل وو. د حضرت زبیر بن عوام راجل وو. د حضرت عبدالله بن زبیر نگاتئ نه روایت دې چه د هغه پلار حضرت زبیر بن عوام ِ لَمُنْتُونَ تَه دِهُ غَنيمت څلور حصي ورکړې شوې وې او دا زياتي چه دَ نفل په توګه ور کړيدې کیدې د دې مقصد مجاهدینوته د جنګ او جهاد ترغیب ورکول وو. (۳)

صاحب هدایه علامه مرغینانی مراید د ارشاد حاصل دا دی چه د حضرت ابن عمر این ناد دواره قیسم اقوال مروی دی چه په څه کښې د فارس د پاره د دریو حصو ذکر دی او په څه کښې د دوو، هرکله چه د هغوي په دواړو قسم روايتونوکښې تعارض دې نود حضرت ابن عباس المالة حديث (۴) راجح به وي، په كوم كښې چه فارس ته د دوو حصو وركولو ذكر دي.

((سهملهوسهملغماسه))

@ مولانا خلیل احمد سهارنپوری مراید این کنبی فرمائی چه ډیر ځل عربی کتابت کنبی الف حذف كولى شي، ((للغماس سهمين)) به اصل كښي ((للقارس سهمين)) وو، الف حذف كړې

١) (اعلاء السنن (ج١٢ ص١٥٧)-

٢) (بذل المجهود (ج١٢ص١٤٧) وتنظيم الاشتات (ج٤ص١٢٠)-

٣) (حواله بالا واحكام القرآن للجصاص الرازي (ج٣ص٥٩) واعلاء السنن (ج١٢ص١٧١)-

٤) (اعلاء السنن (ج١٢ص١٤٧) وتنظيم الاشتات (ج٤ص١٢١)-

۵) (الهداية (ج٢ص٥٧٣)-

شو د دې وجه دا ده چه دلته د راچل په مقابله کښې لفظ فړس ذکرکړيشويدې. د کوم نه چه هم دا په پوهه کښې راځي چه صحيح لفظ په اصل کښې قارس وو نه چه قرس، ليکن راوي جدد راوي فهم حجت نه دي.

أو زمونږ د دې دعوي تائيد چه فرس دراصل فارس وو، مصنف ابن ابي شيبه د دې روايت نه کیږی کوم چه امام اعظم مُراشه په دلاتلو کښې ذکر کړې دې چه ((عن ابن عبر الله الله عبر الله الله عبر الله الله مل الله عليه وسلم جعل للقارس سهبين، وللهاجل سهما) دا هم هغه روايت دې كوم چه امام بخارى وغيره د فرس په لفظ سره روايت كړې دې. دارقطنى هم د حضرت ابن عمر المانځ نه نقل كړى دى ((انالئې صلى الله عليه وسلم قسم للفارس سهدين وللي اُجل سهما))(١)

اود دې ټولو روايتونومطلب همدغه دې چه فارس ته به د هغه د فرس د حصي سره دوه حصي ملاويږي نه چه درې حصي.(۲)

٠ بيا په دې خبره ځان پوهه کړئي چه په دې باب کښې په اعتبار د مجموع دوه قسمه متعارض احادیث دی، یوخو هغه دې چه په هغې کښې (اللقارسسهمين) راغلې دې او نورو روایاتوکنی ((للفارس ثلثه)) مروی دی لیکن اولنی قسم روایات د قیاس موافق دی لیکن چه د جهاد په معامله کښې هم رجل اصل دې او فرس د جهاد سامان دې اود ده تابع دې ځکه چه د فرس نه بغیرهم یوازې د جهاد کار کیدیشی او صرف په فرس سره نه چلیږی نو فرس تابع شواوتابع له په اصل باندي فضيلت وركول د عقل او قياس نه خلاف ده. چه كله په احاديثو كِنني تعارض دي نو هغه حديث به راجِح وي چه د قياس موافق وي كما تِقرر في الاصول (٣) ومضوت ابورهم و حديث جواب او تركومي چه و حضرت آبورهم المنت تعلق دي دينه هم جمهورد استدلال په وجوهاتو صحيح نه دې تفصيل دا دې:

() د دې حدیث په سند کښې يوراوي قيس بن ربيع دې، بل اسحاق بن عبدالله بن ابي فروه دې اول مختلف فيه راوي دې او دونم ضعيف دي.

ابيا دَحضرت ابورهم الله صحبت كنبي هم اختلاف دي چه آيادي صحابي دي كه نه ؟ (۴) ل په دې حديث شريف کښې هم هغه د نقل احتمال موجود دې. ممکن دی چه رسول الله على هغه ته اود هغه رور ته چه كومي دوه حصى زياتى وركړې وې هغه د نفل په توګه وى نو په دې وجه دې نه استدلال صحيح کيدې نشي. (۵)

١) (سنن الدارقطني (ج ٤ ص ٤١) كتاب السير رقم (١٣٨ ٤)-

٢) (بذل المجهود (ج٦٦ص ٢٣٤-٢٣٥) وتنريم الأشتات (ج ١٢١)-

۲) (حواله بالا-

٤) (اعلاء السنن (ج١٢ص١٤٥)-

 ⁽حواله بالا -

قوله: وقال مالك: يسهم للخيل، والبراذير. منها، لقوله: ((وَالْخَيْلُ وَالْبِغَالُ وَالْخَيْرُ وَالْبِغَالُ وَالْخَيْرُ لِتَرْكَبُوهَا)): اوامام مالك بَيَالِيَّ فرمائي چه د غنيمت نه به خيل او براذين ته حصه وركړي كيدي شي د الله تعالى د دې قول په بنا باندې، (او الله تعالى پيداكړى دى ستاسو د پاره) اسونه قوم د الله تعالى د دې قول په بنا باندې، (او الله تعالى پيداكړى دى ستاسو د پاره) اسونه قوم د الله تعالى د دې قول په بنا باندې، (او الله تعالى پيداكړى دى ستاسو د پاره) اسونه قوم د باره الله د د باره الله د باره د باره الله د باره د باره

قجری او خره دی د باره چه تأسو په دی سورلی او کړئی آ اختلاف نسخ په بعض نسخو کښی د حضرت امام مالك رای دا پورته ذکر شوی قول د حضرت ابن عمر الله و حدیث مقدم دی کهالی دخترت ابن عمر الله و حدیث نه اول دی او د ابوذر په نسخه کښی حدیث مقدم دی کهالی نسختنا در)

دَ مذكوره تعلیق تخریج دا تعلیق موصولاً امام مالك منه موطا كښې نقل كړې دې (۲) د براذين او هجين معنى براذين د برذون جمع ده، علامه مطرزى مَناه المغرب كښې فرمائى چه برذون تركى اسونوته وائى د دې ضد عماب بكسم العين المهملة - دې او مؤنث ته برذونه وائى (۳)

بعض دا وآئی چه براذین هغه اسونه دی چه د روم نه راوستلی شو، دا اسونه به په کندو. غرونو او سختو لاروکښی په منډو کښی مضبوط وو په خلاف د عربی اسونو. (۴)

بیا د امام مالک رسید هم په دې تعلیق کښې یو بل لفظ زیاتي هم مروی دې هغه دې الهجین (۵) او هجین هغه اس ته وائی چه د هغه په والدینو کښې یوعربی وی او بل غیرعربی او بعضو وئیلی دی چه د کوم اس پلار عربی وی هغې ته هجین وائی او د چا چه مور عربی وی هغې ته مقرف وائی (۶)

البته د امام احمد المناه دا روايت دي چه هجين او بردون هم يو څيز دي. (٧)

۱) (عمدة القارى (ج 1 ۱ ص ۱۵۵) وشرح القسطلانى (ج 0 ص 0) -

٢) (لمؤطا للامام مالك بن انس (ج٢ص٤٥) كتاب الجهاد باب القسم الخيل في الغزو رقم (٢١)-

٣) (المغرب (ج ١ص ٧١) وعمدة القارى (ج ١ ١ص ١٥٥)-

^{\$) (}حواله بالا-

۵) (المؤطا للامام مالك بن انس (ج٢ص٤٥) كتاب الجاهد باب القسم للخيل في الغزو رقم (٢١)-

ع) (عمدة القاري (ج ٤ ١ص١٥٥) وأعلاء السنن (ج ١٢ص١٧٥)-

٧) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٥٥) والمغنى لاب قدامة (ج ٩ ص ٢٠١) رقم (١٩٤٧)_

٨) (شرح ابن بطال (ج٥ص٤٧) وعمدة القارى (ج٤١ص١٥٥) وفتح البارى (ج٤ص٧٤) _

ے عف الباری

کفالباری کتاب الجهاد (جلداول) دی؟ نو هغوی اوفرمائیل چه په اسونوباندې زکوة شته؟ مقصد همدغه وو چه په خیل باندې زكوة نشته، نو په دې وجه په براذين باندې هم زكوة نشته دا (د ائمه ثلاثه مذهب دي) ځكه د برادین هم د خیل نه دې (۱)

دُمُدُكُورَهُ تعليٰق مقصد امام بخارى مُسِيَّة د دي تعليق په ذريعه يو بلي اختلافي مسئلي طرف ته اشاره فرمائيلي ده. چه بردون په اسونو کښې داخل دې او که ند؟ او ده ته په په غنيمت کنی حصه ورکولی شی او که نه؟ او څومره به ورکولی شی؟

انمه ثلاثه امام اعظم ابوحنیفه، امام شافعی، امام مالك، ثوری، ابوثور، خلال، عمرین عبدالعزيز المنظم مسلك دا دې چه هجين برذون او عراب سهم كښې برابر شريك دې ټولوته

به يو شأن حصه وركولي شي. (٢) او امام ليث بن سعد المنظر و عراب و فضيلت قائل دي. هغه فرمائي چه هجين او برذون ته به دُ عراب برابر حصه نه بلکه کمه ورکولی شی. (۳)

اود آمام احمد من نه به دې مسئله کښې څلور اقوال نقل دی:

٠ صِرف يوه حصه به وركولي شي نه چه ذوه. لكه چه فرس كښي هغه د دوو حصو قائل دي.

٠ د جمهورو د قول موافق چه ده ته به هم د عربي نسل په شان ورکولي شي.

که براذین دَ عراب په شان په جنګ کښې حصه واخلي تیزي اوښائي نود هغه د پاره هم د عراب په شان مکمل سهم به وي او کمه حصّه به نه وي. ً

براذین ته به د غنیمت نه حصه نه ملاویږی. راجح قول رومبي دې (۴)

د جمهورو دلائل د جمهورو يو دليل خو هغه آيتِ مبارك دي كوم چه امام بخاري بيني ذكر كړيدې، بل هغه احاديث دى په كوم كښې چه د سهام فرس ذكر راغلې دې. په دې ټولو احادیثُوکښی دا خبره ده چه هغوی تُرُخُمُ فرس له حصی ورِکړې دی او دا احادیثِ مطلق دی په دې کښې دا تصریح چرته هم موجود نه ده چه هغوی د اس نسل او جنس ته کتلی او په سهام کښې ئې کمې يا زياتې کړيدې. (۵)

اود قیاس تقاضا همدغه ده چه په برادین او عراب کښي هیڅ قسم فرق اونه کړیشي ځکه چه براذين هم حيوان ذوسهم دي. لکه څنګه چه سړې دې، لکه چه په سړوکښې د نسل لحاظ نشى كولى دغه شان به په اسونوكښې هم د دې اعتبارنشي كولې او ټولوته به برابره حصه ورکولي شي. (ع)

دامام احمد او لیث دلائل او د هغی جوابونه: د هغوی رومبی دلیل هغه روایت دی کوم چه

١) (المؤطاللامام مالک (ج٢ص٥٧٤)-

٢) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٥٥) وفتح البارى (ج ٤ص ٤٧) والمغنى (ج ٩ص ٢٠١) واعلاء السنن (ج ١٢ ص ١٧٧)

٣) ((عمدة القارى رج ١٤ ص ١٥٥) وفتح البارى (ج٤ص ٤٧) واعلاء السنن (ج١٢ ص ١٧٧)-

٤) (المغنى (ج ٩ ص ٢٠٦) رقم (٤ ٩ ٤) واعلاء السنن (ج ١٢ ص ١٧٧)-

ل (المغنى (ج ٩ص ٢٠١) واعلاء السنن (ج ١٢ص ١٧٨) واحكام القران للجصاص (ج ٣ص ٤٠) -

^ع) (حواله بالاً-

سعيد بن منصور او ابوداؤد التيم د مكحول نه روايت كړې دې.

((ان النبى صلى الله عليه وسلم هنبئ الهجين يوم غيبروع بالعراب فجعل للعرب سهبين وللهجين سهما))(١) يعنى نبى كريم ناير المحين اسونو تحقير اوكرو اود اعراب تعظيم، عراب ته نبى دوه حصى وركري او هجين ته يوه حصه.

د دې دليل جواب حافظ ابن حجر او کړې دې چه دا روايت منقطع دې نو په دې وجه

دا د استدلال قابل نه دې.(۲)

د هغوی دوئم دلیل هغه اثر او حکایت دی کوم چه امام شافعی مینیم کتاب الام کنی او سعیدبن منصور خپل سنن کنیی د علی بن الاقمر په طریق سره نقل کړیدی. فرمائی چه اسونو حمله او کړه نو عربی اسونه خو خپل منزل ته اورسیدل لیکن براذین روستو پاتی شو، نو منذر بن ابی حمصه بن ابی حمصه وادعی اودریدو او وئی وئیل چه کوم خپل مقام ته اورسیدل هغوی سره به زه هغه شمیر نه کړم چه کوم روستو پاتی شو، یعنی هغه عربی اسونو ته فضیلت ورکړو. دا خبره حضرت عمر المالي ته اورسیدله نو هغوی اوفرمائیل وادعی دی د هغه مور ورك کړی (یعنی هغوی د منذر د مذکوره فعل تصویب او تعریف او کړو) نور ئی اوفرمائیل دهغه مورهغه نر راوړلی دی هغه چه کومه فیصله کړیده هغه جاری کړئی، نو دی د ټولونه رومبی سړی وو چا چه براذین له د عراب په مقابله کښی کمه حصه ورکړه (۳) لیکن دا دلیل هم حافظ ابن حجر میکوی منقطع ګرځولی دی. (۴)

امام احمد رواید دی اثر جواب ورکولو سره فرمانی چه پخپله د حضرت عمر ایم دمندر بن ایم احمد رواید در دی اثر در دی اندی حمصه وادعی په مذکوره فعل باندی حیرانتیا د دی خبری مقتضی ده چه د دی واقعی نه وراندی براذین ته هم د عراب په شان مکمل سهم ورکولی شو. دی نه دا ثابته شوه چه عادت مستمره په براذین اوعراب کښی برابر د شروع نه راروان وو. (۵)

حضرت امام محمد رُوالَيْ نور فرمائی چه منذر د حضرت عمر الله عامل ووهغه چه کومه فیصله او کره مجتهدفیه کښی ئی او کره او حضرت عمر الله د هغه مذکوره فیصله په ځائ اوساتله لیکن دا د دې د پاره نه وه چه پخپله د حضرت عمر الله رائی هم دا وه چه هغه هم د منذر هم خیال وو بلکه د دې وجه دا وه که چرې حاکم د یو مجتهدفیه څیز کښی څه فیصله او کړی نو روستنو حکام ته دا حق حاصل نه دې چه هغه د رومبی حاکم فیصله ختمه کړی په دې وجه حضرت عمر الله د هغه فیصله برقراره اوساتله او هغه ئی باطله ونه محر ځوله درې

قوله: ولابسهم لاكثر مرفرس: ديو اس نه به زياتو اسونو ته سهم نه شي وركولي.



١) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٥٥) وفتح البارى (ج٤ص٤٧) واعلاء السنن (ج١٢ ص١٧٧)-

۲) (فتح الباری (ج۶ص۶۶)-

٣) (حواله بالا والمغنى (ج ٩ص ٢٠٢) واعلاء السنن (ج ١٢ص ١٧٤) وكتاب الامام للشافعي (ج ٤ ص ٣٣٧)-

٤) (فتح البارى (ج٤ص٤٧)-

۵) (اعلاء السنن (ج۱۲ص۱۲۷)-

٤) (حواله بالا-

دا د امام مالك ميني د تيرشوي كلام باقى حصه ده. (۱)

دا هم اختلافی مسئله ده، طرفین، امام شافعی، امام مالك او د ظاهریه میم مذهب دا دی چه مجاهدته به د هغه په ډيرو اسونو کښې يو آس ته حصه ملاويږي. په کوم چه هغه جنګ کریدې سره د دې چه هغه د جنګ میدان ته ډیر آسونه راوستې وي.

او امام ابویوسف، احمد، اسحاق، لیث بن سعد، ثوری، اوزاعی، مالکیدند ابن وهیب او ابن جهام منظ مسلك دا دې چه دوو ته به سهم وركولي شي. (۲)

دَ جمهورودلائل: () امام مالك منظيم فرمائي ((بلغن الايدين العوام شهدمع رسول الله صلى الله عليه وسلم بغي سين يوم خيبر فلم يسهم له الابسهم في واحدى (٣)

 مبسوط کښې ((ابراهيم التيمي عن اييه)) په طريق دا روايت علامه سرخسي اليه نقل ومائى ((انالنبى صلى الله عليه وسلم لم يسهم لصاحب الافراس الالغرس واحديوم حنين) نبى كريم مُؤَيِّم په غزوه حنين کښې د چيرو اسونو خاوندانوته هم صرف يو سهم ورکړي وو.

علامه سرخسي ميك د دى روايت نقل كولو نه پس فرمائي چه دينه حضرت امام اعظم او امام محمد المنه استدلال كړيدې او د مجتهد د يو روايت نه استدلال د هغه تصحيح ده.

نود دې په تائيد کښي د امام مالك سيد (پورته) ذكر شوې بلاغ نه هم كيږي.

دې نه علاوه سره د دې چه دا روايت مرسل دې ليکن د دې قسم مرسل روايات زمونږ او د اکترو په نزد حجت دي، ځکه چه د ابراهيم پلار يزيد بن شريك مخضرم تابعي دي. (۴)

@ امام ابوبكرجصاص مُشِير د فريقينو مسلك تحرير كولونه پس ليكي:

((والذى يدل على صحة القول الاول انه معلوم ان الجيش قد كانوا يغزون مع رسول الله صلى الله عليه وسلم بعدما ظهرالاسلام بفتح خيبرومكة وحنين وغيرها من المغازى، ولم يكن يخلو الجماعة منهم من يكون معه فرسان اواكث ولم ينقل ان النبي صلى الله عليه وسلم فرب لا كثر من فرس واحد وايضا فان الغرس الة، وكان القياس ان لايض، بله بسهم كسائر الالات، فلما ثبت بالسنة والاتفاق سهم الفرس الواحد اثبتناه، ولم تثبت الوادة اذكان القياس يمنعه) (٥)

او چه کوم څيز اول قول (يعني د امام اعظم رُكِيْد اونورو قول) په صحت باندې دلالت کوي

۱) (حواله بالا وعمدة القارى (ج 1 ۱ ص ۱۵۶) وفتح البارى (ج 9 ص 9) -

٢) (حواله بالا المغنى (ج٩ص٢٠٢) والام للشافعي (ج٤ص٣٤٣)واحكام القران للجصاص (ج٣ص ٤٠)-

٢) (المدونة الكبرى (ج آص ٣٢) والمؤطأ للامام مالك بن انس (ج ٢ص٤٥٧)-

أ) (المبسوط (ج١٠ص٤٤) كتاب السير باب معاملة الجيش مع الكفار واعلاء السنن (ج١٢ص١٨١) وقواعدفي علوم الحديث (ص٥٧) الفصل الثاني في بيان ما يتعلق بالتصحيح....-

 ⁽اعلا السنن (ج١٢ ص١٨١) واحكام القرآن للجصاص (ج٣ص ٤٠) وقال الشافعي في "الام" له: ولكننا ذهبنا الى اهل المغازى فقلنا انهم لم يروواانه عليه السلام اسهم لفرسينولم يختلفوا انه حضر خيبر بثلثة افراس لنفسه: السكب.والضرب والمرتجزولم ياخذ الالفرس واحد" انظرالام (ج٧ص٣٤٣)-

هغه دا دی چه دا خبره خو معلومه ده چه اسلامی لښکر فتح مکه، خيبر، مکه او حنين په ذريعه اسلام ته غلبه حاصليدلو نه پس هم نبی کريم ناها سره په غزواتوکښی شرکت کولو. په دې لښکر او ډله کښی د داسی کسانو هم څه کمی نه وو چاسره چه دوه يا زيات اسونه وو اونه د نبی کريم ناها نه نقل دی چه هغوی د يو اس نه زياتو ته څه حصه ورکړې وی اس يوڅيز دې اود قياس تقاضا همدغه ده چه څنګه د جنګ نور سازوسامان ته سهم نه شي ورکولی دغه شان دې هغه ته هم نه ورکوی نو چه کله د سنت او اجماع نه د يو اس سهم نابت شو نو مونږ دا حکم برقرار اوساتلو او زياتوالي مو برقرار اونه ساتلو ځکه چه قياس دينه مانع دې.

د دوئم فريق دلائل او د هغی جوابونه (امام ابويوسف بيات كتاب الخراج كښی د خپل قول د پاره د حضرت حسن بصری برای د ارشاد نه استدلال كړې دې، د كوم حاصل چه دا دې چه د غنيمت نه به د دوو نه زياتو اسونو ته سهم نشي وركولې (١)

- هغه د امام مكحول المنطقة د دې قول نه هم استدلال كوى چه الايقسم لاكتمين فرسين (۲) ليكن ظاهره خبره ده چه د تابعي قول حجت نه دې، خصوصاً چه دا ثابته شوې هم وى چه نبى كريم التي غزوه جنين كښى د يو نه زيات اسونوته سهم نه وو وركړې (۳) البته بعض احاديث د دوئم فريق هم تائيدكوى مثلاً
- امام سعیدبن منصور (فه بهن فضالة، حدثنا محمد بن الولید الزییدی عن الزهری) په طریق نقل کړی دی چه حضرت عمر فاروق و گانی حضرت ابوعبیده بن الجراح و گانی ته لیکلی وو چه یو اس ته دوه، دوه اسونوته څلور او د هغی مالك ته یوه حصه ورکوه نود ا ټولی پنځه حصی شوې (۴) لیکن د دی نه په دې لاندینی وجوهاتو استدلال کول صحیح نه دی:
- ن دا روایت مرسل دی او د امام زهری رئید مرسل روایات د محدثینو په نزد ضعیف دی و زمون په نزد دا پورته ذکر شوی حدیث یو خاص معرکه باندی محمول دی. په کوم کښی

چه مسلمانانو خوشپی او ورځی جنګ کړی وو لکه غزوه یرموك وغیره . مسلمانانو ته د دی خبری ضرورت شو چه هغوی دوه یا زیات اسونو باندی سورلی او کړی، ظاهره خبره ده چه کله جنګ ترڅو ورځو پورې روان وی نو یقینًا یو اس به کافی نه وی، اوس که چرې معامله داسې وی او د دوو اسونوضرورت پریوزی نو امام ته اختیار دی چه هغه د نفل په توګه دوو اسونو ته سهم ورکړی لکه څنګه چه هغه ته دا هم اختیار دې چه نفلاً یو اس ته دوه سهم ورکړی لکه چه دی اثر کښې ارشاد فرمائیلی دې. او د هغوی پخپله مذهب دا دې چه د فارس به دوه سهم وی یو د هغه او یو د هغه د اس که اتقد موله له پخپله مذهب دا دې چه د فارس به دوه سهم وی یو د هغه او یو د هغه د اس که اتقد موته له پخپله مذهب دا دې چه د فارس به دوه سهم وی یو د هغه او یو د هغه د اس که اتقد موته له پخپله مذهب دا دې چه د فارس به دوه سهم وی یو د هغه او یو د هغه د اس که اتقد موته په پخپله مذهب دا دې چه د فارس به دوه سهم وی یو د هغه او یو د هغه د اس که اتقد موته په پخپله مذهب دا دې چه د فارس به دوه سهم وی یو د هغه او یو د هغه د اس که اتقد موته په پخپله مذهب دا دې چه د فارس به دوه سهم وی یو د هغه او یو د هغه د اس که اتقد موته پخپله مذهب دا دې چه د فارس به دوه سهم وی یو د هغه او یو د هغه د اس که اتقد موته په پخپله مذهب دا ده په د فارس به دوه سهم وی یو د هغه او یو د هغه د که اس که اتقد که پخپله مذه به دو د هغه د که پخپله دو د هغه د که او یو د که پخپله دو د که په دې پخپله دو د که پخپله دې د د که پخپله دو د که پخپ

١) (كتاب الخراج للامام ابى يوسف (ص٢٠) واعلاء السنن (ج١٢ص ١٨١)_

٢) (حواله بالا-

٣) (اعلاء السنن (ج١٢ص ١٨١)-

٤) (حواله بالا-

۵) أُعلام السنن (ج١٢ص١٨٢)د نورودلاتلو اود هغي د جوابونود پاره اومجوري حواله سابقه (ص١٨٢-١٨٣)

٥٢- بَأْبِ: مَنِ قَادَدَابَّةَ غَيْرِةٍ فِي الْحَرُبِ

ذباب د ترجمی مقصد: امام بخاری بینی په دی باب کښي د غازی د سورلئی د هغه د امداد په غرض راښکلو فضیلت بیانوی چه په دې کار کښې د غازی امداد کیږی نو په دې وجه دا هم د ثواب کار دی. (۱)

او دا هم وینلی شی چه امام بخاری پیشی دلته دا خودلی وی چه خاروی را نبکل او بوتلل دا په هغه جلب منهی عنه کښی داخل نه دی د کوم ذکر چه د ابوداؤد په روایت ((لاجلب رلاجنب)) (۲) کښی راغلی دی نو شیخ الحدیث محمد زکریا پیشی فرمائی:

((ولك ان تقول: اله إشار بنلك الي ان النهى من الجلب لا يتناول هذا)) (٣)

تراجم رجال

- قتیبه: دا شیخ الاسلام ابورجاء قتیبه بن سعید الثقفی کی د دوی حالات ((کتاب الایان) بابافشاء السلام من الاسلام) کنبی تیرشوی دی (۵)

r-سکال بر پوسف: دا ابوعبدالرحمن سهل بن يوسف انماطي (۶) بصري مينه دې (۷)

۱) (الابواب والتراجم للكاندهلوى (ج١ص١٩۶)-

٢) (سنن ابي داود ابواب زكاة باب آين تصدق الاموال رقم (١٥٩١-١٥٩٢)-

٣) (الابواب والتراجم للكاندهلوى (ج ١ص١٩٥)-

^{\$) (}قولَه: البراء بن عازب رضى الله عنهما الحديث اخرجه البخارى ايضاً كتاب الجهاد والسير باب بغلة النبى صلى الله عليه وسلم البيضاء رقم (٢٨٧٤) وباب من صف اصحابه عند الهزيمة ونزل عن دابته واستنصر رقم (٢٩٣٠) وباب من قال:خذها وانا ابن فلان رقم (٣٠٤٢) وكتاب المغازى باب قول الله واستنصر رقم (٢٩٣٥) ومسلم كتاب الجهاد تعالى (ويوم حنين اذا اعجبتكم كثرتكم الى قول غفور رحيم وقم (٢٣١٥ -٤٣١٧) ومسلم كتاب الجهاد باب غزوة حنين رقم (٤٣١٥ -٤٤١٧) والترمذى ابواب الجهاد باب ماجاء فى الثبات عندالقتال رقم (١٩٨٨)-

^{() (}كشف البارى (ج عص ١٨٩)-ع) (الانماطى منسوب الى المنوط هو "توب من صوف يطرح على الهودج" (المنجد في اللغة:ماده "نمط"

وكان سهل بيبع الانماط فنسب اليها تعليقات تهذيب التهذيب $(+ ^{109})^{-1}$ 7 (تهذبب الكمال $(+ ^{11})^{-1}$

دې د ابن عون، عبيدالله بن عمر، عوف الأعرابي، حميد الطويل، سعيد بن ابي عروبه. سليمان التيمي، عوام بن حوشب، شعبه اومثني بن سعيد الطائي المنظم غوندې اساطين علم حديث نه روايت كوي.

اود هغه نه روایت کونکوکښی امام احمدبن حنبل، یحیی بن معین، بندار، ابوموسی، ابوموسی، ابوموسی، ابوموسی، ابوموسی، ابوموسی، عباس بن یزیدالبحرانی المی وغیره غوندی محدثین شامل دی.(۱)

عباس الدوري، امام يحيى بن معين مين مين نه نقل كوى القة قد سبعت منه (٢)

امام ابوحاتم مولية فرمائي ((لاباسهه)) (٣)

امام نسانی رکی فرمانی ((ثقة)) (۴)

علامه ابن حبان مولية هغه په (كتاب الثقات) كښې ذكر كړيدې (۵)

امام دارقطنی میند فرمائی ((کقة)) (۶)

امام طحاوی میسید دابراهیم بن ابی داود نه نقل کری دی فرمانی ((بصری نقة)) (۷)

حافظ ذهبی مسلم فرمای ((وَلَقُولا)) (۸)

امام مسلم من نه علاوه نورو اصحاب صحاح د دوی نه روایات اخستی دی (۹)

په کال ۹۳ ه کښې وفات شوې دې (۱۰)

امام احمد بن حنبل مُعْتِلَةُ فرمائى ((سبعت منه سنة تسعين، ولم اسبع بعد منه شيئاً ارالاكان قدمات)، ((۱۱) رحبه الله رحبة واسعة.

-- شعبه: دا په حدیث کښې امیر المؤمنین شعبه بن الحجاج مراید دی، د دوی مختصر حالات ((کتابالایان، پابالیسلم من سلمالیسلیون من لسانه دیده) کښې تیرشوی دی. (۱۲)

١) (شيوخ وتلامذه دَ پاره اوګورئ تهذيب الکمال (ج١١ص٢١)-

٢) (تهذيب الكمال (ج١٢ص ٢١٤)-

٣) (الجرح والتعديل (ج ٤ ص١٩٣) رقم (٤٠٠٥٨٨٥)-

٤) (تهذيب الكمال (ج١٢ص ٢١٤)-

۵) (حراله بالا-

۶) (تهذیب الکمال (ج۳ص۲۶)-

٧) (حواله بالا-

۸) (الكاشف (ج ١ص٤٧١)-

٩) (تهذيب الكُمال (ج١٢ص ٢١٤)-

١٠) (تعليقات تهذيب الكمال (ج١٢ص ٢١٤)-

۱۱) (تهذیب الکمال (ج۱۲ص ۲۱۶)-

۱۲) (کشف الباری (ج۱ص۶۷۸)-

اسحاق: دا ابو اسحاق عمرو بن عبدالله السبيعي ميني دي.

٥-البراءبر عازب المثين دا مشهور صحابي حضرت براء بن عازب المثين دي، د دي دواړو حضراتو حالات ((کتابالایان بابالملاقمن الایان)) کښې تیرشوی دی. (۱)

قوله: قال رجل للبراء برعازب رضى الله عنه : يوسري حضرت براء بن عازب لله اوونیل مغازی د روایت نه معلومیږی چه دا سړې د قبیله قیس نه یوکس وو، نود مغازی په روایت کښې داسې راغلی دی ((وساله رجل من قیس)). (۲)

قوله: افررتم عرب رسول الله صلى الله عليه وسلم يوم حنين؟: آيا تاسوخلقويه غزوه حنين كښې رسول الله كاللم پريخې وو او تختيدلي وي؟

په حديث باب کښې ذکر شوې سوال او جواب د غزوه حنين متعلق دې په کوم کښې چه د نَبَى كَرْيَمُ عُرُيْمُ اوْ صَحَابَهُ كَرَامُو په مقابله كَنِبِي هوازن او دَثقيف قبيلي ٢٠زره خوانان وو اوداً جنگ په حنین وادئی کښې.شوې وو. د دې جنګ په اول وهله کښې مسلمانان د مخالف قبیلود غشو ورولونه اوویریدل او ګډوډ شوې وو اوصرف یو څو صحابه کرام رسول الله تلاج سره پاتی شوی وو. ددی غزوه مکمل تفصیل (کتاب المغالی) کښی تیرشوی دی. (۳) قوله: قال لكن رسول الله صلى الله عليه وسلم لم يفرّ: حضرت براء التاتي فرماني ليكن رسول الله نوام نه وو تختيدلي.

کلمه ((لکن)) د استدراك د پاره ده اوتقديري عبارت دلته داسې دې ((نعن فررداولكي رسول الله صلى الله عليه وسلم لم يقي)) مونو خو تختيد لي وو ليكن نبى كريم ناتيم نه وو تختيلاً لي. (۴) اود خضرت براء طالمي مقصود د دې حذف دعبارت نه دصحابه کرامود تحتيدو تصريح نه کول وو. (۵)

دانبياء كرامو د ميدان جنك نه تيخته ممكن نه ده: حضرت براء الله دا اوفرمائيل چه رسول الله ن د خنين نه نه ووتختيدلي دغه شان د نبي كريم ترا په ټول ژوند باندې دليل دې، او د نورو انبیاء کرامو همدغه شآن وو چه هغوی کله هم د جنگ د میدان نه نه دی تختیدلی. خکه چه هغوی په اقدام کښی بی مثاله، په بهادرئی کښی بی مثاله، د الله تعالی په وعده او نصرت باندې دَ هغوي پوره يقين وو اودا حضرات د شهادت او د الله تعالَى سره د ملاقات خواهش مند وو.دُ أنبياء كرام عليهم السلام نه دُ يوباره كښي هم په حق كښي دُ

۱) (کشف الباری (ج۲ص ۳۷۰-۳۷۶)-

٢) (الصحيح البخاري كتاب المغازي باب قول الله تعالى (ويوم حنين اذ اعجبتكم كثرتكم..) رقم (٤٣١٧)

۲) (کشف آلباری کتاب المغازی (ص۵۳ی۲)

⁴) (عمدة القارى (ج £ ١ڝ١٥٧)-

٥) (حواله بالا ـ

جنګ د میدان نه تیخته اختیارول ثابت نه دی او چه کوم سړې د دې خبرې قائل شوهغد_{ید} که چه یو سری داسی اووانی چه هغوی ناتیم تور او عجمی وو او د هغوی ناتیم تور او عجمی و او د هغوی ناتیم تور او عجمی نه کیدل په قطعی دلاتلو ثابت دی. او دا د کفر قول دی. علامه قرطبی بیشتم فرمانی (روحك عن بعض اصحابنا الاجهاع على قتل من اضاف اليه صلى الله عليه وسلم نقصاً اوعيها وقيل: يستتاب

فانتاب والاعتلى (١)

یعنی زمون د بعض صحابه کرامو نه دا اجماع نقل کریشوی ده چه کوم سری د نبی _{کریم} کالٹی طرف ته یو نقص یا عیب منسوب کړی هغه به قتل کولی شی او دا هم وئیکی شوی آی کولی شی او دا هم وئیکی شوی آی چ چه ده نه به د توبی مطالبه کولی شی که توبه نی او کړه نو ښه خبره ده او ګنی هغه به قتل كولى شي.

علامه ابن بطال مرايج د داسي سرى رچه د حضور ظلظ د منهزم كيدو قائل وي، د قتل علت بیانولو سره فرمانی :((لانه کافی، ان لمیتادل، ویعدر بتاویله))(۲)

یعنی دَدې دَ پاره چه هغه سړې کافر دې که هغه دَ خپل قول تاویل او نه کړی اوکه مغه دَ دې خبرې قاتل يو نص وړاندې کيږدې اود هغې تاويل اوکړي نو په داسې تاويل کولو به هغه معذوره گنرلی شی او کافریه ئی نشی گرخولی.

اودنبی کریم کاللم که شان کښې به دا تصور څنګه کیدیشی چه هغوی به میدان پریږدی د مسلم به روایت کښې د حضرت براء المطيخ الفاظ دا دی: ((قال البراء: کناوالله، اذا احبرالهاستل به، وان الشجاع مناللذى يحاذى به)) يعنى النبى صلى الله عليه وسلم (٣)

حضرت براً ، بن عازب الله فرمائي چه په الله قسم اکله به موند د جنګ شغلی او چتیدونکی اولیدی نو هم د حضور الله په ذریعه به مو خپل ځان بچ کولو او په موند کښی بهادر هم هغه ګڼړلې کیدو چه د هغوی په نقش قدم به روان وو یعنی نبی کریم نظام

قوله: ان هوازن كانواقوماً رماة وانما لما لقيناهم حملنا عليهم فانهزموا، فاقبل المسلمون على الغنائم، واستقبلونا بالسهام: په اصل کښې د هوازن قبيلې خلق ډير غشي ويشتونکي وو، کله چه زمونږ د هغوي سره مقابله اوشوه نو مونږ په هغوي باندى حمله آوكړه نو هغوى ماتى اوخوړلواواوتختيدل، بيا مسلمانان غنائمو طرف ته متوجه شو نو كافرانو په غشو باندې زمونږ استقبال اوكړو.

دلته به ذكر شوى عبارت كښى حضرت براء الله صحابه كرام الله به ميدان جنگ كښى

٢) (شرح ابن بطال (ج٥ص٤٩) وايضًا انظر لتفصيل هذه المسالة نسيم الرياض في شرح شفاه القاضي عياض (ج ١ص١٤٥) القسم الرابع في تصريف وجوه الاحكام.... فصل في احجة في أيجاب فتل من سبه اوعابه صلَّى الله عليه وسلم-

ت الصحيح لمسلم كتاب الجهاد والسير باب غزوة حنين رقم (٤٤١۶) والجامع لاحكام القران (ج٨ص ١٠١)

ریخودل آود تیبنتی علت نی اوخودلو چه د دی دا وجه شوی وه چه د هوازن خلق د غشو ریخودل آود تیبنتی علت نی اوخودلو چه د دی دا وجه شوی و هغه ریمتلو ماهروو دی سره کله چه زمونر د هغوی سره مخامخ شو او بنیه جنگ اوشو نو هغه خلق او تختیدل، مسلمانانو دا خیال آوکړو چه فتح حاصله شوه. د دبنمن د واپس راتلو امکان نشته نو د دی د پاره هغوی د غنائمو په جمع کولو کښی مشغول شو. کافرانو موقع غنیمت اوګنړله بیائی حمله اوکړه او بنه غشی نی اوورول، په څه سره چه د مسلمانانو پښی اوخونیدی او اوتختیدل او خپل ځایونه نی پریخودل. کله چه حضور خلام مکی ته تشریف راوړو نولس زره لښکر ورسره وو، دفتح مکه نه پس کله چه حنین ته نی تشریف یوړو نو پر خلق چه د فتح نه پس مسلمانان شوی وو هغوی په غزوه حنین کښی شامل شو. هوازن چه کله دوباره حمله اوکړه او د غشو باران نی اوکړو نو ناڅاپی دی مصیبت سره د فتح مکه خلو کښی وو د دی په نتیجه کښی په خلو کښی ویره خوره شوه اودا خلق د زرګونو په تعداد کښی وو د دی په نتیجه کښی په راوغوښتل نو صحابه کرام حضرات واپس شول او الله تعالی فتح ورنصیب کړه. (۱)

توله: فأمارسول الله صلى الله عليه وسلم فلم يفر: باتى شورسول الله تظفر نو هغه اونه تختيدو

دلته هم عبارت مقدر دي. ((اما تحن فقد فردنا واما رسول الله صلى الله عليه وسلم فلم يغي)) (٢)

نوله: فلقدرايته، وانه لعلى بغلته البيضاء: تحقيق ما رسو ل الله تَرَيِّمُ اوليدو او هغوى به خپله سپينه قچره باندې سور وو.

هغوی الله په قچره باندې د سورلنی په حالت کښې وړاندې شواوبياد مشرکانو مجمع طرف ته تلل د شجاعت او بهادرنی حيرانونکې مثال دې. بيا چه کله هغوی په دې حالت کښې د سورلنی نه کوزشول نو د بهادرنی نور هم اعلی او اوچتِ مثال ئې قائم کړو. (۳)

دَ هغوى تَالِيْمُ دَ دى فعل نه دا خبره هم ثابتينى چه دَ الله تعالى په لاركښى دَ خپل نفس هلاكت او شدت (سختئى) كښى اچول جائز دى. ځكه چه دَ غزوه حنين په موقع باندې ټول صحابه كرام سواد دولسو (۴) ټول په ټول تختيدلى وو او دَ مشركانو تعداد د هغوى نه په خو چنده زيات وو ليكن د دې باوجود دا حضرات په خپلوخپلو ځايونو او صفونوكښى كلك ولاړ وو اود ضرورت په وخت كښى چه د تيختى كوم اجازت دې په هغى باندې ئې عمل اونه كرو. (۵)

قوله: وان اباسفيان اخذبلجامها: اوحضرت ابوسفيان الأثن د قجري والله نيولي وه.

۱) (کشف الباری کتاب المغازی (ص۵۳۲)-

۲) (عددة القارى (ج ۱۵ ص۱۵۷)-

٣) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٥٧)-

^ۇ) (حوالە بالا_

۵) (شرح ابن بطال (ج۵ ص۶۹)-

د ابوسفیان نه مراد ابوسفیان بن الحارث گات دی اود دی خبری تصریح (کتاب المغازی) په روایت کښی موجود دی (دان اباسفیان بن الحارث اغاد برمامها)) (۱)

حَفْرت ابوسفیان بن الحارث الله دا د حضور علی رضاعی او د تره خوی حضرت ابوسفیان مغیره حارث بن عبد المطلب بن هاشم هاشمی الله دی. (۲) هغه د حضرت حلیمه سعدیه کاش بنی څکلی وو. (۳) او بعض حضراتو مغیره د هغه د رور نوم گرخولی دی او وئیلی دی. چه د هغه کنیت هم د هغه نوم مبارك دی. حضرت عبدالله بن مبارك او ابراهیم بن المنذر، عبدالله بن مبارك او ابراهیم بن المنذر، عبد مغیره هم د هغه نوم دی. (۴)

د هغوى مور غزية بنت قيس بن طريف بن عبدالعزى ده. (۵)

داشاعر وو او د صحابه کرامو اونبی کریم ترایخ بدبه نی وئیل، د اسلام او مسلمانانو سخت مخالف وو. پوره شل کاله په خپله دی لار باندی قائم وو اود مسلمانانو خلاف چه قریشو خومره جنګونه کړی په هغه ټولوکښی د قریشو سره او د مسلمانانو خلاف شریك شوی دی. د هغوی د مسلسل د اسلام سره د د بسمننی په وجه حضور ترایخ د هغوی وینه هدر یعنی مباح مرخولی وه.

کله چه اسلام ترقی اوکره اونبی کریم گیم د فتح د پاره د مکی مکرمی رخ اوکرو نو الله تعالی د هغوی په زړه کښی د اسلام مینه واچوله. (۶)

د اسلام راورلوواقعه: دخضرت ابوسفیان کافت د اسلام راورلو واقعه ابن سعد میند په خپل طبقات کښی ذکر کړیده هم پخپله د حضرت ابوسفیان په ژبه نی واورئی: زه خپل ځوئ او بی بی بی له راغلم، هغوی ته می اووئیل چه د وتلو تیاری کوئی ځکه چه محمد (کافیم) تشریف راورونکی دی نو هغوی اووئیل مونږ په تاباندی قربان شو تاله پکار دی چه او تحوری چه د عرب او عجم خلقو د هغوی کافیم منل کړی دی. تراوسه پوری ته د هغه په دښمنئی کښی یو حدپوری رسیدلی وی او د هغه د نصرت د پاره تاله د ټولونه اول تلل پکار وو (یعنی د هغه بی بی او څوی هم د هغه حوصله او چته کړه)

بیا ما خَپل خُوی ته اووئیل چه زما اوشان او اسونه زر ماله راوله، بیامون د مکی نه اووتلو، زمون منزل هم رسول الله تالل وو نو مون لاړو، کله چه ابواء مقام ته اورسیدو نو هلته کښې مو ډیره واچوله او د رسول الله تالل لښکر هم په ابواء کښی ډیره اچولی وه د چا منزل چه مکه مکرمه وه. زه د رسول الله تالل د مخامخ کیدو نه ویریدم، ځکه چه هغوی زما

۱) (الصحیح للبخاری کتاب المغازی باب قول الله تعالی: ﴿ ویوم حنین اذاعجبتکم کثرتکم فلم تغن.....﴾ رقم ٤٣١٥، ٤٣١٧)-

٢) (سيراعلام النبلاء (ج١ص٢٠٢) والاصلحة (ج٤ص٩٠)-

٣) (طبقات ابن سعد (ج ٤ ص ٩٠) والاصابة (ج ٤ ص ٩٠) -

٤) (الاضابة (ج ٤ص٠٩) وسيراعلام النبلاء (ج ١ص٣٠٣)-

۵) (طبقات ابن سعد (ج ٤ ص ٣٩)-

ع) (حواله بالا-

الباري (تابالجهادر د وینی نذرمنلی وو، ما خپله شکل بدل کرو او د خپل خوی جعفر لاس می اونیولو بهر راووتلم، تقريبًا يو ميل پيدل لاړم. دا د هغه سحر خبره ده په كوم كښې چه رسول الله نالله د أَرِاءً بِهُ مَقَامٌ كُنِنِي تَشْرِيفُ ايخُودي وو، زه دُ هغوى مخي ته لارم نو هُغُوى ﷺ مخ مبارك بل طرف ته وارولو، زه هِغه طرف ته لاړم نو بيا هغوى مخ مبارك واړولو، هغوى كليم زما نه خُرخل ډډه اوکړه نو زه د نزدې او لري خيالا تو راګيرکړم او خپل ځان ته مي اوونيل چه زه به هغُوى تَرَامُ ته دُ رسيدو نه اول قتل كُرِي شم، او ما دَ هغه نيكي، صله رحمي او دَ هغه سره خبِلُولَى راياده كړه، نو هغوى زما دا كُوشش او معذرت قبول كړو.

زماً يقين وو چه رسول الله عليم به زما اسلام راوړلو سره خوشحاله شي نو ما اسلام قبول كَرِو او هم په دې حال كښې هغوى الله سره اووتلم او د هغوى سره فتح مكه او حنين كښې شريك شوم. په غزوه حنين كښي چه كله زمونږ دښمن سره مقابله اوشوه نو زه د اس سره په پتو سترګو په لښکر کښې ورننوتلم او زما په لاس کښې برينډه توره وه، هغوی نظم هم زما طرف ته کتل خو هغوی ته دا خبره معلومه نه وه چه د هغوی د پاره زه خپل خان قریانی کول غوارم. نو حضرت ابن عباس الشيخ نبى كريم تهيم ته اوفرمائيل (يا رسول الله هذا اخوك، وابن عبك ابوسفيان بن الحارث، فارض عنه) چه يا رسول الله! دا ستاسو رور، اوستاسو د تره خوى ابوسفیان بن حارث دی د هغه نه راضی شئی، هغوی تهم اوفرمائیل ما دی معاف کرو الله تعالى دې هم د ده هغه دښمننې چه ده ماسره ساتلې وې معاف کړي. بيا حضور ترایم ماته مترجّه شو او وئی فرمائیل زما روره په خدائی چه ما رکاب کښی دهغه پښه ښکل کړه (۱) هغه د نبي کريم تاييم سره صورة مشابه وو، هغوي به دې ډير عزيز ساتلو هغوي تايم دوي ته د جنت خوشخبری هم ورکړه، ارشاد مبارك دې ((ابوسفیان بن الحارث سید قتیان اهل الجنة) ۲) او وئى فرمائيل ((ابوسغيان اخى وعيراهلى وقد اعقهنى الله من حمزة اباسفيان بن الحارث)) ابوسفيان زما رور او د بهتر کور د خلقو نه دې او تحقیق الله تعالی حضرت حمزه نه پس ماته ابوسفيان بن حارث د بدل په توګه راکړو. دې نه پس به ئي هغه اسد الله او اسد الرسول په وقيع الفاظوسره رابللو. (۳)

د خصور نظم په وفات باندې هغوی يوډير د اثر نه ډيك اود دردنه ډكه مرثيه هم وئيلې وه (۴)

وليل اخي المصيبة فيه طول اصيب المسلمون به قليل عشية قيل قد قبض الرسول يروح به ويغدو جبرئيل

ارقت فبات ليلى يزول واسعدنی البکاء و ذاک فیما فقد عظمت مصيبتنا وجلت فقدنا الوحى والتنزيل فينا و ذاک احق ما سالت علیه

نفوس الخلق او كادت نسيل[بقيه حاشيه به بل صفحه...

۱) (طبقات ابن سعد (ج ٤ ص ٥٠)-

۲) (الاصابة (ج ٤ ص ٩٠)-

٣) (الاستبعاب بهامش الصابة (ج ٤ص ٨٤) وطبقات اب سعد (ج ٤ ص ٥٢)-

^{1) (}قال ابن اسحاق: ولابي سفيان يرثى النبي 道

مغه حج ته لاړو او هلته حجام د هغه سر اوخرولو، د هغوی په سر کښې يوه زخه وه چه نانې کټ کړه اود هغې د وجه نه د هغه مرګ واقع شواو خلقو به هغه شهيد ګڼړلو. (۱)

په شلمه هجري کښې مدينه منوره کښي د هغوي وفات شوې دې ۴ رهي الله عنه وارضاي .

قوله: والنبي صلى الله عليه وسلم يقول: الناالنبي لاكنب الناابن عبد البطلب او هغوی تکی فرمائیل چه زه نبی یم په دې کښې څه دروغ نشته او زه د عبد المطلب غوندې د سردار ځوي يم.

دَ حضور نظم دا پورتنی قول ((اناالنبی لاکلب)) کښی د نبوت محمدی اثبات دی، مطلب دا دی چه زه په خپل قول کښی کاذب نه یم چه ماته ماتی اوشی، ځکه چه ماتی هم هغوی ته کیږی د چا چه د الله تعالی په امداد او نصرت یقین نه وی او د مرګ ویره ورسره وی. (۲) او ظاهره خبره ده چه په الله تعالى باندې كامل يقين د نبى او رسول وى او چه چاته د دي

درجي يقين حاصل شي هغه ماتي نشي خوړلي. د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت: د حديث د باب ترجمه سره مناسبت په دې جمله كښې دې ((وان اپاسفيان بن الحارث اختېلجامها)) (۴)

٥٣- بَأْب: الرِّكَ أَبِ وَالْغَرُ زِللنَّا ابَّةِ

د ترجمة الباب مقصد دلته امام بخاری کی داخودلی دی چه رکاب او غرز که د څاروو د پاره استعمال کریشی نو په دې کښې هیڅ مضائقه نشته.

علامه ابن بطال سلطي فرمائي چه حضرت عمر الله نه چه دا روايت دې ((اقطعوا الركب د ثهواعلى الخيل دثها)) (۵) که رکاب پريکړې او په اس په ټوپ ورسور شي نودې نه خوهم دامعلوميږي

> بما يوحي اليه و ما يقول علينا و الرسول لنا دليل و ليس له من الموتى عديل و ان لم تجزعی فهو انسبیل ثواب الله و الضل الجزيل وهل يجزى بفضل ابيك قيل و فيه سيد الناس الرسول

(سيراعلام النبلاء (ج ١ص ٢٠٤) ـ

دنيرمخ بنبه] نبى كان يجلو الشك عنا و يهدينا فلا نخشى ضلالا فلم نسر مثله في الناس حيا افاطم ان جزعت فذاك عذر فعودى بالعزاء فان فيه وقولى في ابيك و لاتعلى فقبر ابیک سید کل قبر

١ (حواله بالاوالمستدرك (ج٣ص٢٥٥)-

٢) (سيراعلاء النبلاء (ج ١ص٥٠٦) وطبقات ابن سعد (ج ٤ ص٥٣)-

٣) (شرح ابن بطال (ج٥٥ ص٤٩)-

٤) (عمدة القارى (ج ٤ اص ١٥٥) د حديث باب نوره تشريح د پاره اوګورئ کشف البارى، کتاب المغازى

· (كذا غزاه ابن بطال عليه الى عمر المالة الاانى لم اجده فى المصادر التي بين يدى -

7 6 0 ده په څاوري باندې د سوريدلود پاره رکاب استعمالول منع دی نو امام بخارې کناو د مرجوده باب د ترجمه په ذریعه دا فرمائیل غواړی چه حضرت عمر تاکی د سرنه د رکاب و خد سهاري سوريدو مشق اوتمرين وركولو ترغيب وركول وو خكه چه پخپله رسول الله الله دُ رَكَابُ استعمال كريدي او په څاروي دُ سوريدلودپاره ئي دُ هغې نه مدد اخستې دې نوحضرت عمر المالي خناكة د هغي نه منع كولى شي؟ (١)

ورکاب او غرزمعنی رکاب د زین هغه زورند حصی ته وائی په کوم کښی چه سوریدونکی خېله پښه ایږدی. او غررمعنی هم رکاب دې (۲) په دې اعتبارسره دا دواړه مترادف دی. بیاً بعض حضِراتو په دواړوکښې فرق خودلې دې چه رکاب خو د اوسپنې یا د لرګی وی او

غرز صرف د څرمنې وي.

او د بعض حضراتو په نزد غرز د اوښ د پاره او رکاب د فرس د پاره وي. (٣) [الم] حَدَّثَنِي عُبَيْدُ بْنُ إِلْمُاعِيلَ عِنْ أَبِي أُسِامَةً عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ عَنْ نَافِعِ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ إِذَا أَدْخَلَ رِجْلَهُ فِي الْغَرْزِ وَاسْتَوَتْ بِهِ نَاقَتُهُ قَالِمَةً أَهَلَ مِنْ عِنْدِ مَسْجِدِ ذِي الْحُلَيْفَةِ [١٣٢٣]

تراجم رجال

دا بعینه هم هغه سند دې چه اوس ((پاپسهام الغرس)) کښې تیرشویدې. تنبيه و حديث باب مكمل تشريح كتاب الحج كسِي راغلى ده. (۴) د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت: د حدیث د بأب ترجمه سره مناسبت د حدیث په دې جمله کښې دې ((اذا ادغل رجله في الغرز)) او رکاب هم د غرزيه معني کښې شامل دې نو امام بخارى عُطِيًّا غرز سره ركاب هم يوځائ كړو يا ئى دې خبرې طرف ته اشاره اوكړه چه دا دواړه مترادف دی.(۵)

مه-بَأْب: رُكُوبِ الْفَرَسِ الْعُرْي

ف ترجمة الباب مقصد: دَ امام بخاري عَظْمُ مقصد دَ دي ترجمه نه دا دي كه به اس باندي زين نه وی او د هغه شا برینده وی اود زین نه بغیر سری په دی سوروی نو په دی کښی هیڅ مضائقه نشته، دا ضروری نه دی چه هم د زین سره به سوریدی بلکه په بربنده شا سوریدل خود اس د سوريدونكي په مهارت دلالت كوي.

۱) (شرح ابن بطال (ج۵ص ۷۰)−

٢) (المعجم الوسبط (ج١ص ٣٤٨) مادة "ركب"-

۳) (فتح الباري (ج۶ص ۶۹) وعمدة القاري (ج ۱۵۸ ص۱۵۸)-

انظر كتاب الحجج باب قول الله تعالى (ياتوك رجالا...)-

⁽عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٥٨) وفتح البارى (ج ١٤ ص ٤٩)-

د لفظ عري تحقیق: عري د هین مهمله ضمه او راء په سکون سره دې، د دې معنی برېنډه شا او بغیرزین نه ده.

نود ٔ " نهس عری معنی بربنده شا او بغیرزین اس. ۰

اود عري لفظ هم څاروو سره خاص دې څکه چه سړی ته عري نشی وئیلې بلکه عریان ورته وانی (۱)

ر دې کلمې په ضبط کښې دونم احتمال ابن التين کښت دا بيان کړيدې چه په حديث کښې دا لفظ د را ، په کسره او يا ، په تشديد سره دې يعني "ځېنې" دې.

ليكن حافظ ابن حجر ميني فرمائى: ((وليس في كتب اللغة مايسامه))(٢) د لغت كتابونو د هغه د قول موافقت نه كوى.

[ru] حَدَّنَنَاعَبُرُوبُنُ عَوْنِ حَدَّنَنَاحَمَّادٌعَنُ ثَابِتِ عَنْ أَنْسِ (r) رَضِى اللَّهُ عَنْهُ اسْتَقْبَلَهُ مُ النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى فَرَسِ عُرْي مَا عَلَيْهِ سَرُجْ فِي عُنُقِهِ سَيُفْ [ر:rrʌr]

تراجم رجال

ا- عمرویر عون داعمرو بن عون بن اوس سلمی واسطی بصری داشتر دی. (۴)

r- حماً د: دا حماد بن زید بن درهم ازدی بصری میشی دی. دوی حالات (رکتاب الایهان باب (وان طائفتان من البؤمنین اقتلوا ... ه) لاندی تیرشوی دی. (۵)

-- ثابت: دا مشهورتابعی حضرت ابومحمدثابت بن اسلم بنانی و دی. د دوی حالات (رکتاب العلمهاب القره العرض علی البحدث)) په ذیل کښې تیرشوی دی. (۶)

قوله: قال: استقبلهم النبی صلی الله علیه وسلم علی فرس عری ماعلیه سرج وفی عنقه سیف: حضرت انس ناتا فرمائی چه د خلقو په وړاندې د یو بربنډاس په شا سور شو، په هغې زین نه وو اود هغوی ناتا په سټ کښې توره زوړنده وه.

۱) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٥٨)وفتح البارى(ج ۶ص٧٠)-

۲) (فتح الباری (ج۶ص ۷۰)-

٣) (قوله: عن انس كَانُو الحديث مرتجريجه في كتاب الهية باب من استعار من الناس من الفرس-

٤) (د دوى د حالاتود پاره او گورئ كتاب الصلاة باب ماجاء فى القبلة.....

۵) (کشف الباری (ج۲ص۲۹)-

۶) (کشف الباری (ج۳ص۱۸۳)-

٧) (كثف البارى (ج٢ص٤)-

تنبیه: حدیث باب ماقبل کښې څوځل تیر شوی دی او هم هلته د دې متعلقه بحثونوهم ذکر کول به د فائدې دې په دې وجه مونږ نورتشریحات نه کوو خود بعض فوائدو ذکر کول به د فائدې نه خالی نه وی.

زباب د حدیث نه مستنبط فائدی: () د حدیث نه یوه فائده دا مستنبط شوه چه هغوی تالل د حدنه زیات متواضع وو او هغوی تالل د اس د سوریدو یوماهر وو ځکه چه د بربنډ اس په شا باندې سورلې هغه سړې کولې شی چه همیشه داس سورلی کوی او په هغې کښې مهارت لری (۱)

و دونمه فانده دا مستنبط شوه چه د سور د پاره دا مناسب او ضروری دی چه د اس د سوریدو مشق کوی دې د پاره د باره د سوریدو مشق کوی دې د پاره که ناڅاپی څه مصیبت راشی نو چه د هغې د مقابلې د پاره د اول نه تبار وي.(۲)

د حدیث د ترجمه سره ملابقت: د حدیث د باب د ترجمه سره مناسبت واضح دی اوهغه د حدیث د ترجمه سره مناسبت واضح دی اوهغه د حدیث په دی جمله کښی دی ((استقبلهمالنبی صلی الله علیه وسلم علی فرس عری)) (۳)

٥٥- بَأَب: الْفَرَسِ الْقَطُوفِ

ذ ترجمة الباب مقصد: امام بخاری دلته دا فرمائیل غواړی چه په مزه تلونکی اس باندې سورلی کول جائز او مشروع ده.

دُ كلمه 'قطوف' تحقیق: تطوف' دَ باب ضرب او نصر نه دې، دَ دې معنی په روتلونكې دې. لكه چه ونيلې كيږى ((تطفت الدابة يقطف تطافا: اذا ابطات))(۴)

[rar] حَدَّنَنَا عَبُهُ الْأَعْلَى بُنُ حَنَادِ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بُنُ زُرِيْعِ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةً عَنْ أَنْسِ بُنِ مَالِكٍ رَضِى اللَّهُ عَنْهُ (ه) أَنَّ أَهُلَ الْهَدِينَةِ فَزِعُوا مَرَّةً فَرَكِبَ النَّبِيُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَسُالِأُبِي طَلْحَةً كَانَ يَقْطِفُ أَوْكَانَ فِيهِ قِطَافٌ فَلَمَّا رَجَعَ قَالَ وَجَدُنَا فَرَسَكُمْ هَذَا بَعُرًا فَرَسَكُمْ هَذَا بَعُرًا فَرَسَكُمْ هَذَا بَعُرًا فَكَانَ بَعُدَذَلِكَ لَا يُجَارَى [د٣٨٣]

تراجم رجال

اعبدالاعلى بررحماد: دا عبدالاعلى بن حماد بن نصر باهلى ذهلى رياد دى (ع)

١) (فتح الباري (ج ۶ص ٧٩) وعمدة القاري (ج ٤ ١ص ١٥٨)-

۲) (حواله بالا وشرح ابن بطال (ج۵ص۷۰)-

٣) (عمدة القارى (ج ٤ ١٥٨ ١٥٠)-

أ) (فتح الباري (ج۶ص ۷۰) والمعجم الوسيط (ج٢ص ٧٤۶) مادة قطف-

م الله الله الله الله عنه: الحديث مرتخرجه في كتاب الهية باب من استعار من الناس الفرس (٥) قوله: عن انس بن مالك رضى الله عنه: الحديث مرتخرجه في كتاب الهية باب من استعار من الناس الفرس

۶) (دُ دوى دَ حالاتودَ پاره اوگورى كتاب الغسل باب الجنب يخرج ويمشى فى الاسواق وغيره-

۲-یزید بر_زریم: دا بومعاویه یزید بن زریع تیمی بصری دی.(۱)

-- سعید: دا سعید بن ابی عروبه ابوالنصریشکری بضری مطیع دې (۲)

م-قتاده: دا قتاده بن دعامه بن قتاده سدوسی بصری می دی.

<u>ه-انس:</u> دا مشهور صحابي حضرت انس بن مالك تُنْتُو دي، د دي دواړو حضراتو حالات

(رکتابالایهای الایهای الایهای الیمی الایهای الایهای دی. (۳)

اود حدیث باب تشریحات د ماقبل څوځایونوکښې تیریشوي دی.

د حدیث د ترجمهٔ الباب سره مطابقت د باب د ترجمه سره د حدیث مناسبت دی جمله کښی دی (کان یقطف ادکان نیم عطاف) (۴)

او کلمه د ٔ ۱۰ دلته د شك د پاره ده چه راوى ته شك كيږى چه حضرت انس الله يقلف فرمائيلى كه تطاف (۵)

فائده علامه ابن بطال کی فرمائی چه د حدیث شریف نه داخبره مستنبط شوه چه بادشاه په کمتر څاروی باندې سورلی اوکړی نو په دې کښې هیڅ حرج نشته، دې د پاره چه په هغې مشق اوکړی، برابر ئی کړی اود هغې تادیب اوکړی اودا د تواضع د قبیل نه ده (۶)

٥٦- بَأَب: السَّبْقِ بَيْنَ الْخُيْلِ

دَ ترجمه الباب مقصد دَ دې باب دَ ترجمه نه دَ امام بخاری کُنځ مقصد دا دې که چرې دَ جهاد د تیاری دَ پاره دَ اسونو د زغلولو مقابله او کړیشی نو په دې کښې څه حرج نشته او د دې فعل مشروعیت دَ نبی کریم تُنځ نه ثابت او منصوص دې (۷)

د کلمه سبق وضاحت د سبق سین مهمله فتحه اود باء په سکون سره سبق بسبق نه مصدردی د کوم معنی چه مقابله ده، او همدغه معنی دلته مراد ده.

اوکه چرې دا کلمه د باء د فتحه سره وی یعنی اسبق نود دې معنی د هغه شرط ده چه په وړاندې کیدو باندې ایخودې کیږي. (۸)

۱) (دَ دوى د حالاتودَ پاره اوګورئ کتاب الوضوء باب غسل المني وفرکه.... ـ

۲) (د دوی د حالاتود پاره او گوری کتاب الغسل باب اذاجامع ثم عاد ومن دارعلی....

٣) (كشف البارى (ج٢ص٣-٤)-

٤) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٥٩)-

۵) (حواله بالاوفتح الباري (۶ص ۷۰)-

۶) (شرح ابن بطال (ج۵ص ۷۱)-

٧) (عمدة القارى (ج ٤ اص. ٥٩) وفتح البارى (ج ١٥٥) -

٨) (حواله بالا وختار الصحاح مادة سبق-

[عنه] حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ عَنْ الْبِيعَ عُرَ الْبِي عُمَرَ (ا) رَضِى اللَّهُ عَنْهُمَا فَيْ وَسَلَّمَ مَا فَيْرَ مِنْ الْخَيْلِ مِنْ الْحَفْبَاءِ إِلَى ثَنِيَّةِ الْوَدَاعِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا فَيْرَ مِنْ الْخَيْلِ مِنْ الْحَفْبَاءِ إِلَى ثَنِيَّةِ الْوَدَاعِ وَأَجْرَى مَا لَمْ يَعْ وَلَيْ فَيْلِ مِنْ الْخَيْبَاءِ إِلَى ثَنِيَّةِ الْوَدَاعِ وَأَجْرَى مَا لَهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا فَيْرَ وَلَيْقِ قَالَ الْبُنُ عُمَرَوكُ لَمْ فَيَا وَلَا اللَّهُ عَلَيْهِ الْوَدَاعِ عَبْدُ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ الْمُعْمَلِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ الْوَدَاعِ عَبْدُ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ الْمُعْمَلِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ الْوَدَاعِ عَبْدُ اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ الْوَدَاعِ عَلَيْهِ الْوَدَاعِ عَنْ اللَّهُ عَلَيْهِ الْوَدَاعِ مَنْ وَاللَّهُ مَا مُنْ وَاللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ الْوَدَاعِ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهِ الْوَدَاعِ مَنْ وَلَا لَهُ مَا مُنْ وَلَكُولُ اللَّهُ عَلَيْهِ الْوَدَاعِ مَنْ مَنْ وَاللَّهُ مَا مَا اللَّهُ عَلَيْهِ الْوَدَاعِ مَا مُنْ وَاللَّهُ مَا مُنْ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَى مَا اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ الْوَدَاعِ عَلَيْهُ اللَّهُ مَا مُنْ اللَّهُ وَاللَّهُ مَا مُنْ اللَّهُ عَلَيْهِ الْمُعْمَاعِلَى اللَّهُ عَلَيْهِ الْوَلَاعُ مَا مُنْ اللَّهُ مَا مُنْ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ الْمُعْتَاءِ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ مَا عُلِي الْمُ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ مَا عَلَى اللَّهُ مُنْ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مَا مُنْ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ مُنْ مُنْ اللَّهُ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ مَا مُنْ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ الْمُعْلَالِ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ الْمُنْ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ الْمُنْ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ الْمُنْ اللَّهُ الْمُعَالَى اللَّهُ الْمُعَلِيْ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْكُولُولُولُولُولُولُولُولُولُول

تراجم رجال

-قبیصه: دا ابوعامر قبیصه بن عقبه بن محمد کوفی میش دی. دُدوی حالات ((کتاب الایهان پابعلامة البنافق)) کښی تیرشوی دی. (۲)

r-سفیان: دا مشهور امام حدیث حضرت سفیان بن سعید ثوری کوفی میای دک د کولت میان دی د کولت میان به مذکوره باب کښی تیرشوی دی. (۳)

-- عبيدالله: داعبيدالله بن عمرالعمري الله: دي. (۴)

م-نافع: دا ابوعبدالله نافع مولى ابن عمر العدوى مُراكم دي. (٥)

۵- أبر. عمر: دا مشهور صحابی حضرت عبدالله بن عمر الشودی. دَ دوی حالات ((كتاب الایهان وقول النبی صلی الله علیه وسلم بنی الاسلام علی عبس)) كنبی تیرشوی.ی (۶)

تنبیه: دَ حدیث باب بعض تشریحات (کتاب الصلاة) کښې راغلې دی.اودَ بعض فوائدو ذکر انشاء الله دَ څوصفحونه پس مونو ذکر کوو.

د حدیث د ترجّمهٔ الباب سره مطّابقت: دَباب دَ ترجمی دَ حدیث شریف سره مناسبت دَ حدیث دی دووجملوکنیی دی ((اجری النبی صلی الله علیه وسلم ماضبر...)) او ((واجری مالم یضبر) حکه چه ((اجرام)) دَ مسابقت معنی ته شامل ده.

قوله: قال عبد الله: حدثنا سفيان قال: حدثني عبيد الله: عبد الله المعبد المعبد الله المعبد المعبد المعبد الله المعبد المعبد المعبد المعبد الله المعبد المعبد

١) (قوله: عن ابن عمر رضي الله عنهما الحديث مرتخريجه في كتاب الصلاة باب هل يقال: مسجد بني فلان؟

۲) (کشف الباری (ج۲ص۲۷۵)-

⁽ ۳(کشف الباری (ج۲ص۲۷۸)-

أ (د دوى د حالاتودباره او گورئ كتاب الوضوء باب التبرز في البيوت-

٥) (د دوى د حالاتودباره او كورئ كتاب العلم باب من اجاب السائل باكثرمما ساله-

^ع) (كشف البارى (ج ١ ص ٤٣۶)-

۷) (شرح الكرماني (ج ۱۲ ص ۱٤۷)-

حافظ ابن حجرفرمائي:

((فعيدالله هو: ابن الوليد العدل كذا روينا لا في جامع سفيان الثورى من روايته عنه)) (١)

يعنى دلته د عبدالله نه ابن الوليد عدنى مراد دى، دغه شان مونو ته روايت شويدى، جامع

سغیان کښی سفیان نه د عبدالله په روایت کښی بیا دوئمه خبره دا ده که د عبدالله به ځای ابو عبدالله اووئیلی شی نو دا ممکنه نه ده ځکه چه د امام بخاری پیشیسماع دحضرت سفیان توری پیشی نه ناممکن ده، د دې وجه دا ده چه د امام بخاری میشیرولادت ۱۹۳ ه کښې دې او سفیان ثوری میشیر د هغه نه ډیر وړاندې ۱۹۱

کښی وفات شوی وو. د مذکوره تعلیق مقصد د ذکر شوی پورتنی تعلیق مقصد دا دی چه امام بخاری مُنظی دا بیان کول غواړی چه سفیان ثوری مُنظی په دې روایت کښی د خپل شیخ عبیدالله نه د تحدیث تصریح کړیده، په خلاف د رومبی روایت چه هغه عنعنه سره مروی دې، نو علامه عینی مُنظیم

فرمائى: (وارادالهخارى بهذا تصهيح الثورى عن شيخه بالتحديث بخلاف الرواية الاولى فانها بالعنعنة) (٢)

دَمذكوره تعليق تخريج دا تعليق د امام ثوري رئيلي په (جامع) كښې موصولاً نقل كړيشوې

دى. لكه څنګه چه اوس د حافظ صاحب په كلام كښې تيرشو. ٣٦

قوله: قال سفيان: بين الحفياء الى ثنية الوداع خمسة اميال..... وخضرت سفیان ثوری میداند دا قول د سابقه سند سره موصول دی یعنی ((سفیان عن عبیدالله عن داند عن عند الله عن داند عن عند ابن عبررض الله عنه)) (۴)

٥٥- بَأَب: إِضْمَا رِالْخَيْلِ لِلسَّبْقِ

د ترجمة الباب مقصد حافظ ابن حجر بيسي خودا فرمائيلي دي چه امام بخاري بيسي دې خبرې طرف ته اشاره کړيده، چه سنت خودا دي چه په مقابله کښې به دوه اسونه وړاندکړي کوم چه مانده کړې شوی دی لیکن که د هغو اسونومقابله اوکړیشی د کوموچه اضمار نه دې کړيشوې نو په دې کښې هم څه حرج نشته، فرمائي:

(اشارة الى ان السنة في البسابقة ان يتقدم اضهار الخيل وان كانت الق لا تضير لا تبيت البسابقة عليها) (٥)

۱) (فتح الباری (ج۶ص ۷۲) -

۲) (عمدة القارى (ج ۱ ۱ ص ۱۵۹)-

۳) (فتح الباري (ج۶ص۷۲)-

^{\$) (}عبدة القارى (ج ١٤ ١ص١٥٩)-

۵) (فتع الباری (ج۶ص ۷۱)-

خوعلامه عینی مخالف د باب ترجمه مقصد دا سی بیان کریدی. ((ای هذا باب فی بیان اضهاد الخیل لاجل السبق هل هوش مطامرلا؟))(۱)

روس داباب د مقابله په غرض د اسونو د اضمار په بیان کښې دې (مقابله کښې شریك) د اس اضمار کول شرط دې که نه.

اود دی جواب چه دَ باب په حدیث کښی ذکر دی چه دَ مقابلی دَ اس دَ پاره اضمار شرط نه دی د دی نه بغیر هم مقابلی کولی شی. (۲)

دى دَ دَى نه بغير هم مقابلي كولى شي. (٢) و اضمار مطلب او معنى اضمار كه د باب افعال نه وي يا تفعيل نه، د دې معنى اس مانده

ى ل او اورد جوړول دى، لكه چه وئيلى شى اضبرالقى سوضبرلا. (٣)

دَ اَضْمارطریقه به اضمار کښی اول داوی چه څاروی باندې ښه خوراك څښاك اوکړي او چاتوی ئی، دینه پس هغه په بنده کمره کښې ساتی او په هغه باندې کېړا اچولې شی د دې نتیجه دا وی چه په هغه ښه خوله راشی او په مزه مزه د هغه اوبه او واښه کمولې شی چه کله پرې ښه خوله شی نود هغه د بدن فالتوغو ښه ختمه شی او ښه تکړه او مضبوط او تیز شی، او د دې اضمار موده د اهل عربو په نزد څلویښت ورځې وی. (۴)

پُهُ ظَاهْرِه دا كُار تَعذيب ښكاري ليكن دا په مسابقت كښي استعمالولود پاره اود جهاد د

تباری د پاره کول جائز دی. (۵)

[rcm] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بُنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنُ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ (٢) رَضِى اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَابَقَ بَيْنَ الْخَيْلِ الَّتِي لَمْ تُضَمَّرُ وَكَانَ أَمَدُ هَا مِنُ الثَّنِيَةِ. إِلَى مَسْجِدِ بَنِي زُرَيْقِ وَأَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَكَانَ سَابَقَ مِمَا قَالَ أَبُوعَبُد اللَّهِ أَمَدُ اعْلَاقًا لَهُ فَطَالَ عَلَيْهُمُ الْأُمَدُ [ر:٣] فَطَالَ عَلَيْهُمُ الْأُمَدُ [ر:٣]

تراجم رجال

ا- احماب یونس: دااحمدبن عبدالله بن یونس تمیمی یربوعی مرایط دی، دَ نیکه په نسبت مشهور دی دَ دوی حالات ((کتاب الایهان باب من قال: ان الایهان) لاندی تیرشوی دی. (۷) مشهور دی د دوی حالات الیث: داامام ابوالحارث لیث بن سعد بن عبدالرحمن فهیمی میشید دی، دُدوی حالات

۱) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٥٩)-

۲) (المتوازي (ص١٥٥)-

٣) (مصباح اللغات (ص ٤٩٩) مادة ضمر والمعجم الوسيط (ج١ص٥٤٣) مادة ضمر

٤) (شرح أبن بطال (ج٥ص ٧١) المعجم الوسيط (ج١ص٥٤٣) مادة ضمر-

٥) (شرح ابن بطال (ج٥ص ٧١) وشرح الكرماني (ج١٢ص١١)-

 ⁽قوله: عن عبدالله رضى الله عنه: الحديث مرتخرجه في كتاب الصلاة باب هل يقال: مسجدبني فلان؟ -

۷) (کشف الباری (ج۲ص۱۵۹)-

((بدر الوحی)) د دریم حدیث په ذیل کښې راغلی دی. (۱)

-- نافع: داابوعبدالله نافع مولى ابن عمر كفا دي. (٢)

<u>n-عبراً الله:</u> دامشهورصحابی حضرت عبدالله بن عمر تناها دی، د دوی حالات ((کتاب الایبان و تول النبی صلی الله علیه و سلم بنی الاسلام علی عبس) لاندی تیرشوی دی. ۳) د حدیث د توجمه الباب سره مطابقت دلته به امام بخاری و بندی دا اعتراض شویدی په د بابد د ترجمه خو هغوی د اضمار الخیل د باب د ترجمه خو هغوی د اضمار الخیل قائم کریده او چه کوم حدیث شریف ئی ذکر کریدی به هغی کنبی د خیول مضمرة ذکر نشته. بلکه د خیول غیر مضمرة ذکردی. (۴)

د دې اعتراض شراحو مختلف جوابونه ورکړي دي:

(عُلامه ابن بطال مُوالى دا جواب وركريدي چه امام بخارى مُولى خو ترجمه د اضمار قائم كريده او روايت ئى دا ذكر كريدې ((سابق بين الخيل الق لم تضمن) دې د پاره چه مكمل حديث طرف ته اشاره اوشى ځكه چه پوره حديث داسې دې ((ان الرسول صلى الله عليه وسلم سابق بين الخيل القى ضمرت، وبين الخيل القى لم تضمن) (٥)

په حدیث کښې د دواړه قسم مقابلوذکر دې په دې وجه امام بخاري رئيلتې يوه حصه ذکر کړ؛ ځکه چه دينه باقي حصي طرف ته هم اشاره کيږي (۶)

و علامه کرمانی بینید دا جواب فرمائیلی دی چه د خیول مضمرة مقابله خو عادة معروف ده، پاتی شو خیول غیرمضمرة نو په دې کښی دااحتمال او اعتقاد کیدیشی چه د دی مقابله جائزنه وی ځکه چه د هغی په زغلولوکښی مشقت او خطره ده. د حدیث نه چه د دې جواز واضح شوچه په دې کښی هم څه جرح او مضائقه نشته (۷)

۱) (کشف الباری (ج۱ص ۳۲٤)-

٢) (د دوى حالات د پاره او كورى كتاب العلم باب من اجاب السائل باكثر مماساله -

۳) (کشف الباری (ج ۱ ص۶۳۷)-

٤) (عمدة القارى (ج ٤٠ ص ١٥٩) وشرح ابن بطال (ج٥ص ٧١)-

۵) (شرح ابن بطال (ج۵ص۷۱)-

ع) (شرح الكرماني (ج١٢ص١٤) وفتح الباري (ج١٤ص١٥)-

⁽ ۷(حواله بالا-

۸) (عمدة القارى(ج ٤ ١ص ١٤٠)-

او هغوی چه کوم تفسیر دلته ذکر کړیدې هغه د ابوعبدالله په (کتاب المجال) کښې ذکر کړیشوي تفسیردې (۱)

آسونو دمقابله شرعی حیثیت اوددی مختلف صورتونه: په حدیث باب کښی د دی خبری صراحت دی چه د اسونو زغلولو مقابه جائزده. بیاپه دی کښی تفصیل داسی دی چه دا مقابلی یا خو به د عوض سره وی یعنی په دی کښی څه انعام وغیره هم وی یا بلاعوض، د امت د فقهاو په دی کښی څه اختلاف نشته که دا مقابلی بغیرد څه عوض او انعام نه وی نو جائز دی. د عوض سره د مقابلی تفصیل وړاندی راخی البته په دی کښی اختلاف دی چه دا مقابلی په کومو امورواو څاروو کښی جائزدی؟

امام مالک او امام شافعی رحمهاالله مذهب خودا دی چه دامقابلی صرف عقی، حافی او نصل کنبی کیدیشی. (۲) د عقی نه مراد اوښ او هاتهی حافی نه مراد اس خر او قچر او نصل نه مراد غشی ورول یعنی مقابلی په دی دریو څیزونوکنبی منحصردی نور په یو څیز کښی هم مقابله جائزنه ده. (۳)

او بعض علماؤ دا مقابلی صرف د اسونوپوری خاص کړی دی یعنی مقابله صرف د اسونو جائزده نور د هیڅ څیز مقابله کول جائزنه دی.(۴)

او د امام عطاء والمعلم مذهب دا دي چه په ټولو څيزونو کښې مقابله جائزده. (٥)

او كه مسابقه د عوض سره ده لكه مراهنة هم وئيلي شي نود دې دا لاتديني مختلف صورتونه دي:

() چه عوض وی او د انعام په توګه وی او د مقابله کونکونه علاوه د بل چاد طرف نه وي لکه بادشاه یا بل څوك سړې ، نودا صورت بالاجماع جائزدې که انعام صرف د ګټلو والا د پاره وی یاد مقابلې د ټولو کسانودپاره وی یاد بعض د پاره وی (۷)

علامه ابن التين علي فرمائي:

١) (حواله بالا-

٢) (فتح البارى (ج ٢٥ص ٧٢) وعمدة القارى (ج ١٤ص ١٤٠) واستدلوا فى ذلك بما روى عن ابى هريرة رضى الله عنه قال وسول الله صلى الله عليه وسلم لاسبق الا فى نصل اوخف اوحافر. رواه الترمذى رقم الله عنه قال وسول الله صلى الله عليه وسلم لاسبق الا فى نصل اوخف اوحافر. رواه الترمذى رقم (١٧٠٠) و ابوداؤد رقم (٢٥٧٤) والنشائى رقم (٣٤١٥) وايضًا انظر الاحسان بترتيب صحيح ابن خبان كتاب

السيرباب السبق رقم (٣٤٧١)-

٣) (المرقاة (ج٧ص٣١٩)-٤) (حواله بالا-

^{) (} حواله بالا ـ 4) (حواله بالا ـ

۰۰) (حورته باد -۶۰) (المرقاة لعلى القارى (ج۲ص۳۲۰)-

٧) (تكملة فتح الملهم (ج٣ص٣٨)-

ررانه صلى الله عليه وسلم سابق بين الخيل على حلل اتته من اليبن فاعطى السابق ثلاث حلل، واعطى الثان حلتين، والثالث حلة، والرابع دينارًا، والخامس درهما، والسادس فضة، وقال: بارك الله فيك، وفي كلكم، وفي

السابق والقسكل) ١١

نبی کریم ناتش د کپری په یوڅو جوړو باندی چه د یمن نه د هغوی ناتش د باره راغلی وې د داسونو زغلولومقابله او کړه نو اول راتلونکی ته نی درې جوړې ورکړې ،دوئم ته دوه جوړې، دریم ته یوه جوړه څلورم ته یو دینار پنځم ته یو درهم او شپږم ته ئې چاندی د انعام په توګه ورکړل او ارشاد نی اوفرمائیلو چه الله تعالی دې تا ته او په ټولوکښې برکت واچوی په اول راتلونکی اس کښې هم او په او په او په او په ټولوکښې برکت واچوی په اول راتلونکی اس کښې هم او په او په او په او په ټولوکښې برکت واچوی

په اول راتلونکی اس کښی هم او په اخری پاتی کیدونکی اس کښی هم د امام مالك مُسِیْ باره کښی ابن قدامه مُرَاثَد المغنی کښی دا نقل کړی دی چه مقابله دی صرف د بادشاه د طرف نه وی او چه د نور چا د طرف نه دا مقابلی وی نو جائزنه دی (۲) د مالکیه مشهور مذهب دا دی چه هر متبرع سړی دا مقابلی کولی شی (۳)

که چرې مال د یو طرف نه وی، مثلاً فریقین دا اووائی چه که ته زما نه وړاندې شوې نو تاته به دومره مال درکوم او که زه تانه وړاندې شوم نو زما دَپاره به هیڅ نه وی او بالعکس. دا صورت هم د نورو په نزد جائز دې البته امام مالكر الله دا صورت هم په جوارنی کښې شمیرلوسره نا جائز ګرځولې دې (۴)

لیکن دُ مالکیه په کتابونوکښې دې صورت ته هم جائز وئیلې شویدې.(۵) صحیح خبره همدغه ده چه ائمه اربعه ددې دونم صورت په جوازباندې متفق دی.(۶)

که چرې مال د دواړو طرفونه وی، مثلاً فریقین داسې اووائی ۱ن سبقتنی فلك علی کذاوان سبقتک فلک علی کذاوان سبقتک فلی علیک کذا که چرې زه سبقتک فلی علیک کذا که ته مانه وړاندې شوې نو ستا به په ماباندې دومره وی او که چرې زه تانه وړاندې شوم نو په تابه زما دومره وی. دا صورت په اجماع باندې حرام دې. ځکه چه دا هم هغه جواری ده د کوم نه چه شریعت منع کړیده. (۷)

﴿ چه فریقین په مقابله کښی څوك دریم سړې داخل کړی همدغه دریم سړی ته محلل وائی اود دې صورت دا دې چه دا دوه کوم چه اصل فریقین دی هغه د مال یو مقدار راوباسی او دریم هیڅ مال هم ورنه کړی او هغه دواړه دې دریم سړی ته اووائی که چرې ته زمونږ د دواړو نه وړاندې او وتلې نو زمونږ د دواړو ټول مال ستا او که مونږ دواړه تانه وړاندې شو نو په

۱) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٥٩)-

۲) (المغنى لابن قدامة (ج ٩ص ٣۶٩)-

٣) (تكملة فتح الملهم (آص ٣٩) واوجز المسالك (ج٤ص٧٧)-

٤) (عمدة القاري (٤ أص ١٤١) وفتح الباري (ج٤ص ٧٣)-

۵) (ردالمختار كتاب العظر والاياحة، فصل في البيع (ج٥ص٢٨٥) ومسائل شئ (ج٥ص٥٦)-

۶) (تكملة فتح الملهم (ج٣ص ٣٩٠)-

٧) (حواله بالا وعمدة القارى (ج ١٤ اص ١٤١)-

ناباندې زمونږ د پاره هيڅ هم لازم نه دی.

اوکه هغه دریم سړې دې دواړو نه چه اصل فریق دی وړاندې اووتلو نو د ټول مال حقدار به هغه دی اوکه هغه دواړه د دې محلل نه وړاندې شو نو دوه صورتونه شو: که هغه دواړه په یو ځای د دې محلل نه وړاندې شو نو چاته به د دې دوئم نه هیڅ هم نه ملاویږی

او که دا دواړه د محلل نه يو بل پسې وړاندې شو نو د دې دواړونه چه په خپل ملګري باندې وړانديوالي او کړو هغه به د ده د مال مستحق وي او دا دونم به د اولني د مال حقدار نه وي (۱)

د دې څلورم صورت حکم د حنفيه په نزد هغه دې چه کوم امام محمد کيني بيان کريدې ادعال الثالث انبايکون حيلة للجواز، اذاکان الثالث يتوهم منه ان يکون سابقا ومسهوقا فاما اذاکان يتيقن

انه يسبقها لامحالة، اويتقن انه يصيرمسبوقا فلايجوز))(٢)

د فریقینو خپل ځان سره دریم کس یوځائ کول د جواز د پاره حیله په هغه صورت کښې جوړیدیشی چه کله د دریم باره کښې دا ګمان وی چه هغه به د ټولونه وړاندې اوځی یا به روستوپاتې کیږی. او که د دې دریم باره کښې دا یقین وی چه هغه به د دې دواړونه لازمی توګه باندې وړاندې اوځی یا دوی ته په دې باره کښې دا یقین وی چه هغه به د دې دواړونه شاته پاتې کیږی نو جائزنه دی.

دَ جواز دَا صَوْرَتَ په دې شرط سره چه دريم سړى باره کښې دا ګمان وى چه هغه به د دې دواړو نه وړاندې اوځى يابه روستو پاتې کيږى، دا د امام ابوحنيفه، احمد، شافعى، اوزاعى،اسحاق، سعيدبن مسيب او زهرى النام مذهب دې. (٣)

اود امام مالك مناه مناه مناه وجابر منه (۵) قول دادى چه محلل سره هم دا صورت جائزنه دى (۶) د جمهورو مستدل د دى څلورم صورت په جواز باندې د حضرت ابوهريره څاڅو هغه حديث دې كوم چه امام ابوداؤد (۷) او امام احمد منه اي نقل كړى دى چه حضرت ابوهريره څاڅو د رسول الله ناه منه دوايت كوى:

قوله: قال: من ادخل فرساً بین فرسین، یعنی هو لایامن ان یسق فلیس بقه آر،ومن ادخل فرسا بین فرسین،وقدامن ان یسبق فروقه آر:^{۸۰}

١) (عمدةالقاري(١٤ ص ١٤١) وتكملة فتح الملهم (ج٣ص ٣٩٠)-

۲) (الفتاوي الهندية (ج۵ص ۲۲۹)-

٣) (المغنى لابن قدامة (ج٩ص٣٧٢)-

أ) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٤١) والمدونة الكبرى -

۵) (المغنى لابن قدامة (ج٩ص٣٧٢)-

٤) (نكملة فتح الملهم (ج٣ص٣٠)-

٧) (سنن ابى داؤد أبواب الجهاد باب فى المحلل رقم (٢٥٧٩)-

۸) (مسندالامام احمد (ج۲ص۵۰۵)-

٢٠ (عبدة القارى (ج ١٤ اص ١٤١) ومشكوة المصابيح (ج٢ص١١٣٨) رقم (٣٨٧٥)-

مغوی تالم فرمائیلی دی که یو سړې د دوو اسونو په مینځ کښی خپل اس شامل کړی یعنی د چاباره کښی چه دا یقین نشته چه هغه به وړاندې شی نو دا قمار یعنی جواری نه ده، اوک یو سړې د دوو اسونو په منیځ کښی خپل اس شامل کړی د چاباره کښی چه دا یقین وی چه هغه به وړاندې شی نو دا جواری ده.

نود دې پورتنی حدیث نه دا ثابت شو چه چرې محلل د وړاندې وتلوګمان نه وی نو دا صورت د جوارئی نه دی، البته که د محلل د وړاندې وتلویقین وی نو دا یقینا جوارګردې او جمهور د دې جواز قائل هم نه دی. والله اعلم.

٨٥-بَاب: غَايَةِ السَّبْقِ لِلْخَيْلِ الْمُضَمَّرَةِ

د ترجمه الباب مقصد: د امام بخاری او مقابلی د کی ترجمه نه مقصد دا خودل دی چه د خیل مضمره غایت اوانتها به د مندی او مقابلی د پاره زیات وی او د غیرمضمره په مینځ کښی چه کله مقابله کولی شی نو د هغی د پاره چه کوم غایت مقرروی هغه به کم وی. (۱) اود دی وجه ظاهره ده ځکه چه مضمره به ترډیر وخته پورې په منډه باندې قادروی په خلان د غیرمضمره چه هغه زر ستړې کیږی. او که هغه د خپل طاقت نه زیات اوزغلوې نو په هغه کښی د ده د ضرر او هلاکت پوره اندیښنه ده.

نو د ٔباب په حدیث کښې دا راغلی دی چه د خیول مضمره غایت حضور گلف د مقابلې په دوران کښې تقریبا یو میل ایخودې دوران کښې تقریبا یو میل ایخودې دې دوران کښې تفریبا یو میل ایخودې دې. په دې کښې همدغه حکمت دې کوم چه اوس مونږ ذکر کړو. (۲)

مدا: حَدَّثَنَا عَبُدُ اللّهِ بُنُ مُحَبَّدِ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةً عَنْ نَافِعِ عَنْ الْبِن عُبَرَ رَضِى اللّهُ عَنْبُهِ وَسَلّمَ بَيْنَ الْفَيْعَ عَنْ الْبِي صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ بَيْنَ الْفَيْلِ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ بَيْنَ الْفَيْلِ الّتِي قَدْ أَفْعِرَتُ فَأَرْسَلَهَا مِنْ الْحَنْمَ وَكَانَ الْمَدُ الْفَيْلِ الّتِي لَمْ تُعَمَّرُ فَأَرْسَلَهَا مِنْ الْحَنْمَ وَكَانَ الْمَدُ الْمَدُ الْمَدُ الْمَدُ الْمَدُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَكَانَ اللّهُ اللّهِ مَلْمُ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهُ وَسَلّمَ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ وَسَلّمَ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهُ وَكُمْ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهُ وَكُمْ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهُ وَكُلْلُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ الللللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللللّهُ اللللّهُ

تراجم رجال

ا-عبدالله بر هجمد: دا ابوجعفر عبدالله بن محمد مسندی مطیح دی د هغوی مختصر حالات (رکتاب الایمان باب امورالایمان) کنیم تیرشوی دی. (۴)

۱) (فتح الباري (ج۶ص ۷۱)-

۲) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ١٤٠) وشرح ابن بطال (ح ٥ص ٧٢)-

٣) (قوله: عن ابن عمر رضى الله عنهما: الحديث مرتخريجه في كتاب الصلاة باب حل يقال: مسجد بني فلان؟

٤) (کشف الباری(ج۱ص۶۵۷)-

<u>ڪشف الباري</u>

معاويه: دا ابوعمرومعاوية بن عمروالازدي المياد دي. (١)

م- ابواسحاق: دا ابواسحاق ابراهیم بن محمد بن الحارث الفزاری محمد دی. (۲)

م-موسى بر عقبه: دا موسى بن عقبه بن ابى عياش اسدى مدنى ميد دى. (٣)

ه-نافع: دا عبدالله نافع مولى ابن عمر كما دى (۴)

٢- ابر. عمر: دا مشهورصحابي رسول، حضرت عبدالله بن عمر الله وي. د دوي حالات ركتاب الايمان باب الايمان وقول النبى صلى الله عليه وسلم: بنى السلام على عبس)) لاندى تير شوی.(۵)

سوی روی تنبیه: د حدیث باب تشریح په تیرو شوو بابونو کښی راغلی ده. فائده: د حدیث باب نه دا فائده مستنبط شوه چه کله د اسونو په مینځ کښی مقابله کوئی نود مقابلی انتها ، او غایت دی معلوم وی. نورداچه اسونه دی په رفتار آوطاقت کښی یوشان وی اوداچه د خیول مضمره سره غیرمضمره مقابله مه کوئی، په دې د امت د علماو اجماع ده (۶)

٥٥- بَأَبِ نَاقَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

دُ ترجمة الباب مقصد: دلته امام بخارى وَاللهُ دَ نبى كريم وَاللهُمْ دَ اوبنى قصواء ذكركول غواړي. (٧)

عوارى (١) توله: قَالَ ابْنُ عُمَرَ أَرْدَفَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أُسَامَةَ عَلَى الْقَصْوَاءِ: حضرت ابن عمر ﷺ فرمائی چه نبی کریم ﷺ حضرت اسامه بن زید بن حارثه په قصواء

اوبه باندى خپل شاته سور كُرو. قوله: وَقَالَ الْمِسُورُ قَالَ النَّبِيُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا خَلَأَتُ الْقَصُواءُ: او حضرت مسور المائز فرمائي چه نبي كريم ناهم أوفرمائيل چه قصوا، پخپله نه ده ناسته دَپورتنودوارو تعلیقاتو تخریج د حضرت ابن عمر الله تعلیق امام بخاری الله موصولاً کتاب المغازی کښی نقل کړيدي (۸)

اود د حضرت مسور بن مخرمه المالي تعليق د امام بخاري رفي نه علاوه امام ابوداود وكله هم

١) (دَ دوى دَ حالاتودَپاره اوګورئ کتاب الاذان باب اقبال الامام على الناس عنه تسوية الصفوف-

٢) (دَ دوى دَ حالاتودَپاره اوګورئ كتاب الجمعة باب القائلة بعد الجمعة-

٣) (دَ دوى دَ حالاتودَبار، اوكورى كتاب الوضو، باب اسباغ الوضو، -

^{4) (}د دوى د حالاتود پاره او كورى كتاب العلم باب من اجاب السائل باكثر مماساله-

۵) (کشف الباری (ج ۱ص۶۳۶)-

ع) (شرح ابن بطال (ج۵ص ۷۲)-

۷) (عمدة القاري(ج ۱۶ ص ۱۶۱)-

٨) (انظرالصحیح للبخاری کتاب المغازی باب ججة الوداع رقم (٠٠ ٤٤)-

موصولاً ذكر كړيدې. (١)

د نبی اکرم تایخ د کرکولومقصد: امام بخاری مید دلته د باب په ذیل کښی دوه تعلیقات ذکر کری دی یود حضرت ابن عمر الحالی او دوئم د حضرت مسوربن مخرمه الحالی او په دواړو کښی د نبی اکرم تایخ د ناقه و تصواء ذکر راغلی دی. مقصد دا چه د هغوی تایخ یوه ناقه و ه، چه دُ هغي نوم قصواء وو.

باب سره مناسبت: دُ دې تعليقاتومناسبت هم دُ باب دُ ترجمه سره واضح دې چه باب الته النبى صلى الله عليه وسلم قائم كريشوى دى. او به دواړو تعليقاتوكښى د حضور كالله د ناقه تصواء ذكر دي.

[٢٧١٧/٢٧١٦]حَدُّنَنَاعَبُدُ اللَّهِ بْنُ هُعَمَّدٍ حَدَّثَنَامُعَا وِيَةُ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ مُمَيْدٍ قَالَ سَمِعْتُ أُنْسًا(٢)رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ كَانَتُ نَاقَةُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُقَالُ لَحَاالُعَضْبَاءُ

تراجم رجال

-عبدالله بر عجمد: دا ابوجعفر عبدالله بن محمدمسندي ميه دې د دوي حالات «كتاب الایهان باب امور الایهان)) کښی تیرشوی دی. (۳)

r-معاویه: دا ابوعمرومعاویه بن عمروالازدی مید دی در ۴)

-- ابواسحاق: دا ابواسحاق ابراهیم بن محمدبن الحارث فزاری مند دی. (۵)

٣- حميل: دابوعبيده بن ابي حميد الطويل الطويل الميلة دي. د دوى حالات ((كتاب الايبان باب عوف البؤمن من ان يحبط عبله وهولايشعن) كښې تيرشوى دى. (۶)

۵-انس: دا مشهورصحابی حضرت انس بن مالك الله دی. د دوی حالات ((كتاب الايمان بابمن الایمان ان یعب لاخیه مایعب لنفسه)) کښې تیرشوی دی. (۷)

١) (انظر الصحيح للبخاري كتاب الشروط باب الشروط في الجهاد والمصالحة مع اهل الحرب رقم (٢٧٣١-٢٧٣١) وأبوداؤد في سننه ابواب الجهاد باب في صلح العدو رقم (٢٧٤٥-٢٧۶٤) وابواب السنة باب في الخلفاء رقم (٤٥٥٥)-

٢) (قُولُه: انسارضي الله عنه:الحديث اخرجه البخاري ايضًا كتاب الجهاد باب ناقة النبي صلى الله عليه وسلم رقم (٢٨٧٢) وكتاب الرقاق باب التواضع رقم (٤٥٠١) وابوداؤد في سننه ابواب الادب باب في كراهية الرفعة في الاموررقم (٤٨٠٢-٤٨٠٣) والنساني في سننه كتاب الخيل والسبق والرمي باب السبق رقم (٣٤١٨) ٣) (كشف البارى (ج ١ص ٤٥٧)-

٤) (د دوى د حالاتود باره أو كورئ كتاب الاذان باب اقبال الامام على الناس عند تسوية الصفوف-

۵) (د دوى د حالاتود پاره او گورى كتاب الجمعة باب القائلة بعدالجمعة ـ

۶) (کشف الباری (ج۲ص۵۷۱)-

٧) كشف البارى (ج٢ص٤)-

[١٥١] حَذَّنَا مَالِكُ بُنُ إِسُمَاعِيلَ حَذَّنَا أَهُ يُرْعَنُ مُمَيْدِ عَنُ أَنْسٍ (١) رَضِى اللَّهُ عَنْهُ قَالَ كَانُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَاقَةٌ تُمَمَّى الْعَضْبَاءَ لَا تُسْبَقُ قَالَ مُمَيْدٌ أَوْلَا تَكَادُ كُنْقُ فَعَاءً أَعْرَابِي صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَاقَةٌ تُمَمَّى الْعَضْبَاءَ لَا تُسْبَقُ قَالَ مُعَنَّ ثَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَاقَةٌ تُمَمَّى الْمُسْلِمِينَ حَتَّى عَرَفَهُ فَقَالَ حَقَّى الْبُنُونَ فَعَادُ كَامَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَمَ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسُلَّمُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ عَلَيْهُ وَلَمُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَلَمْ اللَّهُ عَلَيْهُ وَلَمْ اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ وَلَمْ اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْكُوا عَلَيْكُوا عَلَيْهُ الْعُلْمُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ الْعَلْمُ الْعَلَيْمُ الْع

تراجم رجال

-مالكبر اسماعیل: دا ابوغسان مالك بن اسماعیل بن زیادالنهدی میشی دی. (۲) مالک بر اسماعیل بن زیادالنهدی میشی دی در ۲ ما ما ما ما ما ما ما در کتاب المیان با با المیلات من الایمان) لاندی تیرشوی دی اود سند باقی رجال په تیرشوی سند کښی راغلی دی. (۳)

توله: قال: كان للنبى صلى الله عليه وسلم ناقة تسمى العضباء لاتسبق: حضرت انس الله نه روايت دى چه د نبى كريم الله او به وه او به وه، هغى ته به ئى عضباء وئيله، هغى سره په مقابله كښى به يوه او به نه وړاندې كيده. يعنى غضباء نومى او به نبى كريم سره وه او هغه به هميشه د منډې په مقابله كښى وړاندې وه او نورو او بنوبه د هغى مقابله نشوه كولى.

قوله: قال حمین اولاتکادتسبق: حمین راوی وائی یائی دا اووئیل چه څوك د دې نه وړاندې نه شو تلي.

کلمه او د شك دپاره ده ، یعنی حمیدالطویل ته شك شویدی چه حضرت انس گانو ((لاتسبق)) او په نورو روایاتو کښی بغیرد شك نه هم ((لاتسبق)) دی (۴) قوله: فجاء اعرابي علی قعود ، فسبقها: یواعرابی په یوځوان اوښ باندې سور راغلو او د

هغد اوښ د عضباء نه وړاندې شو.

عد اعرابی اوس سره د عضباء مقابله اوشوه نود اعرابی اوس او کتله اود عضباء نه وراندی شو. حافظ ابن حجر منظم فرمائی چه ماته د دیر تلاش او تتبع نه باوجود د هغه اعرابی نوم معلوم نه شو لیکی: ((ولماتف علی اسم هذا الاعرابی بعد التتم الشدید)) (۵)

١) (قوله: عن انس رضى الله عنه: الحديث مرتخريجه انفافي الحديث السابق-

٢) (د دوى د حالاتودَپاره اوګورئ کتاب الوضوء باب الماء الذي يغسل به شعر الانسان-

۳) (کشف الباری (ج۲ص۳۶۷)-

أ (فتح البارى (ج عُص ٤٧)-

٥) (حواله بالا-

د قعود معنی: تعود بالفتحمل القاف مغه خوان اوښ ته وائی په کوم چه سورلی کیدیشی یعنی هغه سور په خپل ځان باندې قابوکولې شی اود دې کم نه کم عمر دوه کاله دې او چه کله د شپږو کالو عمر ته اورسی نو هغې ته جبل وائی او تعود مذکر اوښ ته وائی او مؤنث ته تلوص وائی. (۱)

ته فعوس وایی. (۱) ابوعبیده گیاری فرمائی چه په اوښانوکښې قعود هغه ته وائی چه د خپل څرونکی په هر حاجت کښی پکار راځی. (۲)

قوله: فقال: حق على الله ان لا يرتفع شئ من المانيا الا وضعه: نونبي كريم نظم او فرمانيل چه په الله باندې دا حق دې چه كوم څيز په دنيا كښي او چت وي هغه بنكته كړى مطلب دا چه د دنيا په هرڅيز كښي د كمال نه پس زوال دې. هغه هم د الله تعالى ذات مبارك دې چاته چه زوال نشته محنى عادة د الله په ټولو څيزونو كښي دا دى چه هغه د پوره كيدلو نه پس په زوال كښي كيږي يو څيز هم همشه كامل او مكمل نشي پاتې كيدې او آخر كم وروكي شان كم وروكي شان دى چه په شروع كښي وروكي شان كم وره مزه مزه لوئيږي، په خوانئي كښي خپل كمال ته اورسي نو بيا چه كله د بوداوالي طرف ته د هغه سفر شروع كيږي نو په كمال كښي نقصان راځي او آخر يوه ورځ هغه بدن كوم طرف ته د هغه سفر شروع كيږي نو په كمال كښي نقصان راځي او آخر يوه ورځ هغه بدن كوم چه به ترو تازه اوسيدلو فناكيږي. (كُلُمَنُ عَليَهَافَانِ قَايَتُنْي وَجُهُرَتِك دُوّالجَلْل وَالْاِكْرَامِ قَلَى وه ورځ هغه بدن كوم چه به ترو تازه اوسيدلو فناكيږي. (كُلُمَنُ عَليَهَافَانِ قَايَتْي وَجُهُرَتِك دُوّالجَلْل وَالْاِكْرَامِ قَلَى وه هم د يوې ناقه مختلف د حضور تا ه د او كه هم د يوې ناقه مختلف د حضور تا ه د او د كه هم د يوې ناقه مختلف د حضور تا ه د او د كه هم د يوې ناقه مختلف د حضور تا ه د او د كه هم د يوې ناقه مختلف

د علامه حربی محطی وینا ده چه دا هم د یوې ناقه مختلف نومونه دی، ورسره فرمائی چه

نومونه دی.

١) (مختار الصحاح مادة قعد-

٢) (حواله بالا-

۳) (ارشاد الساری)ج۵ص۸۰)-

٤) (صحيح البخاري كتاب الرقاق باب التواضع (٥٥٠١).

٥) (الرحمن: ٢۶-٢٧-

د الباری نصوا، عضباء او جدعاء سره د حضور عظم او نبه یادولی شی. (۱)

د بعض نورو حضراتو وینا ده چه داد جداجدا او نبو نامی دی، عضبا ، جداده، قصوا ، جدار۲) ة انعتلاف سبب: په اصل کښې دلته د اختلاف سبب دا دې چه د سيرت په کتابونوکښې د حضور نظم په اوښوکښې د يوې نوم عضباء، د دونچې نوم جدعاء، مريمې نوم صلماء او د خلورمی نوم مخضرمه راغلی دی. (۳) اودا ټول د غوږ په صفاتوکښی دی، عضبا، هغه اوښی ته وائی د کومی چه غوږونه شلیدلی وی. جدعا، معنی غوږ پریشوی. صلما، معنی هغه اوښه ده د کومی هغه اوښه ده د کومی ړ غوږ غاړه چه پرې وي.

اوس دلته دوه احتماله دي:

🕥 په دې کښې هر يو صفت جدا جدا دې يعني يوه اوښه داسې وه چه د هغې غوږشليدلې ور په دې وجه هغې ته عضباء اوونيلې شو د بلې غوږپريشوې وو نو هغې ته ني جدعاء وَنَبِلُ او دُ دريمي دواره غوږونه پريشوي وو نو هغه ئي په صلماً اسره يادولوله او د خلورمي دُ غُورٍ غاړه پرې وه نو هغې ته به ئې مخضرمه وئيل(۴)

وداټول صفتونه د يوې اوښې وو، اوس چه چاته څنګه ښه ښکاريده او خيال ئي راتلو هم ده ده (۵)

على الله د نبي كريم المنظم به اوبنه قصواء باندې سور شو ((انه ركب راى على ناقة رسول الله صلى الهمليه وسلم القصوام)) همدغه روايت د حضرت جابر بن عبدالله الم و مروى دى په دې کښې د قصواء په ځای عضباء مروی دې، بعض نورو حضراتو هم په دې روايت کښې جدعاً، صفت ذکر کړيدې. نو دا د خبرې تصريح ده چه دا دريواړه صفتونه هم د يوې اوښې دى ځكه چه قصه هم يوه ده. نوعلامه قسطلاني بي فرمائي (قهنا يصرح ان الثلاثه صفة ناقة

واحدة لان القصة واحدة)) (ع) او امام بخاري مينه زائي همدغه معلوميږي چه هغه د دې خبرې قائل دې چه دا ټول په ټول صفات هم د يوې ناقه دی ځکه په ترجمه الباب کښې هغه د ناقه مفرد لفظ سره ذکر كريدي. حافظ ابن حجر عليه فرمائى (الهدالناقة في الترجية اشارة الهان العضياء والقسواء واحد)(٧)

۱) (فتع الباری (ج 2 ص ۷٤) وشرح القسطلانی (ج 2 0

۲) (فنع الباری(ج۶ص ۷۴)-

۳) (زادالمعاد فی مدی خیرالعباد (ج۱ص۱۳۴) وشرح القسطلانی (ج۵ص۸۱)-

ع) (ارشادالساری (ج۵ص ۸۱)-

٥) (حواله بالا-

^ع) (حواله بالا-

۲) (فتع الباری (ج۶ص۲۳)-

كتأب الجهاد (جلداول)

تنبیه: قصوا، هغه اوبنی ته وائی د کومی چه غوږپرې شوی خودا خبره په ذهن کښې یاد ساتنی چه د نبی کریم تلظ د دې مذکوره اوبنی غوږ پرې نه وو بلکه دا د هغی نوم وو (۱) قوله: طَوَّلَهُ مُوسَى عَرْ. حَمَّا دِعَرْ. ثَابِتِ عَرْ. أَنْسِ عَرْ. النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَ فَهِ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ د الله بن محمد مسندی مُنظّهُ د حدیث د بسر راغلی دی یعنی د باب رومبی حدیث کوم چه مسندی روایت کړیدې. د ابوذر د روایت نه علاوه په نورو نسخو کښې عبدالله بن محمد مسندی مُنظی روایت زهیر بن معاویه

روایت که عمروه په عورو سه م مخته د روایت نه پس دې. (۲)

راجع کومه نسخه ده؟ اوس سوال دا پیدا کیږی چه کله دا تعلیق د مستملی په نسخه کښی عبدالله بن محمد مسندی کوه د روایت نه پس ذکر دی او په نورو نسخو کښی سوا د ابوزر د زهیرد روایت نه پس ذکر دی او په نورو نسخو کښی سوا د ابوزر د زهیرد روایت نه پس ذکر دی نو راجح کومه نسخه ده؟ د دی جواب دا دی چه دلته راجع مستملی نسخه ده اود دی وجه داده چه دا د موسی بن اسماعیل په طریق ابوداود کښی موجود ده، د دی سیاق زهیربن معاویه عن حمید نه طویل نه دې،او د ابواسحاق فزاری په طریق باندی بهر حال طویل دې. (۳)

دَمَدْكُوره تعلَيق تَخريج : دَ موسى بن اسماعيل تبوذكي دا تغليق موصولاً امام ابوداؤد بَيْنَة به

خِپل سنن کښې (اېوابالادب) کښې ذکر کړيدې. (۴)

دَمذكوره تعلیق ذكر كولومقصد: معلومیږی داسی چه امام بخاری اول د ابواسحاق فزاری مختخ په روایت كړی نو نقل كړیدې ځكه چه په دې كښې حمیدالطویل د حضرت انس تاتو نه د سماع تصریح كړیده بیا موسی بن اسماعیل تعلیق ذكر كولو سره د دې خبرې طرف ته اشاره او كړه چه همدا حدیث البنانی په طریق باندې مطولاً هم مروی دې، بیا چه كله هغه ته هم د حمید په طریق دا روایت مطولاً ملاؤ شو نو هغه نی هم ذكر كړو. (۵) والله اعلم د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت: د باب د ترجمه سره د حدیث د باب مناسبت په دې توګه دې چه باب (دناته النبی صلی الله علیه وسلم) قائم كړیشویدې، كوم كښې چه عضبا وغیر هم شامل دی، د كوم ذكر چه د باب په ذیل كښې نقل كړیشوؤ په احادیثو كښې دې. (۶)

وم د تر چه د باب په دين نښې نس تړيسوو. ب**اب الغزوعل**ي الحمير

دَ نسخو اختلاف: داخبره زمون په پاکستانی نسخوکښی نشته (۷) صرف مستملی دا باب

۱) (شرح الكرماني (ج۱۲ص۱۱۸)-

۲) (فتح الباری (ج۶ص۷۳)وارشادالساری (ج۵ص۸۰)-

٣) (حواله بالا-

٤) (الحديث اخرجه ابوداؤدابواب الادب باب في كراهية الرفعة في الامور رقم (٤٨٠٢)-

۵) (فنح الباری (ج۶ص۷۳)-

ع) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ٤٧)-

٧) (انظر الصحيح للبخاري (ج١ص٢٠٤)-

نسفی په خپل روایت کښې دا باب وړاندینی باب سره یو ځای ذکر کړیدې ((بابالغزولاعلی الصدروباب بغلة النبي صلى الله عليه وسلم)) اود بخاري شريف د شراحونه هم چادي طرف ته توجو نه ده ورکړې بهر حال دا باب په دواړو صورتو کښې د اشکال نه خالي نه دې!

روبور البته د مستملی د نسخی په اعتبار سره خبره داسی جوړیدیشی چه ترجمه امام صاحب قائم کړه او په څه مناسبت سره نی حدیث د لاندې راوړولود پاره خالی پریخودو کیدیشی چه د مغوى اراده همدغه وه چه د حضرت معاذ المنافعة حديث كوم چه ((باب اسم الفيس والحمار)) لاندې تیرشو دا به ئی د ترجمه لاندې داخلولو یعنی ((کنت ردف النبي صلى الله علیه وسلم علی ماريقالله:مغير) (١)

خو په دې حدیث کښې دا احتمال دې چه هغوی ناتیم په خرباندې سورلی د حضر په حالت کښې کړی وی او دا هم احتمال دې چه د سفر په حالت کښې سورلی کړې وی، داسې د دې حضراتو په نزد څوك چه د مطلق او عام په مینځ کښې فرق نه کوی نو د ترجمه مقصد به

او که د نسفی نسخې ته اوکتې شی نو په هغې کښې صرف د بغله ذکر دې د خرد سره څه ذکر نشته، نو په دې وجه دا صورت هم د اشکال نه خالي نه دې

اوس د دې دونم اشکال خودا جواب ورکړې کیدیشي چه امام صاحب یا خو حمیر او بغله ذکر کړواود بغله حدیث ذکر کولونه پس د حمیردپاره ځائ پریخودو. یا دا اووایه چه د خر حکم به د قچرنه اخستی شی. (۳)

٧٠- بَأَب: بَغُلَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْبَيْضَاءِ

قَالَهُ أَنْسُ [د:٣٠٨] وَقَالَ أَبُوحُمَيْدٍ أَهُدَى مَلِكُ أَيْلَةً لِلنَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَغُلَةً بَيْضًا ءَ[د:٣] د ترجمة الباب مقصد: دلته امام بخارى المائية و نبى اكرم كالما و سبين قبرذ كركول غوارى ش **بوله: قاله انس رضى الله عنه**

دُ مذكوره تعلیق تخریج: په دې عبارت كښي امام بخارى بُرُور د خضرت انس الله دې مشهور حدیث طرف ته اشاره كړيده كوم چه د غزوه حنین متعلق دې. دا تعلیق امام بخارى مشهور حدیث طرف ته اشاره كړيده كوم چه د غزوه حنین متعلق دې. دا تعلیق امام بخارى مشهور نه علاوه امام مسلم مُشاهد هم موصولاً نقل كړيدې. (۵)

 $^{^{-1}}$ (انظر الصحيح للبخاري كتاب الجهاد باب اسم الفرس والخمار رقم $^{-1}$

۲) (فتح الباری (ج۶ص ۷٤)-

۳) (فتح الباري (ج۶ص ۷٤)-

٤) (عددة القارى (ج ١٤ ١ص١٥٢)-

^٥) (انظر الصحيح للبخاري كتاب المغازي باب غزوة الطائف رقم (٤٣٣٧) والصحيح لمسلم كتاب الزكاة باب اعطاء المؤلفة قلوبهم على الاسلام وتصبر من قوى ايمانه رقم (٢٤٤١)-

قوله: وقال ابوحمید: اهنی ملك ایلة للنبی صلی الله علیه وسلم بغلة بیضاء زار حضرت ابوحمیدساعدی تای فرمانی چه د ایله بادشاه نبی کریم تای ته یو سپین قچر به هدیه کنیی ورکړی وو.

من بسی در در با در العلیق امام بخاری کشت نه علاوه امام مسلم کشت او ابوداؤد کشت نه علاوه امام مسلم کشت او ابوداؤد کشت

هم موصولاً نقل كړيدې. (١) د مذكوره تعليقاتومقصد: د دې تعليقاتو مقصد بالكل واضح دې چه كوم باب قائم شويدې دې كښې ((بغلة النبي صلى الله عليه وسلم)) ذكر دې اوهم د دې امر اثبات دواړو تعليقاتو كښې هم دى..

المراعد المراعد المراب على حَدَّثَنَا يَعْنَى حَدَّثَنَا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْا اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْا اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْا اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمَ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمَ اللهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمَ اللهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمَ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمُ اللهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمَ اللهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمَ اللهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ عَلَيْكُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْكُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْكُوالِكُ عَلَيْكُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْكُ عَلَيْ

تراجم رجال

۱- عمرویر علی: داابوحفس عمروبن علی بن بحرباهلی الله (۳)

r- یحیی: دا امام یحیی بن سعید القطان بیش دی د ده حالات ((کتاب الایهان باب من الایهان الایهان الایهان با الایهان الایه

- سفیان: دا مشهور امام حدیث ابوعبدالله سفیان بن سعید ثوری کریای دی، د دوی حالات ((کتاب الایمان با با ملامة المنافق)) لاندې راغلی دی (۵)

م- ابواسحاق: داابواسحاق عمروبن عبدالله سبیعی مید دی، دَ دوی حالات ((کتاب الایهان باب السلاقمن الایهان)) به ذیل کښی تیرشوی دی.(ع)

٥- عمروبر الحارث: داام المؤمنين حضرت جويريه في رور حضرت عمروبن الحارث الحارث (٧)

۱) (الصحیح للبخاری کتاب الزکاة باب خرص التمر رقم (۱٤۸۱) وکتاب الجزیة والوادعة باب اذا وادع الامامم مالک القریة رقم (۳۱۶۱) ومسلم کتاب الفضائل باب معجزات النبی صلی الله علیه وسلم رقم (۵۹٤۸) وابوداؤد ابواب الخراج باب احیاء الموات رقم (۴۰۷۹)-

٢) (قوله: عمروبن الحارث رضي الله عنه: الحديث مرتخرجه في كتاب الوصايا، باب الوصايا-

٣) (د دوى د حالاتو د پاره او گورى كتاب الوضوء باب الرجل يؤضئ صاحبه -

٤) (كشف البارى (ج٢ص٤)-

۵) (کشف الباری (ج۲ص۲۷۸)-

۶) (کشف الباری (ج۲ص ۲۷۰)-

٧) (د دوى د حالاتود پاره أو كورئ كتاب الزكاة باب الزكاة على الزوج والايتام في الحجر-

ح شف البارى

تنبیه: حضرت عمروبن الحارث المای د دی حدیث مکمل تشریح کتاب الرصایا) کښی تیره شویده. د حدیث د ترجمت الباب سره مطابقت: د حدیث د باب ترجمه سره مناسبت د حدیث شریف

په دې جمله کښې دې. ((ماترك النبي صلى الله عليه وسلم الابقلته البيه اد...)).

[منع] خَدَّنَنَا مُحَمَّدُ بُنُ الْمُثَنِّى حَدَّثَنَا يَعْنَى بُنُ سَعِيدٍ عَنْ سُفْبَانَ قَالَ حَدَّثِنِي أَبُو اسْعَاقَ عَنْ الْبَرَاءِ() رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ لَهُ رَجُلِ يَا أَبَاعُهَا رَةً وَلَيْتُمُ يَوْمَ حُنَيْنِ قَالَ لَا وَاللَّهِ مَا وَلَيْ النّبِي صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَكِنْ وَلَى سَرَعَانُ النَّاسِ فَلَقِيَهُمْ هُوَاذِنُ بِالنّبِلِ وَالنّبِي صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى بَعْلَتِهِ الْبَيْضَاءِ وَأَبُو سُفْبَانَ بُنُ الْحَادِثِ آخِذُ بِلِجَامِهَا وَالنّبِي صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى بَعْلَتِهِ الْبَيْضَاءِ وَأَبُو سُفْبَانَ بُنُ الْحَادِثِ آخِذُ بِلِجَامِهَا

تراجم رجال

ا- هجهابر المثنی: دا ابوموسی محمدبن المثنی بن عبیدعنزی میدی دی. د دوی مختصر حالات ((کتاب الایمان بابحلاو ۱ الایمان) لاندی تیرشوی دی، اود سند نور رجال یعنی یحیی بن سعید، سفیان او ابواسحاق د تذکری حواله په پورتنی سند کښی اوس تیرشوی دی. (۲)

٥- البراء: دامشهور صحابی حضرت براء بن عازب الله دی، د دوی حالات ((کتاب الایهای باب العلاقمن الایهان)) به ذیل کښی شوی دی. (۳)

يوسوال اود هغې جواب: دلته يو سوال دا پيداكيږى چه نبى اكرم تري په جنګ حنين كښې په كوم تري په جنګ حنين كښې په كوم قچر باندې سوروو، آيا دا هم هغه قچردې چه د ايله بادشاه هغوى تري ته په هديه كښې پيش كړې وو كه بل دې؟

١) (قوله: عن البراء رضى الله عنه: الحديث مرتخرجه في باب من قاد دابة غيره في الحرب-

۲) (کشف الباری (ج۲ص۳۷۵)-

٣) (كشف البارى (ج٢ص٣٧٥)-

 ^{4) (}فتع البارى (ج۶ص۷۵)-

۵) (شرح النووی علی مسلم (ج۲ص۹۹)-

بغلة له بيضاء اهداها له فهوة بن نفاثة الجدامي) (١) يعنى رسول الله نظيم به خبل سبين هغې رنګ څنګه وو؟ ځکه چه د بخاري شریف په روایاتو کښې د بی**ضاء**یعني سپین ذکر دي او د مسلم شریف په اکثرو روایاتوکښې هم بغلة بیضاء (۲) ذکر دی. البته یو روایت کوم چه حضرت سلمه بن الاكوع النون نه مروى دى په هغى كښى ((البغلة الشهبام)) مروى دى (٣) دغه شان علامه ابن سعد مُرَالِهُ طبقات كښى يو ځاى كښى دا ذكر كړى دى چه نبى كريم تَهْمُ خَيِلَ سَبِينَ قَحِر دَلَدُلُ بِانْدَى شُو وَرَكِ بِعَلَتُهُ الْبِيضَاءَ دَلَوَلَ (۴) أو هم په دې باب كښي دَ يوڅو صفحونه پس دا ليکي چه هغوي تانځ په خپل ((بغلةشههاع)) باندې سور وو ((دهوعل بغلةله شهباء)) (۵)

د دې تعارض درې جوابونه دی:

🕦 عُلامه عینی ﷺ فرمائی چه ممکن دی هغوی تالی اول په یوقچرباندې سور شوې وی هغې نه کوز شوې وي په بل سور شوې وي. (۶)

او حافظ ابن حجر روایت در مسلم دی یعنی حضرت عباس بن عبد لمطلب المانية هغه حديث چه اوس تيرشو. (٧)

غالبًا دَ حافظ صاحب نظر په دې روايت نه دې تيرشوې کوم چه مونږ اوس د حضرت سلمه بن الاكوع الله واله سره بيان كړو ځكه چه هغه هم د مسلم روايت دى. د دې د پاره هم د مسلم یو روایت راجح او صحیح او دوئم مرجوح ګرځول په پوهه کښې نه راځی او سره د دې چه د هغې شاهد او متابع هم موجود وي، ځکه د ابن سعد هغه روایت کوم کښې چه

((على بغلة له شهباء)) الفاظ وارد شوى دى هغه د حضرت عباس الماني نه مروى دى. او د علامه عینی د جواب مدار په دې باب باندې دې چه دلته هغه قچر مراد واخلنې، يو بیضا، او بل شهبا، او مطلب دا وی چهٔ هغوی ناهم په غزوه حنین کښې په دوو قچرو وار په

١) (انظر الصحيح المسلم (ج۶ص ١٠٠) كتاب الجهاد والسير باب غزة حنين رقم (٤٤١٢)-

٢) (انظر الصحيح السلم كتاب الجهاد والسير باب غزوة حنين رقم (٤٤١٢) وايضًا انظر شرح معانى الاثارللطحاوي (ج٢ص١٧٧)-

٣) (ضعيخ مسلم كتاب الجهاد والسير باب غزوة حنين رقم (٤۶١٩)-

٤) (طبقات ابن سعد (ج ١٥٠)-

۵) (حواله بالا(ص١٥٥)-

۶) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٥٧)-

۷) (فتح الباری (ج۶ص۷۵)-

وار سور شوی وو.

و دا جواب هم ورکولی شی چه د شهبا، او بیضا، نه مراد هم یو قچر وی ځکه چه د لغت به اعتبار سره په دې الفاظو کښې څه خاص فرق نشته، د دې د پاره چه بيضا، خو ښکاره سپين ته واني ليکن د شهب معنى هم دا ده چه بياض سره لږ غوندې تور والي هم وي،امام محمد رازى مُراث فرمائي ((الشهبة في الالوان: البياض الغالب على السواد))(١)

بهرحال دلته راجح جواب د علامه عینی الله معلومینی.

تنبیه د حضرت براء بن عازب المن مذكوره حدیث تشریح ماقبل كښی ((باب من قاد دابة هده لى الحرب) كنبى تيره شويده.

د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت: د حدیث د ترجمه د باب سره مناسبت د حدیث په دې جمله كښى دى: ((والنبى صلى الله عليه وسلم على بغلته البيضام)) (٢)

١٧- بَأْب: جِهَا دِالنِّسَاءِ

دَ ترجمه الباب مقصد علامه گنگوهي الله على د دي باب د ترجمه دوه مقصده بيان كړى دى: 🕦 امام بخاري مُزَيَّة په دې ترجمه کښي دا بيان کړي دي چه دَ ښځو جهاد څه څيز دې؟ اود هغوى د جهاد نوعيت ئى اوخودلو چه د هغوى جهادحج كول دى.

ن د نبځو په جهاد کښې د شرکت جواز بيانول مقصد دې چه ښځې په جهاد کښې شريك كيدي شي په اول صورت كښې خو مطلب واضح دې اود دونم صورت وضاحت داسې دې چه دَ سُوالَ تَپُوسَ كُونَكُم حَضَرَتَ عَائَشَى ﴿ إِنَّ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهِ جَهَادُ كَنِينِ دَ شركت غوښتنه اوكړه نو نبي اکرم الله منظم نکير اونه کړونود هغوي الله نکير نه کول د دې خبرې تقريردې چه ښځي به جهاد كنبي شركت كولى شي اود هغوى شركت في الجهاد جائزدي.

خُودا خبره دَّی ښکاره وَی چه دا اجازت مشروط دی که دَ فتنی اندیښنه وی نو بالکل اجازت نشته او که دفتنی او فساداند بښنه نه وی نوښځی په جهاد کښې شرکت کولې شي (۳) [٢٢١٠-٢٢٠٠] حَدَّثَنَا هُجُمَّدُ بُنُ كَثِيرِ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ مُعَاوِبَةَ بْنِ إِسْحَاقَ عَنْ عَائِشَةَ بِنْتِ طُلْحَةَ عَنْ عَائِشَةَ أُمِّرِ الْمُؤْمِنِينَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا (٣) قَالَتُ اسْتَأْذَنْتُ النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْجِهَادِ فَقَالَ جِهَادُكُنَّ الْحَبُّ وَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مُعَاوِيةً بِهَذَا

تراجم رجال

ا- هجمل بر . کثیر: دا ابو عبدالله محمد بن کثیر عبدی بصری منطق دی. د دوی حالات ((کتاب

١) (مختار الصحاح ماده "شهب"-

۲) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ١٤٣) -

٣) (لامع الدراري (ج٧ص ٢٣٤)-

أ (قوله: عن عائشة رضى الله عنها: الحديث مرتخريجه في كتاب الحج باب فضل الحج المبرور-

العلمهاب الغضب في البرمثلة والتعليم....) كنبي تيرشوي دي. (١)

r-سفیان: دامشهورامام حدیث سفیان بن سعیدثوری کمنی دی، دَ دوی حالات ((کتاب الایهای اب ملامة الهنائق) کنبی تیرشوی. (۲)

r-معاويه بر_اسحاق: دا ابوالازهر معاويه بن اسحاق بن طلحه بن عبيدالله القرشي التيمي پيغودي.

دې د خپل پلار اسحاق، عمران، موسى دا دريواړه د ده ترونه دې د خپلې ترور عائشه ام الدرداء، عروة بن الزبير، سعيد بن جبير، ابوبرده بن ابوموسى او ابراهيم تيمي فالله وغيراً نه د حديث روايت كوي.

اود هغه نه د هغه دوه د تره خامن اسحاق، طلحه اود هغي وريرونه صالح بن موسى او دُهغوى آزادكريشوي غلام يزيدبن عطاء الاعمش،اسرائيل،سفيان ثوري، شريك، شعبه، حسن بن عمرو فیمی او ابوعوانه کیل وغیره نه حدیث روایت کوی. (۳)

- امام احمد ﷺ او امام نسائی ﷺ فرمائی ((ثقة)) (۴)
 - (دوکان تعد کید فرمائی (دوکان تعد)) (۵) و امام ابن سعد کید فرمائی
 - امام عجلی کینی فرمائی ((کان ثقة)) (۶)
- ابن حبان کیدی (کتاب الثقات) کښې ذکرکړیدې (۷)
- (امام ابوحاتم او یعقوب بن سفیان کمی فرمائی ((لاباس به))(۸)
 - (م) امام یحیی بن معین کانته فرمانی ((موثقة)) (۹)
 - علامه ذهبي بين هم هغه ثقد مرخولي دي. (١٠)

تأسو د معاوية بن اسحاق باره كښي د المه جرح او تعديل اقوال اوكتل چه دې ټولو حضراتو ثقه أو معتمد محرخولي دي. ليكن امام ابوزرعه بكية د دي ټولود رائي نه جدا هغه ته ضعیف وئیلی دی فرمانی ((شیخوای)) (۱۱)

۱) (کشف الباری (ج۳ص۵۳۶)-

۲) (کشف الباری (ج۲ص۲۷)-

٣) (دَ شيواو تلامذه دَ باره او محوري تهذيب الكمال (ج ٢٨ ص ١٥٠-١٥١)-

٤) (تهذيب الكمال (ج٢٨ص١٤١) -

۵) (طبقاته (ج۶ص۳۳۹)۔

۶) (تعليقات تهذيب الكمال(ج۲۸ص۱۶۱) وتهذيب التهذيب(ج ۱۰ص۲۰۲) ـ

٧) (النفات لابن حبان (ج٧ص٤٤)-

۸) (تعلیقات تهذیب الکمال(ج۲۸ص۱۶۱) وتهذیب التهذیب(ج۰۱ص۲۰۲)۔

۹) (تاریخ الدارمی (ص۱۷۱)رقم (۶۱۳)۔

۱۰) (الكاشف (ج٢ص ٢٧٤)-

١١) (نهذيب الكَمال (ج٢٨ص١٤١)-

خود دې ټولو اقوالو د تثيق نه پس امام ابوزرغه پيټو د قول طرف ته به التفات نشي کولي ځکه چه دا د هغوی ذاتی رائی ده.

بيا معاويه بن اسحاق صرف د بخاري شريف راوي نه دې بلکه هغه نه امام نسائي مُرايج او ابن ماجه پرانیم مروایت اخستی دی اودا هم د یوقسم توثیق او تعدیل دی.

دونمه خبره دا دې چه امام بخاري هم د هغوي نه صرف د باب همدغه روايت اخستې دې او دُ هغه متابعت نی د حبیب بن ابی عمره په ذریعه ذکر کړیدې. په دې وجه په امام بخاری باندی هیڅ اعتراض نه واریدیږی. (۱)

همدغه وجه ده چه علامه ذهبي ميه چرته د هغه ترجمه په (ميزان الامتدال) کښې ذکر کړې نو هلته ئی د صح علامت هم لگولی دی. (۲) د دې مطلب دا دې چه د هغوی باره کښې معتمد قول د توثيق دی. (۳)

م-عائشه بنت طلحه: دا ام عمران عانشه بن طلحه التيميه مينية ده (۴)

٥-عائشه: دا ام المؤمنين حضرت عائشه بن ابي بكر الصديق في الله دوي حالات ((بده الوحی)) د دوئم حدیث په ذیل کښې تیرشوی دی. (۵)

توله: قالت: استأذنت النبي صلى الله عليه وسلم في الجهاد، فقال: جهاد

كر الحج: حضرت عائشه في فرماني چه ما دَ نبي كريم تراثم نه به جهادكنبي دَ شركت كُولُو اَجَازَتُ اوغُونِستلو نو هغوى تَنْ الله اوفرمائيل ستاسو بسخو جهاد حج دي.

دَ ښځودَپاره جهاد واجب نه دې د باب حدیث په دې خبره دلالت کوی چه جهاد په ښځوباندې واجِب نه دې او نه هغه آيت مبارك (اِلْغِرُواخِفَافَا وَلِقَالًا) د عموم لاندې داخل دې په دې د امت د علماؤ اجماع ده. (ع)

بیت الله دی، د دی وجه دا ده چه ښځي د اهل قتال نه نه دی اونه د هغوی په جهاد باندې قدرت حاصِل دي. اودِ ښځې د پاره د دې نه افضل بل څيز نشته چه ِهغه په ستر کښې اوسی او د سرو سره د کډوډ کیدو او اجتماع نه پرهیز اوکړی همدغه د دوی په حق کښې غوره دی.

۱) (هدى السارى (ص ٤٤٤)-

۲) (ميزان الاعتدال (ج ٤ ص ١٣٤)-

٣) (حاشية سبط ابن العجمي على الكاشف (ج٢ص٢٧٥)-

أ (د مغوى د حالات د پاره اوګورئ کتاب الحج باب فضل الحج المبرور -

۵) (کشف الباری (ج ۱ ص ۲۹۱)-

۶) (شرح ابن بطال (ج ۹ص۷۵)-

ك شاب الجهاد (جداول)

قوله: وقال عبدالله بر الوليد: حدثنا سفيان عن معاوية بهذا: دا تعليق امام

سفیان توری پین په (جامع) کښې موصولاً ذکر کړیدې. (۲)

[ran] حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا أَسُغُيَا لُ عَنْ مُعَاوِيَةً بِهَذَا وَعَنْ حَبِيبِ بُنِ أَبِي عَمْرَةَ عَنْ عَالِمَةً بِلَا أَعْلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَأَلَهُ نِسَاؤُهُ عَنْ النَّبِي طَلْحَةً عَنْ عَائِشَةَ أُمِّرِ الْمُؤْمِنِينَ (r) -عَنْ النَّبِي صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَأَلَهُ نِسَاؤُهُ عَنْ النَّبِي طَلْحَةً عَنْ عَائِشَةً أُمِّرِ الْمُهُمِنِينَ (r) -عَنْ النَّبِي صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَأَلَهُ نِسَاؤُهُ عَنْ النَّبِي طَلْحَةً عَنْ عَمَالُحِهَا وُلَعْمَ الْحِهَا وُلِهُ الْحَجُ [ربه ٢٠٠]

قوله: حدثنا قبیصة حدثنا سفیان عن معاویة بهذا: دا حدیث د حضرت عائشه الله بل سند دی کوم کښی چه د امام بخاری شیخ قبیصه دی. (۴)

تراجم رجال

ا-قبیصه: دا ابوعامر قبیصه بن محمد سوائی کوفی کیات دی. د دوی حالات ((کتاب الایان پاپملامة البنافق)) کښې تیرشوی دی (۵)

۲-سفیان: دا مشهورامام حدیث حضرت سفیان ثوری مینیم دی، د دوی حالات هم کتاب الایمان په مذکوره باب کښی تیر شوی دی.(۶)

r-معاویه: دا معاویه بن اسحاق می د دوی حالات په وړاندینی حدیث کښې تیرشو.

م-حبيب بر ابي عمرة: داحبيب بن ابي عمرة برياد دي.(٧)

ه-عائشه بنت طلحه: سابقه سند او مورثي (٨)

۲-عائشه: سابقه سند اوگورئی (۹)

۱) (شرح ابن بطال (ج۵ص۷۵-۷۶)-

٢) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٩٤) وفتح البارى (ج ١٩ص ٧٤)-

٣) (قوله: عن عائشة رضى الله عنها: الحديث مرتخريجه في كتاب الحج باب الحج المبرور

٤) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٦٤)-

۵) (کشف الباری (ج۲ص۲۷۵)-

۶)کشف الباری (ج۲ص۲۷۸)-

٧) (د دوى د حالاتود باره او كورى كتاب العج باب فضل الحج المبرور ـ

٨) (حواله بالا-

۹) (کشف الباری (ج۱ص۲۹۱)-

د مذكوره تعلیق تخریج حبیب بن ابی عمره بهتا دا تعلیق د قبیصه په طریق سره موصول دی (۱) او حبیب بن ابی عمر تمینی دا تعلیق ابونعیم مینی الستخری کنبی او اسماعیلی موصولاً نقل کریدی (۲)

د مدیّ د ترجمه الباب سره مطابقت دباب د ترجمه سره د باب د احادیثومناسبت په دې معنی دې چه نبی عیمی حج د ښخو د پاره جهاد ګرځولی دې. (۳)

٣٢-بَأَب:غَزُوالْمَرْأَةِ فِي الْبَعْرِ

دَ توجمة البابِ مقصد: امام بخاری مینی مقصد دَ دی ترجمه نه هَغه اختلاف طرف ته اشاره کول دی چه د جمهورو او امام مالك مینی په مینځ کښی دی. (۴)

امام مالك مسلمد بنخو سمندري جنگ كښې شركت ناخوښوى او منع ګرخوى خو د جمهوروپه نزد ښځې چه څنګه د زمكې په جنګ كښې حصه اخستې شي دغه شان په سمندري جنګ كښي هم شركت كولي شي. (۵)

[عدد] حَدَّثَنَاعَبُدُ اللّهِ بُنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بِنُ عَبُو حَدَّثَنَا أَبُوا سُمَا فَ هُوَ الْغَزَادِئُ عَنْ عَبْدِ اللّهِ مُن عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْأَنْصَادِي قَالَ سَمِعْتُ أَنْسًا (٢) رَضِي اللّهُ عَنْهُ يَعُولُ دَخَلَ رَسُولُ اللّهِ مَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ عَلَى ابْنَةِ مِلْحَانَ فَا تَكَاعِنُدَ هَا ثُمْ ضَعِكَ فَقَالَتْ لِمَ تَفْحُكُ يَا رَسُولَ اللّهِ فَقَالَتْ لِمَ مَثَلُ الْمُلُوكِ عَلَى اللّهِ فَقَالَتْ يَاسٌ مِن أُمْتِي يَرْكَبُونَ الْبَعُو الْأَخْمَرُ فِي سَبِيلِ اللّهِ مَثَلُهُ مُمَثَلُ الْمُلُوكِ عَلَى اللّهِ فَقَالَتْ يَارَسُولَ اللّهِ ادْعُ اللّهُ أَن يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ قَالَ اللّهُ مَا اللّهُ مُنْ مُعْلَى مِنْهُمْ قَالَ اللّهُ مَا اللّهُ مُنْ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ الللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ الللللّهُ الللللّهُ اللّهُ الللللّهُ اللل

تراجم رجال

ا-عبدالله بر هجمد: دا ابوجعفر عبدالله بن محمد مسندی برسته دی د دوی حالات ((کتاب الایمان با مورالایمان) لاندی تیرشوی دی (۷)

۱) (عمدة القارى (ج ٤ اص ١٦٤)-

٢) (تعليق التعليق (ج٣ص ١ ٤٤)-

٣) (عمدة القارى (ج ٤ اص ١٩٤)-

ع) (تعلیقات لامع الدراری (ج۲ص۲۳۵)-

٥) (حواله بالا والتمهيد (ج١ص٢٣٢)-

 [﴿] وَوله: انسارضي الله عنه: الحديث مرتخريجه في اوائل كتاب الجهاد باب الدعاء بالجهاد....-

٧) (كشف البارى (جع ١ ص ٤٥٧)-

معاویه بر عمرو: دا ابوعمرو معاویه بن عمروالازدی بین دی (۱) -- ابواسی ق: دا ابواسحاق ابراهیم بن محمد بن الحارث فزاری بین دی (۲) -- عبدالله بن عبدالرحمن بن معمرین دا ابوطواله عبدالله بن عبدالرحمن بن معمرین حزم بین دی (۳)

د- أنس: دا مشهورصحابی خادم نبی، حضرت انس بن مالك فاش دی. د دوی حالات (كتاب الایمان ال

قوله: قال: قال انس: فتزوجت عبادة بر الصامت فزكبت البحر مع بنت قرظة: ابوطواله فرمائى چه حضرت انس الله فرمائى چه حضرت ام حرام فله أذ حضرت عباده بن الصامت الله سره نكاح اوكره اوبيا هغه بنت قرظه سره په سمندر كښى سوره شوه. تنبيه د حضرت ام حرام فله حالات ركتاب الجهاد، په اول او د هغى د خاوند حضرت عباده بن صامت الله حالات (كتاب الايمان باب بلاترجمة) لاندى تيرشوى دى. (۵)

قوله: بنت قرظه: دا د حضرت معاویه بن ابی سفیان تی بی محترمه فاخته بنت قرظه خانه بنت قرظه خانه بنت قرظه خانه بن عبد عمرو بن خانه بن عبد عمرو بن نوفل بن عبد مناف دی، لکه چه خلیفه بن خیاط په خپل تاریخ کښی د هغی تصریح کریده. او بعض حضراتو ته دا وهم شویدی چه هغوی حضرت فاخته د حضرت قرظه بن کعب الانصاری تی کا ور محرفی ده. (۷)

او بلاذری به خپل تاریخ کښی دکر کړی دی چه قرظه بن عبد عمرو په حالت د کفر کښی مردې او د هغه لور (فاخته) رویت ثابت دی، د هغی د رور مسلم بن قرظه را هم، چه د حضرت عائشه نیم د طرف نه جنګیدلو او په جنګ جمل کښی شهیدشو. (۸)

دا دَحضرت معاویه الله اسره داسلام رومبنی بحری جنگ کنبی شریکه وه کهانی حدیث الهاب. تنبیه دَحدیث باب ټول تشریحات د (کتاب الجهاد) په شروع کښی ((باب الدماء بالجهاد

١) (دَ دوى دَحالاتو دَ پاره أوگورئ كتاب الاذان باب اقبال الامام على الناس عنه تسوية الصغوف-

٢) (دَ دوى دَحالاتو دَ باره أوكورى كتاب الجمعة باب القائلة الجمعة -

۳) (کشف الباری) ج۲ص۲)-

٤) (كشف البارى) ج ٢ص٢)-

۵) (کشف الباری (ج۲ص٤۸)-

۶) (عمدة القارى (ج ٤ اص١٤٥) وفتع الباري(ج۶ص٧٧)-

٧) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٤٥) وفتح الباري (ج ١٥ص٧٧)-

٨) (حواله بالا-

والشهادة....)) په ذیل کښې راغلی دی، البته دلته د حدیث باب سند سره متعلق دوه بحثونه مونږ ذکر کوو.

بعث اول: در دی حدیث په سند کښی دی ((حدثنا ایواسحاق هوالفزازی عن عهدالله پن عهدالرحین الانصاری)) د ټولو روایتونوسنه دغه شان دی چه د ابواسحاق او عبدالله په مینځ کښی بل راوی نشته (۱)

لیکن ابومسعود کیکی په (اطراف) کښې دا دعوی کریده چه د دې دواړو په منیخ کښې یو راوی زانده بن قدامه ساقط شویدي. حافظ جمال الدین مزی کیک هم د هغه دا قول برقرار ساتلې اود ابومسعود کیکی د قول د تانیددپاره ئی دا فرمائیلی چه مسیب بن واضع کیک دا

حدیث ((عن لی اسحاق الفواری، من دائد، من قدامة)) په طریق باندې نقل کریدې (۲)

دَ علامه ابومسعود مُرَا او حافظ مزى مُرَا ادا دعوى دَ بعض وجوهاتو په بنا صحیح نه ده و حافظ ابن حجر مُرَا او مائى چه د حافظ مزى مُرَا او دَ ابومسعود مُرَا او مُرَار ساتل او دَ هغى تائيد د مسیب بن واضح په روایت سره کول صحیح نه د ی، هم دبخاری شریف روایت صحیح دی. (۳) د دې وجه دا ده چه مسیب بن واضح ضعیف دې اود یوضعیف راوی د روایت په بنا د صحیح بخاری روایت غلط نشی ګرخولی کیدې (۴)

- و همدغه روایت امام احمد په خپل (مسند)کښې د ((معادیة بن عبروعن اب اسحاق)) په طریق نقل کړیدې په دې کښې هم د دې دواړو په مینځ کښې بله واسطه نشته، نه د زانده او نه د بل چا. (۵)
- آ ابوعلی جیانی رئیلی او ابومسعود رئیلی باندی کولو سره فرمائی ((تتبعت طرق هذا الحدیث عن این اسحاق الفزاری فلم اجد فیها زائدة)) یعنی ابوسحاق نه مروی د دی حدیث ټول طرق تتبع ما کړیده نو په دې کښې په یو کښې زائده موجود نه دې موندلې (۶)
- و حافظ ابن حجر منه فرمائی چه ما د ابواسحاق فزاری کتاب (السیر)کښی دا حدیث اوکتلو نو په هغی کښی هم زانده نه وو (۷)
- ﴿ همدغه روایت حافظ ابونعیم مُرَالَة هم المستخرج كښې په دې سندسره نقل كړيدې (حدثناابنالبقرئ ثناابوعروبة ثناالمسيب بن واضح، عن ابى اسحاق عن ابى طوالة عن انس رض الله عنه))

۱) (فتح الباري (ج ص۷۷)-

٢) (تحفَّة الاشراف بمعرفةالاطراف (ج١٣ص٧٣)-

٣) (النكت الظراف (ج١٣ ص٧٣)-

٤) (فتح البارى (ج۶ص٧٧)-

۵) (مسند امام احمد (ج۳ص۲۶۵)-

۶) (النكت الظراف (۱۳ص۲۷)-

٧) (حواله بالا-

دې کښې هم زانده نشته (۱)

د دی ټول تفصیل حاصل دا شو چه د ابومسعود کولئ دا دعوی چه د صحیح بخاری په روایت کښی ابواسحاق اوعبدالله الانصاری په مینځ کښی یوراوی زائده بن قدامه ساقط شویدی صحیح نه ده او هم د صحیح بخاری روایت صحیح دی.

ابومسعود ته دا وهم ولی اوشو؟ دَحافظ ابن حجر الله عول ابومسعود مشقی الله ته دا وهم خکه شویدی چه معاویه بن عمرو څنګه دا حدیث د ابواسحاق نه اخستی دی، دغه شان

در(زائدهم المواله)) به طریق سره ئی هم حاصل کریدی.

ابومسعود مشقی مینی دا گنرلی دی چه دا روایت د معاویه په نزد ((من ای اسحاق من داندی) طریق نه دی خوخبره داسی نه ده، بلکه معاویه سره دا روایت د ابواسحاق او زانده دوارونه دی. معاویه بن عمرو دا روایت بیانولو سره کله د دوارو ذکر کوی او کله کله د هریو نه جدا روایت بیانوی.

امام احمد روایت باندی د ابواسحاق روایت معاویه بن عمرو د دی حدیث تخریج او هلته د زائده په روایت باندی د ابواسحاق روایت معطوف کړیدی، نود معاویه بن عمرو دا روایت اول (رثنا معاویة بن عبروثنا (اثنا معاویة بن معروثنا (اثنا معاویة بن معروثنا ابواسحاق عن عبدالله بن عبدالرحین بن معیر)) په سند سره بیان کړو (۲) بیاد دی نه پس همدغه روایت ((ثنا معاویة بن عبروثنا ابواسحاق عن عبدالله بن عبدالرحین بن معیر)) په سندسره ذکر کړو. (۳)

او اسماعیلی دا حدیث ((ان عیثبه من معاویه بن مبرو من دانده)) په طریق سره نقل کریدی او صرف زانده نی ذکر کریدی.

ابوعوانه هم دا روایت په خپل صحیح کښې ((عن جغم الصائع عن معاویة)) په طریق سره نقل کریدې بهرحال د دې ټول تفصیل نه به په تاسو دا خبره واضحه شوی وی چه د صحیح بخاری په روایت کښې څه راغلی دی هم هغه صحیح دی. (۴) والله اعلم.

دوثم بحث حدیث باب سره د حضرت انس طائع نه دری کسان روایت کوی. اسحاق بن ابی طلحه، محمد بن یحیی بن حبان او ابوطواله عبدالله بن عبدالرحمن الانصاری.

اوس سوال دا پیدا کیږی چه دا حدیث د مسند انس تالی نه دی، یامسند ام حرام فی نه دی د د ده چه دا درام فی نه دی وجه داده چه دا روایت کله ابو اسحاق د حضرت انس خالی نه روایت کرونوددی الفاظ دادی ((کان رسول الله صلی الله علیه وسلمی ده علی امر حرام)(۵)

١) (حواله بالا-

۲) (مسنداحمد (ج۲ص ۲۶۱)-

۳) (مسنداحمد (۳ص۲۶)-

٤) (فتح البارى (۶ص۷۷)-

۵) (العديث اخرجه لبخارى كتاب الجهاد والسير باب الدعاء بالجهاد والشهادة للرجال والنساء رقم (۲۷۸۸-۲۷۸۸)-

اوداً بوطواله الفاظ داسی دی ((دخل رسول الله صلی الله علیه علی این آمای) (۱) د دی دواړو یعنی ابواسحاق او ابوطواله د کلام نه دا معلومیږی چه داحدیث د مسند انس د دی.

محمدبن یحیی خپل روایت داسی بیانوی ((من انسمن عالته امرحهام) (۲) د ده کلام په دی خبره واضح دلالت کوی چه دا حدیث د مسندحرام نه دی او همدغه معتمد خبره ده. کیدیشی چه حضرت انس کانی په دی موقع حاضر نه وو نو هغوی په حدیث کښی بیان شوی واقعه د خپلی ترور حضرت ام حرام کانی نه واوریده، همدغه حدیث د ام حرام کانی نه عمیر بن الاسود هم روایت کریدی کوم کښی چه ښکاره دا ذکر دی چه دا حدیث د مسانید ام حرام نه دی، عمیر بن اسود فرمائی ((فحلاتتا امرحه مراه اسمعت النبی صلی الله علیه وسلمیقول: اول چیش من امتیه) (۳)

د دې بحث خلاصه اوس دا شوه چه د حدیث د شروع حصه مسند انس اللئو نه ده او د خوب چه کومه واقعه ده هغه د مسند ام حرام نه ده. چونکه حضرت انس اللؤ په دې موقع موجود نه وویه دې وجه هغوی ذکر شوې پورتنئی واقعه د خپلې ترور حضرت ام حرام اللؤ نه اخستې ده.

د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت: د حدیث د باب د ترجمه سره مناسبت واضح دی او هغه داسی چه د ((غزوالمراق المهمی)) باب قائم کریشویدی او په حدیث کښی هم د حضرت ام حرام او فاخته بنت قرظه په ((غزوة الهمی)) کښی د حضرت معاویه المارت کښی د شرکت ذکر دی. (۴)

س-باب: ممل الرجل المرأته في الغزودون بعض نسايه ه ترجمه الباب مقصد امام بخارى منه دا خودل غوارى كه سرى دخيلو بنخو نه بعضى په جهاد كښى دخدمت وغيره په غرض بوځى اوباقى بونه ځى نو په دې كښى هيڅ بديت نشته (۵) ليكن علامه عينى منه فرمانى چه دلته د يو قيد اضافه كول ضرورى دى او هغه دا چه د دى بنځو په منيځ كښى به خسنړى هم كوى (قرعه اندازى) لكه چه د باب په حديث

کښې ذکر دی. (۶)

۱) (صحيح البخاري كتاب الجهادوالسير باب غزوالمراة في البحر رقم (۲۸۷۷،۲۸۰۰)-

۲) (صحيح البخاري كتاب الجهاد والسير باب فضل من يصرع في سبيل الله رقم(۲۷۹۹-۲۸۰۰)-

۳) (صحیح البخاری کتاب الجهاد والسیر باب ماقیل فی قتال الروم رقم (۲۹۲۶) وانظر لهذا البحث کله فتح الباری(ج۶ص۷۷) والنکت الظراف علی الاطراف (ج۱ص۲۶۲) و (ج۱۳ص۷۲)-

عدة القارى (ج ١٤ ص ١٤٤)-

۵) (عمدة القادى (ج که ۱۳۵۵)-

^ع) (حواله بالا ـ

[٢٥٣] حَدَّثَنَا حَبَّا جُرِبُ مِنْهَالِ حَدَّثَنَا عَبُلُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ النَّمَيْرِيُّ حَدَّثَنَا يُونُسُ قَالَ سَمِعْتُ عُرُوةً بْنَ وَقَاصٍ وَعُبَيْدَ اللَّهِ بْنَ الْمُسَبِ وَعَلْقَمَةً بْنَ وَقَاصٍ وَعُبَيْدَ اللَّهِ بْنَ الْمُسَبِ وَعَلْقَمَةً بُنَ وَقَاصٍ وَعُبَيْدَ اللَّهِ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ حَدِيثِ عَائِشَةً كُل (۱) حَدَّثَنِي طَابِعَةً مِنْ الْحَدِيثِ قَالَتُ كَانَ النَّبِي عَبْدِ اللَّهِ عَنْ حَدِيثِ عَائِشَةً كُل (۱) حَدَّثَنِي طَابِعَةً مِنْ الْحَدِيثِ قَالَتُ كَانَ النَّبِي صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَغُرُجَ أَقْرَعَ بَيْنَ نِسَابِهِ فَأَيْتُهُ نَ يَخُرُجُ سَعُمُهَا خَرَجَ مِهَا النَّبِي صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَوْرَعَ بَيْنَنَا فِي غَزُوةٍ غَزَاهَا فَخَرَجَ فِيهَا سَعْمِي فَخَرَجُتُ مَعَ النَبِي صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَوْرَعَ بَيْنَنَا فِي غَزُوةٍ غَزَاهَا فَخَرَجَ فِيهَا سَعْمِي فَخَرَجُتُ مَعَ النَّبِي صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَوْرَعَ بَيْنَنَا فِي غَزُوةٍ غَزَاهَا فَخَرَجَ فِيهَا سَعْمِي فَخَرَجُتُ مَعَ النَّبِي صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَوْلُ الْحِجَابُ [د: ٢٥٣]

تراجم رجال

ا- حجاج بر منهال: دا ابو محمد حجاج بن منهال انماطی بصری منها دی. د دوی حالت (رکتاب الایهان باماجاء ان الاعمال بالنیة والحسبة....) لاندې تیر شوی دی. (۲)

r-عبدالله ير عمر: دا عبدالله بن عمر نميري مرايع دي. (٣)

-- یونس: دا یونس بن یزیدبن ابی الجاد ایلی مید در دری مختصر حالات ((بدء الوحی)) د پنځم حدیث په ذیل کښې تیرشوی دی. (۴)

۳-زهري: دا امام محمدبن مسلم ابن شهاب زهری برای د دوی مختصر حالات به به الوحی د دریم حدیث په ذیل کښی تیرشوی دی. (۵)

۵-عروه بن زبیر الزبیر: دا جلیل القدر تابعی حضرت عروه بن زبیر رسید در دوی مختصر حالات ((بده الوحی)) د دوئم حدیث په ذیل کښی تیرشوی دی. (۶)

۲- سعیل بری المسیب: دا مشهور تابعی حضرت سعید بن المسیب کری د دوی در دوی حالات (رکتاب الایهان بالایهان الاعمال ان الاعمال هوالعمل) لاندی تیرشوی دی (۷)

2-علقبه بر. وقاص: داعلقمه بن وقاص بن محصن لیثی مُخْتَهُ دی. دَ دوی حالات (کتاب الایمان باماجادان الامبال بالنیة ادالحسبة) کښې تیرشوی دی. (۸)

١) قوله: عن حديث عائشة رضى الله عنها: الحديث مرتخريجه في كتاب الهية باب هية المراة لغير زوجها..

۲) (کشف الباری (ج۲ص ۴۷۶) - سور د تر بر داری الشهاد

٣) (د دوى د حالاتود بار، او گورئ كتاب الشهادات باب اذا عدل رجل رجلا....-

٤) (كشف البارى (ج١ص٢٨٢) وانظر كشف البارى (ج٣ص٢٨٢)-

۵) (کشف الباری (ج۱ص۳۲۶)

ع) (کنف البادی (ج اص۲۹۱)

۷) (کشف الباری (ج۲ص۱۵۹)-

٨) (كثف البادى (ج٢ص١٤٧)-

معبد الله بر عبد الله: داعبیده بن عبدالله بن عتبه بن مسعود کنی دی. د دوی خه مارت ((بدم الوی)) پنخم حدیث لاندی او مفصل حالات ((کتاب العلم باب متی بیمع سام العدر!)) کنبی تیرشوی دی (۱)

ه عائشه دا حضرت عائشه ام المؤمنين عائشه بن ابی بکر الصديق آله ده. د دوی حالات ((بدوالوس)) د دوئم حديث لاندي راغلی دی. (۲)

حالات ((۱۹۷۰ الوس)) د دونم حدیث لاندی راغلی دی. (۲) تنبیه امام بخاری گوشت دلته د باب لاندی چه کوم حدیث ذکر کریدی، هغه د حضرت عائشی فی شاه مشهور حدیث (حدیث الاقك) دی. د دی حدیث مکمل تشریح (کتاب البغالی) کنبی راغلی ده. (۳)

د دریث د ترجمه الباب سره مطابقت: د حدیث باب د ترجمه سره مطابقت ظاهر دی او په دې کښې تصریح ده چه عائشه الله نبی کریم تالله خپل ځان سره بوتلې وه، هغه نی د خسنړی راویستو نه پس بوتلې وه. (۴)

٣-بَأَب:غَزُوِالْنِّسَاءِوَقِتَا لَمِنَّ مَعَ الرِّجَالِ

ذ ترجمة الباب مقصد: حافظ ابن حجر بُرَيْنَ فرمانی چه د دی خبری احتمال دی چه د امام بخاری بُونِ غرض د باب د ترجمه نه دابیان کول وی چه بنخی خود غزوی دپاره اووتلی لیکن هغوی به جنگ نه کوی نو د عبارت تقدیر به دا وی ((وقتالهن مع الرحال، ای هل هوسائع، لواذا خهجن فی الفود اعتصرن ملی ماذکی من مداواة الجرس و و و دود ذلك؟)) اود بنخود سرو سره جنگ کول آیا دا شائع دی یا که بنخی د سرود پاره د غزوی د پاره اووتلی نود زخمیانو مرهم پتنی یا د دی قسم په نور خدمت باندی به اقتصار کوی؟ (۵)

[ram] حَدُّنَنَا أَبُومَعُمْ حَدَّنَنَا عَبُدُ الْوَارِثِ حَدَّنَنَا عَبُدُ الْعَزِيزِ عَنْ أَنْسِ (r) رَضِى اللَّهُ عَنْهُ قَالَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ قَالَ وَلَقَدُ رَأَيْتُ عَائِثَةً لِللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ قَالَ وَلَقَدُ رَأَيْتُ عَائِثَةً

١) (كشف الباري (ج ١ ص ٤۶۶) و) ج٣ص ٣٧٩)-

٢) (كشف البارى (ج ١ص ٢٩١)-

٣) (كشف الباري كتّاب المغازي باب حديث الافك (ص٣٣٢)-

٤) (فتح الباري(ج۶ص٧٨)-

۵) (فتع الباري (ج۶ص۷۸)-

برا المجاد عن الله عنه: الحديث اخرجه البخارى ايضًا كتاب الجهادوالسير باب المجن ومن يرس بترس صاحبه، رقم (٢٩٠٢) وكتاب فضائل اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم باب مناقب ابي طلحه رضى الله عنه رقم (٣٨١١) وكتاب المغازى باب (اذهمت طائفاتان منكم ان تفشلا....) رقم (٤٠۶٤) ومسلم كتاب الجهاد باب غزوة النساء مع الرجال رقم (٤۶٨٣)

كشف الباري كتأب الجهاد (جلداول)

بِلْتَ أَبِى بَكُرِوَأُمْسُلَيْمِ وَإِنَّهُمَالَثُمَّيِّرَتَانِ أَرَى خَدَمَسُوقِهِمَا تَنْقُزَانِ الْقِرَبَوَقَالَ غَيْرُهُ تَنْقُلانِ الْقِرَبَ عَلَى مُتُونِهِمَا ثُمَّ تُفْدِغَانِهِ فِي أَفُواهِ الْقَوْمِ ثُمَّ تَرْجِعَانِ فَتَمُلاَّنِهَا ثُمَّ تَجِيثَانِ فَتُفْرِغَانِهَا فِي أَفُواهِ الْقَوْمِ [٢٧٤٦، ٢٧٠٠، ٣٦٠]

تراجم رجال

ا-ابومعمر: دا ابومعمرعبدالله بن عمروبن ابى الحجاج منقرى ميد دي.

<u>r-عبى الوارث:</u> داعبد الوارث بن سعيد بن ذكوان تميمى بصرى المنظمة دى، دوي دواړو حضراتو حالات (كتاب العلم باب قول النبي صلى الله عليه وسلم: اللهم عليه الكتاب) كښې تير شوى دى (١)

-- عبدالعزیز: دا عبدالعزیز بن صهیب بنانی بصری مینه دی. د دوی مختصر حالات (کتابالایمانها به دی. (۲)

۳- انس: دا مشهور صحابی حضرت انس بن مالک نظیم دی، د دوی حالات ((کتاب الایان باب من الایبان ان یعب لاعیه مایعب لنفسه ((په ذیل کښې تیرشوی دی. (۳))

قوله: قال لماكان يوم احد انهزم الناس عن النبي صلى الله عليه وسلم: حضرت انس الله و نبى كريم الله عليه وسلم: خواره شول

دلته حضرت انس اللي المغازى به جنگ احد كښى د مسلمانانو د ماتى سره مخ كيدلو طرف ته اشاره اوفرمائيله، د كتاب المغازى به روايت كښى نور تفصيل ذكر دى. كوم چه مصنف المعنف د اختصار په غرض سره حذف كړيدې. (۴)

قوله: قال ولقدرايت عائشة بنت ابي بكروام سليم، وانهما لمشهرتان: حضرت انس فات فرمائي ما حضرت عائشه او ام سليم في اوكتلي چه هغوي خپلي پينځي اوچتې كړې وې

حضرت ام سلیم نی دا مشهوره انصاری صحابیه اود حضرت انس نی مورده (۵) و مشتبرتان د باب تفعیل نه اسم فاعل، تثنیه مؤنث صیغه ده، وئیلی شی ((شیرالثوب من ساتیه)) یعنی هغی کپری د پنډونه اوچتی کړی (۶)

۱) (کشف الباری (ج۳ص۳۵۶-۳۶۱)-

۲) (کشف الباری (ج۲ ص۲)-

٣) (كشف البارى (ج٢ص٤)-

٤) (دَ تفصيل دَباره آوگورئ كشف الباري كتاب المغازي (ص٢٣٠)-

۵) (د دوی د حالاتو د پاره او گوری کتاب العلم باب الحیاء فی العلم -

ع) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٢٥) ومصباح اللغات مادة شمر-

رارى عدام سوقهما)) ماد عفى د پندو پانزيب ته كتل. ٥٠عدم، بغتج الخاء المعجمة والدال المهملة - د مدمة جمع ده اود دې معني خلخال يعني پازيب (١)

اوسوق جمع د ساق په معنی د پندئی. (۲)

بوسوال اود هغی جواب دلته سوال دا پیدا کیری چه حضرت عائشه فی اخرد حضرت انس في الله نامحرم وه نود حضرت انس الله د باره د ام المؤ منين في بندني طرف تد كتل خَنْکُه جائزشو؟ علامه نووی مُعَلَمُ د دې سوال دوه جوابونه فرمائيلي دي:

ن دا ((دهى من النظرال الاجنبيات)) نه وړاندې واقعه ده، ځکه چه حضرت انس اللغو د غزوه احد قصه بیانوی او هغه وخت پورې اجنبیاتو طرف ته د کتلو نهی او ممانعت نه وو نازل

و حضرت انس ما الما داخو په حديث کښې نه دى فرمائيلى چه ما د هغې پنډئى ته په قصد سره کتلی وو، د هغه دا خبره په دې باندې محمول ده چه دا نظر کوم پریوتلی وو ناڅاپی او غُیر اختباری توګه باندې وو. (۳)

قوله: تنقزان القرب: هغوی به مشکیزی ډکې اوړلي. مطلب دا چه مشکیزی به دومره ډکې وی چه د هغې نه به اوبه تونیدلې. پورته چه کومه ترجمه مونږ نقل کړه، دا د حضرت انور شاه صاحب کوه د (۴)

تنفزان معنى او ضبط: ((تنفزان)) تثنيه مؤنثه غائبه صيغه ده اودا كلمه شارحينويه دوه شان ضبط کړيده (رنمي)) وي اود د فتحه سره وي نود دې باب به ((نمي)) وي اود دې معني د ټرېونو او دانګلو به وي (۵)

ليكن په دې صورزت كښې د ((القرب)) نصب مشكل دى. ځكه چه ((النقن) فعل لازم دې او هغه ((القهب))كښى د نصب عمل نشى كولى.

د دې اشکال جواب صاحب ((تلويح)) داورکړې چه (القرب) ((منصوب على نوع الخافض)) دې يعنى ((تنقران بالقهب)) (۶)

 چه داد تا ، په ضمه سره وي نو ددې باب ((انعال)) راځی، او په هغه صورت کښې "القهب" نصب صحیح دی، مطلب به دا وی چه هغه به د سیر د شدت د وجه مشکیزی خوزولی (۷)

۱) (جامع الاصول (ج۸ص ۲٤٠) وفتح الباري (ج۶ص ۷۸) وعمدة القاري (ج ۱ ص ۱۶۶)-

۲) (عمدة القارى (ج ۲ ۱ص۱۶۶)-

۲) (شرح النووي علَّى مسلم (ج۲ص۱۶) وعمدة القاري (ج ۱۴ص۱۶۷)-

⁴) (فیض الباری (ج۳ص ۴۳٤)-

٥) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٤٤) وفتح البارى (ج ٤ص ٧٨)-

^ع) (حواله بالا ـ

٧) (حواله بالا_

كتاب الجهاد (جلدامل)

علامه عینی بین فرمانی چه په بعض اصول کښی ضمه د تا ه صراحت دی. (۱) علامه عینی بین فرمانی چه بعض اصول کښی ضمه د تا ه صراحت دی. (۱) البته قاضی عیاض کاد فرمانی چه بعض شیوخ ،،القرب،، مرفوع لولی په داسی طریقه چه ۱،القرب مل متودهها،،جمله اسمیه بغیر د واو ده (۲)

اوعلامه خطابی کسی فرمانی چه زما خیال دا دی چه صحیح لفظ ((توفران)) دی او ((روس)) و از و (روس کنبی امام وائی درنه مشکیزه او چتولوته، د دی وجه دا ده چه وړاندینی باب په روایت کنبی امام بخاری کښی تونی لفظ نقل کړیدې (۳)

بعاری دهد مرم سد من طریعای را به فتحه سره وی او که ضمه سرد، دا د سرد خو دا خبره منلی شویده چه دا کلمه که د تاء په فتحه سره وی او که ضمه سرد، دا د سرد

سرعت نه کنایه ده. ۳

قوله: وقال غيره: تنقلان القرب على متونهها: اود ابومعمر ويهيئه علاوه بل جا ونيلي دي چه هغه دوارو به يه خيله شاباندي مشكيزي راوړلي.

وثیلی دی چه هغه دواړو به په خپله شاباندی مشکیزی راوړلی دی چه هغه دواړو به په خپله شاباندی مشکیزی راوړلی د مدوی په نسخوکښی همدا رنګ دی، دا حدیث هم هغه شان په هغه سنداومتن سره امام بخاری پیانی په کتاب المغازی غزوه احد ر۵) لاندی ذکر کړیدی په دې کښی رواتو هیڅ اختلاف نه دې کړې بلکه ټولو ((تنقزان)) نقل کړیدې. (۶)

او په (رغيره)) کښې ضمير مجرد او ابومعمر طرف ته راجع دې اود غير نه مراد جعفر بن مهران دي. (۷)

اوس د پورتنی عبارت مطلب دا شو چه عبدالوارث نه حدیث باب روایت کونکی ټولو حضراتو هم ((تنقلان)) وئیلی دی خوجعفر بن مهران په خپل روایت کښی ((تنقلان)) نقل کړیدی، او دا خبره خو د چا نه هم پټه نه ده ((تنقلان)) په صورت کښی چه کوم اشکال وړاندی کیدل هغه د ((تنقلان)) په صورت کښی نه راځی ځکه چه دا فعل متعدی دی او معنی ئی هم واضح ده (۸)

دَمذكروه تعليق تخريج مذكوره تعليق امام مسلم عليه به خيل صحيح كنبي د عبدالله بن

۱) (عمدة القاری (ج ۱ کس۱۶۶) وقد جاء هذا اللفظ بضم التاء روایة باب مناقبابی طلحه رضی الله عنه من کتاب مناقب الانصار رقم (۳۸۸) وباب (اذهمت طائفتان منکم ان تفشلا...) من کتاب المغازی رقم (۴۰۶٤) ۲) فتح الباری (۷۸۱۶) وعمدة القاری (۱۲/۱۶۲) والنهایة (۱۰۶۵)_

٣) (اعلام الحديث للخطابي (ج٢ص١٣٨٥)-

٤) (فتح البارى (ج۶ص۷۸)-

۵) (الصحيح للبخاري (ج ص) كتاب المغازي باب (اذهمت طانفتان...) رقم (٤٠٠٤)-

ع) (تعليق التعليق (ج٣ص٢٤٤)-

٧) (حواله بالا-

٨) (صحيح مسلم كتاب الجهاد والسير باب غزوة النساء مع الرجال رقم (٤٥٨٣)_

ي في البارى

عف الباری کتاب الجهاد (جداول) عبد الرحمن الدارمی په واسطه سره، ابویعلی موصلی پښتو خپل مسند کښی او اسماعیلی پند د جعفر بن مهران په واسطه سره بعینه د حدیث باب سندسره نقل کریدی. (۱)

نوله: ثمر تفرغانه في افواه القوم، ثمر ترجعان، فتملانها، ثمر يجيئان فتفرغانه

في افواه القوم... بيا به دواړو اوبه د قوم په ځلو کښې اړولې، بيا به واپس کيدلې او منکيزې به نی راډکولې راوړلې او بيا به نی اوبه د قوم په ځلوکښې اړولې.

(تغهفانه) د باب افعال نه دي، د دي معنى راغورزولو او اړولو ده.او ضمير منصوب ما، طُرِفْ ته راجع دې چه د قرب په لفظ سره مفهوم کیږي اوس مطلب دا شوچه هغه دواړو به هغه اوبه چه په مشکیزوکښې وې دخلقوپه ځلوکښې ورغورزولې او وراړولې.(۲)

اودابوذر په نسخه کښې ((تغمهانها)) دې، په دې صورت کښې ضمير منصوب ((القهب)) طرف ته راجع به وی. (۳)

و حديث و ترجمة الباب سره مطابقت: علامه ابن المنير اسكندراني ميك و باب و ترجمي په الفاظو باندې اعتراض کولو سره فرمائی چه امام بخاری پنځ خو ترجمه قائمه کړیده ((غزوالنساء وقتالهن مع الرجال)) اود باب په مينځ کښې چه کوم حديث ذکر کړيدې په هغې کښې دَ سر نه دَ غزوې يا دَ قتال ذکر نشته، په دې وجه دَ ترجمه او حديث په ذيل کښې مناسبت موجود نه دې، فرمانی ((بؤبعلىغزوهنوتتالهن، وليسقالمديثانهن الحالي) (۴) او بيا هغوي پخپله د دې اعتراص جواب ورکولو سره دوه مناسبتونه ذکر کوي:

(چه دا اوولیلی شی چه ښځو د مجاهدینو او غازیانو کوم اعانت او امداد کولو هم دغه د هغوی جهاد وو (۵)

د دې جواب تائيد د مختلفو احاديثونه کيږي. د ابوداود شريف روايت دې. حشرج بن زياد د خپلې نيا ام زياد ناه انه روايت کوي:

((الهاخهجة مع رسول الله صلى الله عليه وسلم في غزوة غيبرسادسسة نسوة، فهلغ رسول الله صلى الله عليه وسلم، فهعث الينا، فجئنا، فهاينا فيه الغضب، فقال: مع من خهجتن وباذن من خهجتن ؟ فقلنا : يارسول الله خهجنانغزل الشعر، ونعين به في سبيل الله ومعنا دوام للجرطي وتناول السهام، ونستى السويق) (ع) يعنى هغوى درسول الله تا الله عزوه خيبرته اووتلى، هغه د شپږو ښځو نه شپږمه ښځه وه،

١) (تعليق التعليق (ج٣ص٢٤٤) وفتح البارى (ج٤ص٧٨)-

۲) (عبدة القاري (ج که ۱ ص۱۶۷) وشرح القسطلاني م (ج۵ص ۸٤)-

۲) (ارشادالساری (ج۵ص ۸۶)-

^{£) (}المتوازى (ص٩٥٥) وعمدة القارى (ج £ ١ص١٤۶) وفتح البارى(ج۶ص٧٨)-'

۵) (حواله بالا-

۶) (سنن ابي داؤد ابواب الجهاد باب في المراة والعبد يحديان من الغنيمة رقم (٢٧٢٩)-

کشف الباری رو ۱۳۸۲ میران الباد الباد میران میران میران البهاد (مارال) میری راولیکلو نو رسول الله تایی از میران میری راولیکلو میران نو مونو په خدمت کښې حاضرې شو. مونو د هغوی تایم په مخ مبارك باندې غصه اوليدله وي فرمانيل تاسو ښځي د چاسره اود چاپه اجازت راوتلې نې مونږ ونيل يا رسول الله مونږ په دې وجه راوتلې يو چه سپنړسي به تارونه کوواود دې په ذريعه به د الله تعالى دَلاري مدد کوو اُو مونږ سره دُ زخميانو دُپّاره دواني ده او مونږ به غشي نيسو او ستوان به پرې څکوو ً په دې حدیث کښې دا راغلی دي چه مونږ به غشو ورونکوته غشی نیسو او دا خبره ښکار ده چه غازی ته څه ورکونکوته د هغې په مثل اجر او ثواب به ملاویږی. (۱)

د دې جواب تائيد د حضرت ربيع بن معود الله د حديث نه هم کيږي چه راتلونکي باب نه پس په باب کښې راځی. چه ((کنامع النبي صلی الله علیه وسلم ودی الجرحی...)(۲)

دغه شان په مسلم شریف کښې د حضرت ابن عباس اللي حدیث دې ((وقد کان یعزوبهن) فيدادين الجرمي....) (٣) رسول الله تُؤَيِّم به غزواتو كښيد ښځې هم ځان سره بوتلې چه رُ زخميانو خيال به ئي ساتلو او مرهم پټئي وغيره به كولي. (۴)

٠ يا كه دا اووئيلي شي چه دغه صحابياتو رمي ر سي منه كله د زخميانو د خيال كولو فریضه پوره کوله او په هغوی به ئي اوبه وغیره څکولې نو بعض وخت د دې امورو پوره كُولُو بِهُ دُورَانَ كَسِي دَ خَيِلُ خَانَ دَ حَفَاظت او بچ سِاتِلُو هم ضرورت پيښيدلو او همدغه احتمال غالب دې په دې وجه هغوی ته د قتال نسبت کړيشوې دي (۵)

د دې احتمال تائيد د دې روايت نه کيږي کوم چه حضرت انس تانتي بيان کړيدې، د صحيح مسلم روايت دي:

((ان امرسليم اتخذت يومرحنين خنجرًا، فكان معها، فهاها ابوطلحة فقال: يارسول الله هذا امرسليم معها عنجر فقال لها رسول الله صلى الله عليه وسلم: ما هذا الخنجر؟ قالت: اتخدته ان دنامني احدمن البشركين بقرت بهبطنه)) (۶)

ام سلیم الله الله عزوه چنین کښې یو خنجر لاس کښې نیولې وو، چه هم هغې سره وو، حضرت ابوطلحه رجه د ام سليم خاوندوو) هغي ته اوكتل نو رسول الله تالم ته ني عرض اوكرو دا أمَّ سليم ده، دَ چا په لاس كښې چه خنجر دې. نورسول الله عليم أم سليم الله ته ته اوفرهائيل چه دا خنجر تاڅه له راخستې دې؟ نو هغې اووئيل چه څوك مشرك ماله نزدې راغلو نو په دې ځنجر به زه د هغه خيټه اوشلوم.

۱) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١۶۶)-

٢) (صحيح البخاري كتاب الجهاد باب مداواة النساء الجرحى في الغزو رقم (٢٨٨٧)-

٣) (صحيح مسلم كتاب الجهاد والسير باب النساء الغازيات يرضخ لهن....رقم (٤٥٨٤)-

٤) (فتع الباري (ج۶ص٧٨)-

١٠) (حواله بالا المتوازي (ص١٥٥) وعددة القاري (ج١٤ ص١٤٥)-

٤) (صحيح مسلم كتاب الجهاد والسير باب غزوة النساء مع الرجال رقم (٤٥٨٠)-

د حضرت عمرفاروق تانځ د حکومت په زمانه کښې مشهور جنګ، جنګ يرموك کښې ښځو جنګ اوکړو، کله چه روميانو په مسلمانانو باندې سختې حملي اوکړې او هغوي د مسلمانانو په لښکرکښې راننوتل نو روميانو ښځې په تورو اووهلې، په دې موقع د قريشو ښخو ډير په بهادرنۍ سره د روميانو مقابله اوکړه او آخر ئي اوتختول (١)

٥٠- بَأَب: حَمُلِ النِّسَاءِ الْقِرَبَ إِلَى النَّاسِ فِي الْعَزُو

دُ ترجمة الباب مقصد: دَامَام بخَارى مُنظِيَّةُ مقصدًدَ بَاب دُ ترجمي نه دُ دي امرَ جواز او مشروعيت خودل دي چه ښځې په غزوه کښې سړو باندې اوبه څکولې شي، په دې کښې د حرج څه خبره نشته. (۲)

[٢٢٥] حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنُ ابْنِ شِمَابٍ قَالَ ثَعْلَبَهُ بْنُ أَبِي مَالِكِ (٢) إِنَّ مُمَرَّبُنَ الْخَطَّابِ رَضِى اللَّهُ عَنْهُ قَسَمَ مُرُوطًا بَيْنَ نِسَاءِ مِنْ نِسَاءِ الْمَدِينَةِ فَبَقِى مِرُطَّ جَيِّدٌ فَقَالَ لَهُ بَعْضُ مَنْ عِنُدَهُ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ أَعْطِ هَذَا ابْنَةَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الَّتِي عِنْدَكَ يُرِيدُونَ أَمْكُ لُتُومِ بِنُتَ عَلِي فَقَالِ عُمَرُ أَمْسَلِيطٍ أَحَقَ وَأَمْسَلِيطٍ مِنْ نِسَاءِ الْأَنْصَارِمِيْنَ بَايْتَعَرَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ عُمَرُ فَإِنَّهَا كِانَتْ تَزْفِرُ لَنَا الْقِرَبَ يَوْمَ أُحُدِقَالَ أَبُوعَبُداللَّهِ تَزُفِرُ تَخِيطُ [٣٨٣٣]

تراجم رجال

ا-عبدان: دا عبدالله بن عثمان بن جبله ﷺ دی.

r-عبدالله: دا عبدالله بن مبارك بن واضح حنظلي ﷺ دي. ددې دواړو حضراتوحالات · المالوس د پنځم حديث په ذيل کښې راغلي دي. (۴)

<u>-- يونس:</u> دا ابويزيد بن يزيدبن ابي النجاد ايلي مُنْكِرُ دي دَ ده مختصر حالات بدوالومي . پنځم حدیث (۵) او تفصیلی حالات ((کتاب العلم باب من یردالله به عیرا۰۰۰۰)) لاتدې تیرشوی دی. (ع)

م- شهناب: دا ابوبکر محمد بن مسلم ابن شهاب زهری میشه دی. د ده حالات ((بده الوحی))

۱) (ارشاد الساری (ج۵ص ۸۶) وشرح ابن بطال $(ج^{0} \oplus ^{1})^{-1}$

۲) (عمدة القارى (ج ۱ اص ۱۶۹)-

٣) (قوله: ثعلبة الحديث اخرجه البخاري ايضًا كتاب المغازي باب ذكر ام سليط رقم ٤٠٧١) والحديث من افراده عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٧٠)-

^{4) (}کشف الباری (ج ۱ص۳۶۱–۳۶۲)-

۵) (کشف الباری (ج۱ص۲۶۳)-

۶) (کشف الباری (ج۳ص۲۸۲)-

دريم حديث کښې راغلی دی.(۱)

-ریم -یو بری ایم مالك: داابويحيى ياابومالك ثعلبه بن ابى مالك عبدالله بن سام مالك عبدالله بن سام القرظي المدنى تكافؤ دي. (١)

رسی سدی سردې د او او تر آخرعمر پورې په دې منصب باندې وو اود انصارو دا د بنوقريظه د جمات امام وو او تر آخرعمر

سیب دورد، د هغه پلار عبدالله بن سام ابومالك اصلایمنی دبو قبیله کنده سره د هغه تعلق وو او یهودی مذهب والا وو، د یمن نه راغلی وو مدینه منوره کښی آباد شوی وواود بنو قریظه یوسری ابن سعید لورسره نی نکاح او کړه اوابومال بنو قریظه حلیف جوړشو په دې وجه هغه تر قبط او م

اودهغه پلارعبدالله بن سام غالبًا غزوه بنی قریظه کښی د کفریه حالت کښی اووژلی شو (۵) حضرت ثعلبه کاتو صحابی دی که نه د دحضرت تعلبه کاتو په صحابی کیدو کښی د محدثینواختلاف دې. ابن سعد، امام ابوحاتم، ابن حبان، عجلی اوداسې نور بعض حضرات هغه ته تابعی وائی. ابن ابی حاتم فرمائی (سالت ابی من تعلیقین ابی مالك؟ فقال: هومن التابعین) . خو امام يحيى بن معين، حافظ جمال الدين مزى، امام بخارى، ابن عبدالبر، ابن قانع. ذهبي او مصعب بن عبدالله زبيري التا وغيره رائي دا ده چه صحابي دي. (٧) تاسو د فريقينو اقوال اوكتل خو راجح همدغه معلوميږي چه دا صحابي دې

علامه ابن عبدالبر مينية به قول حضرت ثعلبه قرظي التأثيُّة دَ نبي كريم اللَّيْمَ بِه مباركه زمانه

کښې اسلام قبول کړې ووړ (۸)

يخبِلَه دَ حضرت ثعلبه فَاللَّهُ وينا ده، سماك بن حرب رُيَّاتُهُ دَ حضرت تعلبه فَاللَّهُ نه روايت كوى چە ھغوى فرمائىلى دى: ((كنت غلاماعلى عهدالنبى صلى الله عليه وسلم))(٩)

په دې وجه راجع همدغه دي چه هغه صحابي دي. او هغوي په حالت اسلام کښې رسول الله تهم لیدلی دی. او ابن ماجه کښی د هغه مرفوع روایت هم موجود دی (۱۰)

۱) (کشف الباری (ج۱ص۳۲۶)-

۲) (تهذیب الکمآل (ج ٤ ص ۲۹۷) وطبقات ابن سعد (ج۵ص ۷۹)-

٣) (حواله بالا الجرح والنعديل (ج٢ص ٣٩٠) رقم (١٨٧٥)-

٤) (طبقات ابن سعد (ج۵ص٧٩)-

۵) (فتح الباري (ج٤ص٧٩) والاصابة (ج١ص٢٠١)-

ع) (تهذيب التهذيب (ج٢ص٢٥) وحآشية سبط ابن العجمى (ج١ص ٢٨٤)وطبقات ابن سعد [٥ص٩٩) وتعليقات معجم الصحابة (ج٣ص ٩٢٤)-

۷) (تهذیب الکمال (ج قص ۲۹۷) والاستیعاب (ج۱ص۱۳۲) وتاریخ البخاری الکبیر (ج۱ص۱۷۶) ومعجم الصعابة (ج٣ص ٢٨٤) والكاشف للذهبي (ج١ص ٢٨٤)-

٨) (الاستيعاب (ج ١ص١٣٢)-

٩) (حاشية سبط أبن العجمى على الكاشف (ج١ص ٢٨٤)-

١٠) اخرج ابن ماجة لثعلبة بن ابي مالك عن النبي صلى الله عليه وسلم كان يخطب قائما خطبتين يفصل بينهما بجلوس وأبوبكروعمر رضى الله عنهما كذلك. سنن ابن ماجه: كتاب الرهن، باب الشرب من الاودية رقم (٢٤٨١)

حافظ ابن حجر مربي د هغوى صحابى كيدو ته ترجيح وركولو سره ليكى: ((وحديثه من عبر في محيح البخارى ومن يقتل ابولا بقريظة ويكون هوبمده من يقتل لولا الانبات لايمتنع ان يمح سباعه فلهذا الاحتبال ذكرته هنا)) (١)

یعنی د حضرت عمر اللؤ نه په صحیح بخاری کښی د هغوی حدیث موجود دی او د چاپلار چه په بنوقریظه کښی قتل شوې وی او هغه پخپله هم قتل کیدو ته نزدی وی که د انبات معامله نه وه نود هغه سماع عن النبی تالیخ صحیح کیدل ممتنع نه ده، په دی وجه د حضرت ثعلبه اللؤ تذکره ما (قسم اول) کښی نقل کړیده.

او حافظ ابن حرج مُرَيِّة الاصابة په قسم اول كښى د هغه صحابه كرامو ترجمه او تذكره. ليكلى ده د چا رويت او صحبت چه ثابت وى، كه هغه ثبوت په كومه طريقه هم وى. (٢)

مصعب بن عبدالله زبیری مید فرمائی (سنه سن عطیة و قسته کفسته) (۳) یعنی حضرت ثعلبه د خضرت عطیه د عظیه د عظیه د اود حضرت ثعلبه د اود حضرت ثعلبه د اود عظیه د عظیه د عظیه د قصی به شان دد. (۴)

دا خُبره دې واضحه وي چه د حضرت عطيه اللي په صحبت کښې هيڅ اختلاف نشته. هغه په اتفاق سره صحابي دې

نو حضرت تعلبه التي به هم صحابی شميرلی شی. حضرت تعلبه التي کويم تراخيم ند. حضرت عليه التي کويم تراخيم ند. حضرت عمر، حضرت عشمان، حضرت جابر او حارثه بن نعمان التي کي وغيره نه د حديث روايت کوي.

اود هغه نه روایت کونکوکښې د هغه ځوئ ابومالك، منظور، زهري. مسوربن رفاعه، محمدبن عقبه او صفوان بن سلیم وغیره شامل دي.(۵)

دا د صحیح بخاری، آبود او داو آبن مآجه راوی دی. (۶) اود هغه په صحاح سته کښی صرف یو مرفوع حدیث دی. (۷)

۱) (الاصابة (ج۱ص۲۰۱)-

٢) (الاصابة (ج١ص٤)-

٣) (تهذيب الكمال (ج ٤ ص٣٩٧)-

^{\$) (}وقصة عطية رواها الانمة الاربعة وهي: عن عطية القرظى قال: كنت فيمن حكم عليهم سعد بن معاذ، فشكوا في امن الذرية انا اومن المقاتلة؟ فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: انظروا فان كان انبت الشعر فاقتلوه والافلاتقتلوه. قال: فاذا عانتى لم تنبت فالقونى في الذرية فلم اقتل انظر سنن ابى داؤد ابواب الحدود باب في الغلام يصيب الحد. رقم (\$ \$ \$ \$ \$ \$ - 2 * \$ \$ \$ \$) والترمذي ابواب السير باب ماجاء في النزول على الحكم رقم (\$ 10٨٤) والنسائى كتاب قطع السارق باب ماجاء البلوغ وذكر السن.... رقم (\$ 4 \ 8 * \$) وابن ماجه ابواب الحدود باب من لا يجب عليه الحد رقم (٢٥٤١)-

۵) (شيوخ وتلامذه د پاره اوګورئ تهذيب الکمال (ج ٤ ص٣٩٨-٣٩٨)-

۶) (تهذيب الكمال (ج٤ ص٣٩٨)-

٧) (تعليقات معجم الصحابة (ج٣ص ٩٢٤) وخلاصة الخزرجي)ص٥٧) حرف الثاء من اسمه ثعلبة -

۲- عمربر الخطاب العدوى المرالمؤمنين حضرت عمر بن الخطاب العدوى المرادي و عمر بن الخطاب العدوى المرادي المرادي و عمر بن الخطاب العدوى المرادي المراد

قوله: ان عمر بن الخطاب رضى الله عنه قسم مروطاً بين نساء من نساء

المدينة، فبقى مرط جيد: حضرت ثعلبه بن ابى مالك التأثؤ فرمائى چه حضرت عمربن الخطاب التائؤ د مديني منوري په ښځو كښې څادرونه تقسيم كړل، نو يو ښه څادر بچ شو.

مروط - بضم البيم والراء - مرط جمع ده، د وړئي يا ريښمو څادر ته وائي (٢)

((فقال له بعض من عنده: يااميرالمؤمنين، اعط هذا ابنة رسول الله صلى الله عليه وسلم التي عندك -

یریدون: امرکلثوم بنت علی) نوحضرت عمر الله اسره ناست یو سړی اووئیل امیرالمؤمنین دا څادر د رسول الله ترفیخ لوربی بی ته ورکړه چه ستاسو په نکاح کښی ده. د هغه مراد ام کلثوم فرایخ وه، چه د حضرت

توربی بی که ور دره چه ستاسو په کاع کښې ده. د شعه سراد ام کندوم رنها وه، چه د خسرد علی رناس لور وه.

حافظ ابن حجر فرمائي ((لماتف على اسبه)) د هغه قائل نوم ماته معلوم نه شو . (٣)

حدیث کښې هغې ته ((پنټرسول الله)) اووئیلې شوه. (۴) دا د رسول الله ناهم په حیات مبارك کښې پیدا شوه او حضرت عمر په خپل دور خلافت کښې د حضرت على الله نه د هغې رشته د خپل ځان دپاره اوغوښتله، هغه وخت دا ماشومه وه. (۵)

دَ هغی نگاح حضرت عمر گانتی سره په کال ۱۷ه کښې اوشوه (۶) دَ هغې نه دَ حضرت عمر گانتی یوه لور رقیه او یو ځوئ زید پیداشو. (۷)

د حضرت عمر الله د شهادت نه پس د هغی نکاح عوف بن جعفر بن ابی طالب سره اوشوه. دعوف د انتقال نه پس د هغه رور محمدبن جعفر هغی سره نکاح اوکړه، د محمد نه پس

١) (كشف البارى (ج١ص ٢٣٩) و(ج٢ص ٤٧٤)-

۲) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٤٨)-

۳) (فتح الباری (ج۶ص۷۹)-

٤) (حواله بالا-

۵) (حواله بالا والاصابة (ج ٤ص٩٢) وعمدة القارى (ج ١٤٨ ص ١٤٨)-

۶) (د شیعیت اصلی رو پ(ص۲۷۵)-

٧) (تهذيب الاسماء واللغات (ج٢ص٢٥) وسير اعلام النبلاء (ج٣ص١٥٠)-

عبدالله بن جعفر سره د هغی نکاح اوشوه. (۱)

و حضرت ام كلثوم ﴿ اللهُ او دَ هَغَي دَ خُوى زيدبن عمر په يوه ورخ انتقال اوشواوحضرت سعیدبن العاص قَائِرُ چه په هغه ورځوکښی د مدینی منورې آمیر وو د دواړو جنازه اوکړه. دا سانحه د حضرت معاویه نائر د خلافت په شروع ورځو کښې اوشوه. (۲)

توله: فقال عمر: امرسليط احق، وامرسليط من نساء الانصار مبر بايع رسول

الله عليه وسلم: نو حضرت عمر الله اوفرمائيل چه ام سليط ډيره حقداره ده، او ام سليط د انصارو په هغه ښځوکښې ده چا چه د رسول الله ناه په لاس بيعت کړې وو. مُضرّت أم سليط رضي الله عنها دا خضرت ام قيس بنت عبيدبن زيادبن ثعلبه النجاريه الانصاريه في ده. (٣)

او دا هم په خپل کنيت سره مشهوره وه. (۴)

هغی سره اوله نکاح ابوسلیط بن ابی حارثه بن قیس نجاری کړې وه او د ابوسلیط نه یو خوى سليط او يوه لور فاطمه پيدا شوه نو په دې وجه هغې ته ام سليط واني. (۵) د ابوسليط د وفات نه پس دا د مالك بن سنان په نكاح كښې راغله اود هغه نه حضرت

ابوسعید خدری گات پیدا شو. (۶)

هغي ته در رسول الله على نه در بيعت او غزوه احد، خيبر او حنين كښې يوځاي كيدو شرف حاصل دی. (۷)

نوله: قال عمر: فأنهاكانت تزفر لنا القرب يومراحد: حضرت عمر الله والورمانيل چه ام سلیط به زمون دپاره په جنګ احد کښې مشکیزې راؤچتولې او راوړلې دلته حضرت عمر گاتو د خادر په معامله کښې حضرت ام کلثوم څاټا په مقابله کښې حضرت ام سلیط څاټا ته ترجیح ورکولو علت ښائی چه حضرت ام سلیط څاټا به په غزوه احد کښې زمون د پاره مشکیزې اوچتولې راوړلې نو په دې وجه د دغه څادر زیاته حقداره هغه ده

قوله: قال ابوعبد الله: تزفر: تخيط: ابوعبدالله (امام بخاري) فرمائي چه تزفر معني هغي به ګنډ<u>ل</u>

داجمله صرف د مستملي په روايت کښې ده باقي نسخ صحيح بخاري کښې دا توضيحي جمله نشته. (۸)

۱) (الاصابة (ج ٤ ص٩٢)-

٢) (حواله بالا وطبقات ابن سعد (ج٨ص٤٥٥) كشف الباري كتاب المغازي (ص٢٤٠)-

٣) (طبقات ابن سعد (ج٨ص١٩)٠-

ا (عمدة القارى (ج ١٤ ١ص١٤٨)-

٥) (عددة القارى (ج ٤ ١ ص ١٤٨)-

ع) (فتع البارى (ج٧ص٣٤٧)-

۷) (فتح الباري (ج۶ص۷۹) وعمدة القاري (ج۱۱ص۱۶۹) وطبقات ابن سعد (ج۸ص۱۱۹)-

٨) (فتح الباري (ج٤ص٧٩) وعمدة القارى [٤١ص١٤٩)-

امام بخاری مخطهٔ د و فرم معنی دلته گندل بیان کړې دی په دې باندې د بخاری شارحینو اعتراض کړې دې. حافظ ابن حجر او علامه عینی فرمائی ((ذلك لایعرف في اللغة، وانه الزف، العمل)) (۱) چه دا په لغت کښې غیرمعروف ده او وفي په حقیقت کښې د او چتولو په معنی کښې دې. او قاضی عیاض مخطه فرمائی ((غیرمعروف في اللغة)) (۲) او حضرت شیخ الحدیث صاحب هم د علامه گنگوهی مخطه په حواله سره (مقدمه لامع) کښې دا تفسیری جمله د امام بخاری مخطه د اوهامونه کرځولې ده. (۳)

بیا حضرت گنگوهی رئید هم پخپله د دې توجیه ذکر کړیده، فرمائی چه کیدیشی د امام بیا حضرت گنگوهی رئید هم پخپله د دې توجیه ذکر کړیده، فرمائی چه کیدیشی د امام بخاری رئید د پورته ذکر شوی تفسیر وجه دا وی ((تزن)) معنی د هغوی په نزد دا چه حضرت ام سلیط زات هغه مشکیزی په هغه حال کښی چه هغه خالی شلیدلی وې نو د گندلودپاره به ئی راوچتولی، او دا اوچتول د مشکیزود اوبو څکلودپاره نه وی (۴)

او په دې توجیه سره د امام بخاری مینه دا پورتنئی تفسیری جمله بالکل صحیح ګرځی او نورو شارحینو حضراتو د دې اعتراض جواب دا ارشاد فرمائیلې چه امام بخاری مینی غالبًا دلته د ابوصالح کاتب اللیث اتباع کړیده، د ابوصالح نه تزن په معنی د تخمد مروی دې اود خور معنی ګنډل ده (۵)

د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت د حدیث شریف د باب د ترجمه سره مناسبت د حدیث باب یه دی جمله کنبی دی ((فانهاکانت تزفراناالقرب یوم احد)) (۶)

٢٧- بَأَبِ: مُكَ اوَاقِ النِّسَاءِ الْجَرْحَى فِي الْغَزُوِ

دَ ترجمة الباب مقصد په دې باب كښي امام بخارى تَوَانِدُ دا بيان كُول غواړى چه دَ حضور تَانِيُمُ په زمانه كښي د جنګ په ميدان كښي ښځو به د مجاهدينو د اسلام مرهم پټئى او علاج معالجه كوله او دا ثابت دى. (٧)

په وړاندینی باب کښې خود ښځومتعلق یوخدمت یعنی مشکیزې او چتولو او راوړلو ذکر

١.) (انظر فتح البارى (ج٤ص٧٩) وعمدةالقارى(ج٤١ص١٤) وقال ابن بطال: قوله: تزفرلناالقرب يعنى تحمل قال صاحب العين ولافعال (اى اخليل النحوى) زفر الحمل زفرا: نهض به والزفر: القربة، والزوافر: الاماء يحملن القرب(ج٥ص٧٩)-

۲) (شرح القسطلاني (ج۵ص۷۵)-

٣) (مقدمة اللامع (ج١ص٢٤٣) وايضًا انظر لامع الدراري (ج٧ص٢٣٤)-

^{\$) (}لامع الدراري (ج٧ص٢٣٥)-

۵) (ارشاد السارى (ج۵ص۸۵) وعمدة القارى (ج ۱۶ ص۱۶۸) فتح البارى (ج۶ص ۷۹) -

۶) (عمدة القاري (ج ۱۶ ص۱۶۷)-

۷) (عمدة القارى (ج ٤ اص ١٦٨)-

و او په دې باب کښې د هغوی سره متعلق يو بل خدمت يعنی د زخميانو مرهم پټنی وغيره ذکر دې.

[٢٢٠٦] حَدَّثَنَا عَلِيُّ بُنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا بِشُرُبُنُ الْمُفَضَّلِ حَدَّثَنَا خَالِدُبْنُ ذَكُوَانَ عَنْ الزُبَيِّعِ بِنْتِ مُعَوِّذِ (١) قَالَتُ كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَسْقِى وَنُدَاوِى الْجَرْحَى وَنُرُدُّ الْفَتْلَى إِلَى الْمَدِينَةِ [٥٣٥٥،٢٢٢] . الْقَتْلَى إِلَى الْمَدِينَةِ [٥٣٥٥،٢٢٢]

تراجم رجال

-على بر عبد الله: دا امام ابوالحسن على بن عبدالله ابن المديني ميد دكر. د دوى حالات ((كتاب العلم باب الفهم في العلم) لاندى تيرشوى دى. (٢)

<u>r-بشرير المفضل: داابواسماعيل بشربن المفضل بن لاحق رقاشى مُهِيَّة</u> دي. دَ ده تذكره (كتاب العلم باب تول النبى صلى الله عليه وسلم: رب مبلخ اوعى من سامع)) لاندې راغلى ده. (٣) --خالد بر<u>ن</u> ذكوان: دا ابوالحسن خالد بن ذكوان المدنى مَيَّيَة دې. (۴)

قوله: فالت: كنا مع النبي صلى الله عليه وسلم نسقى، ونداوى الجرحى ونرد القتلى الى المدينة: حضرت ربيع بنت معوذ الله عليه ورمائى چه مونو نبى كريم الفير سرد ربه يوغزوه كنبى شريك وو) په زخميانوباندى به مو اوبه څكولى او د هغوى مرهم پتنى به موكولى او كوم خلق به چه شهيدان شو هغه به مو مدينى منورى ته اوچتولو راوړلو. د باب په حديث كنبى دا راغلى دى، د نامحرم سړى مرهم پتئى اوددې قسم نورخيزونه مثلاً د بيمار خيال به موساتلو او موتى (شهداء) د ميدان جنك نه مدينى منورې ته منتقل كول. يواعتراض اود هغى جواب اوس سوال دا پيدا كيږى چه دا څنګه جائز شو چه ښځى د نامحرم سړو پتئى كوى، ځكه چه په دې كښى د پردو سړو او ښځو ګډوډوالي لازم راځى؟ رعى

١) (قوله: عن الربيع..." الحديث اخرجه البخارى ايضًا كتاب الجهاد باب ردالنساء الجرحى والقتلى رقم (٢٨٨٣) وكتاب الطب باب هل بداوى الرجل المراة والمراة الرجل؟ رقم (٥٤٧٩) ولم يخرجه غيره من الانعة الستة...

۲) (کشف الباری (ج۳ص۲۹۷)-

۲) (کشف الباری (ج۳ص۲۲۲)-

 ^{4) (}د دوی د حالاتودپاره اوګورئ کتاب الصوم باب صولم الصبيان -

ا (حواله بالا ـ

ع (عددة القارى (ج ٤ ١ص ١٤٨) -

كشأبارى جون كتأب الجهاد (جلداول)

شارحينود دې اعتراض دوه جوابونه ليکلي دي:

٠ دا احتمال چه مذكوره واقعه د حجاب د نازليدلو نه اول وى نو څه حرج نشته (١)

﴿ علامه قسطلانی مُنَالَدَ فَرَمَائی چه ممکن ده چه صحابیات دَ علاج په دوران کښی سړو له د لاس اوړلو نه بغیر علاج کوی، هغه داسی چه دوائی خوصحابیاتو تیاروله او په متاثر و حصه باندې هغه دوائی څوك بل سړې یا محرم ښځه لګوی، په دې صورت کښې هم لاس لګول نشی کیدې (۲)

د مدیث باب نه مستنبط یوه فائده د باب د حدیث نه دا معلومه شوه چه د ضرورت او حاجت په وخت کښی اجنبی سړی یا ښځه د یو بل علاج معالجه کولی شی، لیکن داخبره دی خامخاپه خیال کښی ساتی چه د علاج په دوران کښی د متاثره حصی نه د نظر یا لاس لاکولو وغیره نه تجاوز اونه کړی. صرف هغه متاثره حصی ته دې ګوری او لاس دې اوړی (۳)

ددې وجه داده چه علاج ضرورت دې اودا قاعده مسلمه ده چه (الفررورات تبيح المعظورات (۴) د حديث د ترجمه سره بالکل واضح حديث مطابقت د باب د ترجمه سره بالکل واضح دې او هغه د حديث په دې جمله کښې دې: ((ونداوي الجرح)) چه مونږ به د زخميانو علاج معالجه کوله. (۵)

٢٠- بَأَب: رَدِّ النِّسَاءِ الْجَرْحَى وَالْقَتْلَى إِلَى الْهَدِينَةِ

دَ ترجمة الباب مقصد: امام بخاری بیند دی باب لاندی په میدان جنگ کښی د بیخومتعلق یو بل خدمت یعنی میدان جنگ نه زخمیان او شهیدان منتقل کولو بیان کوی. (۶) په حدیث باب کښی دی چه ښځو به زخمیان راوچتول راوړل. خو چه کوم مقتولین او شهدا، وو هغوی به ئی مدینی منورې ته رسول.

[rara] حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا بِشَرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ عَنْ خَالِدِ بْنِ ذَكُوَانَ عَنْ الرُّيَعِ بِنْتِ مُعَوِّذِ(٤) قَالَتُ كُنَّا نَغُزُومَعَ النَّبِيّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَنَسْقِى الْقَوْمَ وَخَذَكُمُهُمْ وَنَرُدُ الْجَرُحَى وَالْقَتْلَى إِلَى الْمَدِينَةِ [ر:rary]

تراجم رجال

ا-مسلا: دا مسددبن مسرهد بم مسربل منافق دي. د دوی مختصر تذکره ((کتاب الایان باب

۱) (فتع الباري (ج۱۰ص۱۳۶)-

۲) (ارشاد الساري (ج۵ص۸۵)-

٣) (فتح الباري (ج٠ آص١٣٤) وعمدة القاري (ج١٤ ص١٤٨) وشرح ابن بطال (ج٥ص٧٩)-

٤) (فتع البارى (ج٤ص٨٠)-

۵) (عمدة القارى (ج ۱ ۱ص۱۶۸)-

۶) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٤٩)-

٧) (قوله: عن الربيع بنت معوذ رضى الله عنها: الحديث مرتخريجه انفا في الباب السابق-

من الایمان ان یحب لاخیه مایحب لنفسه)) لاندی تیره شویده. (۱)

د سندنورو رجال حواله په تيرشوي باب په سندکښې تيرشو دي.

نوبه: قالت: كنا نغزو مع النبي صلى الله عليه وسلم فنسقى القوم ونردالجرحي والقتلى الى المدينة:

د نردالجرم والقتلي معنى اود دي احتمالات علامه كنكوهي بينية فرمائي:

((ونردالجرس والقتلى))كښى دوه احتماله دى.

 ۵که قتلی نه مراد حقیقی مقتولین او شهدا، وی او لفظ ((قتلی)) په حقیقت باندې محمول کریشی نو هغه واپس کړولو وجه به دا وی چه د هغوی تدفین وغیره کښې مشغولیت چونکه په قتال کښي خلل پيدا کولو سبب دي. په دې وجه دا شهدا، او مقتولين به ښځو د میدان جنګ نه مدینې منورې ته منتقل کول.(۲)

ليکن په دې معنى او احتمال باندې د دې روايت په وجه دا اشکال کيږي کوم چه امام احمد، ابوداؤد، ترمذی، نسائی او دارمی مینیم وغیره نقل کړی دی، دَ حضرت جابر الناشخ نه روايت دې فرمائي :

((لما كان يوم احد، جاءت عمتى بابي لتدفنه في مقابرنا، فنادى منادى رسول الله صلى الله عليه وسلم: ردواالقتلى الى مضاجعهم))، (اللفظ للترمنى)(٣)

د دې روايت نه معلوميږي چه نبي اکرم ناهم شهيدان مدينې منورې ته منتقل کولونه منع فرمانیلی وه او هغوی دَ خیل شهّادت ځای ته واپس کولو حکم ورکړي وو. اود باب په حدیث کنبی ذکرشوی روایت برخلاف شهیدان مدینی منوری ته د منتقل کولو ذکر دی؟ حضرت شیخ الحدیث مولانا محمد زکریا کاندهلوی ریاید د دی اشکال جواب ورکولو سره فرمائی چه بهتر هم دغه ده چه ردالقتلی نه هغوی د جنګ د ځای نه قبرونوطرف ته منتقل كول مرادواخستى شى اوددى تائيدد شرح القسطلانى ددى عبارت نه كيرى: ((قال المفاقع): كانوايوم اخديجعلون الرجلين والثلاثة من الشهداء على دابة، وتردهم النساق الى موضع قبورهم))(۴) سقافسي مُرَاثِدَ فرمائي چه دَ غزوه احد په موقع صحابه کرامو دوه يا درې شهيدان په يو

۱) (کشف الباری (ج۲ص۲)-

۲) (لامع الدراري (ج۲ص۲۳۶)-

٣) (الحديث اخرجه الامام احمدفي مسنده (ج٣ص٢٩٧) وابوداؤدفي سننه ابواب الجنائز باب في الميت يحمل من ارض الى ارض رقم (٣١٤٥) والترمذي في جامعه ابواب الجهاد باب (في ماجاء في دفن القتيل في مقتله) رقم (۱۷۱۷)والنسائي في سننه ابواب الجنائز باب اين يدفن الشهيد؟ رقم (۲۰۰۶-۲۰۰۷) والدارمي فى سننه (ج١ص٣٣) المقدمة باب ما اكرم به النبى صلى الله عليه وسلم فى بركة طعامه رقم (٤٣) والخطيب التبريزي في مشكاة المصابيح كتاب الجنائز باب دفن الميت الفصل الثاني رقم (١٧٠٤)-٤) (ارشاد السارى (ج٥ص٨٥) وعزاالعلامة العيني هذاالقول الى ابن التين (ج٤١ص ١٤٩)-

څاروي کيخودل او ښځو به هغه د هغوي قبرونو ته منتقل کول (۱)

او پاتی شو ((الى المدينة)) الفاظ نو علامه قسطلانی ﷺ په قول دا الفاظ دَ ابوذر په نسخه کښې نشته ۲۰)

اود دې په جواب کښې داهم وئيلي شي چه «الىالمدينة» الفاظوتعلق جرحي سره دې نه چه د

قتلیٰ نه، اود دی توجیه په صورت کښې معنی بالکل صحیح ده یعنی ښځو به زخمیان

مدینی منوری ته منتقل کول نه چه شهیدان. (۳)

یابه دا وئیلی شی چه د حضرت ربیع بنت معوذ نشا حدیث کوم چه په باب کښی ذکر دی د نبی اکرم نظیم د ممانعت نه وړاندې دې، یعنی د حضور نظیم د منع کولو نه مخکې دې ښځو شهیدان مدینې منورې ته منتقل کول لیکن روستو هغوی نشام اوفرمائیل چه شهیدان هم د هغوی د شهادت په ځای کښی خښ کړئی. دغه شان د سنن او بخاری په روایاتوکښی تطبیق کیږی.. (۴)

دوئم احتمال دا دې چه ((تتلي)) نه هغه زخميان مراد دې کوم چه مرګ ته نزدې وي. پاتې شو هغه زخمي صحابه کرام د چا زخمونه چه په نزدې راتلونکي وخت کښې د جوړيدو احتمال وو، هغه ئي هم په ميدان جنګ کښې باقي پريخودې وو چه د جوړيدو نه پس بيا په جنګ کښې شريك شي. (۵)

خوبه دې احتمال باندې دا اشکال کیږي چه که ((قتلی)) نه مراد زخمیان دی نو بیا د جدا چرۍ ذکر کولو څه ضرورت دي؟

د دې اشکال په جواب کښې دا ویئلي شی چه په حدیث کښې "چرمی" نه مراد هغه کسان دی چه مرګ ته نزدې نه وی اود هغوی د واپس کولو نه د هغوی خیموته منتقل کول وی. (۶) د حدیث د ترجمه سره مطابقت واضح دې، چه د دیث په دې جمله کښې دې. ((ودردالجرمی والقتلی الله بینه)) (۷)

· ۲۸-بَاب: نَزْعِ السَّهْمِ مِنُ الْبَدَن

دَ ترجمة الباب مقصد: علامه ابن المنير اسكندراني بَيْنَا فرمائي چه امام بخاري د يو وهم

⁽ ۱ (تعلیقات لامع الدراری (<math> (7700))

۲) (ارشاد الساری (ج۵ص۸۵)-

٣) (تعليقات لامع الدراري (ج٧ص٢٣۶)-

٤) (حواله بالا (ص٢٣٧)-

۵) (لامع الدراري (ج٧ص٢٣٧)-

۶) (تعلَّيقات لامع الدّراري (ج٧ص٢٣٧)-

٧) (عمدة القارى (ج ١٤ ١ص ١٤٩)-

ري کولو د پاره دا باب قائم کړيدې. چاته دا وهم کيديشي چه شهيدکه په غشي لګيدلې دى نو هغه به د شهيدد بدن به نشى راويستلى بلكه غشى هم په هغه حالت باندى ړ. پريخوديشي لکه څنګه چه هغه د وينو رنګ بدن سره د خښولو څکم ورکړې شوې دې دې د پریه . هاره چه د قیامت په ورځ هغه هم په هغه حالت کښې د الله تعالى دربارکښې حاضر شي، نو أَمَّامُ بْخَارِي رُكِيْلًا دَ دي توهم ازاله فرماني چه داسي څه خبره نشته او حکم هم دغه دې چه كله تأسو، شهيد خښ كړنى نو د هغه زغره وغيره كوزه كړنى او وسله كومه چه د هغه په بدن باندې ده هغه جداکړئي نو غشې به هم راویستې شي (۱)

د علاَمه مهلب سُلَة موقف بل دې هغه فرماني چه امام بخاري ﷺ دلته د انسان د بدن نه د غشی ویستلو جواز بیانوی، کیدیشی چه د دې د راویستلو سره د هلاکت او مرګ اندیښنه وي أو دا خپل ځان پخپله په هلاکت کښې دَ اچولو برابر نه دي، او دَ دې کار نه دَ نفع او صحت امیدهم وی، هم د دې مثل زخم څیرل او دا شلول او په اوسپنه وغیره باندې داغ

لگول يعنى هغه ټول كارونه د كومو په دريعه چه علاج كولى شي. مقصد دا شو لكه څنګه چه د زخم څيرل، او په بدن باندې د علاج په غرض داغ لګول جانز دى دغه شان د بدن نه غشى ويستل هم جائز دى. (٢)

حافظ ابن حجر او علامه عيني رُكِية دې دوئم يعني د علامه مهلب بيني قول ته ترجيح ورکړيده ځکه چه دَ باب حديث دَ هغه سړي متعلق دې دَ چانه چه غشې دَ هغه دَ ژوند په حالت كنبى اوويستلى شو اودعلامه إبن المنير ميلة قول (نزع السهم بعد الموت) سره متعلق دي (٣) [٢٧٢٨]حَدَّثَنَا هُحَمَّدُ بُنُ ٱلْعَلَاءِحَدَّثَنَا أَبُوأِسَامَةَ عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِاللَّهِ عَنْ أَبِي بُرُدَةً عَنْ أَبِي مُوسَى (٣)رَضِىَ اللَّهُ عَنْهُ قَـالَ رُمِىَ أَبُوعَـامِ فِي رُكْبَتِهِ فِـانْتَهِيْتُ إِلَيْهِ قَـالَ ابْزِعُ هَذَاالـتَّهُمَ فِنَزَعْتُهُ فَنَزَامِنُهُ الْمَاءُفَدَ خَلْتُ عَلَى النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرُتُهُ فَقَالَ اللَّهُ مَاغُفِرْ لِعُبَيْدٍ أبيعًامِرِ[٢٠٣٠٢]

تراجم رجال

<u>- هجمل بر. العلاء:</u> دا ابوكريب محمد بن العلاء بن كريب همداني كوفي *رُواشيا* دي.

r-ابواسامه: دا ابواسامه حمادبن اسامه بن زیدقرشی کوفی مردد دی.

-بريدبر_عبدالله: داابوبرده بريدبن عبدالله بن ابى برده ابى موسى الاشعرى كوفى الما

۱) (فتح الباری (ج۶ص ۸۱)-

۲) (شرح ابن بطال (۵ص ۸۱)-

۲) (فتح الباري (ج۶ص ۸۱)وعمدة القاري (۱۶۹ص ۱۶۹)-

أ (قوله: عن ابي موسى رضى الله عنه: الحديث اخرجه البخارى ايضًا كتاب المغازى باب غزوة اوطاس رقم (٤٣٢٣) وكتاب الدعوات باب الدعاء عندالوضوء رقم (٤٣٨٣) ومسلم كتاب فضائل الصحابة باب من فضائل ابی موسی وابی عامر الاشعربین رقم (۶٤۰۶)-

دې د دې دريواړو حضراتو تذکره ((کتاب العلم باب فضل من علم وعلم)) لاندې تيره شوې (۱) ۱- ابوبردي: دا د حضرت ابوموسي الاشعري الله خوي دې، د ده تذکره ((کتاب الايمان باب ای الاسلام افضل؟)) په ذیل کښې راغلې ده (۲)

۵- ابوموسی: دا مشهور صحابی رسول، حضرت ابوموسی الاشعری الشخ دی، د هغوی حالات هم د مذکوره باب لاندی تیرشوی دی (۳)

قوله: قال: رمى ابوعامر في ركبته فانتهيت اليه، فقال: انزع هذاالسهم،

فنزعته: حضرت ابوموسی اشعری تاتی فرمائی چه دَحضرت ابوعامرزنگون په غشی اولگیدو نوزه هغه له لاړم، هغه ماته اووئیل چه دا غشی راوباسه، نوماهغه راوویستلو. په حدیث باب کښی ذکر شوی واقعه د غزوه اوطاس سره متعلق ده، دلته امام بخاری بینید د ابو موسی اشعری التی حدیث په اختصار سره بیان کړو، همدغه حدیث هغوی په کتاب المغازی کښی تفصیل سره نقل کړیدې هلته د دې تشریح هم راغلی ده. (۴)

قوله: حضرت ابوعاً مر التينز دا د نبی اکرم تائير يو جانثار صحابی، د حضرت ابوموسی اشعری التین محترم تره التین دی. د هغه نوم عبید بن سلیم بن حضاربن حرب دی، قبیله اشعربن اودبن زید سره د هغه تعلق دی. (۵)

او على ابن المديني دُ هغه نوم عبيدبن وهب او ابونعيم اصفهاني رُعِيَّة دَ هغه نوم عبدالله بن وهب ليكلي چه صحيح نه دي.(ع)

دُدوی شمیرد نبی اکرم گانم په کبارو صحابه کراموکښې دې، ابن قتیبه د هغوی ذکرد کمین شمیرد نبی اکرم گانم وو، هغوی نور حبشې طرف ته هجرت کونکو کښې کړیدې، لکه دا قدیم الاسلام صحابي وو، هغوی نور لیکلي دی چه دې په شروع کښې نابینا وو بیا بینا شو.(۷)

په غزوه حنین کښې چه کله مشرکانو ته شکست اوشو نو په هغوی کښې ډیر خلق اوتختیدل او اوطاس ته راغلې وو، رسول الله نځځ هغوی ته ماتې ورکولودپاره د حضرت ابوعامر ځاځځ په مشرئي کښې یوه ډله روانه کړه او هم په دې غزوه اوطاس کښې هغه شهید شو، اود هغه د شهادت سبب هم هغه غشې جوړشوې ووچه د مشهور مشرك دریدبن صمه ځوئ سلمه بن درید ویشتې وو چه د هغه په زنګون کښې اولګیدلو لکه چه د باب په حدیث

۱) (کشف الباری (ج۳ص۱۷ ٤)-

۲) (کشف الباری (ج ۱ ص ۶۹۰)-

٣) (حواله بالا-

٤) (انظر كشف البارى كتاب المغازى (ص٥٤٣)-

۵) (الاستيعاب بهامش الاصابة (ج ٤ ص١٣٥) والاصابة (ج ٤ ص١٥٣) واسدالغابة (ج ٤ ص١٨٣) -

ع) (الاستيعاب بهامش الاصابة (ج عُص١٣٥) واسدالغابة (ج عص١٨٣) ومعرفت الصحابة (ج عُص ٥١٧)-

[·] ب ر ((الاستبعاب بهامش الاصابة (ج ٤ ص١٣٥)والاصابة (ج ٤ ص١٢٣) واسدالغابة (ج ٤ ص١٨٣)-

شریف کښی هم مذکور دی بیا روستو حضرت ابوموسی اشعری کانود هغه د قاتل کار به

او بعض حضراتو غشى ويشتونكي دريدبن صمه كرخولي دي خودا صحيح نه دى خكه چه وريد هغه وخت کښي د ير بوډا شوې وو د هغه عمر د سلوکالونه زيات شوې وو اود بوډا والى د وجه هغه جنگ كښې شركت نه وو كړې، نو ابن الاثير بياية فرماني:

(روقیل: ان دریدا هوالذی قتل اباعامر، وقتله ابوموس، وذلك غلط، فان دریدا انهاحض الحرب شیخا كهیرا ولم يهاشر الحرب لكبرة)) (٢)

توله: فنزامنه الماء، فدخلت على النبي ظلم فأخبرته، فقال: اللهم اغفرلعبيد ابي عامر: نود زخم نه اوبه راوتلی او د نبی اکرم نظم په خدمت کښی حاضرشو او پوره واقعه ئی عرض کړه نو هغوی نظم دعا او کړه اې الله د عبید ابوعامر مغفرت نصیب کړه.

((توا)) د باب "نصر" نه دې د دې مصدر نزوا و نزوانا دې اود دې معني راوچتيدل دي خود

عُلَّمه ابن التين په قول دلته مراد د اوبو راوتل دی ۳) د می شون التین په قول دلته مراد د اوبو راوتل دی او هغه د مدیث د ترجمه سره مطابقت ظاهر دی او هغه په دې جمله کښې دې ((انزعهناالسهمفنزعته))(۴)

٢٥- بَأَب: الْحِرَاسَةِ فِي الْغَزُوفِي سَبِيلِ اللَّهِ

دَ ترجمة الباب مقصد در حافظ ابن حجر رُزانةِ او علامه عيني رُزانة به قول امام بخاري رُزانة به بيانول غواړي. (٥)

دا هم وئیلی شی چه امام بخاری رئی داخودل غواری چه مسلمانانو له غافل نه دی اوسیدل پکار اود خپل حفاظت انتظام کول پکار دی. معلومه نه ده چه دښمن به کله او د کوم طرف نه حمله کوی؟ دې د پاره د حراست او حفاظت ښه اهتمام کول پکار دی.

٢٢٢١: حَدَّاتُنَا إِسْمَاعِيلُ بُنُ خَلِيلٍ أَخْبَرَنَا عَلِي بُنُ مُسْبِرٍ أَخْبَرَنَا يَعْيَى بُنُ سَعِيدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بُنُ عَامِرِ بُنِ رَبِيعَةً قَالَ سَمِعْتُ عَائِشَةً رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا (١) تَقُولُ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَهِرَ فَلَنَّهَا قَدِمَ الْمَدِينَةَ قَالَ لَيْتَ رَجُلًا مِنْ أَصْحَابِي صَالِحًا يَعُرُسُنِي اللَّيْلَةَ إِذْسَمِعْنَا

۱) (حواله بالا و كشف البارى كتاب المغازى (ص۲۵۲)-

٢) (اسدالغابة (ج٤ص١٨٣) تنبيه: ابوعام اشعرى الطيء د نوم يو بل صحابي هم دي خوهغه د ابوموسى اشعرى النورور دى أود هغه نوم هانى يا عبدالرحمن يا عبيد ياعباد بن قيس دى-

٣) (عمدة القاري (ج ٤ ١ص ١٤٩) وشرح ابن بطال (ج٥ص ٨١)-

أ (عمدة القاري (١٤ ص١٤٩)-

۵) (فتع الباری (ج۶ص ۸۱) وعمدة القاری (ج۶ اص ۱۷۰)-

٤) (قوله: عانشه رضى الله عنها: الحديث اخرجه البخارى ايضًا كتاب التمنى ...[بقيه حاشيه به بل مخ...

تراجم رجال

-اسماعيل بر خليل: دا ابوعبدالله اسماعيل بن خليل كوفي الله دي (١)

r-على بر مسهر: دا ابو الحسن على بن مسهر القرشي الكوفي ميادي. (٢)

<u>- یحیمی بر . معید:</u> دا مشهور تابعی محدث، یحیی بن سعیدالانصاری بختیم دی. دُ دوی حالات كتاب الايبان باب صوم رمضان احسابًا من الايبان و لاندې تيرشوى دى. (٣)

م-عبدالله برع أمربر ربيعه: داحضرت عبدالله بن عامر ربيعه المنافق دي (۴)

ه-عائشه رضى الله عنها: دا ام المؤمنين حضرت عائشه بنت ابى بكر الصديق المُؤُمِّن ده، د دوی حالات بدء الوحی د دوئم حدیث لاندې تیرشوی دی (۵)

وتقول: كان النبي صلى الله عليه وسلم سهر، فلم اقدم المدينة قال: ليت رجلا من اصحابي صالحاي حرسف الليلة حضرت عبدالله بن عامر بن ربيعه اللي فرمائي چه ما د حضرت عائشه اللي نه واوريدل هغوی بیان فرمائیلو چه نبی اکرم ناتی (یوه شبه) په بیدارئی کښې تیره کړه،مدینې ته په رسیدو باندې هغوی ناتی اوفرمائیل چه کاش زما په صحابه کرامو کښې یو صالح داسې وې چه د شپې زمون څوکيداري اوکړي.

دَ رُوایاتو په مینځ کښې تعارض اود هغې حل د باب په روایت کښې هم دا راغلي دی چه حضور علی یوه شپه په بیدارئی کښې تیره کړه، په دې کښې د بیدارئی زمانه نه ده بیان کړې. نو د حدیث ظاهري مفهوم خوهمدغه دې چه د بیدارئي واقعه په مدینه منوره کښې د راتلونه وړاندې ده اود هغوي الله قول ليت رجلامن اصحابي صالحا ... وستو دې.

خو همدغه روایت امام مسلم الم هم په خپل صحیح کښې ذکر کړیدې، په دې کښې لیث عن يحيى بن سعيد په طريق باندې داسې مروى دى: "سهر رسول الله صلى الله عليه وسلم مقدمه المدينةليلة نقال: ليت رجلا صالحامن اصحابي يم سنى الليلة (ع)

^{...}بقيه حاشيه] باب قوله صلى ألله عليه وسلم:ليت كذاكذا رقم (٧٢٣١) ومسلم كتاب فضائل الصحابة باب فضل سعدبن أبي وقاص رضى الله عنه رقم (٤٢٣٠-٤٢٣٠) والترمذي ابواب المناقب باب مناقب سعدبن ابی وقاص رضی الله عنه رقم(۳۷۵۶)

١) (د دوى د حالاتودپاره أو كورئ كتاب الحيض باب مباشرة الحائض-

٣) (كشف البارى (ج أص ٣٢١) وايضًا انظر كشف البارى (ج ١ ص ٢٣٨)-

٤) (د دوى د حالاتود پاره او كورنى كتاب تقصير الصلاة باب صلاة االتطوع على الدواب-

۵) (کشف الباری (ج ۱ص۲۹۱)-

ع) (صحيح مسلم كتاب فضائل الصحابة، باب فضل سعدبن ابى وقاص رضى الله عنه رقم (٤٢٣١)-

نود صحیح مسلم روایت په دې باب کښې صریح دې چه د بیدارنی او قول دواړو زمانه د مدینې منورې د راتلونه پس ده، (۱) د دې دپاره به د مسلم روایت د بخاری د روایت په مقابله کښې راجح وی ځکه صریح په غیر صریح باندې راجح وی د صحیح مسلم چه کوم روایت دې د هغې تائید د امام نسانی د دې روایت نه کیږی چه هغوی د ابواسحال الفزادی من یحی بهن سعید په طریق سره نقل کړیدې په دې کښې دی کان رسول الله صلی الله علیه وسلم ای اول ما تدم البدینة یسهرمن اللیل (۲)

دغه شان د تولو روایاتو په مینځ کښې به تطبیق اوشي ځکه چه حدیث یو او راوي هم یوه یعني حضرت عائشه راه (۴)

د قدوم مدینه نه څه مراددې؟: اوس دلته په دې خبره هم پوهه شنی چه په حدیث کښی قدوم مدینه نه نبی قلوم مدینی ته اولنی تشریف راوړل چه د هجرت نه پس شوی مراد نه دې ځکه چه هغه وخت حضرت عائشه الله حضور اکرم الله کړه نه وه، نه حضرت سعدبن ابی وقاص الله کاتی وو، بلکه د یو سفروغیره تشریف راوړل مراد دی. (۵)

د دې دليل هغه روايت دې كوم چه امام احمد په خپل مسند كښې يزيدبن هارون عن يحيى بن سعيد په طريق سره نقل كړې دې، د هغې الفاظ دا دى

ان رسول الله صلى الله عليه وسلم سهر ذات ليلة وهى ال جنهه قالت: ققلت: ماشانك يا رسول الله ؟ (۶) يعنى رسول الله تأثير يوه شپه بيدار پاتى شو او حضرت عائشه د هغوى ترفيل په ارخ كښې وه . حضرت عائشه فرمائى، ما اووئيل يا رسول الله تاسو ته څه پريشانى ده؟ معلومه شوه چه په حديث كښى قدوم مدينه نه د هجرت نه پس رومبى قدوم مراد نه دې بلكه دا د يو بلى موقع واقعه ده.

قوله: اذاسمعنا صوت سلاح، فقال: من هذا؟ فقال: اناسعد بر ابي وقاص جئت لاحرسك فنام النبي صلى الله عليه وسلم: په دې وخت كښې مونږ د وسلى آواز واوريدو نو نبى الله الله الله عليه وسلم: په دې وخت كښې مونږ د وسلى آواز واوريدو نو نبى الله الله عليه وسلم يه ستاسو د حفاظت د پاره راغلى يم، نو نبى مَنْ الله اوده شو.

۱) (عمدة القارى (ج ۱۶ ص ۱۷۰) وفتح البارى (ج۶ص۸۲) وارشادالسارى)۵ص۸۶)-

٢) (سنن النسائي الكبرى (ج٥ص ٤١) كتاب المناقب سعدبن مالك كالتؤرقم (٨٢١٧/٣)-

۳) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٧٠)-

^{4) (}عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٧٠)-

۵) (فتع الباری (ج۱ص۸۲) وعمدة القاری (ج ۱ اص ۱۷۰) وشرح القسطلانی (ج۵ص۸۶)-

ع) (مستدالامام احمدبن حنبل (ج٤ص١٤١)-

به صحیح مسلم کښې د لیث په طریق کښې دا هم ذکر دی چه رسول الله نظیم د سعدبن ابی وقاص نه تپوس او کړو چه ولې راغلې ئی؟ نو هغه جواب ورکړو "و تاع في نفسي خوف على رسول الله صلى الله عليه وسلم (١)

زما په زړه کښې د رسول الله تا متعلق دا اندیښنه پیدا شوه نو زه د هغوی د حفاظت د

پاره حاضرشوی یم، نو رسول الله تالظ هغه ته دعالاانی او کړی .

یوسوال اود هغی جوابونه اوس دلته یو سوال دا پیداکیږی چه په قرآن کریم کښی خو الله تعالی دا فرمائیلی دی (والله یعصبك من الناس) اوالله تعالی به د خلقو د شر نه د ستاسو تالظ حفاظت كوی نود الله تعالی د خصوصی حفاظت اوناگرانئی كښی د كیدلو باوجود د نور حفاظت څه ضرورت دی (۲)

علامه ابن بطال مُوالمَّهُ وَ دَى پورتنى سوال باره كښى جواب وركړيدې چه په حديث كښى دا مذكوره واقعه د قرآن كريم د دې پورتنى آيت نه وړاندې ده. حديث (٣) كښى راغلى دى چه كله دا پورتنى آيت نازل شو نو نبى كريم تُلَيِّمُ د شپى خپل حفاظت پريخودې وو (۴) علامه ابن بطال مُرامَّد د قول خلاصه دا ده چه په حديث باب اودغه شان نورو احاديثوكوم

علامه ابن بطّال رُسُلَتُ دَ قُولَ خُلاصه دا ده چه په حُدیث باب اودغه شان نورو احادیثوکوم کښی چه نبی اکرم گلیم د حفاظت او نګرانئی ذکر کړیدې هغه په دې پورتنی آیت سره منسوخ دی. (۵)

خو علامه قرطبی روز فرمائی چه د باب حدیث ته د منسوخ وئیلو هدو ضرورت نشته ځکه چه الله چه آیت مبارك کښی څه داسې خبره نشته چه د حراست او حفاظت نفی کوی لکه چه الله تعالى خپل دین په نورو ادیانو باندې غالب ظاهرولوسره د دې خبرې نفی نه کوی چه قتال او کړئی او د هغې د پاره لښکر تیار کړئی. (۶)

نوپه دې صورت کښې عصمه نه مراد فتن، ګمراهی اود ځان د ضائع کیدو نه حفاظت دې. (۱) د نبی اکړم ناځ محافظین صحابه کرام: په روایاتوکښې د نبی کریم ناځ محافظین صحابه کونکی صحابه کرامو صحابه کرامو رضوان الله علیهم اجمعین نومونه دا دی:

١) (صحيح مسلم كتاب فضائل الصحابة باب فضل سعد بن ابي وقاص رضى الله عنه رقم (٢٣١)-

۲) (عمدة القارى (ج ۱۸ ص ۱۷۰) -

٣) (وقد روى الترمذى من طريق عبدالله بن شقيق عن عائشه رضى الله عنهاقالت: كان النبى صلى الله عليه وسلم يحرس حتى ينزلت هذه الاية ﴿والله يعصمك من الناس﴾ فاخرج رسول الله صلى الله عليه وسلم رأسه من القبة، فقال لهم: أيهاالناس انصرفوافقد عصمنى الله. الجامع للترمذى كتاب تفسير القران باب: ومن سورة المائدة رقم (٣٠٤۶)-

٤) (شرح ابن بطال (ج٥ص٨٢)-

۵) (فتح الباري (ج۶ص ۸۲)-

ع) (حواله بالاوعمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٧٠)-

۷) (فتح الباری (ج۶ص ۸۲)-

مضرت سعدبن معاذ، محمدبن مسلمه، زبير، ابوايوب الانصاري، ذكوان بن عبدقيس، درع السلمي، محجن بن ادرع، عبادبن بشير، عباس بن عبدالمطلب او ابوريحانه رض الله عنهم اجمعين. (١)

مدیث نه مستنبط فائدی علامه مهلب ایناتی فرمانی چه د حدیث نه دا خبره فائده ورکونکی معلومه شوه چه بادشاه له د د بسمن د حفاظت او د خپل بچاؤ د پاره حفاظت او څوکيداري انتظام کول پکار دی. تاسو د رسول الله کالله فاصل ته او مورئی سره ددی چه هغوی ته دا خبره معلومه وه چه الله تعالى به دَ هغوى په ذريعه خپل دين پوره كوي اودُ هغوي په ذريعه به دَ الله تعالى كلمه اوچتوي او ښكاره خبره ده چه تركومي د رسالت د ادانيګني فريضي كار پوره شوې نه وی نو هغوی ته څوك نقصان نشی رسولي، ليکن نېي ناپځيم د خپل حفاظت اُهْتمام کُولو دې دَ پاره چه دښمن ناڅاپي حملي اونه کړي اودَ حمله نه اودَ هغي دَ تكليفونونه حفاظت ممكن شي. (٢)

بله دا خبره هم فائده منده شوه چه خلقو له پکار دی چه هغوی دی پخپله هم د خپل بادشاه دُ حفاظت انتظام او اهتمام اوكړي، چه چرته داسې نه وي چه په بي خبرني كښې دښمن ته د خه قسم نقصان رسولو موقع ملاو نشي (٣)

دَ حدیث دَ باب دَ ترجمه سره مطابقت دَ باب ترجمه سره دَ حدیث مطابقت په دې جمله کښې

دي. "من يحاسني الليلة..."

ليكن په دې دا اعتراض كيږي چه په حديث كښې خو الغږوفي سبيل الله د سره نه څه ذكر نشته، په دې کښې مذکوره واقعه خو د حضر ده نه چه د غزوې او ترجمه غزوة في سبيل الله ده؟

دُ دې اعتراض په جواب کښې علامه عيني رُياهي فرماني چه سفر وي که حضر نبي اکرم ترکیم به هميشه دَ الله تعالى به لاركبني وو،نو به دي وجه د دي اعتراض هيخ معنى نشته (ع) ٠٠٠٠: حَدَّثَنَا يَعْنَى بُنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا أَبُوبَكُرٍ يَعْنِى ابْنَ عَيَّاشٍ عَنْ أَبِى حَصِين عَنْ أَبِى صَالِحٍ عَنْ أَبِى هُرِيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ (٥) عَنْ النَّبِيّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ تَعِسَ عَبُدُ الدِّينَارِوَالدِّرْهَمِ وَالْقَطِيفَةِ وَالْخَبِيصَةِ إِنْ أَعْطِى رَضِى وَإِنْ لَمْ يُعْظَلَمْ يَرْضَ قال ابوعبدالله لَمْ يَرُفَعُهُ إِسْرَابِيلُ وَمُحَمَّدُ بْنُ جُحَادَةً عَنْ أَبِي حَصِينٍ

۱) (شرح القسطلاني (ج۵ص۸۶) وحاشية السهارنفوري على صحيح البخاري (ج۲ص ۲۰۷۱)-

۲.) (شرح ابن بطال (ج۵ص۸۲)-

٣) (حواله بالا-

٤) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٧٠)-

٥) (قوله: عن ابي هربرة رضى الله عنه: الحديث اخرجه البخاري ايضًا (ج١ص٤٠٤) كتاب الجهاد نفس الباب الذي نعن فيه رقم (٢٨٨٧) و (ج٢ص٩٥٢) كتاب الرقاق باب مايتقى من فتنة المال رقم (٤٤٣٥) وابن ماجه أبواب الزهد بأب في المكثرين رقم (١٣٥ ٤ -١٣۶)-

تراجم رجال

ا- یحیی بر پوسف: دا ابویوسف یا ابوزکریا یحیی بن یوسف بن ابی کریمه الزمی الرقی مید دی. (۱)

د هغوی تعلق د خراسان يو کلي ازم سره وو ليکن روستو هغوي په بغداد کښې استوګنه اختيارکره. (۲)

دا د عبد الله بن ادریس، عبیدالله بن عمروالرقی، عیسی بن یونس، ابو معشرالمدنی. ابوبکربن عیاش،خلف بن خلیفه،ابولاحوص اوامام وکیع شیخ وغیره نه دحدیث روایت کوی او د هغوی نه روایت کونکوکښی امام بخاری، ابن ماجه، ابوزرعه دمشقی، ابوحاتم رازی. محمدبن اسحاق صنعانی، عثمان بن خرذاذ، عباس الدوری، حنبل بن اسحاق، عبدالله بن حماد آملی،ابوبکربن ابی الدنیا،محمدبن غالب تمتام، ابوبکربن ابی خیثمه او احمدبن حسن بن عبدالجبار صوفی شیخ وغیره شامل دی (۳)

ابن ابی حاتم روز فرمائی "سألت أب عنه، فقال: كتبنا عنه بالری قدیما ثم كتبنا عنه ببغداد وسألت أحمد بن حنبل عنه، فأثنى عليه، قلت لأبي: ماقولك فيه؟قال: هوعندى صدوق (۴)

د دې عبارت خلاصه دا ده چه آبن ابي حاتم فرمائي ما د خپل پلار نه د هغه باره کښې تپوس اوکړو نو هغوی اووئيل چه مونږ د هغه نه ری او بغداد دواړو ځايونوکښې حديث اوزيدلی دی، امام احمد بن حنبل رابوحاتم نه تپوس اوکړو نو هغوی اووئيل چه هغه زما په نزد صدوق دي.

امام ابوزرعه مُشِيرٌ فرمائي ((هوثقة))(٥)

امام ذهبی مید هغوی به دې الفاظوسره یاد کړی دی. ((الامام الحافظ الحجةوکان من کهار البحدثين الرحالة))(۶)

ابن قانع مُنظم فرمائي ((وكان لُقة))(٧)

بن حبان برود على الرود كالمسارة الثقات كنبى ذكر كريدي. (٨) او ابن حبان برود هم هغه په كتاب الثقات كنبى ذكر كريدي. (٨) په اصحاب اصول سته كنبى د امام بخارى برواية به علاوه امام ابن ماجه هم د هغه نه روايات

١) (تهذيب الكمال (ج٣٢ص ٤٠) وطبقات ابن سعد (ج٧ص٣٤)-

٢) (تهذيب الكمال (ج ٣٢ص ٤٠- ٤١) وعمدة القارى (ج ١٤ ص ١٧١) -

٣) (شيوخ او تلامذه د پاره او گورئ تهذيب الكمال (ج٣٢ص ٥٠-٤١)-

٤) (تهذيب الكمال (ج ٣٢ص ٤١) والجرح والتعديل (ج ٩ص ٢٤٧) رقم (١٥٤٨٧/٨٣٢)-

٥) (تهذيب الكمال (ج٣٢ص ٤١) وسيرأعلام النبلاء (ج١١ص ٣٨)-

۶) (سيرأعلام النبلاء (ج ۱ ۱ ص ۳۸)-

⁽ ۷(تهذیب التهذیب (ج۱۱ص۳۰۸)۔

۸) (الثقات لابن حبان (ج ۹ص۲۶۲)-

رَعباسي خليفه ((واثق بالله)) په دورخلافت کښې بغداد کښې ۲۲۵ د انتقال شو (۳) بو قول ۲۲۹ هم دې (۴) رحمه الله تعالى رحمة واسعة

م-ابوبكر: دا ابوبكر عياش الخياط المقبري ميايي دي. (۵)

م-ابوحصين: دا ابوحصين عثمان بن عاصم الاسدى مينه دي. (ع)

- ابوصالح: دا ابوصالح ذكوان الستان الستان دي دوى مختصر ذكره «كتاب الإيبان باب امورالإیمان)) لاندی تیره شویده (۷)

۵-ابوهريرة للنيني: دامشهورصحابي رسول، حضرت ابوهريره النيني دي دَ دوي مفصل تذكره ده. (رکتاب الإیمان)) د مذکوره باب لاندی راغلی ده. (۸)

توله: عن النبي صلى الله عليه وسلم قال: تعس عبدالدينار والدرهم والقطيفة والخميصة، إن أعطى رضى، وإن لمر يعط لمريرض: حضرت ابوهريره المراكزة والخميصة، أن أعطى جه هغوى فرمائيلي دى و دينار غلام، و درهم غلام، و المراكزة و المرا جالیّدار څادر غلام او دَ خَمیصه غلام هلاك شو،که چرې هغه ته څه ورکولې شی نو خوشحالیږی او که نه نشي ورکولي نو خفه کیږي

توله: قال أبوعب الله: لم يرفعه إسرائيل وهجم بن جحادة عن أبي حصين: امام بخاري بيناته فرمائي: اسرائيل (٩) او محمد بن جحاده (١٠) د ابوحصين به واسطه سره دا روایت مرفوعًا نه دې بیان کړې

د پورتنی عبارت مطلب یه دی عبارت کښی امام بخاری پر دا بیان کریدی چه حضرت ابوهريره الله و باب كوم روايت دى دا اسرائيل بن يونس او محمدبن جحاده المين موقوفا

١) (تهذيب الكمال (ج٣٢ص٤٢) اعلم أن العلماة العيني رحمة الله عليه عمدة القاري (ج٤١ص١٧١) عده من أفراد البخاري فحسب ولكن كما ترى أن المزى عده من رجال ابن ماجه أيضًا وهو الصحيح-

۲) (تهذیب التهذیب (ج۱۱ص۳۰۸)-

٣) (تهذيب الكمال (ج٣٢ص٤١)-

^{؛) (}حواله بالا وسيرأعلام النبلاء (١١ص٣٩)-

د) (دَ دوى دَ حالاتو دَ پاره اوګورئ کتاب الجنائز باب ماجاء في قبر النبي صلى الله عليه وسلم-·

٤) (دَ دوى دَ حالاتودَپاره او گورئ كتاب العلم باب أثم من كذب على النبي صلى الله عليه وسلم-

۷) (کشف الباری (ج۱ص۶۵۸)-

۸) (حواله بالا(ص۶۵۹)-

٩) (ددوى د حالاتو د پاره او كوره كتاب العلم باب من ترك بعض الاختيار مخافة أن يقصر-

۱۰) (ددوی د حالات د پاره اوګوره کتاب الاجارة، باب کسب البغی-

نقل کړيدې په اصل کښې داحديث ابوحصين نه اسرائيل بن يونس، قاضي شريك، قيس بن الربيع، مهربن جحاده او ابوبكر بن عياش انته روايت كړيدې

بن الربيع، مهربن جهاده او بوب رس مي السياري المحاده روايت موقوف على ابى هريره گرخولى كوم كښى چه اسرائيل بن يونس او محمدبن جحاده روايت موقوف على ابى هريره گرخولى دې يعنى حديث نى د ابوهريره گائز قول گرخولى دې. او ابوبكر بن عياش به دې خبره مرفوع وئيلى دې او قاضى شريك او قيس بن الربيع هم د ابوبكر بن عياش په دې خبره كښى ملكرتيا كړى ده چه دا حديث مرفوع دې. (١)

راجح موقوف دې که مرفوع؟ اوس سوال دا پیدا کیږی چه د دې حدیث حکم څه دې اودا

حدیث موقوف دی که مرفوع؟

حافظ ابن حجر برالي د دي جواب فرماني:

(راس) اثيل أثبت منهم، ولكن اجتماع الجماعة يقاوم ذلك، وحينتني تتم المعارضة بين الرقع والوقف، فيكون الحكم للرفع) (٢)

اسرائیل د هغوری په مقابله کښی اثبت دې البته د هغه په مقابله کښې يو ډله ده په دې وجه دا ډله د هغه مقابله کولې شي، په داسې صورت کښې به د رفع او وقف معارضه وي او

رفع ته به ترجيح وركولي شي.

وَزَادَنَا عُرُوقَالَ أَخُبَرَنَا عُبُدُ الرَّحْمَنِ بُنُ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ دِينَا دِعَنُ أَبِيهِ عَنُ أَبِيهِ عَنُ أَبِيهِ عَنُ أَلِيهِ عَنُ أَلِيهِ عَنُ أَلِيهِ عَنُ الدِّينَارِ وَعَبُدُ الدِّرَفَعِ وَعَبُدُ الدِّينَارِ وَعَبُدُ الدِّرَفَعِ وَعَبُدُ الدِّينَارِ وَعَبُدُ الدِّرَفَعِ وَعَبُدُ الْمَدِيمَةِ إِنْ أَعْطَى رَضِى وَإِنْ لَمُ يُعْظَ سَخِطَ تَعِسَ وَانْتَكَسَ وَإِذَا شِيكَ فَلَا انْتَقَثَى طُوبَى الْخَبُدِ آخِذِ بِعِنَانِ فَرَسِهِ فِى سَبِيلِ اللَّهِ أَشْعَتَ رَأْسُهُ مُغْبَرَّةِ قَدَمَاهُ إِنْ كَانَ فِى الْجِرَاسَةِ وَإِنْ كَانَ فِى السَّاقَةِ كَانَ فِى السَّاقَةِ إِنْ اسْتَأَذَنَ لَمُ يُؤَذَن لَهُ وَالْمَدِينَ وَلِيلَ اللّهُ طُوبَى وَلَي السَّاقَةِ عَلَى مِنْ كُلِ شَيْعَ وَالْمَا يُولِي اللّهُ اللّهُ طُوبَى فَعْلَى مِنْ كُلِ شَيْعَ طَيْبٍ وَهِى يَاءُ حُولَتُ وَالْمَا وَعَمَد اللّهُ عَلَى مِنْ كُلِ شَيْعَ عَلَيْبٍ وَهِى يَاءُ حُولَتُ اللّهُ عُلُوبَى فَعْلَى مِنْ كُلِ شَيْعَ طَيْبٍ وَهِى يَاءُ حُولَتُ وَلَا اللّهُ عَلَى مِنْ كُلِ شَيْعَ عَلَيْبٍ وَهِى يَاءُ حُولَتُ وَقَالَ فَتَعْسَاكَ أَنَهُ يَقُولُ فَأَتْعَسَهُ مُ اللّهُ طُوبَى فَعْلَى مِنْ كُلِ شَيْعَ الْمَا وَمِى يَاءُ حُولَتُ اللّهُ عَلَى مِنْ كُلُ اللّهُ عَلْمَ مِنْ كُلُولُ شَيْعَالًا لَهُ عَلَى مِنْ كُلُ اللّهُ عَلَى مِنْ كُلُ اللّهُ عَلَى مِنْ كُلُ اللّهُ مُوبَى يَاءُ حُولَتُ إِلَى الْوَاوِوهِي مِنْ يَطِيبُ وَهِى يَاءُ حُولَتُ اللّهُ عَلَى مِنْ كُلُ وَالْتَكُ مَا يُعْلِيبُ وَهِى يَاءُ حُولَتُ الْوَاوِوهِي مِنْ يَطِيبُ وَهِى يَاءُ حُولَى اللّهُ الْوَاوِوهِي مِنْ يَطِيبُ وَهُمَا يَا عُمْ اللّهُ الْمَالَ الْمَالِمُ الْوَاوِوهِي مِنْ يَطِيبُ وهِمَ يَاءُ حُولَ السَّاقِةُ إِلَى الْمَالِقُولُ فَالْعُنْ الللّهُ الْمَالِ الْمَالِمُ الْمَالِقُولُ فَالْعَلَى مَنْ اللّهُ الْمَالِ الْمَالِ الْمَالِقُولُ الْمَالِمُ الْمَالِ الْمَالِ الْمُعْلِى مَنْ عَلْمَ الللّهُ عَلْمُ الللّهُ الْمَالِقُولُ الْمَالِمُ الْمَالِ الْمَالِمُ الْمَالِمُ الْمَالِمُ الْمَالِمُ الْمَالِمُ الْمَالِمُ الْمَلْمُ الللّهُ الْمَالِمُ الْمَالِمُ الْمَالِمُ الْمَالِمُ الْمَلْمُ اللّهُ الْمَالِمُ الْمَالِمُ اللّهُ الْمَالِمُ الْمُعْلَى الْمَالِمُ الْمُعْمَالِ الْمَالِمُ الْمَالِمُ الْمَال

تراجم رجال

۱- عمرو: داعمرو بن مرزوق بصری مخاطه دی (۳)

- عبى الرحمر بر عبى الله بر دينار: دا عبدالرحمن بن عبدالله بن دينار العدوى المزنى بين دي دينار العدوى الموزني بيناء دي. (۴)

۱) (فتح الباری (ج۱۱ص ۲۵۶)-

۲) (حواله بالا-

٣) (ددوى دحالاتو د باره او كورئ كتاب الفسل باب إذغالتقى الختانان-

^{) (} الله الكلب في إناء أوكوري كتاب الوضوء باب إذا شرب الكلب في إناء أحدكم...-

م- أبيه: ابيه نه مراد ابوعبدالرحمن عبدالله بن دينار قرشى عدوى مُنْهِ دي. دَ دوى حالات (كتاب الإيمان باب أمور الإيمان) لاندى تيرشوى دى. (١)

م-ابوصالح: مخكيني سنداو مورئي (٢)

٥- ابوهريره المايين: مخكيني سنداو مورتي (٣)

قوله: عن النبي صلى الله عليه وسلم قال: تعس عبدالدينار وعبدالدرهم وعبدالخبيصة:

دی خیزونود غلامئی مطلب: په حدیث شریف کښی راغلی دی چه د دینار، درهم او خمیصه غلام هلاك شونود دې مطلب دا شو چه سرې د دې څیزونو حاصلولو او طلب د پاره هروخت په كوشش كښې وي، الله تعالى اود هغه احكامات هیركړى اود هغه ټول كوشش هم د مال زیاتي كښې تیرشي نو لكه چه هغه د مال، دینار او درهم غلام دې اوهم د دې څیزونو په حاصلولو كښې داسې مصروف دې لكه چه هغه بنده اودا څیزونه د ده رب دې اود دواړو په مینځ کښې د اقااو غلام تعلق دې (۴)

بيا دلته چه دا په حديث کښې د دينار، درهم، ځييمه او تطيفه ذکر راغلې دې نود دې څيزونو تخصيص مراد نه دې بلکه مطلقاً مال مراد دې.

«الخبیصة» هغه څادر ته وائی چه تور وی مربع وی او په دې باندې مختلف قسم کرخې جوړې شوې وی.(۵)

«القطيفة» مخملي څادر ته وائي اود دې جمع قطائف ده. (ع)

قوله: إن أعطى رضى ، وإن لم يعط سخط: كه هغه له وركړيشى نو راضى كيږى او كه ورنه كړيشى نو خفه كيږى. مطلب دا چه د حقيقى خالق د طرف نه داسې سړى ته انعام وركړيشى، هغه ته بنه مال دولت وركړيشى نو راضى او خوشحاله اوسيږى او كه هم د دغه خالق د طرف نه ورته كله ناكله د ده په رزق كښې تنګې پيدا كړيشى نو د خپل خالق نه ناراض كيږى، د داسې سړى متعلق دا وينا كول چه د دينار او درهم غلام دى. بالكل صحيح او درست ده. او په داسې صورت كښې د داسې سړى د پاره د هلاكت دعا كول هم ضرورى دى ځكه چه هغه په خپل اعمالود فانى دنيا حصول موقوف اوساتل اود آخرت د

۱) (کشف الباری (ج۱ص۶۵۸) و (ج۳ص۱۲۵)-

۲) (کشف الباری (ج ۱ ص۶۵۸)-

٣) (حواله بالا (ص٤٥٩)-

٤) (شرح ابن بطال (ج٥ص٨٣)-

⁽ ن (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٧٢)-

۶) (حواله بالا -

همیشه پاتی کیدونکی ژوند دپاره نی د نعمتونو حاصلولو کوشش پریخودو اود هغی د پاره ئى عمل كول پريخودل (١)

که غورسره اوکتی شی نو زمون په زمانه کښې هم د داسې خلقو کمې نشته چه د الله تبارك وتعالى د طرف نه لوغوندې تكليف او مشقت باندې سخت غصه كيږى، تقدير ته خيرې كوى نو د كافرانو نه خو كيله كول بې ځايه دى، زمون د اكثرو مسلمانانو دا حال دې، اوپه دې كښې هم زمون خپل قصور دې،اعمال داسې دى چه په كتلو ورته شرم راځى، اوبيا دَالله تعالى دَ نصرت اودَهغه دَطرف نه دَ رزق دَزياتوالي هم اميدواريو. فإلى الله المشتكى.

«تعسواتكس»:داسى سرى هلاك او برباد شو.

په دې جمله کښې د داسې سړي د پاره خيرې دي چه د مال او دولت غلام جوړشي او هم د هغې شي او خپل خالق او مالك ئي هيركړو نوداسې سړې هلاك او برباد دې.

دُتعس صرفى اومعنوى تحقيق: كلمه "تعس" تعسادتعسانه د فعل ماضى مذكر غائب صبغه

ده، د دې اکثر استعمال باب ((سمع)) نه کیږي او باب ((فتح)) نه هم استعماليږي. (۲) دَ لغت مُختلفُو امامانو دُ دې کلمه مختلفَ معنې بيان کړي دي ليکن دَ دې ټولو مرجع او حاصل يودې په دې وجه مونږ هم دا اختيار کړه او په ترجمه کښې مو د دې ټولومعنو جامع لفظ هلاكت واخستو (٣)

د انتکس صرفی اولغوی تحقیق او "انتکس" باب "انعال" نه فعل ماضی مذکرغائب صیغه ده د دې مجرد نکس دې او د نکس معنی په قول د رستمي "سرد لاندې راغورزيدل مراد دلته هم هلاکت دی.(۴)

«واذاشیك فلاانتقش»: او چه په هغه كښې چرته ازغې ننوتلو هغه راونه وتلو. بیا دلته نبي اكرم تاکيم د تاكید په توګه د هغه سړي دپاره دا جمله هم د خپرو په توګه ارشاد

اوکله انتقاش د استعارې په توګه د توبې د پاره هم استعماليږي، په دې صورت کښې به د مذکوره جملې مطلب دا وي چه داسې سړي ته دې د توبې توفيق نه وي. (۶)

۱) (شرح ابن بطال (ج۵ص۸۳) وعمدة القاری(ج ٤ ص۱۷۲)-

۲) (فتح الباری (ج۶ص۸۲)-

٣) (فقال العلامة آبن بطال رحمة الله عليه: التعس: ألاينتعش، ولايفيق من عثر ته....هذا قول الخليل وقال ابن الأنباري: التعس: الشر، هذاقول المبرد، وقال غيره: التعس: البعد، وقال الرسمتي: التعس أن يخر على وجهه، قال: راتعس ايضًا: الهلاك. شرح ابن بطال (ج٥ص٨٣)-

٤) (قال الرستمى: النكس: ان يخرعلى رأسة شرح ابن بطال (ج٥ص٨٣)_

٥) (حواله بالا واعلام الحديث للخطابي (ج٢ص١٣٨٨) وتاج العروس (٤ ص٣٥٩) مادة نقش-

ع) (مصباح اللغات (٩٠٢)مادة نقش-

توله: طویی لعبد آخذ بعنان فرسه فی سبیل الله أشعث رأسه مغبرةً قدماه: د داسی سری دپاره دی زیری او خوشخبری وی چه د الله تعالی په لارکښی د خپل اس واګه ئی نیولی وی د هغه د سر ویښته بېر اود هغه قدمونه په خاورو ککړ وی. په دې جمله کښی نبی اکرم تایم د جهاد او داسی اعمالوچه په دنیا او آخرت کښی فائده ورکړی ترغیب ورکړیدی. (۱)

د اشعث راسه اعراب (اشعث) مجرور بالفتحه دې ځکه چه دا غیرمنصرف دې او دا لفظ چونکه د عبدصفت دې په دې وجه مجرور دې. (۲)

علامه طیبی مید (اشعث) ته منصوب بنابرحال وئیلی دی. (۳)

او ((رأسه)) د اشعث د فاعل كيدو په وجه مرفوع دي. (۴)

خود ابودر په نسخه کښې ((أشعث)) مرفوع راغلې دې نو علامه کرمانی کیکی او بعض نورو د دې توجیه داسې کړې چه (راشعث)) چونکه د ((راسه)) صفت دې نو په دې وجه مرفوع دې او تقدیر د عبارت داسې دې. ((راسه اشعث)) (۵)

خو علامه عینی گزاش د علامه کرمانی گزاش او بعضو په دې توجیه باندې رد کړیدې، او فرمائی چه کرمانی او بعضو څه وئیلی دی هغه د نحاة په نزد صحیح نه دی او ((رأس)) د اشعث فاعل دی او هغه صفت څنګه واقع کیدیشی حالانکه موصوف په خپل صفت باندې متقدم نه وی او بعضو چه د عبارت کوم تقدیر بیان کړیدې د هغې نه خو دا لازم راځی چه (راشعث)) نه پس چه کوم((رأسه)) دې هغه ملغی او ګرځولې شی، (۶)

او د ر (مغبرة قدماه)) په اعراب کښې هم هغه تفصيل دې کوم چه (راشعث راسه)) کښې دې (۷) قوله: إن کان في الحراسة کان في الحراسة، وإن کان في الساقة کان في الساقة: که هغه په څوکې او پهره ورکولوکښې وی نو هم په پهره ورکولوکښې دې وی او که هغه د لښکر په آخری حصه کښې وی نو هم د لښکر په آخری حصه کښې دې وی. دا ځايونه د داسې مواضعو نه دی چه چرته شرط او جزاء متحد دی ليکن معنی د هريو د بل نه مختلف ده او تقدير عبارت داسې دې:

۱) (فتح الباري (ج۶ص۸۳) وشرح ابن بطال (ج۵ص۸۳)-

۲) (شرح القسطلانی (ج۵ص۷۸)-

٣) (حواله بالا وشرح الطيبي (ج٥ص٢٨٨)-

٤) (ارشاد السارى (ج۵ص۸۷)-

۵) (فتع البارى (ج۶ص۸۳)وشرح الكرماني (ج۱۲ص۱۵۹)-

۶) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٧٢)-

۷) (فتع الباری (ج۶ص۸۳)-

إن كان المهمر في الحراسة كان فيها، وإن كان المهمر في الساقة كان

فیها: (۱) یعنی که د کښکر څوکې او پهره ورکولو د وخت تقاضا او مهم وی نو هم په هغې کښې وی او که مهم او ضروری د لښکر په آخری حصه کښې موجودګی وی نو هم هلته وی او علامه عینی فرمانی چه مطلب دا دې چه هغه سړی ته د کوم کار حکم ورکولې شی هغه پوره کوی او چه کوم ځای دې هم او درولو د خپل ځای نه نه خوزیږی کلك ولاړ وی که هغه ته د مقدمه الجیش حفاظت ورکړیشی نو هم هلته به وی او که د لښکر د روستوننی حصې د خیال ساتلو ورته اوونیلې شی نو د هغې نه هم انکار نه کوی (۲)

دلته اوس اوونیلی شو چه دلته د جزاء تعظیم او فخامت باندی دلالت دی او مطلب دا دی چه که هغه په ساتنه او پهره کښی وی نو هغه په یو عظیم کارکښی مشغول دی او مراد د دی نه د دی لازم دی یعنی داسی سړی له پکار دی چه د حراست او ساتنی لوازم پوره کړی او د خپل کار اوفرض پوره کولوکښی په پوره چالاکنی سره مشغول وی. (۱)

او علامه ابن جوزی رئیلی فرمائی چه مطلب دا دی چه هغه د مشهورتیانه بچ کیږی.د رفعت او اوچتوالی غوښتونکې نه وی، خپل کار سره کار لری، نولکه چه د نبی اکرم نوین مقصد دا دی که هغه په څوکنی کښی وی نو په هغی کښی مشغول اوسی او که د لښکر په روستونئ حصه کښی هغه اولګولی شی نو هم هلته وی یعنی په هر حال کښې خوشحاله وی او چه کومه ذمه واری هم هغه ته حواله کړیشی هغه پوره کوی. (۴)

دَ مقدمة الجيش او موخرالجيش دَ تخصيصْ بالذكر وجه: په حديث كښې دَ شارحينو مطابق حراست نه مراد مقدمة الجيش يعنى دَ لښكر دَ وړاندينئى حصى څوكئى ده. او دَ ساقه نه مراد دَ لښكر آخرى حصه ده. (۵)

نودلته صرف د لښکر په دوو حصو باندې اکتفاء شویده او دا دواړه ئی په خاص توګه ذکر کړې نود دې تخصیص وجه علامه طیبی ﷺ او علامه عینی ﷺ وغیره دا ذکر فرمائیلی دی چه د دې دواړو حصو په ساتنه کښې مشقت او تکلیف ډیر دې، اول خو هغه وخت وی چه کله مسلمان د میدان جنګ نه اوځی نو ښکاره خبره ده چه هم په دې وختونوکښې لښکر ته ډیره خطره وې. (۶)

قوله: إن استأذن لم يؤذن له، وإن شفع لم يشفع له: كه هغه اجازت غوارى (دَ چا دَ ملاقات وغيره دَ چاره) نوچه هغه ته اجازت هم ملاؤنشى او كه هغه دَ چا سفارش او كړى نو دَ هغه سفارش هم قبول نه كړې شى _

١) (حواله بالا-

۲) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٧٢)-

٣) (فتح البارى (ج٤ص٨٣) وعمدة القارى (٤١ص١٧١) وشرح الطيبي (ج٩ص٢٨٨)-

٤) (فتح البارى (ج۶ص۸۳)-

٥) (شرح الكرماني (ج١٢ص١٥٥)-

ع) (عمدة القارى (٤ أص ١٧٢) وشرح الطيبي (ج٩ص ٢٨٨)-

قوله: وقال: تعسا، كأنه يقول: فأتعسهم الله: اوامام بخارى بيلي ونبلي جديد اقرآن

مجید کښی، تعسا، ((فاتعسهمالله)) الله تعالی دی هغوی هلاك كړی په معنی كښی دی د امام بخاری بُیلی دا پورته ذكرشوی قول صرف د مستملی په نسخه كښی موندنی شی ۲۰ اود امام بخاری بُیلی دا معروف عادت دی چه په حدیث كښی یو لفظ راغلی وی او هغه لفظ په قرآن كريم كښې هم استعمال شوی وی نو د هغی تفسير او توضيح كوی (۳) هم د دې عادت مطابق دلته هم امام بخاری بُیلی د قرآن مجید د آیت مبارك (والدی کُولی كُوله فَه فَه الله دې عادت مطابق دلته هم امام بخاری بُیلی د قرآن مجید د آیت مبارك (والدی کُوله فَه فَه فَه الله دې هغوی هلاك كړی همدغه تفسير فرمانی چه دا ((فاتعسهمانه)) معنی كښې دې يعنی الله دې هغوی هلاك كړی همدغه تفسير نورو مفسرينو حضراتو نه هم نقل شويدې (۵)

قوله: طویی فعلی من کل شئ، طیب،وهی یاءحولت إلی الواو،وهی من یطیب: طویی د فعلی په وزن دې،د هرښه څیز دیارد،واو په اصل کښې یا، ود. بیایا، په واوسره بدل کړو او دا د یطیب نه مشتق دې.

د لفظ طوبی صرفی اولغوی تحقیق: دلته امام بخاری ایکی د طوبی صرفی او لغوی تحقیق فرمائیلی دی چه دا د فعلی په وزن ده او د یطیب نه مشتق ده، په دې صورت کښې طیبی کیدل پکار وو خود دې وجه امام صاحب دا خودلی ده چه یا، په واو سره بدله کړیشوه څکه چه دیا، مضموم دی چه داومتقاضی ده، د دی د پاره یا، په واو سره بدله کړې شوه (۶) د طوبی یوه معنی خو د جنت ده او دا هم وئیلی شوی دی چه دا د جنت د یوې ونې نوم دې (من کل شی طیب) راوړلې ارشاد نی

۱) (عمدة القارى (۱۶ ص۱۷۲)-

 $^{^{+}}$) (حواله بالا وفتح البارى (ج 2 $^{-}$

٣) حواله بالا-

٤) (محمد:۸- ج

۵) (عمدة القاري (١٤ ص١٧٧) وفتح الباري (ج٤ص ٨٢)-

۶) (ارشاد الساری(ج۵ص۸۷)-

۲) (فتح الباری (ج۶ص۸۳)-

کشف الباری در افظ عام معنی مراد واخستلی شی نو دیره به بهتر وی. دغه شان که جنت وی یا د هغی د یوی ونی نوم یا نور هم څه ښه څیز وی د دې په عموم کښی به داخل شی. دلته هم امام بخارى مُنظَة دَ خيل عادت موافق د قرآن كريم آيت مبارك (الَّذِيْنَ امَّنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحْتِ طُولَى لَهُمْ وَحُسَّ مَابِ ٥) (١) كنبي وارد لفظ ((طون)) تفسير أو توضيح كريدي (٢) د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت د حدیث ترجمه الباب سره مناسبت به دی جمله کنی دې ((طرب لعبد آخذ بعنان فرسه فی سبیل الله)) او (ران کان فی الحماسة کان فی الحماسة)) په دې دواړو جملو کښې د الله تعالى د لارې ساتنه او پاسبانئى باندې خوشخبرى ورکریشویده (۳) د حراست في سبیل الله فضیلت باره کښې نور څواحادیث د الله تعالى په لارکښې حفاظت او پاسبانی کولو فضیلت په نورو احادیثوکښې هم وارد شویدې کوم چه د امام بخاري میکیم په په شرطونو خو نه دی البته صحیح ضرور دی، کوم نه چه یو څومون په ذیل کښې نقل کوو: ① د حضرت عثمان والمن مرفوع روايت دى (رحمس ليلة فى سبيل الله تعالى أفضل من ألف ليلة، يقامليلها ويصام نهارها) رج الله تعالى په لاركښى يوه شپه خوكئى كول د زرو شپوورځونه بهتراوغوره دی، په کومو شپوکښې نفلونه اداکړيشي اود هغې په ورځوکښې روژې اوساتلى شى.

· حضرت ابوریحانه المن نه مرفوعاً مروی دی ((حرمت النار علی عین سهرت فی سبیل الله))(۵) يعنى د دوزخ أور په هغه سترګه حرام دې چه د الله تعالى په لاركښې رونړه شوې وي.

© د حضرت ابن عباس والمريخ مرفوع حديث دي: ((عينان لاتبسهما النار:عين بكت من خشية الله، وعین باتت تحمس فی سبیل الله)) (ع) یعنی د دوزخ اُور به دوو سترګوسره نه لګی، یوه هغه سترګه چه د الله تعالى د ويرې ژړيدلې وى او دوئمه هغه سترګه كومې چه د الله تعالى په لار كښې د حفاظت او پاسبانئي فريضه پوره كولوسره شپه رونړه كړې وى.

 حضرت ابن عمر الليخ نه مرفوع روايت دې چه نبی کريم کالیم ارشاد اوفرمائيلو ((الااتيتکم بليلة أنضل من ليلة القدر حارس حرس في أرض خوف لعله أن لايرج ع إلى اهله)) (٧)

١) (الرعد:٢٩ ـ

۲) (فتح الباری (ج۶ص۸۳)-

٣) (حواله بالا وعمدة القارى (ج ١٤ اص ١٧١)-

٤) (مسندالإمام احمد (ج١ص آعو ٤٥) الترغيب للمنذري (ج٢ص ٢٥٠) -

۵ () (مسند الإمام احمد (ج٤ ص ١٣٤) والمستدرك (ج٢ ص ٨٦) وقال الذهبي في تلخيصه للمستدرك:

عملي (الجامع للترمذي، أبواب فضائل الجهاد، باب ماجاء في فضل الحرس في سبيل الله رقم (١٤٣٩)-٧) (المستدرك للحاكم (ج٢ص٨٠) كتاب الجهاد باب من رابط يوما وليلة، وكنزالعمال (ج٣ص٣٢٣) ومن أراد الاسترادة فليراجع الترغيب والترهيب للمنذري (ج٢ص٢٤) كتاب الجهاد باب الترغيب في العراسة في سبيل الله تعالى-

آبا زه تاسو ته د داسی شپی باره کښی اونه ښائم چه د لیله القدر نه هم غوره وی، هغه د هغه څوکئی کونکی (شپه ده) څوك چه په خطرناکه زمکه باندې د سرحدونود حفاظت فریضه پوره کوی، کیدیشی چه هغه خپل بال بچ طرف ته واپس رانشی.

- بَأْب: فَضْلِ الْخِدُمَةِ فِي الْغَزُو

ذَ ترجمة الباب مقصد امام بخارى مُوَّالَيْ دَى باب به ذَيلَ كُنبى دَ عَازى دَ خدمت فضيلت بيانول غوارى. كه دا دَ خدمت كار دَ وروكى دَ لوئ دَباره وى يا دَ لوئ دَ طرف نه دَ وروكى دَباره بوره كرى وى يا دوه دَ يوعمر او يو مرتبى كسان دَ يو بل دَ باره كوي (١) دَباره بوره كرى وى يا دوه دَ يوعمر او يو مرتبى كسان دَ يو بل دَ باره كوي (١) اود دى باب لاندې امام بخارى مُوَّاتُهُ درې احاديث ذكر كرى دى چه ټول د حضرت انس المائي نه مروى دى. په رومبنى حديث شريف كنبى دَ لوئ دَ وروكى دَباره خدمت كولو ذكر دى په دونم حديث كنبى دَ دې برعكس دي اوبه دريم حديث كنبى دَ يوشان كسانو دَ خدمت ذكر دى بله دې لكه څنګه چه به مونږ وړاندې د احاديثو په تشريح كنبى انشاء الله بيانوو (٢) دى لكه څنګه چه به مونږ وړاندې د احاديثو په تشريح كنبى انشاء الله بيانوو (٢) انس بُن عَبُيلاعَن قَابِتِ الْبُنَانِي عَنْ أَنِس بُن عَبُيلاعَن قَابِتِ الْبُنَانِي وَهُوَ أَنِس بُن مَالِكِ (٣) رَضِيَ اللّهُ عَنْهُ قَالَ صَحِبُتُ جَرِيرَ بُنَ عَبُيلاقِ اللّهُ عَنْهُ مَالَكُونَ اللّهُ عَنْهُ وَالَى صَحِبُتُ جَرِيرَ بُنَ عَبُيلاقِ اللّهُ عَنْهُ مَالَكُونَ اللّهُ عَنْهُ وَاللّهُ عَنْهُ وَاللّهُ عَنْهُ وَاللّهُ عَنْهُ وَلَى شَيْعًا لَالّهُ عِدْهُ اللّهُ عَنْهُ قَالَ صَحِبُتُ جَرِيرَ بُنَ عَبُيلاقِ اللّهُ عَنْهُ مَالَكُونَ اللّهُ عَنْهُ وَاللّهُ عَنْهُ وَاللّهُ وَاللّهُ عَنْهُ وَاللّهُ عَنْهُ وَلَاللّهُ عَنْهُ وَلَى شَيْعًا لَالّهُ عَنْهُ اللّهُ عَنْهُ وَلَى شَيْعًا لَاللّهُ عَنْهُ اللّهُ عَنْهُ وَاللّهُ وَلَاللّهُ عَنْهُ وَلَى شَيْعًا لَاللّهُ عَنْهُ وَاللّهُ عَنْهُ وَلَى شَيْعًا لَاللّهُ عَنْهُ اللّهُ عَنْهُ اللّهُ عَنْهُ وَلَى اللّهُ عَنْهُ وَلَى اللّهُ عَنْهُ وَلَى اللّهُ عَنْهُ اللّهُ عَنْهُ اللّهُ عَنْهُ وَ اللّهُ وَلَاللّهُ عَنْهُ وَاللّهُ عَنْهُ وَلَاللّهُ عَنْهُ اللّهُ عَنْهُ وَلَاللّهُ وَلَى اللّهُ عَنْهُ وَلَاللّهُ عَنْهُ وَلَاللّهُ عَنْهُ وَلَى اللّهُ عَنْهُ وَ اللّهُ عَنْهُ وَلَى اللّهُ عَنْهُ اللّهُ عَنْهُ وَ اللّهُ عَنْهُ وَلَى اللّهُ عَنْهُ وَ اللّهُ عَنْهُ وَ اللّهُ عَنْهُ وَ اللّهُ عَلْمَ اللّهُ عَنْهُ وَ اللّهُ عَنْهُ وَ اللّهُ عَنْهُ وَ اللّهُ عَلْهُ اللّهُ عَلْهُ وَاللّهُ وَاللّهُ عَلْهُ اللّهُ عَلْهُ وَاللّهُ وَلَاللّهُ عَلْهُ اللّهُ عَلْهُ وَاللّهُ عَلْه

تراجم رجال

ا- هجمل برع عرعرة: دا ابوعبدالله محمد بن عرعره مُوالله دي. دَ دوى حالات ((كتاب الإيبان بابخوف البؤمن من أن يعبط عمله وهولايشعن) لاندې تيرشويدې. (۴)

r-شعبه: دا اميرالمؤمنين في الحديث شعبه بن الحجاج عتكى بصرى وَاللهُ دي، دُ دوى مختصر تذكره ((كتاب الإيمان باب المسلم من سلم المسلمون....) لاندې تيره شويده. (۵)

<u>r-يونس برب عبيب:</u> داابوعبيده يونس بن عبيدبن ديناربصري ويُنهَ دې د َ دوى مختصر تذكره ((كتاب الإيبان باب (وإن طاتفتان من البؤمنين اقتتلوا...) لاندې تيره شويده .(۶) ٣- ثابت البنان : دا مشهور تابعى بزرك ابومحمد ثابت بن بنانى ويُنهَ دې

 $^{^{1}}$) (عمدة القاری (ج 2 ا 3 ا 3 الباری (ج 3 اس 3

٢) (حواله بالا-

٣) (قوله: عن انس رضى الله عنه: الحديث أخرجه مسلم، كتاب فضائل الصحابة باب حسن صحبة الأنصار
 رضى الله عنهم رقم (٢٤ ٢٨)-

٤) (کشف الباری (ج۲ص۵۵۷)-

۵) (کشف الباری (ج ۱ ص ۶۷۸)-

۶) (کشف الباری (ج۲س۲۲)-

د دوى تفصيلي حالات ((كتاب العلم باب القراة والعرض على البحدث)) لاندى تيرشوى. (١)

٥- انس بر مالك المشهور صحابى خادم رسول حضرت انس بن مالك المالي دي. دَ دوى تذكره ((كتاب الإيبان باب من الإيبان أن يحب المعيد،) لاندى تيره شويده (٢)

قوله: قَال: صحبت جريربر عبدالله، فكان يخدمني، وهواكبر من أنس: حضرت انس بن مالك الله في فرمائي چه زه د جريربن عبدالله الله الله سره ووم نو هغه به زما خدمت كولو حالانكه هغه د حضرت انس الله نه مشروو

دا دُ سفرواقعه ده همدغه روایت به صحیح مسلم کښې هم دې، هلته د سفر تصریح موجود ده. (رخهجت مع جریرین عهدالله فی سفر ۱۰۰۰)(۳)

او د حدیث په جمله ((وهواکبرمنائس))کښې دوه احتمالات دی:

آدا هم د حضرت انس المن و المنظمة و المناه و المناه و التفات و التفات و التفات و التفات المناه و التفات المنكلم الى الغيبة المنطقة و الم

﴿ مسلم شریف (۵) روایت ((محمد بن البثنی عن ابن عمامی)) په طریق کښې دا الفاظ راغلی دی (روکان جریراکبرمن ایس)) نوکیدیشی چه دا الفاظ د ٔ ثابت بنانی وی نو په دې صورت کښی دا جمله معترضه به وی (۶)

قوله: قال: جرير: إنى رأيت الأنصار يصنعون شيئالا أجد أحداً منهم إلا أكرمته: حضرت جرير التي في ما انصار به يوداسي كاركولو اوليدل چه كله به هم هغوى ماسره ملاويږي زه د هغوى تعظيم او اكرام كوم.

د مسلم شریف به روایت کنبی (الدرایت الانصار تصنع برسول الله صلی الله علیه و سلم شیئا)) (۷) دی، نواوس به مطلب دا وی چه ما انصار د رسول الله تاثیل به خدمت او تعظیم کولوسره اولیدل، د دی دَپاره چه زه کله چا انصاری صحابی سره ملاویږم نو د هغه اکرام کوم لکه چه دا حضرت جریر الاثر د حضرت انس الاثر کوم خدمت کړی وود هغی علت ئی بیان کړه چه دی انصارو حضراتو به د نبی کریم تاثیل خدمت کولو اود هغوی به ئی ترحده پوری

۱) (کشف الباری (ج۳ص۱۸۳)-

٢) (كشف البارى (ج٢ص٤)-

٣) (الصحيح لمسلم كتاب فضائل الصحابة باب حسن صحبة الأنصار رقم (٢٤ ٢٨)-

٤) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ١٧٣) وفتح البارى (ج ٢ ص ٨٤)-

٥) (صحيح مسلم كتاب فضائل الصحابة باب حسن صحبة الأنصار رقم (٢٨ ٤٤)-

ع) (فتح الباري (ج عص ٨٤) وإرشاد الساري (ج ٥ص ٨٧)-

٧) (صحيح مسلم كتاب فضائل الصحابة باب حسن صحبة الأنصار رقم (٢٤ ٢٨)-

تعظیم کولو نو مونږ له د دې انصارو خدمت او تعظیم کول پکار دی. (۱)

اوحضرت جرير کانو چه ،،شيا،،مبهم ساتلې دې د دې نه مقصود مبالغه ده (۲)

و مديث د ترجمة الباب سره مطابقت حافظ ابن حجر المام بخارى المام بخارى المام بخارى المام بخارى المام باندى اعتراض كولوسره فرمائي چه د باب دا حديث دهغه احاديثونه دي كوم چه مصنف د هغي په غیرمناسبه موقع ذکر کری دی. پکار خودا ووچه هغه دا حدیث په منافبو کښی ذکر کړی دی نه چه دا حدیث نی په جهاد کښی د دې عکس اوکړو چه دا حدیث نی په جهاد کښی

علامه عینی مین د دې اعتراض جواب ورکولوسره فرمائي چه دا حدیث بعینه هم په دې

سند سره امام مسلم مرايد هم ذكر كريدي او په دې كښې ((فىسفى)) اضافه هم مروي ده. (۴) نو اوس معلومه شوه چه دا واقعه د خدمت او اكرام سفر دې او سفرعام دې كه د غزوي وى او كه د غيرغزوي، نو داشان به حديث په خپل باب كښې واقع وى او مطابقت به هم حاصل

[rzrr] حَدَّثَنَا عَبُدُ الْعَزِيزِ بُنُ عَبُدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا هُحَمَّدُ بُنُ جَعْفَرٍ عَنْ عَمْرِو بُنِ أَبِي عَمْرٍو مَوْلَى الْمُظَلِبِ بْنِ حَنْطِبِ أَنَّهُ سَمِّعَ أَنْسَ بْنِ مَالِكِ رَضِى اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ خِرَجْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى مَا وَاللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ خِرْجَتُ مَعْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى خَيْبَرَأُ خُدُمُهُ فَلَمَّا قَدِمَ النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَاحِعًا وَبَدَالَهُ أُحُدُ قَالَ هَذَاجَبُكُ يُعِبُنَا وَنُحِبُهُ ثُمَّ أَشَارَبِيَدِهِ إِلَى الْمَدِينَةَ قَالَ اللَّهُمَّ إِنِّي أُحَرِّمُمَا بَيْنَ لَابَتَيْهَا كَتَعْرِيمِ إِبْرَاهِيمَ مَكَّةَ اللَّهُمَّ بَارِكَ لَنَا فِي صَاعِنَا وَمُدِّنَا [٣١٨٧، ٣٨٥٥، ٣٨٥٦، ٥١٠٥، ٢٠٠٢، ۲۹۰۲، وانظر:۳۶۴، ۲۰۲۳]

تراجم رجال

-عبدالعزيزبر عبدالله: داابوالقاسم عبدالعزيز بن عبدالله القرشي الاويسي يُعَامَّة دي (ع) r- همه ابر جعفر: دا محمد بن جعفر بن ابی کثیرانصاری مدنی روز دی. (۷) - عمرویر ابی عمرو: دا عمروبن میسره ابی عمرو روانه دی. (۸)

۱) (فتح الباری (ج۶ص ۸٤) وعمدة القاری (ج۶ اص۱۷۳)-

۲) فتح الباري (۶/ ۸٤) وعمدة القاري (۱۷۳/۱٤)

۳) (فتح الباري (ج۶ص ۸٤)-

أ (مسلم شريف كتاب فضائل الصحابة باب حسن صحبة الأنصار رقم (٢٤٢٨)-

۵) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ١٧٣)-

۶) (دَ دوى دَ حالاتو دَ پاره اوګوري کتاب العلم باب احرص على الحديث-

٧) (دَ دوى دَ حالاتو دَ پاره اوګورئ کتاب الحيض باب ترک الحائض الصوم-

۸) (د دوی د حالاتو د پاره او گورئ کتاب العلم باب الحرص على الحديث -

م-انس بر مالك: مخكيني سند او مورني (١)

دهدیت ترجمه د عمرو بن ابی عمرو بیشتونه مروی دی چه هغه د حضرت انس ناتوانه داسی هدیت ترجمه د عروه بن ابی عمرو بیشتونه مروی دی چه هغه د حضرت انس ناتوانه داسی اوریدلی چه زه د غزوه خیبریه موقع حضور اکرم ناتا اسره لاړم، ما به د هغوی ناتا خدمت کولو. بیا چه کله نبی اکرم ناتا واپس شو اود احد غرښکاره شو نو هغوی ناتا اوفرمائیل دا هغه غر دی کوم سره چه مونږ محبت کوو او هغه مونږ سره محبت کوی

په مُدكښې بركت اوفرمائي. د باب دا حديث په ماقبل كښې څو ځل تيرشوې دې او په كتاب المغازى كښې هم د دې څه تشريح راغلى ده په دې وجه مونږ دلته صرف د حديث په ترجمه باندې اكتفا اوكړه. (٢) د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت: د حديث ترجمه الباب سره مناسبت په دې جمله كښې

دى: ((خرجت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم ألى خيبرا خدمه)) (٣)

اود ترجمه الباب دَمقصد لاندې مونږ دا بیان کړی دی چه امام بخاری مینید د باب په ذیل کښی درې حدیثونه ذکر کړی دی او په دې کښی په دونم کښی د وروکی د لوئ خدمت کول مذکور دی نو اوګورنی دلته حضرت انس الله بحیثیت خادم نبی گریم تالیخ سره سفرکښی دی او حضرت انس الله صغیر (وړوکی) دی او نبی کریم تالیخ کبیر (لوئ) دی.

تراجم رجال

ا-سلیمان بر داود: دا ابوالربیع سلیمان بن داود عتکی زهرانی بصری مید دی، د دوی حالات (رکتاب الإیمان، بابعلامة المنافق) لاندی تیرشوی دی. (۵)

- اسماعيل بر . زكريا: دا ابوزياداسماعيل بن زكريا الخلقاني الكوفي ميد دي (ع)

۱) (کشف الباری (ج۲ص ٤)-

٢) (كشف الباري كتاب المغازي (ص٢٥٢. ٣١٩)-

٣) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٧٣) -

أ (قوله: عن آنس رضى الله عنه:الحديث أخرجه مسلم، كتاب الصيام باب أجر المغطر في السفر إذا تولى العمل رقم ٢٢٨٥) والنسائى كتاب الصيام باب فضل الإفطار في السفر على الصوم رقم (٢٢٨٥) ٥) (كشف الباري (ج٢ص ٢٧٠)-

ع) (د دوى د حالاتو د پاره او گورئ كتاب البيوع باب مذكر في الأسواق_

م-عاصم: دا عاصم بن سليمان الاحول ميليد دي. (١)

م-مورق العجلى: دا مورق بن شمرخ عجلي ميانة دي. (٢)

»-ان<u>س:</u> سابقه سند او مورئی. (۳)

نوله: قال: كنامع النبي صلى الله عليه وسلم: حضرت انس النبي فرماني چه مونږ د نبي اكرم ناتي سره وو.

دَ مسلم شریف دَ روایت نه معلومیږی چه دا دَ یو سفرواقعه ده، په دې کښې دی (کنامع النبی صلی الله علیه وسلم فی سفی فینا السائم و منا البغطی قال: فنزلنامنز لانی یوم حاد) (۴) یعنی مونو نبی کریم ناهی سره یو سفر کښې وو مونو کښې روژه دار هم وو او بغیر روژې والا هم. فرمائی نو مونو په یومنزل باندې د سختې ګرمئی په ورځ کښې ډیره واچوله.

مطّلُب دا دی چه سخته گرمی وه، په دی وجه د سوری انتظام نه وو. که د چیر نه چیر به کیدیشونو هغه دا وه چه کومو صحابه کرامو سره څادر وغیره وو نو هغوی د دی په ذریعه باندې د سوری انتظام کړی وو پاتی شو هغه حضرات چا سره چه څادر وغیره نه وو نو هغوی د گرمئی نه د بچ کیدلودپاره د لاسونو استعمال اوکړو. د مسلم شریف روایت کښی دی: (رومنامن پتل الشبس بیده)) (۵)

نوله: وأماالذير صاموافلم يصنعوا شيئا: اوچه كوم حضرات روژې سره وو نو هغوى هيڅ هم اونه كړل.

کرمی دیاته وه، معامله هم ډیره اهمه وه یعنی غزوه وه. په دې وجه چه کوم خلق روژې سره وو هغوی برداشت نه کړیشو، کاروغیره نه عاجزشو. (۶)

قوله: وأماالذير. أفطروافبعثوا الركاب، وامتهنوا، وعالجوا: او چه كومو حضراتو روژه نه وه ساتلي نوهغوى خپل اوښان اوبو له بوتلل او ښه خدمت نى اوكړو او نوركارونه نى هم اوكړه. مطلب دا چه روژه دار حضرات د كمزورنى او ستړيوالي په وجه هغوى كار وغيره نه عاجز وو نو په دې وجه ئى اوښانوته اوبه، واښه وغيره څرولو د پاره بې روژې حضراتو بوتلل،

١) (دَ دوَى دَ حالاتو دَ پاره او كورئ كتاب الوضوء باب الماء الذي يغسل به شعر الإنسان-

٢) (دَ دوى دَ حالاتُو دَ پاره او كورى كتاب كتاب التهجد باب صلاة الضحى في السفر -

۳) (کشف الباری (ج۲ص ٤)-

أ) (صحيح مسلم كتاب الصيام باب أجر المفطر في السفر.... رقم (٢۶٢٢)-

⁽²) (حواله بالا –

۶) (فتع الباري (ج۶ص ۸٤)-

هغوی د روژه دارو حضراتو هم ښه خدمت اوکړو او نور ټول کارونه ئی هم اوکړه.

قوله: فقال النبي صلى الله عليه وسلم: ذهب المفطرون اليوم بالأجر: نو نبي كريم او فرمائيل نن خو اجر او ثواب روژه دارو يوړلو

دَ آجُر نَهُ مَرادَ دَیر آجَرَدَی آو دَ نَبَی کُریم ﷺ مذکوره ارشاد مطلب دا نه دی چِه دَ رژوه دارو اجر کم شوی وو بلکه مطلب دا دی چه روژه نه ساتونکو حضراتو ته دَهغوی د اعمالو اجرهم ملاویری او دَ روژه دارو هم ځکه چه هغوی خپل کارونه هم پوره کړل او دَ روژه دارو دَمه واری نی هم پوره کړی (۱)

دَرسول الله تَوَايِّمُ دَمذُكُوره بالا ارشاد سبب: حضرت مولانا ظهورالبارى دَرسول الله تَالَيُمُ پورته ذكرشوي ارشاد سبب بيانولو سره ليكي:

روژه خوخیرمحض دی او مخصوص او مقبول عبادت دی بیا هم په سفر وغیره کښې په داسې موقعوچه د دی په وجه د اهموکارونو بندیدلو خطره وی نو روژه نه ساتل غوره دی کومه واقعه چه په حدیث کښی ده په هغی کښی هم دا صورت پیش شوی ووچه د خلقو روژه وه او هغوی د ستریوالی د وجی څه کارنشو کولی، خو بې روژې خلقو په پوره تیزئی سره ټول کارونه پوره کړل په دې وجه د هغوی ثواب زیات شو.

په اسلام کښی د عبادت نظام د انسان د فطرت مطابق او ډیرپه معقول طریقه باندی قائم دی دی دین په فرائضو او واجباتوکښی مدارج قائم کړی دی اود مدارجو چه څوك پوره لحاظ ساتی د الله تعالى په نزد به د هغه عبادت هم په هغه درجو کښې مقبول وی. په حدیث شریف کښې ځکه وئیلی شوی دی چه روژه نه ساتونکو نن اجر او ثواب یوړلو، حالانکه هغوی یو اهم عبادت پریخودی وولیکن د هغې نه د زیات اهم عبادت په خاطر، نو په دې وجه د ثواب هم زیات حقدار شو. (۲)

مذكوره بالاحدیث نه مستنبط فائدی () امام ابو عبدالله بن ابی صفرة روزی فرمائی چه د دی حدیث نه معلومه شوه چه په غزوه كښی د خدمت اجر د روژی د اجر او ثواب نه زیات وی ځکه روژه نه ساتونکی جهاد، طلب علم نور اعمال صالحه او فاضله مثلاً دكمزوری امداد كول یا مسلمانانو ته چه د كوم څیز ضرورت او حاجت وی د هغې په پوره كولوكښې ډیر قوی او طاقتور وی (۳)

و دا فائده هم راؤ وتله چه په جهاد کښې چرته کوزیدل وی، یا سفرکول وی نو په مجاهدینو باندې واجب دی چه یو بل سره امداد اوکړی (۴)

﴿ دَ حدیث نه دا فائده هم حاصله شوه چه یو شان خلّق د یو بل خدمت کولی شی او دا جائز دی او په دې کښې د هیڅ قسم شرم څه خبره نشته. (۵)

۱) (فتح الباري (ج٤ص ٨٤) وعمدة القاري (ج١٤ ص١٧)-

٢) (تفهيم البخاري (ج٢ص٩۶)-

٣) (شرح ابن بطال (ج٥ص ٨٤)-

٤) (حوآله بالا-

۵) (عمدة القارى (ج ٤ اص ١٧٤)-

کف الباری رو ۱ ع د هدیث د ترجمه الباب سره مطابقت د حدیث ترجمه الباب سره مناسبت د حدیث په دې جمله کښې دې.((فیعثوا الرکاب، وامتهنوا وعالجوا)) ځکه چه دا ټول کارونه د خدمت نه عبارت دی. د رحث الركاب مطلب خودادي چه اوښان ئي اوبوڅكولو له بوتله، او ((امتهنوا)) معني ((عدموا)) او ((عالجوا)) خوراك وغيره پخول او تيارول دي. (١)

١١- بَأَب: فَضُلِ مَنُ حَمَلَ مَتَاعَ صَاحِبِهِ فِي السَّفَر

دَترجمة الباب مقصد دَ دى بَاب په ذيل كښى امام بخارى بُهُ اَلَهُ سَفَركښى دَ خَبِل ملګرى سامان وغيره دَ امداد په توګه دَ اوچتولو فضيلت بيانول غواړى. (٢)

[٢٢٣٣] حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرِحَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَدٍ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْوَةً رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ (٢) عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ كُلُّ سُلَامَى عَلَيْهِ صَدَقَةٌ كُلِّ يَوْمِ يُعِينُ الرَّجُلَ فِي دَانَّتِهِ يُحَامِلُهُ عَلَيْهَا أَوْيَرْفَعُ عَلَيْهَا مَتَاعَهُ صَدَقَةٌ وَالْكَلِمَةُ الطَّيْبَةُ وَكُلَّ خَطُوَةٍ يَمُشِيهَا إِلَى الصَّلَاقِ صَدَقَةٌ وَدَلْ الطَّرِيقِ صَدَقَةٌ [ر:٢٥٧٠]

تراجم رجال

ا- اسمحاق برن نصر: دا اسحاق بن ابراهیم بن نصر بخاری سعدی بیشیم دی. اکثر د خپل نیکه طرف ته منسوب کیدلو سره اسحاق بن نصر به یادیدلو. (۴)

r-عبدالرزاق: دا ابوبکر عبدالرزاق بن همام صنعانی بُرَایِی دی، دَ دوی حالات کتاب الإيان، باب حسن إسلام البرم) لاندى تيرشوى دى. (۵)

<u>-r</u> معمر:دامعمر بن راشد ازدی مختله دی. د دوی مختصر تذکره د ((بدء الوحي)) شپږم حدیث په ذیل کښې تیره شویده. (۶)

٣- همام نه منبه بن كامل يماني رئيس دي. د دوى حالات هم ((كتاب الإيبان باب حسن إسلام المرم)) لاندې تيرشوي دي. (٧)

٥- ابوهريرة كالني: دامشهور صحابي رسول حضرت ابوهريره كاتم دي.

١) (حواله بالا ـ

۲) (عمدةالقاري (ج ٤ ١ص ١٧٤)-

٣) قوله: عن أبي هريرة رضى الله عنه: الحديث قدمر تخريجه في كتاب الصلح باب فضل الإصلاح بين الناس...

أ (دَدوى حالاتو دَپاره اوګورئ کتاب الغسل باب من اغتسل عریانا وحده في الخلوة -

۵) (کشف الباری (ج۲ص۲۶)-

^ع) (کشف الباری (ج۱ص۲۶۵)-

۷) (کشف الباری (ج۲ص۲۶)-

د دوی تفصیلی حالات ((کتاب الإیمان باب امور الإیمان)) لاندې تیرشوی دی. (۱)

وزانه د انسان په يو يو جوړباندې صدقه واجب ده. که يو سړې د چا په سورلئي کښې روزانه د انسان په هغه په سورلئي سور کړی يا د هغه سامان په هغې باندې کيږي نو دا هم امداد کوی چه هغه په سورلئي سور کړی يا د هغه سامان په هغې باندې کيږي نو دا هم صدقه ده. ښه او پاکه کلمه هم صدقه ده. هر قدم چه د مانځه د پاره اوچتولې شي هغه هم صدقه ده او لار خودنه هم صدقه ده.

تنبیه دحدیث باب څه تشریحات ((کتاب الصلح)) (۲) کښې تیرې شوی دی او هم د کتاب

الجهاد (رباب من اعن بالركاب و نحولا) لاندى به نور تشريحات راځى. د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت ترجمه الباب سره د حديث باب مناسبت د حديث په

دې تکود کښې دې (ريعين الرجل ق داېته، يحامله عليها أويرفع عليها متاعه صدقة)) البُّنه دلُّته كُنبُي الشُّكآل دا دِي چَه تِرجمه خو د سفرده اود دې لاندې چه كوم حديث راوړلې

شويدې په هغې کښې خو د سرنه د سفرد کر نشته. نو د دې جواب دا دې چه حديث مطلق دې او دا خبره خو معلومه ده چه کله په حضر کښې او عام حالاتوکښې د چا د سامان اوچتولو دا فضیلت وي نو ښکاره خبره ده چه په حالت سفر کښې د چا سامان اوچتولو فضيلت خو به په طريقه اولي ډير وي. دغه شان په ترجمه او حدیث کښی مطابقت حاصلیری (۳)

٢٥- بَأَب: فَضُلِ رِبَاطِ يَوْمٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ

دَ ترجمة الباب مقصد د اسلامي سلطنت او خلافت په سرحدونوباندې پهره ورکولو او خيال ساتل دا د اهل اسلام د حفاظت يو لويه ښكلي، محفوظ او مضبوطه طريقه ده. امام بخاري المنافق د د د د و فعل فضيلت بيانوي (۴)

د رباط معنى: الرباط-بكس الراء وبالمؤحدة الخفيفة - معنى دا ده چه د كافرانود شر او فساد نه د مسلمانانو د حفاظت او صيانت په غرض هغه ځای او مقام لاز نيول چه د مسلمانانو او

د مستمان و تا مستمان و تا مید می در این می در این از این به می در این به مینځ کښې وی (۵) کوم ته چه په عام عرف کښې سرحد وائي. علامه ابن التین پُوهٔ دا شرط هم لګولې دې چه د کوم ځای حفاظت مرابط کول وی اود هغه وطن نه وی، همدغه شرط ابن حبیب د امام مالك پُوهٔ نه هم نقل کړیدی. (۶) یعنی بقول ابن حبیب امام مالك پُوهٔ هم د ابن التین بیان کړیشوې مذکوره شرط قائل دې. (۷)

۱) (کشف الباری (ج۱ص۵۹)-

٢) (كتاب الصلح باب فضل الاصلاح بين الناس...رقم (٢٧٠٧)-

٣) (عددة القارى (ج ١٤ ص ١٧٥) وفتح الباري (ج عص ٨٥)-

٤) (عمدة القارى (ج ٤ اص١٧٥)-

ن) (حواله بالا وفتح الباري (ج٤ص٨٥)-

ع) (حواله بالا-

٧) (حواله بالا وقدذكر العلامة العيني تعريفات أخرى للرباط ولكن اخترنا أشهرها-

په دې وجه په سلفو صالحينو کښې ډيرو حضراتو په سرحدونو استوګنه اختيار کړې ده (۱) خوحافظ صاحب او علامه عيني د ابن التين دا شرط رد ري دي د دې دواړو وينا دا ده چه يه دې اطلاق کښې اشکال دې ځکه چه بعضې وخت داسې کيږي چه د سړي خپل وطن وي آو هغه هلته ددشمن دفع کولو په نیت اقامت کړې وي (۲)

دې د پاره چه د رباط اجر او ثواب حاصل شي.

نُولُهُ ۚ وَقُولِ اللَّهِ تَعَالَى يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ [آل عمران:٣٠٠] :اودَالله تعالى قول دى: اي دَايمان خاوندانو! صبركوني او كلك اوسيري او ملاترلي اوسيرني اود الله تعالى نه ويريزني دى دَباره چه تاسوكامياب شي. دُ امام بخارى مُعَالَمَ عادت دي جِه هغه دُ ترجمة الباب دُ اثبات دُ پاره بعض وخت دُ قرآن آباتونه پیش کوی، نو دلته هم د هغه عادت مطابق هغه دا مذکوره آیت پیش کریدی او په دې کښې دې خبرې طرف ته اشاره کړيده چه مرابط په قرآني آيت کښې موجود دې دينه همدغه د سرحد پهره او ساتنه مراد دي.

دً دي آيت مفسرينو حضراتو ډير تفسيرونه کړي دي (٣) خو مصنف عليه الرحمة آيت مبارك په دې مقام کښې ذکر کړو اود آيت مشهورترين تفسير ئي اختيار کړو کوم چه حسن بصري مُنْ أو قتاده مُنْ أَنَّهُ نه مروى دى. دا دواره حضرات د مذكوره آیت په تفسیر كښې فرمائي ((اصبروا))على طاعة الله ((وصابروا)) أعداء الله في الجهاد ((ور ابطوا)) في سبيل الله. (۴)

[٢٢٣٠] حَدَّثَنَا عَبُدُ اللَّهِ بُنُ مُنِيرٍ سَمِعَ أَبَا النَّضْرِ حَدَّثَنَا عَبُدُ الرَّحْمَنِ بُنُ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ دِينَا رِعَنُ ١ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَمُلِ بْنِ سَعْدِ الِسَّاعِدِي رَضِىَ اللَّهُ عَنْهُ (هَ) أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ رِبَاطُ يَوْمِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ خَيْرٌ مِنْ الدُّنْيَا وَمَا عَلَيْهَا وَمَوْضِعُ سَوْطِ أَحَدِكُمْ مِنْ الْجَنَّةِ خَيُرٌ مِنُ الدُّنْيَا وَمَا عَلَيْهَا وَالرَّوْحَةُ يَرُوحُهَا الْعَبْدُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْالْغَدُوةُ خَيْرٌ مِنُ الدُّنْيَا وَمَا عَلَيْهَا [ر:۲۹۴۱]

تراجم رجال

-عبدالله بريمنير: دا ابوعبدالرحمن عبدالله بن منير المروزي الزاهد مُرَاثِيَّة دي (ع) -ابوالنضر: دا ابوالنضر هاشم بن قاسم لیثی خراسانی میشد دی.(۷)

۱) (فتع الباري (ج۶ص۸۵)-

٢) بورتنئ حواله وقذ ذكر العلامة العيني تعريفات أخرى للرباط ،لكن أخترنا أهرها)_

٣) (راجع لتلك الأقوال للمفسرين الفتح (ج٤ص٨٥) والعمدة (ج٤١ص١٧٥) وتفسير القرطبي (ج٤ص٢٢))

٤) (فتع الپاری (ج۶ص ۸۵)-

٥) (قولة: عن سهل بن سعد رضى الله عنه: الحديث قدمر تخريجه في أوائل الجهاد باب الغدوة والروحة....-

٤) (دَ دوى دَحالاتُو دَ باره او كورَى كتاب الوضوء باب الغسل والوضوء في المخضب....-٧) (دَ دوى دَ حالاتودَپاره او گورئ كتاب الوضوء باب وضع الماء عندالخلاء-

-- عبدالرحمر بر عبدالله بر دينار: دا عبدالرحمن بن عبدالله بن دينار مزنى عدوى بنيار من عبدالله بن دينار مزنى عدوى بنيار من عبدالله بن دينار من دينار دينار

م-ابوحازم: دا مشهور زاهد ابوحازم سلمه بن دینار مدنی میات دی (۲)

ه- سهل بر سعد الساعدى: دا مشهور صحابى رسول حضرت سهل بن سعد الساعدى الانصارى المشؤدي. (٣)

سمح أبا النضر: په دې عبارت کښې حذف دې اود عبارت تقدير په اصل کښې داسې دې (رانه سيع)) مګر په ليکلو کښې (رانه) اکثر حذف کولې شي (۴)

قوله: أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: رباط يوم في سبيل الله خير

مر. الدنيا وما عليها: حضرت سهل بن سعد الساعدى التي نه روايت دى چه رسول الله تعالى به لار كښى يوه ورځ پهره وركول دنيا او خه چه به دې كښى دى د هغى نه بهتر دى.

قوله: وموضع سوط أحدكم من الجنة خيرمن الدنيا وماعليها: او په جنت كنى تاسو كنى د چا د پاره د يوې كوړې برابر ځائ د دنيا او څه چه په دې كښې دى د هغې نه

خير من الدنيا ومافيها نه دَ عدول كولووجه: دَ حضرت سهل بن سعد ظَائِنُ دَ باب دا حديث دَ (كتاب الجهاد)) په شروع كښې هم تير شويدې. (۵) هلته دَحديث په الفاظوكښې ((عيمن الديادماعليها)) په ځائ ((عيمن الديادماغليها)) راغلې نو ((فيها)) نه ((عليها)) طرف ته دَ عدول كولو وجه څه ده؟

علامه عینی فرمانی چه په دې عدول کښې دا فائده ده چه ((قیها)) کښې معنی د ظرفیت او (رهلیها)) کښې د استعلاء معنی موندلې شی او دا خبره واضح ده چه استعلاء کښې د ظرفیت په مقابله کښې عموم زیات دې او هغه ظرفیت نه قوی هم ده. نو مبالغه کښې د زیاتوالي دپاره ((قیها)) نه ((علیها)) طرف ته عدول کړیشویدې (۶)

دَ جنت کوری، سوط، برابر مائ دَ دنیا او مافیهانه بهترگیدو وجهٔ دَباب په حدیث کښی ذکر

١) (د دوى د حالاتودبار ، او محورى كتاب الوضوء باب إذا شرب المكلب في إناء أحدكم

٢) (دَ دوى دَ حالاتودَپاره او كورئ كتاب الوضوء باب غسل المرأة أباها الدم عن وجهه -

٣) (د دوى د حالاتود پاره او كورى كتاب الوضوء باب غسل المرأة أباها الدم عن وجهه

٤) (فتح الباري (ج∆ص^{۸۶})-

٥) (انظر الصحيح للبخاري كتاب الجهاد والسير باب الغدوة والروحة في سبيل اله....-

ع) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٢٥)-

دی چه په جنت کښې د یوې کوړې برابر ځای هم د دنیا اوڅه چه په دې کښې دی د هغې نه پهټر دې د دې وجه بیانولو سره علامه مهلب پښتې فرماني:

(روسارموضع سوط في الجنة خير من الدنيا وما فيها، من أجل أن الدنيا فانية، وكل شي في الجنة وإن صفر في التبثيل لنا - وليس فيها صغير - فهو أدوم وأبقى من الدنيا الفانية المنقطعة، فكان الدائم خير أمن الدنيا الفانية (١))

یعنی د جنت د یوی کوری برابر خای د دنیا او مافیها نه خکه بهتر دی چه دنیا فانی ده او د جنت هر څیز اګرچه د تمثیل په توګه زمونږ د پاره وړوکی وی خود هغه خای یو څیز سپك او وړوکی نه دی د همیشه دپاره دی او د ختمیدونکی او منقطع کیدونکی دنیا په مقابله کښی باقی پاتی کیدونکی څیز د منقطع څیز نه بهتر شو. کښی باقی پاتی کیدونکی څیز د منقطع څیز نه بهتر شو. د اسلامی سرحدونو ساتنه او د مفاظت په فضیلت کښی نور احادیث د اسلامی سرحدونو ساتنه او حفاظت ریعنی رباط) فضیلت کښی خو ډیر احادیث وارد شوی دی ۲)

نو استيعاب خو مقصد نه دې په دې وجه يو څو احاديث مونې ليکو:

صرت سلمان فارسى المائي نه روايت دې چه رسول الله المان فرمانيلي دى .

((دہاطیومولیلة خیرمن صیام شهروقیامه، وإن مات جری علیه عبله الذی کان یعبله، واجری علیه رنهه، وأمن الفتان) راللفظ لبسلم (۲)

د یوې شپې ورځې پهره ورکول د یوې میاشت د قیام او صیام نه بهتر دی او که چرې (په دې دوران) کښې هغه مړشو نو د هغه اعمال چه په دنیاکښې هغه کول، د هغه د پاره جاری وی او په هغه باندې په د هغه رزق جاری کولې شی اوهغه په د شیطان نه محفوظ وي.

حضرت عثمان کالی نه مرفوعا مروی دی:

((دباطيوم في سبيل الله خيرمن ألف يوم فياسوالامن المنازل))(ع)

دَ الله تعالى په لاركښې دَ يوې ورځې څوكيدار كول په نورو ځايونوكښې تيرو شوو زرو كالونه بهتر دى.

﴿ حضرت فضاله بن عبيد ﴿ اللَّهُ وَايت دى جه نبى كريم وَ اللَّهُ فرمائيلى : ((كل الهيت يختم على عبله الله الهوم القيامة ، ويؤمَّن من فتَّان القبر). (اللفظ لأب داؤد) (۵)

۱) (شرح ابن بطال (ج٥ص) وعمدة القارى (ج ١٤ -148) (١

٢) (راجع لتلك الأحاديث الواردة في فضل الرباط في سبيل الله: الجامع الأحكام القرآن (ج ٤ ص ٣٢٤)-

٣) (الحديث أخرجه مسلم في كتاب الإمارة باب فضل الربات في سبيل الله عزوجل رقم (٩٣٨) والترمذي في فضائل الجهاد باب ماجاء في فضل المرابط رقم (١۶۶۵) والنسائي في كتاب الجهاد فضل الرباط رقم (١۶۶٩ ٣١٧٠-٣١٧)-

^{﴾) (}العدينُ أخرجه الترمذي أبواب فضائل الجهاد باب ماجاء في فضل المرابطة، رقم (١۶۶٧) والنسائي في سنته الصغرى كتاب الجهاد فضل الرباط رقم (٣١٧٦-٣١٧٣) وابن ماجه أبواب الجاهد باب فضلؤالرباط في سبيل الله رقم (٢٧٤٣)-

۵) (الحديث رواًه أبوداؤد أبواب الجهاد في فضل الرباط رقم (۲۵۰۰) والترمذي أبواب فضائل الجهاد باب ماجاءفي فضل من مات مرابطا رقم (۱۶۲۱)-

د هر مړی په اعمالو باندې مهر لګولې شی (بندولې شی) سوا د مرابط نه. د هغه عمل د هغه د پاره د قیامته پورې زیاتولې شی او هغه د قبر د فتنې نه په امن او محفوظ کیږي. او دَ حدیث نور تشریحات دَ ((کتابالجهاد)) په شروع کښې ((بابالغدوټوالروح**ة بی** سبیلالله)) او

((باب الحور العين وصفتهن ۱۰۰۰) كښى تيرشوى دى . د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت د حديث ترجمه الباب سره مناسبت بالكل واضح دي اوهغه د حدیث د شروع په جمله کښې ((رباطيومنيسبيلالله.٠٠)) کښې دې.

٢٥- بَأَب: مَنْ غَزَا بِصَبِيّ لِلْخِدُمَةِ

دُ ترجمة الباب مقصد حافظ ابن حجر ميني او علامه عيني بيني فيدي فرمائي چه دُ امام بخاري بيني مقصدد در ترجمه نه دې خبرې طرف ته اشاره کول دی چه ماشوم د جهاد مخاطب نه دې ليكن دَ ديُ باوجود هغه تُبعا وضَمنا بوتلل جائز دي. (١)

خو شیخ الحدیث حضرت محمدزکریا کاندهلوی میایی فرمائی چه زما په نزد بهتر توجیه دا ده چه داسی اووئیلی شی چه امام بخاری کیائی ماشوم د خدمت په غرض د بوتللو د جواز اثبات كوي. دا توهم دفع كولو سره چه د بعض صغار صحابه كرامو باره كښي وارد شوي . دی چه کله هغوی په غزوه کښې د شرکت دَپاره پیش شو نو هغوی تَرُخِم هغه واپس کړل مثلاً،ابن عمر، زیدبن ثابت او السامه بن زیدینگاتیم اود دی توهم د ردکولو وجه دا ده چه دا حضرات صحابه کرام دَ قتال دَ پاره حاضر شوی وو نه چه دَ خدمت دَ پاره. نودَ هغوی دَ خدمت د پاره د بوتللو اجازت دې ليکن د قتال په غرض بوتلل جائز نه دي. (۲)

[٢٢٣١] حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ عَنْ عَمْرِوعَنْ أَنْسِ بْنِ مَالِكٍ (٢) رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِأَبِي طَلَّحَةَ الْتَمِسُ غُلَامًا مِنْ غِلْمَا إِنْ هُمُ يَعُدُمُنِي حَنِّي ٱُخْرُجَ إِلَى خَيْبَرَ فَخَرَجَ بِي ٱبُوطَلُحَةٍ مُرُدِفِي وَٱنَاغُلَامٌ دَاهِقْتُ الْحُلُمَ فَكُنْتُ أَخُدُمُ دَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا نَزَلَ فَكُنْتُ أَسْمَعُهُ كَثِيرًا يَقُولُ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنُ الْحَمِّوَ الْعَجُزِ وَالْكَسَلِ وَالْبُغْلِ وَالْجُبُنِ وَضَلَعِ الدَّيْنِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ ثُمَّ قَدِمْنَا خَيْبَرَ فَلَمَّا فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْحِصْنَ ذُكِرَ لَهُ جَمَالُ صَفِيَّةً بِنْتِ حُينَ بْنِ أَخْطَبَ وَقَدْ قُتِلَ زَوْجُهَا وَكَانَتْ عَرُوسًا فَأَصْطَفَاهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِنَفْسِهِ فَخَرَجَ مِمَا حَتَّى بَلَغْنَا سَدَّ الصَّهُبَاءِ حَلَّتْ فَبَنِّي مِهَا ثُمَّ صَنَّعَ حَيْسًا فِي نِطَعِ صَغِيرٍ ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ آذِنْ مَنْ حَوْلَكَ فَكَ انْتُ تِلْكَ وَلِيمَةً رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى صَفِيَّةَ ثُمَّ خَرَجُنَا إِلَى الْمَدِينَةِ قَالَ فَرَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُحَوِّى لَمَا وَدَاءَهُ بِعَبَّاءَةٍ ثُمَّ يَجْلِسُ عِنْدَ بَعِيرِةِ فَيَضَعُ

۱) (فتح الباري (ج۶ص ۷۸) وعدة القاري (ج ۱۶ ص۱۷۶)-

۲) (الأبواب و التراجم للكاندهلوى (ج١ص١٩٧)-

٣) (قوله: عن انس بن مالك علم العديث مرتخريجه في كتاب الصلاة باب ما يذكر من الفخذ-

رُكْبَتَهُ فَتَضَعُ صَفِيَّةُ رِجُلَهَا عَلَى رُكْبَتِهِ حَتَّى تَرَكَّبَ فَسِرْنَا حَتَّى إِذَا أَشْرَفْنَا عَلَى الْهَدِينَةِ نَظْرَ إِنَى أُحُدِ فَقَالَ هَذَا جَبَلٌ يُحِبُنَا وَنُحِبُهُ ثُمَّ نَظَرَ إِلَى الْمَدِينَةِ فَقَالُ اللَّهُمَّ إِنِي أَحَرِّمُمَّا بَيْنَ لَا لَهُمَّ إِنِي أَحَرِّمُمَّا بَيْنَ لَا يُعَرِّمُ اللَّهُمَّ إِن اللَّهُمَّ اللَّهُمَّ بَارِكُ لَهُمُ فِي مُدِّهِمُ وَصَاعِهِمُ [ر:٣٦٣]

تراجم رجال

-قتيبه: دا شيخ الاسلام ابورجاء قتيبه بن سعيد ثقفي مُوني دي د دوى تذكره (ركتاب الإيمان بابإنشاء السلام من الإسلام) لاندى تيره شويده. (١)

r-يعقوب: دا يعقوب بن عبدالرحمن بن محمد اسكندراني ميه دي. (٢)

-- عمرو: دا عمرو بن ابي عمرو مولى المطلب بن حنطب ﷺ دي. (٣)

٣- انس: دا مشهور صحابي رسول ابوحمزه حضرت انس بن مالك الماثيُّ دي. دُ دوي حالات ((كتابالإيبانبابمن الإيبان أن يحبالأخيه ...) لاندى تيرشوى دى. (۴)

توله: أن النبي صلى الله عليه وسلم قال لأبي طلحة: التمس لي غلاماً مر غلمانکر یخد منی حتی أخرج إلی خیبر: دَ حضرت انس بن مالك الله و روایت دی چه نبی کریم تایی حضرت طلحه الله و تایی ته اوفرمائیل چه د خپلو ماشوم انو نه زما دپاره یو ماشوم اولتوه چه زما خدمت او کړي ترهغه وخته پورې چه زه غزوه خيبردپاره اوځم.

كلمه (رحق)) دنبي مَا إِنْهِ به كلام كنبي د تعليل دياره ده، د غايت د بيان دياره نه ده. او هغه ((التبس)) سره متعلق ده نه چه ((خدمنی))سره. اود کلام مقصد دا دې چه زما د پاره په سفرکښی خدمت د پاره يو هلك اولټوه تردې چه زه مدينې منورې ته راواپس شم. (۵) يواشكال اود هغې جواب علامه داؤدي مُشَرِّد د حديث په دې تېكړه باندې اعتراض كړيدې او هغه دا چه ښکاره خو همدغه ده چه حضرت انس شائن د نبي کريم تانيخ خدمت د هغوي تايش یه رومبی ځل د هجرت نه پس مدینی منورې ته د راتلونه پس شروع کړو ځکه چه حضرت انس فات نه پخپله په صحیح احادیثوکښې مروی دی چه «خدمت النبی صلی الله علیه وسلم تسع سنین)) (ع) او په يو روايت کښې ((عشم سندن)) (۷) دې اود خيبر واقعه ۷ هجري

٧) (الصحيح البخاري كتاب الأدب باب حسن الخلق والسخاء رقم ٤٠٣٨)-

۱) (کشف الباری (ج۲ص۱۸۹)-

٢) (دَدوي دَ حالاتودَپاره اوګورئ کتاب الجمعة باب الخطبة على المنبر -

٣) (دَدوى دَ حالاتودَپاره اوګورئ کتاب العلم باب الحرص على الحديث-

٤) (كشف البارى (ج٢ص١٥٢)-

٥) (حاشية المسندي على البخاري (ج٢ص١٥٢)-

۶) (الصحيح لمسلم كتاب الفضائل باب كان رسول الله صلى الله عليه وسلم أحسن الناس خلقا رقم (٢٠١٤)

ده نو دینه خو دا لازمیږی چه حضرت انس تناشؤ به صرف څلور کاله د حضور نایم خدمت

کړې وي.

د دی اعتراض جواب دا ورکریشویدی چه د نبی اکرم ناش ابوطلحه ناش ته دا فرمائیل چه (رالتیس لفلاما من فلهانکم)، مطلب او معنی دا ده چه هغوی ناش سره به په دی سفرکنی څوك ځی چه د هغه تعین اوکړی شی نو حضرت ابوطلحه ناش حضرت انس ناش مقرر کړو چه هم دی به د خدمت د پاره ځی. نود التماس مطلب استنذان به وی چه په سفرکنی د ملګرتیا د پاره چاته اجازت ورکړه، دا مطلب نه دی چه د نوی سرنه څوك د خدمت د پاره اولتوه ځکه چه هغه خو د اول نه د خدمت د پاره موجود دې دغه شان به په دواړو احادیثوکنی تطبیق اوشی (۱)

آیا ماشوم ته به غنیمت کښی حصه ملاویږی؟ دلته ضمنا په دې مسئله باندې هم ځان پوهه کړنی که ماشوم په غزوه کښی شریك وی که د خدمت په نیت وی او که د قتال په نیت وی،انمه ثلاثه امام ثوری، لیث بن سعد او ابوثور شخی په نزد به دوی ته سهم نشی ورکولی بلکه امام به د خپلی مرضئی موافق څه مال وغیره ورکوی. (۲)

خود امام مالك او آمام اوزاعي المناع مسلك دا دى چه ماشوم ته به هم د مال غنيمت نه د كال غنيمت نه د كال غنيمت نه د كال غنيمت نه د كالغو كسانو په شان حصه ملاويري. (٣)

خود دې دواړو حضراتو په اقوالو کښې فرق دا دې چه امام مالک کوښې سهم په دې شرط سره مشروط کوي چه هغه ماشوم قتال هم کوي او د دې طاقت لري نو د دې شرطونو په موجودګني کښې دا ماشوم آزاد دې، مذکر دې او مقاتل هم دې نو په دې وجه به ده ته هم د عامو خلقو سهم ورکولي شي.

او امام اوزاعی مطلقا د ماشوم د پاره په غنیمت کښې د حصې قائل دې. د هغه دلیل دا دې چه رسول الله کالځ په غزوه خیبرکښې ماشومانوته هم په مال غنیمت کښې حصه ورکړې وه. بیا روستو مسلمانانو خلفاؤ هم په میدان جنګ کښې پیدا کیدونکو ماشومانو ته حصه ورکوله. (۴)

دَجمهورو دلائل به دې مسئله کښې زمون بودلیل خود حضرت سعیدبن المسیب دا اثر دې (کان الصبیان والعبید یحدون من الغنیمة إذا حضروالغوو فی صدر هذه الأمة)(۵) چه د دی امت په ابتداء کښې ماشومان او غلامان که په غزا کښې حاضریدل نو هغوی ته به د غنیمت نه څه نه څه ورکولې کیدل

۱) (فتح الباري (ج۶ص۸۷) وعمدة القاري (ج ۱ ۱ص۱۷۷)-

٢) (المغنى لابن قدامة (ج٩ص٢٠٤)-

٣) (حواله بالا-

١ (المغنى لابن قدامة (ج٩ص٩٠٢) وإعلاء السنن (ج١٢ص٧٠٢)-

۵) (المغنى (ج٩ص٢٠۶)-

او جوزجانی په خپل سند سره روایت کړیدی چه تمیم بن قرع المهدی په هغه لښکر کښی ور کوم چه په آخرځل اسکندریه فتح کړی وه، نوتمیم وائی ((فلمیقسمل عبرو من الغی شیئا)) چه عمرو بن العاص المائز (چه د اسلامی لښکر مشر وو) ماته په غنیمت کښی هیڅ هم رانه کړه او وئی فرمائیل چه نابالغ هلك دی، په دې وجه زما د قوم او قریشو د څه خلقو په مینځ کښی جنګ کیدو کیدو خو بندشو، نو په قوم کښی چا اووئیل چه په تاسو خلقو کښی د نبی کریم نایم د صحابه کرامو نه څه خلق موجود دی هم د هغوی نه تپوس او کړئی نو هغوی د ابونضر او عقبه بن عامر المائز نه تپوس او کړو نو په قوم کښی چا زما معائنه او کړه نو وئی کتل چه ویښته می راټوکیدلی وو نو حضرت عمرو بن العاص نامی ماته هم په غنیمت کښی حصه راکړه. (۱) د دې واقعه نقل کولو نه پس امام جوزجانی پیمی فرمائی:

(رهنامن مشاهیر حدیث مصروجیده، ولانه لیس من اهل القتال، فلم یسهم له کالعهد، ولم یثبت ای النبی صلی الله علیه وسلم قسم لصبی، بل کان لایجیزهم فی القتال فان ابن عبر گارش تال: عرضت علی النبی صلی الله علیه وسلم و النابی اربی عشری قسنی الله علیه و الله علی بن قرع به جنگ کونکو کښی نه وو په دی وجه هغه ته په غنیمت کښی حصه ورنه کړی شوه. لکه خنګه چه غلام ته نه ورکړی کیږی او داخبره په یوشان هم ثابته نه ده چه نبی علی و غنیمت نه یو ماشوم له څه ورکړی وی. بلکه هغوی تایی خو به ماشومان د جنګ د باره نه پریخودل (نود غنیمت نه حصه ورکولو څه معنی ده) دغه شان ابن عمر الماش فرمانی چه د خوارلسو کالو په عمر کښی زه د حضور تایی په خدمت کښی د جنګ د باره پیش کریشوم نو هغوی تایی مات په جنګ کښی د شرکت کولو اجازت رانه کړو او د پنځلسو کالو په عمر کښی بیا پیش کریشوم نو هغوی تایی و کړیشوم نو هغوی تایی و کیشوم نو هغوی تایی و کریشوم نو هغوی تایی و کریشوم نو هغوی تایی و د شرکت کولو اجازت رانه کړو او د پنځلسو کالو په عمر کښی بیا پیش کریشوم نو هغوی تایی د شرکت اجازت راکړو.

دُ اُمام اوزاعی ﷺ دَ دلیل جواب: ترکومی چه دَ امام اوزاعی ﷺ دَ دلیل تعلق دې نود دې جواب دا دې چه ممکن ده چه راوی ((رضخ)) (۴) ((سهم)) سره تعبیرکړې وی او د ((رضخ)) قائل جمهور هم دی، نو په دې وجه دا د امام اوزاعی ﷺ دلیل نشی کیدې.(۵)

۱) (حواله بالا -

۲) (حدیث عبدالله بن عمر المله المؤان أخرجه البخاری کتاب الشهادات باب بلوغ الصبیان وشهادتهم رقم (۲۶۶۴) و کتاب المغازی باب غزوة البخندق رقم (۲۰۹۷) ومسلم کتاب الإمارة باب بیان سن البلوغ رقم (۲۶۶۴) والترمذی أبواب البهاد باب ماجاء فی حد بلوغ الرجل رقم (۱۷۱۱)وأبوداؤد أبواب الحدود باب فی الغلام یصیب البحد، رقم (۲۰۶۱) والنسائی أبواب الطلاق باب متی یقع طلاق الصبی بوقم (۳۴۶۱) والنسائی أبواب الطلاق باب متی یقع طلاق الصبی بوقم (۲۰۶۳) می (المغنی لابن قدامة (ج۹ص ۲۰۶) -

أ (الرضخ معناه: انهم (أى المرأة والعبد والصبى) يعطون شيئا من الغنيمة دون السهم، ولايسهم لهم كامل.
 ولاتقدير لما يعطونه بل ذلك إلى اجتهاد الإمام فإن رأى التسوية بينهم سوى بينهم وإن رأى التفضيل فضل (المغنى ج٩ص ٢٠٤)-

٥) (المُغنَى (جُ٩صُو٢٠۶) وإعلاء السنن (ج١٢ص٢٠٧)-

حصه كنبي دي: ((التبس ل غلاما من غلبانكم يخدم في حتى أخرج إلى غيبر)) دَ خُه نه چه ما شوم رُ خادم په تولیمه د بوتللو اجازت معلومیری.(۱)

٣-- بَأَب: رُكُوبِ الْبَحْرِ

د ترجمة الباب مقصد: د دي باب په ذيل كښي امام بخاري المام بخاري المام بخاري المام بخاري المندري سفر مشروعيت او جواز بیانول غواړی. (۲) اودا جواز او مشروعیت عام دې که د سړو دپاره وی اوکه د ښځودپاره، د جهاد په غرض سره سمندري سفر وي يا د حج او تجارت په نيت سره. (۳) ركوب بحركس د اسلافو اختلاف به اسلافوكسي بعض حضرات ركوب بحر ناخوسوي او دينه به ني منع فرمائيله. إمام مالك مُناهَ فرمائي چه حضرت عمر النَّهُ به خلق دركوب بحرّ نه منع کول، په دې وچه د هغوی په ژوند او خلافت کښې چا هم سمندري سفرنه دې کړې. دَهغوى دَانتقال نه پس حضرت معاويه طائع د حضرت عثمان طائع نه د د ركوب بحر أجازت اوغوښتلو نو هغوي اجازت ورکړو. معامله هم په دې باندې پاتې شوه. تر دې چه د حضرت عمر بن عبدالعزيز المنه خلافت راغلو نو هغه خلق بيا د ركوب بحر نه منع كول ليكن دا ممانعت دهغوی د ژونده پورې پاتې وو ،روستوبيا دسمندري سفرسلسله دوباره شروع شوه (۴) روستنو بعض علماؤ هم د ركوب بحر نه منع كوله، او امام مالك رسي د بنخو باره كنبي د دې خبرې قائل دې چه هغوي د حج يا جهاد به نيت سره هم په سمندري سفركښي شركت نشی کولی. (۵)

دَ جمهورو مسلك دا دي چه سمندري سفركه دَ ښځو دَپاره وي اوكه دَ سړو دَپاره ، دَ جهاد نيت وي اوكه دَ حج يا د تجارت په هرصورت كښي جائزدي (ع)

اود باب حدیث د جمهورو دلیل دی، په کوم کښې چه مطلقا د رکوب بحر اجازت او اباحت موجود دي. (٧)

یوه آهم تنبیه لیکن دا خبره واضحه کیدل پکار دی چه جمهورو د سمندری سفر کوم اجازت ورکړې دې هغه په يوشرط باندې مشروِط دې، هغه دا چه سمندر پُرسکون وي او د هلاکت خطره نه وی ګنی د جمهورو په نزد هم د دی اجازت نشته. (۸)

۱) (عمدة القارى (ج ۱ اص۱۷۷) وفتح البارى (ج ۶ص۸۷)-

۲) (ارشاد الساری (ج۵ص۹۱)-

٣) (حواله بالا-

٤) (التمهيدلابن عبدالبر (ج ١ ص ٢٣٣) وفتح الباري (ج ٤ ص ٨٨)-

۵) (حواله بالا وعمدة القارى (ج ٤ ١ص١٧٨) ـ

ع) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٨٧) وفتح البارى (ج ٤ ص ٨٨)-

۷) (فتح الباری (ج۶ص۸۸) وعمدة القاری (ج ۱۶ص۱۷۸)-

۸) (المهيد (١ص ٢٣٤)-

علامه ابوعبیدهروی بخشی به ((غریب الحدیث)) ذکر کریدی چه نبی تلای و سمندری سفرنه د هغی د سیلاب او مشکلاتو د پینبیدو په صورت کننی منع فرمائیلی ده، د زهیربن عبدالله نه مرفوعا مروی دی چه نبی کریم تلایم فرمائیلی ((من دکب الهم إذا التج – أوقال: ارتج – فقد پرت منه الذمة – أوقال: فلایلومن إلا نفسه –)) یعنی چا چه د سمندر طوفان (یا اوفرمائیل چه موج وهلو) په وخت کنبی په دی کنبی سفر اوکړو، د ده نه د الله تعالی ذمه خلاصه ده. (یا ئی دا اوفرمائیل چه هغه دی خپل نفس ملامت کړی) (۱)

دُ الله تعالى نه دُ هغه ذمه خلاصيدو مطلب دا دې چه الله تعالى دَ حفاظت كومه وعده فرمائيلى ده هغه وعده به ختمه شى ځكه چه هغه خپل ځان پخپله هلاك كړو، دا مطلب نه دې چه د اسلام ذمه دُ ده نه خلاصه شوه ځكه چه د اسلام نه يو سړې هغه وخت خلاصيږى چه هغه د كفر لار اختيار كړى. (٢)

نود زهیربن عبدالله په روایت کښی د سمندری سفرنه ممانعت سمندری طوفان سره مقید دی، د دی مخالف مفهوم همدغه دی چه سمندری طوفان نه کیدو په صورت کښی سمندری سفر جائز دی او هم دغه قول د علماؤ نه مشهور دی. که چری د سلامتنی غلبه وی نو اوچه او لمده برابره ده. حافظ ابن حجر راهنده او علامه عینی راهنده برابره ده. حافظ ابن حجر راهنده او علامه عینی راهنده برابره ده.

((ونيه رأى في حديث زهين تقيد البناع بالارتجاج، ومفهومه الجواز عند عدمه، وهوالبشهور عن أقوال العلباء، فأذا غلبت السلامة فالبرواليح سواء))(٣)

یوه بله تنبیه: مونر پورته د امام مالك سلام مذهب نقل كړې وو چه هغه د بخود باره سمندرى سفرته جائز نه وائى، كه هغه د جح د پاره وى او كه د جهاد د پاره وى، خو روستو ائمه مالكيه هم د جمهورو علماؤ قول اختيار كړيدې. (۴)

[٢٥٢٠] حَدُّ ثَنَا أَبُواللَّعْمَانِ حَدَّ ثَنَا حَمَّا دُبُنُ زَيُهِ عَنْ يَعْنَى عَنْ مُحَمَّدِ بُنِ يَعْنَى بُنِ حَبَانَ عَنْ أَنْسِ بُنِ مَالِكِ (٥) رَضِى اللَّهُ عَنْهُ قَالَ حَدَّثَنِي أُمُّ حَرَامِ أَنَ النَّبِي صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسُلَمَ قَالَ يَوْمًا فِي بَيْتِهَا فَاسْتَيْقَظُ وَهُو بَضْحَكُ قَالَتْ يَارَسُولَ اللَّهِ مَا يُضْحِكُ فَالَ عَجِبُتُ مِنْ قَوْمٍ مِنْ أُمَّتِي يَرُكَبُونَ الْبَعْرَ كَالْمُلُوكِ عَلَى الْأَسِرَةِ فَقُلْتُ يَارَسُولَ اللَّهِ ادْعُ اللَّهَ أَنْ يَعْلَى مِنْهُمْ فَقَالَ اللَّهِ الْمُعْرَكَ الْمَائِقَظُ وَهُو يَضْحَكُ فَقَالَ مِنْلَ ذَلِكَ مَرَّتَيُنِ أَوْ ثَلَاثًا فَاللَّهُ اللَّهُ الْمُولِي عَلَى فَاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُ اللَّهُ الْمُ اللَّهُ الْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُلْلُولُ اللَّهُ اللَّهُ

۱) (حواله بالا وشرح ابن بطال (ج۵ص۸۹) والأدب المفرد (ج۲ص۶۰۲) باب من بات على سطح ليس له سترة رقم ۱۹۶)-

۲) (شرح ابن بطال (ج۵ص۸۹) ومسندالإمام أحمد (ج۵ص۷۹)-

٣) (فتح الباري (ج٤ص ٨٨) وعمدة القاري (ج١٤ ص ١٧٨)-

٤) (التمهيد (ج ١ ص ٢٣٣)-

٥) (قوله: عن انس رضى الله عنه: الحديث مرتخريجه في أوائل الجهاد باب الدعاء بالجهاد....-

كتاب الجهاد (جلاال المناب المناب الجهاد (جلاال المناب الجهاد (جلاال المناب الجهاد (جلاال المناب الم

تراجم رجال

۱- ابوالنعمان دا ابوالنعمان محمد بن الفضل سدوسی بصری بیشت دی. د دوی حالان (رکتاب الإیمان باب تول النبی صلی الله علیه وسلم: الدین النصیحة شه در سوله) لاندی راغلی (۱) مسلم اله علیه وسلم: الدین النصیحة شه در سوله) لاندی راغلی (۱) مسلم الدیر برین دا ابواسماعیل حماد بن زیدبن درهم از دی بیشت دی، د دوی مختصر تذکره (رکتاب الإیمان باب (وان طائفتان من البؤمنین اقتتلوا ...)) لاندی تیره شویده (۲)

۳- یحیی: دا مشهورتابعی یحیی بن سهید انصاری مربید دی د دوی مختصر تذکره ((بدم الوحی)) به رومبی حدیث کښی او تفصیلی تذکره ((کتاب الإیمان باب صوم دمضان حتسابًا من الإیمان) لاندې راغلی ده. (۳)

قوله: قال: حدثنى أمرحرام أن النبى صلى الله عليه وسلم قال يوم أفى بيتها: حضرت انس بن مالك الله عليه وسلم قاله اوونيل جد نبى كريم الله عليه ورخ (غرمه) زما په كوركښى قيلوله اوفرمائيله.

په دې مذکوره عبارت کښې («قال يوما) کښې («قال) راغلی، دا د قيلوله نه دې نه چه د قول نه اود قيلوله معني د غرمې د آرام کولو ده. (۶)

تنبیه: حضرت ام حرام فله د خضرت انس اله ترور وه. ددوی تفصیلی حالات ((کتاب الجهاد)) (رباب المعامها دوالشها دالله جال والنساء)) و راندی بیان شوی دی.

د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت: د حديث ترجمة الباب سره مناسبت واضع دي چه په

۱) (کشف الباری (ج۲س۷۲۸)-

۲) (کشف الباری (ج۲ص۲۹)-

٣) (كشف البارى (ج ١٤ ص ٢٣٨) و (ج ٢ ص ٣٢١)-

٤) (دَدوى دَ حالاتودَپاره اوګورئ کتاب الوضوء باب من تبرُّزعلیٰلبنتین۔

۵) (کشف الباری (ج۲ص ٤)-

۶) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٧٨)-

دى جمله كښى دې ((هجيت من قوم من أمتى يركبون البحركالبلوك على الأسراق) (١)

٥٥- بَأَبِ: مَنُ اسْتَعَانَ بِالضَّعَفَاءِ وَالصَّالِحِينَ فِي الْحَرْبِ

وترجمة الباب مقصد: أمام بخارى المنظم دا خودل غواري چه مقاتلينو أو مجاهدينو ته و ضعيفانو او صالحانودعالااني حاصلول پكار دى، دى د پاره چه د دعالاانو په بركت الله تعالى په جهاد كښې غلبه او فتح عطاكړي. (٢)

یا خو مطلب او مقصددا دی چه ضعفاء او صلحاء هم ځان سره بوځی چه د هغوی کمزورنی او پرهیزاگارئی او تقوی په وجه هغوی ته استقامت حاصل وی او الله تعالی نی فتح او نصرت سره کامیاب کړی.

بهر حال که هغوی ته د دعااگانو درخواست اوکریشی نود هغی دیاره هم په سنت کښی اصل

مُوْجود دى او كه هغوى خان سره واخستى شى نُودا هم ثابت دى. [٢٢٨] وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ أَخْبَرَنِي أَبُوسُفْيَانَ قَالَ لِى قَيْصَرُسَأَلْتُكَ أَشْرَافُ النَّاسِ اتَّبَعُوهُ أَمْضُعَفَا وُهُمْ فَزَعَمُتَ ضُعَفَاءَهُمْ وَهُمْ أَثْبَاعُ الرُّسُل [ر:2]

حضرت ابن عباس اللُّم فرمائي چه حضرت ابوسفيان اللُّه ماته اوخودل چه قيصر ماته اووئيل چه ما تانه تپوس کړې ووچه لوئ خلق د هغوی اتباع کوی که ضعيف يا کمزوري خلق؟ نو ستا محمان همدغه دي چه كمزوري خلق او همدغه خلّق د رسولانو متبعين وي. دمد كوره تعليق تخريج دلته امام بخاري مُعالم د حضرت ابن عباس كالتر د دي مشهور روايت نه دا جمله تعلیقاً نقل کوی کوم چه د ابوسفیان بن حرب المان او د قیصرروم په مکالمه باندې مشتمله ده،اودا روايت موصولاً ((بدم الوحی))کښې راغلی دی او هم هلته د هغې تخریج هم تیرشوي دې. (۳)

دُمذكوره تعليق مقصد او ترجمة الباب سره مناسبت: په ترجمه الباب كښي ضعفاء او صالحينو د استعانت مسئله ذكر ده،

د مذكوره تعليق مقصدكښي هم د دې دليل راپيداكول دى چه هرقل ضعفا و ته اصل اتباع الرسل اومحرخول ليكن دلته دي دا خبره واضحه وي چه استدلال د هرقل قول كيدو په بنياد نه دې بلکه حضرت ابن عباس کانو د حکایت او تقریر په بنیاد دې دې نه د مذکوره تعلیق د ترجمه الباب سره مناسبت هم ښه واضحه کيږي. والله اعلم (۴)

[٢٢٠٠]حَدَّثَنَاسُلَيْمَانُ بْنُ جِرْبِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ طَلْحَةً عَنْ طَلْحَةً عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعُدِقًا لَ رَأَى سَعْدٌ (ه) رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ لَهُ فَضُلًّا عَلَى مَنْ دُونَهُ فَقَـالَ النَّبِئُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

۱) (حواله بالا-

۲) (فتح الباری (ج۶ص۸۸) وعمدةالقاری (ج ۲ اص۱۷۸)-

٢) (كشف الباري (ج ١ ص ٤٧٧)-

أ (فتح البارى (ج عص ٨٨)-

۵) قوله: مصعب بن سعد: الحديث أخرجه النسائي في سننه الصغرى في الجهاد باب الاستصار بالضعيف رقم (٣١٨٠)

نتاب الجهاد (جلهاول)

مَلْ تُنْصَرُونَ وَتُرْزَقُونَ إِلَّا بِضُعَفَا بِكُمْ

تراجم رجال

ا-سلیمان بر حرب: دا ابوایوب سلیمان بن حرب ازدی بیشته دی. د هغه مختصر تذکره ((كتابالإيان،ابمن كريانيعودقالكفر،٠٠٠)لاندې راغلى دى.(١)

r-هجمد بن مصرف بخاه دا ابومصرف محمد بن طلحه بن مصرف بخاه دي. (۲)

--طلحه: دا ابومحمدطلحه بن مصرف اليامي ميني دي. (٣)

-مصعب برسعن: دا د مشهور صحابی حضرت سعدبن ابی وقاص گاتو خوی مصعب

توله: قال: رأى سعدرض الله عنه أن له فضلا على مر دونه: حضرت مصعب بن سعد محلة فرمائي چه حضرت سعد بن ابي وقاص في ته نه دا كمان اوشو چه هغه ته په نورو باندې يوقسم فضيلت حاصل دي.

سعد نه مراد حضرت سعد بن ابي وقاص تائي دې، چه د مصعب پلار دې. (۵)

اودلته د ((رأی)) چه د رویه نه مشتق دې ((ظن)) په معنی کښې دې یعنی ګمان ئی اوکړو اود نساني شريف په روايت کښې هم ((ظن)) راغلې دې (۶)

او ((من دونه)) نه نور اصحاب رسول نائظ مراد دي. (٧)

دنسائی شریف په روایت کښې د دې نه پس دازیاتې هم مروی دې (من اصحاب رسول الله صل الله عليه وسلم)) (Λ)

اودً پورتنی عبارت خلاصه دا شوه چه حضرت سعدبن ابی وقاص گُنْتُمُ ډيريهادر وو، مالداروو او رِسول اكرم كُلِّيم به هغه سره ډيره مينه كوله نود هغه دا خيال پيدا شو چه په نورو ډيرو صحابه كرامو هغه ته يودرجه فضيلت حاصل دي. (٩)

۱) (کشف الباری (ج۲ص۱۰۵)-

٢) (د دوى د حالاتود باره أو كورئ كتاب العيدين باب استقبال الإمام الناس في خطبة العيد-

٣) (د دوى د حالاتود باره او كورى كتاب البيوع باب مايتنزه من الشبهات-

^{\$) (} دّ دوى د حالاتود باره أو كورئ كتاب الأذان باب وضع الأكف على الركب في الركوع-

۵) (فتح الباري (ج۶ص۸۸) وعمدة القاري (ج ۱۲۹ص۱۹)-

ع) (فتح البارى (ج ٤ص ٨٩) وعمدة القارى (ج ١٤ص ١٧٩)-

٨) (انظر سنن النسائي كتاب الجهاد باب الاستنصار بالضعيف رقم (٣١٨٠)-

٩) (فتح الباري (ج٤ص٨٩) وعمدة القاري (١٤ج١٧٩) او حضرت سعدبن ابي وقاص ﴿ اللَّهُ تَفْصِيلَي حَالَاتُ د باره اوگورئ کشف الباری (ج۲ص۱۷۳)-

داروایت مرسل دی که متصل د باب دا رومبی حدیث کوم چه حضرت مصعب بن سعد بروای دی، صورة خو مرسل بنکاری خکه چه حضرت مصعب بروایی د نبی اکرم نظیم دا قول (مل تنصره ن الابضعفائکم؟)) زمانه نه ده موندلی د دی وجه دا ده چه حضرت مصعب بروای نایعی دی نه چه صحابی اود ده پیدائش د عهدنبوی نه ډیر د روستو زمانی دی، بیاهغه دانه د خپل پلار حضرت سعدبن ابی وقاص نه هم د سماع تصریح اونکوه خود دی نه باوجود دا روایت مرسل نه بلکه متصل دی، ځکه چه همدغه روایت نورو مختلفو حضراتو محدثینو نقل کریدی اود هغه د پلار نه د هغه د روایت تصریح موجود ده (۱)

همدغه روایت اسماعیل د معاذبن هانی په طریق باندې نقل کړیدې او په دې کښې دی رودی کښې دی رودی کښې دی رودی کښې دی رودی کښې د بیا د معده بین سعد عن اییه قال د سول الله صلی الله علیه وسلم)) خو بیا هم په دې کښې د رسول میانی قول هم مرفوع دې، د دې رومبننی حصه یعنی ((رأی سعد میانی ان له نفلاعلی من دونه)) موجود نه ده. (۲)

دې نه علاوه اسماعیلی میلی او امام نسائی میلی (۳) دا روایت ((مسعرعن طلحة بن مصرف عن معبعن ایده)) تصریح موجود ده نو دا روایت متصل دې نه چه مرسل. (۴)

توله: فقيال النبي صلى الله عليه وسلم: هل تنصرون وترزقون إلابضعفاً نكم

نو نبی کریم تریخ اوفرمائیل چه تاسو ته امداد او رزق هم د دی کمزورو په وجه درکولې شی. د نسائی شریف په روایت کښې دا الفاظ دی: ((انبانص الله هنه الأمة بنعنتهم بدعواتهم وصلاتهم واخلاصهم))(۵) الله تعالى د دې امت نصرت د دې د کمزورو خلقو په وجه کړیدې د دوی د دعا ګانو، مونځونو او اخلاص په بناء باندې.

ضعیفان د الله تعالی د نصرت سبب دی: اوس د دوارو طرقو خلاصه دا شوه چه د الله تعالی د طرف نه کوم نصرت وغیره نازلیږی دهغی سبب همدا کمزوری خلق دی د چا په دعاګانو، مونځونو او اخلاص کښی چه دا برکت وی چه هغوی د الله تعالی نصرت د دی بندیګانو طرف ته متوجه کولو سبب جوړیږی. ځکه چه د هغوی زړه د دنیا د پرق پروق او د دی د بانست نه خالی وی اود هغوی ضمیرونه د دی څیزونونه پاله وی چه هغوی د الله تعالی نه لری کړی. هغوی د خپل ژوند مقصد صرف هم یو څیز کیخودی وی چه څنګه به الله تعالی راضی کړی اود هغه خوشحالی به حاصله کړی، په دې وجه د هغوی زړونه پاك او د هغوی

۱) (فتح الباري (ج ۱ ص ۸۸) وعمدة القاري (ج ۱ اص ۱۷۹)-

۲) (فتح الباري (ج ۶ص ۸۸) وعمدة القاري (ج ۱۶ص ۱۷۹)-

٣) (سنن النسائي كتاب الجهاد باب الاستنصار الضعيف رقم (٣١٨)-

٤) (فتح البارى (ج۶ص۸۸) وعددة القارى (ج ١٧٩ ص١٧٩)-

٥) (سنن النسائي كتاب الجهاد باب الاستنصار الضعيف رقم (٣١٨)-

دعاگانی قبلیږی. علامه ابن بطال د حدیث د مذکوره جمله وضاحت کولو سره فرمائی:

((وتاویل ذلك ان مهادة الفعفاء و دعاء هم اشد إعلاصا و اکثر عشوعال خلاء قلوبهم من التعلق بزخرف الدیا

وزینتها، وصفاء ضمارهم مایقطعهم عن الله، فجعلوا هنهم و احدًا، وزکت اعمالهم، و اجیب دعاؤهم) (۱)

په حدیث کښی تواضع اود کبرنه بچ کیدلوترغیب: نبی اکرم نامی چه حضرت سعدبن ابی

وقاص می و افزی دی چه ((هل تنصرون و ترز قون الابضعفاتکم؟)) په دې کښی د هغه د واره تواضع اختیار ولو ترغیب دی اود نبی نامی مقصود دا هم ووچه دعامومسلمانانونه کېر

ختم کریشی، د دی د پاره هغوی نامی خطاب عام اوساتلو چه څوك دا اونه ګنړی چه درسول الله نامی د دی قول مبارك مخاطب څوك خاص سړی دی. علامه مهلب بیاتی فرمائی:

(رانبا اراد علیه السلام به ناالقول لسعد الحض علی التواضع ونفی الکبد الوهد عن قلوب المؤمنین) (۲)
په حدیث باب کښې د فضل نه څه مواد دې انبی اکرم نالی چه حضرت سعد بن ابی وقاص نالی ته دا کوم خطاب فرمائیلی دې ((هل تنصرون و ترزقون الا بضعفائکم؟)) چه هم د دې کمزورو په وجه ستا امداد کیږی او تاسوته رزق درکولی شی نود دې سبب څه وو؟ ځکه چه په ماقبل کښې مونږ د فضل وضاحت بهادرئی اومالد ارئی سره کړیدې لیکن امام عبد الرزاق خپل مصنف (۳)کښې د مکحول کولی نه مرسلا یو روایت نقل کړیدې په کوم کښی چه دا زیاتوالی هم مروی دې. ((قال سعدیا د سول الله ارأیت رجلایکون حامیة القوم ویده عن اصحابه ایکون نصیه کنمیب غیره ؟...) حضرت سعد کاری اوفرمائیل یا رسول الله! ستاسو څه خیال دې چه یو سړې د خپل قول محافظ وی او د خپلو ملګرو دفاع کوی نو آیاد هغه حصه هم (غنیمت یو سړې د خپل قول محافظ وی او د خپلو ملګرو دفاع کوی نو آیاد هغه حصه هم (غنیمت کښې) د نورو په شان ده؟ نو حضور ترفیل اوفرمائیل ((شکلتك امكیا این امرسعد، وهل تنصرو و دو و د مدری و دو و د مدری کمزورو په وجه وترد قون الا بضعفائکم؟)) ای د ام سعد خویه ستامور په تااوژاړه هم د دې کمزورو په وجه ستاسو امداد کیږی او تاسوته رزق درکولی کیږی.

نو په دې صورت کښې فضل نه مراد غنیمت کښې زیاتوالې به وی اود باب د حدیث جمله «دای سعد الله علیمن دونه» مطلب به دا وی چه د حضرت سعد الله دا خیال شو چه هغه د خپل قوم محافظ اود هغوی د طرف نه دفاع کونکې دې په دې وجه هغه ته د غنیمت نه زیاته حصه ملاویدل یکار دی.

نو نبی کریم نافی هغه ته اوفرمائیل چه د مقاتلینو حصی برابر وی ځکه چه قوی او طاقتور ته که د هغه د بهادرئی او قوت په بناء اوچتولی حاصله ده نو کمزوروته به هم د هغوی د دعالاانواواخلاص په بناءیوقسم ترجیح حاصله وی (۴)

۱) (شرح ابن بطال (ج۵ص ۹۰)-

٢) (حواله بالا-

۳) (مصنف عبدالرزاق (ج۵ص۳۰۳) رقم (۹۶۹۱)-

٤) (شرح ابن بطال(۵ص۹۹)وفتح الباري (ج۶ص۸۹)-

د مدیث د ترجمه الباب سره مطابقت: د حدیث ترجمه الباب سره مطابقت په دې معنی دې چه نبی اکرم نظم په حدیث کښی دا فرمائیلی دی چه په هره معامله کښی ستاسو نصرت د ضعفاؤ او صلحاؤ په وجه وی لکه څنګه چه د کلام د اطلاق نه په پوهه کښی راځی لیکن د دې د ټولو نه اهمه موقعه د جنګ میدان دې چه هلته ضعیفانو او صالحانو د دعاګانو په زیعه مدد او برکت حاصل کړیشی نو په دې وجه د دې اهتمام کول پکار دی.(۱)

[٢٥٣] حَدَّثَنَا عَبُدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبُروسِمِعَ جَابِرًا عَنْ أَبِي سَعِيدِ الْخُدُدِيِّ رَضِى اللَّهُ عَنْهُ وَ اللَّهُ عَنْهُ وَسَلَّمَ قَالَ يَأْتِي زَمَانٌ يَغُزُو فِتَامْ مِنْ رَضِي اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُ يَأْتِي زَمَانٌ يَغُزُو فِتَامْ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيُقَالُ نَعَمُ فَيُغْتَعُ عَلَيْهِ نُمْ النَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيُقَالُ نَعَمُ فَيُغْتَعُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيُقَالُ نَعَمُ فَيُغْتَعُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيُقَالُ نَعَمُ فَيُغَتَعُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيُقَالُ نَعَمُ فَيُغَتَعُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيُقَالُ نَعَمُ فَيُغَتَّعُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيُقَالُ نَعْمُ فَيُغَالُ فَي عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيُقَالُ نَعْمُ فَي وَسَلَّمَ فَيُقَالُ فَي وَسَلَّمَ فَيُقَالُ فَي مَانٌ فَيُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيُقَالُ فَي مَانٌ فَيُقَالُ فِيكُمُ مَنْ صَعِبَ صَاحِبَ أَصْحَابِ النَّيِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيُقَالُ لَعُمُ مَنْ صَعِبَ صَاحِبَ أَصْحَابِ النَّيِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيُقَالُ لَعُمُ فَي فَعَلَّ فَي اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَي اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَي اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَي اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَي اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَي اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَي اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَي اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَي اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَي اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَي اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَي اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَي اللَّهُ عَلَيْهِ وَسُلَمَ فَي اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَي فَا لَا اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَلَا اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَا اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَا مَانَ فَي اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَيْ مَا فَي اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَالْمَالِ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَا مَا لَا لَهُ عَلَيْهِ وَلَا عَلَيْهِ وَلَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَا اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَلَ

تراجم رجال

ا-عبدالله بری هجمد: دا ابوجعفر عبدالله بن محمد بن عبدالله جعفی مسندی بخاری پیسیه دی. د دوی مختصر تذکره ((کتاب الإیمان باب أمود الإیمان)) به ذیل کښی راغلی ده (۳) مسفیان: دا ابومحمد سفیان بن عینیه بن ابی عمران هلالی پیشی دی. د دوی مختصر حالات ((بده الوی)) به رومبی حدیث کښی (۴) او تفصیلی حالات ((کتاب العلم باب قول المحدث: حدثنا او اعبدا وادبانا) لاندې تیرشوی (۵)

او تفصینی عارت ((نتاب انعظه پاپلون انهعات عانته او اخبان وانهان)) رندې غیرسوی ارد. <u>۳- عمرو</u>: دا ابومحمدعمرو بن دینار جمحی مکی راهی دی. (۶)

٣- جابر: دا مشهور صحابي حضرت جابر بن عبدالله الانصاري اللي دي. (٧)

۱) (عمدة القارى (ج ۱ اص۱۷۹)-

٢) (قوله: عن أبي سعيد الخدري رضى الله عنهم: الحديث أخرجه البخاري أيضًا كتاب المناقب باب علامات النبوة في الإسلام رقم (٣٥٩٤) وكتاب فضائل أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم باب فضائل أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم ومن صحب... رقم (٣٤٤٩) ومسلم في صحيحه كتاب فضائل الصحابة أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم ثم الذين يلونهم رقم (٤٤٥٧)-

۳) (کشف الباری (ج۱ص۶۵۷)-

٤) (كشف البارى (ج ١ ص ٢٣٨)-

۵) (کشف الباری (ج۳ص ۱۰۲)-

٤) (د دوى د حالاتود پار و او كورى كتاب العلم باب العلم والعظة بلليل-

٧) دّدوى دَحالاتودَپاره اوگورئ كتاب الوضوء باب من لم يرالوضوء إلامن المخرجين من القبل والدبر

٥- ابوسعيد الخدري: دا مشهور صحابي حضرت سعد بن مالك بن سنان ابوسعيد الخدري والمن د د دوی تذکره ((کتاب الإیبان باب من الدین الغیار من الفتن) الزندی تیره شویده (۱) قوله: عرب النبي صلى الله عليه وسلم قال: يأتي زمان يغزو فئام مربي الناس فيقال: فيقال: فيقال: الناس فيقال: فيقال: نعم...:حضرت ابوسعید خدری اللہ د نبی کریم نہا نہ روایت کوی چه هغوی نہا فرمائیلی یوه زمانه به داسی راخی چه د مسلمانانو یوه ډله به په غزوه کښی وی تپوس به اوکریشی چه په لښکر کښی څوك داسې بزرګ شته چه د نبی اکرم نالی په صحبت کښی پاتې وی؟ ونیلې به شی چه او ،نو هغوی به په فتح او کامرانئی سره کامیاب کړیشی د فنَّام معنى: فنَّام بكس الفاء ويجوز الفتح أيضًا – معنى د دلي ده د د دي لفظ واحد نشته اود

دې اطلاق هميشه په ډله باندې کيږي لکه لفظ قوم. (۲)

دعالاانو په برکت به الله تعالى فتح اوکامراني ورکوي، نو پورته ذکرشوي عبارت کښي د اولنئي ډلې يا اولنئي طبقي بيان دي. هغه طبقه يا دله د صحابه كرامو رضوان الله تعالى عليهم اجمعين ده. د نبي اكرم الله عليم دأ مبارك الفاظ د دي دريوا رو طبقاتو به فضيلت باندي دال دې. اود دې حدیث تائید د یو بل حدیث شریف (۳) نه هم کیږی چه (رخیرامق ترن، ثم الذين يلونهم، ثم الذين يلونهم))(۴)

قوله: ثمياتي زمان، فيقال: فيكمرمن صحب أصحاب النبي صلى الله عليه

وسلم؟فیقال: نعم، فیفتح:بیا به یوه زمانه راخی نو تپوس به کولی شی چه آیا په لښکريانو کښې څوك داسې شته چه هغوى د نبى كريم نائل صحابه كرامو صحبت ليدلې وی؟ وئیلې به شی چه او، نو فتح به کیږی او په دې عبارت کښې چه د کومې ډلې ذکر دې هغه د تابعينو ډله ده، چه د صحابه كرامو رضوان الله عليهم اجمعين په صحبت كښي پاتې وو د دې حضراتو تابعينو په شرکت او برکت به هم اهل اسلام ته فتح نصيب کيږي.

۱) (کشف الباری (ج۲ص۸۲)-

۲) (شرح ابن بطال (ج۵ص ۹۱) وفتح الباری ج۶ص ۸۹) وعمدة القاری (ج۱ص ۱۷۹) -

٣) (هذاالحديث رواه غير واحدمن الصحابة والذي ذكرنا ألفاظه رواه عمران بن حصين رضي الله عنه أخرجه البخارى في كتاب فضائل أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم باب فضائل أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم....رقم (۳۶۵۰)-

 ^{4) (}شرح ابن بطال (ج۵ص۹۱)-

توله: ثمياتي زمان، فيقال: فيكم من صحب صاحب أصحاب النبي صلى

الله علیه وسلم ؟ فیقال: نعم ، فیفتح: بیا به یو وخت داسی راخی چه وئیلی کیږی به چه په تاسو کښی داسی څوک شته چه هغه نه نبی کریم نظر اصحابو د یو ملګری صحبت موندلی وی؟ نو وئیلی به شی چه او ، نو هغوی ته به هم فتح نصیب کیږی.

په دې غبارت کښې چه د کومو حضراتو ذکر کړيشوېدې د هغوي نه تبغ تابعين مراد دی چه د هغوي په برکت سره په هم اهل اسلام ته فتح او کامراني حاصليږي.

د حدیث د توجمه الباب سره مطابقت ترجمه الباب سره د حدیث مناسبت به دی معنی دی چه هرهغه سری چاچه د نبی اکرم نظیم صحبت اختیار کرو یا د نبی اکرم نظیم د صحابو صحبت اوموندلو یا د نبی اکرم نظیم د صحابو د اصحابو صحبت نی اختیار کرو نو دا دری قسمه حضرات دی یعنی صحابه کرام رضوان الله علیهم اجمعین، تابعین او تبع تابعین مختیم نوهم د دی حضرات و به برکت به نصرت او کامیابی حاصلیری، خکه چه دا حضرات د دنیابه کارونو کنبی کمزوری اود آخرت به کارونو کنبی کلك وو. علامه عینی مینی فرمائی: «مطابقته للترجمة من حیث ان من صحب النبی صلی الله علیه وسلم ومن صحب اصحاب النبی صلی الله علیه وسلم ومن صحب صاحب اصحاب النبی صلی الله علیه وسلم وهم ثلاثة: الصحابة، والتابعون، واتهاع وسلم ومن صحب صاحب اصحاب النبی صلی الله علیه وسلم وهم ثلاثة: الصحابة، والتابعون، واتهاع

٢٥- بَاب: لَا يَقُولُ فُلَاتٌ شَعِيدٌ

التابعين، حصلت بهم النصرة لكونهم ضعفاء فها يتعلق بأمرال دنيا أقوياء فها يتعلق بأمرالاخرة) (١)

دَترجمة الباب مقصد: دلته امام بخاری مُعَالَيْ دا فرمائی چه د یو سری متعلق هم په یقینی توګه دا نشی وئیلی چه دا شهید دی ځکه چه د قطعی او یقینی علم لار وحی ده او ښکاره خبره ده چه دا لار اوس بند ده.(۲)

حافظ ابن حجر مُنظِمُ فَرمائي لکه چه امام بخاري مُنظِمَّ دَ حضرت عمر ﴿ الْمُعْرُودَ دَ حديث طرف ته اشاره کړيده، چه هغه يو ځل خطبه ورکولو وخت کښې فرمائيل:

((تقولون في مغازيكم: قلان شيهد)، ومأت قلان شهيدًا، ولعله قديكون قداً وفي راحلته، الالاتقولوا ذلكم، ولكن قولوا كما الله عليه وسلم: من مأت في سبيل الله أو قتل فهو شهيد))(٣)

تاسو خُلَق په خپلو جنګونو کښې واینې چه فلانکې شهید شواوفلانکې شهیدشو مړشو،نو کیدیشی چه هغه په خپله سورلئی باندې ډیر بوج بارکړې وی، واورنی دا مه وائي بلکه داسې وائی لکه چه رسول الله ناپیم فرمائیلی چه څوك د الله تعالی په لارکښې مړشو یا قتل شونو هغه شهید دي.

۱) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٧٩)-

۲) (فتح الباری (ج عَص ۹۰) وعمدة القاری (ج ۱۸۰ ۱۸۰)-

۳) (مسند الإذام أحمد (ج۱ص٤١) وفتح البارى (ج۶ص٩٠) والإحسان بترتيب صحيح ابن حبان (ج٨ص٨٩) كتاب السبر، ذكر ايجاب الجنة لمن مات في سبيل اق.... رقم (٤٩٠١)-

[٢٥٨] قَالَ أَبُوهُرَيْرَةَ عَنْ النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَنْ يُجَاهِدُ فِي سَبِيلِهِ وَاللَّهُ

أَعْلَمُ عِمْنُ يُكُلِّمُ فِي سَبِيلِهِ [ر:٢٦٢٩١٢٦٥]

حضرت ابوهریره گائز د نبی کریم نظام روایت کهی چه نبی تایا فرمائیلی دی چه الله تعالی ته په ښه شان سره معلومه ده چه د هغه په لارکښې څوك جهاد كوی او هم الله تعالى ته ډير

علم دی چه د هغه په لارکښی څوك زخمی کیږی. د مد واپئي کومه د کوره تعلیق مقصد پورته ذكر شوې تعلیق امام بخاری و شهید دې، د هغې د اثبات دعوی کړیده چه د چا باره کښې دا مه واپئي چه فلانکې یقینی شهید دې، د هغې د اثبات د پاره نقل کړی دی. د حضرت ابوهریره الله و په تعلیق کښې دا راغلی دی چه د الله تعالی په لارکښې څوك جهاد کوی یا څوك صرف د الله تعالی په لارکښې زخمي کیږی دا هم الله تعالی ښه پیژنی ځکه چه د هغه د معرفت تعلق زړه او نیت سره دې او د نیتونو حال د الله تعالی نه علاوه چاته معلومیدې شی؟ نو د یو سړی متعلق هم دا نه دی وئیل پکار چه فلانکې شهید دې.

دمذکوره تعلیق تخریج: دَحضرت ابوهریره نگاتی پورته ذکر شوی تعلیق دراصل په هغه دوو مختلفو احادیثو مشتمل دی کوم چه امام بخاری کیاتی هم په یو تعلیق کنبی رایوخائ کړل، دَ تعلیق رومبی جمله یعنی ((الله اعلم بهن یجاهدی سبیله)) موصولاً ((کتاب الجهاد))(۱) په شروع کنبی حضرت سعیدبن المسیب کیاتی طریق سره تیرشوی دی اود تعلیق دوئمه جمله ((والله اعلم بهن یکلم فی سبیله)) هم ((کتاب الجهاد)) (۲) په شروع کنبی د اعرج کرای په طریق سره موصولاً تیرشویدی.

١) (صحيح البخاري كتاب الجهاد باب أفضل الناس مؤمن معاهدبنفسه.... رقم (٢٧٨٧)-

٢) (صعيح البخاري كتاب الجهاد باب من يخرج في سبيل الله عزوجل رقم (٣٠٠٣)-

٣) (صحيح البخاري كتاب الجهاد باب من قاتل لتكون كلمة الله هي العليا رقم (٢٨١٠)-

٤) (فتح البارى (ج٤ص٩٠)-

[ساء] حَدَّثَنَا فَتَيْبَةُ حَدَّثَنَا يَعْفُوبُ بُنُ عَبْدِ الرَّحْنِ عَنْ أَبِى حَازِمِ عَنْ سَعْلِ بُنِ سَعْدِ النَّاعِدِي () رَضِى اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْتَعَى هُوَ وَالْمُشْرِكُونَ الْى فَافْتَنُوا فَلَمَّا مَا أَنْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى عَسْكَرِهِ وَمَالَ الْاَخْرُونَ الْى عَنْكَرِهُمُ الْمَعْابُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلْ لَا يَدَهُمُ فَشَاذَةً وَلَا فَافَّةً إِلَا الْمَعْرَافُ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلْ مِنْ الْقَوْمِ أَفَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمْ الْمَوْرَةُ مَعْهُ وَالْمَالُونَ النَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمْ اللَّهِ صَلَّى اللَّهِ صَلَّى النَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمْ الْمَوْرَةُ مَعْهُ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَقَالَ الْمَوْتَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَا اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَلَا اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَقَالَ الْمُوتُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَقَلَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَا اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَالُونَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَمْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَى النَّارِ فَاعْطَمَ النَّاسُ وَهُو مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَى الْأَرْضِ وَذُبَابُهُ بَيْنَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ عَلَى الْمَالُ الْمَوْتُ فَوْمَعُ مَنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ عَلَى الْمَالُونَ الْمُؤْلُ الْمُؤْمَلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمَلْ الْمَالُونَ الْمَوْمَ الْمَالُولُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَا اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الْمَالُونَ الْمَالُولُ الْمَالُونَ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمُولُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ

تراجم رجال

ا- قتیبه: دا شیخ الاسلام ابو رجاء قتیبه بن سعید ثقفی میشه دی د دوی حالات ((کتاب الایمان)بابانشاءالسلام من الایمان)) لاندی تیرشوی دی. (۲)

r-يعقوب برعبد الرحمر: دا يعقوب بن عبدالرحمن بن محمد بن عبدالله الاسكندراني

-- ابوحازم: دا مشهور زاهدابوحازم سلمه بن دینارمدنی رکیا دی. (۴)

٣- سيمل بر . سعد الملك دا مشهور صحابي رسول حضرت سهل بن سعد الملك دي. (٥)

ا (قوله:عن سهل بن سعد الساعدى رضى الله عنه: الحديث أخرجه البخارى أيضًا فى كتاب المغازى باب غزوة خيبر رقم (٣٤٢٠) وكتاب الرقاق باب الأعمال بالخوتيم وما يخاف منها رقم (٤٤٩٣) وكتاب القدر باب العمل بالخواتيم رقم(٤٤٠٧) ومسلم كتاب الإيمان باب غلظ تحريم قتل الإنسان نفسه رقم (٣٠٥) وكتاب القدر باب كيفية خلق الأدمى فى بطن أمه وكتابة رزقه وعمله، وشقاوته وسعادته رقم (٤٧٤٥) ٢) (كشف البارى (ج٢ص ١٨٩) -

٣) (د دوى حالاتودَپار، او كورئ كنا ب الجمعة باب الخطبة على المنبر-

أ (د دوى حالاتودَپاره اوګورئ کتا ب الوضوء باب غسل المرأة أباها الدم عن وجهه-

۵) (حواله بالا۔

قوله: أن رسول الله صلى الله عليه وسلم التقى هو والمشركون فأقتتلوا فلما مال رسول الله صلى الله عليه وسلم إلى عسكرة، ومأل الآخرون إلى عسكرهم: حضرت سهل بن سعد ساعدى المائي نه مروى دى چه رسول الله عليه و ملكرو

عسکرهم : حضرت سهل بن سعد ساعدی کاتو به مروی دی چه رسون الله که و املکرو سره) د مشرکانو سره مخامخ شو نو هغوی په خپل مینځ کښې ښه جنګ اوکړو، بیا چه کله رسول الله ناه خپل د ډیرې ځائ ته واپس شو او مشرکان خپلو ځایونو ته.

د حدیث دَمضمون تعلق کومی غزا سره دی؟ حضرت سهل بن سعد کات حدیث کنی ذکر شوی واقعه د کومی یوی غزوی سره متعلق ده، چه کومه غزوه وه په دی کنیی د محدثینو اختلاف دی. د علامه ابن جوزی پیشی خیال دی طرف ته دی چه دا واقعه د غزوه احد ده، خو حافظ ابن حجر پیشی او علامه عینی او نورو بعضو حضراتو خیال دی چه دا واقعه د غزوه خیبر سره متعلق ده. (۱)

امام بخاری مرکزی و حضرت سهل بن سعد التاتی و حدیث په ((کتاب الجهاد)) نه علاوه ((کتاب الجهاد)) نه علاوه ((کتاب البغازی)) کښی باب غزوه خیبر (۲) لاندې هم ذکر کړیدې، د کوم نه چه معلومیږی چه د هغه دهن هم دغه دې چه دا واقعه د غزوه خیبرده (۳)

قوله: وفي أصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم رجل لايدع طم شأذة ولافأذة إلا اتبعها، يضربها بسيفه: اود رسول الله تراخ به اصحابوكنس يوسري وو چه د مشركانو راتختيدلي يو سړى به ئى هم نه پريخودو مگردا چه هغه پسى به وو او هغه به ئى پخپله توره وهلو.

دلته د ((رجل)) نه مراد قُزمان ظفری دی اود هغه کنیت ابوالغیداق وو. (۴) په پورته ذکر شوی عبارت کښی د هغه سړی شجاعت او بسالت بیان کړیشویدی چه هغه به په میدان جنګ کښی چرته هم تلو د خپلی بهادرئی نښی به ئی لګولی یو تختیدلی سړی به هم د هغه نه نه بچ کیدلو.

د شاذه او فاذه معنی علامه خطابی محطی فرمائی چه ((شاذة)) هغی ته وائی چه د مخکینی نه په قوم کښی شامل وو بیاد هغی نه جدا شو او ((فاذة)) هغی ته وائی چه د سرنه په قوم کښی هډو شامل نه وی. دا اوخودلی شو چه قزمان ظفری به چه چا پسی هم شو د هغه د ختمولو نه پس به ئی ساه اخستله. (۵)

۱) دَ تفصیل دَپاره او گوری کشف الباری کتاب المغازی (ص۲۱و۲۲) وعمدة القاری (ج ۱۴ ص ۱۸۰)

٢) (صحيح البخاري كتاب المغازي باب غزوه خيبر رقم (٢٠٣ و ٢٠٠ ٤)-

٣) (كشف الباري كتاب المغازي (ص٢٢)-

٤) (فتح البارى (ج٧ص٧٢٤) وعمدة القارى (ج ١٨١ص ١٨١)-

۵) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٨١)-

و علامه داودی محطی و ینا ده چه ((شاخة)) نه لوئ څیزونه او ((فاخة)) نه واړه څیزونه مراد دی او مطلب دا دې چه هغه به د هیڅ قسم سختنی اونرمنی پرواه نه کوله. (۱)

بيا د بعضو حضراتو رائي داده چه ((شاذقا، فاذقا)) کښې چه کومه تا ، ده هغه د مبالغې ده، لکه د ر(ملامق، نسابق) تا ، ده. (۲)

خود بعضونوروحضراتو وینا ده چه دواړه لفظونه موصوف محذوف یعنی د ((نسبة)) صفت دی اود عبارت تقدیرداسی دی ((لایدم لهم نسبه شافاً ولافافاً)) (۳)

قوله: فقالوا: ماأجزاً منااليوم أحدكما أجزافلان: صحابه كرام رضوان الله عليهم اجمعين فرمائيلي چه نن زمونو د طرف نه يوداسي سړې اونه جنګيدلو لکه چه فلانکې سړې اوجنګيدلو.

د باب په روایت کښې (افغالوا) راغلی دې او ظاهره ده چه ددې ضمیر مستتر صحابه کرام رضوان الله علیهم اجمعین طرف ته راجع دې لیکن د کشمیهنی نسخه کښې د کتاب المغازی په روایت کښې (اقلت) ذکردې که دا روایت صحیح او محفوظ دې نو قائل به حضرت سهل بن سعد افات وی (۴)

قوله: فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: أما إنه من أهل النار: نو رسول الله تلطي النار: نو رسول الله تلطي الفرمائيل جه واورثي هغه د دوزخيانونه دي

یعنی چه کله هغوی تالیم آوکتل چه صحابه کرآمو اگاتی مسلسل د هغه سری بار بار تعریفونه کول نو هغوی تالیم د وخی په ذریعه د هغه د جهنمی کیدو اوفرمائیل ځکه چه هغه سړې باطنًا منافق وو او خپل منافقت ئی پټ کړې وو (۵)

کلمه ((اما)) د میم د تخفیف سره استفتاحیه ده، په دې وجه د دې نه پس چه کوم ((اله)) همزه ده هغه مکسور دي. (۶)

قوله: فقال رجل مر القوم: أناصاحبه: نو په حاضرينو کښې يو سړی اووئيل زه به هغه سره آوسيږم.

((رجل)) نه مراد حضرت اكثم بن ابى الجون الخزاعى المنظم مراد دى. په طبرانى كښې د هغوى روايت دى چه : ((قال: قلنا: يارسول الله، فلان يجزئ، في القتال، قال: هوفي النار، قلنا: يارسول

١) (حواله بالا-

۲) (حواله بالا وفتح الباري (ج٧ص٧٧٤)-

٣) (حواله بالا-

^{2) (}إرشاد السارى (ج٥ص٩٢) و انظر كشف البارى كتاب المغازى (ص٢٣)-

۵) (ارشاد الساری (ج۵ص۹۲)-

٤) (حواله بالا-

الله، إذا كان فلان في مهادته واجتهاده ولين جاديه في النار، فأين بعن؟ قال: ذلك إعهات النفاق، وهوفي النار،

قال: فكناتتخظمليه في القتال)) (١)

یعنی حضرت اکثم اللغ فرمانی چه موند اووئیل یا رسول الله فلانکی خو په جنگ کښی کمال ښکاره کړو. نو نبی اکرم علم اوفرمائیل هغه دوزخی دې. نو موند (په حیرانتیا) اووئیل یارسول الله چه یو سړې د خپل عبادت، محنت او نرم طبیعت نه باوجود دوزخی دې نو موند به چرته یو؟ نو هغوی علم اوفرمائیل چه دا ټول دنفاق خباثت او خرابې ده او هغه دوزخی دې. حضرت اکثم اللغ فرمائی چه موند ټولو په جنګ کښې په هغه نظر ساتلو.

د دې ټول تفصيل نه به معلومه شوې وي چه حضرت اکثم اللي ولې فرمائيلې وو چه (رادا صلحمه)) چه زه به هغه سره اوسيږم ځکه چه د هغه کار ظاهري ښه وو، کله چه رسول الله تهم داخودل چه هغه دوزخي دې نولازمي خبره ده چه ددې به عجيبه سبب وي د څه په وجه چه د هغه په دوزخيانوکښې شمير اوشو. (۲)

((قال: فخرج معه، كلبا وقف وقف معه، وإذا أسرع أسرع معه، قال: فجرح الرجل جرحا شديدًا، فاستعمل الموت، فوضع نصل سيفه فالأرض وذبا به بين ثدييه، ثم تحامل على سيفه فقتل نفسه))

حضرت سهل نگائو فرمائی چه هغه (اکثم) هغه سره اووتلو، کوم ځای کښی چه به هغه ولاړ وو هلته به دې هم اودریدو او کله به چه هغه منډې وهلی نو ده به هم هغه سره منډه وهله، حضرت سهل کانو وائی بیا هغه سړې سخت زخمی شو نو هغه په مرکیدو کښې تندی اوکړه. د خپلی تورې موټی ئی په زمکه او د هغې څوکه ئی د خپلو دواړو سینو په مینځ کښې کیخودله او په توره راټیټ شو او خپل ځان ئی قتل کړو.

مطلب دا چه حضرت اکثم بن ابی الجون کانو هم هغه سره وو، نو چه کوم ځائ به هغه اودریدو نو دی به هم اودریدو، او چه کوم ځائ کښی به هغه تندی کوله او منډه به نی وهله نو حضرت اکثم کانو به هم منډه وهله، د هغه د حال مشاهده ئی مقصد وو، آخر هغه منافق سړې په جنګیدو کښی زخمی شو او د زخمونو طاقت ئی نشو راوړلی نو په دې وجه ئی په مړکیدو کښی تندی اوکړه او ځان ئی پخپله مړ کړو.

نصل سیفه کښی نصل نه څه مراد دی؟ حضرت کنګوهی سینه د ((نصل)) دوه معنی مرادی بیان کړی دی:

①د (رنمل) نه مجازاً د تورې مقبض (يعني موټې) مراد دې. د دې وجه دا ده چه په اصل کښې ((نمل)) مطلقا د تورې اوسپنې ته وائي (۳)

نو علامه طاهر پتینی هندی مید فرمانی ((النسال: وهو صدید قالسیف)) (۴)

١) (فتح الباري (ج٧ص٤٧٣) والطبراني في الكبير (ج١ص٢٩٤) ومجمع الزوائد (ج٧ص ٢١٤)-

۲) (ارشاد الساري (ج۵ص۹۲) وشرح النووي على مسلم (ج۱ص۷۳)

۳) (لامع الدراري (ج٧ص٢٣٧)-

٤) (مجمع بحار الأنوار (ج ٤ ص٧١۶)-

ر (رئسل سیفه)) نه پوره توره مراد ده (۱) حضرت شیخ الحدیث محمد زکریا صاحب کنده فرمائی چه د د دې تائیدد (رکتاب البغازی)) د دې روایت نه هم کیږی کوم کښې چه ((فوضع سیفه بالارس ۱۰۰۰)) راغلی دی (۲)

آور (زبهاب) دَ تورې مخ ته وائی یا هغه حصی ته دکوم طرف نه چه وارکولی شی (۳)

قوله: فخرج الرجل إلی رسول الله صلی الله علیه وسلم فقال: أشهر أنك

رسول الله، قال: وماذاك؟ قال: الرجل الذي ذكرت آنفا أنه من أهل هغه سپې (یعنی حضرت اکثم فالله) و قلت: أنا لکم به، فخرجت فی طلبه... فقتل نفسه:

هغه سپې (یعنی حضرت اکثم فالله) رسول الله نظم له راغلو او ونی ونیل چه زه مواهی ورکوم چه ته د الله رسول ئی. هغوی نظم اوفرمائیل څه اوشو ؟وئی وئیل چه تاسو د کوم سپی باره کښې اوس فرمائیلی وو چه هغه دوزخی دې نو خلقودا خبره ډیره سخت اومین له ما وئیل چه زه تاسوله اطمینان درکوم، زه دهغه په نگرانئی کښې لاړم بیا هغه سخت زخمی شو او هغه د مرمی د پاره تندی اوکېه اود خپلی تورې موټی ئی په زمکه او د هغی څوکه نی د خپلو دواړو سینو په مینځ کښې کیخوده اوپه توره راټیټ شو او خپل ځان ئی قتل کړو. په ذکر شوی عبارت کښې حضرت اکثم فالله نبی کریم نظم ته د هغه منافق د خودکشی کولو خبر ورکوی چه کله هغوی نظم هغه دوزخی اومرخولو نو د حضور نظم وینا په نورو کولو خبر ورکوی چه کله هغوی نظم ته بیادر سپې څنګه دوزخی کیدې شی؟ نو ما د هغوی د خلقو سخته اولکیدله چه دومره بهادر سپې څنګه دوزخی کیدې شی؟ نو ما د هغوی د مطمنن کولو د پاره اووئیل چه زه د هغه باره کښې اوس تاسو خلقو ته خبر راوړم... بیا چه هغه څه لیدلی وو هغه ئی نبی کریم نظم ته بیان کړل او د هغوی نظم د برحق نبی کیدو هوی نیم د برحق نبی کیدو هواهی ئی ورکړه.

ثمتحامل... د تحامل معنى مائل كيدو او ټيټيدو ده.(۴)

يو اعتراض اود هغی جواب: علامه كرمانی منظم دلته يو اعتراض نقل كړې دې، د اعتراض تقرير دا دې چه خودكشى كول خو معصيت دې اود اهل سنت مشهور او مسلمه قاعده ده چه (دالعهدلايكفي بالمعصية) نو بيا خو هغه خودكشى كونكې جنتى دې ځكه چه هغه مؤمن دې نو رسول الله تاليم څنګه اوفرمائيل چه هغه دوزخى دې؟ (۵)

دُدَى آعتران ذكر كُولونه پس هغه پخپله د دې مختلف جوابونه وركړى دى:

۞ كَيديشى چەرسول الله عَلَيْظ ته دُوخى په ذريعه دُ دې خبرې علم شوې وى چه هغه مؤمن

۱) (لامع الدراري (ج۲ص۲۳۷)-

۲) (تعلیقات لامع الدراری (ج۲ص۲۳۷)-

٣) (إرشاد الساري (ج٥ص٩٣) وعمدةالقاري (ج١٤ ص١٨١)-

پا (عمدة القارى (ج ١ ١ص ١٨١) -

۵) (شرح الكرماني (ج١٢ ص١٤٣)-

نه دې په دې وجه د هغه د دوزخي کيدو ئي او فرمائيل.

- کاره خبره ده چه (راستحالة المعصية كفر))
- و یا د هغه د دورخی کیدو مطلب دا دی چه هغه د هغه گناه گارانونه دی چه دوزخ کښی به داخلیږی بیا به د هغه ځائ نه راوځی. (۱)

بعد علامه عينى وينه و علامه كرمانى دا اعتراض او د دې جوابونه تكلف محر ولي دې او ليكن علامه عينى وينه و علامه كرمانى دا اعتراض او د دې جوابونه تكلف محرودانى المنافقين او على قوله: ماقاتلت على دين، لما تكلف به ن ه التحديدات) (۲)

که کرمانی بُرَنْهُ ته دَ دی خبری علم وی چه دَ هغه شمیر په منافقانوکښی وو نو هغه ته به دَ دی دی قول خبروو چه زه دَ یو دین حفاظت کولو دَ پاره نه جنګیږم نو هغه ته به دَ دی تردیداتوهډو ضرورت نه وو.

((ققال رسول الله صلى الله عليه وسلم عند ذلك: إن الرجل ليعبل عبل أهل الجنة في ايد وللناس، وهومن أهل النار، وإن الرجل ليعبل عبل أهل النار في ايد وللناس، وهومن أهل الجنة))

نو په دې موقع رسول الله ناهم اوفرمائيل چه يو سړې په ظاهره د خلقو په خيال کښې د جنتيانو کار کوي،خو هغه مآلاً د دوزخيانونه وي او يو سړې د خلقو په خيال کښې په ظاهره د دوزخيانو کارکوي حالانکه هغه مآلاً د جنتيانو نه وي.

((فيه: التحذير من الاغترار بالأعبال، وأنه ينبغى للعبدان لايتُكل عليها، ولايركن إليها، مخافة من القلاب الحال للقدر السابق، كذا ينبغى للعاص أن لايقنط، ولغيرة أن لا يُقنطه من رحبة الله تعالى)) (٣)

یعنی حدیث کښی د اعمالو په وجه دهوکه خوړلو ذکر دی او دا چه بنده له پکار دی چه صرف په نیکو اعمالو دی تکیه نه کوی او نه دی بهروسه کوی، هسی نه چه په وړاندینی تقدیر سره د هغه دا ښه حالت په خراب حال باندې بدل نشی، دغه شان ګناهګار بنده له هم پکار دی چه ناامیده کیږی دی نه او د نورو د پاره هم دا مناسب دی چه هغوی د الله تعالی د رحمت نه ناامیده نه کړی.

۱) (شرح الكرماني (ج۱۲ص ۱۶٤)-

۲) (عمدة القارى (ج ٤ أص ١٨١)-

٣) (شرح النووى (ج١ص٥٧)-

د مدیث د ترجمه الباب سره مطابقت دلته دا آشکال پیداکیږی چه د ترجمه الباب د حدیث سره مناسبت نشته ځکه چه ترجمه خو په دې باب قائمه کړیشویده چه چاته بغیر د تحقیق نه شهید مه وائی. د دې خبرې خو په حدیث کښې د سرنه څه ذکر نشته.

نود حدیث ترجمهٔ الباب سره مناسبت به قول د علامه ابن المنیر کید دی معنی دی چه صحابه کرامونگان هغه سری (قزمان) د باره د جهاد د وجه نه دا گواهی ورکری وه، اوس که هغه قتل شوی وی نو لازمی خبره وه چه صحابه کرامو به د هغه د شهادت گواهی ورکوله او هغه به نی شهید گرخولو نو چه کله دا خبره معلومه شوه چه د هغه قتال او جهاد د الله تعالی د باره نه وو بلکه هغه د قومیت د وجه نه جنگیدلو نو معلومه شوه چه هر مقتول فی الجهاد ته شهید نشی وثیلی. ځکه چه د دی احتمال دی چه هغه هم د دغه سری (قزمان) په شان وی. دا جدا خبره ده چه هغه ته په احکام ظاهری کښی د شهید حکم ورگولی شی. همدغه وجه ده چه سلفو د بدر او احد وغیره مقتولین شهیدان گرخولی دی او دینه مراد حکم ظاهری دی چه په غالب گمان باندی مبنی دی. (۱)

22-بَأَب:التَّغُرِيضِ عَلَى الرَّمْيِ

د ترجمه الباب مقصد دلته امام بخاری ایجاد کشو ویشتیلو ترغیب ورکوی ځکه چه دا په جهاد کښی په کار راتلونکی څیز دې او په دې سره د دښمن په مقابله کښې قوت حاصلیږی نو په دې وجه غشی ورول زده کول پکار دی (۲)

قوله: وَقُولِ اللَّهِ تَعَالَى وَأَعِدُّوا لَهُمُ مَا اسْتَطَعْتُمُ مِنْ قُوَّةٍ وَمِنْ رِبَاطِ الْخَيْلِ تَوْهِ بُونَ بِهِ عَدُو اللَّهِ وَعَدُو اللَّهِ وَعَدُو اللَّهِ وَعَدُو اللَّهِ عَالَى قول دَ دى (كافرانو) دَ باره چه څومره قوت او اسونه ستاسودپاره ممكن وى تياركړئى په دې سره به تاسو دَ الله تعالى دښمنان ويروئى.

آیت مبارک کښی قوة نه څه مراد دی؟ حافظ صاحب او علامه عنی مراد و مائی چه امام بخاری د ترجمه الباب په ذیل کښی مذکوره آیت مبارك ذکر کولو سره دې خبرې طرف ته اشاره کړې ده چه د ((قوت)) نه مراد ((رمی)) ده ، ځکه چه په یوحدیث کښی د ((قوت)) تفسیر په ((رمی)) سره کړیشویدې . حضرت عقبه بن عامر جهنی نگات (۳) نه مروی دی ((سبعت رسول الله صلیه وسلم وهوعلی المنبریقول: (واعدوالهم مااستطعته من قوق) الان القوق الرمی - ثلاث (۴)

۱) (فتح الباري (ج۶ص ۹۰)وعمدة القاري (ج ۱۴ص ۱۸۰)-

۲) (عمدة القارى (ج ۱ ۱ص ۱۸۱)-

٣) (الحديث أخرجه مسلم كتاب الإمارة باب فضل الرمى والحث عليه رقم (٤٩٤۶) وأبوداؤد كتاب الجهاد باب في الرمى رقم (٣٠٨٣) وابن ماجه أبواب باب ومن سورة الأنفال رقم (٣٠٨٣) وابن ماجه أبواب الجهاد باب الرمى في سبيل الله رقم (٢٨١٣)-

٤) (فتح الباري (ج عُص ٩١) وعمدة القارى (ج ١٤ ص ١٨١)-

د رمی تخمیص بالذکر وجه: علامه قرطبی ایت مبارك كښی د ((قوت)) تفسیر ((رمی)) سره كول او ((رمی)) مخصوص بالذكر كولو وجه بیانولو سره فرمائی:

روانها فسمالقولا بالرمى، وإن كانت القوة تظهر براعداد غيرة من الات الحرب، لكون الرمى أشد دكاية في العدو وأسهل مؤنة، لأنه قد يرمى رأس الكتيبة، فيصاب فينهزم من خلفه)) (١)

یعنی نبی اکرم ظفظ د ((توت)) تفسیر ((رمی)) سره کریدی، سره د دی چه د ((توت)) اظهار د جنگ نورو آلاتو تیاری سره هم کیږی خود دی وجه دا ده چه د غشو ورولو اثر په دښمن باندی سخت او د غشو بوج په خپل ځان باندی سپك وی ځکه چه کله ناکله د لښکر په وړاندینئی حصه باندی غشی ورولی کیږی نو هغوی د غشو ښکار شی او ماتی خوړلوسره روستو تختی او د تیختی لار اختیاروی.

علامه طیبی و پورتنی آیت نحوی تعلیل کولوسره فرمائی: ((مااستطعتم)) کښې ((ما)) موصوله ده او د دې عائد یعنی ضمیر محذوف دې او ((من توق)) د دې د پاره بیان دې او مراد ترې نفس قوت دې (۲)

نور فرمائی چه په دی بیان آو مبین کښی اشاره دی خبری ته ده چه دا د غشو ورولو تیاری بغیر د ممارست او اوږد مشق پابندئی نه بغیر نه صحیح کیږی او د جنگ په آلاتوکښی د کمان او غشی نه علاوه بل څه څیز نشته په کوم کښی چه دا دومره ممارست او پابندی ضروری وی، په دې وجه نبی اکرم تالظ بار بارد ((توة)) تفسیر ((رمی)) سره فرمائیلی دی. (۳) او د آیت مبارك سره متعلقه بعض نورو تفصیلات ((باب من احتبس فرسانی سبیل الله)) لاتدی په ماقبل کښی راغلی دی.

[٢٢٣٠] حَدَّثَنَا عَبُدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا حَاتِمُ بُنُ إِسْمَاعِيلَ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ قَالَ سَعِعْتُ سَلَمَةَ بْنَ الْأَكُوعِ (٣) رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ مَرَّ النّبِي صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمُوا يَنِي اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ النَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ النَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا لَكُمُ لَا تَرْمُونَ قَالُوا كَيْفَ نَرْمِي وَأَنْتَ مَعَهُمُ قَالَ النّبِي صَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمُوا فَأَنَا مَعَكُمُ كُلِّكُمُ لَا تَرْمُونَ قَالُوا كَيْفَ نَرْمِي وَأَنْتَ مَعَهُمُ قَالَ النّبِي صَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمُعَالَمُ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمُوا فَأَنَا مَعَكُمُ كُلِكُمُ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمُعَالِمُ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللّهُ عَلْمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ عَلَيْهِ وَسُلَمَ عَلَيْهِ وَسُلَكُ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَسُلَمَ الْتَعْمُ الْمُعَالِمُ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلْمَ اللّهُ الللّه

١) (الجامع لأحكام القرآن (ج٨ص٣٧)-

۲) (شرح الطيبي (ج٧ص ٤ ٣١)-

٣) (حواله بالا-

٤) (قوله: سلمة بن الأكوع رضى الله عنه: الحديث أخرجه البخارى أيضًا فى كتاب أحاديث الأنبياء باب قول الله تعالى ﴿واذكر فى الكتاب إسمعيل إنه كان صادق الرعد ﴾ رقم (٣٣٧٣) وكتاب المناقب باب نسب البمن إلى إسمعيل منهم: أسلم بن أفصبى بن حارثة بن عمرو من خزاعة رقم (٣٥٠٧)__

تراجم رجال

-عبدالله بر. مسلمه: دا ابوعبدالرحمن عبدالله بن مسلمه بن قعنب حارثی کافی دی.
دوی تذکره ((کتاب الإیمان بهاب من الدین الفهار من الفتن)) لاندی تیره شویده. (۱)

- حاتمبر اسماعیل: دا ابواسماعیل حاتم بن اسماعیل کوفی کید دی. (۲)

- یزید بر ابی عبید: دا یزید بن ابی عبید مولی سلمه بن الاکوع کید دی.

- سلمه بر الاکوع: دا مشهور صحابی حضرت سلمه بن الاکوع کافی دی. (۳)

وفد: قال: مرالنبی صلی الله علیه وسلم علی نفر من أسلم ینتضلون:
حضرت سلمه بن الاکوع کافی فرمائی چه نبی اکرم کافی خلقو سره خواکی تیرشو په دی وخت کنبی چه هغوی غشی ویشتل.

راسلم نه مراد بنو اسلم دی، چه د عربو مشهوره قبیله وه. (۴)

رونته انتضال نه مشتق دی او د دی معنی د غشو ویشتلو ده. (۵) او دا جمله فعلیه ماقبل دپاره حال واقع کیږی. (۶)

نوله: فقال النبى صلى الله عليه وسلم: ارموابنى إسماعيل فإن أباكم كان راميا ارمواوأنامع بنى فلان: نبى مَيْئِم فرمائيلى اى بنواسماعيل! غشى اولئى فكه چه ستاسو پلاربه هم غشى ويشتل، غشى اولئى او زه د فلانكى قبيلى سره يم. بنى فلان نه څوګ مراد دىنه «دانا مع بنى قلان» راغلى او مراد ددينه «ابن

الأدرم) دی اود ابن الادرع نوم محجن دی. صحیح ابن حبان (۷) او مسند بزاز (۸) کښی د حضرت ابوهریره مخلی روایت کښی (والنامه ابن الادرم) الفاظ وارد شوی دی. د دې نه زیات صریح روایت د طبرانی دې کوم چه حمزه بن عمرو الاسلمی نه مروی دې، په دې کښی

الفاظ دا دی: ((واکامع محجن بن الأرع)) (۹)

۱) (کشف الباری (ج۲ص۸۰)-

۲) (دوى حالاتو دَ پاره اوګورئ كتاب الوضوء باب بلاترجمة بعد باب استعمال فضل وضوء الناس-

٣) (دُدي دواړو حالاتو د پاره اوګورئ کتاب العلم باب إثم من کذب على النبي صلى الله عليه وسلم

^{4) (}عمدة القاري) ٤ (ص ١٨٢) وفتح الباري (ج عص ٩١)-

٥) (حواله بالا-

^ع) (ارشاد الساری (ج۵ص ۹۶)-

۷) (الأحسان بترتيب صحيح ابن حبان (ج٨ص٩٩) كتاب السير ذكر اسم الرواة الذين قال لهم النبي صلى الفي الما النبي على

الله عليه وسلم هذالقول رقم (٤۶٧٥)-

٨) (فتع البارى (ج٤ص ٩١)-

٩) (مجمع الزواند للهيشي (ج٥ص ٢۶٨)-

خود ابن منده مختلخ خيال دا دې چه ابن الادرع نوم سلمه دې او نور فرمانۍ چه ادرع خو لفب دې او اصل نوم د هغه د پلار ذکوان دې. (۱)

ليكن راجح قول هم رومبي دي. علامه خزرجي مُطَالَح فرمائي ((محجن بن الأدرع ...وهوالناي قال فيه النبي صلى الله مليه وسلم: ارموا وأنامع ابن الأدرع)) (٢)

عد بالله عنه الله و ال

هغه دُ نبی کریم تُراکِم نه روایت کوی اود هغه نه حنظله بن علی الاسلمی، رجاء بن ابی رجا، الباهلی او عبدالله بن شقیق اینه وغیره د حدیث روایت کوی (۴)

آخرعمرکښې بصره کښې آوسيدو، هم هغوی د مسجد بصره حدبندی وغيره کړې وه. (۵) د امام ابن سعد سند سعد سند مطابق هغه د وفات کيدونه وړاندې مدينې منورې ته واپس راغلې وو او هم هلته د حضرت معاويه الني په دور خلافت کښې وفات شو. (۶)

امام بخاری مینی په ((الادب المغرد)) کښې او امام ابوداود او نسانی کینی په خپلو خپلو کتابونو کښې د هغه نه روایتونه اخستې دی. (۷)

هغه د نبی کریم تالیم تول پنځه احادیث روایت کړی دی او اصحاب اصول سته د هغې نه دوه روایتونه اخستی دی.(۸)

قوله: قال: فأمسك أحد الفريقين بأيديهم، فقال رسول الله صلى الله عليه

وسلم: مالكم لاترمون؟ قالوا: كيف نرمي وأنت معهم؟: راوى وائى نو دوئم فريق خپل لاسونه بند كول رسول الله ترائم اوفرمائيل څه اوشو تاسو غشى ولى نه اولئى؟ هغوى اووئيل مونږغشى څنګه اولو كله چه تاسو دوئمى ډلى سره ئى.

مطلب دا دې چه کله نبی اکرم ځو او اوفرمائیل چه زه خو فلانکې یعنی محجن بن ادرع سره یم نو دونمې ډلې غشی ورول بندکړل، نو رسول الله ځو او هغوی نه د لاس بندولو باره کښې تپوس او کړو چه څه خبره ده تاسو خلق غشی نه اولئی؟ نو لاس بندونکی ډلې اووئیل چه دا زمونږ د پاره څنګه ممکن ده چه مونږ غشی اولو او تاسو دوئمې ډلې سره ینې؟ ښکاره خبره ده چه په دې صورت کښې هم مونږ ماتې خورو.

۱) (فتح الباري (ج۶ص ۹۱)-

۲) (خلاصة الخزرجي (ص ۳۷۰)۔

٣) (تهذيب الكمال (ج٢٧ ص٢٤٧) _

٤) (حواله بالا۔

٥) (حواله بالا-

۶) (طبقات ابن سعد (ج۷ص۱۲)-

٧) (نهذيب الكمال (ج٢٧ص١٤٧) وفتح البارى (ج٤ص٩١)-

۸) (خلاصة الخزرجي (ص۳۷۰)۔

مواب ورکونکی شوک وو؟: دَ حدیث جمله ((قالوا: کیف درمی وانت معهم؟)) کښی دَ حضور تالله دَ برال جواب دي خو دا جواب وركونكي صحابي څوك وو؟ نود حافظ صاحب براي وغيره په مون دا حضرتُ نصّله الأسلمي الله وو. ابن اسحاق ((معّازي)) كنبي سفيان بن فروة الاسلمي په طريق سره نقل کړي دي چه

(بينا محجن بن الأدرع يناضل رجل من أسلم يقال له: نضلة تقال نصلة وأللى قوسه من يداد: والله، رارىمعه وأنت معه.... ققال نضلة: لايغلب من كنت معه)) (١)

یعنی په دې دوران کښې حضرت محجن بن ادرع الليم د قبيله اسلم يو سړی سره غشی ويشتل، چاته چه نضله وئيلي شي... نو حضرت نضله اللي كمان دَ لاس نه غورزولو سره ارونیل والله! زه هغوی سره غشی نه اولم چه تاسو هغوی سره نی... حضرت نضله الله فرمانی چه ریارسول الله) تاسو چه چاسره نی هغوی ماتی نشی خورلی.

توله: فقال النبي صلى الله عليه وسلم: ارموا فأنامعكم كلكم: نونبي كريم نظم اوفرمائيل چه غشى أولئي زه تاسو ټولوسره يم.

(کلکم) چه کوم لام دې هغه مجرور دې ځکه هغه ((معکم)) چه کوم ضمير دې د هغې د پاره تاکید دی.(۲)

يواشكال اود هغي جواب دلته يو اشكال پيدا كيږى چه رسول الله تريم دواړو ډلو سره ولي يوځائ شو هرکله چه دا خبره شوې وه چه يو ډله به غالب وي او بله مغلوب؟ (٣)

علامه کرمانی را د کی اشکال جواب دا ورکړې دې چه دلته د معیت نه مراد د خیر قصد او اراده، د نیت اصلاح او په غشو ویشتلو کښې د جنګ په غرض مشق دې، دلته د یوې دلى غالب او مغلوب كيدلو سلسله مقصد نه ده او نه هغوى تلايم د غالبيت أو مغلوبيت به خیال خپل معیت بیان فرمائیلی دی. (۴)

د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت: د حديث شريف ترجمة الباب سره مطابقت ((ارموابق اساعيل)) كښې دې او كوم كوم ځائ چه ((ارموا)) لفظ راغلې دې د دينه د غشو ويشتلو ترغیب او تحریض مراد دی (۵) و حديث نه مستنبط فائدي أد حضرت سلمة بن الاكوع التاتي د حديث نه دا لاندينئي فائدي مستفاد کیږی:

۱) (فتح الباری (ج۶ص۹۲) وعمدة القاری (ج ۱۵ص۱۸۲) وإرشاد الساری (ج۵ص۹۹) وقال الحافظ فی مقدمة الفتح هدى السارى و يحتمل أن يكون هو أبابرزة فإن اسمه نضلة بن عبيد. (ص ٢٩٠)-

 $^{^{-1}}$ (شرح القسطلانی (ج 0 ص 9 9) (

۲) (شرح الكرماني (ج٢٦ص ١٥٤)-

أ (شرح الكرماني (ج١٢ ص١٤٥) -

⁽عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٨٦)-

علامه مهلب المنظمة فرمائي چه د حديث نه معلومه شوه چه سلطان يا خليفه له پكار دي چه خپلو خلقو ته د غشو ويشتلو او نورو ډيرو فنون جنګ د تعليم حكم وركړى او د هغې د زده كولو ترغيب وركړى.(١)

و نور فرمانی چه د سړی د پاره دا ضروري دی چه هغه د خپلو پلارانو نيکونو ښه خصلتونه اولټوی او د هغې اتباع اوکړی اوهم د هغوی په شان عمل دې اوکړی د نبی تالېم

ارشاد مبارك دى ((ارموافإن اباكم كان داميا))(٢)

د بادشاه دَپاره ضروری دی چه هغه د هريو فن ماهرينوباندې دا ښکاره کړی چه هغه د دوی سره دې، يعنی د هغوی په ډله کښې شامل دې او هغوی سره مينه لری. څنګه چه

حضور تُلَيْمُ دَ غشو ویشتلو ماهرینو سره وکړل چه وئی فرمائیلی ((واکامع بنی فلان)) (۳)

﴿ بادشاه له دا هم پکار دی چه خلقوته د جنگ د امورو پخپله نښی ښائی چه فلانکې څيز زده کړئی په دې کښې مهارت اختيار کړئي لکه چه نبي تايا اولاد (۴)

او دا هم معلومه شوه چه په اسونو سوریدل او د وسلی استعمال زده کول فرض کفایه
 دی او کله کله هغه فرض عین هم شی. (۵)

[ram] حَدَّثَنَا أَبُونُعَيْمٍ حَدَّثَنَا عَبُدُ الرَّحْمَنِ بُنُ الْغَسِيلِ عَنْ حَمُزَةً بُنِ أَبِى أُسَيْدٍ عَنْ أَبِيهِ(١) قَالَ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ بَدُرٍ حِينَ صَفَفَنَا لِقُرَيْشٍ وَصَفُوا لَنَا إِذَا أَكْثَبُوكُمُ فَعَلَيْكُمْ بِالنَّبْلِ [٢٢٣] فَعَلَيْهُ وَسَلَّمَ يَوْمَ بَدُرْ حِينَ صَفَفَنَا لِقُرَيْشٍ وَصَفُوا لَنَا إِذَا أَكْثَبُوكُمُ فَعَلَيْكُمْ بِالنَّبْلِ [٢٢٦]

تراجم رجال

ا- ابونعيم: دا مشهور محدث ابونعيم فضل بن دكين كوفي يُواتِدَّدي. د ده تذكره ((كتاب الإيبان باب بلاترجمة)) لاندې راغلي ده. (٢)

-- عبد الرحمر بن الغسيل: داعبد الرحمن بن سليمان بن حنظله غسيل الملاتكه مُرَيد دي (٨)

۱) (شرح ابن بطال (ج۵ص ۹۴)۔

۲) (شرح ابن بطال (ج۵ص ۹۶) -

٣) (حواله بالا-

٤) (حواله بالا-

۵) (تفسير القرطبي (ج٨ص٣٩)-

۶) (قوله: عن ابيه: الحديث أخرجه البخارى ايضًا كتاب المغازى باب فضل من شهد بدرا رقم (۱۸۹ ۳۹۸۵) وابوداؤد أبواب الجهاد باب فى الصفوف رقم (۲۶۶۳) وباب سل السيوف عند اللقاء رقم (۲۶۶۴)-۷) (كشف البارى (ج۲ص۲۶۹)-

٨) (د دوى حالاتو د باره أو كورئ كتاب الجمعة باب من قال في الخطبة بعد الثناء: أمابعد-

م- حمزة بر ابي اسين: دا حمزه بن ابي اسيد مالك بن ربيعه الانصاري الساعدي ميد دې ابومالك د ده كنيت دې او دا د منذر بن ابي اسيدرور دې (۱)

دى دخپل بلار ابواسيد الساعدي او حارث بن زياد الانصاري الماناند د حديث روايت كوي. اودده نه دده دواره خامن مالك اويحيى،سعدبن المنذر،عبدالرحمن بن سليمان بن الغسيل، محمد بن عمرو بن علقمه، امام زهري أو ابوعمرو بن حماس سيخ وغيره روايت كوي. (٢) حافظ آبن حجر، خطیب بغدادی،او اسماعیلی انتظ رائی دا ده چه حمزه بن ابی اسید صحابی دی او هغوی در رسول الله تالم په مبارکه زمانه کښی پیدا شوی (۳) خو بعض نور حضرات محدثین مثلاً ابوحاتم ابن حبان کشته هغه په خپل کتاب ((الثقات))

کښې تابعينو کښې ذکر کړيدې (۴)

امام بخاری مُنْ علاوه امام ابوداود او امام ابن ماجه المنظم هم د ده نه روایت اخستی دی.(۵)

دَ خُليفه وليد بن عبدالملك په زمانه كښې وفات شو. (۶)

-ابيه: «أب» نه مراد حضرت ابواسيد مالك بن ربيعه الساعدى الخزرجي فالمؤودي. (٧)

قوله: قال: قال النبي صلى الله عليه وسلم يوم بدر حين صففنا لقريش، وصفّوالنا: إذا أكثبوكم فعليكم بالنبل: حضرت إبواسيد التَّثَّةُ فرمائي چه نبي اكرم اللَّهُمَّ د جنگ بدریه موقع کله چه مونږ د قریشو په مقابله کښې صفونه تړلې اودریدو او هغوی هم زمونږ د پاره صفونه تړلې شو نو وئی فرمائیل که دښمن (قریش) تاسو له نزدې راغې نو

تاسو پرې غشی ورول شروع کړنی . دحضرت ابواسید الساعدی گُرنی دا حدیث د غزوه بدر متعلق دې نود دې تشریح هم په

کتاب المغازی کښې راغلې ده. (۸)

د حدیث د ترجمة الباب سرّه مطابقت: حدیث ابی اسید ظائر مطابقت ترجمه الباب سره د حضور على په ارشاد مبارك كښې ده ((فعليكم بالنبل)) ځكه چه په دې كښې د رمي بالسهام ترغيب او تحريض دي.(٩)

۱) (تهذيب الكمال (ج٧ص ٣١١(-

۲) (شيوخ وتلامذه دَ باره او گورئ تهذيب الكمال (ج٧ص١١-٣١٢)-

٢) (الإصابة (ج ١ ص ٣٥٣. ٣٥٨)-

^{1) (}تهذيب الكمال (ج٧ص٣١٢)-

۵) (تهذیب الکمال (ج۷ص۳۱۳)-

۶) (طبقات ابن سعد (ج۵ص۲۷۲)-

٧) (دَ دوى دَ حالات دَ پاره اوګورئ کتاب الأذان باب من شکا إمامه إذاطول-

 ^{^ (}کشف الباری کتاب المغازی (۱۳۷)-

۹) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص٨٣)-

رمی نه څه مراد دی؟ مونږ روستو د باب په شروع کښې نقل کړی دی چه په آیت مبارل (واعدوالهم ماستطعتم من قوة...) (١) د ((قوة)) تفسير ((رمى)) سره شويدې اود امام بخاري مينيو منشا هم د آيت ترجمه الباب لاندې ذكر كولو همدغه وه چه ((قوق)) نه مراد ((رمی)) دي.

اوس خبرې په دې کښي دی چه ((رمی)) نه څه مراد دې؟ آیا هم هغه چه کوم معروف دي. يعني غشي ورول يا رمي عام ده؛ نود بعضو حضراتو خيال دې چه د رمي نه د دې خاص معنی یعنی غشی ورول مراد دی.

ليكن راجح دا دى چه رمى د هغه قوت يو فرد دې باقى په كومه طريقه سره چه هم د دښمن په مقابِله کښې قوت حاصليديشي هغه اختيارول ضروري اوواجب دي مونږ

دلته د خضرت مولانا ادریس کاندهلوی این اقتباس لیکو د کوم سره چه به د راجع قول پەپوھىدلو كښى نورامداد ملاؤشى فرمائى:

په احادیثوکښی اګرچه دَ قوت تفسیر په غشو ورولو سره شویدې خود الفاظود عموم په اعتبارسره د دې نه مراد هر قسم د جنګ سامان دې او دا مطلب نه دې چه صرف قوت په غشو ویشتلوخپلوکښی منحصردې بلکه توره، نیزه دهالي، زغره، قلعه ګاني، سامان رسد او سامان جنگ تول په قوت کښی داخل دی ځکه چه د آیت مقصد اصلی دا دی چه هغه سازوسامان او د جنگ آلات پیداکرئی د څه په ذریعه چه تاسو د دښمن مقابله کولی شنی او په هغوی غالب راشني... بهر حِالٌ په دې آيت کښي مسلمانانو ته دا حکم ورکول دی چه تاسو د دښمنانو په مقابله کښې د جنګ سامان تيار کړني او چه څومره قوت او طاقت پيدا کولی شئی په هغی کښي کمي مه پريږدئي او ښکاره خبره ده چه په هره زمانه کښي د جنګ سامان بدلیږی. په مخکینی زمانه کښی نیزه او توره وه او په دې زمانه کښې توپه او ټوپك وغیره دې، دا ټول د جهاد سامان دې او دا ټول به دغه شان چه په راتلونکی وخت کښې كومة وسله او د جناك آلات تياريږي انشاء الله هغه ټول د دې آيت په عموم او مفهوم كښې داخل وی او عین منشائی قرآنی به وی(۲)

نوې وسله جوړول فرض دی حضرت کاندهلوي رکين نورفرمائي: د دې آيت په رو سره په مسلمانانو حِکومتونو د جدید وسلی تیارولو اود هغی کارخانی قائمول فرض دی. ځکه چه په دې آيت کښې د قيامت پورې د هرمکان او زمان مناسب قوت او طاقت پيداکولو حکم

١) (الانفال: ۶٠-

٢) (معارف القرآن للكاندهلوى (ج٣ص٢٥٥) قال محدث العصر الشاه أنور الكاشميري رحمة الله: والتحريض على الرمى كان في الزمان الماضي وأما اليوم فينبغي أن يكون على تعلم استعمال الألات التي شاعت في زماننا. كالبندقة، والغاز، ومن الغباوة: الجمود على ظاهر الحديث: فإن التحريض عليه ليس إلا للجهاد وليس فيه معنى وراءه، ولما لم يبق الجهاد بالأقواس لم يبق فيها معنى مقصود، فلا تحريض فيها.... فالحاصل: أنَّ التحريض في كل زمان بحسبه، وفي النص إشارة إليه أيضًا فقال تعالى: ﴿ ترهبون به عدوالله وعده كم المصود هو الإرهاب، وذلك لا يحصل اليوم بتعلم الرمى، فيض البارى (ج ٣ص٤٥) وأيضًا انظر روح المعاني للعلامة الألوسي (عص٢٥)-

ورکړیشویدی. څنګه چه کافرانو تباه کونکی وسلی تیارې کړی دی په مونږ باندې هم دغه شان تباه کونکی وسلو تیارول فرض دی دې د پاره چه دکفر او شرك مقابله اوکړیشی (۱) په اسونو سوریدل غوړه دی که غشې ورول په دې کښې هیڅ شك نشته که د اسونو سوریدل وی یا غشو ورول دواړه د جنګ او جهاد اهم ذریعې دی او د جنګ د اسبابونه دی لیکن په دې دواړو کښې غوره کوم یو دې حافظ ابن کثیر پیشی فرمائی:

((وقد ذهب أكثر العلماء إلى أن الرمى أفضل من ركوب الخيل، وذهب الإمام مالك إلى أن الركوب أفضل من الرمى، وقول الجمهود أقوى للحديث)) (٢)

اواکثر علما، دی طرف ته دی چه رمی د رکوب الخیل نه غوره ده او امام مالك بینید دی طرف ته دی چه رکوب، د رمی نه غوره دی. اود جمهورو قول د حدیث په وجه قوی دی. حافظ ابن کثیر بینی چه د کوم حدیث طرف ته اشاره کریده هغه حضرت عقبه بن عامر الجهنی تگاش نه مروی دی فرمائی ((قال رسول الله صلی الله علیه وسلم: ارموا وارکهوا وان ترموا علیمن آن ترکهوا) (۳) یعنی غشی وروئی او په اسونو سورلی کوئی او دا چه تاسو غشی وروئی د دی نه بهتر دی چه تاسو په اسونو سورلی کوئی. نو په پورتنی حدیث کښی رسول اکرم نایم غشی وروئل د اسونو سوریدلو نه بهتر او غوره کرخولی دی.

٨٥- بَأَب: اللَّهُ وِبِالْحِرَابِ وَنَحُوهَا

۱) (معارف القرآن (ج٣ص٢٥٥)-

٢) (تفسير القرآن العظيم لابن كثير الدمشقى (ج٢ص٣١)-

۲) (الحدیث رواه أبوداؤد فی الجهاد باب فی الرمی رقم (۲۵۱۳) والترمذی فی فضائل الجهاد باب ماجاء فی فضل الرمی فی سبیل الله تعالی رقم(۱۶۳۷) وقال:هذا حدیث حسن صحیح،والنسائی فی کتاب الخیل والسبق، باب تأدیب الرجل فرسه رقم(۳۶۰۸) وابن ماجه فی أبواب الجهاد باب فضل الرمی فی سبیل الله رقم (۲۸۱۱) عددة القاری (ج ۲ ص۱۸۳) وفیض الباری (ج ۳ ص۲۳۶) -

^{) (}العديث رواه أبوداؤد في الجهاد باب في الرمى رقم (٢٥١٣) والترمذي في فضائل الجهاد باب ماجاء في فضل العديث رواه أبوداؤد في الجهاد باب في الرمى رقم (٢٥١٣) والسبق في سبيل الله تعالى رقم (١٤٣٧) وقال: هذا حديث حسن صحيحوالنسائي في كتاب الخيل والسبق باب تأديب الرجل فرسه رقم (٣٤٠٨) وابن ماجاه في أبواب الجهاد باب فضل الرمى في سبيل الله رقم (٢٨١١)

چه لهو دریو موقعونه علاوه بل چرته جائزنه دی. یو دا چه د سړی خپل اس برابرول، دوئم د سړی خپل اس برابرول، دوئم د سړی خپلی ښځې سره مشغولتیاکول، او دریم غشی او لندې سره غشی ورول (۱) حهاب - بكسم الحاء وقتح الراء - حرية - بقتح الحاء وسكون الراء - جمع ده أود دي معنى نيزه ده. (٢) او ((تعوها)) په ذریعه امام بخاری دا ارشاد فرمانی چه د لهو جواز حماب سره خاص نه دی بلكه د جنگ نور آلات مثلاً غشى لنده، توره وغيره سره هم جائز دى. [٢٢٥] حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ مَغْمَرِ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ ابْنِ الْمُسَبِّعِ عَنْ أَبِى هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللَّهُ عَنْهُ(٢) قَالَ بَيْنَا الْعَبَشَةُ يَلْعَبُونَ عِنْدَ النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِحِرَا بِهِمْ دَخَلَ عُمَرُفًا فِهُوى إِلَى الْحَصَى فَعَصَبَهُمْ بِهَا فَقَالَ دَعْهُمْ يَا عُمَرُ وَزَادَ عَلِى

حَدَّ ثَنَاعَبُدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْبَرٌ فِي الْمَسْجِدِ

تراجم رجال

ا-ابراهيم بر موسى: دا ابواسحاق ابراهيم بن موسى بن يزيد الفراء مياد دي.

r-هشامز: دا ابوعبدالرحمن هشام بن يوسف صنعاني کين دي. (۴)

۳- معمر: دا ابوعروه محمدمعمر بن راشدازدی کنای دی. د دوی مختصر تذکره «بد، الوحي)) پنځم حديث لاندې تيره شويده.(۵)

٥-زهرى: دا ابو بكر محمدبن مسلم زهرى مُنظير د ده تذكره هم ((بده الوحى)) د دريم حديث په ذیل کښی تیره شویده (۶)

٢- ابر المسيب: دا امام التابعين حضرت سعيد بن المسيب كيني دي. دُدوي حالات (ركتاب الإيان بابمن قال: إن الإيان هوالعمل)) لاندى تيرشوى دى. (٧)

<u>-- ابوهريرة الليخ:</u> دامشهورصحابي رسول،حضرت ابوهريره الليخودي. دَده مفصل تذكره دَ ((کتابالإیان)) په ذیل کښې تیره شویده. (۸)

۱) (فتح الباري (ج۶ص۹۳)-

٢) (عمدة القاري (ج ٤ ١ص١٨٣) ومعجم الوسيط (ج ١ص١٩٣) مادة حرب-

٣) (قوله: عن أبي هريرة رضى الله عنه: الحديث رواه مسلم كتاب العيدين باب الرخصة في اللعب الذي لامعصية فيه في أيام العيد رقم(٢٠۶٩) والنسائي كتاب العيدين باب اللعب في المسجد يوم العيد ونظر النساء إلى ذلك رقم (١٥٩٧)-

٤) (دُدي دواړو حضراتو دَحالاتو دَپاره اوګورئ کتاب الحيض باب غسل الحائض رأس زوجها ترجيله

۵) (کشف الباری (ج۱ص ۴۶۵)-

ع) (حواله بالا (ص٣٢۶)-

۷) (کشف الباری (ج۲ص۱۵۹)-

۸ ((کشف الباری (ج۱ص۶۵۹)-

نوله: قال: بينا الحبشة يلعبون عندالنبي صلى الله عليه وسلم بحرابهم دخل

عمر، فأهوى الى الحصى فحصبه مرجها: حضرت ابوهريره الله فرمانى په دى دوران كښې چه حبشيانو خپلو نيزو سره د حضور الله وړاندى لوبى كولى نو حضرت عمر الله داخل شو او د كانړو طرف ته متوجه شو بيا په دې كانړو باندې هغه حبشيان نښه كړل.

حضرت ابوهریره گات داند د عهدنبوی تایخ یوه واقعه ذکر کوی چه یو خل څه حبش مدینی منوری طرف ته راغله او د نبی کریم تایخ په وړاندې ئی مختلف قسم د جنګ مظاهری پیش کړی نو هم دغه خلقو یو خل خپلو تورو او نیزو سره لوبی کولی چه حضرت عمر گاتو داخل شو او کله ئی چه دا نظاره اولیده نوکانړی ئی اولتول او په دې کانړو باندې ئی دغه حبش نبه جوړکړل.

دُ دى وَجُه دا وه چه حضرت عمر كُلُّرُ ته دَ دى كار حكمت معلوم نه وو او هغه دا كار په لهو باطل كښې شميرلې وو. علامه قسطلاني بينولو د حضرت عمر تُلُوُ د دې كارتوجيه بيانولو سره ليكي: ((لعدم علمه بالحكمة وظنه أنه من اللهوالهاطل))(١)

او د نسائی شریف روایت نه معلومیږی چه دې حبشی خلقو بنوارفده سره تعلق لرلو. (۲)

توله: فقال: دعهم يأعمر: نو رسول الله تَنظِم اوفرمائيل اي عمر! دوى (دَ دوى په حال باندى) بريرده.

یعنی د دوی په کار کښی دخل مه کوه او دوی پریږده چه لوبې کوی، ځکه چه د هغوی دا کار د جنګ تمرین او مشق اود دښمن مقابلې کولو تیارې د پاره دې. (۳)

دَ دَى جَديث نه معلومه شوه چه كه چرى اجتهادى خطا او غلطى اوشى نو هغه ملامت كول صحيح له دى ځكه چه نبى كريم كريم اونه كړه خكه چه هغه په دى معامله كښى ناخبروو (۴)

خکه چه هغه په دې معامله کښې ناخبروو. (۴) **یواشکال او د هغې جوابونه**: اوس اشکال دا شو چه حضرت عمر کانځ دا حبشی خلق چه د نبی کریم کالم خواکښې ئې لوبی کولې ولې په کانړو اوویشتل، څکه چه هغه ته ښکاریدل چه نبې اکرم کالم هلته موجود دې نو دا خو یو قسم الله تعالی دې نه کړی بې ادبی شوه.

علامه ابن التين عليه و د دي اشكال دوه جوابونه وركوى:

ا ممکنه ده چه حضرت عمر تائی نبی کریم کالی نه وو لیدلی او هغه ته دا معلومه نه وی چه هغوی کالی هم دی حبشیانو ته گوری. (۵)

🕜 يا هغه دا لانزلې وي چه نبي اله اي خلقو ته کتل خو د حياء د وجه نه ئې هغوي نشو

۱ ((ارشاد الساری (ج۵ص۹۵)-

٢) (سنن النسائي كتاب العيدين باب اللعب في المسجد يوم العيد.... رقم (١٥٩٧)-

۲) (شرح القسطلاني (ج۵ص۹۵) وشرح ابن بطال (ج۵ص۹۵)-

^{4) (}شرح ابن بطال (ج٥ص٩٥)-

۵) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٨٣)-

منع کولی، په دې وجه حضرت عمر النو پخپله اقدام اوکړو او هغوی ئې منع کړل. او ابن التين مينې دې وجه حواب راجح ګرځولې دې ځکه چه په حدیث کښې صراحت دې چه (ريلعبون مندالنبي صلى الله مليه وسلم....)) نو د نه کتلو هلوو مطلب نشته.(۱)

قوله: زادعلى: حدثنا عبد الرزاق أخبر نامعبر: في البسجد: دَ مذكوره عبارت مطلب دا دې چه كومه واقعه په حديث كښې ذكر كړيشويده هغه دَ جمات وه چه هغه خلقو په جمات كښې نيزو سره لوبې كولې. (٢)

د على نه مراد المديني مُهُمُمُ دې، د دې ځائ روايت كښې خو ((دادعلى)) دې. ليكن مستملى په روايت كښې خو ((دادعلى...)) راغلى دى، د دې د پاره هغه ته څوك سړې غير دال على الاتصال اونه ګڼړي. (٣)

د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت: ترجمة الباب سره د حديث مناسبت واضح دى او هغه

دَ حدیث په رومبئی جمله کښی دی یعنی ((بیناالحبشة یلعبون عندالنبی صلیالله علیه وسلم))

دَ علامه عینی او حافظ صاحب تسامع حافظ ابن حجر رکیای او علامه عینی رکیای خیال دا دی چه ترجمه الباب سره دَ حدیث مناسبت په حدیث باب کښی نشته. ځکه چه په دی کښی د ((حماب)) ذکر نشته نو کیدیشی امام بخاری رکیای حدیث باب دلته ذکر اوفرمائیلو او دَ هغی بعض نورو طرق طرف ته ئی اشاره فرمائیلی ده. دَ دی نه مراد دی حضراتو دَحضرت عائشه رای الله عده حدیث اخستی دی کوم چه امام بخاری رکیای کتاب الصلاة (۴) کښی ذکر فرمائیلی ((دایت النبی صلی الله علیه وسلم والحبشة یلعبون بحمابهم)) دغه شان دَ حدیث مطابقت ترجمه سره

عالباً دې حضراتو ته دلته تسامح شويده، دا هم ممکن دي چه د دي حضراتو په خيال کښي کومه نسخه وه کيديشي په دې کښي حراب الفاظ موجود نه وي. د بخاري محشي حضرت احمدعلي سهارنپوري ﷺ فرماني

((قوله: بحرابهم، هذا موضع الترجبة وكأنه لعدام وجودة في بعض النسخ لم يطلع عليه بعض البهرة، فتحير في مطابقة الحديث للترجبة))

تنبیه: د حدیث باب نور تشریحات کتاب الصلاة کنبی تیرشوی دی. (۶)

۱) (حواله بالا-

⁽ ۲(شرح القسطلانی (ج۵ص۹۵)-

⁽ ٣(تغليق التعليق (ج٣ص ٤٤٤)-

٤) (صحيح البخاري كتاب الصلاة باب أصحاب الحراب في المسجد رقم (٤٥٥)_

۵) (فتح الباري (ج۶ص۹۳) وعمدة القاري (ج ۱۸۳ه)-

٤) (صعيع البخاري كتاب الصلاة باب أصحاب الحراب في المسجد رقم (٤٥٤)_

204/

٥٥- بَأَب: الْمِجَنِّ وَمَنْ يَتترِسُ بِتُرْسِ صَاحِبِهِ

وَترجمة الباب مقصد په دې باب كښى امام بخارى بيلى د همال او د هغى د استعمال ذكر كړى. (١) اود دې ترجمې نه دهغه مقصد دا دې چه د دې څيزونو استعمال د توكل نه خلاف نه دې او دا د نبوت د تعليم او د نبوت د منصب نه هم خلاف نه دى. علامه ابن المنير اسكندراني مُداني فرمائي:

(ردجه هذا التراجم دفع من يتخيل أن هذا الآلات ينألى التوكل، والحق أن الحدر لايردالقدر، ولكن يضيق ميلك الوسوسة لما طبع عليه البشر))(٢)

بعنی د دی ترجمو مقصد د هغه سری خیال رد کول دی چه دا محنری چه د دی آلاتو استعمال د توکل منافی دی، صحیح خبره دا ده چه احتیاط تقدیر نه اخواکوی لیکن دومره خبره ضرور ده چه د انسانانو کومی د وسوسی جبلت او عادتونه دی د احتیاط اختیارولو سره د دی وسوسو خاتمه کیږی.

دمجن معنی: المجن: د میم په کسره سره د جیم په فتح سره دهال ته وائی (۳) او دا د جَن یَجِن نه مشتق دې. او معنی ئی پټول دی او مجن ته مجن په دې وجه وائی چه هغه د د ښمن حمله منع کوی او د سړی او د ښمن په مینځ کښې پرده جوړیږی. او د ترس معنی هم دهال ده (۴)

[ram] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بُنُ هُمَّيْدٍ أَخْبَرَنَا عَبُدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا الْأَوْزَاعِيُّ عَنْ إِسْحَاقَ بُنِ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ اللَّهِ بُنِ اللَّهِ بُنِ اللَّهِ بُنِ اللَّهِ بُنِ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ كَانَ أَبُوطَلُحَةً يَتَثَرَّسُ مَعَ النَّبِيِ أَنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِثُرُسِ وَاحِدٍ وَكَانَ أَبُوطَلُحَةً حَسَنَ الرَّمْيِ فَكَانَ إِذَا رَمَى تَشَرَّفُ النَّبِيُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيَنْظُرُ إِلَى مَوْضِعِ نَبُلِهِ [د:٢٤٢٣]

تراجم رجال

۱) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٨٤)-

⁽ ۲ (فتح البارى (ج عص ۹٤)-

٣) (حواله بالا وعمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٨٤)-

أ (النهاية للجزري (ج١ص٨٠٨) باب الجيم مع النون-

٥) قوله: عن أنس بن مالك رضى الله عنه: الحديث مرتخريجه في الجهاد باب غزو النساء وقتالهن مع الرجال

٤) (دَدوى دَ حالاتودَپاره او كورئ كتاب الوضوء باب مايقع من النجاسات في السمن والماء-

۷) (کشف الباری (ج۱ص۴۶۱)-

-الاوزاعی: دا مشهور فقیه عبدالرحمن بن عمروبن ابی عمرواوزاعی شامی کلیه دی. د در در کتاب العلمهاب المعروبی العلم) لاندی تیرشوی دی. (۱)

م-اسی آق بر عبدالله بر ابی طلحه: دا اسحاق بن عبدالله بن ابی طلحه انصاری مدنی پینی دی. د دوی حالات ((کتاب العلم باب من تعددیث ینتهی به المجلس ۱۰۰۰) لاندی راغلی دی. (۲)

ه-انس بر مالك: د حضرت انس بن مالك الماث حالات ((كتاب الإيهان باب من الإيهان اليهان الهان الايهان المن الإيهان ال يحب المن المائن تيرشوى دى (۲)

قوله: قال: كان أبوطلحة يتترس مع النبى صلى الله عليه وسلم بترس واحد، وكان أبوطلحة حسى الرمى فكان إذا رمى يشرف النبى صلى الله عليه وسلم فينظر إلى موضع نبله: حضرت انس الأثن فرمائى چه طلحه المثنى به د نبى كريم عليه سره به يو دهال كنبى كاراخستلو، او ابوطلحه المثنى درونكى وو نو چه كله به هغه غشى ويشتلو نو نبى كريم عليم به خپل سر مبارك او چتولو اود هغه د غشى غورزيدو ځائ ته به ئى كتل.

په رومبئی جمله کښی حضرت انس الله دا بنائی چه حضرت طلحه الله کو نبی کریم کال سره په دهال کښی کار کولو، مطلب دا چه دهال رسول الله که نیولی وو او غشی ابوطلحه کال کښی کار کولو، مطلب دا چه دهال رسول الله که نیولی وو او غشی ابوطلحه کال وجه دا ده چه کوم سړی غشی وروی نو د هغه دواړه لاسونه بند وی د دې د پاره به نبی کریم کال ده دوار ده و او په هغی به نبی د ابوطلحه کال بچاو کولو. (۴) او د حدیث سره متعلقه نور تشریحات کتاب المغازی کښی به راځی. (۵)

د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت: د حدیث مناسبت ترجمی سره بالکل واضح دی او هغه

ذَحديث رومبى جمله ((كان أبوطلحة بتتاس مع النبى صلى الله عليه وسلم بالرس واحد)) كنبى دى. (١) [٢٥٣٠] حَدَّنَنَا سَعِيدُ بُنُ عُفَيْرِ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِى حَازِمِ عَنْ سَعُلِ (١) قَالَ لَنَّا كُسِرَتُ بَيْضَةُ النَّبِي صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى رَأْسِهِ وَأَدْمِى وَجْهُهُ وَكُسِرَتُ رَبَاعِيتُهُ

۱) (کشف الباری (ج۳ص۵۰)-

۲) (کشف الباری (ج۳ص۲۱)-

٣) (كشف البارى (ج٢ص٤)-٠٠.

١٨٤ (ج ٤ ص ٤ ٩) وعمدة القارى (ج ٤ اص ١٨٤)-

۵) (كشف الباري كتاب المغازي (ص٢١٢و ٢٣٦)-

۶) (عمدة القارى (ج ۱ ۱ص ۱۸٤)-

٧) (قوله: عن سهل: الحديث مرتخريجه في كتاب الوضوء باب غسل المرأة أباها الدم عن وجهه-

وَكَانَ عَلِي يَخْتَلِفُ بِالْمَاءِ فِي الْبِجَنِ وَكَانَتُ فَاطِمَةُ تَغْيِلُهُ فَلَمَّا رَأْتُ الدَّمَ يَزِيدُ عَلَى الْمَاءِكَاثُرَةً عَمَدَتْ إِلَى حَصِيرِ فَأَخْرَقَتُهَا وَأَلْصَقَتْهَا عَلَم جُرْجِهِ فَرَقَأُ الذَّمُ [ر: ٢٤٠]

تراجم رجال

ا-سعید برعفیر: دا سعید بن کثیر پن عفیر می که دی اکثر د خپل نیکه طرف ته منسوب كولى شي، دهغوى حالات (كتاب العلم بأب من يردالله به خيرا يفقهه ...) لاندي تيرشوى (١) r- يعقوب بررجمرال حمري: دا يعقوب بن عبدالرحمن بن محمدبن عبدالله اسكندراني

r-ابوحازم: دا مشهورزاهدابوحازم سلمه بن دینار کی دی.(۳)

_: دا مشهور صحابی حضرت سهل بن سعدساعدی انصاری تی و دی. (۴)

نوله: قال: لماكسرت بيضة النبي صلى الله عليه وسلم...:حضرت سهل بن سعد گانو فرمانی چه کله د حضور اکرم کاللم خود (د وسپنی ټوپنی چه د هغې په وجه سر د گذار نه بچ کولی شی، په سرمبارك باندې مات شو او مخ میارك نی په وینو رنګ شواود مغوى ترام مخامخ غاښونه شهيد شو نو حضرت على الليوبه د هال کښې اوبه راوړلې اوحضرت فاطعه ﴿ أَخُم اووينځلو ،چه کله هغوی اوکتل وینه دَ اوبونه هم زیاته شو نو هغوى يو پوزكې اوسوزولو نود هغې ايره ئي د رسول الله کاللې په زخمونو اولګوله، د څه نه چەرىنەراوتل بندشو.

د دي حديث څه تفصيل (كتاب الوضوء) (۵) كښې او څه تشريحات (كتاب المغازي) (۶)

کښې راغلی، د دې دپاره مونږ دلته صرف په ترجمه باندې اکتفا او کړه. دَ رسُول الله به كستًا خانو باندي دَ الله عذاب؛ لكه خناكم جه تاسو اوس أوكتل چه د رسول الله

على مخامخ دوه غاښونه شهيدان شوې وو اودا د غزوه احدواقعه ده، د دې غاښونو شهادت داسی اوشو چه د حضرت سعدبن ابی وقاص گات رورعتبه بن ابی وقاص په حضور علل باندې کانړې ورګذار کړو په څه سره چه د هغوی تلکی غاښونه مبارك او شونډه مبارکه

ز**خمی** شوه. (۷)

نو الله تعالى عتبه ته د دې گستاخني دا سزا وركړه چه د دې واقعه نه پس د هغه په نسل

۱) (کشف الباری (ج۳ص ۲۷۶)-

٢) (دَ دوى دَ حالاتودَپار ، اوګورئ کتاب الجمعة باب الخطبة على المنبر -

٣) ﴿ دَ دوى دَ حالاتودَپاره اوګورئ کتاب الوضوء باب غسل المرأة أباها الدم عن وجهه-

^{4) (}حواله بالا-

٥) (حواله بالا-

۶) (کشف الباری کتاب المفازی (ص۲٤۷)-

۷) (إرشادالسارى (ج۵ص۹۵)-

کښې کوم ماشوم هم پيدا کيدو د هغه د لاندې دوه غاښونه به د بيخه مات وو اودا څيز

دَهِغه په نسل کښې معروف اومشهور دی (۱)

دَ عبدالله بن قمينه په حضور تلظم باندې حمله اوکړه چه د هغې په وجه د خود دوه د اوسپنی کرئی په مخ مبارك كښې ورخښې شوې بيا هغه د كبراوګستاخنې نه داالفاظ اوونيل (رعنها وانا ابن قبيئة) دا واخله او زه د قميه ځوئ يم رسول الله نظيم په جواب كښي

ارشاد اوفرمائيلو ((الماكالله)) الله تعالى دى تا خوار او ذليل كړى

رسول الله ترام د دې بددعا دا نتيجه ښکاره شوه چه الله تعالى په هغه باندې يوغرڅنې چيلې مسلط کړو هغه چيلى دې باربار په ښکرو وهلو او تردې پورې چه هغه د ابن قمينه ټکړې ټکړي کړو. (۲)

د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت: ترجمة الباب سره د حديث مطابقت د حديث به دى جملهِ کښې دې: ((وکان علي يختلف بالهام في الهجن)) (۳)-چه په دې کښې د َ مجن ذکر موجود دې

چه د ترجمه رومبي جز دي.

[٨٣٨] حَدَّثَنَاعَلِيُّ بْنُ عَبْدِاللَّهِ حَدَّثَنَاسُفْيَانُ عَنْ عَمْرِوعَنْ الزُّهْدِيّ عَنْ مَالِكِ بْنِ أَوْسِ بْنِ الْحَدَيْثَانِ عِنْ مُمَرَرَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ (٣) قَـالَكَانَتْ أَمُوَالُ بَنِي النَّضِيرِمِمَّا أَفَاءَاللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِمَّا لَمُ يُوجِفُ الْمُسْلِمُونَ عَلَيْهِ بِغَيْلِ وَلَا رِكَابٍ فَكَانَتُ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَاصَّةً وَكَانَ يُنْفِقُ عَلَى أَهْلِهِ نَفَقَةَ سَنَتِهِ ثُمَّ يَجُعَلُ مَا بَقِي فِي البِلَاجِ وَالْكُرَاءِعُدَّةً فِي سَبِيلِ اللَّهِ [٢٩٢٧، ٢٩٠٩، ٣٦٠، ٥٠٤٢، ٥٠٤٥، ٦٣٤٧، ٢٩٨٥]

تراجم رجال

اعلى برعبدالله: دا اميرالمؤمنين في الحديث ابوالحسن على بن عبدالله بن جعفر منتخ دي. د دوى مفصل تذكره ((كتاب العلم باب العهم في العلم) لاندې تيره شويده. (۵)

۱) (حواله بالا-

٢) (حواله بالا وعمدة القارى (ج ١٤ ص ١٨٤) وسيرة ابن هشام (ج٣ص٨٧)-

٣) (فتح الباري (ج ٤ص ٤٩) وعمدة القاري (ج ٤ ص ١٨٤)

٤) (قوله: عن عمر رضى الله عنه: الحديث أخرجه البخارى أيضًا كتاب فرض الخمس باب فرض الخمس رقمْ (٤٠٩٤) وفي المغازَى باب حديث بني النضير... رقم (٤٠٣٣) وكتابُ التَّفسير سُورة الحشُّر باب قولهُ تَعالَىٰ ﴿مَاأَفَاءَاللَّهُ عَلَى رَسُولُه ﴾ رقم (٤٨٨٥) وكتاب النفقات باب حبس الرجل قوَّت سُنَّةعلى أهله.... رقم (٥٣٥٨-٥٣٥٧) وكتاب الفرائض باب سقول النبي صلى الله عليه وسلم: لانورث...رقم (٤٧٧٨) وكتاب الأعتصام باب مأيكره من التعمق والتنازع في العلم والغلو في الدين والدع رقم (٧٣٠٥) ومسلم كتاب الجهاد باب حكم الغي رقم (٤٥٧٥) وابوداؤد أبواب الخراج والإمارة باب في صِّفايا رسول الله صلى ألله عليه وسلم من الأموال رقم (٢٩٤٣-٢٩٤٥) والترمذي أبواب السير باب ماجاء في تركة رسول الله صلى الله عليه وسلم رقم (١٤١٠) وأبوابُ الجهاد باب ماجاء في الفي رقم ١٧١٩) والنسائي أول كتاب قسم الغي رقم(١٤٥ عو ١٥٥٥) ۵) (کشف الباری (ج۲ص۲۹۷)-

يو اهمه تنبيه علامه عينى بريخ چه چرته د رواتود سند مختصر تعارف ليكلى دى هلته ئى على بن عبدالله نه مراد دلته ابن عبدالله نه مراد دلته ابن المدينى دې ځكه چه په رجال بخارى كښې د على بن عبدالله نومې راوى نشته د چا نسبت حه المسندى وى.

م-سفیان: دا امام سفیان بن عینیه مُنه دی. د دوی حالات ((بده الوس))(۲) د رومبی حدیث په ضمن کښې مختصراً او ((کتاب العلم باب قول البحدث: اعبردا...)) لاندې تفصیلاً تیرشوی دی. (۳)

- عمرو: دا ابومحمدعمروبن دینارمکی میلید دی. (۴)

٣-زهري: دا امام ابوبكر محمدبن مسلم زهري وينه دي. ددوى مختصر تذكره ((بدم الوسي)) د دريم حديث لاندې تيره شويده. (٥)

ه-مالكبر اوس بر الحدثان الحدثان أو د رسول الله تلام صحابي حضرت مالك بن اوس بن الحدثان المن المن العدثان المن المن العدثان المنظر دي. (ع)

٢- عمر الليخ: دا دونم خليفه ابوحفص عمربن الخطاب بن نفيل عدوى المليخ دي. د دوى تذكره «كتاب الإيبان بابزيادة الإيبان ونقصانه» لاندې راغلى ده .(٧)

توله: قال: کانت أموال بنی النضیر: حضرت عمر النش فرمائی د چه بنونضیر د مالونو حیثیت داسی و و چه الله تعالی د خپل رسول النظم به نگرانئی کښی بغیرد خه جنګ نه ورکړی وو اود هغی د حاصلولود پاره مسلمانانو نه څه اسونه زغلولی وو او نه ئی پرې سورلی کړی وه دا مالونه د رسول الله النظم به خاص نگرانئی کښی وود کومی نه چه به هغوی النظم د خپلو بیبیانو د کال خرچه ورکوله او چه څه به باقی پاتی کیدل هغه به ئی د وسلو او اسونو د اخستلودپاره د الله تعالی په لارکښی د جهاد د پاره هم خرچ کول

تنبیه: امام بخاری مستوبه و حضرت عمر تالی د حدیث څه حصه دلته نقل کړیده. همدغه حدیث په پوره تفصیل سره کتاب المغازی کښی راغلی دې (۸)

د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت د حديث شريف ترجمة الباب سره مطابقت به دى جمله

۱) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٨٥)-

۲) (کشف الباری (ج۱ص۱۳۸)-

٣) (كشف البارى (ج٣ص١٠٢)-

أ (دَدوى حالاتو دَباره أو كورئ كتاب العلم باب العلم والعظة بالليل-

۵) (کشف الباری (ج۱ص۳۲۶)-

٤) (دَدوى حالاتو دَپاره اوكورى كناب البيوع باب مايذكر في بيع الطعام واحكرة-

۷) (کشف الباری (ج۲ص ٤٧٤)-

٨) (كشف الباري كتاب المغازي (ص١٨٦-١٩١)-

مستخطر الله عنه المسلم الما الله السلام والكهام عدة في سبيل الله)) (١) ځكه چه مجن هم دَ وسلی نه دې

رسی در به منصور په صحیح سند سره د حضرت عمر الله باره کښې نقل کړیدی چه هغه سره يو دهال وو، نوحضرت عمر الألم اوفرمانيل ((لولاأن مبرقال لى: احبس سلاحك لأعطيت هزي الدرقةلهم أولادى (٢) كه حضرت عمر المنظم ماته دا نه وو وثيلي چه وسله خان سره ساته نو ما به دا ډهال خامخا خپل يو اولاه ته ورکړې وې. نو معلومه شوه چه مجن هم په وسله

کښي داخل دي.

[٢٥٠٠] حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَخْيَى عَنْ سُفْيَانَ قَالَ حَدَّثَنِي سَعْدُ بْنُ إِبْرَاهِ بِمَعَنْ عَبْدِاللَّهِ بْنِ شَدَّادِ عَنْ عَلِيْ حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْبَانُ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّنِي عَبْدُ اللّهِ بْنُ شَدَّادٍ قَالَ سَمِعْتُ عَلِيًّا (٢) رَضِيَ إِللّهُ عَنْهُ يَقُولُ مَا رَأَيْتُ النّبِي صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُفَدِّى رَجُلًا بَعْدَ سَعْدٍ سَمِعْتُهُ يَقُولُ ارْمِ فِدَاكَ أَبِي وَأَمِّى [٨٣٠٣٣٣٣٠]

تراجم رجال

ا- قبيصه: دا ابوعامر قبيصه بن عقبه بن محمد السوائي مين در دوي حالات ((كتاب الإيبان باب ملامة المنافق) لاندې تيرشوي دي. (۴)

r-سفیان: دا مشهور امام حدیث تبع تابعی ابوعبدالله سفیان بن سعید بن مسروق ثورى ميد دې د دوى حالات ((كتاب الإيان باب علامة المنافق)) په ذيل كښې راغلى دى (٥) -- سعدبر ابراهيم: دا سعدبن ابراهيم بن عبدالرحمن بن عوف الزهري ميد دي.(ع) ٣-عبداللهبر ماد: دا ابوالوليد عبدالله بن شداد بن هادر محد دي. (٧)

۱) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٨٥)-

۲) (فتع الباري (ج۶ص ۹۶)-

٣) (قوله: سمعت عليارضي الله عنه: الحديث أخرجه البخاري ايضًا كتاب المغازي باب ﴿إذهب طانفتان منكم أن تغشلا... ﴾ رقم (٤٠٥٨ -٤٠٥٩) وكتاب الأدب باب قول الرجل: أبي وأمي رقم (٢١٨٤) ومسلم كتاب فضائل الصحابة باب في فضل سعدبن أبي وقاص رضي الله عنه رقم (٤٢٣٣) والترمذي أبواب المناقب باب: ارم فداك أبي وأمئ رقم (٣٧٥٣. ٣٧٥٥) وأبواب الأدب باب ماجاء في فداك أبي وأمي رقم (٢٨٢٨-٢٨٢٩) أبن ماجه كتاب السنة باب في فضائل أصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم رقم (١٢٩)-\$) (کشف الباری (ج۲ص۲۷۵) -

۵) (کشف الباری (ج۲ص۱۷۸)-

ع) (د دوى د حالاتو د پاره او كورى كتاب الوضوء باب الرجل يوضى صاحبه _

٧) (د دوي د حالاتو د پاره اوګورئ کتاب الحیض باب مباشرت العائض_

ه-على الماكن ا

مافظ آبونعیم آو مذکوره سند. په دې سند کښې د قبیصه نه مراد ابن عقبه او سفیان نه ابن سعید الثوری اکتلا دی. لیکن ابونعیم کیلا ((البستخرم)) کښې دا وئیلی دی چه دلته د قبیصه لفظ د مدونین بخاری د طرف نه تصحیف دی او صحیح الفاظ ((مداثنا قتیبه و)) دی. نو په دې صورت کښې د سفیان نه ابن عُیینه کیلو مراد به وی ځکه چه قتیبه د سفیان ثوری نه د حدیث سماع نه ده کړې. (۲)

نو لکه چه ابونعیم په حدیث کښې دا علت پیدا کول غواړی چه د سفیان نه توری مراد دی او د قتیبه سماع خو د تورې نه ثابته نه ده په دې وجه دا روایت معلل دی (۳)

لیکن حافظ ابن حجر کلی فرمانی چه ماته د آبونعیم د دی انگار خه معنی معلومه نشوه خکه چه د دی نه هیخ یو خیز مانع نه دی چه دا حدیث سفیانین (ابن عینیه و ثوری شیخ) نه مروی دی. نو مصنف کلی دا حدیث (یحی القطان عن سفیان الثوری)) په طریق باندی نقل کریدی، بیا د نسفی په نسخه کنبی هم زمون په وړاندی په موجوده باب

(۵) کښی ((عن مسد عن يحهى عن سفيان)) په طريق باندې مروى دې.(۶) اوس خلاصه د بحث دا شوه چه دا حديث د حضرت سفيان توري سفيان نه هم مروى دې. نو په

دې وجه د دې خبرې هیڅ حاجت نشته چه د قبیصه په ځائ قتیبه او سفیان نه اېن عینیه مراد واخستې شی، اونه د دې څه ضرورت شته چه مدونین بخاری طرف ته د غلطئی نسبت اوکریشی.

اود حضرت على اللي الم مروى د دى حديث تشريح كتاب المغازى (٧) او كتاب الادب (٨) كښي راغلى ده.

ه حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت: حافظ ابن حجر کینی فرمانی چه د دی حدیث دلته په باب کښی راوړل غیر ظاهر دی ځکه چه په دې حدیث کښی د مجن څه د کر نشته، او نه د مجن او ترس په ذریعه د دښمن د غشو نه بچ کیدل.

خوبيا حافظ صاحب پخپله د دې اشكال جواب هم وركړيدې چه د ابن شبويه په نسخه

١) (دَ دوى دَ حالاتو دَ پاره اوګورئ کتاب العلم باب إثم من کذب على النبي صلى الله عليه وسلم-

۲) (فتح الباری (ج۶ص ٤ ٩وعمدة القاری (ج ٤ ١ص١٨٥)-

۲) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٨٥)-

^{4) (}صحيح البخاري كتاب الأدب باب قول الرجل: أبي وأمى رقم (٤١٨٤)-

٥) (الكنت الظراف على الأطراف (ج٧ص٠٤)-

ع) (فتع البارى (ج٤ص ٩٤)-

۷) (كشّف الباري كتاب المغازي (ص٢٣٠)-

۸) (کشف الباری کتاب الأدب(ص۶۰۳-۶۰۵)-

كشف البارى د الماول

کښې د دې روایت نه وړاندې باب بغیر د ترجمه ذکر دې (زمونو په هندوستانی نسخو کښې د اسې ده) اود دې باب بلاترجمه په مناسبت ماقبل باب سره په دې معنی دې چه غشی ویشتونکی د دې امر نه مستغنی نشی کیدې چه هغه به د دښمن د غشونه د بې کیدلو دپاره د څه داسې څیز استعمال کوی چه د ښمن غشی منع کړیشی. (۱)

لیکن علامه عینی و ترمائی چه د حافظ صاحب دا قول د تکلف او تعسف نه خالی نه دی بهتردادی چه داسی اووئیلی شی چه په دې حدیث کښې د رمی ذکردې دغه شان د تیرشوی باب په ړومبی حدیث کښې هم د رمی ذکر وو اود مناسبت د پاره هم دومره هم

کافے دی. (۲)

داهم ونیلی شی چه د تیرشوی باب رومبی حدیث کښی دا راغلی دی چه حضرت ابوطلحه داهم ونیلی شی چه د و نبی تیایی دهال نیولی وو چه دواړه د مخالفینو د غشو نه بچ شی دغه شان دلته هم دا راغلی دی چه حضرت سعدبن ابی وِقاص اَلَّیْنَ غشی ورول او نبی تایی هغه له غشی ورکول (۳) ښکاره غوندې خبره ده چه دا د دې د پاره وو چه هغوی د د بنمنانو د غشو نه بچ پاتې شی ځکه چه د هغه طرف نه داسې مسلسل غشی وریږی نود بل طرف خلقوته به د غشو ورولو موقع نه ملاویږی.

٨٠-بَأَب:الدَّرَق

دَترجمة الباب مقصد: دلته هم امام بخاری رُوَالَتُهُ دَ دِهاَل باره کښې خودلې دی چه دَ دې استعمال مشروع او جائز دې (۴)

لیکن اعتراض داکیږی چه داخو په ترجمه کښې تکرار شوځکه چه وړاندیني باب کوم چه د مجن او ترس باره کښې وو نو په هغې کښې هم د مجن او ترس معني هم د د همال ده.

د دې اعتراض جواب خو دا ورکولې شي چه د مجن او ترس معنی مطلقاً ډهال دې، خو درق هغه ډهال ته وائی چه د څرمنې نه جوړوی او په هغې کښې لرګې او پته نه وی،اوس د معنې فرق دې نو په دې وجه هيڅ اعتراض پاتې نشو.(۵)

دوئم جواب دا ورکریشویدی چه په مخکینی باب کښی د ترجمه الباب نه مقصد ((ومن پتترس بترس صاحبه)) جمله ده دمجن ذکرمقصد نه دې، په دې وجه امام بخاري محله دې دې باب کښې هم د دهال ذکر اوکړو. (۶)

۱) (فتع البارى (ج۶ص ۹۶)-

۲) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٨٥)-

٣) (انظر صحيح البخاري كتاب المغازي باب (إذهب طائفتان منكم أن تفشلا....)رقم (٥٥٥)-

٤) (عمدة القارى (ج٤ ١ص١٨٥) وفتح البارى (ج٤ص٩٥)-

۵) (الأبواب والتراجم للكاندهلوى (ج اص۱۹۸) قال العلامة طاهر الفتنى رحمة الله وفى الدستور الدرقة -بفتحتين- وقاف الحجفةوأراد بها الترس من جلود ليس فيه خشب ولاعصب (ج٢ص١٤٧) مادة درق-۶) (الأبواب والتراجم (ج ٢٤ص١٩٨)-

خو دا دونم جواب زړه ته نه لګی ځکه چه دا دعوی چه مقصود د ترجمه دونم جز دی صحیح نه ده، ځکه چه په مخکینی باب کښی امام بخاری چه کوم احادیث ذکر کړی دی په هغی کښی بعض د ترجمه اول جز او بعض دوئم جز سره منطبق وو، لکه څنګه چه په ماقبل کښی د دې تفصیل تیرشویدی. بیا که چرې دا دعوی هم اومنلی شی چه وړاندینی باب کښی د ترجمه دوئم جز مراد دې نو په دې کښې هم د ترس یعنی ډهال ذکر دې نو هم هغه اعتراض

تكهار في الترجمه دوباره واقع كيري.

[101] حَذَنَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ حَذَنِي ابْنُ وَهُبِ قَالَ عُمْرُوحَدَّنَنِي أَبُوالْأَسُودِ عَنْ عُرُوةً عَنْ عَائِشَةً رَضِيَ اللّهُ عَنْهَا() دَخَلَ عَلَى رَسُولُ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَعِنْدِي جَارِيَتَانِ تُغَنِّيَانِ بِغِنَاءِ بُعَاثَ فَاضُطَجَعَ عَلَى الْفِرَاشِ وَحَوَّلَ وَجْهَهُ فَدَخَلَ أَبُو بَكُم فَائَةَ وَنَا لَهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ فَأَقْبَلَ عَلَيْهِ رَسُولِ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ فَقَالَ دَعُهُمَا فَلَمَا غَفَلَ عَمْزُمُّهُمَا فَخَرَجَنَا قَالَتْ وَكَانَ يَوْمُ عِيدِ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ فَقَالَ دَعُهُمَا فَلَمَا غَفَلَ عَمْزُمُهُمَا فَكَرَجَنَا قَالَتْ وَكَانَ يَوْمُ عِيدِ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَإِمّا قَالَ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَإِمّا قَالَ يَوْمُ عَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَإِمّا قَالَ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَإِمّا قَالَ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَإِمّا قَالَ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَإِمّا قَالَ اللّهِ عَلَى خَدِّةٍ وَيَقُولُ دُونَكُمْ بَيْ وَاللّهُ مَنْ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَإِمّا قَالَ فَاللّهُ مَنْ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَإِمّا قَالَ فَا مُعْمُ فَالَ فَا عُمْ فَالًا اللّهِ عَلَى خَدِّةٍ وَيَقُولُ دُونَكُمْ بَنِي أَرْفِيةً وَيَقُولُ دُونَكُمْ بَنِي أَرْفِيةً وَاللّهُ مَا اللّهِ قَالَ أَصْ اللّهِ قَالَ أَوْعَهُ اللّهِ قَالَ أَحْدُو اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ مَا اللّهُ عَلَيْهِ وَسُلُولُ اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلْمَ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلْمَ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلْمَ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلْمَ اللّهُ عَلْمُ اللّهُ عَلْمَ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلْمَ اللّهُ عَلْمُ اللّهُ عَلْمَ اللّهُ عَلْمُ عَلَى اللّهُ عَلْمُ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلْمُ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَل

تراجم رجال

r-ابر. وهب: دا مشهور امام حدیث ابومحمدعبدالله بن وهب بن مسلم قرشی فهری مربید دې د دوی تذکره (۱) کتاب العلمهاب من بردالله به خیرایفقهه فی الدین) لاندې راغلی ده (۴)

-عمرو: دا عمرو بن الحارث مصري مطعة دي. (۵)

م- ابوالاسود: دا ابوالاسود محمدبن عبدالرحمن بن نوفل مدنى روي دي (ع)

أوله: عن عائشة رضى الله عنها: الحديث مرتخريجه فى كتاب الصلاة باب الحراب فى المسجد وكتاب العبدين باب الحراب والدرق يوم العبد)-

۲) (فتح الباری (ج۶ص۹۵)-

۲) (کشف الباری (ج۲ص۱۱۳)-

ا (کشف الباری (ج۳ص۲۷۷)-

٥) (دُدوى حالاتودَپار، او گورئ كتاب الوضوء باب من مضمض من السويق ولم يتوضًا-

⁴) (دَدوى حالاتو دَبار ، او كورى كتاب الغسل باب الجنب بتوضأ ثم ينام -

٥-عروة: دامشهور تابعی حضرت ابوعبدالله عروه بن الزبیرقرشی اسدی کینی دی د دوی تذکره (رکتاب الإیبان باباحب الدین الله ادومه) لاندې راغلی ده (۱)

قوله: قالت: دخل على رسول الله صلى الله عليه وسلم...: حضرت عائشه الله فرمائي چه رسول الله علي ما كره تشريف راوړو نو دوو جينكو ماسره د جنګ بعاث شعرونه ونيل. حضور علي به بستره باندې سملاستو او مخ مبارك ني بل ارخ ته كړو. دې نه پس حضرت ابوبكر اللي راغلو هغه زه أورتلم چه دا شيطاني لوبه او د رسول الله علي په وړاندې. رسول الله علي د متوجه شواو وئي فرمائيل چه داپريږده. بيا چه كله د حضرت ابوبكر تالي توجو اخوا شوه نو ما دواړو جينكوته اشاره اوكړه نو لاړې.

ابوبهر را توجو احوا سوه تو به حرائی خدد اختر به ورخ به حبشی خلقو دهالونواود جنگ سامان حضرت عائشه فی نور فرمائی چه د اختر به ورخ به حبشی خلقو دهالونواود جنگ سامان سره لوبی کولی: حضور ته می درخواست او کړو یا هغوی تاثیل پخپله ماته او درولم، زما مخ د کتل غواړی؟ ما عرض او کړو چه اوجی، هغوی تاثیل زه خپلی شاته او درولم، زما مخ د حضور تاثیل مخ مبارك ته نزدې وو هغوی به فرمائیل اې بنی ارفده! ښه ډیر ښه، تر دې چه کله زه ستړې شوم نو رسول الله ناتیل او فرمائیل چه بس. ما وئیل اوجی، نو حضور تاثیل اوفرمائیل چه اوس زه.

تنبیه: دَحدیث باب مکمل تشریح انشاء الله (کتاب العلاق)^(۲) او (کتاب العیدین)^(۴) کنبی به راخی. قوله: قال أحمد: فلما غفل: دَ احمد نه مراد ابن صالح دی. (۵)

د تعلیق مقصد د دی تعلیق مقصد دا دی چه احمدبن صالع په روایت کښی ((البتاحمل)) دی. په دواړو صورتونو (لکه چه زمون په هندوستانی نسخوکښی دی) په ځائ ((الباطالی)) دی. په دواړو صورتونو کښی فاعل حضرت ابویکر اللائظ دی. او معنی هم تقریبًا نزدی نزدی ده. نود ((الباحمل)) مطلب خو دا دی چه کله حضرت ابوبکر اللائظ بل طرف ته مشغول شو او ((الباطالی)) مطلب دی چه کله هغه غافل شو.

دمذكوره تعليق تخريج: امام بخارى د خپل شيخ احمدبن صالح دا تعليق موصولاً (كتاب

١) (كشف البارى (ج٢ص٤٣٤)-

۲) (کشف الباری (ج ۱ ص ۲۹۱)-

٣) (صحيح بخاري كتاب الصلاة باب الحراب في المهجد (رقم ٤٥٤)-

٤) (صعيح بخاري كتاب العبدين باب الحراب والدوق يوم العيد رقم (٩٤٩)-

٥) (فتح البازي اح ٢٥٠) حيث قال الحافظ مُعْدَة وهومقتضى إطلا أبى على بن السكن حيث قال كل مافى البحاري: الحداثا أحمد غيرمنسوب فهوابن صالح"-

العيلهن)كښې نقل كړيدې (١)

و عديث و ترجمة الياب سره مطابقت: و حديث شريف ترجمه الباب سره مطابقت و حضرت

عائشه في دى جمله كښې دې ((وكان يومويد، يلعب السودان بالدرق والحماب،٠٠٠٠) ٢٧) فالله علامه ابن بطال فرمائي چه د باب د حديث نه معلومه شوه چه درق د جنګ د هغه پامان نه دې د کوم استعمال چه مجاهد له پکار دې. اود دې په ذريعه د دښمن د وسلې نه بع کیدل پکار دی اود نبی تایم اصحابو هم دا آلات استعمال کری دی (۳)

ر زمونږ په زمانه کښې د ډهال په ځای بلټ پروف جيکټس استعماليږي په کوم چه د ګولني آثر نه کیږی او پخوانی زمانه کښې د ډهال چه کوم حکم ووهم هغه د نن په زمانه کښې د لت بروف جيكتونودي.

٨- بَأَب: الْحَهَا بِلِ وَتَعْلِيقِ السَّيْفِ بِالْعُنُوقِ

دُ حمائل معنى: حبائل - بِقتح الحاء والبيم - دُحبالة أو حبيلة جمع ده، خو أمام أصمعى كَتُحَدُّ فرمائي چه د حمالل د دي لفظ نه هيڅ واحد (مفرد) نشته بلکه د دې واحد محمل دې (۴) بهر حال د دې مفرد حماله وي حميله يا محمل د دې په معني باندې ده، دې ته پيټئي هم وائي کوم کښې چه توره زوړندولې شي (۵)

دَ ترجمة الباب مقصد: علامه ابن بطال مُنظم فرمائي چه دَ باب مقصد او فائده دا ده چه توري په غاړه کښې زوړندول پکار دي په خلاف د هغه سړي چه د دې خبرې قائل وي چه توره په غاړه کښې مه زوړندوه بلکه په سينه دې اوتړلې شي. نو ښکاره خبره ده چه که توره په غاړه کښې زوړنده کړي يا په سينه ئي اوتړي يوه خبره ده او په دې کښې هيڅ بدې نشته (۶) علامه ابن المنير كيه فرمائي چه د مصنف عليه الرحمة مقصد د د دي ترجمونه د سلف صالحینو طریقه کار خودل دی چه هغوی به د وسلوباره کښې اختیاروله او دا خودل دی چه د خضور کا په مبارکه زمانه کښې به د کومو کومو وسلو استعمال کیدلو، دې د پاره چه هغه د نفس د پاکوالی سبب جوړشی او د بدعت نه د لریوالی دریعه وی (۷)

١) (تغليق التعليق (ج٣ص٤٥ ٤)-

٢) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٨٧)-

٣) (شرح ابن بطال (ج٥ص٩٨)-

^{£) (} شرح ابن بطال (ج۵ص۹۸)-

۵) (حواله بالا. فتح البارى (ج۶ص۹۵) ولسان العرب (ج۱۱ص۱۷۸) (مادة ح.م.ل) -

 $^{^{+}}$) (القاموس الوحيد($^{-}$ مادة حمل) مادة

۷) (فتع الباری (ج۶ص۹۵)-

إه ١٠٥ عَدُنَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبِ حَدَّثَنَا عَنَا حَنَا أَبُنُ زَيْدِ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنْسِ رَضِى اللَّهُ عَنْهُ ()
قَالَ كَانَ النَّبِيُ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحْسَنَ النَّاسِ وَأَشْجَعَ النَّاسِ وَلَقَدُ فَزِعَ أَهُلُ الْمَدِينَةِ لَيْلَةً فَوْرَجُوا نَعُو الصَّوْتِ فَاسْتَقْبَلَهُمُ النَّبِيُ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدُ اسْتَبْرَأَ الْحَبَرُ وَهُو عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدُ اسْتَبْرَأَ الْحَبَرُ وَهُو عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدُ اسْتَبْرَأَ الْحَبَرُ وَهُو عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدُ السَّنِهُ الْحُبَرُ وَهُو يَقُولُ لَمْ ثَرَاعُوا لَمْ ثَرَاعُوا ثُمَّ قَالَ وَجَدُلُالُهُ بَحُرُ الْوَ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ وَجَدُلُالُهُ بَحُرًا الْوَلَامُ ثَرَاعُوا لَمْ ثَرَاعُوا لُمْ ثَرَاعُوا لُمْ ثَرَاعُوا لُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسُلَمَ وَهُو يَقُولُ لَمْ ثَرَاعُوا لَمْ ثَرَاعُوا لُمْ ثَرَاعُوا لُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَالمُو اللَّهُ عَلَيْهِ وَالمُو اللَّهُ عَلَيْهِ وَالمَّوْلِ لَمْ ثَرَاعُوا لَمْ ثَرَاعُوا لُمْ قَالَ وَجَدُلُالُهُ بَعُوا الْمُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَالمُ اللَّهُ مَنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَالمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهِ السَّالُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ الْمُولُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُ اللَّهُ الْمُؤْلُولُ لَا مُعْرَاعُوا لُمْ اللَّهُ الْعُوالُولُ اللَّهُ الْمُ اللَّهُ ال

تراجم رجال

ا-سلیمان بر حرب: دا ابوسلیمان بن حرب ازدی برای دی. د دوی تذکره ((کتاب الإیمان باب من کره از کره ((کتاب الایمان باب من کره ان معود فی الکفی) لاندی راغلی دی. (۲)

-- حماد بن زیدبن درهم از دی بصری مُنِید دوی حالات هم ((کتاب الایمان مِنْ الله علی) در دوی حالات هم ((کتاب الایمان الله الله علی) به دیل کنبی تیرشوی دی. (۳)

<u>-- ثابت: دامشهور تابعی حضرت ابومحمد ثابت بن اسلم بنانی بیات دی. دوی تذکره (کتاب العلمهاب القراءة والعرض علی البحدث) لاندی را غلی ده (۴)</u>

٣- انس: دا مشهور صحابی حضرت انس بن مالك ﴿ اللهُ عَلَيْ دَى . دَ دوى حالات ((كتاب الإيمان الميمان الايمان الميمان عبد المعلم الم

تنبیه د حضرت انس گائئ نه روایت شوی حدیث باب تشریح روستو (کتاب الجهاد) به مختلفو خایونو کنبی تیره شویده خو د بعضو په اول خل راتلونکو جملوتشریح او توضیح دلته ذکر کو لی شی.

قوله: وقد استبراً الخبر.... به حقيقت كند حضور تلالم د خبر تحقيق كړې وو. «استبرا» معنى د تحقيق او تفتيش ده. (۶)

قوله: وهو يقول: لمرتراعوا، لمرتراعوا: حضور ناتی فرمانيل چه تاسو خلقو مه ويريږنی تاسو خلق مه ويريږنی

علامه خظابی براه اود هغه په اتباع کښې علامه کرماني براه او علامه عیني براه فرماني

١) (قوله: عن أنس رضى الله عنه: الحديث مرتخريجه في كتاب الهية باب من استعار من الناس الغرس-

۲) (کشف الباری (ج۲ ص۱۰۵) -

۳) (کشف الباری (ج۲ص۲۹۱)

^{) (}کشف الباری (ج۳ص۱۸۳)

 ⁽کشف الباری (ج۲ص ٤) -

^{&#}x27;شرح الكرماني (ج١٢ص١٤٨) وعمدة القاري (ج١٤ص١٧٨)-

چه کلمه ((لم)) دلته د ((لا)) ناهیه په معنی کښې دې او مطلب دا دې چه مه ویریږنی، د عربوخلق کلمه ((لم)) داسې استعمالوی چه ((لم)) د ((لا)) په ځای وانی. (۱)

لیکن حضرت ګنګوهی پیمیځ فرمائی ((لم تراموا)) کښې د سر نه د ویرې نغی ده او په دې جمله کښې هغه مبالغه موندلې شی کومه چه ((لاتراموا)) کښې نشی موندلې. د دې وجه دا ده چه په نهی او نفی کښې فرق دې نو نهی د خپل موجب د وجود متقاضی کیږی په خلاف د نفی چه نفی کښې د هغې د موجب د وجود کیدل ضروری نه دی.(۲)

اوس د خضور ترکیم د دې جملي (الم تراعوا)) مطلب دا شو چه اې صحابه کرامو! تاسو اونه ويريدلئي په دې کښې د سر نه د ويرې نفي اوشود.

او چه دا وئیلی شوی دی اهل عرب کلمه ((لم)) ته کلمه ((لا)) ناهیه په خای هم استعمالوی دا په خپل موضع کښې نه ده واقع (۳) یعنې که دا استعمال چرته په بل خای کښې وی نو وی دې لیکن دلته کلمه ((لم)) د کلمه ((لا)) په ځای نه ده استعمال شوې لکه چه علامه خطابی په ځای نه ده استعمال شوې لکه چه علامه خطابی په ځای د ده استعمال شوې لکه چه علامه

حضرت شیخ الحدیث محمدز کریا میشد هم د حضرت گنگوهی میشد دا توجیه خوبه کریده او دا ئی راجع گرځولی ده. (۴)

د حدیث د ترجمهٔ الباب سره مطابقت: د حدیث باب ترجمه الباب سره مطابقت په دې جمله کښې دې. ((وق عنقه السیف)) نود دې نه معلومه شوه چه توره په غاړه کښې زوړندول جائز دی.(۵)

لیکن اشکال دا کیږی چه په حدیث کښې خود حمائل ذکر نشته او په ترجمه کښې خود حمائل هم ذکر دې. نو جواب دا دې چه حمائل د تورې حصه ده او د تورې ذکر کول دحمائل په موجود کیدو باندې پخپله دلالت کوی. په دې وجه د دې جدا ذکر کولو څه ضرورت نشته (۶)

⁽ ۱ (أعلا الحديث (ج٢ص١٣٩٩) وشرح الكرمانى (ج١٢ص١٤٩) وعمدة القارى (ج١٤ص٧٧) قال العلامة الخطابى بمينة وقوله: يريد: لاتخافوا، والعرب تتكلم بهذة الكلمة هكذا، تضع كلمة ((لم)) موضع ((لا))- وقال (أبوعراش) الهذلى. رفونى وقالوا: ياخلاد لم ترع. وانظر لسان العرب مادة (ر.ف، ا) (ج١ ص٨٧)-

٢) إس الأنوار مبحث النهى (ص٤٣)-

۳) (لامع الدراري ((ج٧ص١٢٨)-

٤) (تعلَّيقات لامع الدّراري (ج٧ص٢٣٨)-

۵) (عمدة القارى رج ٤ ١ ص ١٧٨) وفتح البارى (ج ٢ ص ٩٥)-

۶) (عمدة القارى (ج ١٤ ص١٨٧)-

٨٠- بَاب: حِلْيَةِ السَّيُوفِ

دَ ترجمة الباب مقصد حلية كالى ته وائى كه دَ سرو زرو وى كه دَ سپينو زرو او دَ امام بخارى مُنِيدٍ مقصد دَ دې ترجمه نه داخودل دى چه په توره كښې سره زر يا سپين زر لګول جائز دى كه نه ؟ (١) ليكن په دې مسئله كښې اختلاف دې د دې دپاره تفصيل به مونږ وړاندې دَ حديث په تشريح كښې ذكر كوو

[٢2ar] حَدَّثَنَا أَخْمَلُ بُنُ فَحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبُّدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا الْأَوْزَاعِیُ قَالَ سَمِعْتُ سُلَمُانَ بُنَ حَبِيبٍ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا أُمَامَةً (٢) يَقُولُ لَقَدُ فَتَحَ الْفُتُوحَ قَوْمٌ مَا كَانَتْ حِلْيَةُ سُيُوفِهِمُ الذَّهَبَ وَلَا الْفِظَةُ إِنْمَاكَانَتْ حِلْيَتُهُمُ الْعَلَابِيَّ وَالْآنُكَ وَالْحَدِيدَ

تراجم رجال

ا- احمد بن محمد بن محمد بن محمد بن موسى المروزي مُريد دي. (٣)

-- عبدالله: دا امام عبدالله بن مبارك الحنظلى مَنْ دي. د دوى مختصر تذكره (بدءالوحي) كنبي تيره شوي. (۴)

۳- الاوزاعی: دا ابوعمرو عبدالرحمن بن عمرو بن ابی عمرو یحمداوزاعی کافت دی در در این العلم باب الخروج فی الله العلم) لاندی تیرشوی دی. (۵)

٣- سليمان بر حبيب: دا امام قاضى سليمان بن حبيب المحاربي الداراني المعاربي الداراني الداراني المعاربي الداراني المعاربي البوايوب، ابوبكريا ابوثابت د هغوى كنيت دي. (۶)

دى ديرشو كالوپورى د مختلفو خلفاؤ مثلاً عمربن عبدالعزيز، يزيد، وليد، هشام بن عبدالملك بن مروان، وليد بن يزيد بن عبدالملك وغيره د طرف نه د دمشق قاضى په مرتبه فائز وو. (٧)

قاضى سليمان بن حبيب حضرت ابوامامه الباهلى،حضرت ابوهريره، حضرت معاويه اوحضرت انس تفكيم تعالى وغيره نه د المحضرت انس تفكيم تعالى وغيره نه د حديث روايت كوى.

۱) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٨٨)-

٢) (قوله: سمعت آباأمامة رضى الله عنه: الحديث أخرجه الإمام ابن ماجة غير الإمام البخارى فى كتاب الجهاد باب السلاح رقم (٢٧٠٧)-

٣) (دَ دوى دَ حالاتودَ پاره او كورئ كتاب الوضوء باب مايقع من النجاسات في السمن والماء-

٤) (كشف البارى (ج١ص٤٦٤)-

۵) (کشف الباری (ج۳ص۸۰۶)-

ع) (تهذيب الكمال (ج ١١ص ٣٨٢) وسير أعلام النبلاء (ج٥ص ٣٠٩)-

٧) (حواله بالا-

اود هغوی نه روایت کونکوکښی امام زهری، عمر بن عبدالعزیز (دا دواره) د هغوی داقرانو نه دی، عبدالعزیز بن عمر عبدالعزیز، اوزاعی، عثمان بن ابی العاتکه، ابوکعب، ایوب بن موسی السعدی، عبدالوهاب بن بخت وغیره شامل دی (۱)

امام یحیی بن معین میشهٔ فرمائی ((ثقة)) (۲)

امام عجلي او امام نسائي المنام ته هم د هغه توثيق مروى دي. (٣)

امام دارقطنی رسید فرمائی ((لیسبههاس،تابی مستقیم)) (۴)

علامه ذهبی منظم فرمائی ((لقة))(۵)

امام بخاری مرای نه علاوه امام ابوداؤد او امام ابن ماجه المنظيم هم د دوی نه روايت اخستې دي. (ع)

په بخاری شریف کښی د هغوی نه صرف یو حدیث یعنی حدیث باب دی. (۷) علامه واقدی، ابن سعد، ابن حبان او علی بن عبدالله تمیمی انتظام په قول د هغوی انتقال په

کال ۲۲ ه کښې شوې. او همدغه صحیح هم دی. (۸) ۵- ابوامامه:دامشهور صحابی حضرت ابوامامه تنگیز صُدَی بضم المهملة الأولى و قتح الثانیة

ه - بورن عدد در ۱۰ مسهور عدد بی مسرف بورند در ۱۰ م و تشدید الیام – (۹) ابن عجلان الباهلی دی (۱۰)

قوله: ... یقول: لقد فتح الفتوح قوم ماکانت حلیه سیوفهم النهب والفضه: ملیمان بن حبیب منطق فرمائی چه ماد حضرت ابوامامه باهلی الفتی نه اوریدلی هغوی فرمائیل چه بی شکه دا ټول فتوحات هغه خلقو (صحابه کرام تفایق) کړی دی د چا د تورو ښائسته والی او زینت چه نه په سرو زرو سره شوی وو او نه په چاندئی سره.

خضرت ابوامامه باهلی گائئ چه دا اوفرمائیل صحابه کرام کالتی د چا په لاسونوچه دا بی شمیره فتوحات پوره شوی دی د هغوی په تورو باندې نه د سرو زرو کار شوې وو او نه د چاندنی. د دې فرمان اوقول سبب د ابن ماجه په روایت کښې راغلی دی چه په دې روایت کښې دا تفصیل هم ذکر دې:

۱) (شیوخ او تلامذه د پاره او گورئ تهذیب الکمال (ج۱۱ص۳۸۳)-

۲) (تاریخ عثمان الدارمی (ص۱۲۹) رقم (۴۰۸)-

٣) (تهذیب تاریخ ابن عساکر (ج۶ص۲٤۸)-

٤) (الكاشف (ج ١ص ٤٥٨) رقم (٢٠٧٨)-

٥) (تهذيب الكمال (ج١١ ص ٣٨٤) وحواله بالا-

۶) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ١٨٨)-

۷) (فتح الباری (-93 - 90 - 90) وعمدة القاری (-93 - 90 - 90)

٨) (طبقات ابن سعد (ج٧ص٤٥٤) وتهذيب الكمال (ج١١ص ٣٨٤)-

۹) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ١٨٨)-

١٠) (دَدوى دَحَالاتودَپاره او گورئ كتاب الحرث والمزارعة، باب ما يحذرمن عواقب الاشتعال بآلة الزرع....

(قال رأى سلمان بن حبيب) دخلنا على أبي أمامة: في أى في سيوفنا شيئا من حلية قضة، فغضب، وقال: لقر

قاضی سِلیمان بن حبیب فرمائی چه مونږ خلق حضرت ابوامامه باهلی نگانو کره داخل شو نو هغه زَمون په تورو باندې څه چاندې اوليده نو په غصه شو او وني فرمانيل.... د امام اسماعیلی مسلم و روایت نه معلومیږی چه حضرت ابوامامه کره د داخلیدلو واقعه د حمص ده. (۲) د طبرانی د روایت نه پته لکی چه قاضی سلیمان بن حبیب سره د هغه په نورو ملکرو کښی عبدالله بن ابی زکریا او مکحول انتام هم وو. (۳)

قوله: إنماكانت حليتهم العلابي والآنك والحديث: بلكه د اوښ د سټ اوږده پټه، سیسه او اوسپنه د هغوی د تورو کالی وو.

د دکر شوي جملي مطلب مطلب دا دي چه حضرات صحابه کرام رحروه وي وميه د چا په لاسونوچه دا لوي لوي او عظيم الشان فتوحات سرته رسيدلي وو، په دې عيش او عشرت کښې نه وو په کوم کښې چه نن تاسو خلق اخته ئې، ستاسو د آتورو ښائست او کالي سپين زر او سره زر دی خود هغوی د تورو کالي به دا معمولي څيزونه وو. (۴)

د لفظ علابي تحقيق: العلاب-بغتح العين المهدلة وتخفيف اللامروكس الهاء المرحدة -(٥)

د علهاء جمع ده. علامه خطابی که مطابق د سټ پټې ته وائي او په هريو سټ کښې دوه علهاه وي اود اوښ په ټولو پټوکښې دا مضبوطي وي. (ع)

اوس دَعلامه خطابی گُنام مطابق د ((العلابی) نه د اوښ د سټ پټې مراد دی. علامه قسطلانی گُنام فرمانی چه داسې به کیدل چه اول به د اوښ د سټ پټې څیرې کیدلې بیا به د تورې تیکی لاندینئی او پاڅنئی حصه کښې دا تړلې کیده بیا به ئې راتاووله او دا به د ښانست یا کالی په توګه اختیارولې شو. (۷)

د حافظ ابونعيم کيالئ په (مستخرج) کښې چه کوم روايت دې په هغې کښې امام اوزاعي کنځ دَ علاي تفسير پد دې الفاظوسره کړيدې. ((الجلود الخام التي ليست بمدبوعة)) يعني هغه کچه څرمنې د کومې چه دباغت نه وي شوي (۸)

١) (سنن ابن ماجه كتاب الجهاد باب السلاح رقم (٢٨٠٧)-

۲) (فتح الباری (ج ۱ ۱ ص۹۵)-

٣) (المعجم الكبير للطبراني (ج٨ص١٠٠) رقم (٧٤٩٣)-

٤) (فيض البارى (ج٣ص٤٣٤)-

۵) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٨٨) وفتح البارى (ج ٤ص ٩٥)-

۶) (أعلام الحديث (ج٢ص ١٤٠٠) والقاموس الوحيد (ص١١١٣) مادة علب_

٧) (شرح القسطلاني (ج٥ص٩٨) وتعليقات اللامع (ج٧ص٢٣٩)-

٨) (حواله بالا، وفتح الباري (ج٤ص٩٤)وعمدة القاري (ج١٤ص١٨٨)-

1879

او د علامه داودی مطبع دا خیال دی چه ((علاب رصاص)) هم د سیسی یو قسم دی. لیکن حافظ د علامه قزاز په (شرح غریب الجامع) په حواله سره دا خودلی دی چه د داودی دا خیال غلط دی. (۱)

بهرحال اکثرواهل لغت د اوښ دسټ پټې ته علاي وئيلې او همدغه راجح قول معلوميږي. ^{۲۱} د الانک تحقيق: الأنك بالمدهم النون بعدهاكاف سيسې (سيكې) ته وائي دا داسې واحد مغرد لفظ دې د كوم چه هيڅ جمع نشته اودا هم وئيلې شوى دى چه ((آنك)) اسم جنس دې اود دې يوې ټكړې ته ((آنكة)) وائي. (۳)

او بعض حضراتو وئیلی دی ((آنك)) خالص سیسی ته وائی. (۴)

خو علامه داودی وائی چه ((آتك)) رانگ ته وائی.(۵) او رانگ يو معدنی څيز دې كوم سره چه يوځائ كول او د قلعي كار اخستلې شي. (۶)

اود علامه ابن الجوزی محفی وینا ده چه ((آدکه)) قلعی سیسی ته وائی او ((القلعة - بغتج اللام)) یو د کان نوم دی د کوم طرف ته چه اهل عرب بنه رانگ سره منسوب کوی.(۷) په توره سره یاسپین زر لکولوحکم: د احنافو او شوافعو حضراتوپه نزدپه توره باندی سره او سپین زر لکولو حکم دا دی چه د سرو زرو خوبالکل اجازت نشته خو سپین زرد بانست به توګه استعمالولی شی.(۸)

د دې حضراتو دليل د ابوداود ترمذي او نسائي دا روايت دې. ((کانت تبيعة سيف الرسول الله صلى الله مله من قفة)) (۹)

((اللفظ للنسائ)) خو امام احمد مين نه دواړه قسمه روايتونه مروى دى. يوقول هم دغه چه

۱) (فتح الباری (ج۶ص۹۶)-

٢) (تاج العروس (١ص٣٩٨) مادة علب-

۳) (فتع الباري (ج۶ص۹۶)-

٤) (فتح الباري (ج ٤ ص ٩٩) وعمدة القاري (ج ١ ١ ص ١٨٨)-

٥) (حواله بالا)-

ع) (مصباح اللغات(ص ۶۸٤)مادة قصد-

٧) (حواله بالا ص٧٠٣)مادة قلع-

٨) (المجموع شرح الهذب للنووى(ج ٤ ص ٤٤٤) وإعلاء السنن (ج١٧ص ٣٢١) كتاب الحظر والإباحة وبذل المجهود (ج١٢ص ٨٣)-

٩) (سنن أبي داؤد كتاب الجهاد باب في السيف يحلى رقم)٢٥٨٣) وسنن النسائي كتاب الزينة باب حلية السف، رقم (٥٣٧٥) والجامع للترمذي أبواب الجهاد باب ماجاء في السيوف وحليتها رقم (١٤٩١) والشمائل المعمدية للترمذي مع شرحه جمع الوسائل)ج ١صض ١٩٤) باب ماجاء في صفة سيف رسول الله صلى الله عليه وسلم

كتأب الجهاد (جداول)

صرف د چاندنی جوازشته (۱) دوئم قول دا دې چه سره زر هم په توره کښې استعمالولې شپ (۲)

می رود المام احمد دلائل او د دی جوابونه امام احمد د سرو زرو په جواز د دی لاندینی احادیثو او آثارونه استدلال کریدی

٠ د خضرت عثمان بن حنيف باره کښې مروى دى چه د هغه د تورې ميخ د سروزرو وو (٣)

و دغه شان د حضرت عمر بن الخطاب الله کنبی روایت دی چه هغوی سره یوه توره و ده د هغی دلی یا تکړی د سرو زرو وی (۴)

آمام ترمذی برای په خپل سند سره مزیدة العصری نه روایت کریدی چه نبی کریم ناتم کله مکه مکرمه کښی داخل شوی وو نو دهغوی په توره باندې سره زر او سپین زر لګیدلې وو. د حدیث یو راوی طالب بن حجیر وائی ((فسالته عن الفضة فقال: کانت بیعة السیف فضة)) چه ما د هغوی نه د چاندنی باره کښې تپوس او کړو نو هغوی اووئیل چه د تورې د موټی چاپیره چاندی وه. (۵)

خود امام ترمذی دا حدیث د مختلفو وهاتو په وجه معلول دی

امام ترمذی مرای از بخپله دی حدیث ته حسن غریب وئیلی دی او ښکاره خبره ده چه چه حدیث غریب د هغوی د صحیح احادیثو معارضه نشی کولی په کومو کښی چه په صراحت سره د سرو دپاره د ذهب د استعمال ممانعت راغلی دی

دَمُلاعلى قارى الشمائل كنبي ليكي: ومُلاعلي قارى المُلاث المائل شرح الشمائل كنبي ليكي:

(رلايعارض هذا ماتقهر من حهمته بالنهب لأن هذاالحديث ضعيف، ولايمح الجواب بأن هذا قبل ورودالنال هذا ماتقهر من حهمته بالنهب لأن قبل الفتح على مانقل، ولعله على تقدير صحته أنه كانت ففته مبوهة بالنهب.... ويشير إليه حيث ما سأل الرادى عن النهب رلأنه كان عالما بحهمته وإنه لم يكن الاتببها) (ع)

یعنی دا حدیث کښی چه کومه د سرو زرو د حرمت خبره مقرر شویده د دی معارضه نشی کولی ځکه چه دا حدیث د سرو کولی ځکه چه دا حدیث ضعیف دی او دا جواب هم صحیح کیدی نشی چه داحدیث د سرو زرو د حرمت د مکی د فتح نه زرو د حرمت د مکی د فتح نه

١) (المغنى لابن قدامة (٢ص٣٢٥)-

٢) (حواله بالا-

٣) (المغنى لابن قدامة (٢ص٣٢٥) واعلاء السنن (ج١٧ص ٢٢٤)-

٤) (حواله بالا-

۵) (الجامع للترمذى أبواب الجهاد باب ما جاء فى السيوف وحليتها رقم (١٤٩٠) وقال الترمذى: وهذا حديث حسن غريب والشمائل المحمدية له مع جمع الوسائل (ج١ص ١٩٤) باب ما جاء فى صفة سيف رسول الله صلى الله عليه وسلم-

ع) (المواهب اللدنية للبيجوري (ص٩٤) وجمع الوسائل في شرح الشمائل (ج١ص١٩٤)-

وړاندې دې لکه چه نقل دی. او که د حدیث صحت اومنلې شې نو کیدیشي چه د تو یې په چاندنی باندې د سرو زرو اوبه چړاو شوې وي اود دې خبرې طرف ته د راوي فعل هم اشاره کوی چه هغه د سرو زرو په بابت سوال نه دې کړې بلکه د چاندنی باره کښې سوال کړېدې ځکه چه راوی ته پخپله د سرو زرو دحرمت علم وو او دا چه په دې باندې د سرو زرو اوبه جراؤ شوې وي.

د دې حديث په سند کښې يو راوی هود بن عبدالله دې. کړم چه ابن بطال مينيو مجهول ګرځولې دې. (۱) دغه شان علامه تورېشتي کښي فرماني

((هذاالحديث لاتقوم به حجة إذليس له سنديعتد به) (٢)

يعني په دې حديث سره حجت نشي تام کيدې ځکه چه د دې حديث سند د دې درجې نه دې چه په دې باندې اعتبار او بهروسه آوکړيشي. ا

دي نه علاوه بعضو محدثينو حضراتو او المه رجالو هم د دي حديث په سند کلام کړيدي. نو علامه ابن عبدالبر مُراثِير فرمائي (رليس إسناده بالقوى))(٣) او ابن القطان مُرَبِيرٍ فرمائي ((هوعندی ضعیف لاحسن)) او ابوحاتم رازی ﷺ فرمائی ((هذا منکر)) او علامه ذهبی ﷺ فرمائی ((صدی این القطان)) (۴)

د حضرت عثمان بن حنيف باره كښې چه دا كوم روايت دې چه د هغه د تورې ميخ د سرو زرو وو نود دې نه احنافوته هم څه اختلاف نشته. قاضّی خان ﷺ فرمائی ((ولاپاس پېسامور الذهب والفضة)) (٥)

او ترکومې چه د حضرت عمر الله د تورې تعلق دې چه په دې کښې د سرو زرو ټکړې لګیدلې وې نو په دې کښې دوه احتماله دی:

الکه چری دا ثابته شی چه حضرت عمر الله به دا استعمالوله نو دا په اثر تمویه باندی محمول دی، مطلب دا چه د دغه تورې په ذکر شوی ټکړو باندې د سرو اوبه چړاؤ وي (۶) ٠ ا هم ممكن ده چه هغه توره حضرت عمر الله له په غنيمت كښې راغلې وي او هغه خپل ځان سره ایخودې وی او هغه نی استعمال کړې نه وی او دا خو واضح دی چه د سړو دپاره د سرو زرو يا سپينو زرو استعمال ممنوع دې د دې ساتل منع نه دې د پاره ئي ځان سره کیخودی وی چه الله تعالی هغوی په کومو نعمتونو سره مشرف کړی وو چه هغوی له په مشرکانویاندی، د هغوی په مالونواو وسله باندې غلبه ورکړې وه چه د دې شکریه اداکړیشی. (۲)

١) (تهذيب التهذيب (ج١١ص ٧٤)-

٢) (انظر كتاب الميسر في شرح مصابيح السنة (ج٣ص ٨٩٠) وجمع الوسائل (ج١ص ١٩٤)-

٣) (ُحواله بالا والاستيعاب بهامش الإصابة (ج٣ص٥٢٥)-

٤) (انظر جمع الوسائل في شرح الشمائل وبهامشه شرح المناوي (ج١ص١٩٤)-

۵) (فتاوی قاضی خان بهامش الفتاوی العالمکیریة (الهندیة) (ج ٣ص ١٣)-

۶) (اعلاء السنن (ج۱۷ص ۳۲٤)-

٧) (حواله بالا-

په توره کښې سره زر استعمالول او حدیث باب: حضرت ابوامامه الباهلی تانو په حدیث باب په بوره سبی سره رو است و در او سپین زر استعمالولو باندی تنقید کریدی. کښی د مضمون مطابق په توره کښی سره زر او سپین زر استعمالولو باندی تنقید کریدی. دینه معلومیږی چه د سرو او سپینو زرو کالی استعمالول په توره کښې جائز نه دی لیکن

احناف او شوآفع چاندی د زینت په توګه اختیارولو ته جائز وائی. د دی اشکال په جواب کښې حضرت مولانا ظفر احمد عثماني کښتې فرماني چه د حضرت ابوامامه الله علي به حديث كښكي داسې څه خبره نشته چه د چاندنى د كالى په توګه استعمال نفی وی، نو چه کله هغوی اوکتل چه خلق په دې کښې مشغول شو نو هغه تنقید اوفرمائیلوچه خلق د دې قسمه کارونو نه ډډه اوکړی ګنې پخپله په بخاری شریف کښې روايت راغلَې دې چه د خضرت زبير تالي توره په چاندنی سره ښانسته وه. (١)

دغه شآن دَ حضرت عروه مُرَّالِهِ بَارَهُ كَنِسَى هُمْ رَاغُلَى دَى چَهْ دَ هغه بِهُ تَوْرِهُ كَنِسَى چاندى لكيدلى وه. (٢) په دې خبره باندې دلالت كوى چه دَ حضرت ابوامامه ناتو دا قول چه دَ صحابه کرامو تورې په چه سرو زرو او سپينو زرو ښانسته نه وې په اغلب باندې مېني دې او په دې کښې دَ جِواز نفی نشته. دَ حضرت ابوامامه اللَّهُ منشاء همدغه وه چه خلق دی تورو ښانسته کولوکښې مشغول نه شي اود دې خبرې تنبيه کول وو چه د فتح او کامرانني مدار په دې نه دې چه تورې دې ښانسته کړيشي. (۳)

٨٠- بَاب: مَنْ عَلَقَ سَيْفَهُ بِالشَّجَرِفِي السَّفَرِعِنْ دَالْقَابِلَةِ

دَترجمة الباب مقصد دلته د دى باب لاندى أمام بخارى رَوَالله دا خودلى دى كه اوزاكار وخت وی، او سړې آرام او قیلوله کوي او په دې وخت کښې خپله توره چرته اونه یا کونډه کښې زُورِند کړی اُنو هیاڅ باك نشته ځکه چه دَ 'دې اصل په سنت کښې موجود دې او دغه شان

حَضُور عَلَيْهُمْ هُمْ خَيِلَهُ تُوره په اونه کښي زوړندکرې وه. او علامه عیني رُفت کله بهادري، په الله او علامه عیني رُفت فرماني چه د دې ترجمه فائده دا ده چه د نبي اکرم کالله بهادري، په الله

تعالى باندى توكل او صدق يقين بيأن كريشى. (۴) [٢٥٥٠] حَدَّثِنَا أَبُو الْمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزَّهْرِي قَالَ حَدَّثَنِي سِنَانِ بُنُ أَبِي سِنَانِ الدُّوَلِيُّ وَأَبُوسَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ جَابِرَبْنَ عَبْدِ اللَّهِ (٥) رَضِىَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَ أَنَّهُ غَزَامَمَ

١) (الصحيح البخاري (ج٤ص٥٤٤) كتاب المغازي باب قتل أبي جهل رقم (٢٩٧٤)-

٢) (حواله بالا-

٣) (إعلاء السنن (ج١٧ ص٣١)-

٤) (الأبواب والتراجم (ج ١ص١٩٨) وعمدة القارى (ج ١ ١ص١٨٩)-

٥) (قوله: جابر بن عبدالله رضى الله عنهما الحديث: أخرجه البخارى أيضًا في كتاب الجهاد باب تفرق الناس عن الإمّام عندالقائلة والاستظلال بالشجر رقم (٢٩١٣) وكتاب المغازى باب غزوة ذات الرقاع رقم (٣٤، ٣٥، ١٣٤) ومسلم كتاب صلاة المسافرين باب صلاة الخوف رقم (١٩٤٩) والنسائى في سننه كتاب صلاة الخوف رقم 1008 و1000)-

رُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قِبَلَ نَجْدٍ فَلَسَّا قَعْلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَتَعْرَقَ مَعُهُ فَأَذْرَكَتْهُمُ الْقَالِلَةُ فِي وَادِكْثِيرِ الْعِضَاةِ فَنَزَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَتَعْرَقَ النَّاسُ يَتْعَظِّلُونَ بِالشَّجَرِ فَنَزَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَمْتَ سَمْرَةٍ وَعَلَقَ بِهَا سَيْفَةُ وَمُنَا نَوْمَةً فَإِذَارِسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدُعُونَا وَإِذَا عِنْدَةُ أَعْرَائِي فَقَالَ إِنَّ هَذَا الْخَتَرَطَّ عَلَى سَيْفِي وَأَنَا نَابِمُ فَاسْتَيْقَظُتُ وَهُوفِي يَدِي عِصَلْتَا فَقَالَ مَنْ يَمْنَعُكُ مِنِي فَقُلْتُ اللَّهُ ثَلَاثًا وَلَمْ يُعَاقِبُهُ وَجُلَسَ (٢٧٥٦، ٢٧٥٩، ٢٩٠٥، ٢٩٠، ٢٩٠٥، ٢٩٠٥]

تراجم رجال

-ابواليمان: دا ابواليمان حكم بن نافع بصرى مينه دي.

۲- شعیب: دا ابویشر شعیب بن ابی حمزة قرشی اموی کنت دی دوارو حضراتو حالات ((پده الوسی)) د شپرم حدیث په ذیل کښی راغلی دی (۱)

-- الزهرى: دا امام محمد بن مسلم ابن شهاب زهرى مُنْ دى. د ده حالات هم اجمالاً ((بدم الوحي)) د دريم حديث په ذيل كښې راغلى دى. (٢)

م- سنان بن ابي سنان الدولي: دا سنان بن ابوسنان يزيد بن اميه الدولي المدنى بين الميه الدولي المدنى بين المين المين

دى دَحَضرت جابرين عبدالله، حضرت حسين بن على بن ابى طالب، حضرت ابوهريره تَوَاكُمُ ا او ابوواقدالليشي مُسَادِ نه روايت كوي.

او د ده نه زید بن اسلم او امام زهری مید روایت کوی (۴)

امام عجلی میشی فرمانی ((مدن تابع لقة)) (۵)

امام ذهبی کنان فرمائی ((تعة)) (ع)

امام ابوحاتم او امام ابن حبان شخیم هغه په (کتاب الثقات) کښې ذکر کړې (۷) د امام بخاري نه علاوه امام مسلم،ترمذي اونساني شخیم هم د ده نه روایات اخستې دی.(۸)

۱) (کشف الباری (ج۱ص۷۹-۴۸۰)-

۲) (کشف الباری (ج۱ص۳۲۶)-

٣) (تهذيب الكمال (ج١٢ص ١٥١ وعمدة القارى (ج١٤ ص ١٨٩)-

ا) (تهذيب الكمال (ج١٢ ص١٥٢)-

٥) (حواله بالا-

٤٠) (الكاشف للذهبي (ج١ص٤٤٨ رقم (٢١٥٤)-

٧) (تهذيب الكمال (ج١٢ص١٥٢)-

٨) (حواله بالا-

كتأب الجهاد (جلداول)

یحیی بن بکیر کیانی فرمانی چه د دوو اتیا کالو(۸۲) په عمر کښې په کال ۱۵۰ کښې وفات شو. (۱)رحمهاللهرحمهٔ واسعهٔ.

٥-ابوسلمه بر عبدالرحمر دا مشهور تابعی محدث حضرت ابوسلمه بن عبدالرحمن بن عوف مید دی د ده حالات (رکتاب الإیان باب صوم رمضان احتسابًا من الإیان) لاندی تیرشوی دی (۲)

٢- جابربر عبدالله رضى الله عنهما: دا مشهور صحابى حضرت جابر بن عبدالله

قوله: أخبرنا أنه غزا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم قبل نجد فلما

قفل:حضرت جابر بن عبدالله النوا ابوسلمه بن عبدالرحمن ته خبرور کړو چه هغه نبی اکرم تالیم سره د نجد طرف ته په یوه غزا کښی شریك وو. کله چه رسول الله تالیم واپس شو نو هغوی سره دی هم واپس شو. د قیلولی په وخت کښی می هغه په داسی وادئی کښی اوموندلویه کومه کښی چه لوئ لوئ ازغنی ونی وی. حضور اکرم تالیم هلته کوز شو او خلق هم د ونود سورو حاصلولو په غرض خواره شو. پخپله حضور تالیم د یوی ونی لاندی آرام کولو او خپله توره نی په دغه ونه کښی زوړنده کړه. مونږ ټول اوده وو چه رسول الله تالیم مونږ ته آواز اوکړو چه مونږ اوکتل نو یو بدو هغوی تالیم سره ولاړ وو. رسول الله تالیم اوفرمائیل چه دی سړی هم زما توره په ما باندی راوچته کړی وه او زه اوده ووم. کله چه بیدار شوم نو بربنډه توره د ده په لاس کښی وه، ده ماته اووئیل چه اوس به دی رانه څوك بې بیدار شوم نو بربنډه توره د ده په لاس کښی وه، ده ماته اووئیل چه اوس به دی رانه څوك بې کوی؟ نو ما دری څل الله اووئیل نو توره د بدو د لاس نه پریوتله او حضور تالیم راؤچته کړه، حضور تالیم دی اعرابی ته هیڅ سزا ورنه کړه.

تنبیه: دَحدیث باب مکمل تشریح په کتاب المغازی (۴) کښی راغلی ده. دَ دی دَپاره مونو دلته صرف په ترجمه باندې اکتفا اوکړه. البته بعض فوائد کوم چه دَ حدیث باب نه مستنبط

كيږي ذكر كُول بُه دَ فائدي نه خالي نه وي.

د حدیث باب نه مستنبط فائدی: () په ونه وغیره کښې توره او وسله د حفاظت په غرض زورندول صحیح دی او دا امر معمول به دې. او په سنت کښې د دې اصل موجود دې. (۵) (۵ د شپې او قیلولې په وخت کښې د امام او سلطان حفاظت کول په خلقو باندې واجب او ضروری دی اود دې خبرې خیال نه ساتل غلطی او امر قبیح دې. (۶)

١) (حواله بالا، وطبقات ابن سعد (ج٥ص٢٤٩) والكاشف (ج١ص٤٤٨)-

۲) (کشف الباری (ج۲ص۳۲۳)-

٣) (د دوى د حالاتو دَباره أو كورى كتاب الوضوء باب من لم يرالوضوء إلا من المخرجين من القبل والدبر

۱) (کشف الباری کتاب المغازی (ص۳۲۲-۳۲۶)-

۵) (شرح ابن بطال (ج۵ص۱۰۰)-

ع) (شرح ابن بطال (ج۵ص۱۰۱)-

ع في الباري (٢٥) عن الباري المجهاد (علما ول A د حدیث باب نه د رسول الله علل د صبر آو برداشت بته لکی چه سره د دی خبری چه مغرى نا ته د دغه اعرابي نه د بدلي اخستلو طاقت حاصل وو ليكن حضور ان معاف کرلو جاهلانو سره هم دغه طریقه اختیارول پکار دی (۱)

م د مصنف ابن ابی شیبه کرای د روایت نه معلومیږی چه د حدیث واقعه د آیت مبارك (دالله يعممك من الناس) (٢)

د نرول سبب جور شوی وو ، حضرت ابوهریره المائن فرمائی:

(كنا إذا نزلنا طلبنا للنبي صلى الله عليه وسلم أعظم شجرة وظلها قال: فنزلنا تحت شجرة فجاء رجل وأعن سفه تقال: يامحيد من يبتعك منى ؟قال: الله، فأانزل الله: ﴿والله يعصبك من الناس﴾- (٣)

يعني چه کله به يو ځائ کښې کوزيدو نو د نبي تيايي دپاره به مو لويه ونه اود دې سورې لټولو نو يوځل مونږ د يوې ونې لاندې اوده شو نو يو سړې راغلو اوهغه د حضور نکی توره راوچته كړه او وئى وئيل اې محمد مانه به تاڅوك بچ كوى؟ نو نبى مَلِيُكِم اوفرمانيل الله! الله

تعالى دا آيت نازل كرو (والله يعصبك من الناس).

او د نبی اکرم تاهم د خراست او حفاظت په سلسله کښی تفصیلی بحث روستو تیرشو. د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت: د حدیث ترجمه الباب سره مطابقت په دې جمله کښې دې ((فنزل تحت شجرة وملق بها سيفه)) (۴) دينه معلومه شوه چه په ونه کښې توره زوړندولو كښى څه باك نشته.

مه-بَاب: لُبُسِ الْبَيْضَةِ

دَترجمة الباب مقصد: ((البیضة))خود یعنی د اوسپنی ټوپئی ته وای او امام بخاری مینه دلته په سر باندی د اوسپنی ټوپئی اغوستلو مشروعیت او جواز خودلی دی چه د دی استعمال نبی تایی نه ثابت دی او دا د توکل علی الله خلاف نه دی. (۵)

[٢٥٨] حَدَّثَنَاعَبُدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةً حَدَّثَنَاعَبُدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَازِمِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ سَمُل رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ سُهِلَ عَنْ (٢) جُرْجِ النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ أُحُدٍ فَقَالَ جُرِحَ وَجُهُ النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكُسِرَتْ رَبَّاعِيتُهُ وَهُثِهَتْ الْبَيْضَةُ عَلَى رَأْسِهِ فَكَانَتْ فَاطِمَةُ عَلَيْهَا السَّلَام

١) (حواله بالا-

۲) (المائده:۶۷–

۳) (شرح ابن بطال (ج۵ص ۱۰۰)−

أ (فتح البارى (ج٤ص۶) وعمدة القارى (ج١٤ص١٨٩)-

۵) (عمدة القارى (ج ۱۶ ص ۱۹۰) ولامع الدرارى (ج۷ص ۲۴)-

٤) (قوله: عن سهل رضي الله عنه: الحديث مرتخريجه في كتاب الوضوء باب غسل المرأة أباها الدم....-

كتأب الجهاد (جداول) تغيلُ الدَّمَ وَعَلِيْ يُمْسِكُ فَلَمَّا رَأْتُ أَنَّ الدَّمَ لَا يَزِيدُ إِلَّا كَثْرَةً أَخَذَتْ حَمِيرًا فَأَخْرَقَتُهُ حَتَّى مَارَ وَمَادًا ثُمَّ الزَّقَةُ فَاسْتَمْسَكَ الدَّمُ [ر:٣٠٠]

تراجم رجال

ا-عبدالله بر. مسلمه: دا ابوعبدالرحمن بن عبدالله بن سلمه بن قعنب قعنبي بيكيا دي. دَ ده تذكره اجمالا ((كتاب الإيمان باب من الدين الفرار من الفتن) لاندې تيره شويده. (١)

-عبدالعزيز: دا عبدالعزيز بن ابي حازم سلمة بن دينار مله دي. (٢)

- ابيه: ((أب)) نه مراد ابوحازم سلمه بن دينار الاعرج المدني وينار الاعرج المدني وينار ال

٣- سكمل: دا مشهور صحابي حضرت سهل بن سعد الساعدي الشيخ دي. (۴)

تنبیه: د حدیث باب تشریح روستو په کتاب الوضوء (۵) کښې او کتاب المغازی (۶) او کتاب المغازی (۶) او کتاب الطب (۷) کښې هم راغلې دې.او همدغه حدیث اوس ماقبل کښې یو څو بابونه وراندې تد شویدي.

وراندې تیر شویدې. د حدیث شریف ترجمه الباب سره مناسبت په دې جمله د حدیث د ترجمه الباب سره مناسبت په دې جمله کښې دې. ((دهشت البیفة علی راسه))(۸) هغه د اوسپنې ټوپئې چه د رسول الله تهم په سرباندې پرته وه ماته شوه. دینه لهس پیښه ثابت شویده چه مدعا ده.

٥٨-بَأَب: مَنْ لَمْ يَرَكَسُرَ السِّلَاجِ عِنْدَ الْمَوْتِ

دَترجِمة الباب مقصد: دَ جاهلیت دَ خلقو طریقه دا وه چه په هغوی کښی به څوك بهادر مړشو نو دَ هغه وسلی به خلقوماتولی اودا به ئی وئیل چه اوس دَ دې استعمالونكي باقی پاتې نشو نو دا به څه باقی پاتې وی او کله کله خو به مړکیدونکی پخپله وعده اخستله چه دَ ده وسله دې ماته کړیشی.

نود دې تردید دلته آمام بخاري گُولای کړیدې چه دا د جاهلیت د خلقو کار او فعل دې په اسلام کښې د دې هیڅ تصور نشته. (۹)

۱) (کشف الباری (ج۲ص۸۰)-

۲) (دَ دوى دَ حالاتودَپاره اوګوري کتاب الصلوة باب نوم الرجال في المسجد-

٣) (د دوى د حالاتود پاره او كورى كتاب الوضوء باب غسل المرأة أباالدم عن وجهه_

٤) (حواله بالا-

۵) (صحيح البخاري كتاب الوضوء باب غسل المرأة أباهاالدم عن وجهه.

ع) (کشف الباری کتاب المغازی (ص۲٤۷)-

۷) (کشف الباری کتاب الطب ص ۳٤)-

۸) (فتح الباری (ج۶ص۹۷) وعمدةالقاری (ج ۱۹۰ص۱۹) -

٩٧ فيض الباري (ج٣ص٤٣) وفتح الباري (ج٤ص٩٧) وعمدة القاري (ج٤١ص١٩١) وإرشاد الساري (ج٥ص١٠٠)

کشف الباری دستاب الباد الله کیدیشی چه امام بخاری کشی د جعفر طیار بن ابی طالب المائي واقعى طرف ته اشاره كړې وي. كله چه هغه په جنګ موته كښې شهيد كيدلو نو مغه خپله وسله آنیزې او تورې) ماتی کړې وې او د خپلو اسونو پښې ئې پریکړې وې چه دښمن دا د مال غنيمت په توګه وانځلي.

نو امام بخاری محملی فرمائی چه دا د حضرت جعفر الملاع ذاتی فعل او د هغه اجتهاد وو باقی داسي وسلى نشى ماتولى خكه چه قاعده داده چه دمال تلف كول جائز نه دى. هغوى ليكى: ((ولعل البصنف لبح يذلك إلى مانقل عنه أنه كسرارمحه عندالاصطدام حتى لايعنيه العدوان لوقتل وكسر من سيفه وضرب بسفه حتى قتل كماجاء تحوذلك عن جعفى بن أب طالب في غزوة مؤتة (١) فأشار إلى أن هذاشي نعله جعفى وغيرة عن اجتهاد والأصل عدم جوال إتلاف البال لأنه يفعل شيئا محققاتي أمرِ غيرمحقي) (٢) دُ حضرت گنگوهی مُرَالِهِ وائی: پورته تاسو د نورو شارحینو مثلاً حضرت کشمیری مُرَالِي، حافظ صاحب، علامه عينى أو علامه قسطلاني التلم وغيره رائي به ترجمه الباب د مقصد باره كُنبي أوكتله اوحضرت فقيه النفس كينكوهي بكتا يوه بله خبره د ترجمه الباب د مقصديه تولیم بیآن کړیده. هغه دا چه که چرې د وسلې وغیره د ماتولو څه فائده وی نو وسله ماتول جائز دی گنی هغه په اسراف منهی عنه کښی داخل دی.

دُ دې وجه دا ده چه نبي مَلِيُهِ وَ خپل وفات حُسرت آيات په وخت کښې خپله وسله تلف کړې او ضائع کړې نه وه ځکه چه په هغې کښې څه فائده نه وه او که په وسله وغيره ماتولوکښي خه فائده وي مثلاً دَ وسلَّي دَ دښمن په لاسِ لګیدو ویره وی، یا دَ دې په وِجه خپل ځان ته دُّ نقصان رسیدو څه خطره وی یا بل چاته د نقصان رسیدو خطره وی مثلاً یو ماشوم وی یا ليوني چه د هغه په لاس دا وسله لګيدو سره خپل ځان ته نقصان رسوي يا د وسلي خپل خان سره دَ كيخودو تهمت يا خرابئي څه انديښنه وي لكه دَ هندوستان دَ جنګ آزادئي ۱۸۵۷ ، کښې چه ووچه د چا د کور نه هم وسله راووتله نو هغه ته په د هندوستان حکومت نقصان رسولو نو په دې ټولو صورتونوکښې وسله ماتول جائز دي ځکه چه دا ټول صورتونه

د څه نا څه فائدې متضمن دی. (۳)

حضرت شیخ الحدیث د حضرت مین کوهی رائی ته ترجیح ورکریده. (۴) [٢٥٨٠] حَدَّثَنَا عَمْرُوبْنُ عَبَّاسٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الزَّحْمَنِ عَنْ سُفْيَانِ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عِنْ عُمْرِوبْنِ الْحَارِثِ (٥)قَالَ مَا تَرَكَ النَّبِيُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَّا سِلَاحَهُ وَبَغْلَةً بَيْضَاءَ وَأَرْضًا جَعَلَهَ أَصَدَقَةُ [ر: ٢٥٨٨]

١) (انظر سنن أبي داؤد أبواب الجهاد باب في الدابة تعرقب في الحرب رقم (٢٥٧٣) وقال أبوداؤد هذاالحديث ليس بالقوى. والسيرة الحلية (ج٣ص٤٧)

٢) (فتح البارى (ج٤ص٩٧) وانظر لتفصيل مباحث غزوة مؤتة كشف البارى كتاب المغازى (ص٧٧)-

٣) (لامع الدراري (ج٧ص ٢٤١)-

أ (الأبواب والتراجم (ج١ص١٩٨)-

٥) (قوله: عن عمرو بن الحارث رضى الله عنه: الحديث مرتخريجه في كتاب الوصايا باب الوصايا-

تراجم رجال

ا- عمروبر عباس : دا ابوعثمان عمرو بن عباس البصرى مينه دي. (١)

r-عبد الرحمر.: دا عبد الرحمن بن حسان عنبری بصری میده دی. (۲)

-- سفیان: دا مشهور امام حدیث تبع تابعی ابوعبدالله سفیان بن سعیدبن مسروق ثوری میده دی. د دوی حالات ((کتاب الإیبان بابعلامة البنافق)) لاندې تیرشوی دی. (۳)

م- ابواسى أفي: دا ابواسحاق عمرو بن عبدالله بن عبيد سبيعى مَعْظَ دى. دَ ده تذكره (ركتاب الإيمان باب المسلاة من الإيمان) كنبى تيره شويده. (۴)

قوله: قال: ماترك النبي صلى الله عليه وسلم الاسلاحه وبغلة بيضاء وعرضا: حضرت عمرو بن الحارث الله في فرماني چه رسول الله في د خپل وفات په وخت كنبي خپله وسله، يو سپين قچر او په خيبر كنبي يوه زمكه كومه چه هغوى صدقه كړې وه نه علاوه هيڅ نه وو پريخي.

دا حدیث (کتاب الوصایا) په شروع کښې راغلي دي.

د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت د حدیث شریف ترجمه الباب سره مطابقت به دی معنی دی چه اهل جاهلیت کښی د مرکیدونکی وسله به ماتولی شوه او د خناورو پښی به پریکولی شوی، په دې کار کښی نبی قلیا و هغوی مخالفت او کړو او چه کوم څه هغوی تالی په ترکه کښی پریخی وو د هغی متعلق ئی هیڅ قسم وصیت اونه فرمائیلو سوا د خیبر د زمکی نه، هغه ئی د الله تعالی په لار کښی صدقه کړه. د حضور تالی دی کار نه دا ثابته شوه چه واقعی د وسلی ماتولو رسم صحیح وی نو نبی قلیا به خامخا د دی وصیت فرمائیلو. نو قسطلانی کیا فرمائی

((دخالف صلى الله عليه وسلم أهل الجاهلية في اكانوا يوصون به من كسرالسلام، وعقر الدواب، وحراق البتاع، من ترك بغلته وسلاحه وأرضه من غيرايسا على ذلك بشي إلا صدقة في سبيل الله))(ع)

١) (دَ دوى دَ حالاتو دَ پاره أوګورئ کتاب الصلاة باب فضل استقبال القبلة ـ

٢) (حواله بالا-

۳) (کشف الباری (۲س۲۷۸)-

٤) (کشف الباری (ج۲س ۳۷۰)-

۵) (دَ دوى دَ حالاتودَپاره اوګورئ کتاب الزکاة على الزوج والأيتام في الحجر _

ع) (مرح القسطلاني (ج٥ص١٠٠) وانظر شرح ابن بطال (ج٥ص٢٠١) وعمدة القارى (ج١٤ص١١)-

د كسر سلاح نه د ممانعت حكمت اسلامي شريعت چه وسله وغيره نه تلف كولو او نه ماتولو بابت كښي فرمانيلي دى د دې حكمت دا دې چه دا وسله وغيره د مسلمان د ذكر خير د بقا ذريعه اود کومو نيکو اعمالو بنياد هغي اچولي او په کومو خو خصلتونو باندي هغه خلق راَپُاسوي نودُ هغي دُ زياتوالي او ډيروالي سبب دي. په خلاف دُ اهل جاهليت، دُ هغوي دَ٠٠ کسر سلاح په فعل کښې دې خبرې ته اشاره ده چه د هغوي اعمال ختم اود هغوي د خير آثار به ضائع آو ناپید شی.

نوعلامه ابن المنير اسكندراني مُحالي فرمائي (وق إبقاء السلام عنوان للمسلم على إباء ذكران) واستبناء أعباله الحسنة التي سنهاللناس، وعادته الجبيلة التي حبل عليها العباد، بخلاف أهل الجاهلية فغى نعلهم ذلك إشارة إلى انقطاع أعبالهم وذهاب آثارهم))(١)

٨٠-بَاب: تَفَرُّقِ النَّاسِ عَنُ الْإِمَامِ عِنْدَالُقَابِلَةِ وَالِاسْتِظْلَالِ بِالشَّجَرِ دَ ترجمة الباب مقصّد: امام بخاری مُنْتَهُ دلتَه دا خودلی دی چه دَ اسلام مجاهدًین کُله چه دَ جهاد وخت نه وی او فارغ وخت وی نو هغوی دی د آرام د پاره اخوا دیخوا خواره شی خو چه

د ناڅاپی حملی وغیره اندیښنه نه وی نو په دې کښې هیڅ خرابی نشته حضرت شیخ الحدیث محمدزکریا کاندهلوی مینی فرمانی چه په شارحینو کښې چا هم د دې ترجمه غرض او مقصد طرف ته توجه نه ده ورکړې او زما په نزد د ټولونه بهتره توجيه دلته دا ده چه امام بخاري مُن و د دې ترجمه الباب په ذريعه د دې وهم د لرې كولو طرف ته اشاره کریده چه د سنن ابوداؤد په روایت سره پیدا کیږی (۲) ابوداؤد کښی حضرت ابوثعلبه الخشنی تاتی روایت دې چه:

((كان الناس إذا دولوامنولا وقال عبرو: وكان الناس إذا دول رسول الله صلى الله عليه وسلم منزلا - تغمقوا في الشعاب والأدوية، فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم إن تغرقكم في هذا الشعاب والأودية إنها ذلكم من

الشيطان ولم ينزل بعد ذلك منز لا إلا انضم بعضهم إلى بعض حتى يقال: لويسط عليهم ثوب لعنهم))(٣) يعنى صحابه كرام الكاليم به چه كله په يومنزل كښى كوزيدل، د امام ابوداؤد شيخ عمرو فرماني چه کله به رسول الله تایم په يو منزل کوزيدو نو صحابه کرام تُوَلَّقُمُ به چرته په کندو او وادیانوکښی خوریدل نو رسول الله نالم آوفرمائیل چه ستاسو خلقو دی کندو او وادیانوکښی خوریدل بی شکه د شیطان د طرف نه دی دې نه پس چه به کله هم رسول الله الله الله الله منزل باندي ديره واچوله نو ټول خلق به په خپل مينځ کښې يوځای شو، تردې پورې وئیلي شوی دی چه که یوه کېړا په هغه ټولو خوره شوې وې نو هغه ټول په هغه کپړا کښې پتيدې شو.

۱) (شرح القسطلاني (ج۵ص ۱۰۰) وتعليقات لامع الدراري (ج۷ص۲۶۲)-

٢) (الأبواب والتراجم (ج١ص١٩٨)-

٣) (سنن أبي داؤد أبواب الجهاد باب ما يؤمر من انضمام العسكر وسعته رقم (٢٤٢٨)-

د دې روایت خو دا معلومه شوه چه د اسلام د مجاهدینو په اوزګار وخت کښې اخوا دیخوا خوریدل او ګډوډکیدل جائز نه دی، نو امام بخاری پیښې دلته روایت باب ذکر کولو سره اوفرمائیل چه دا جائز دی.

یوتغارض او د هغی حل تاسو اوس او کتل چه امام بخاری کار خود دی قائل دی چه د لښکر د اوزګارتیا په وخت د آرام کولو په غرض یوخوا بل خوا خوریدل جائز دی او امام ابوداؤد د دی د عدم جواز قائل دی. نو اوس د صحیح بخاری او سنن ابی داؤد په تراجم باب کښی تعارض واقع کیږی. تردې پورې چه د دواړو روایتونه هم خپل مینځ کښې متعارض دی. د حضرت جابر المانځ روایت د جواز طرف ته اشاره کوی نو د سنن ابوداؤد روایت کښې

د دې تعارض جواب دا دې چه د دواړو روايتونو محمل جدا جدا دې. د ابوداود شريف روايت په کوم کښې چه د اخواديخوا خوريدلو ممانعت دې، تعلق په يوځائ کښې د کوزيدلو د شروع وختونونه دې، مطلب دا چه کله هم لښکر يو ځائ کښې ډيره واچوله نو زر اخوا ديخوا نه دې کيدل پکار بلکه هم نزدې اوسيدل پکار دې چه سلطان يا مشر ته په مشوره کولو کښې تکليف پيښ نشي.

اوس چه ترکومی د که و دکیدلو او خوریدلو د اجازت تعلق دی لکه چه د باب روایت په دی واضح دلالت کوی نود دی تعلق د دیری اچولو نه پس وختونو سره دی. مثلاً قیلوله یا نور ضروریاتود پاره هم په یو وخت کښی خلق مشغول شی، غالباً هم دی طرف ته امام بخاری می اشاره کریده چه په ترجمه کښی دا الفاظ هم دی. «عندالقائلة والاستظلال بالشجن»

الحافظ الماره تریده چه په ترجمه تسبی دا اتفاظ هم دی. ((عنداتفاتله والاستطلال بالشجر)). حضرت شیخ الحدیث محمد زکریا کاندهلوی مُنافذ د دی مذکوره تعارض جواب ورکولو کښی فرمائی:

((فيبكن أن يجاب عنه بأن البنع عن التفي ق إنها هوعند ابتداء النزول لبصالح تقضيه كأن يكون جبيع العسكر ببرأى من الإمام ليراقبهم ديشادر هم و نحوذلك من الفوائد، وأما جواز التفي ق فالبراد به التفي ق بعد النزول مجتبعا في وقت آخى للقيلولة وغيرها من الحاجات، ولعل الإمام البخارى إليه أشار بقوله في الترجية: عندالقائلة والاستظلال بالشجر) (١)

دَ جواب خلاصه دا شُوه چَه دَ سنن ابوداؤد دَ روايت تعلق په يوځائ کښې دَ کوزيدونه پس دې او په روايتِ باب کښې چه کوم حکم بيان شويدې هغه د روستو اوقاتو دې.

[rzar] حَدَّثَنَا أَبُوالْمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزَّهْرِيّ حَدَّثَنَا سِنَانُ بُنُ أَبِي سِنَانٍ وَأَبُوسَلَمَةً أَنَّ جَابِرًا أَخْبَرَهُ

بَ مَنْ اللهُ وَسَى بُنُ إِلْمُمَاعِيلَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدِ أَخْبَرَنَا ابْنُ شِمَابٍ عَنْ سِنَانِ بْنِ خَدَّنَا مُورِي سَعْدِ أَخْبَرَنَا ابْنُ شِمَابٍ عَنْ سِنَانِ بْنِ مَنْ اللهُ عَنْهُمَا (ع) أَخْبَرَهُ أَنَّهُ غَزَامَعَ النَّبِي صَلَّى أَبِي سِنَانِ الدُّوَلِي أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللّهِ رَضِيَ اللّهُ عَنْهُمَا (ع) أَخْبَرَهُ أَنَّهُ غَزَامَعَ النَّبِي صَلَّى

١ ﴾ (الأبواب والتراجم (ج١ص١٩٨)-

٢) (قوله: ان جابر بن عبدالله رضى الله عهنما: الحديث مرتخريجه آنفاقيل بابين -

الله عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَدُرَكَتُهُمُ الْقَالِلَةُ فِي وَادِ كَثِيرِ الْعِضَاةِ فَتَفَرَّقَ النَّاسُ فِي الْعِضَاةِ لِمُنْظِلُونَ بِالشَّجْرِ فَلَوْلَ النَّبِي صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَعْتَ ثَمَرَةٍ فَعَلَّقَ بِهَا سَيْفَهُ ثُمَّ فَامْ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَوْ فَعَلَقَ بِهَا سَيْفَهُ ثُمَّ فَالْسَيْفَ فَاللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ هَذَا الْخُتَرَطُ سَيْفِي فَقَالَ وَعُولًا يَشْعُرُ بِهِ فَقَالَ النَّهِ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ هَذَا الْخُتَرَطُ سَيْفِي فَقَالَ مَنْ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ هَذَا اللّهُ فَقَالَ النَّهُ فَقَالَ النَّهُ فَقَالَ النَّهُ فَقَامُ السَّيْفَ فَهَا هُوذَا جَالِسْ ثُمَّ لَمْ يُعَاقِبُهُ [ر:٢٥٥٦]

تنبیه حدیث باب دلته امام بخاری کوری په دوو سندونو سره ذکر کریدی. یو خو بالکل هم هغه سند دی چه اوس (باب من ملق سیفه بالشجر...) لاندی تیرشو دوئم سند کښی هم دوه صرف داسی حضرات دی چه په اول سند کښی نشته یوموسی بن اسماعیل اوبل ابراهیم بن سعد. د موسی بن اسماعیل نه مراد تبوذکی بصری کوری دی، د هغوی حالات ((بده الوسی)) څلورم حدیث کښی تیرشویدی (۱)

او أبراهيم بن سُعد نه مراد ابواسحاق ابن عبدالرحمن بن عوف كيني دي. د دوى تذكره «كتاب الإيبان باب تفاضل أهل الإيبان في الأعبال) لاندى تيره شويده. (٢)

دُ حديثُ دُ ترجمة الباب سره مُطابقت: دَ حديث شريفٌ ترجمة الباب سره مطابقت ظاهر دى چه به دى جمله كنيى دى ((فتغهل الناس ف العضاء يستظلون بالشجر) (٣)

٨- بَأَب: مَا قِيلَ فِي الرِّمَاجِ

دَترجمة الباب مقصد: دَ حافظ ابن حجر او علامه عَيني آلين وغيره رائي دا ده چه امام بخاری مُنظر وغيره رائي دا ده چه امام بخاری مُنظر دلته دَ رماح استعمال او هغه خپل څان سره د کيخودلو فضيلت بيانوی (۴) اوحضرت فقيه النفس مولانا رشيد احمد ګنګوهي مُنظر فرمائي چه د امام بخاری مقصد دا بيانول وي چه د نيزې استعمال او د دې ځان سره ساتل جائز دي او دا د توکل منافي نه دي.

(كمامرقوله في ليس البيضة)) (۵)

حضرت شیخ الحدیث صاحب کولید د حضرت گنگوهی کولید رائی ته ترجیح ورکریده. د دی وجه دا ده چه امام بخاری کولید باب کښی دوه احادیث نقل کړی دی، یو د حضرت ابن عمر اللی او حافظ ابن حجر موقف د ابن عمر اللی د حدیث باره کښی خو صحیح کیدیشی لیکن د ابوقتاده اللی د حدیث باره کښی خو صحیح کیدیشی لیکن د ابوقتاده اللی د حدیث باره کښی نه ځکه چه په هغی کښی د فضیلت وغیره باره کښی د سر نه ذکر نشته اونه په دی باندې څه دلالت شته. په دی وجه بهتر توجیه دا ده چه دا اووئیلی شی چه د بیان مقصد جواز دې نه چه د فضیلت بیان. هغه فرمائی:

۱) (کشف الباری (ج۱ص٤٣٣)-

۲) (کشف الباری (ج۲ص۱۰۷)-

۳) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٩١)-

٤) (فتح الباري (ج۶ص۹۸) وعمدة القاري (ج ١٤ ص ١٩١) وشرح ابن بطال (ج۵ص١٠٣)-

۵) (لامع الدراري (ج٧ص٢٤٢)-

(رقال الحافظ: «باب ماقبل في الرماح» أى في اتخادها واستعبالها من الفضل، وهكذا قال العيني وغيريا، فعيد الحافظ: «باب ماقبل في الرماح» أى في اتخادها واستعبالها من الفضل، لكنه لا يظهر إلا من حديث واحد (١٠٠٠) (١)

قوله: وَيُذُكّرُ عَرُ الْبِي عُمْرَ عَنُ النّبِيّ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ جُعِلَ رِزْقِى تَخْتَ فَوله: وَيُذُكّرُ عَرُ الْبِي عُمْرَ عَنْ النّبِيّ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ جُعِلَ النِّلّةُ وَالصَّغَارُ عَلَى مَنْ خَالَفَ أَمْرِى: اودَ حضرت ابن عمر عَلَيْ اللّهُ عَلَى النّبَالَةُ وَالصَّغَارُ عَلَى مَنْ خَالَفَ أَمْرِى: اودَ حضرت ابن عمر عَلَيْ فَرَمَا يَلْمُ فَرَمَا يَلِي دَى زَمَا رَزَقَ زَمَا دَ نَيْزِي دَ لاندي مقرر كريشويدي او چه څوك زما دَ حكم خلاف ورزى كوى په هغه باندې ذلت او رسواني مقررشويده.

مررسویده. د حضرت ابن عمر رضی الله عنهما د مذکوره تعلیق تخریج: د حضرت عبدالله بن عمر کافیا دا تعلیق امام احمد مرابع په خپل مسند کښی (۲) او حافظ ابوبکر بن ابی شیبه خپل (مصنف) ۳۰ کند موصولاً نقل کریدی (۴)

(٣) كُښى مُوصولاً نقل كريدى (۴) مصنف رَسَّة خودلته د حضرت ابن عمر الله د حديث يوه حصه تعليقًا نقل كړيده او پوره حديث شريف داسى دى:

(قال رسول الله صلى الله عليه وسلم بعثت بين يدى الساعة بالسيف حتى يعبد الله وحدة لاشهيك له، وجعل رمي تحث ظل رُمحى وجعل الذلة والصغار على من خالف أمرى، ومن تشبه بقوم فهومنهم)) (٥)

او امام ابوداود مُراكِم هم د دي حديث صرف آخري حصه يعني ((ومن تشهه بقوم فهومنهم)) موصولاً نقل كړيده. (۶)

دَ مَذكوره تعليق تشريح او مطلب: حضرت ابن عمر اللي دا تعليق به دوو جملو مشتمل دي.

① ((جعل رن قتحت ظل رمعی)) ④ ((دجعل النالة والصغار على من خالف آمری))
په اولنئی جمله کښی د مختلفو امورو طرف ته اشاره ده، مثلاً په دې کښی د نیزې فضیلت
بیان کړیشویدی. او دا خودلی شوی دی چه دغنائمو حلت دې امت محمدیه علی صاحبها
الصلوة والسلام سره مخصوص دې. مسلم شریف او جامع ترمذی (۷)کښی د حضرت
ابوهریره دا النام مرفوع روایت دې چه نبی اکرم تالی فرمائیلی ((داحلت لی الغنائم....))

١) (تعليقات لامع الدراري (ج٧ص٢٤٢) والأبواب والتراجم (ج١ص١٩٨)-

٢) (مسند الإمام أحمد (ج٢ص٥٠)-

٣) (مصنف ابن أبي شيبة (ج ٤ ص٢٢٢) كتاب الجهاد باب ماذكر في فضل الجهاد رقم (١٩٤٣٠)-

٤) (تغليق التعليق (ج٣ص٤٤)-

٥) (مسند الإمام أحمد (ج٢ص٥٠)-

ع) (سنن أبي داؤد أبواب اللباس باب في لبس الشهرة رقم (٤٠٣١)-

٧) (العديث أخرجه مسلم في صحيحه كتاب المساجد باب المساجد ومواضع الصلاة رقم (١١٤٧) والترمذي في جامعه أبواب السير باب ماجاء في الغنيمة رقم (١٥٥٣)-

ڪئف الياري EAT

او نور ئی دا هم بیان کړی دی چه د نبی اکرم ناهم رزق نیزې سره تړلې شوې وو. همدغه وجه ده چه بعض علماؤ افضل ترين محته غنيمت محرخولي دي. په شرح المواهب كنيي دى ((أفضله رأى الكسب) الجهاد، ثم التجارة، ثم الحماثة، ثم الصناعة)) (١)

صرف نیزه ذکر کولوکشی حکمت: بیا تاسو دلته گورئی چه حضور عظ صرف نیزه ذکر کریده چه دَ دې دَ لاندې زما رزق مقرر کړیشویدې دَ جنګ نور آلات یعنی توري وغیره متّعلق ئی نه دی فرمائیلی چه زمارزق دَ دیّ دَ لاندی مقرر کریشویدی.

دَ دې وجه دا ده چه د اهل عرب معروف عادت دا او چه هغوی به د نیزې په څوکه کښي جنګي جهنډا لګوله. په نيزه باندې د جهنډې لګولو سره د دې سورې خوريږي په دې وجه د رزق نسبت هغه طرف ته کول ډير مناسب شو ځکه چه د جهاد په وجه حاصل شوی سال (غنیمت) هم زیات وی. (۲)

البته يو حديث چه د حضرت عبدالله بن ابي اوفي الليء نه روايت دي په هغي كښي د توري د سوري هم ذكر دي. د حديث الفاظ دا دى: ((الجنة تحت ظلال السيوف)) (٣) نو د رزق نسبت خو د نيزې د سوري طرف ته شوې دې لکه مونږ اوس بيان کړو چه د نيزې نه مراد جهند دد. خو دَ اجنت نسبت دَ تورې سوري طرف ته شویدې ځکه چه دَ شهادت سبب اکثر توره جوړيږي. (۴)

دَ تعليق دَ دوئمي جملي تشريح: دَ ابن عمر الله دَ تعليق دوئمه جمله (روجعل الذَّنة والصغار على من خالف أمرى)) دد، دُ صغار معنى دُ جزيه ادا كول دى. (٥)

او مطلب دا دی چه څوك زما راوړلی شوی احكامات نه منی، د هغې نه اعراض او نه و مطلب دا دی چه څوك زما راوړلی شوی احكامات نه منی، د هغې نه اعراض او نه کوی، په هغوی به د جزې ادا كول لازميږی د تعليق ترجمة الباب سره مطابقت د حضرت عبدالله بن عمر التاکم پورته ذكر شوې تعليق

مناسبت ترجمه الباب سره په دې جمله کښې دې. ((جعل رنه تحت قل رمحي)، خواء که د

فضيلت رماح مراد واخستى شي يا جواز ‹‹كهامرالأن في غي ف ترجية الهاب،،

[٢٥٥٤] حَدَّثَنَا عَبُدُ اللَّهِ بُنُ يُوسُفَ أَخْبِرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي النَّفْرِ مَوْلَى عُمَرَبُنِ عُبَيْدِ اللَّهِ عَنْ زَفِع مَوْلِي أَبِي قَتَادَةً الْأَنْصَارِيّ عَنْ أَبِي قَتَادَةً رَضِيّ اللَّهُ عَنْهُ (٠) أَنَّهُ كِتَّانَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَنَّى إِذَاكَ أَنَ بِبَعْضِ طَرِيقِ مَكَّةَ تَخَلَّفَ مَعَ أَصْحَابِ لَهُ مُحْرِمِينَ وَهُو

۱) (فتح الباری (ج 8 ص 9) والدرالمختار (ج 0 ص 7)-

۲) (فتح الباری (ج۶ص۹۸)-

٣) (الدحديث أخرجه البخاري كتاب الجهاد باب الجنة تحت بارقة السيوف رقم (٢٨١٨)-

٤) (فتع الباري (ج۶ص۹۸)-

۵) (حواله بالا وعمدة القارى (ج ٤ ١ص١٩٢) وشرح القسطلاني (ج٥ص١٠٠)-

٤) قوله: عن أبي قتادة رضى الله عنه: الحديث مرتخريجه في كتاب جزاء الصيد باب إذا صاد الحلال فأهدى.

عَيْرُ مُخْرِمِ فَرَأَى حِمَارًا وَحْشِبًا فَاسْتَوَى عَلَى فَرَسِهِ فَسَأَلَ أَصْعَابُهُ أَنْ يُنَا وِلُوهُ سَوْطَهُ فَأَبُوا فَسَأَكُمُ وَهُو فَا فَالْمُ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَأَنْ وَسَلّمَ وَأَنِي بَعْضَ فَلَيْ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَأَنِي بَعْضَ فَلَيْنَا أَذْرَكُوا رَسُولَ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ سَأَلُوهُ عَنْ ذَلِكَ قَالَ إِنّمَا وَسَلّمَ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ سَأَلُوهُ عَنْ ذَلِكَ قَالَ إِنّمَا مَا مَا مَا مَا مُنَا أَذْرَكُوا رَسُولَ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ سَأَلُوهُ عَنْ ذَلِكَ قَالَ إِنّمَا مَا مَا مَا مَا مُنَا أَذْرَكُوا رَسُولَ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ سَأَلُوهُ عَنْ ذَلِكَ قَالَ إِنّمَا أَدْرَكُوا رَسُولَ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ سَأَلُوهُ عَنْ ذَلِكَ قَالَ إِنْمَا أَدْرَكُوا رَسُولَ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ سَأَلُوهُ عَنْ ذَلِكَ قَالَ إِنّمَا أَدْرَكُوا رَسُولَ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ سَأَلُوهُ عَنْ ذَلِكَ قَالَ إِنّمُ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَسَلّمَ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَسَلّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَسُلّمَ لَوا مُولَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمُ مَا أَوْلُوا مَا لَكُولُ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ سَالُوهُ عَنْ ذَلِكُ فَا إِلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ سَالُوهُ عَنْ ذَلِكُ فَا إِلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ اللّهُ عَلَيْهُ وَلَا عَالَى إِنْهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ اللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَلَا عَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ اللّهُ عَلَيْهُ وَلِكُ فَا إِلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَلَا عَلْمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَالْمُوا مُعْلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَالْعُلْمُ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَالْعُلْمُ فَلِكُ عَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَلَمْ اللّهُ عَلَيْهِ وَالْعُلْمُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهُ و اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَالْمَا عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ الْعَلَمُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ الْعَلْمُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ فَا اللّهُ الْعَلْمُ اللّهُ الْعَلَمُ اللّهُ الْعَلَا هِ] طُفْعَةُ أَطْعَبَكُبُوهَا اللَّهُ

وَعَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَادِ عَنْ أَبِي قَتَادَةً فِي الْحِمَادِ الْوَحْشِي مِثْلُ حَدِيثِ أبي النَّفْرِقَ اللَّهُ مُلْ مَعَكُمُ مِنْ لَخْيِهِ شَيْءٌ [د:١٤٢٥]

تراجم رجال

ا-عبدالله بر. يوسف: دا عبدالله بن يوسف تنيسي دمشقي ميكيك دي.

r- مالك: دا امام مالك بن انس بن مالك مين دي. دور دواروحضراتومختصره تذكره ((پدهالوس)) په ړومبي حديث کښې راغلي ده. (۱)

r-ابوالنضر: دا ابوالنضر سالم بن ابی امیه مولی عمر بن عبیدالله میشید دی. (۲)

۳-نافع: دا ابومحمد نافع بن عباس مولی ابی قتاده مدنی روستا دی (۳)

۵-ابوقتاده المشهور صحابی حضرت قتاده حارث بن ربعی انصاری الماری دی. (۴) اود حضرت ابوقتاده الماني نه مروى حديث باب تشريح (كتاب جزاء الصيد) (۵) ورسره (كتاب الديات والعيد) (۶) كښې تيرشوي دي.

د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت: حافظ ابن حجر او علامه عيني المنظم خودا فرمائيلي

دى چه د حديث شريف ترجمه الباب سره مطابقت ((فسألهم رمحه فأبوا)) كښې دې. (٧) ليكن څنګه چه مونږ د باب په شروع كښې د حضرت شيخ الحديث مينيد په حوالي سره دا بيان کړې چه دې دواړو حضراتو دترجمه الباب مقصد بيان کړيدې، د هغې په اعتبار سره د حضرت آبوقتاده الله و معه حديث ترجمه الباب سره مناسبت نه صحيح كيږي خو كه د حضرت مناهوهي مينية رائي وراندي كريشي نو ترجمه الباب سره مناسبت بالكل صحيح کیږی هغوی فرمائیلی وو چه دلته امام بخاری کولی د نیزی د استعمال جواز خودلی دی

۱) (كشف البارى (ج ۱ ص ۲۸۹ - ۲۹) دَامام مالك مُواللهِ نور حالاتو دَبار ، او ګورئ كشف البارى (ج ۲ ص ۸۰) -

٢) (دوى د حالاتود باره أو كورئ كتاب الوضوء باب المسح على الخفين-

٣) (دوى د حالاتود باره أو كورى كتاب جزاء الصيد باب لآيعين المحرم الحلال في قتل الصيد-

٤) (دوى دَ حالاتودَپاره أوګورئ کتاب الوضوء باب النهي عن الاسنجاء باليمين-

۵) (صحيح البخاري كتاب جزاء الصيد باب إذا صاد الحلال فأهدى للمحرم الصيد أكله-

ع) (كشف البارى كتاب الذبائح والصيد (ج١٣ص١٩)-

٧) (فتح البارى (ج ٢٥ص ٩٩) وعمدة القارى (ج ١٩٣ ص ١٩٦)-

16 V 37

کوم چه د حدیث نه واضح دی.

((ومن ليدين أسلم من مطاحين يسار من أبي قتادة في العبار الرحثي مثل مديث أبي النفي قال: هل معكم من لعبه شئ))

دَپورتنی تعلیق تخریع: دَ حضرت ابوقتاده الله دا تعلیق امام بخاری محطور موصولاً (کتاب العج) (۱) امام مسلم محطور (کتاب العج) (۲) او امام مالك محطور (موطا) کنبی (کتاب العج) (۳) کنبی ذکر کری دی (۴)

٨٠-بَابُ: مَا قِيلَ فِي دِرُعِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالْقَبِيصِ فِي الْحَرُبِ وَالْقَبِيصِ فِي الْحَرُبِ

دَترجمة الباب مقصد د امام بخارى بينية دا ترجمة الباب به دوو جزونو مشتمل دي. يوخو

((ماتهل قدرع النبي صلى الله عليه وسلم)) دې او دونم ((والقبيص في الحرب)) دې.

حافظ صاحب علامه عینی اودهغوی اتباع کنبی علامه قسطلانی او محشی بخاری حضرت سهارنپوری الله فرمائی چه د د اول جز مقصد خو دا بیانول دی چه د رسول الله کومه زغره وه هغه د څه څیز نه جوړه وه (۵)

اود دونم جز مقصد به جنگ كښې قميص او د دې د اغوستلو حكم بيانول دى. ښكاره

خبره ده چه جائز دی.

خود دی بزرگانو عالمانو بیان کریشوی مقصدترجمه په قول د حضرت گنگوهی بخت او حضرت شیخ الحدیث بخش د اشکال نه خالی نه دی. خکه چه د دی خبری ذکر چه د رسول الله به خالی زغره د څه څیز وه، د دی په رومبی روایت کښی د سر نه هیڅ ذکر نشته نو په دی وجه د دوی د دی قول وجه معلومه نه ده،البته دا خبره کولی شی چه د حضرت عائشه خانه د روایت نه معلومیږی چه زغره د اوسپنی وه نو دوئم روایت به په دی باندی محمول کولی شی او دا به وئیلی شی چه د عائشه خان په روایت کښی د نبی تیکی زغره د اوسپنی نه جوړه شوی وه نود باب نور روایات په کوم کښی چه درع لفظ راغلی دی هلته به هم د اوسپنی زغره مراد وی.

حضرت کنگوهی این و ترجمه الباب مقصد دا بیان کریدی چه امام بخاری این مقصد دا ذکر کول دی چه نبی این و ترجمه الباب مقصد دا ذکر کول دی چه نبی این اسره زغره وه. هغوی فرمائی :

١) (صحيح البخاري كتاب الذبائح باب ماجاء في الصيد رقم (٥٤٩١)-

٢) (صحيح مسلم كتاب الحج باب تحريم الصيد...رقم (٢٨٥٣)-

٣) (مؤطا الإمام مألك كتاب الحج باب مأيجوز للمحرم أكله من الصيد رقم (٧٨)-

^{£) (}تغليق التعليق (ج٢ص٤٤) وعمدة القارى (ج٤١ص٢٩)-

۵) (فتح الباری (ج گرص ۹۹) وعمدة القاری (ج ۱۹۲ ص۱۹۲) وإرشاد الساری (ج۵ص ۱۰۱)وحاشیة السهار نفوری علی البخاری (ج۱ص۸۰۱)-

(رالظاهران المراد بذلك إثبات أن النبى صلى الله عليه وسلم كان له درم، وبذلك تنطبق الروايات، وماتال المحشى: إن المقسود بيان أن درعه مم كانت؟ فلايدرى وجهه، إذا لايناسهه الرواية الأولى، إلا أن يقال: إثبات الهاكانت من حديث يكفى ولئى روية، ثم تحمل بقية الروايات عليه، وإن لم تذكر فيها مم كانت؟)) (١) حضرت شيخ الحديث محضي هم د حضرت محنكوهى محضي دا رائي راجح محرخولي دو او فرمانيلي دى چه د باب ټول روايات كتلو نه پس هم دغه خبره متعين معلوميږى چه امام بخارى مخي د دلته دا ثابت كول غواړى چه حضور ترايي سره زغره وه او د دې استعمال د توكل خلاف نه دى. (٢)

او تاسو د ترجمه الباب په مقصد کښې دا هم وئيلې شئي چه امام بخاري بُرنځ دا خودل غواړي چه مسلمانانو له خپل ځان سره زغره ساتل پکار دی چه په ميدان جنګ په کار راشي اورسول الله تالځ د پوره توکل د وصف نه باوجود زغره استعمال کړيده نو مونږ له هم د هغوي د سنتو اتباع کول پکار دي.

ده هوی د سنو الباع و و په در دی. قوله: وَقَالَ النَّبِيُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَّا خَالِدٌ فَقَدُ احْتَبَسَ أَدُرَاعَهُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ: [ر: ١٣٩٩]: او حضرت نبی اکرم ﷺ فرمانیلی دی چه پاتی شو خالد نو هغه خپلی زغری د الله تعالی په لار کښی وقف کړی دی.

د پورتنی تعلیق تخریج: امام بخاری می جد دلته کوم تعلیق ذکر کریدی دا د حضرت ابوهریره الله د خدیث شریف یوه تکره ده کومه چه امام بخاری می د موصولاً (کتاب الزکاة) کنبی ذکر کریده د دوی نه علاوه د اصحاب سته نه امام مسلم، ابوداؤد او نسائی التی هم د حضرت ابوهریره الله دا تعلیق به (کتاب الزکاة) کنبی موصولاً نقل کریدی (۳)

دَمذگوره تعلیق دلته د د کر کولو مقصد مصنف کرد د حضرت ابوهریره کاتی دا پورته ذکر شوی تعلیق دلته ذکر کولو سره دی خبری طرف ته اشاره کریده چه څنګه پخپله نبی عیمی زغره اچولی ده دغه شان د زغری ذکر ئی هم په خپله ژبه مبارکه سره کریدی او د دی نسبت ئی خپلو بعضو بهادرانو صحابه کراموطرف ته کړیدی مثلاً حضرت خالد بن ولید کاتی دینه معلومه شوه چه د زغری اچول مشروع دی او دا د توکل نه خلاف نه ده. (م)

[.]١) (لامع الدراري (ج٧ص٢٤٢)-

۲) (تعليقات لامع الدراري (ج٧ص٢٤٢)-

٣) (انظر الصحيح البخارى كتاب الزكاة باب قول الله تعالى ﴿وفى الرقاب والغارمين ﴾ رقم (١٤۶٨) وصحيح مسلم كتاب الزكاة باب فى اتقديم الزكاة ومنعها رقم (٢٢٧٧) وسنن أبى داؤد أبواب الزكاة باب فى تعجيل الزكاة رقم (١٤۶٣) وسنن النسائى كتاب الزكاة باب إعطاء السيد المال بغير اختيار المصدق رقم (٢٤۶٣) – الزكاة رقم (٩٩ص٩٩) – ٤)

[٢٥٨] حَدَّثِنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنِّى حَدَّثَنَا عَبُدُ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةً عَنْ الْبِن عَنَاسِ (١) رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ قَالَ النَّبِيُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَفِي قُبَّةِ اللَّهُمَ إِنِي عَنْهُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَفِي قُبَّةِ اللَّهُمَ إِنْ شِئْتَ لَمْ تُعْبَدُ بَعْدَ الْيَوْمِ فَأَخَذَ أَبُو بَكُر بِيدِةِ فَقَالَ حَسُبُكَ يَا أَنْهُ لَكُ عَنْهُ وَكُولُ اللَّهُ وَلَا اللَّهُ مَنْ اللَّهُ فَلَا اللَّهُ فَعُدُ اللَّهُ وَلَا اللَّهُ مَنْ اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَكُولُ اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَلِهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلِهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَالْعُولُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَالْمُوالِقُولُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَالْمُولُولُولُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَل

تراجم رجال

دواړو حضراتو اجمالي تذكره ((كتابالإيبان البحلادة الإيبان)) كښې راغلې ده. (٢)

م-خالن: دا مشهور محدث ابوالمنازل خالد بن مهران حذا، بصرى ميه دي.

م-عکرمه: دا مشهورامام حدیث وتفسیر ابوعبدالله عکرمه مولی ابن عباس میک دی. د دی دوارو حضراتو حالات ((کتاب العلم، باب قول النبی صلی الله علیه وسلم: اللهم علمه الکتاب)) لاندی تیرشوی دی. (۳)

د دریت ترجمه: حضرت ابن عباس التی فرمائی چه نبی اکرم تائیم کله په یوه قبه کښی دننه و اوفرمائیل ئی ای الله تا چه کومه وعده او عهد کړیدې زه تانه د هغې د پوره کیدو درخواست کوم. ای الله که ته غواړې چه د نن نه پس دې په زمکه ستا عبادت نه وی نو (بیا خو ټیك ده چه دا لږ شان مسلمانان هم ختم شی) نو حضرت ابوبکر صدیق تائی د هغوی خو ټیك ده چه دا لږ شان مسلمانان هم ختم شی) نو حضرت ابوبکر صدیق تائی د هغوی خو ټیك ده چه دا لږ شان مسلمانان هم دومره دعا ستاسو د پاره کافی ده. بې شکه هغوی تائیم د خپل پرورد کار په وړاندې ډیره ژړا او زاری کړیده. هغه وخت حضور تا هم په

١) (قوله: عن ابن عباس رضى الله عنهما: الحديث أخرجه البخارى أيضًا كتاب المغازى باب قول الله تعالى
 (إذ تستغيثون ربكم فاستجاب لكم إنى ممدكم بألف من الملائكة....) رقم (٣٩٥٣) وكتاب التفسير باب قوله: (سيهزم الجمع) رقم ٤٨٧٥) وباب قوله (بل الساعة موعدهم والساعة أدهى وأمر) رقم ٤٨٧٧)-

۲) (کشف الباری (ج۲ص۲۵-۲۶)-

۳) (کشف الباری (ج۳ص ۳۶۱–۳۷۰)-

٤) (كشف الباري (ج١ص ٤٣٥) و(ج٢ص ٢٠٥)-

زغره کښې وو تاسو کالله دې وينا کولو سره د قبې نه راو وتلو چه زر به دا ډله اوتختولي شِي اوهغوى به شاكري بلكه قيامت د مغوى وعده ده او قيامت ديرسخت او تريخ څيز دي د حضرت ابن عباس ملائم به دې حديث كښې ذكر شوې واقعه د (غزوه بدر) متعلق ده او د دې تشريح هم (غزوه بدر) لاندې راغلی دی. (۱)

دَحدیث نه مستنبط فائدی خو یو څوفائدی دَحدیث نه مستنبط کیږی دَهغی ذکرکولی شی: ن علامه مهلب ميني فرمائي چه د حديث نه زغره ساتل او په دې کښې د جنګ کولو جواز

معلومیری. (۲)

🕜 په حديث کښې د دې خبرې دلالت دې چه د بشري نفوسو په يو وخت او يك دم ويره نه لري كيږي گورني دلته د رسول الله گه د پاره د الله تعالى د طرف نه د نصرت وعده ده او هم د دې وعدې پوره کولو حضور ترکیم درخواست هم کوي. نو چه کله حضور ترکیم د کافرانو شمیر او لنیکر تد اوکتل نو هغوی ته طبعی ویره اوشوه او دا د نبوت منافی نه ده. دغه شان واقعه په قرآن کريم کښې د حضرت موسى مَليني هم ذکر دې چه کله جادو ګرو خپلې رسنې او همسالگانی واچولی نو هغوی ویره محسوس کړه، نو الله تعالی هغه ته اوخودل چه هغه ستا امداد كونكي دي او هم هغه اورى او ويني. د الله تعالى ارشاد دي: (نادجس ن نفسه

غیفةمرس) (۳)

په اصل کښي دا د شيطان د طرف نه وسوسه وي چه هغه ئي په بنديګانو باندې اچوي، خاص تو که باندی د الله تعالی به خاص بندیکانو باندی، لیکن الله تعالی هغوی لره دنیا او آخرت کښې دَ کلمې په برکت ثابت قدم ساتي آو دَ هغوي قدمونه دَ شيطاني وسوسې نه خوړوي. (۴)

قوله: وقال وهيب: حدثنا خالد يومبدر: د مذكوره تعليق تخريج امام بخارى عليه وهيب بن خالددا تعليق كتاب التفسير كنبي موصولاً نقل کړيدې. (۵)

دَ مذكوره تعليق مقصد: د وهيب بن خالد په دې تعليق كښې خالد نه مراد ابن مهران الحذاء دي. خالد الحذاء نه د باب داروايت دوو حضراتو عبدالوهاب بن عبدالمجيد الثقفي او وهیب روایت کوی.

اود امام بخاری کی د دې تعلیق نه مقصد دا دې چه د وهیب په روایت کښې ((دهول ته ته)) نه پس (يوم بدر) اضافه هم ده. (۶)

١) (كشف البارى كتاب المغازى ص ٤٤)-

۲) (شرح ابن بطال (ج۵ص۱۰۳)-

⁻⁽۶۷:مه) (۳

٤) (شرح ابن بطال (ج۵ص ۱۰٤) و کشف الباری (ج۱ص ۳۹۱) ۵) (صحیح البخاری کتاب التفسیر باب قوله (سیهزم الجمع) رقم (۸۷۵)-

۶) (فتح البّارى ((ج۶ص۱۰۰)-

غالبا حدیث باب کښی حضرت امام بخاری کلی شیخ محمد بن المثنی نه ذهول شویدی. ککه چه دمحمد بن المثنی شیخ عبدالوهاب نه دا روایت هم نورو دوو حضراتو محمد بن عبدالله بن حوشب (۱) او اسحاق بن راهویه (۲) روایت کریدی. د دی دوارو حضراتو په روایت کنبی هم د (یوم بدر) اضافه روایت ده. (۳)

دا حدیث د صحابو د مراسیلو نه دی د حضرت عبدالله پن عباس الله دا حدیث د مراسیل صحابه نه دی. څکه چه په دې موقع (غزوه بدر) باندې هغه حاضر نه وو، هغه وخت به د هغه عجردغه څلور پنځه کاله وی، د دې د پاره پخپله د اوریدو خو هیڅ احتمال نشته. غالبًا هغوی به دا حدیث د حضرت عمر الله یا حضرت ابوبکر صدیق الله نه اوریدلی وی. په مسلم شریف کښې ابوزمیل عن ابن عباس په طریق سره روایت دې. (۴)

حضرت ابن عباس كافئ فرمائى: ((حدثقى عبر:لماكان يوم بدر ظررسول الله صلى الله عليه وسلم إلى البشركين وهمالف، وأصحابه ثلثمائة وتسعة عشرة رجلاً، فاستقبل القبلة، ثم مديديه، فلم يزل يهتف برته حتي سقط ردا و لا عن منكبيه)(۵)

یعنی ماته حضرت عمر گانی بیان او کرو چه د بدر په ورځ کله رسول الله تریم مشرکانو طرف ته اوکتل چه هغوی زر کسان دی او هغوی تریم سره صرف ۳۱۹ دی نو هغوی تریم قبلی طرف ته مخ کرو بیانی خپل لاسونه د الله تعالی په دربارکښی خواره کړل او باربار نی خپل رب ته زاری کوله او رابللو ئی تردې پورې چه د هغوی څادر مبارك د هغوي د اوږې مباركي نه پریوتلو. او د ابن عباس تریم عادت همدغه دې چه هغه اکثر واسطی د مینځ نه حذف کوی اود هغوی اکثر روایات مرسل دی. (۶)

د جديث د ترجمة الباب سره مطابقت: حضرت عبدالله بن عباس ظُهُا دَ دي حديث ترجمة

الباب سره مطابقت په دې جمله کښې دې: (وهوفي الدرع)).(٤)

[ran] حَدَّثَنَا فَحَمَّدُ بُنُ كَثِيرِ أَخْبَرَنَا شُفْيَانُ عَنَ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ الْأَسُودِ عَنْ عَائِشَةً (٨)رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ تُوفِي رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَدِرْعُهُ مَرْهُونَةٌ عِنْدَ عَائِشَةً (٨)رَضِيَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَدِرْعُهُ مَرْهُونَةٌ عِنْدَ عَائِدِينَ مِنَاعًا مِنْ شَعِيدِ

١) (انظرصحيح البخاري كتاب المغازي باب قول الله تعالى ﴿إذتستغيثون ربكم.... ﴾ رقم (٣٩٥٣ -

٢) (انظر صحيح البخاري كتاب التفسير باب قوله (بل السّاعة موعدهم ...) رقم (٨٧٧)-

۲) (فتع الباري (ج۶ص۱۰۰)-

٤) (فتح الباري (ج٧ص٢٨٨) وعمدة القاري (ج١٤ ص١٩٣)-

٥) (الصّحيح المسلّم كتاب الجهاد باب الإمداد بالملائكة في غزوة بدر، وإباحة الغنائم رقم (٤٥٨٨)-

ع) (عددة القارى (ج ٤١ص١٩٣)-

٧) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ١٩٣)-

أوله: عن عائشة رضى الله عنها: الحديث مرتخريجه في كتاب البيوع باب شراء النبي صلى الله عليه وسلم بالنسيئة ــ

تراجم رجال

ا- هجهل بر. کثیر: دا ابوعبدالله محمد بن کثیر عبدی بصری مینید دی. د دوی تذکره ((کتاپ العلمهاب العلم العلمهاب العلمهاب العلمهاب العلمهاب العلم ال

<u>r-سفیان:</u> ابن عینیه ویکه مراد دی د دوی حالات ((بدهالوحی))پد اول حدیث کنبی او (رکتابالعلمهاب قول البحدث:حدثنا....) لاندی تیرشوی دی (۲)

-- الاعمش: دا ابومحمدسلیمان بن مهران اسدی کوفی میلید دی اعمش سره معروف دی در در کتاب الایمان باب ظلم دون ظلم» په ذیل کښې راغلی دی (۳)

م- ابراهیم: دا ابوعمران ابراهیم بن یزیدنخعی میات دی اود دوی تذکره هم ((کتاب الإیان)) په مذکوره باب کښی راغلی ده (۴)

٥-الاسود: دا مشهور فقيه اسود بن يزيد بن قيس نخعي ميايد دي. (٥)

۲-عائشه: دا ام المؤمنين حضرت عائشه بنت ابوبكرصديق التنا ده.دَدوى تذكره ((بلام الوعی)) دَ دونم حدیث لاندې تیره شویده.(۶)

دَ حضرت عائشه ظهر د دى حديث تشريح (كتاب البيوع) (٧) كنبى او (كتاب البغادى) (٨) كنبى راغلى ده.

وَقَالَ يَعْلَى حَدَّثَنَا الْأَعْمَثُ دِرُعٌ مِنْ حَدِيدٍ وَقَالَ مُعَلِّى حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا الْأَعْمَثُ وَقَالَ رَهَنَهُ دِرُعًا مِنْ حَدِيدٍ [ر:٩١٣]

یعلی نه مرادابن عبیدبن ابی عبیدابویوسف الطنافسی کنانی دی اومعلی نه ابن اسدمراددی (۹) دیورته ذکرشوو دوارو تعلیقاتو تخریج: امام بخاری کنانی پورته دوه تعلیقات ذکر کړی دی و یو د یعلی او دوئم د معلی اولنی تعلیق امام بخاری کنانی موصولاً (کتاب العلم) (۱۰) کنبی او

۱) (کشف الباری (ج۱ص۲۳۸) و (ج۳ص۵۳۶)-

۲) (کشف الباری (ج۳ص۱۰۲)-

٣) (کشف الباری (ج٢ص٢٥١)-

٤) (كشف البارى (ج٢ص٢٥٣)-

۵) (د دوی د حالاتود پاره او گوری کتاب العلم باب من ترک بعض الإختیار مخافة أن يقصر... (۶) کشف الباری (ج۱ص۲۹۱)-

٧) (صحيح البخاري كتاب البيوع باب شراء النبى صلى الله عليه وسلم بالنسيئة -

٨) (كشف البارى كتاب المغازى (ص ٤٩٠)-

۹) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٩٤)-

١٠) (صحيح البخاري كتاب المسلم باب الكفيل في السلم رقم ٢٢٥١)-

دونم ني (کتاب الاستقمال (۱)کښې ذکر فرمائيلی دي. (۲) ددواړو تعليقاتو ذکر کولومقصد: د دې دواړو تعليقاتو ذکر کولو مقصد واضح دې چه پورته كوم مسند روايت تيرشويدې په هغې كښې د ((درم)) ذكر وو او دې تعليقاتو ذكر كولو سره امام بخاری مُشِیِّ دا خودل غواړی چه هغه زغره چه يهودی سره نی ګانړه ايخودې وه د اوسپني وه.

د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت: د حديث شريف ترجمة الباب سره مطابقت «درومه مرهودة ..) کښې دی، د کوم نه چه معلومیږی چه هغوی تانم سره زغره وه اوهغه د اوسپنې وه . (۳) [٢٤٦٠] حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ(٣) عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَـالَ مَثَلُ الْبَغيلَ وَالْمُتَصَدِّق مَثَلُ رَجُلَيْنِ عَلَيْهِمَا جُبَّتَانِ مِنْ حَدِيدٍ قَدُ اضْطَرَّتْ أَيْدِيَهُمَا إِلَى تَوَاقِيهَمَا فَكُلَّمَا هَمَّ الْمُتَصَدِّقُ بِصَدَقَتِهِ اتَّسَعَتْ عَلَيْهِ حَتَّى تُعَفِّىَ أَثَرَهُ وَكُلِّسًا هَمَّ الْبَغِيلُ بِالصَّدَقَةِ انْقَبَضَتْ كُلُ حُلْقَةِ إِلَى صَاحِبَتِهَا وَتَقَلَّصَتْ عَلَيْهِ وَانْضَمَّتْ يَدَاهُ إِلَى تَرَاقِيهِ فَسَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَغُولُ فَيَجْتَهِدُ أَنْ يُوسِعَهَا فَلَا تَتَّسِعُ [ر: ٢٥٥]

تراجم رجال

۱- موسى بر اسماعيل: دا موسى بن اسماعيل تبوذكى بصرى ميني دي. د ده اجمالي تذكره (بدهالوس)) په څلورم حديث لاندې راغلي ده. (۵)

r-وهیب: داوهیب بن خالد بن عجلان باهلی میشد دی. د دوی اجمالی حالات ((کتاب الإیان باب تفاضل أهل الإيمان في الأحمال)) لاندى تيرشوى دى. (ع)

r-ابر طاوس: دا عبدالله بن طاوس بن كيسان اليماني ميكيد دي. (٧)

٣-ابيه: د ابيه نه مراد طاؤس بن كيسان يماني جندي حميري روي دي دي. (٨)

١) (صحيح البخاري كتاب الاستقراض... باب من اشترى بالدين وليس عند، ثمنه رقم (٢٣٨٤)-

٢) (تغليق التعليق (ج٣ص٧٤٤)-

۲) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ١٩٤)-

٤) (قوله: عن أبي هريرة رضي الله عنه: الحديث مرتخريجه في كتاب الزكاة باب مثل البخيل والمتصدق-

۵) (کشف الباری (ج ۱ ص٤٣٣)-

۶) (کشف الباری (ج۲ص۱۸)-

٧) (دَ دوى دَ حالاتودَپار ، او كورى كتاب الحيض باب السرأة تحيض بعد الإفاضة -

٨) (دّدوي دّحالاتودّ باره اوگوري كتاب الوضوء باب من لم يرالوضوء إلا من المخرجين من القبل والدبر

د- ابوهریره: دامشهور صحابی حضرت ابوهریره گانو دی. د ده حالات ((کتاب الإیان باب امور الإیان) لاتدی تیرشوی دی. (۱)

او د حضرت ابوهریره گانو نه روایت شوی حدیث مکمل تشریح (کتاب الطلاق) (۲) او (کتاب اللباس) کنبی راغلی ده. (۳)

اللباس، كښى راغلى ده. (٣) د حضرت ابوهريره الله د دې حديث ترجمه الباب سره مطابقت: حضرت ابوهريره الله د دې حديث ترجمه الباب سره مطابقت ((مليهها جبتان من حديد)) كښى دې.

او هغه داسې چه ((جبتان)) کښې دوه روایتونه دی. یو خود باء سره یعنی ((جبتان)) نو دا

((جهة)) تثنیه ده او د دې مناسبت د ترجمه جز ثانی یعنی القبیم فی الحرب سره دې. او دا لفظ د نون سره ((جنتان)) هم مروی دې. چه د جنه تثنیه ده، د دې معنی ډهال ده. او ډهال څنګه چه انسان د دښمن د وار نه بچ کوی دغه شان زغره هم بچ کوی نو مناسبت د ترجمې اول جز سره په دې معنی حاصل دې. (۴)

٨٥- بَأَب: الْجُبَّةِ فِي السَّفَرِ وَالْحَرْبِ

دَترجمة الباب مقصد: حضرت مصنف المنظير د دي ترجمه الباب لاندي دا خودل غواړی چه د سفر او جنګ په موقع باندې جبه اچول جائز دی په دې کښې هیڅ بدیت نشته.

تراجم رجال

۱- موسی بری اسماعیل: دا موسی بن اسماعیل تبوذکی بصری پیشیج دی. د دوی حالات اجمالاً «به هالوحی» څلورم حدیث لاندې بیان شوی دی. (۶)

١) (كشف البارى (ج١ص٥٥١)-

۲) (کشف الباری کتاب الطلاق (ص۵۱۹)-

٣) (كشف الباري كتاب اللباس (ص١٥٨-١٤١)-

٤) (فنع الباری (ج⁹ص ۱۰)-

٥) (وله: المغيرة بن شعبة رضى الله عنه: الحديث: مرتخرجه في كتاب الوضوء باب الرجل يوضى صاحبه-

ع) (كشف البارى (ج ١ ص٤٣٣)-

۲- عبدالواحد: داابوبشر عبدالواحد بن زیاد بصری کنای دی. د دوی تفصیلی تذکره (کتاب الإیان باب الجهادمن الإیان) لاندی تیره شویده (۱)

-- الاعمش: داابومحمدسلیمان بن مهران که دی. د دوی حالات ((کتاب الإیان پاپ ظلم مون ظلم) کښی راغلی دی. (۲)

م-ابوالضحی مسلم بری صبیح: دا ابوالضحی مسلم بن صبیح العطار الکوفی محکم دی ۳) دم ۳۰ مسروق: دا امام ابوعائشه مسروق بن اجدع بن مالك همدانی مکیمی دی. د دوی تذکره (رکتاب الإیمان باب علامة المنافق)) لاندې تیره شویده. (۴)

۲-المغیرة بر شعبه: دا مشهور صحابی حضرت مغیره بن شعبه بن ابی عامر تا دی دی دی در دی در در در در در حدیث باب تشریح رکتاب اللهاس کنبی هم راغلی ده (۶)

د حدیث د تراجمهٔ الباب سره مطابقت: د حدیث شریف ترجمه الباب سره مطابقت په دې جملې کښې دی. ((وعلیه چهه شامیه)). ظاهره ده چه دا واقعه د سفر ده او د غزوې ده. او حضور کښې جبه اغوستلو کښې جبه اغوستلو کښې خه به سفر کښې او په غزوه کښې جبه اغوستلو کښې څه بدیت نشته. (۷)

٥٠- بَأَب: الْحَرِيرِ فِي الْحَرْبِ

دَ ترجمة الباب مقصد: امام بخاری مینی دلته دا خودل غواړی چه ریښمینې جامې د جنګ په حالت کښی اچول صحیح دی.(۸)

۱) (کشف الباری (ج۲ص۳۰)-

۲) (کشف الباری (ج۲ص ۲۵۱)-

٣) (دَ دوى دَ حالاتو دَ پاره او كورى كتاب الصلاة باب الصلاة في الجبة الشامية -

٤) (كشف البارى (ج٢ص ٢٨١)-

٥) (دَ دوى دَ حالاتو دَ بار، او كورى كتاب الوضو، باب الرجل يوضئ صاحبه-

ع) (كشف الباري كتاب اللباس (ص١٤٢-١٤٣)-

۷) (عمدة القارى (ج ١٤ص ١٩٥)-

٨) (حواله بالا-

٩) (قولُه: أنسا رضى الله عنه: الحديث: أخرجه البخارى أيضًا كتاب الجهاد... [بقيه حاشيه به بله صفحه..

تراجم رجال

ا- احمد بن المقدم: دااحمد بن المقدم بن سليمان بن اشعب بصرى مُشير دي. (١)

- خالن: داخالد بن حارث بن سليم هجيمي الله دي. (٢)

<u>-- سعید:</u> داابوالنصر سعید بن انی عروبه یشکری بصری میارد دی. (۳)

م-قتاده: داقتاده بن دعامه سدوسي بصرى دي.

ه- انس: دا مشهور صحابي حضرت انس بن مالك الله على در در دواړو حضراتو تذكره ((كتابالإيبان، البيان اليبان اليبان النيبان الندي تيره شويده. (۴)

قوله: أن النبي صلى الله عليه وسلم رخص لعبدالرحمر. والزبير في قميص

من حرير من حكة كانت بهما : حضرت انس المالين فرمائي چه نبي كريم المالي حضرت عبدالرحمن بن عوف او حضرت زبير بن العوام في الله دُ خارب دُ وجه ريسمي قميص

اغوستلو اجازت وركړي وو. تنبيه: حضرت امام بخاري رياي ترجمه الباب د دي مقصد دياره قائم كړي ووچه په جنگ کښې ريښمې لباس استعمالول جائز دی. اود دې دپاره ئې د حضرت انس کانو دا پورتنې حديث د دليل په توګه پيش کړې وو. دا مسئله مختلف فيها ده چه په بيمارني سفر او جنګ وغيره كښې خالص ريښمي لباس استعمالول جائز دي كه ند؟

نوجمهورائمه سره د صاحبينو د دې د جواز قائل دي اوامام مالك او امام اعظم موجيد د عدم

جواز. د دې مسئلې تفصيل په (کتاب اللهاس) کښې راغلې دې (۵) د مسئلې تفصيل په (کتاب اللهاس) کښې راغلې دې د مطابقت د حديث مطابقت د حديث په دې حصه کښې دې. ((ن تميم من حمير من حکة)) دې نه معلومه شوه چه رسول الله تريم دې دواړو حضراتو ته د ریښمي لباس اغوستلو اجازت کړې وو چه د جواز دلیل دي. او ترکومې چه د دې خبرې تعلق دې چه دلته خو د حرب او جنګ هڼو ذکر نشته نود دې جواب دا دې چه د

...بقيه حاشيه] باب الحرير في الحرب رقم (٢٩٢٠-٢٩٢٢) وكتاب اللباس باب مايرخص للرجال من الحرير للحكة رقم (٥٨٣٩) ومسلم كتاب اللباس باب إباحة لبس الحرير للرجل إذا كانت به حكة أونحوها رقم (٥٤٢٩) وأبوداؤد أبواب اللباس باب في لبس الحرير لعذر رقم (١٧٢٢) والنسائي كتاب الزينة باب الرخصة في لبس الحريررقم(٥٣١٢) وابن ماجه كتاب اللباس باب من رخص في لبس الحرير رقم (٣٥٩٢) ١) (د دوى د حالاتود باره أو كورئ كتاب البيوع باب من لم يرالوساوس ونحوها من المشبهات-

٢) (د دوى د حالاتود پاره او گورئ كتاب الصلاة باب فضل استقبال القبلة -

٣) (د دوى د حالاتود باره او كورى كتاب الغسل باب إذا جامع ثم عاد -

1) (کشف الباری (ج۲ص۳-٤)-

۵) رد مسئلي د تفصيل أو فريقينو دلاتلو د پاره او موري كشف الباري كتاب اللباس (ص١٩١)-

باب په وړاندې روايت کښې د دې خبرې وضاحت راځي چه حضرت انس نانو پخپله فرماني چه په يو جنګ دا دواړه خضرات ما پخپله او ليدل چه هغه قميصونه د دوی په بدنونو باندى وو. ((فرايته مليهما لى غزاة))-

[٢٢٦٢] حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةً عَنْ أَنْسِ (١) ح حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانِ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةً عَنْ أَنْسِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بُنَ عَوْفٍ وَالزَّبَيْرَ شَكُوَا إِلَى النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعْنِي الْقَمْلَ فَأَدْخَصَ لَهُمَا فِي الْخَرِيدِ فَرَأَيْتُهُ عَلَيْهِمَا فِي غَزَاةٍ

تراجم رجال

- ابوالولين: دا ابوالوليد هشام بن عبدالملك طيالسي مين دي. د دوى تذكره ((كتاب الإيبان بابعلامة الإيبان حب الأنسار) لاندى تيره شوى ده. (٢)

r-همام: دا ابوعبدالله همام بن يحيى بن دينار بصرى منه دي. (٣)

سئل علما وهو مشتغل في حديثه) كښې راغلی ده (۴) د حضرت قتاده او انس تا او او پاره سابقه سند او او رئي

قوله: أن عبدالرحمر بن عوف والزبير شكوا إلى النبي صلى الله عليه وسلم-يعنى القمل: حضرت انس اللي فرمائي چه حضرت عبد الرحمن بن عوف او زبير بن عوام تراثها نبى كريم تايم ته د سپكو شكايت اوكرو.

کلمه ·شکوا· کښې د نسخو اختلاف: پورته په حديث کښې ((شکوا))لفظ روايت دې خو د ابوذر او اصیلی په نسخو کښې ((شکیا)) صیغه تثنیه سره دې. علامه ابن التین مینو اولنې صحیح الله تعالى د علا على الله على الله على الله على الله على الله تعالى و على الله على الله على الله على الله رَ**بُهُبَا)** (۵)کښې دی. (۶)

خو دلته يوه نسخه صحيح او نورې غلط ګرځولو هيڅ وجه نشته ځکه چه دا کلمه واو او ياء دواړو سره استعماليږي، نو ونيلي شي ((شکيتُ وشکوتُ)) (٧)

١) (قوله: أنس رضى الله عنه: الحديث مرتخريجه في الحديث السابق-

۲) (کشف الباری (ج۲ص۳۸)-

٣) (دَدوى دَ حالاتِودَ باره او كورى كتاب مواقيت الصلاة باب من نسى صلاة فليضل إذا ذكر-

٤) (كشف البارى (ج٣ص٥٦)-

۵) (الاعراف: ۱۸۹)-

۶) (عمدة القاري (ج ۱ ۱ ص ۱۹۶) وشرح القسطلاني (ج۵ص۱۰۳)-

٧) (حواله بالا-

((یعنی القبل)) دا دَ یو راوی تفسیری جمله ده او خودل دا دی چه دی دواړو حضراتو صحابه کرامو چه د رسول الله تاللم نه ګیله کړی وه دَ هغی سبب سپګی وی (۱) د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت د حدیث ترجمة الباب سره مطابقت په دی جمله کښی دی ((نهایته علیه مانی فواق)) چه هغه قمیص ما په یوه غزوه کښی دَ هغه په بدن اولیدو (۲) دی (۲۵۳) حَدَّثَنَامُسَدَّدُحَدَّثَنَامُسَدَّدُحَدَّثَهُمُو اَلْرَخُونَ فَعُبَدَا أَخُبَرُنِی قَتَادَةُ أَنَّ اَنسَا (۲) حَدَّثَهُمُ قَالَ رَخَصَ النّبی صَلّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلّمَ لِعَبْدِ الرّحمَنِ بَین عَوْفٍ وَالزّبیّرِبْنِ الْعَوّامِ فِی حَرِیدٍ

تراجم رجال

ا-مسلا: دامسدد بن مسرهد بن مسربل مناسم دي.

۲- یحیی:داابوسعید یحیی بن سعید القطان کوانی دید دی دواړوحضراتو اجمالی تذکره (کتاب الإیبان باب ان ای یحب العید....) لاندې راغلی ده.(۴)

٣-شعبه: دااميرالمؤمنين في الحديث شعبه بن الحجاج عتكى ويلا دي. دَده تذكره ((كتاب الإيان باب المسلم من سلم المسلمون من لسانه ويده) لاندې راغلي ده. (۵)

حَدَّثَنِي فَحَمَّدُبُنُ بَشَارِحَدَّثَنَاغُنُدَرْحَدَّثَنَاشُعْبَةُ سَمِعْتُ قَتَادَةً عَنُ أَنْسٍ (١) رَخَّصَ أَوْرُخِصَ لَهُمَالِحِكَّةِ بِهِمَا [١٥٥٠]

تراجم رجال

ا- هجمد بر بشار: دامشهور امام حدیث محمد بن بشار بن عثمان عبدی میزی دی. د دوی تذکره ((کتاب العلم باب ماکان النبی صلی الله علیه و سلم یتخولهم بالبوعظة) لاتدی راغلی ده (۷) - غندر میزید دی. د دوی حالات ((کتاب الإیمان باب ظلم دون ظلم)) لاندی راغلی دی. (۸)

۱) (عمدة القاري (ج ۱ ۱ ص ۱۹۶)-

٢) (حواله بالا-

٣) (قوله: أنسا رضى الله عنه: الحديث مرتخريجه آنفا أول الباب-

٤) (كشف البارى (ج٢ص٣٠)-

۵) (کشف الباری (ج۱ص۷۹)-

ع) (قوله: عن أنس رضى الله عنه: الحديث مرتخريجه آنفا-

٧) (کشف الباری (ج٣ص٢٥٨)-

۸) (کشف الباری (ج۲ ص۲۵۰)-

توله: رخَّص أورُخُّص هما لحكة بهما: كله ((اد)) دَ شك دَپاره ده. او دلته راوى ته شك كيرى چه ((دعس)) صيغه معلوم سره ده يا مجهول سره ده. (۱)

البته همدغه روایت امام احمد مراه هم د غندر نه نقل کریدی. د هغی الفاظ دا دی: ((رخص رسول الله صلی الله علیه وسلم))(۲) دی نه معلومه شوه چه شك محمد بن بشار ته شویدی. او صحیح لفظ ((رخص)) صیغه معلوم سره دی.

هم دغه روایت امام بخاری و کتاب اللباس) کښی هم ((عن وکیع عن شعبة)) په طریق سره نقل کړیدی، په دې کښی هم صیغه د معلوم ده (۳)

ذريبهمين لباس د اجازت سبب مه وو؟ امام بخارى مُنائد د حضرت انس التلا دا حديث باب په بنځو مختلفو طرقو سره نقل كړيدى. د دى ټولو مجموعى مضمون او حاصل همدغه دى چه رسول الله نالي حضرت عبدالرحمن بن عوف او زبير بن عوام الله نالي ته د ريښمين لباس اغوستلو اجازت كړې وو.

اوس سوال دا دې چه د دغه اجازت سبب څه وو آيا خارښ د دې اجازت سبب جوړشوې وو اکمه چه د باب اول او آخری طريق کښې راغلی دی (حکة خارښ ته وائی) يا د دې سبب هې ده اکمه چه د راد د په طريق کښې دی (۴)

سپګې وې لکه چه د باب په دريم طريق کښې دی (۴) د دې سوال مختلف محدثينو حضراتو جواب ورکړيدې چه دهغې تفصيل دا دې:

ابن التين مُشَارَة حكه يعنى د خارس والا روايت راجع ترخولي دى، فرمائي چه كيديشي و ابن التين مُشَارَة حكه يعنى د خارس والا روايت راجع ترخولي دى، فرمائي چه كيديشي چه يوراوي د دې تفسير كړې وي او هسې د هغه نه غلطي شوې وي. (٥)

و علامه داودي المربع د دواړو قسم رواياتو په مينځ کښې داسې تطبيق ورکړيدې چه د دې خبرې احتمال دې چه يو صاحب سره يو علت وي او بل سره بل. (ع)

آ علامه کرمانی شد فرمانی (الامنافاة بینههاولامنع لجبعهها) (۷) یعنی دواړو علتونوکښې څه ممانعت شته څه منافات نشته او نه دا دواړه په يو سړې کښې جمع کيدو کښې څه ممانعت شته

© کله کله د خارښ سبب سپګې هم وي.لکه چه تجربه په دې شاهد ده. حافظ ابن حجر استه فرمائي چه په دواړو قسم رواياتو کښې تطبيق داسې هم ممکن دې چه د خارښ سبب سپګې

۱) (عمدة القاري (ج ۱ ۱ص۱۹۷) وفتح الباری (ج۶ص۱۰۱)-

۲) (مسندالإمام أحمد (ج٣ص٢٥٥) رقم (١٣٧١٧)-

٣) (صعيع البخاري كتاب اللباس باب مايرخص للرجال من الحرير للحكة رقم (٥٨٣٩)-

٤) (فتح الباري (عُص ١٠١) وعمدة القاري (١٤ ص١٩۶)-

۵) (حواله بالا-

[،] روات باد (۶(حواله بالا وشرح القسطلانی (ج۵ص۱۰۳) ومثله عن ابن العربی حیث قال: د وردانه أرخص لکل منهما فالإفراد یتضی أن لکل حکمة-

۷) (شرح الكرماني (ج۵ص۱۷۶) وعمدة القاري (ج ۱۴ص۱۹۶)-

وې نو کله د سبب طرف ته د علت نسبت او کړیشو او کله د مسبب طرف ته. فرمائی:
(رقلت: ویمکن بان الحکة من القبل فنسبت العلة تارة إلى السبب، وتارة إلى سبب السبب))(١)
علامه عینی مُرَامِدُ دَ حافظ صاحب کرمانی قول راجح گرخولی دی. (٢)

٩- بَاب: مَا يُذُكِّرُ فِي السِّكِين

دُترجمة الباب مقصد امام بخاری مُراك دلته دا فرمانی چه د جهاد او قتال په موقع باندې چاقو خان سره اوساتلي شي نو جائز دې (۳)

ښکاره ده چه چاقو د فاندې څيز دې او په وخت په کار راځي. په ميدان جهاد کښې ډيرې موقعي داسې هم پيښيږي چه کله د نورو وسلو استعمال ممکن پاتې نشي نو هغه وخت چاقو کار ورکوي.

[٢٢٦٥] حَدَّثَنَا عَبُدُ الْعَزِيزِ بُنُ عَبُدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بُنُ سَعْدِ عَنُ ابْنِ شِمَابِ عَنْ جَعُفَرِ بُنِ عَبُرِ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْكُلُ جَعُفَرِ بُنِ عَمْرِو بُنِ أُمَيَّةَ الظَّمْرِيِّ عَنْ أَبِيهِ (٣) قَالَ رَأَيْتُ النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْكُلُ مِنْ كَيْفِ بَعْنَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْكُلُ مِنْ كَيْفِ مَنْ النَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَا اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَا اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ الْعَلَيْدِ عَمْرُواللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْكُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللْهُ عَلَيْهُ عَلَى اللَّهُ الْعَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْه

تراجم رجال

ا عبد العزيز بر عبد الله: داابوالقاسم عبد العزيز بن عبد الله بن يحيى قرشى اويسى مدنى المائية دى. (٥)

r-ابراهيم بريسعى: داابواسحاق ابراهيم بن سعدبن عبدالرحمن بن عوف زهري ويوجه دي. دروى تذكره «كتاب الإيمان باب تفاضل أهل الإيمان في الأعمال» لاندى تيره شويده. (ع)

-- ابری شخصاب: دامحمد بن مسلم بن عبیدالله بن شهاب زهری مراید دی. د ده اجمالی حالات ((بده الوحی)) د دریم حدیث لاندی تیرشوی دی. (۷)

٣-جعفربر عمروبر الميه الضمرى: داجعفر بن عمروبن اميه بن خويلد المدنى ويهد دى ٨٠٠

۱) (فتح الباري (ج۶ص ۱۰۱) وعمدة القاري (ج ۱ اص۱۹۶) وإرشاد الساري (ج۵ص ۱۰۳)-

۲) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٩٤)-

٣) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٩٧) وشرح القسطلاني (ج ٥ص ١٠٤)-

٤) (قوله: عن أبيه: الحديث مرتخريجة في كتاب الوضوء باب من لم يتوضأ من لحم الشاة والسويق-

۵) (د دوى د حالاتود باره او گورى كتاب العلم باب الحرص على الحديث.

۶) (کشف الباری (ج۲ص۱۲۰)-

٧) (كشف البارى (ج ١ص٣٢۶)-

٨) (ددوى حالاتود پاره اوگوري كتاب الوضوء باب من لم يتوضأ من لحم الشاة والسويق_

۵-ابیه: ((آب)) نه مراد حضرت عمرو بن امیه بن خویلد الصمری المدنی المی دی (۱) در دی سند د ټولو رجالو تعلق مدینی منوری سره دی علامه عینی میوی فرمائی رمنالاسنادکله مدینون) (۲)

قوله: قال: رأیت النبی صلی الله علیه وسلم یأکل من کتف یحتز منها، ثمر دعی إلی الصلاة فصلی ولمریتوضاً: حضرت عمرو بن امیه النبی کریم تایخ تم المیه نمی خورله او پریکوله نی، بیا هغوی د مانځه د پاره راوغوښتی شو نو هغوی تایخ مونځ او کړو او (دنوی سر نه نی) اودس اونه کړو.

تنبید دَحدیث باب سره دوه مشهوری مسئلی متعلق دی یوه («الوضوء مما مست النان) اود در در در الوضوء مما مست النان) اود در در در تفصیل مقام (کتاب الوضو) دی. دونمه مسئله په چړی او کانتبی سره د خوراك حکم. د در تفصیل (کتاب الأطعمة) کښی دی. (۳)

د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت د حدیث ترجمه الباب سره مطابقت د حدیث به معنی کنبی دی ځکه چه د حضور تالیخ غوښه پریکول اوخوړل ظاهره ده چه هم په چاره سره وه اوپه

دې باندې راتلونکې طريق دلالت کوی کوم کښې چه ((فااللی السکين)) راغلې دې او امام بخاری په او اب د جهاد په ابواب کښې د دې د پاره ذکر کړيدې چه چاقو هم د وسلی يو قسم دې.

دَعه شان علامه عيني مُراثي فرمائي:

((مطابقته للترجمة تؤخد من معنى الحديث لأن احتزاز لاصلى الله عليه وسلم من كتف الشاة كان بالسكين، ويشهد له الطريق الآخى الذى يأتى، وفيه: فألقى السكين، ووجه إدخال هذا الهاب بين أبواب الجهاد من حيث إن السكين أيضًا من أنواع السلام)) (۴)

«حدثنا ابوالیمان اخبرنا شعیب عن الزهري وزاد فالقی السکین» دا د حضرت عمرو بن امیه ضمری طافع د حدیث یو بل طریق دی اودا طریق امام بخاری می خکه ذکر کریدی چه ترجمه او حدیث کنبی مطابقت پیداشی چه به دی کنبی صراحت سره د سکین لفظ موجود دی او به وراندینی روایت کنبی د دی صراحت نه وو (۵)

او د زاد چه کوم فعل دی په هغی کښی دا دریواړه احتمالات دی چه د هغی فاعل زهری وی، جعفر بن عمرو وی یا د امام بخاری کیا شیخ ابوالیمان (۶)

١) (حواله بالا-

۲) (عمدة القارى (ج ١٤ ص١٩٧)-

 ⁽كشف البارى كتاب الأطعمة (ص١١١)-

٤) (عمدة القارى (ج ١٤ ص١٩٧)-

۵) (حواله بالا وإرشاد الساري (ج۵ص ۱۰۶)-

۶) (عمدة القارى (ج ۱۹ ص۱۹۷)-

٩٠-بَاب: مَاقِيلَ فِي قِتَال الرَّومِ

دَترجمة الباب مقصد حضرت امام بخارى ﷺ في ترجمه ألباب لاندي دَ اهل روم خلاف دَ جهاد فضیلت بیانول غواری (۱)

او حضرت شاه صاحب رَسِيْم فرمائي چه د امام بخاري رُسِيْج د دي باب د ترجمه نه مقصد د هغه قومونوبیان کول دی چه کومو سره نبی اکرم نظم ریا د هغه امت جنگ کریدی. (۲) د رومیانود نسل تحقیق: علامه جوهری الله فرمانی چه اهل روم، روم بن عیصو بن اسحاق بن ابراهیم د اولاد نه دی. (٣) او علامه رقاشی مُراثِی فرمانی چه دا ابن لیطابن یونان بن یافث ﺑﻦ ﻧﻮﺡ ﺗ**ﻴﺎﭘﺌﻴ**ﺎ ﺩَ ﺍﻭﻻﺩ ﻧﻪ ﺩﻯ. (۴)

دا هم وئیلی شوی دی چه اهل روم د خپل جداعلی رومی طرف ته منسوب کیری.دوی ته

روماس هم ونيلي شو او همدغه سړي د مشهور ښار روم باني دي. (٥) خو د حضرت شاه صاحب وينا دا ده چه روم په اصل کښې د مشهور ملك اټلي لقب وو. کله چه په دې کښې بلوې راپيدا شوې او هغوی دَ آختلافاتو ښکار شو نو څه خلقو اټلی پريخودو او قسطنطنيه کښې آباد شو نو روميان هم نصاری دی.(فيض الباری (ج٣ص۴۳)۔ [٢٢٦٦] حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بُنُ يَزِيدَ الدِّمَثْقِيُّ حَدَّثَنَا يَعُيَى بُنُ خَمُزَةً قَالَ حَدَّثَنِي تَوْرُبُنُ يَزِيدَ عَنْ خَالِدِبْنِ مَعْدَانَ أَنَّ عُمَيْرَبْنَ الْأَسُودِ الْعَنْسِيِّ حَذَّتُهُ أَنَّهُ أَتَى عُبَادَةً بْنَ الصَّامِتِ وَهُونَانِكِ فِي سَاحَةٍ حِمْصِ وَهُوَفِي بِنَاءٍ لِهُ وَمَعَهُ أَمُّ حَرَامِ قِيالَ عُمَيْرٌ فَخَذَ تَتُنَا أَمُّ جَرَامِ (١) أَنْهَا مِبِعَتْ النَّبِيِّ صَلِّي اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ أَوْلُ جَيْشٍ مِنْ أُمَّتِي يَغُزُونَ الْبَعْرَقَ لَ أُوجَبُواْ قَالِتْ أُمُّ حَرَامِ قُلْتُ بِارَسُولَ اللَّهِ أَنَا فِيهِمْ قَالَ أَنْتِ فِيهِمْ ثُمَّ قِالَ النَّبِيُ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَوَلَ جَيْشٍ مِنْ أُمَّتِي يَفْزُونَ مَدِينَةً قَيْصَرَمَغْفُورٌ لَهُمْ فَقُلْتُ أَنَا فِيهِمْ يَارَسُولَ اللَّهِ قَالَ لا [ر: ٢٦٣٦]

تراجم رجال

- اسى أق بر يزيد الدمشقى: دا ابوالنصر اسحاق بن ابراهيم بن يزيد فراديسي منه دى. اكثر د نيكه طرف ته منسوب شوى او په اسحاق بن يزيد سره بللي شي. (٧)

۱) (عمدة القارى (ج ۱ اص۱۹۷) وفتح البارى (ج۶ص۱۰۲)-

۲) (فیض الباری (ج۳ص۱۳۷)-

٣) (حواله بالا وحاشية الجمل على الجلالين (ج ٢ص ٨٤)-

٤) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ١٩٧) وفتح البارى (ج ٢ ص ١٠٢)-

٥) (حواله بالا-

ع) (قوله: ام حرام: الحديث مرتخريجه في أوائل الجهاد باب دلدعاء بالجهاد والشهادة للرجال والنساء-

٧) (د دوي د حالاتودباره او كورى كتاب الزكاة باب ماأدى زكاته فليس بكنز -

م- **بحیل بر ، حمزی:** دا ابوعبدالرحمن یحیی بن حمزه بن واقدحضرمی کند دی ۱۰ ،

-- ثورير . يزين: دا ابوخالد ثور بن يزيد كلاعي حمصي ميني دي ٢٠٠

م-خالدين معدان: دا ابوعبدالله خالد بن معدان حمصي كلاعي نيج دي ٣٠)

د- عميريو الاسود العنسي: داد شام مشهور عابد او زاهد مختشره تابعي حضرت عمير بن الاسود، شامی، دمشقی، حمصی نمین دی د دوی کنیت ابوعبدالرحمان او ابوعیاض دي. او همدي عمرو بن الاسود پيپيج هم دي. (۴)

دولي و حضرت عمر، ابن مسعود، معاذ بن جبل، عبادة بن صامت، عرباض بن ساريه، معاويه، عبدالله بن عمرو بن عاص، جناده بن اميه، ابوهريره، أم المؤمنين عائشه أو أم حرام بنت ملحان تفاقيم نه د حديث روايت كوي.

اود دوي نه د دوي ځوي حکيم بن عمير، مجاهد، خالدبن معدان، شريح بن عبيد كثيرين ابی کثیر،نصر بن علقمه، ابراهیم بن مسلم. هجری او زیاد بن فیاض مختل وغیره رویت

ابن سعد ميد فرمائي ((كان تليل الحديث، ثقة))(ع)

عجلی بی فرمائی ((شام تابی لغة)) (۷)

ابن حبان په (کتاب الثقات) کښې د هغوي ذکر کړيدې او فرمائيلي دي رمن عاد مان شام رُزُمُّادهم)(۸)

ابن عبدالبر كي فرمائي ((أجمعواعلى أنه كان من العلماء الثقات) ﴿ ٩)

حافظ ابن حجر کینی فرمانی ((تقه عابد)) (۱۰) د مسند احمد کینی په روایت کښې دی چه حصرت عمر انتو د هغه باره کښې فرمانیني دی ((من سنم الا أن ينظر إلى هدى رسول الله صبل الله عليه وسلم قلينظر إلى هدى عبروين الأسود» والمرا

١) (د دوى د حالاتودباره او كورئ كتاب الجنائز باب ماينهي من الحلق عند المصيبة -

۲) (د دوي د حالاتودباره اوګوري کتاب البيوع باب کسب الرجل وعمله بيده-

^{2) (}حواله بالا-

٤) (تهذیب الکمال (ج ٢١ص ٤٤) وسير أعلام النبلاء (ج ٤ ص ٢٩)-

٥) (شيوخ او تلامذه د باره او كورى تهذيب الكمال (ج٢٦ص ٤٤٤)-

۶) (طبقات ابن سعد (ج۷ص۵٤۵)-

٧) (تعليقات تهذيب الكمال (ج ٢١ص ٥٤٥)-

٨) (الثقات لابن حبان (ج ١٧١)-

٩) (تهذیب الکمال (ج٨ص٥)-

١٠) (التقريب (١٨ ٤) رقم (٩٨٩ ٤) -

١١) (مسند الإمام أحمد (ج١ص١٨) حيلة الأولياء (ج٥ص١٥٥) والكاشف (ج٢ص٢٢)-

یعنی چه څوك په دې خبره كښې خوشحالي محسوس كوی چه د رسول الله نالخ اخلاق ته اوګوری يعنی د هغوی اوګوری يعنی د هغوی اخلاق او سيرت ته اوګوری يعنی د هغوی اخلاق مبارك او سيرت بعينه د رسول الله نالخ د اخلاق او سيرت مطابق وو. هغه د رسول الله نالخ د اخلاق او سيرت مطابق وو. هغه د رسول الله نالخ د اخلاقو نمونه وه.

عبدالرحمن بن جبير فرمائى چه عمرو بن الاسود د حج نه پس، كله مدينى منورى ته اورسيدو نو مونځ كولو كښى په هغه باندې د حضرت عبدالله بن عمر الله نظرېريوتلو، تپوس ئى اوكړو دا څوك دې؟ اوخودلى شو چه د شام اوسيدونكى دې، عمرو بن الاسود نوم ئى دې نو حضرت ابن عمر الله اوفرمائيل:

((مارأیت احدا اشهه صلاقاً ولاهدیا ولاخشوعاً ولالهسة برسول الله صلی الله علیه وسلم من هذا الرجل))(۱) یعنی مونځ ، اخلاق سیرت ، خشوع ، او لباس کښی د دې سړی نه ډیر د رسول الله ترفیخ مشابه ما بل څوك نه دې لیدلي.

د امام ترمذی مینی نه علاوه باقی اصحاب اصول سته د دوی نه روایات اخستی دی.(۲) او په بخاری شریف کښی د دوی نه صرف یو حدیث یعنی حدیث باب مروی دی. (۲)

دَحضرت معاویه الله و حکومت به زمانه کنبی دَهغوی انتقال اوشون رحمه الله تعالى رحمة واسعة تنبیه ابوموسی المدینی و ابن ابی عاصم به حواله سره نقل کړی دی چه حضرت عمیر بن الاسود صحابی وو لیکن دا صحابی نه وو، بلکه د صحابه کرامو نه روایت کوی ابوموسی و مین فرمائی: ((ولیس بصحابی، إنه ایروی عن الصحابة)) (۵)

قوله: أنه أتى عبادة بر الصامت، وهو نازل فى ساحة حمص، وهوفى بناء، ومعه أمرحرام: عمير بن الاسود محمل فرمائى چه هغه حضرت عباده بن صامت المحمل له لارو كوم وخت چه هغه د حمص په غاړه په خپل يو محل كښى وو او هغه سره د هغه بى بى حضرت ام حرام الحمه وه.

دَ حضرت عباده بن صامت الله حالات ركتاب الإيبان) كنبى (ع) او دَ حضرت ام حرام الله الأيهان كنبى (ع) او دَ حضرت ام حرام الله الذكره (كتاب الجهاد) به شروع كنبى راغلى دى. (٧)

قوله: ثمرقال النبي صلّى الله عليه وسلم: أول جيش من أمتى يغزون

١) (سير أعلام النبلاء (٤ ص ٧٩)-

٢) (الكاشف (ج٢ص٧٢) وتهذيب الكمال (ج٢١ص٥٤٥)-

٣) (عمدة القارى (١٤ ص١٩٨) وفتح الباري (ج٤ص١٠١)-

٤) (تهذيب الكمال (ج٢١ص٥٤٥) وسير أعلَّام النبلاء (ج٤ص٨١)-

۵) (تهذیب التهذیب (ج۸ص۵)-

ع) (کشف الباری (ج۲ص٤۱)-

٧) (كتاب الجهاد باب الدعاء بالجهاد والشهادة للرجال والنساء-

مدینة قیصرمغفورهم، فقلت: أنافیهم یارسول الله؟ قال: لا: بیا نبی کریم نظم ارشاد اوفرمائیلو، زما په امت کښی د ټولو نه اول کوم خلق چه د قیصر په حکومت کښی جهاد کوی د هغوی بښنه شویده. ماعرض اوکړو یارسول الله آیا زه په هغوی شامل یم؟ هغوی اوفرمائیل نه. په حدیث باب کښی مدینه قیصر نه مراد قسطنطنیه ده، چه د قیصر دارالخلافه او پایه تخت وو. (۱)

او په حدیث کښې امت محمدیه د هغه لښکر د پاره د بښنې وعده او زیرې ورکړیشویدې . څوك چه په هغه باندې په ړومبي ځل حمله او کړي او هلته جنګ او کړې

دينه كومه غزوه مراد دها: د جمهورو شارحينو په دې اتفاق دې چه دلته د قسطنطنيه اولننی غزا مراد ده او د اكثرومورخينو اتفاق دې چه دا اوله غزا چه د قيصر خلاف شوې وه د دې مشرى يزيد بن معاويه كړې وه او دا د ۵۲ هجرى واقعه ده. (۲)

او په دې غزوه کښې جليل القدر صحابه کرام مثلاً حضرت ابوايوب انصاري، ابن عباس، ابن عمر، ابن الزبير او حسين بن على تخالي هم شريك وو . (٣)

دَ حَدِیثُ باب نه دَ یزیدپه فضیلت باندې استدلال: دَ دې نه علامه مهلب کیا دَ یزید بن معاویه په فضیلت او نجات باندې استدلال کړیدې ځکه چه هغه دَدغه لښکرامیر ووکوم چه په رومبی ځل د قیصر په حکومت د قبضې د پاره جنګ کړې وو (۴)

خو د مورخینو دا قول ډیرو علماو ردکړې دې، چه د هغې مختلف وجوهات لاندې ذکر دی. ① د قیصر خلاف جنګ کونکې لښکر په تعیین کښې مختلف روایات دی. ځکه چه په قسطنطنیه باندې د قبضې جنګ د حضرت معاویه ناتی په دور خلافت کښې څوځل شویدې. او په دې کښې هم څه شك نشته چه په بعض جنګونو کښې یزید بن معاویه امیروو خو د دې نه دا نه لازمیږي چه هغه دې د اولنې لښکر هم امیر وي. علامه عیني لیکلې دې چه حضرت معاویه ناتی یو لښکر د سفیان بن عوف په مشرئي کښې د قیصر حکومت طرف ته لیګلې وو چه د رومیانو په ښارونو کښې ورننوتلې وو او په دې لښکر کښې حضرت ابن عباس، ابن عمر، ابن الزبیر او ابوایوب انصاري ناتی غوندې صحابه کرام هم وو (۵) نور فرماني چه ډیره ښکاره خبره دا دې چه دا ټول صحابه کرام د سفیان سره وو نه چه یزید

نور فرمانی چه ډیره ښکاره حبره دا دې چه دا ټول صحابه کرام د سفیان سره وو ته چه یرید بن معاویه سره،په دې وجه چه یزید بن معاویه د دې قابل نه وو چه د دغه شان صحابه کرام تکالتم دې د یزید د حکم لاندې شی.(۶)

۱) (فتح الباری (ج۶ص۱۰۶)-

٢) (قال العينى وعزاه إلى صاحب المرأة، انظر عمدة القارى ((ج ١٤٨ ص١٩٨) وقال الأثير: في سنة تسع وأربعين (٣٩) وقيل سنة خمسين. انظر الكامل (ج٣ص٢٢٧)-

٣) (الكامل (ج٣ص٢٢٧) وتكملة فتح الملهم (ج٣ص٤٥٤)-

٤) (شرح ابن بطال (ج۵ص۱۰۷)-

۵) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ١٩٨)-

۶) (حواله بالا-

© د بعض روایاتو نه معلومیږی چه حضرت معاویه ناتی سفیان بن عوف لیکلی و بیا نی ورپسی یزیدهم اولیکلو لکه چه ابن الاثیرپه خپل مشهورتاریخ (الکامل) کښی ذکرکړی دی (۱) که چری دا روایت صحیح او درست دی نودا په دی خبره دلالت کوی چه پومبی سړی کوم چه قسطنطنیه طرف ته روان شو هغه سفیان بن عوف دی، بیا روستو یزید بن معاویه د هغه شاته روان شو. نو اوس به دا وئیلی کیږی چه د یزید اولیت او تقدم ثابت نشو بلکه سفیان بن عوف اود هغوی ملګرو ته اولیت او مرتبه حاصله شوه (۲)

و علامه ابن التین او ابن المنیر اکنی فرمائی چه د یزید بن معاویه په دې عموم کښې داخلیدلو سره دا نه لازمیږی چه هغه د څه خاص دلیل په وجه د دې عموم نه رابهر هم شی. څکه چه په دې باب کښې د اهل علم نه د چا هم اختلاف نشته چه د نبی اکرم نوای دا قول مبارك ((مغفور لهم)) په یو شرط سره تړلی شویدې چه هغه خلقو د مغفرت اهل اوقابل هم وی، نو که یو سړې په دې غزوه کښې د شرکت نه پس مرتد شی نو د ټولو په نزد په دې خبره اتفاق دې چه هغه به په دې عموم کښې نه داخلیږی. نو معلومه شوه چه د مغفور نه مراد دا

١) (قال ابن الأثير الجزرى رُوليني فى هذه السنة (٤٩) سيَّر معاوية جيشا كثيفًا إلى بلاد الروم للغزاة. وجعل عليهم سفيان بن عوف، وأمرابنه يزيد بالغزاة معهم. فتثاقل واعتل، فأمسك عنه أبوه. فأصاب الناس فى غزاتهم جوَّع ومرض شديد، فأنشا يزيديقول:

ما إن أبالي بما لاقت جموعُهم بالغذ قدونة من حمى ومن موم إن أبالي بما لاقت جموعُهم بدير مرانٍ عندى أم كلثوم إذا اتكأت على الأنماط مرتفقا

وأم كلثوم امرأته.... فبلغ معاوية شعره، فأقسم عليه ليلعن بسفيان في أرض الروم ليصيبه ما أصاب الناس، فسار ومعه جمع كثير، أضافهم إليه أبوه، وكان في هذا الجيش ابن عباس، وابن عمر، وابن الزبير، وأبوايوب الانصاري، وغيرهم.....فأوغلوافي بلادالروم حتى بلغوا القسطنطنية فاقتل المسلمون والروم.... إلخ. الكامل (ح٣ص ٢٢٧) وانظرأيضًا معجم البلدان للحموي (ح٢ص ٥٣٤) كلمة دير مران و (ح٤ص ١٨٨) كلمة غذقدونة. علامه ابن الآثير جزري بيني في في في دي كال يعني ٤٩ هجري كنبي حضرت معاويه المثير مقرر كرو أو خيل خوى يزيد ته د دي خلقو سره به غزوه كبني د شريكيدو حكم أوكرو المني مقرر كرو أو خيل خوى يزيد ته د دي خلقو سره به غزوه كبني د شريكيدو حكم أوكرو ليكن يزيد سستى اختيار كره أو بهاني ماني ني لتولي. د يزيد پلار معاويه المثير هغه به خيل حال ليكن يزيد سستى اختيار كره أو بهاني ماني ني لتولي. د يزيد دا شعرونه وئيل: "مقام بريخودو. به دي جدي هغوي لبنكر ته كومه تبه وغيره پريشاني وشوه د هغي ماته هيڅ پرواه نشته خكه چه به دير مروان مقام باندي به قالين باندي بنه به مزه كبني تكيه وهلي يم، زما سره أم كلثوم خكه چه به د يزيد د شخي نوم دي حضرت معاويه المثاري و سفيان بن عوف سره اور سيدل نو هغه د يزيد د شخي نوم دي حضرت معاويه المثاري د سفيان بن عوف سره وي به دي لبنكر كبني حضرت ابن عباس، ابن عمر، أبن الزبير أو ابوايوب انصاري رضي الله عنهم ملكوري و يو دي لنكر كبني حضرت ابن عباس، ابن عمر، أبن الزبير أو ابوايوب انصاري رضى الله عنهم مسلمانانو أو روميانو به مينځ كبني سره جنگ وشو......

دې چه په ده کښې د مغفرت شرط هم موندلې شي. (۱)

د دی دریو وجوهاتو په بنا اکثر علما عرامو دعلآمه مهلب بینی قول رد کریدی. لیکن روایات خو په دی باره کښی مختلف دی چه په قسطنطنیه باندی کوم لښکر او رومبی ځل حمله کړی وه. په هغی کښی د ډیرو احتمالاتو ګنجانش هم دی. مګر په هغی کښی اکثر په دی خبره دلالت کوی چه د رومبی لښکر مشری د یزید په لاس کښی وه د څه تائید چه مسند احمد (۲) طبقات ابن سعد (۳) او البدایه والنهایه (۴) د روایاتو نه کیږی.

دَ يزيد بن معاويه دَ نبى اكرم الله دَ قول ((مغفورلهم)) په عموم كښى دَ داخليدلو يا نه داخليدلو يا نه داخليدلو باندې دَ ټولو نه بهتر او معتدل قول دَ حضرت شاه ولى الله محدث دهلوى اله عندي. فرمائى:

((توله: , مغفورلهم، تبسك بعض الناس بهذا الحديث في دجاة يزيد، لأنه كان من جبلة هذا الحيش الثانى، بل كان رأسهم ورئيسهم على مايشهد به التواريخ، والصحيح أنه لايثبت بهذا الحديث إلا كونه مغفور اله ما تقدم من ذنه على هذه الغزوة، لأن الجهاد من الكفارات، وشأن الكفارات إزالة آثار الذنوب السابقة عليها، لا الواقعة بعدها، نعم، لوكان مع هذا الكلام أنه مغفور له إلى يوم القيامة يدل على دجاته، وإذا ليس فليس، بل أمرة مفوض إلى الله تعالى فيها ارتكهه من القبائح بعد هذه الغزوة، من قتل الحسين رض الله عنه، وتخيب البدينة، والإصرار على شهب الخبر، إن شاء عفاء نه، وإن شاء عذبه، كما هومطي دفي حق سائر العصاقد،)) (٥)

یعنی د رسول الله کافی مبارک ارشاد ((مغفورلهم))نه بعضو خلقو د یزید د نجات استدلال کریدی. څکه چه هغه هم د دی دونم لښکر یوحصه وو، بلکه د لښکر مشر او قائد وو لکه چه د تاریخ کتابونه په دی مخواه دی. خو صحیح خبره دا ده چه د دی حدیث نه صرف دومره ثابتیږی چه په دی غزوه کښی د شرکت نه وړاندی کومه د هغه مخاه وه هغه معاف کړیشوه څکه چه جهاد د کفاراتو د قبیل نه دی او د کفاراتو شان دا وی چه د هغی نه وړاندې کومه مخاه شوی وی هغه ختمه کړی نه چه روستو واقع شوی مخاهونه ختمه وی. او که دی کلام سره دا هم وی چه د قیامته پوری د هغه مغفرت وشو نو دا حدیث د یزید په نجات باندې دلالت کوی خو که دا خبره نه وی نو هغه هم نشته. (یعنی چه کله ترقیامت پوری د مغفرت

۱) (حواله بالا وفتح الباری (ج۶ص۱۰۲) وعمدةالقاری (ج۱۱ص۱۹۹)وأوجزالمسالک (ج۸ص۳۸۲) وتعلیقات لامع الدراری(ج۷ص۲۲۶)-

۲) أخرج الإمام أحمد في مسنده (ج۵ص٤٢) بسنده عن أبي ظبيان قال: غزا أبوأيوب مع يزيد بن معاوية...
۲) (أخرج ابن سعد في طبقاته (ج٣ص٤٤) بسنده عن محمد قال: شهد أبوأيوب بدراً......... قال: فمرض، وعلى الجيش يزيدبن معاوية، فأتاه يعوده... په دې روايت كښى د مرض نه مراد د ابوايوب انصاري مرض الموت دي. او دا د ټولو په نزد مسلمه ده چه د حضرت ابو ايوب انصاري تاتئ مرك د قسطنطنيه په غزوه كښى شوې دې-

البداية والنهاية (ج٨ض٥٨-٥٩) (البداية والنهاية (ج٨ض٥٨-٥٩)

٥) (رسالة شرح التراجم أبواب البخاري المطبوع مع صحيح البخاري (ص٣١)-

کشف البّاری د کر نشته نود یزید نجات هم ثابت نه دی، بلکه یزید چه د دی غزوی نه پس د کومو قباله ارتکاب کری دی د هغه معامله د الله تعالی په حواله ده، لکه د حضرت امام حسین بن علی ناتو شهادت، په مدینه منوره کښی تخریب کاری او فساد او په شرابو څکلو باندی اصرار وغیره کول، که الله تعالی اوغوښتل نو هغه به معاف کړی یا به سزا ورکړی، لکه چه د نورو ټولو ګناهګاراتو باره کښې حکم دي.

به خلیفه یزید بن معاویه باندی لعنت کولو حکم خلیفه یزید بن معاویه باندی لعنت کول جائز دی که نه؟ مشهوره اختلافی مسئله ده په کومه کښې چه د امت اکثر خلق د افراط آو تفریط ښکار دی. یوه طبقه خو هغه ده چه په یزید باندې لغنت کول حق ګنړي او دونمه ډله هغه ده چه دهغه د بعض فضائلو اومناقبو قائله ده اوبه هغه باندې لعنت کول جائزنه ګنړي مِونر دلته دا مسئله واضح كولو دَ پاره دَ حضرت فقيه النفس رشيداحمد ګنګوهي مُرتيد دفتأوې مجموعه (فتاوي رشيديه) نه يو اوږد اقتباس نقل کړيدې، چه د سوال او جوآب په صورت کښې دې. په څه سره چه د دې مسئلې د حقيقت او په حکم په پوهيدلو کښې مدد

سوال: یزید چا چه حضرت امام حسین الله شهید کړې وو هغه د لعن قابل دې که نه؟ اګرکه په لعنت کول تحریر کړی دی لکه حضرت ام سلمه ظها فرمائی چه د شهادت په شپه ما یو غیبی آواز واوريدو چه وئيلي:

> بشروا بالعذاب والتذليل وموسى و حامل الإنجيل

أيها القاتلون جهلا حسينا قد لُعنتم على لسان ابن داود

((كذا في تحمير الشهادتين))(١) ((وصواعق محرقة)) او امام جلال الدين سيوطى ميد (تاريخ الخلفاء) كبنى تحرير فرمائى ((قال صلى الله عليه وسلم: من أخاف أهل المدينة أخافه الله وعليه لعنة الله والملائكة والناس أجمعين))(روالامسلم)

((وكان سبب علع أهل البدينة له أن يور أس ف في البعاس))

او په دونم ځائ کښې فرماني ((ققتل دجي، پراسه في طست حق وضع پين يدې ابن زياد، لعن الله قاتله وابن زياد، ومعهيريد....))(۴)

او بعض محققین په شان د امام جوزي سيد (٥)

⁽ ١ (دلائل النبوة للأصبهاهني (ج٢ص٥٥٣) الصواعق المحرقة (ص٢١٨)-

٢) (الحديث أخرجه مسلم في صحيحه، كتاب الحج باب من أراد أهل المدينة يسوء.... رقم (١٣٨٧-١٣٨٨) ٣) (تاريخ الخلفاء للإمام سيوطى (ص٢٠٩)_

^{\$ (}حواله بالا(ص٢٠٧)-

ن) (النبراس شرح شرح العقائد (ص٣٣١)-

او ملا سعد الدین تفتازانی (۱) وغیرهما مینی هم د لعن قائل دی. مولانا قاضی ثناء الله صاحب پانی پتی مینی خیلو مکتوباتو کښی لیکی:

رروجه قول جواز لعن آنست که آبن جوزی روایت کرده که قاضی ابویعلی درکتاب خود معتمدالاصول بسندخود ازصالح بن احمد بن حنبل روایت کرده که گفتم پدر خود راکه اے پدر! مردم گمان می برند که ما مردم یزید رادوست می داریم احمد گفت که اے پسر!کسے که ایمان بخدا و رسول داشته باشد اورا دوستی یزید چگونه رواباشد؟ وچرالعنت نه کرده شود برکسیکه خدا بروئے درکتاب خود لعنت کرده؟ گفتم درقرآن کجابریزید لعنت کرده

است؟ احمد گفت (فهل عسيتم إن توليتم الخ) (٢) او په بل مكتوب... كښي دى:

غرض که کفر بریزید از روایت معتبره ثابت می شود، پس او مستحنی لعن است، اګرچه

درلعن الفتن فائده نيست، ليكن ((الحبق الله والهغض))مقتضى آنست (عهوالله أعلم-

د دې مذكوره عبارتونونه معلوميږي چه بعض حضرات د كفر هم قائل وو او بعض چضراتو اكابردين لعن جائزنه مختولو. د دې د پاره چه د يزيد د كفر حال محقق نه دې نو هغه د لعن قابل نه دې، نو يزيدته كافر وئيل يا لعن كول جائز دى كه نه؟ مدلل ارقام اوفرمائي.

جواب: صحیح حدیث دی چه کله څوك په چا لعنت کوی نو که هغه سړې د لعنت قابل دې نو په هغه باندې لعن پریوزی ګنی نو په لعنت کونکی باندې رجوع کیږی. (۴)

نو چه ترکومی د یو سری کفر محقق شوی نه وی په هغه باندی لعنت نه دی کول پکار ځکه چه په خپل ځان د لعنت کیدو اندیښنه ده. نو د یزید هغه کارونه که هر څومره د لعن کولو موجب دی خو چه چه په دغه مفاسدو

١) (قال العلامة سعدالدين التفتازاني في شرح العقائد (ص١١٥) وانما اختلفوا في يزيد بن معاوية حتى ذكر في الخلاصة وغيره أنه لاينبغي اللعن عليه ولاعلى الحجاج، لأن النبي عليه السلام نهى عن لعن المصلين، ومن كان من أهل القبلة فلما أنه يعلم من أحوال كان من أهل القبلة فلما أنه يعلم من أحوال الناس مالا يعلمه غيره، وبعضهم أطلق اللعن عليه، لما أنه كفرحين أمر بقتل الحسين، واتفقوا على جواز اللعن على من قتله أو أمربه، أو أجازه، ورضى به، والحق أن رضا يزيد بقتل الحسين واستشاره بذلك وإهانة أهل بيت النبي عليه السلام مما تواتر معناه، وإن كان تفاصيله أحاداً، فنحن لانتوقف في شأنه بل في إيمانه لعنة الله عليه وعلى أنصاره وأعوانه - دا خود علامه تفتازاني وكيم موقف شو ليكن علامه زبيدي وكيم لا اتحاف) كنبي د علامه تفتازاني وعلى أنظر هذا الكلام من هذا المحقق، مع أنه من كبار أئمة الشافعية وقواعد مذهبه تقتضي عدم اللعن. انتحاف السادة المتين (ج ٩ص ٢٠٤) كتاب آفات اللسان، الآفة الثامنة: اللعن-

٢) (الصواعق المحرقة (ص٢٢٠)-

٣) (أخرجه الإمام ابوداؤد في سننه عن أبي ذر رضى الله عنه أن رسول الله نظم قال: أفضل الأعمال الحب في الله والمخض الله والبغض في الله. كتاب السنة باب مجانبة أهل الأهواء وبغضهم رقم (٤٥٩٩) - مقتضى آنست))

٤) (عن أبى الدرداء رضى الله عنه قال: سمعت رسول الله نافظ يقول: إن العبد إذا لعن شيئا صعدت اللعنة إلى السماء....فإذا لم تجد مساغارجعت إلى الذي لُعن، فإن كان لذلك، والارجعت إلى أهلها. انظر سنن أبى داؤد كتاب الأدب باب في اللعن رقم (٤٩٠٥)-

راضي او خوشحاله وو او هغه ئى ښه او جائز گڼړلى وو او بغير د توبى نه مړشو نو هغه د لعن د جواز قائل دې او مسئله هم داسې ده، چه كوم علماء په دې كښې تردد كوى چه په اول كښې هغه مؤمن وو د دې نه پس هغه د دې افعالو مستحق وو كه نه وو او ثابته شوه كه نه، تحقيق نه دې شوې نو بغير د تحقيق نه د دې امر لعن جائز نه دې. د علماؤ هغه ډله په وجه د حديث د مسلم د لعن نه منع كوى او دا مسئله حق هم ده. نود جواز او عدم جواز مدار په تاريخ باندې دې او مونږ مقلدينوته احتياط په سكوت كښې دې ځكه كه لعن كول جائز دى نو لعن نه كولو كښې هم څه بدى نشته. لعن كول نه فرض دى، نه واجب،نه سنت نه مستحب، محض مباح دى او كه هغه محل نه دې نو پخپله په معصيت كښې اخته كيدل ښه دى. فقط والله اعلم. (١)

د بعث خلاصه: د يزيدباره كښي د دې سوال او جواب خلاصه دا شوه چه په دې مسئله كښي د امت د علماؤ درې موقفه دي: () لعنت بريزيد () عدم لعنت () توقف او سكوت.

بعض علما، په یزیدباندی د لعنت وئیلو قائل دی لکه امام احمد، علامه ابن الجوزی، علامه تفتازانی،قاضی ابویعلی موصلی،کیاالهراسی اوقاضی ثناءالله پانی پتی ایمام وغیره (۲) اود بعضو علماؤ وینا ده چه په یزید باندی لعنت کول جائز نه دی لکه امام غزالی (۳) علامه ابن تیمیه، حافظ ابن حجر هیشمی او حافظ ابن الصلاح مینم وغیره (۴) بلکه بعض خلق خود هغه د بعض فضائلو او مناقبو هم قائل دی لکه چه د علامه مهلب محدد قول چه اوس لر وړاندی تیرشو.

او جمهورمحققین دریم موقف ته ترجیح ورکړې چه په دې مسئله کښې سکوت اختیار کریشي. متقدمینو کښې مصطفی بن ابراهیم تونسی حنفی، امام قاسم بن قطلوبغا(۵) علامه زبیدی(۶) ایجی او متاخرینوکښې مولانا ابوالحسنات عبدالحئ لکهنوی، حضرت شیخ الحدیث محمد زکریا (۷) حکیم السلام مولانا محمدطیب (۸) حکیم الامت مولانا اشرف علی تهانوی (۹) میجی اود نورو علماء دیوبند هم دغه مسلك دي.

د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت: ترجمة الباب سره د حديث مطابقت د رسول الله تَعْظُم

۱) (فتاوی رشیدیه مبوب (ص۷۶-۷۸) و تالیفات رشیدیه (ص۸۳-۸۶)-

۲) (حواله بالا البداية والنهاية (ج۸ص۲۲) شهيدكربلا اور يزيد (ص۱٤۱) والنبراس (ص٣٩٦) وحياة الحيوان (ج٢ص١٥٧) باب الفاء كلمة الفهد-

٣) (إحياء العلوم الدين (ج٣ص ١٢٥)-

٤) (إتحاف السادة المتقين (ج٩ ص ٢٠٥)-

۵) (حواله بالا (ص۲۰۷)-

ع) (قال الإمام الزبيدي بَحَظَة وهناك قول ثالث وهو: التوقف وتفويض أمره إلى الله.... حواله بالا) ص٢٠٤)

٧) (تعليقات لامع الدرارى (ج٧ص٣٤٥) وذكر الشيخ عبدالحئ فى فتاواه (مجموعة الفتاوى (ج١ص١٩)
 عن المسامرة وشرحه أن الطرقة الثابتة القديمة فى شأن يزيد التوقف ورجع أمره إلى الله ـ

۸) (شهید کربلا اور یزید (ضص۱٤۶)-

٩) (إمداد الفتاوي (ج١ص٢٤٤) وأيضًا انظر لهذه المسألة الصواعق المحرقة (ص٢١٨-٢٢١)-

دې جمله ((اول چیش من امتی یغوون مدینه قیمه مغفور لهم)) کښې دې. دلته د رومیانو سره د جهاد فضیلت بیان کړیشوې دې. او (مدینه قیمه) نه قسطنطنیه مراد ده چه نن صبا د استنبول په نوم مشهور دې.

٩٣- بَأَب: قِتَالِ الْيَهُودِ

د ترجمة الباب مقصد د دې باب لاندې امام بخاری کیات د یهودو متعلق د نبی اکرم ناتی یوه پیشنګوئی بیانول غواړی چه مسلمانان به یهودو سره جنګ کوی او دا هم د نبی نایاو د معجزاتو نه یوه معجزه ده د کومې ښکاره کیدنه چه په انشاء الله په راتلونکې زمانه کښې کیږي. (۱)

[rara] حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بُنُ هُحَمَّدِ الْفَرُوِيُّ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بُنِ عُمَرَ رَضِىَ اللَّهُ عَنْهُمَا (r) أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ تُقَاتِلُونَ الْيَهُودَ حَتَّييَغْتَيِى أَحَدُهُمُ وَرَاءَ الْعَجْرِفَيَقُولُ يَاعَبُدَ اللَّهِ هَذَا يَهُودِي وَرَابِي فَاقْتُلُهُ [rrw]

تراجم رجال

هم دَ ده دَ نُوم په شان يو بل راوي هم دي. اسحاق بْن عُبدالله بن ابي سفروه چه ضعيف دي او دي (ابن عبدالله) دَ اسحاق بن محمد دُ پلار تره دي. (۵) په دي وجه دُ اشتباه نه بچ کيدل پکار دي. (۶)

r-مالك: دامشهورامام فقيه مدينه حضرت مالك بن انس رَعَيْدَ دي. د ده تذكره ((بدء الوحي)) د دوئم حديث لاندي تيره شويده. (٧)

۱) (عمدة القارى (ج ۱ ۱ص۱۹۹)-

۲) (قوله: عن عبدالله بن عمررضى الله عنهما: الحديث أخرجه البخارى أيضًا كتاب المناقب باب علامات النبوة
 فى الاسلام رقم (٣٥٩٣) ومسلم كتاب الفتن باب لاتقوم الساعة حتى يمر الرجل يقبر الرجل فيتمنى أن يكون
 مكان الميت من البلاء رقم (٧٣٣٥) والترمذى كتاب الفتن باب ماجاء فى علامة الدجال رقم (٢٢٣۶)

٣) (عمدةالقاري (ج ١٤ ص ١٩٩) وفتح الباري (ج ٤ ص ١٠٣)-

٤) (فتح الباري (ج۶ص١٠٣)-

۵) (حواله بالا -

٤) (اسحاق بن محمد الفروى، د دوى د حالاتو د پاره او كورئ كتاب الصلح باب قول الإمام لأصحابه.

۷) (کشف الباری (ج ۱ ص ۲۹۰) و کشف الباری (ج ۲ ص ۸۰)-

-- نافع: دا مشهور تابعی حضرت نافع مولی ابن عمر میانید دی. (۱)

م-عبى الله برعمر رضى الله عنهما: دامشهور صحابى حضرت عبدالله بن عمر تلاثها دى. دُ ده حالات (ركتاب الإيمان هاب الإيمان وقول النبى صلى الله عليه وسلم: بنى الإسلام على عبس)) لاندى تيرشوى دى. (٢)

دلته نبی آکرم تایخ الارچه مخامخ ناستو صحابه کرامو رضوآن الله علیهم اجمعین ته خطاب اوفرمانیلو لیکن مراد ترینه نور امتیان دی. ځکه چه په حدیث کښی ذکر شوی واقعه د حضرت عیسی قیایه و آسمان نه د تشریف راوړلو نه پس ښکاره کیږی او مسلمانان به هغه

سره وی او یهودیان ((لعنقالله علیهم)) به دجال ((أعاذناالله الجبیع من فتنته)) سره وی.(۳)

قوله: حتى يختبئ أحدهم وراء الحجر فيقول: يأعبد الله، هذا يهودي ورائي فأقتله: تردې چه د دې يهوديانونه به څوك د كانړى شاته پټ شي نو هغه كانړې به واني اې د الله تعالى بنده دا زما شاته يهودي پټ شويدې دا قتل كړه.

مطلب دا چه مسلمانان به یهودیان یو یو راغوندوی او قتل کوی به نی نو یهودیان به د پیدلود پاره د کانرو آسرا اخلی خو هلته به هم نشی بچ کیدلی. ځکه چه همدغه کانری د کوم شاته چه دوی پناه اخستی وی هغه به مسلمانان راغواړی او خودنه کوی چه دلته زما شاته یو یهودی پټ ناست دی دا قتل کړه او دا صورت حال به هغه وخت پیښیږی کله به چه حضرت عیسی میایی د جال ملعون قتل کړی وی. د سنن ابن ماجه په روایت کښی د حضرت ابوامامه الباهلی میایی نه دې سلسله کښی دا تفصیل هم نقل دی:

((...قال عيسى عليه السلام: افتحوالهاب، فيفتح، ووراء والدجال، معه سبعون الفيهودى، كلهم ذوسيف محلى وساج، فإذا نظر السيه الدجال ذاب ك ما ينوب البلح في الهاء، وينطلق هازها، ويقول عيسى عليه السلام: إن لى فيك ضرية لن تبقّني بها، فيدر كه عنده باب اللدالش، في فيقتله، فيهزم الله اليهود، فلايق شي مها خلق الله عزوجل يتوارى به يهودى إلا أنطق الله ذلك الشيء، لاحجر، ولا شجر، ولاحائط، ولا دابة إلا اغي قدة، فإنها من شجرهم، لا تنطق، إلا قال: ياعبدالله البسلم، هذا يهودى، فتعال اقتله) (ع)

حضرت عیسی علیه به فرمائی چه دروازه کولاؤ کرئی، نو دروازه به کولاؤ کریشی اود هغه شاته به دجال وی چا سره چه به اویا زره یهودیان وی ټولو سره به مزین تورې او شنه

١) (دَ دوى دَ حالاتو دَ پاره أو كورى كتاب العلم باب ذكر العلم وافتيافي المسجد -

۲) (کشف الباری (ج ۱ضص۶۳۷)-

٣) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ٩٩) وفتح البارى (ج ٢٥ص ١٠٣) وإرشاد السارى (ج ٥ص ١٠٥)-

٤٠) (سنن ابن ماجه كتاب الفتن باب فتنة الدجال وخروج عيسى بن مريم وخروج يأجوج.... رقم (٤٠٧٧)-

(01) څادرونه وي کله چه دجال دوی ته اوګوري نو داسې به ویلې شي لکه چه مالږه په اوبوکښې ویلی کیری او تښتی به، او عیسی سیر به فرمانی چه زه به په تاباندی یو داسی گذار کوم يه كوم كښي چه به ته زمانه وړاندې والى اونه كړې شي. نو هغه ظارئم به دجال د مقام لد مشرقی دروازی سره راګیرکړی او هغه به قتل کړی. آله تعالی به یهودیانو ته شکست ورکړی، نو د الله تعالی په مخلوقاتو کښې به داسې يوڅيز پاتې نشې د کوم شاته چه به چرته يو يهودي پټ شوې وي مگر دا چه الله تعالى به هغه څيز کويان کړي. نه کانړې، نه وُنه، نه څه ځناور او نه چرته ديوال بغير د غرقده نه ځکه چه هغه د يهوديانو د ونونه يوه ونه ده چه خبرې به نه کوي،خوهريو څيز به دا وائي اې د الله تعالى مسلمانانو بنديګانو دا يهودي دې راشه دا قتل کړه.

دُ سنن ابن ماجه د ذكر شوى روايت نه دا هم معلومه شوه چه يهوديانوته به هيځ څيز پناه نه ورکوی سوا د غرقد (۱)

د کانری د وینا مطلب: لکه څنګه چه اوس تیرشو چه کانړی به خپل شاته پټ شوی یهودیان ښکاره کوی او وائی به (رياعبدالله، هذايهودی و رائ فاقتله)) نو په دې کښې دوه احتمالات دی: ٠ دا كلام په حقيقت باندې محمول دې او په دې كښې هيڅ استعاد نشته چه الله تعالى به دوی ته د وینا طاقت وری او کانړی به وائی ((دهوعلیکل شئ قدیر)) (۲)

ا دا هم ممکنه ده چه دا کلام په مجاز باندې محمول وي او په دې کښې دې خبرې ته اشاره وی چه د یهودیانو جرړې به پریکړې شی او هغوی به بالکل ختم کړیشی (۳) علامه عینی اولنی احتمال ته ترجیح ورکړې ده ځکه چه دا خبره خو واضحه ده چه د الله تعالى د پاره خو دا کار څه مشکل نه دې چه هغه کانړو له د خبرو طاقت ورکړي. (۴)

د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت: دَ خُديث شريف ترجمة الباب سره مطابقت به دى جمله

کښې دې ((تقاتلون اليهود)) (۵) چه په دې کښې د مستقبل متعلق يو خبر ورکړيشوې دې. چه مسلمانانو تاسو به یهودیانو سره جنګ کوئی په کوم کښې چه به آخر کار فتح هم ستاسو مقدر وي.

دَ حديث باب يو خصوصيت د حضرت عبدالله بن عمر الله الله عنه عمر الما الله د مروياتو نه دې ليکن په موطا کښې نشته، نو دا د هغه احاديثونه دې د کومو تحديث چه امام مالك مينيز د موطا نه بهر کريدې.

او اسحاق بن محمد أمام مالك عليه في نه د دي حديث په روايت كښي متفرد هم نه دي بلكه د

١) (غرقد يو قسم ازغنه ونه ده، علامه طيبي فرمائي ((هو ضرب من شجر العضاه وشجر الشوك والغرقدة واحدة)) انظر الكاشف عن حقائق السنن (ج ١٠ص٧٥)-

۲) (عمدة القاري (ج ٤ ١ص١٩٩) وشرح الأبي على مسلم (ج٧ص٢٥٧)-

٣) (حواله بالا-

 ^{4) (}عمدة القارى (ج ٤ ١ص١٩٩)-

٥) (حواله بالا-

مغه متابعت ابن وهب، معن بن عیسی، سعید بن داود او ولید بن مسلم کریدی د دی تولو متابعانو تخریج امام دارقطنی برای ایک مالک کنبی کریدی خو اسماعیلی صرف د ابن وهب طریق ذکر کریدی (۱)

رَّ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَنْ الْمُراهِيمَ أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ عَنْ عُمَارَةً بْنِ الْقَعْقَاعِ عَنْ أَبِى زُرْعَةً عَنْ أَبِى وَمُنَا إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ عَنْ عُمَارَةً بْنِ الْقَعْقَاعِ عَنْ أَبِى زُرْعَةً عَنْ أَبِي هُرَيْرَةً وَسَلَّمَ قَالَ لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَى أَبِي هُرَيْرَةً وَرَاءَهُ الْيَهُودِي يَامُسْلِمُ هَذَا يَهُودِي وَرَابِي فَاقْتُلْهُ وَمُ الْيَهُودِي يَامُسْلِمُ هَذَا يَهُودِي وَرَابِي فَاقْتُلْهُ

تراجم رجال

المساق بر ابراهیم: دا اسحاق بن ابراهیم بن مخلدبن ابراهیم ابراهیم ابن دی. په ابن راهویه سره مشهور دی، د دوی تذکره ((کتاب العلم باب فغل من علم وعلم)) لاندی تیره شوی (۳)

r-جریر: دا ابوعبدالله جریربن عبدالمجید بن قرط مُنْ الله دی. د دوی تذکره ((کتاب العلم البه من جعل الأهل العلم العلم البه العلم البه دیل کنیی راغلی (۲)

-- عمارة بري القعقاع: داعمارة بن القعقاع بن شبرمه كوفى مُوالله دي. دَ دوى حالات (ركتاب الإيمان بالجهاد من الإيمان) لاندي تيرشوى دى. (۵)

۳- ابوزرعه: دا مشهور محدث حضرت ابوزرعه عمرو بن جریر بُرَاشَهٔ دی. د دوی حالات هم ‹(کتابالإیبان›) په پورتنی باب کښی تیرشوی دی.(۶)

٥- أبوهريرة: دا مشهور صحابى حضرت ابوهريره المنهود در درى تذكره ((كتاب الإيبان باب أمور الإيبان) المور الإيبان) لاندى تيرشوى دى. (٧)

قوله: عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: لاتقوم الساعة حضرت ابوهريره الله عليه وسلم قال الاتقوم الساعة وخت بوري نه ابوهريره الله عليه وخته بوري نه قائمين تركومي چه تاسو يهوديانو سره جنگ اونه كړئي، او تردې چه هغه كانړى د كوم

۱) (فتح الباري (ج۶ص۱۰۳)-

٢) (قوله: عن أبى هريرة رضى الله عنه: الحديث أخرجه مسلم كتاب الفتن باب لاتقوم الساعة حتى يسر الرجل بقبر الرجل فيتمنى أن يكون مكان السيت من البلاء رقم (٧٣٣٩)-

۳) (کشف الباری (ج۳ص۲۶)-

٤) (کشف الباری (ج۲ص۲۶۸)-

۵) (کشف الباری (ج۲س۳۰۳)-

۶) (حواله بالا (ص ۲۰۶)-

۷) (کشف الباری (ج۱ص۶۵۹)-

كشف البارى كتاب الجهاد (جلداول)

شاته چه یهودی پټ شوې وی به وائی اې مسلمانه دا زما شاته یهودی پټ شوې ناست دې دا قتل کره.

د حضرت ابوهریره تالی د دې حدیث مفهوم او مضمون هم هغه دې چه د تیر شوی حدیث وو،البته داخبره ښکاره کړیشویده چه دواړواحادیثوکښې د یهودیانو سره د جنګ ذکر دې او دا به قیامت سره نزدې وی اود قیامت د واقع کیدو د پاره به د علامت په توګه وی. اسلام به د عیسی علیه السلام و نازلیدوپورې باقی وی په احادیث باب کښې دی طرف ته اشاره ده چه د اسلام دین به د حضرت عیسی تاپی د نازلیدلو پورې باقی وی ځکه چه هم هغه به دجال سره جنګ کوی او یهودیان څوك چه به د دجال منونکی او تابعدار وی د هغوی به هم جرړې پرې کوی. (۱)

په دې سلسله کښې به نورتفصيل انشاء الله کتاب المناقب کښې (بابعلامة النبوة) لاندې راځي. د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت نکاره دې او هغه د حديث په دې جمله کښې دې. ((لاتقوم الساعة حتى تقاتلوااليهود....)). (۲)

٩٠- بَأَب: قِتَالِ التُّرُكِ

د ترجمهٔ الباب مقصد: د دې ترجمهٔ الباب نه امام بخاری بُراند د یو روایت د تضعیف طرف ته اشاره کړیده. په کوم کښې چه راځی ((اترکوالترك ماترکوکم)) یا ((اترکوالترك ماودعوکم)) (۳) یعنی چه ترکومی ترك تاسو پریږدی نو ترهغه وخت پورې تاسوهم هغوی سره څه غرض مه کوئ. د دې روایت نه خو دا معلومیږی چه ترکیانو سره جنګ نه دی کول پکار، نو امام بخاری براید دا ښائی چه نه که چرې موقع راشی نو هغوی سره هم په جنګ کولو کښې څه بدی نشته. ځکه چه حضور اکرم تاکیل پخپله د قیامت په علاماتوکښی د دې ذکر کړیدې چه په راتلونکی زمانه کښې به قیامت سره نزدې نزدې ترکیانو سره هم قتال او جهاد وي. د ترکیانو په اصل کښې اختلاف دې چه دوی د چا نسل د ترکیانو په اصل کښې اختلاف دې چه دوی د چا نسل سره تعلق لری.علامه خطابی پُرین فرمانی چه ترک د حضرت ابراهیم پیرانو د دې و دینځې (قنطوره) د نسل نه ترک هم دی. (۴)

۱) (شرح ابن بطال (ج۵ص۷۰۷) وفتح الباري (ج۶ص۱۰۳) وعمدة القاري (ج ۱۴ص۱۹۹)-

۲) (عمدة القارى (ج ٤ ١٩٩٥)-

٣) (الحديث أخرجه أبوداؤد في سننه، أبواب الملاحم باب في النهى عن تهبيج الترك والحبشة رقم (٢١٧٨) واليهقي في سننه (٤٣٠٢) والنباني في الصغرى، أبواب الجهاد باب غزوة الترك والحبشة رقم (٢١٧٨) واليهقي في سننه الكبري (ج٩٢ص١٧٤) كتاب السير باب ماجاء في النهى عن تهبيج الترك والحبشة، والسيوطي في اللألي المصنوعة في الأحاديث الموضوعة (ج١ص٨) بقية المناقب، وقال: موضوع، والكنائي في تنزيه الشريعة المرفوعة (ج٢ص٣٣) باب في مناقب ومثالب متفرقة، و(ج٢ص٢١٣) كتاب النكاح الفصل الثالث وابن الجوزي في الموضعات (ج٢ص٣٣) كتاب الجهاد باب في السبي والطبراني في الكبير (ج٩ص١٩٥) رقم (٨٨٢)
 ٤) (عمدة القاري (ج١ص١٩٥) وفتح الباري (ج٩ص١٠٥)-

او علامه کراع پیه فرمانی چه ترك هم هغه خلق دی كومو ته چه (ديلم) وائی خو په دې قول باندې دا اعتراض شويدې چه ديلم د تركو يو قسم دې. (۱)

علامهٔ ابن عبدالبر بُوَلَمَّ فرمانی چه ترك د یافت بن نوخ تایم اولاد نه دی او د دوی ډیر زیات قسمونه دی. په دوی کښی د ښاریوخلق، دقلعه ګانو اوسیدونکی او د غرونو په څوکو اوسیدونکی هم دی او د صحراګانو اوسیدونکی هم (۲)

او د حافظ وهب بن منبه رئيم قول دی چه ترك د یاجوج او ماجوج د تره خامن دی. داسی اوشوه چه كله حضرت دوالقرنین سكندری دیوال جوړ كړو نو د یاجوج ماجوج څه كسان غائب وو، نو هغوی ئی بهر پریخودل په دې وجه هغوی ته ترك وائی. (۳)

[٢2٦٠] حَدَّثَنَا أَبُوالنُّعُمَانِ حَدَّثَنَا جَرِيرُبُنُ حَازِمِ قَالَ سَمِعْتُ الْحَسَنَ يَقُولُ حَدَّثَنَا عُمُرُوبُنُ تَعْلِبَ (٣) قَالَ قَالَ النَّبِيُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ مِنْ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ أَنْ تُقَاتِلُوا قَوْمًا يَزُاضَ الْوُجُوةِ كَأَنَ يُتَعِلُونَ نِعَالَ الشَّعَرِ وَإِنَّ مِنْ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ أَنْ تُقَاتِلُوا قَوْمًا عِرَاضَ الْوُجُوةِ كَأَنَ وُجُوهَهُمُ الْمَجَانُ الْمُطْرَقَةُ [٢٢٩٠]

تراجم رجال

- ابوالنعمان دا ابوالنعمان محمدبن الفضل سدوسى وَالله دوى دَ دوى تذكره ((كتاب الإيمان باب تول النبي صلى الله عليه وسلم: الدين النميحة...) لاندې راغلې ده. (۵)

٢-جريربر حازم: دا ابوالنضر جرير بن حازم بن زيد ازدى بصرى ميات دي. (ع)

-- حسر..: دا مشهور تابعی حضرت حسن بصری منه دی، د دوی حالات ((کتاب الإیان باب ﴿ وَإِنْ طَاتُفْتَانُ مِنْ البؤمنين اقتتلوا.... ﴾)) لاندې تيرشوی دی. (۷)

٣- عمروير . تغلب: دا عمرو بن تغلب عهدى ضمرى الشيخ دي. (٨)

قوله: قال: قال النبي صلى الله عليه وسلم: إن من أشراط الساعة أن

١) (حواله بالا-

٢) (حواله بالا-

٣) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ٢٠٠) وفتح البارى (ج ٤ص ١٠٤)-

٤) (قوله: عن عمرو بن تغلب رضى الله عنه: الحديث أخرجه البخارى أيضًا فى المناقب باب علامات النبوة فى الإسلام رقم (٣٥٩٢) وابن ماجه أبواب الفتن باب الترك رقم (٤٠٩٨) -

۵) (کشف الباری (ج۲ص۷۶۸)-

ع) (د دوى د حالاتو د پاره او كورئ كتاب الصلاة باب الخوخة والممر في المسجد-

۷) (کشف الباری (ج۲ص۲۲)-

^{،) (}دَ دوى دَ حالاتو دَ پاره أوگورئ كتاب الجمعة باب من قال في الخطبة بعد الثناء: أمابعد-

010,

تقاتلوا قوماً ینتعلون نعال الشعر: حضرت عمرو بن تغلب الشخ فرمانی چه نبی کریم نظم فرمائیلی چه نبی کریم نظم فرمائیلی چه بیشکه د قیامت په علاموکښی یوه علامه دا هم ده چه تاسو به داسی قوم سره جنګ کوئی چه د ویښتو څپلئی به اچوی.

د ويښتو څپلې اچولومطلب: قاضی عياض کياي د حديث د دې جملې (رينتعلون الشعر)) دو د مطلبونه بيان کړی دی.

ن يو دا چه هغه خلق به د ويښتونه رسئي اوغړي بيابه د دغه رسو نه څپلني جوړوي.

و دا هم ونیلی شوی دی چه د هغوی د سر ویبته به ډیر ګڼړ او اوږده وی چه کله هغوی ویبته رازوړندوی نوهغه به د لباس په شان وی چه د هغوی د پښو پورې به وی د خپلوپه شان (۱) یاد داسی څرمنو چه په هغی ویښته لګیدلی وی هغه څپلئی به استعمالوی، چه د هغوی په علاقو داسی سخته واوره وریږی چه په نورو علاقو کښې نه وی، نو د دې د پاره چه پښې د واوری د سختنی او نقصان نه بې کړیشی

قوله: وإن مر أشراط الساعة أن تقاتلوا قوما عراض الوجوه، كأن وجوههم المجار المطرفة: او بيشكه د قيامت د علامونه (دا هم ده چه) تاسو به يو داسې قوم سره جنګ كونى د چا مخونه چه به پلن وى لكه چه هغه پلن ډهالونه دى.

د المجان المطرقة معنى: ((البجان)) جمع د مجن ده، د دي معنى دهال ده.

اود ((البطرةة)) په راء کښې دوه احتمالات دی. تخفیف سره مُطرُتة ده یا تشدید سره مطرُقة ده. (۲) که د تشدید سره وی نو ((البجان البطرةة)) معنی ده هغه ډهال چه په یو بل باندې ورختلې او قط په قط وی. ابن قرقول دا قول د بعض خلقو طرف ته منسوب کړیدې (۳) او که چرې مطرقة بغیرد تشدید نه وی نو علامه خطابی و کونه دې معنی دا بیان کړیده چه هغه ډهال په کوم چه اوسپنه خیژولي شوې وی (۴) کیږی داسې چه اوسپنه پلنه کړی او هغه په ډهال وغیره باندې وراوخیژوی. د دې د پاره چه غشې وغیره په دې اثر اونه کړی. همدغه معنی ډیره واضحه ده. اکثرو شارحینو حضراتو همدغه معنی بیان کړیده. تشبیه په کوم څیز کښې ده؟ : حدیث شریف کښې نبی اکرم ناتی د ترك قوم د مخونود پلنوالی د هغه ډهال سره تشبیه ورکړیده په کوم چه اوسپنه ورخیژولې شوې وی. نو علامه خطابی فرمانی لکه چه څنګه ډهال راپړسیدلې وی دغه شان به د دوی مخونه پلن او اننګی راپړسیدلی وی. (۵)

۱) (عمدة القارى (ج ۱ کا ۲۰۰)-

۲) (عمدة القارى(ج ۱ ۱ص۲۰۰)-

٣) (حواله بالا-

^{\$) (}أعلام الحديث(ج٢ص٥٠٤) وحواله بالا-

ن) (حواله بالا-

او قاضی بیضاوی تختاط فرمائی چه نبی میاه هغوی مخونونه د دهال سره تشبیه ورکړی وه چه خورشوی وی او ګول وی او دا تشبیه د مخونو د مضبوطیا او د غوښې په زیاتوالی کښې دی (۱)

د حدیث د ترجمة الباب سره مطابقت د حدیث شریف ترجمه الباب سره مطابقت د حدیث په معنی کښی دی. څکه چه نبی اکرم ناشی ارشاد ((عماض الوجوه، کأن وجوههم المجان المطهقة)) د ترکو صفت دی. (۲)

رو صفحه در باب به ورانديني حديث شريف كنبي به صراحت سره راخي. [٢٥٠٠] حَدَّثَنَاسَعِيدُ بُنُ هُعَمْدِ حَدَّثَنَا يَعُقُوبُ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحٍ عَنْ الْأَعُرَجِ قَالَ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةً رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ (٣) قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَى تُقَاتِلُوا التَّرُكُ صِغَارَ اللَّهُ عَنْهُ (٣) قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَى تُقَاتِلُوا التَّرُكُ صِغَارَ الْأَعْيُنِ مُمُ الْوُجُومِ ذُلُفَ الْأَنُوفِ كَانَ وُجُوهَهُمُ الْمَجَانُ الْمُطْرَقَةُ وَلَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَى تُقَاتِلُوا قَوْمًا إِنْعًا لُهُمُ الشَّعَرُ [٢٧٧١، ٣٣٩٠-٣٣٩]

تراجم رجال

<u>- سعید بر محمد:</u> دا امام سعید بن محمد بن سعید جرمی کوفی مُرَاثَدُ دی. ابومحمدیا ابوعبیدالله ددوی کنیت دی. (۴)

دى د عبدالرحمن بن عبدالملك بن ابجر، ابو تميله يحيى بن واضح، يعقوب بن ابراهيم بن سعد، ابواسامة، مطلب بن زياد، ابوعبيده الحداد، حاتم بن اسماعيل، يحيى بن سعيدالاموى او امام ابويوسف المنطقة نه د حديث روايت كوى.

او د هغه نه امام بخاری، امام مسلم، ذهلی، ابوزرعه، عبدالله بن احمد، عبدالاعلی بن واصل، ابن ابی الدنیا، عباس دوری المنها و یولوئ دله روایت کوی.(۵)

امام ابوداؤد او امام ابن ماجه شخیر ده نه د امام ذهلی په واسطه روایت اخستی دی. (۶) امام یحیی بن معین رئید فرمائی ((صدوق)) (۷)

۱) (عمدة القاري (ج ۲ اص ۲۰۰) وفتح الباري (ج ۶ص ۲۰۱)وشرح الكرماني (ج ۲ اص ۱۸۰)-

۲) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص ٢٠٠)-

آ) (قوله: أبوهريرة رضى الله عنه: الحديث أخرجه البخارى أيضًا كتاب الجهاد باب قتال الذين ينتعلون الشعر رقم (۲۹۲۹) وكتاب المناقب باب علامات النبوة فى الإسلام رقم (۲۹۲۹) وكتاب المناقب باب علامات النبوة فى الإسلام رقم (۲۹۲۹) وأبوداؤد أبواب الملاحم باب فى قتال كتاب الفتن باب لا تقوم الساعة حتى يمر الرجل بقبر.... رقم (۷۳۱۰) وأبوداؤد أبواب الملاحم باب فى قتال الترك رقم (۲۲۱۶) والنسائى كتاب الجهاد الترك رقم (۲۲۱۶) والنسائى كتاب الجهاد باب غزوة الترك رقم (۲۲۱۶) هم دوم (۲۱۷۹).

٤) (سير أعلام النبلاء (ج ١ص ٤٣٧) وتهذيب الكمال (ج ١١ص ٤٤) تاريخ بغداد (ج ٩ص ٨٧)-

ن) (شيوخ او تلامذه دَ باره او محوري تهذيب الكمال (ج١١ص٤٤-٤٤)-

⁽ ۶(تهذيب الكمال (ج ١٤ص٧۶)-

٧) (تاريغ بغداد (ج٩ص ٨٨) وتهذيب الكمال (ج١١ص٤٤)-

014. امام ابوزرعه دمشقى ميني فرمائى (رسألت ابن ديروابن أبي شيبة عنه، فأثنيا عليه، وذاكرت أحمدبن حنيل منه بأحاديث، فعرفه، وأدفى مليه، وقال: صدوق، كان يطلب معنا الحديث)) (١)

يعني دَ ابن نمير او ابن ابي شيبه نه ما دَ هغوي باره کښي تپوس اوکړو نو دې دواړو دِ سعید بن محمد تعریف اوکرو. اود هغوی نه روایت شوی بعضو احادیثو باره کښی ما د احمد بن حنبل سره مذاكره اوكره نو هغه دى اوبيژندلو، د هغه تعريف ئى اوكرو أو وئى فرمائيل چه هغه صدوق دي، هغه به زمونږ سره سره حديث طلب كول

امام ابوداؤد المنافع ((كفة))(٢)

دي نه علاوه ابوحاتم (٣) علامه ذهبي (۴) او ابن حبان ميني هم د دوي توثيق كړيدې (۵) ليکن په هغوي باندې څه نه څه د تشيع هم غلبه وه (۶)

خو ډيرو ائمه رجالو د حديث د ده توثيق کړې دې نو دې په دې وجه ډير خطرناك نه دې (٧) دامام بخاری نه علاوه امام مسلم، ابوداود او آبن ماجه سیم هم ددوی نه روایت اخستی دی (۸) د دوی انتقال په کال ۲۳۰ ه کښې شویدې. (۹) رحمه الله تعالى رحمة واسعة.

- يعقوب: داابويوسف يعقوب بن ابراهيم بن سعد بن ابراهيم زهري بينة دي د دوي تذكره «كتاب العلم بأب ماذكرفي ذهاب موسى صلّى الله عليه وسلم..))لاندي تيره شوي ده (۱۰) -- ابي: داابراهيم بن سعد بن ابراهيم بن عبدالرحمن بن عوف مين دي. د دوي مختصر تذكره ‹‹كتابالإيبان،ابتفاض أهل الإيبان،،،)، ١١) لاندى او تفصيلي حالات ‹‹كتاب العلم›› په مذکوره باب کښې راغلی دی. (۱۲)

١) تهذيب الكمال (ج١١ص٤٤) وسيرأعلام النبلاء (ج١٠ص ٤٣٨)-

۲) (تاریخ بغداد (ج٩ص ۸۸) وحواله بالا-

٣) (تهذيب الكمال (ج١١ص٤٤) وتهذيب التهذيب (ج٤ص٧٧)-

٤) (الكاشف (ج١ص٤٤) وميزان الاعتدل (ج٢ص١٥٥) وسيرأعلام النبلاء (ج١٠ص٥٣٧)-

۵) (تهذیب الکمال (ج ۱۱ ص ٤٤) و تهذیب التهذیب (ج ٤ ص ٧٧)-

ع) (تهذيب الكمال (ج ١١ص٤٤) وتهذيب التهذيب (ج ٤ ص ٧٧) وتعليقات تهذيب الكمال (ج ١١ص ٤٤)-

٧) قال ابراهيم بن عبدالله بن ابراهيم المخزومي: كان سعيدالجرمي إذا قدم بغداد نزل على أبي. وكان أبوزرعة الرازي يجيئ، كل يوم ينتقي عليه ومعه نصف رغيف، وكان إذا حدث فجاء ذكر النبي صلى الله عليه وسلم سكت، وإذا جاء ذكر على بن أبي طالب، قال: صلى الله عليه وسلم. انظر تاريخ بغداد (ج٩ص٨٨) وتهذيب الكمال (ج١١ص٤٤) وكشف البارى كتاب العلم (ج٣ص١٣٧)-

٨) (تهذيب الكمال (ج١١ص٤٥) والكاشف (ج١ص٤٤)-

۹) (سيرأعلام النبلاء (ج ١٠ص ٤٣٨)-

۱۰) (کشف الباری (ج۳ص ۳۳۱)-

۱۱) (کشف الباری (ج۲ص۱۲۰)-

۱۲) (کشف الباری (ج۳ص۳۳)-

م- صالح: داابوصالح بن كيسان مدنى مُنْ دى. دُ دوى حالات ((كتاب الإيمان باب تغاضل المايهان باب تغاضل المالايهان الأعمال)) لاندى تيرشوى دى. (١)

٥- الاعرج: داابوداود عبدالرحمن بن هرمز مدنى قرشى ميه دي. د دوى مختصر تذكره (ركتاب الإيمان بابحب الرسول صلى الله عليه وسلم)) كنبى راغلى (٢)

۲- أبوهريرة: دامشهورصحابى حضرت ابوهريره اللي دې، د ده حالات ((كتاب الإيبان باب أمور الإيبان) لاندې راغلى دى.

قوله: قال أبوهريرة رضى الله عنه: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: لا تقوم الساعة حتى تقاتلوا الترك صغار الأعين، حمر الوجوه، ذلف الأنوف، كأن وجوههم المجان المطرقة: حضرت ابوهريره الأثن فرماني چه رسول الله نائم فرمانيلي قيامت به تر هغه وخته پورې نه قائميږي تركومي پورې چه تاسو د و پوستركو. سرو مخونو او هوارو پوزو والا تركيانو سره جنګ اونه كړئي لكه چه د هغوى مخونه پلن پلن دهالونه دى. دلته په دې حديث كښې د دې خبرې تصريح راغله چه په تيرشوى حديث كښې قوما راغلى وو هغې نه مراد ترك دى، بيا د تركو د نورو صفتونو ذكر دې چه هغوى د وړو ستركو والا دى، سره مخونه به ئي وي او د هغوى پوزې به هوارې وي.

وائی چه په مخ باندې دَ ټولو نه ښکاره او وړاندې راوتلې څیز هم پوره ده. او هر اول او وړاندې زیات شوی څیز ته **انف** وائی.(۴)

قوله: ولاتقوم الساعة حتى تقاتلوا قومًا نعالهم الشعر: او قيامت به تر هغه وخته پورې قائم نشى تركوم وخت پورې چه تاسو يوداسې قوم سره جنګ اونه كړئى د چا څپلئى چه به د ويښتو وى

د دې جملې تشريح په د ماقبل په حديث کښې راغلې ده.

۱) (کشف الباری (ج۲ص۱۲۱)-

۲) (کشف الباری (ج۲ص۱۱)-

۳) (عمدة القارى (ج ۱۶ ص ۲۰۱) وفتح البارى (ج ۹ ص ۱۰۵) وشرح الأبى والسنوسى على مسلم (ج۷ص۲۵۲)-

په حدیث کښې ذکرشوی صفات د کوم قوم دی؟ د حضرت عمرو بن تغلب او حضرت ابوهریره گنگاد حدیث نه معلومیږی چه هغه قوم د چا مخونه چه د پلنوډهالونو په شان وی او د کوم قوم څپلئی چه د ویښتو وی په دې کښې فرق دې او د دواړو مصداق جدا جدا قومونه دی ځکه چه حضور نظیم دواړه قومونه جدا جدا مستقلا ذکر کړی دی. نو د حدیث دوه جزونه دی:

(ران من أشراف الساعة أن تقاتلوا قوما ينتعلون نعال الشعر) او ((وان من أشراط الساعة أن تقاتلوا قوما

عراض الوجود، كأن وجوههم المجان المطرقة) ((كمانى حديث عبروبن تغلب رض الله عنه) نو حافظ ابن حجر اود بعض نورو محدثينو رائى ده چه دا د دوو مختلفو ډلو يا قومونو طرف ته اشاره ده. د حديث اولنئ جمله تركوسره متعلق دى، د كوم تصريح چه د حضرت ابوهريره الله يه حديث كښى هم موجود ده اود دوئمي جملې تعلق بابك خرمي فرقې سره ده (۱) بابك الخرمي اود هغه فرقه د خليفه مامون الرشيد په زمانه كښى يو سړې تيرشوې دې. د كوم نوم چه بابك وو او خرمي – بضم ډوله وتشديد ثانيه (۲) سره مشهور وو. دا د يو زنديق قسم فرقي مشر وو، په كوم كښى چه محرمات حلال وو. د مامون په زمانه كښى دې فرقې ښه غلبه او قوت حاصل كړو اود عجم ډير ښارونه مثلاً طبرستان او رئ وغيره باندې قابض شو او آخر په كال ۲۲۲ د كښې د خليفه معتصم په زمانه كښې دې جهنم ته اورسيدلو. (۳)

امام آسماعیلی د محمدبن عباد په طریق سره نقل کړی دی هغه فرمائی چه ماته دا خبره رارسیدلی ده چه د بابك د ملګرو څپلئی د ویښتو وې. (۴)

دُ اُسِمَاعیلی دُ دی طریق نه استدلال کولو سره حافظ ابن حجر پورتنی قول پیش کریدی. خود علامه عینی او حافظ قسطلانی انتظ میلان هغه طرف ته دی چه د دواړو جملو مصداق هم یو قوم یعنی ترك دی. (۵)

دَ مسلم شريفَ دَ بعض رواً ياتو نه هم دَ علامه عينى وغيره دَ رائى تائيد كيبى خاص كر دَ حضرت ابوهريره الله داروايت چه دَسهيل عن أبيه په طريق سره مروى دى، دَهغى الفاظ دادى: (رلا تقوم الساعة حتى يقاتل المسلمون الترك قوما وجوههم كالمجان المطرقة، يلمسون الشعر، ويمشون في الشعر) (ع)

١) (فنع البارى (ج۶ص ٢٠٠) وعِمدة القارى (ج ١٤ص ٢٠٠)-

٢) (قال الإمام ياقوت الحموى: خُرَّم وهو رستاق بأردبيل؟ قال نصر: وأظن الخرآمية الذين كان منهم بابك الخرَّمي نسبواإليه وقيل:الخرمية فارسى معناه:الذين يتبعون الشهوات ويستبيحونها. معجم البلدان (ج٢ص٣٥٢)-

۳) (فتح الباري (ج۶ص ۲۰۱) وعمدة القاري (ج ۲۰ اص ۲۰۱)-

٤) (حواله بالا-

۵) (عمدة القارى (ج ۲ اص ۲۰۰) وإرشاد السارى (ج۵ص ۱۰۶)-

٤) (صحيح مسلم كتاب الفتن باب لاتوم الساعة حتى يمرالرجل بقبر أخيه... رقم (٧٣١٣)-

اوګورئی په دې روایت کښې د ترکو همدغه صفت بیان کړیشویدې چه هغوی ویښته اغوندی او په ویښتو کښې ګرځی، یعنی د هغوی په بدنونوباندې د ویښتو لباس او په پښوکښې د ویښتو څپلئی به وی

خو په دې دواړو قسم روايتونوکښې داسې تطبيق ورکولي شي چه د ويښتو اغوستل ترك او غير ترك په دې د ويښتو اغوستل ترك او غير ترك په مينځ کښې مشترك څيز دې. کله ئي د ترکو د علامت په توګه ذکر کړو او کله د نورو قومونو د علامت په توګه لېس شعر ذکر کړې شو (١)

د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت: د حدیث ترجمه الباب سره مناسبت د باب وراندینی حدیث به مقابله کښی زیات ښکاره دی ځکه چه هلته د ترك تصریح نشته خو دلته د ترك تصریح هم موجود ده (۲)

د باب په دوآړو روايتونوکښې حضور د ترکيانو سره جنګ کولو ذکر فرمائيلې دې نو که موقع راشي نو هغوي سره په جنګ کولو کښې هيڅ بديت نشته.

د ترکو متعلق احادیثوباره کښې یو وضاحت: نبی اکرم تایم په مختلفو احادیثوکښې د ترکو په واضح الفاظوکښې خرابې بیان کړیدې او هغوی سره ئی د جنګ فضیلت خودلې دی. د دې همدغه وجه ده چه هغه وخت هغوی د کفر او شرك په تیارو کښې ډوب شوې وو لیکن د نن معامله څه بل څه ده چه هغوی ټول مسلمانان شوی دی، په دې وجه مناسب همدغه ده چه د هغوی د کلامت لرې کړی شي.

حضرت شاه صاحب روای خومائی چه ماته د یو قوم متعلق دا علم نشته چه هغه ټول په ټول مسلمانان شوی وي، سوا د عربو، ترکو او افغانیانو، نو په دوی کښی چه چا هم کفر اختیارکړو نو هم د اسلام د قبلولو نه پس ئی کړیدې یعنی په شروع کښې هغوی هم مسلمانان وو. په فیض الباری کښې دی:

((وإنها وردت الأحاديث في ذمهم لكونهم كفاراً إذ ذاك، أما اليوم فإنهم أسلبوا جبيعًا، فينهغى أن يرتفع عنهم ميسم السؤ، ولا أعرف قوما أسلبوا كلهم إلا العرب والترك والأفغان، فإنه لم يكفى من كفى منهم إلا بعد إسلامه))(٣)

٥٥-بَأَب:قِتَالِ الَّذِينَ يَنْتَعِلُونَ الشَّعَرَ

د ترجمهٔ الباب مقصد اوس په تیرشوک باب کښی دا خبره راغلی ده چه حافظ صاحب د دی امر قائل دی چه هغه خلق کوم چه د ویښتو څپلئ اچوی د ترکو نه علاوه څوك بل قوم دی. په دې صورت کښې به د ترجمه الباب مقصد دا وی چه تیر شوې باب د ترکیانو سره د

١) (تكملة فتح الملهم (ج٤ص٢٢٧)-

۲) (عمدة القاري (ج ٤ ١ص٢١)-

٣) (فيض الباري (ج٣ص٤٣٨)-

كشف البارى كتاب الجهاد (جداول)

جنگ کولو باره کښې وو چه يوه زمانه به داسې راشي چه تاسو به ترکيانو سره جنګ کوني او دا به (راشي اطالساعة)) (د قيامت د علامونه) وي.

اوس دلته دا ترجمه قائمولو سره دا خبره فرمائی چه د قیامت د علامونه یوه داهم ده چه مسلمانان به د ویښتو څپلئی اچونکو سره جنګ کوي.

خو د علامه عینی او حافظ قسطلانی این رائی خود و چه چه په تیر شوی باب کښی ذکر کر یشوی صفوتونه هم د یو قوم یعنی ترکو دی نو موجوده باب به د اشکال نه خالی نه وی خکه داسی به ترجمه مکرر یعنی په دوئم ځل شی. ښکاره خبره ده چه کله ترك او د ویښتو خپلئی اچونکی خلق یو قوم دی نو د نوی سر نه د ترجمه قائمولوهیڅ ضرورت نشته؟ (۱) د دی اشکال (تکرار ترجمه) ختمولوکوشش خو علامه عینی ښه کړیدې لیکن د دې هیڅ فائده نشته، مثلاً فرمائی:

(رأى هذا باب في بيان قتال القوم الذين ينتعلون الشعر، وهم أيضًا من الترك كبال ذكر ناه، ولكن لما دوى الحديث المذكور في الماب السابق عن أبي هريرة في المناكور في الماب السابق عن أبي هريرة في أن في المناكور في الماب الساعة حتى تقاتلوا قومًا نعالهم الشعر،، وقع في آخر الحديث، وهوفي هذا الحديث مد المناسبة عن الم

یعنی دا باب د هغه خلقو سره د جنگ په باره کښی دی چه د ویښتو څپلنی به نې اچولې وی او هغه هم د ترکونه دی لکه چه مونږ ذکر کړل، لیکن امام بخاری پیښته د حضرت ابوهریره ناتی نه په وړاندینی باب کښی ذکر شوی حدیث دلته ذکر کړو نو د دې د پاره نی جدا ترجمه قائمه کړه ځکه چه د حضرت ابوهریره ناتی د حدیث دا الفاظ ((لاتوقم الساعة حت ی تقاتلوا قوم انعالهم الشعن) د تیرشوی باب د حدیث په آخرکښی راغلی وو او همدغه الفاظ د حدیث پاب په شروع راغلی دی.

گورئی دُ دی خبری په ظاهره هیخ فائده نه ښکاری چه د یو حدیث په یو طریق کښې یوه جمله د حدیث په آخره کښی راغلی وی جمله د حدیث په شروع کښی وی او هم هغه جمله په بل طریق کښی آخره کښی راغلی وی اود دی د پاره د جدا باب قائمولو ضرورت پریوځی. په دې وجه حضرت شیخ الحدیث مولانا محمد زکریا کاندهلوی پیشتی فرمانی «وهناکهاتریلایجدی شیمًا» (۳)

مورن معمد رکړي کاندسوی و مائی چه زما په نزد ډیر بهتردا دی چه اووئیلی شی چه د امام حضرت کاندهلوی و نور فرمائی چه زما په نزد ډیر بهتردا دی چه اووئیلی شی چه د امام بخاری دا مستقل ترجمه د دی خبری اشاری کولو دپاره فرمائیلی ده چه د ویښتو څپلئی اچونکو په مصداق کښی اختلاف دی، لکه چه په تیرشوی باب کښی د هغی څه لږ ډیر تفصیل راغلی دی او یوقول داهم دی چه دا د خوارجو سره تعلق لرونکی یو قوم دی. (۴)

١) (الأبواب والتراجم (ج١ص١٩٩)-

۲) (عمدة القارى (ج ۱ اص۲۰۲)-

٣) (الأبواب والتراجم (ج١ص١٩٩)-

٤) (حواله بالا-

دا خبره هم کولی شی چه مصنف بخاری دلته کومه ترجمه قائمه کړیده دا د ترکود ترجمه نه عام ده یعنی یو خو ترک داسی قسم څپلنی اچوی په کومو چه ویښته وي او که نور خلق هم

داسى وى نو هَغُوى سَره به هم جنكُ كولى شَى. [٢٥٤] حَذَثَنَا عَلِيُ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانِ قَالَ الزَّهْرِيُّ عَنِ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ (َ) عَنْ النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى ثَقَاتِلُواقَوْمًا كَأَنَّ وُجُوهَهُمُ الْمَجَانُ الْمُطْرَقَةُ ثَقَاتِلُواقَوْمًا كَأَنَّ وُجُوهَهُمُ الْمَجَانُ الْمُطْرَقَةُ

تراجم رجال

ا-على برعبدالله: دا امام على بن عبدالله ابن المديني رُوانيَّ دي. د ده حالات ((كتاب العلمباب العهم في العلم)) لاندي تيرشوي دي. (٢)

r-سفیان: دا امام سفیان بن عُیینه رئید دی، د دوی حالات ((بدوالوحی)) کښې د رومبي حديث يه ضمن كښى مختصراً (٣) او ((كتاب العلم باب قول المحدث: حدثنا....)) په ذيل كښې تفصيلاً راغلي دي. (۴)

r-زهري: دا مشهور امام حديث ابن شهاب زهرى مُشَيَّد دى. د دوى تذكره ((بدالوس)) د دريم حديث په ذيل كښى اجمالاً راغلى ده. (۵)

٣- سعيد بن المسيب: دا امام التابعين حضرت سعيد بن المسيب قرشي مخزومي الماء الم دى. د دوى تذكره ((كتاب الإيبان باب من قال: إن الإيبان هوالعبل)) لاندى راغلى ده. (ع)

۵-ابی هریره: وړاندینې سند اوګورئی (۷) د حدیث مکمله تشریح اوس په تیرشوی باب کښې بیان کړیشوه. د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت د حدیث ترجمه سره مطابقت واضح دې چه په دې

جمله كنبى دى: ((لاتقوم الساعة حتى تقاتلوا قوما نعالهم الشعر))-

قَالَ سُفْيَانُ وَزَادَ فِيهِ أَبُوالزِّنَادِ عَنْ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رِوَايَةٌ صِغَارَ الْأَعْيُن ذُلْفَ الْأَنُوفِ كَأْنَ وُجُوهَهُمُ الْمَجَانُ الْمُظْرَقَةُ [ر:٢٧٥]

١) (قوله: عن أبي هريرة رضى الله عنه: الحديث مر تخريجه آنفا في الباب السابق-

۲) (کشف الباری (ج۳ص۲۹۷)-

٣) (كشف البارى (ج ١ ص٢٣٨)-

٤) (كشف البارى (ج٣ص١٠٢)-

۵) (کشف الباری (ج ۱ ص۳۲۶)-

ع) (کشف البادی (ج۲ص۱۵۹)-

۷) (کشف الباری (ج۱ص۶۵۹)-

د مذكوره عبارت مقصد دامام بخاری به مقصد د دی عبارت نه دا دی چه سفیان بن عینه دخرت ابوهریره تافی دا حدیث په بل طریق باندی نقل کریدی یو طریق خو هغه دی چه د باب په شروع کښی تیرشو او دونم د ابوالرناد عن الاعم دی او په دی دونم طریق کښی د ابوالزناد نه دا اضافه هم شویده ((صغار الأمین، ذلف الأدوف، کان وجوهم البجان البطرة قلی) چه د هغوی ستر کی به وړی او پوزی چتی وی لکه چه د هغوی مخونه پلن پلن ډهالونه دی بیا دونمه خبره دا ده چه دا تعلیق نه دی لکه چه صاحب التلویح علامه علاء الدین مغلطانی مغلطانی مغلط دی دا مغالطه لگیدلی ده بلکه سابقه سند سره موصول دی (۱)

د روایة مطلب حافظ ابن حجر فرمائی چه د حضرت سفیان بن عُیینه دا قول ((دوایة))عن النبی صلی الله علیه وسلم په عوض کښی دی اسماعیلی دا روایت د ((محمد بن عبادة عن سفیان)) په طریق سره په دې الفاظو نقل کړیدې ((عن النبی صلی الله علیه وسلم)) دغه شان د تیرشوی باب دوئم حدیث کوم چه د الاعرج نه مروی دې په دې کښې هم ((قال رسول الله صلی الله علیه وسلم)) الفاظ وارد شوی دی (۲)

دَ حافظ دَ دى ارشاد خلاصه دا شوه چه حضرت ابوهريره الماشئ كوم دا الفاظ ((صغاد الأعين، ذلف الأنوف، كأن وجوههم الهجان الهطمةة)) اضافه كړى دى دا اضافه ئى دَ خپل طرف نه نه ده كړى او دا دَ هغه خپل قول نه دې بلكه دا الفاظ هم دَ نبى اكرم الله المروى دى او دَ هغوى نه ئى مرفوعا نقل كوى، نو حاصل دا چه ((رواية)) لفظ دَ حديث مرفوع كيدلو دَپاره راوډلې شو. او علامه كرمانى الله الله الله الله الله انداز كښى فرمائيلې. هغوى ليكى: ((توله: ۱۰ رواية، ۱۰ بالنصب، أى دادعلى سبيل الرواية، لاعلى طريق المداكرة، أى قاله عن النقل والتحمل، لاعندالقال والقيل)) (۳)

یعنی د ٔ ((روایة)) لفظ منصوب دی او مطلب دا دی چه هغه دا زیاتوالی روایت کولو سره نقل کریدی، صرف د حدیث د مذاکری په توګه نه، یعنی هغوی دا اضافه نقل و اداء حدیث په وخت کښی ارشاد فرمائی

خو په تیرشوی او زمونږ د دې باب په روایت کښې فرق دې چه په دې کښې ((حبرالوچوه)) زیاتوالي مروی دې او ((صغار الأعین)) الفاظ په دې کښې نشته، د کوم اضافه چه زمونږ د ً وړاندې په دې باب کښې موجود دی.(۴)

١) (فنح البارى (ج۶ص١٠٥) وتغليق التعليق (ج٣ص٤٤)-

٢) (فتح الباري (عص٥٠١) وفتح المغيث بشرح ألفية الحديث (ج١ص٤٤١) النوع الرابع من الفروع السبعة

٣) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ٢٠٢) وشرح الكرماني (ج١٢ ص ١٧٩)-

٤) (فتح الباري (ج۶ص١٠٥)-

۹۱- بَاب: مَن صَفَّ أَصُحَابُهُ عِنْدَا لَهُوَ مِمَةِ وَنَزَلَ عَن دَابَتِهِ وَاسْتَنْصَرَ وَ تَرجمة الباب مقصد د دى باب لاندى امام بخارى دا خودلى دى كه سړى د پښيمانتيا او ماتى په وخت كښى خپل هغه ملكرى چه روستوشوى نه دى د نوى سر نه صف بندى اوكړى. د سورلئى نه راكوز شى او د دښمن په مقابله كښى د الله تعالى نه مدد اوغواړى نو د دى اصل په سنت كښى موجود دى اود باب لاندى مصنف ميني د غزوه حنين مشهوره واقعه بيان كړيده (۱)

لیکن امام بخاری رکید چه کوم صورت دلته بیان کړیدې دا څه قانون نه دې چه هم داسې به کولې کیږي لکه چه نبي اکرم ناهی په جنګ حنین کښې کړي وو. بلکه د مصنف کید مقصد دا دې که چرې داسې د هزیمت نه پس چرته دوباره د

حملی کولی اهتمام وی نو په دې کښې هیڅ نقصان نشته اود دې اصل په سنت کښې موجود دې نو په دې وجه د دې خبرې هم ګنجائش شته.

[٢٧٠١] حَنَّ ثَنَا عُمُرُوبُنُ خَالِيهِ الْحَرَّانِيُّ حَنَّ ثَنَا زُهَيْرٌ حَنَّ ثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ سَمِعْتُ الْبَرَاءَ(٢) وَسَأَلُهُ رَجُلْ أَكُنْتُمُ فَرَدُتُمْ يَا أَبَاعُهَا رَقَّ يَوْمَ حُنَيْنِ قَالَ لَا وَاللَّهِ مَا وَلَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَكِنَّهُ خَرَجَ شُبَّانُ أَنَّ عَلَيْهِ وَلَيْ فَعُمْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَيْ يَفُومُ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْهِ وَالْمَنْ عَلَيْهِ وَالْمِنَّ عَلَيْهِ وَالْمُ عَلَيْهِ وَالْمُنَّ عَلَيْهِ وَالْمُنَّ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُو عَلَى بَعْلِيهِ الْبَيْضَاءِ وَابْنُ عَيِّهِ أَبُوسُفَيَانَ بُنُ الْحَارِثِ بْنِ عَبْدِ الْمُظَلِبِ يَقُودُ بِهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُو عَلَى بَعْلِيهِ الْمُظَلِبِ يَقُودُ بِهِ فَنَلُ وَاسْتَنْصَرَثُمَّ قَالَ أَنَا النَّبِيُ لَا كَانِي اللَّهُ عَلِيهِ الْمُظَلِبِ يَقُودُ بِهِ فَنَلُ وَاسْتَنْصَرَثُمَّ قَالَ أَنَا النَّبِي لَا كَانُ الْمُنْ عَبْدِ الْمُظَلِبِ يَقُودُ بِهِ فَنَلُ وَاسْتَنْصَرَثُمَّ قَالَ أَنَا النَّبِي لَا كَانُ الْمُنْ عَبْدِ الْمُظَلِبِ يَقُودُ بِهِ فَنَلُ وَاسْتَنْصَرَثُمْ قَالَ أَنَا النَّبِي لَا كَانُ الْمُنْ عَبْدِ الْمُظَلِبُ ثُمَّ صَفَّا أَنْ عَبْدِ الْمُظَلِبِ يَقُودُ بِهِ وَسَلَّمُ وَهُو عَلَى اللَّهُ إِلَيْ الْمُعَلِّلِ بَاللَّهُ عَلْمُ اللَّهُ الْمُنْ الْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ عَلَى اللَّهُ الْمُنْ الْمُ اللَّهُ الْمُنْ عَلْمَ اللَّهُ الْمُنْ عَلْمَ اللَّهُ الْمُنْ اللَّهُ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ اللَّهُ اللَّهُ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُلْلِلُ الْمُنْ الْمُلِلْمُ الْمُنْ الْمُنْمُ الْمُنْ الْمُنْ الْمُلِل

تراجم رجال

دَ حدیث باب داسندبالکل په هغه حضراتوباندې مشتمل دې ((کتاب الإیمان پاب الصلاق من الإیمان)) کښې هم تیرشوې دې او د ټولو رجالو د سند حالات هم راغلی دی (۳)

تنبیه: په حدیث باب کښې ذکر کړیشوې واقعې تفصیل (کتاب البغازی) کښې ځزوه حنین (۴) لاندې راغلې دې، دغه شان د حدیث د بعضو جملو او اجزاو تشریحات روستو هم په (کتاب الجهاد) کښې ((باب من قاد دابه غیره فی الحرب)) لاندې ذکر کړې شوې دې. خو چه امام بخاری مُرَایِدې په هغې کښې د څه نورو جملو اصافه هم ده. د هغې تشریح مونږ دلته لاندې بیان کوو.

۱) (فتح الباری (ج۶ص۱۰۵)-

٢) (قوله: البراء رضى الله عنه: الحديث مر تخريجه في كتاب الجهاد باب من قاد دابة غيره في الحرب-

۳) (کشف الباری (ج۲ص۳۲۶-۳۷۶)-

٤) (كشف البارى كتاب المغازى (ص٥٣٣-٥٣٥)-

نوله: قال: لا، والله، مأولي رسول الله صلى الله عليه وسلم، ولكنه خرج بأن

أصحابه وخف فهم حسرا، ليس بسلاح: حضرت براء بن عازب الثين فرماني نه، قسم په الله رسول الله تا منه نه ده شاكري خو د هغوى كم عمره اصحاب چا سره چه وسله نه وه هغوى _{ورسر}ه راغلی وو ، نو هغوی تلی وو .

د · نفافهم · تحقیق : زمونو به هندی نسخوکښی ((ولکنه خرچشتان اصحابه)) نه پس ((واغفافهم)) لفظ وارد شوې دې او اخفاف جمع د خفيف ده (۱)

بيا چه کومې نورې نسخې دی په هغې کښې دوه الفاظ وارد شوی دی اخفاء او خفاف، نو به اکثرو نسخوکښی خو اخفاء ده چه د خف جمع ده او د خفیف په معنی کښې دې. او دی نه هغه خلق مراددی چه خالی لاس وو اوهغوی سره څه وسله نه وه. يعني (حسماليس معهم سلام) (۲) او د ابوذر، مستملی او حموی نسخوکښی خفافهم وارد شوې. (۳) چه د خفیف جمع ده او مراد ترینه هم دغه دی کوم چه پورته ذکر شو، هغه خلق کومو سره چه وسله نه وه.

خُلاصة دا شوه چه په درې قسمه نسخو کښې درې قسمه الفاظ وارد شوي دي. کومو کښې چه يو ((اخفافهم)) دي كماني النسخ الهندية خو په اكثرو نسخوكښي دوه الفاظ يعني ((أخفاؤهم))

دى او بعض كښى ((خفافهم)) راغلى.

دُ خسرا تحقیق حسر جمع د حاسر ده اوحاسرمشتق د حسر نه دې د کوم معنی چه کولاویدلو او کولاوولو ده. (۴) لیکن دلته مرادحسراخالی لاس کیدل دییعنی هغوی سره وسله وغيره نه وه. (۵)

دا هم وئيلې شوي دي چه د حاسر معني دا ده چه هغه سړې چا سره چه زغره او ډهال نه وی.(۶) او دا لفظ د کالیت په بنا منصوب دې او د دې ډوالحال ((شیان اصحابه)) دی. (۷)

د ایس بسلاح جملی نحوی تحقیق د حدیث جملی (رئیس بسلام)) کنبی دوه روایتونه دی او د دواړو روايتونو په اعتبار سره ترکيب نحوي هم مختلف کيږي:

 اکثرو نسخو او روایاتوکښې ((لیس بسلام)) باء سره دې نو په دې صورت کښې د لیس اسم محذوف دې او تقدير عبارت داسې دې: ((ليساحدهممتلهسالهسلاح)) (۸)

١) (انظر صحيح البخارى (ج١ص١٥) طبع قديم كتب خانه كراچى)-

۲) (عمدة القارى (ج ۲ اص۲۰۳) وشرح القسطلاني (ج۵ص۱۰۶)-

٣) (حواله بالا وأعلام الحديث(ج٢ص١٤٠٧) النهاية في غريب الحديث (ج٢ص٥٤) وتاج العروس (ج۶ص۹۲-۹۳)-

^{2) (}مصباح اللغات مادة حسر -

۵) عمدة القاري (ج ٤ ١ص٢٠٣) وشرح الكرماني (ج ١٢ ص ١٨٠) وأعلام الحديث للخطابي (ج ٢ص ١٤٠٧)-

۶) (حواله بالا-

۷) (حواله بالا و شرح القسطلانی (ج۵ص۱۰۶)-

۸) (حواله بالا و شرح الكرماني (ج٢ص١٨٠)-

بعضو روایاتو کښې ((حسما،لیس سلام)) مروی دې یعنی بغیرد باء او د سلاح د رفع سره نو دا د لیس اسم دې او د دې خبر محذوف دې. یعنی ((لیسسلا الهم)) (۱)

قوله: فأتواقوما رماة جمع هوازن ويني نصرمايكا ديسقط لهم سكمر: هغوي دُ قبيله هوازن او بنو نصر مخی ته راغله (هغوی داسی مشاق غشی ویشتونکی وو چه) د هغوی به يو غشي هم خالي نه تلو.

په پورته ذکر شوی عبارت کښې ((رماق)) کوم لفظ وارد شویدې هغه د ((دام)) جمع ده د څه معني چه ورغورزونکي ده. او دا لفظ خو د (رقوما)) په صفت کښې واقع کيدونکې دې نو په دې وجه منصوب دې او د ٔ ((**ت**وما)) د نصب وجه مفعولیت دې. (۲)

او په جمع هوازن او بنی نضر کښی دوه احتماله دی:

() دا دواړه علی سبیل البدلیه منصوب وی او قوماً مبدل منه وی:

 چه دادواړه الفاظ مرفوع وی او د مبتدائي محذوف خبرواقع وی یعنی ((هم جمع هوانن) وجهاع بن نصري نو بهر حال دواره صورتونه جائز دي (٣)

قوله: فرشقوهم رشقاً مايكادون يخطئون زشق د باب نصر نه دي، د دي معنى غشي ویشتل او ورغورزول دی. او علامه داؤدې ﷺ فرمائي چه د حدیث د دې جملې مطلب دا دې چه هغوي به ټول په يوځل په مسلمانانو باندې غشي اووروي او د غشو باران به پرې او کړی (۴)

د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت د حديث ترجمة الباب سره مطابقت به دي جمله كني دی ((فنزل واستنصر)) (۵) چه نبی کریم الظم د خیلی سورلئی (سپین قچر) نه راکوز شو اود الله تعالی نه نی فتح او امداد اوغوښتلو. اود جنګ په شروع کښی هغوی د ماتی سره مخ شوی وو او همدغه د امام بخاری مناسم هم مقصد وو.

٥٠- بَاب: الدُّعَاءِ عَلَى الْمُشْرِكِينَ بِالْهُرَيْمَةِ وَالزَّلْزَلَةِ

دَ ترجمة الباب مقصد: دلته امام بخاري بيسة دا فرَمائي چه د وَختَ امام كه د جنگ په موقع د مشرکانو د هزیمت او د هغوی د متزلزل کیدو دعا کوی او د هغوی خلاف بددعا کوی نو دا فعل جائز دې اود نبي علياته نه ثابت دې (ع)

اود دې باب لاندې امام بخاري انځه احادیث ذکر کړی دی لکه چه اوس به ستاسو وراندي راشي.

۱) (عمدة القاري (ج ۱ ۱ص۲۰۳) وشرح الكرماني (ج۱۲ص۱۸۰)-

٢) (عمدة القاري (ج ١٤ ص ٢٠٣) وإرشاد الساري (ج٥ص١٠٠)-

٣) (حواله بالا-

٤ (عمدة القارى (ج ١٤ ص٢٠٣) وأعلام الحديث للخطابي (ج٢ص٧٠١)-

۵(عمدةالقاری (جَ ٤ ١ص٢٠٣) وفتح الباری (ج۶ص١٠٥)-

٤) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ٢٠٣) وشرح القسطلاني (ج٥ص١٠٧)-

[run] حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُبُنُ مُوسَى أَخْبَرَنَاعِيسَى حَدَّثَنَاهِ صَامِّعَ فُعَمَّدِ عَنْ عَبِيدَةَ عَنْ عَلِيّ رَضِى اللَّهُ عَنْهُ (١) قَالَ لَمَّاكَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَلَأَاللَّهُ يُومُ الْأَخْزَابِ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَلَأَاللَّهُ يُومُ الْأَخْزَابِ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَلَأَاللَّهُ يُومُ اللَّهُ عَنْهُ وَالْمُسْطَى حَتَّى غَابَتُ الثَّمُسُ [٢٨٨٥، ٢٨٥٩، ٢٠٥٩] بُومَ وَمُعُمُ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَالْوُسُطَى حَتَّى غَابَتُ الثَّمُسُ [٢٨٨٥، ٢٨٥٩، ٢٥٩، ٢٠٥٦]

تراجم رجال

۱- ابر اهیم بری موسی : دا ابواسحاق الفراء ابراهیم بن موسی بن یزیدالتمیمی الرازی بیت دی^{۲۰}،

r-عيسى: دا ابوعمرو بن يونس بن ابي اسحاق السبيعي كوفي بيني دي. (٣)

۳- هشام، دلته د هشام نه خوک مراد دی؟ حافظ ابن حجر بیاتی ته دلته دا وهم اوشو چه هغه دا اوفرمائیل چه د هشام نه دستوائی مراد دی او بیا ئی په امام اصیلی باندی رد او کړو چه د خبری قائل دی چه د هشام نه ابن حسان مراد دی، فرمائی:

((وزعم الأصيلي أنه ابن حسان، ورام بنلك تضعيف الحديث فأخطأ من وجهين) (۴)

يعني دُ اصيلي محمّان دا دې چه هغه ابن حسان دې اود اصيلي مقصد د دې نه حديث ضعيف ثابتول دي نو هغه په دوه قسمه غلطي اوکړه.

مطلب دا شو چه د حافظ ابن حجر رئيات به قول يوه غلطى د اصيلى نه دا اوشوه چه هغه دا اورئيل چه د هغه دا اورئيل چه د هغه دا اورئيل چه د هشام نه مراد ابن حسان دى. دوئمه غلطى دا اوشوه چه هغه داسى د حديث ضعيف ثابتولو كوشش اوكرو.

دغه شان حافظ ابن حجر فرمائی چه کرمانی دا بهادری کړې ده چه دائي وئيلي چه د هشام نه مراد ابن عروه دي.(۵)

خود حافظ ابن حجر المهم بورتنی تنقید په دواړو حضراتومحد ثینو (یعنی اصیلی او کرمانی) باره کښی صحیح نه دی. دلته وهم او مغالطه هم پخپله هغه ته شویده.

علامه عینی مین مین حافظ صاحب دلته د لاس نه کلک نیولی او فرمانیلی دی چه بهادری خو پخپله حافظ کړیده چه هشام ئی دلته دستوائی ګرځولی دې حالانکه هغه دستوائی نه دې بلکه ابن حسان دې لکه څنګه چه اصیلی وئیلی وو. حافظ جمال الدین مزی مینی په «تحقة

١) (قوله: على رضى الله عنه: الحديث: أخرجه البخارى أيضًا كتاب المغازى باب غزوة الخندق رقم (٤١١١) وكتاب التفسير سورة البقرة باب حافظوا على الصلوات.... رقم (٤٥٣٣) وكتاب الدعوات باب الدعاء على المشركين رقم (٤٣٩٤) ومسلم كتاب الصلاة باب الدليل لمن قال: الصلاة الوسطى هى صلاة العصر رقم (١٤٢٠) والترمذى أبواب التفسير باب ومن سورة البقرة رقم (٢٩٧٨) وأبواب الصلاة باب وقب صلاة العصر رقم (٤٧٤) وأبن ماجه أبواب الصلاة باب المحافظة على صلاة العصر رقم (٤٧٤) وأبن ماجه أبواب المحافظة على صلاة العصر رقم (٤٧٤).

٢) (د دوى د حالاتودباره او كورئ كتاب الحيض باب غسل الحائض رأس زوجها وترجيله-

٣) (د دوى د حالاتودباره او كورى كتاب الأذان باب من صلى بالناس فذكر حاجة فتخطاهم-

٤) (فتح الباري (ج۶ص۱۰۶)-

۵ (حواله بالا-

الاشماف (۱) کنبی دوه خل (۲) ددی خبری تصریح کریده چه دهشام نه مرادابن حسان دی (۳) علامه کرمانی برای هم د جزم سره نه دی فرمائیلی چه هشام نه هم ابن عروه مراد دی بلکه هغه داسی وائی: ((الظاهرانه ابن حسان الکن البناسب لهامرفی باب شهادة الأعبی هشام بن عروق (۴) په قول د علامه عینی برای اسلی در اصل علامه کرمانی برای ته دا مغالطه او دهو که په دی وجه اوشوه چه (کتاب الشهادات) کنبی امام بخاری برای و روایت ((عیسی بن پونس عن هشام عن ابیه عروق)) (۵) په طریق نقل کړی دی. نو علامه کرمانی برای همدغه او گنړل چه دلته هم د هشام نه هم ابن عروه مراددی حالانکه حقیقت د دی نه خلاف دی او د دی نه په قول د علامه عینی د علامه کرمانی بهادری نه ښکاره کیری، فرمائی:

(رولم يظهر منه تجاسى لأنه لم يجزم أنه هشام بن عروة وإنها غراته دواية عيسى بن يونس عن هشام عن أبيه عروة في الهاب المنكور، فظن أنه ههنا أيضًا كذلك))(ع)

د حافظ ابن حجر خبر داری: مونو پورته د حافظ ابن حجر رئیل باره کبنی دا اووئیل چه هغه ته د هشام بن حسان متعلق وهم پیښ شوی دی چه هغه هشام دستوائی ګرځولی دی. دا معامله خو د رکتاب الجهاد) متعلق ده لیکن چه کله هغه رکتاب المغازی) ته اورسیدو نو هغه خبردار شو دا ئی اومنله او د دی خبری تصریح ئی او کړه چه داهم هشام بن حسان دی. لیکی: ((هشام: کنت ذکرت فالجهاد انه الدستوائی، لکن جزم البزی فی الأطراف بأنه ابن حسان، ثم وجدته مصرحابه فی عدة طرق، فهذا البعتهدی) (۷)

دغه شأن په رکتاب الدعوات کښی هم هغوی دلته د ذکر شوی موقف نه خپله رجوع بیان کریده الله ایا هشام بن حسان ضعیف راوی دی اورته چه مونږ د حافظ ابن حجر رکته په حواله د امام اصیلی رکته کوم موقف نقل کړی وو چه هغوی حدیث باب د هشام بن حسان د وجه نه ضعیف محرولی دی نود امام اصیلی د دی موقف جواب حافظ رکته پخپله ورکړیدی.

هغه فرمائی دَ هٔشام بن حسان دَحِفظ باره کُنبی سره دَ دی چه بعضو حضراتو کلام فرمائیلی لیکن چاهم هغه صرف دَ حفظ دَ وجه نه هغه مطلقًا ضعیف نه دی محرخولی بلکه د هغه په بعضو شیوخوکښی هغه ته ضعیف وئیلی. بیا دَ هغه ټولو ائمه رجال و محدثین په دی خبره

١ (انظر تحفة الأشراف (ج٧ص٢٤-

٢) (قال العينى مُرَثِيرًا في العمدة (ج ١٤ ص ٢٠٣): وكذا نص عليه الحافظ المزى في الأطراف في موضعين كما تذكره عن قريب. إلا أن المزى مُرَثِيرًا صرح: "ابن حسان" في ثلاثة مواضع. انظر تحفة الأشراف (ج٧ص٤٦٩ ـ ٤٣٠)
 ٣ (عمدة القارى (ج ١٤ ص ٢٠٣) وشرح القسطلاني (ج٥ص٧٠) -

٤ (شرح الكرماني (ج١٢ص ١٨١)-

٥) (صعيح البخاري كتاب الشهادات باب شهادة الأعمى ... رقم (٢٥٥٥) ـ

ع) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص٢٠٣)-

۷) (فتح الباري (ج۷ص۰۵)-

۸) (فتح الباري (ج۱۱ص۱۹۵)-

کښې اتفاق دې چه د باب په حديث کښې چه کوم شيخ دې يعني محمد بن سيرين کښې د هغه باره کښې دا ثبت دي. سعید بن ابي عروبه (۱) فرماني چه د ابن سیرین نه په روایت كښې د هغه په شاګردانوكښې د هشام په څوك احفظ نه وو. او يحيى القطان فرمائي چه هشام بن حسان د محمد بن سيرين باره كښې ثقه وو. هغه نورفرماني چه هغه د ابن سيرين باره كښې زما په نزد عاصم الاحول او خالد الحَدام نه بهتراوخوښ دې (۲) او امام على ابن المديني (٣) فرماني امام يحيي القطان دهشام بن حسان د امام عطاء نه روايت شوي احادیث به ضعیف کرخول خو زمون اصحابو به هغی ته ثبت وئیل. نور فرمائی چه پاتی شو هغه احادیث کوم چه هغه د محمد بن سیرین نه روایت کوی نو هغه صحیح دی او یحیی بن معین ﷺ فرمائی چه د هشام بن حسان د دی احادیثونه آنکار نشی کولی کوم چه هغه د عطاء، عکرمه او حسن بصری این نه روایت کوی (۴)

حافظ ابن حجر مبيد د امام يحيى بن معين مبيد د پورته ذكر شوى قول جواب وركولو سره فرمائی چه امام احمدخودا فرمائی چه ته دهیغه د هرقسم څیز (روایت) نه انکار اوکړه نو دا به مومي چه يا خو به ايوب هغه روايت كړې وي او يا عوف (۵) يعني د هغه متابعت به يو نه يو خامخا کړې وي. ابن عدي ﷺ فرماني چه د هغه احاديث مستقيم دي ما په هغې

كښى هيڅ منكر شئ نه دې ليدلى (۶) پاتې شو عطاء نو په صحيحينو كښې د عطاء نه يو روايت نشته. البته د عكرمه نه په صحیح بخاری کښی د هغه روآیات شته لیکن ډیر کم دی او په هغی باندې متابعت هم

كريشويدي. والله اعلم (٧)

د حافظ صاحب د دي اوږد جواب خِلاصه دا شوه چه اولاً خو هشام بن حسان مطلقًا سئ الحفظ او ضعیف راوی نه دې او تانیا یوازې په دې بنیاد د هغوی روایات نشی ردکولې . خاصكر چه هغه دَمحمدبن سيرين نه روايت كښې ثقه او ثبت وي. كمامر مهه اثبة الرجال وخفاظ الحديث ٣- هجمن: دا امام، شيخ الاسلام ابوبكر محمد بن سيرين انصاري بصرى مُخْتَهُ دي د دوى تذكره ((كتاب الإيبان باب أتهاع الجنائزمن الإيبان)) لاندى تيره شويده (٨)

1

۱) (تهذیب الکمال (ج ۳۰ ص۱۸۷)-

٢) (تهذيب الكمال (ج ٣٠ص ١٨٤) وفتح الباري (ج ١١ص ١٩٥)-

٣) (نهذيب الكمال (ج ٣٠ص ١٨٧) والضّعفاء الْكبير للعقبلي (ج ٤ص ٣٣٥) -

^{؛) (} تهذيب الكمال (ج٣٠ص ١٨٩)-

۵) (فتح البارى (ج١١ص١٩٥)-

ع) (الكَّاملُ لابن عدى (ج٧ص ١١٤)-

٧) (فتح الباري (ج١١ص١٩٥) حافظ مُشَلَّةُ فتح الباري (ج٧ص٤٠٤) (كتاب المغازي) كبسي خو دا رحی جری ریاست این کست در متعلق کوم خیال دی، د دی باره کښی به زه په (کتاب المغازی) کښی خو دا فرمانیلی ووچه د اصیلی د حدیث باب متعلق کوم خیال دی، د دی باره کښی به زه په (کتاب التفسیر) کښی کلام کوم لیکن معلومه نه ده چه هغوی نه څنګه ذهول اوشو چه د (فتح الباری) په (کتاب التفسیر) کښی په دی باره کښی هیڅ بحث نه دې کړې بلکه مونږ ته خو دا بحث د ډیر لټون نه پس په (کتاب الدعوات) کښی ملاوشو - نه پس په (کتاب الدعوات) کښی ملاوشو - ۸) (کشف الباری (ج۲ص ۵۲٤)-

٥-عبيلة: دا ابومسلم عبيدة - بفتح العين المهلة وكس الهام الموحدة - بن عبروكول دي. (١)

<u>٢-على:</u> دا مشهور صحابى در رسول الله على خوم حضرت على بن ابى طالب على دى (٢) مقوله: قال: لماكان يوم الأحزاب قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: ملاً

الله بیوتهم...: حضرت علی تاش فرمائی چه رسول الله نظم د غزوه احزاب په ورخ اوفرمائیل الله تعالی دی د دغه مشرکانو کورونه او قبرونه د اور نه ډك کړی چه هغوی مونږ د صلاة الوسطى نه مشغول او محروم کړو او نمر ډوب شو

تنبیه: په حدیث باب کښې د ذکرشوې واقعی تفصیل(کتاب البغازی) (۳)کښې اود صلاة

الوسطى متعلق مكمل بحث (كتاب التفسير) (۴) كښى راغلى دى. د حديث د ترجمة الباب سره مطابقت: په حديث شريف كښى بهر حال د دى خبرى بددعا، (ښيري) خو شته چه الله تعالى دى د دغه مشركانو كورونه او قبرونه د أور نه ډك كړى ليكن د شكست بددعاء ئى اونه كړه او ترجمه هم د دې وه.

نو حافظ صاحب او علامه عينى التنظم فرمائى چه د حديث مناسبت د ترجمه سره د زلزله به لفظ كښى دى. هغه داسى چه د هغوى كورونه سوزول اود نفوس ښه جړقولو او خوزولو سبب دى چه د شكست مترادف دى، دغه شان به په ترجمه اوحديث كښى مطابقت اوشى. (ه) سبب دى چه د شكست مترادف دى، دغه شان به په ترجمه اوحديث كښى مطابقت اوشى. (ه) [۲۷۵۳] حَدَّنَنَا قَبِيصَةُ حَدَّنَنَا سُفْيَانُ عَنْ ابْنِي ذَكُوانَ عَنْ الْأَعْرَجِعَنْ أَبِي هُرَيْرَةً رَضِي اللَّهُ عَنْهُ (١) قَالَ كَانَ النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدُعُوفِي الْقُنُوتِ اللَّهُ مَانْجِ سَلَمَةَ بُنَ اللَّهُ عَنْهُ (١) قَالَ كَانَ النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدُعُوفِي الْقُنُوتِ اللَّهُ مَانْجِ سَلَمَةَ بُنَ هِ هَامِ اللَّهُ مَانْجِ اللَّهُ مَانَّجِ اللَّهُ مَانَّجِ اللَّهُ مَانَا اللَّهُ مَانَّةٍ اللَّهُ مَانَّةٍ اللَّهُ مَانَّةٍ اللَّهُ مَانَا اللَّهُ مَانِي اللَّهُ مَانَا الَ

تراجم رجال

ا-قبیصه: دا ابوعامر قبیصه بن عقبه بن محمد بن سفیان کوفی مولی دی. اسفیان کوفی مولی دی. اسفیان دی دا مشهور امام حدیث ابوعبدالله سفیان بن سعیدبن مسروق ثوری مولیه دی. د دی دواړو حضراتو تذکره ((کتاب الإیان پاپعلامة البنافق)) لاندې راغلي. (۷)

١) (دَ دوى دَ حالاتودَباره أوكورئ كتاب الوضوء باب الماء الذي يغسل به شعر الإنسان-

٢) (د دوى د حالاتود پاره او گورئ كتاب العلم باب إثم من كذب على النبي صلى الله عليه وسلم-

٣) (كشف الباري كتاب المغازي (ص٢٧٧)-

٤) (کشف الباری کتاب التفسیر(ص)-

۵) (فتع الباری (ج۶ص۱۰۶) وعمدة القاری (ج ۱۶ص۲۰۳)-

ع) (قوله:عن أبى هريرة رضى الله عنه: الحديث مر تخريجه فى الأذان باب بلاترجمة بعد باب فضل اللهم ربنا لك-٧) (كشف البارى (ج٢ص٢٧٥-٢٨٠)-

د علامه عینی او قسطلانی تسامع دلته علامه عینی پنده ۱۱ او د هغه په اتباع کښی علامه قسطلانی کند (۲) نه دا تسامح شویده چه دې دواړو حضراتو په سندکښې ذکر شوې سفیان ابن عینیه گرخولی حالانکه دا سفیان بن سعید ثوری دی ځکه چه قبیصه خو د امام ثوری نه روایت کوی لیکن د ابن عیینه نه نه کوی نو انمه رجال مثلاً حافظ مزی ۳۱) علامه دهبی (۴) او حافظ ابن حجر (۵) انتظ وغیره د هغه په شیوخو کښی ابن عبینه چرته هم نه دې ذکر کړې او هرځائ کښې نې د تورې تصريح کړيده. د کوم نه چه همدغه معلومي_ډي چه دلته هم د سفیان نه هم توری مراد دی ندچه ابن عیینه

٣- ابن ذكوان دا عبدالرحمن عبدالله بن ذكوان مدنى قرشى يَنْ دى. ددوى تذكره (اكتاب

الإيهان هاب حب الرسول صلى الله عليه وسلم من الإيهان الاندى تيره شويده. (ع) ٩٠ الاعرج دا ابوداؤد عبد الرحمن بن هرمز سلام دي. د ده تذكره هم په اختصار سره د ((کتاب الإیان)) د مذکوره باب لاندې تیره شویده. (۲)

۵- ابوهریره دا مشهور صحابی رسول حضرت ابوهریره انتخ دی د ده تذکره ۱۱ کتاب الایمان بابامورالإيبان) لاندى تيره شويده. (٨)

دُ حَدَيْثُ تُوجِمُهُ: حَضَرَاتُ اَبُوهُ رَبِرَهُ الْمُؤْثُرُ فَرَمَانَى چه نبى كريم نَرْتُهُمْ به په قنوت كښى دا دعا فرمائيله يا الله! سلمه بن هشام ته خلاصي وركړي يا الله! وليد بن وليد ته خلاصي وركړي. يا الله؛ عياش بن ابي ربيعه ته خلاصي وركزي يا الله اكمزوري مسلمانانو ته خلاصي وركړې، يا الله! دُ قبيله مضر په كافرانو بأندې سُختې اوكړې، يا اُلله! په داسې قحط كښې

اَخْتَهُ كُرِي څَنګه چِه تَا دَ يوسَفْ عَلِيُهِ يِه زَمَانه كَنبي په قحط كُنبي خلق أخته كړې وو. مونږ دلته صرف د حديث په ترجمه باندې اكتفاء اوكړه ځكه چه د حديث تشريح او په دې

کښې د ذکر شوی اعلامو حالات (کتابِالأذان) کښې ذکر دی.(۹) د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت: د حدیث شریف ترجمه الباب سره مطابقت په دې جمله كښې دې ((اللهماشدوطأتك على....)) ځكه چه شدت وطات (نيول) د دې خبرې نه اعم دى جه هغوی په هزیمت یا زلزله سره متصف وی یا د دی نه علاوه په نورو تکلیفونو او مشکلاتو کښی هم اخته وی. مثلاً سخته محرانی یا د ذلت مرمک وغیره. (۱۰)

١) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ٢٠٤)-

۲) (إرشادالساری (ج٥ص١٠٧)-

٣) (تهذيب الكمال (ج٢٢ص٤٨٢)-

⁽ ٤ (سيرأعلام النبلاء (ج١٥ ص١٣١)-

٥) (تهذيب التهذيب (ج٨ص٢٤٧)-

۶) (کشف الباری (ج آص ۱۰)-

٧) (كشف الباري (ج٢ص١١)-

۸) (کشف الباری (ج ۱ ص ۶۵۹)-۹) (صحیح البخاری کتاب الأذان باب یهری بالتکبیر حین بسجد رقم (۸۰٤)-

١٠) (عمدة القارى (ج ١٤ ص ٢٠٤) ومثله للحافظ في الفتح (ج ٤ ص ٢٠٠)-

[درء] حَدَّثَ أَخْدُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي خَالِدٍ أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللَّهِ مَا مَنْ أَبِي خَالِدٍ أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللَّهِ مَا مُنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا (١) يَقُولُ دَعَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ الْأَخُرَابِ عَلَى النَّهُ مَا فَوْمُ الْأَخْرَابِ اللَّهُ مَا أَوْمُ الْمُرْكِينَ فَقَالَ اللَّهُ مَا مُنْزِلَ الْكِتَابِ سَرِيعَ الْحِسَابِ اللَّهُ مَّ الْمُرْدُولُ اللَّهُ مَا اللَّهُ اللَّهُ مَا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ لَلْ اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ اللِ

تراجم رجال

ا- احمد المروزی بیست دا ابوالعباس احمد بن محمد بن موسی المروزی بیست دی (۲) - عبد الله: دا مشهور امام حضرت عبدالله بن مبارك حنظلی بیست دی د دوی مختصر تذكره ((بده الوحی)) كنبی تیره شویده (۳)

م-اسم عيل بر ايي خالد: دا اسماعيل بن ابى خالد احمسى بجلى كوفى مينية دې دده اجمالى تذكره «كتاب الإيمان باب المسلم من سلم المسلمون من لسانه ديده») لاندې تيره شويده (۴)

٣-عبى الله بر ابى اوفى التينيز دا مشهور صحابى رسول تَلَيَّظُ، حضرت عبدالله بن ابى اوفى الله بن ابى اوفى الله بن ابى اوفى الله بن ابى اوفى اسلمى التيني دى (٥)

توله: فقال: اللهم منزل الكتاب، سريع الحساب: نو رسول الله كالم اوفرمائيل ياالله!

١) (قوله: عبدالله بن أبى أوفى رضى الله عنه: الحديث أخرجه البخارى أيضًا فى كتاب الجهاد باب كان النبى صلى الله عليه وسلم إذ لم يقاتل أول النهار... رقم (٢٩۶٥-٢٩۶٥) وباب لاتتمنوا لقاء العدو رقم (٣٠٢٥-٣٠٧) وكتاب الدعوات باب الدعاء على (٤١١٥) وكتاب الدعوات باب الدعاء على المشركين رقم (٤٣٩٢) وكتاب الترحيد باب قول الله تعالى (أنزله بعلمه والملائكة يشهدون) رقم (٧٤٨٩) كتاب الجهاد باب كراهية تنمى لقاء العدو ولاأمر بالصبر عنداللقاء رقم(٤٥٤١) وباب استحباب الدعاء بالنصر عندلقاء العدو رقم (٤٥٤٦) والترمذي أبواب الجهاد باب ماجاء في الدعاء عندالقتال رقم (١٩٧٨)وابن ماجه كتاب الجهاد باب القتال في سبيل الله سبحانه تعالى رقم (٢٧٩٤).

٢) (د دوى د حالاتود پاره او مورئ كتاب الوضوء باب مايقمع من النجات في السمن-

٣) (كشف البارى (ج ١ ص ٤٤١) -

٤) (كشف البارى (ج١ص ٤٧٩)-

٥) دُدوى دَ حالاتودَپاره اومحوري كتاب الوضوء باب من لم يرالوضوء إلا من المخرجين: من القبل والدبر

د کتاب نازلونکیه! او زر حساب اخستونگیه! دکتاب نه مراد قرآن کریم دی او د سریع الحساب نه علامه کرمانی رئیلی دوه مطلبه بیان کړی دی:

- ن دا مطلب دې ((أنه سريع حسابه ومجيئ وقته)) د الله تعالى حساب او د هغې وخت زر راتلونکې دې.
- (راوانهسهیم فی الحساب) یا دا چه هغه په حساب کتاب کښې تیز دې. او زر نیول کوی (۱) په اولنی صورت کښې د الله تعالی صفت وی او په دونم صورت کښې د الله تعالی صفت به وی.

قوله: اللهم اهزم الأحزاب، اللهم اهزمهم وزلز لهم: يا الله الله على اللهم الموركي يا الله دوى ته شكست وركيبي يا الله دوى ته شكست وركيبي يا الله دوى ته شكست وركيبي الله دوى ته شكست وركيبي اللهم أو وئى خوزوى الله دوى ته شكست وركيبي أو وئى خوزوى الله دوى ته شكست وركيبي اللهم الله

مطلب دا چه یا الله دوی دره دره کړې او د دې دا غونډه ګډه وډه او خوره کړې دې د پاره چه دوی ته چرته هم آرام او سکونِ ملاونشي او هغوي چرته هم کلك پاتې نشي. (۲)

او علامه داودی فرمائی چه د رسول الله ناهم مطلوب او مقصود دا و چه د هغوی عقلونه ختم شی او په جنګ کښې د هغوی پښې اوخوئيږی (۳)

نود نبی قابی د دی بددعا نتیجه دیره زر ښکاره شوه او الله تعالی یوه دیره تیزه سیلنی راولیګله، کومی سره چه د کفارود لښکر ټولی خیمی راووتلی د هغوی تنابونه پرې شو، کټونی او نور سازوسامان ئی اوشندلی شو د څه په وجه چه کافران بدحواس شو او ویریدل او آخر ټول اوتښتیدل. (۴)

د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت: د حدیث ترجمه سره مناسبت ((اللهم اهزم الأجزاب، اللهم اهزم الأجزاب، اللهم اهزمهم وزلزلهم)) کښی دی. (۵) په دې کښې نبی کریم نام مشرکانو ته بددعا فرمائیلې او هم دغه مقصد د ترجمه هم وو.

د نبی اکرم نایم بدد عاکسی یو حکمت: دلته تاسو گورئی چه نبی کریم نایم خودکافرانو اومشرکانو خلاف بدد عاء فرمائیلی ده چه دوی ماتی سره مخامخ شی ولی د هغوی د

هلاکت او بربادئی بدد عاء ئی نه ده فرمائیلی. د دی وجه دا ده چه په هزیمت او ماتی کښی د هغوی د ځانونو تلف کیدل نشته بلکه سلامتی ده، اوهمدغه سلامتی او عدم اتلاف د دې امر امید جوړیدلی شی چه هغوی په راتلونکی وخت کښی د کفر او شرك نه توبه کړی او په زړه او ځان سره اسلام کښی داخل شی او صحیح مقصد د نفوسو د هلاکت بدد عاء ختموی. یعنی که د هلاکت بدد عاء ئی

۱) (الكواكب الدراري (ج۱۲ص۱۸۲) وعمدة القاري (ج ۱۴ص ۲۰۶) وشرح القسطلاني (ج۵ص۱۰۸)-

٢) (فتح الباري (جَعُص ١٠٤) وعمدة القاري (ج ١٤ ص ٢٠٤) وشرح القسطلاني (ج٥ص ١٠٨)-

٣) (حواله بالا-

^{1) (}انظر كشف البارى، كتاب المغازى) ص ٢٧٥)-

۵) (عمدة القارى (ج ٤ ١ ص ٤٠٤)-

کری وه نو دا صحیح او عظیم مقصد به نه وو حاصل شوی. د دی نه پس تاریخ همدغه گواهی ورکوی چه د دی غزوه احزاب نه بچ وتونکی ډیر مشرکان په اسلام مشرف شو او هغوی ته د صحابیت عظیم شرف حاصل شو لکه حضرت ابوسفیان تاتی علامه قسطلانی هم دا حکمت ذکر کولو سره لیکی: ((ولایا عص الدعاء علیهم بالهایه والولولة دون آن یدعوعلیهم بالهلاك لأن الهایه قیها سلامة نفوسهم وقد یکون ذلك رجاء آن یتوبوا من الشماك، ویدخلوانی الإسلام، والإهلاك الباحق لهم مفوت لهن المقصد الصحیح))()

[٢٧٠٦] حَدَّثَنَا عَبُدُ اللَّهِ بُنُ أَبِى شَيْبَةَ حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بُنُ عَوْنِ حَدَّثَنَا سُغْيَانُ عَنْ أَبِى الْمُعَاقَ عَنْ عَبُواللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ (٢) قَالَ كَانَ النَّبِيُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بُصَلِّى فِي ظِلِ الْكَعْبَةِ فَقَالَ ابُوجَهُلِ وَنَاسٌ مِنْ قُرَيْثِ وَنُحِرَتْ جَزُودً بِنَاحِيةِ مَكَةَ فَأَرْسَلُوا فَجَاعُوا مِنْ سَلَاهَا وَطَرَحُوهُ عَلَيْهِ فَجَاءَتْ فَاطِمَةُ فَالْقَتْهُ عَنْهُ فَقَالَ اللَّهُ مَعَلَيْكَ بِقُرَيْشِ اللَّهُ مَعَلِيْكَ بِقُرَيْشِ اللَّهُ مَعَلَيْكَ بِقُرَيْشِ اللَّهُ مَعَلَيْكَ بِقُرَيْشِ اللَّهُ مَعَلِيْكَ بِقُرْنُ وَلِيكَ بِعُرِيْتِ اللَّهُ فَقَالَ اللَّهُ فَعَلَيْكَ بِقُرْنُ اللَّهِ فَلَقَلْ وَمُعْلِكَ بِعُرَالِ اللَّهُ فَقَالَ اللَّهِ فَلَقَدُ وَلَيْكِ بِعُنْ وَلَيْكِ بَلِي مَنْ اللَّهِ فَلَقَلْ وَالْمَالِقُ وَمُعْبَدَةً أَنِي اللَّهُ وَقَالَ اللَّهِ فَلْقَدُ وَلَيْتِ بَدُورٍ وَمُعَلِي وَلَيْكِ بَنِ خَلْقِ وَعُقْبَةً بُنِ أَنِي اللَّهِ وَقَالَ اللَّهِ فَلَقَلْ اللَّهِ وَقَالَ اللَّهُ فَالْكُ أَلْكُ وَالْمَ عَلَى اللَّهُ وَقَالَ اللَّهُ مَا أَنْ إِي اللَّهِ وَقَالَ اللَّهُ وَالْلَهُ وَمَالَ اللَّهِ وَقَالَ اللَّهُ وَالْمُ اللَّهُ وَقَالَ اللَّهُ وَقَالَ اللَّهُ وَالْمَالِقُ مَا أَنْ اللَّهُ وَالْمَلِيْ وَالْمَاتِ وَالْمَاتُ وَالْمَتَهُ أَنْهُ وَاللَّالِهُ وَالْمَالِ اللَّهُ وَالْمَالِ اللَّهُ وَالْمُ اللَّهُ وَالْمَالِ اللَّهُ وَالْمَالِ اللَّهُ وَالْمَالِ اللَّهُ وَالْمَالِ اللَّهُ اللَّهُ وَالْمُ اللَّهُ وَالْمَالِ اللَّهُ اللَّهُ وَالْمَالِ اللَّهُ اللَّهُ وَالْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَالْمُ اللَّهُ وَالْمُ اللَّهُ وَالْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَالْمُ اللَّهُ اللَالَةُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الل

رجال الحديث

-عبداللهبر ابی شیبه: داابویکرعبدالله بن محمد بن ابی شیبه عیسی کوفی ابی دی (۲) موجود بر عون : داابوعون جعفر بن عون بن جعفر بن عمرو بن حریث قرشی مخزومی ابی و دی در دوی تذکرد((کتاب الإیمان باب زیادة الإیمان و نقصاله)) کنبی تفصیل سره راغلی ده (۴) موجود امام حدیث ابوعبدالله سفیان بن سعید بن مسروق ثوری کوفی موجود دی در دوی تذکره ((کتاب الإیمان باب علامة المنافق)) لاندی تیره شویده (۵) موجود دی در دوی خوبی موجود بن عبدالله بن عبید سبیعی کوفی موجود دی در دوی حالات ((کتاب الایمان باب المعلاق من الایمان)) لاندی راغلی دی (۶)

۱) (شرح القسطلانی (ج۵ص۱۰۸)-

۲) (قوله: عن عبدالله رضى الله عنه: الحديث مر تخريجه فى كتاب الوضوء باب إذا ألقى على طهر المصلى قذر... ٣) (دَ دوى حالاتودَپاره أوګورئ كتاب العمل فى الصلاة باب لابردالسلام فى الصلاة –

٤) (کشف الباری (ج۲ص٤۶)-

۵) (کشف الباری (ج۲ص۲۷۸)-

ع) (کشف الباری) (ج۲ص ۳۷۰)-

٥- عمروبر ميمون: دامخضرمى تابعى حضرت ابويحيى عمرو بن ميمون ازدى مُوَالِيَّ دې. ١٠٠ ٢ عبدالله: دا مشهور صحابى حضرت عبدالله بن مسعود بن غافل بن حبيب هذلى الله دې. د ده مفصل حالات ((كتاب الإيمان باب ظلم دون ظلم)) لاندې تيرشوى دى. (٢)

قوله: قال: كان النبي صلى الله عليه وسلم يصلى في ظل الكعبة: حضرت عبدالله بن مسعود علي فرماني نبي كريم على د كعبه به سوري كنبي مونخ كولو.

په دې حدیث شریف کښې په نبی کریم ترام باندې د مکې د قریشو د سردارانو د طرف نه رواساتلی ظلمونو، زیاتو او شیطانو نه د یو بیان دې. مشهوره واقعه ده یو ځل نبی کریم ترام د کعبه د سوری لاندې مونځ کولو نو ابوجهل د هغه ملګرو او چمچو هغوی ترام په دې حالت کښې اولیدل نو ابوجهل اووئیل چه په مکه مکرمه کښې فلانکې کور کښې اوښ حلال شویدې د هغې لرې کولمې به څوك راوړي چه هغه د محمد (ترام) په سټ باندې واچوي؟ نو د قوم یو بدبخت پاسیدو اوهغه لرې کولمې ئې راوړلې او هغه ئی د حضور ترام په سټ مبارك باندې واچولې کوم وخت چه هغوی ترام و سجدې په حالت کښې وو. د رکتاب الوسې په روایت کښې دی عبدالله بن مسعود الاس فرمائي چه دا ټوله معامله ما کتلې خو هیڅ مې نشو کولي. افسوس چه ماسره دومره طاقت وې (۳) او د مکې مشرکانو حضور ترام سره ټوقې او مسخرې کولي. تردې چه حضرت فاطمه زهراء څاکې راغله او هغه لري کولمې ئې د باباجان د سټ مبارك نه اخوا کړل نو په دې موقع حضور ترام د دې مکې د مشرکانو خلاف بددعا اوفرمائیله د کومې الفاظ چه د باب په حدیث کښې ذکر دی.

قوله: فقال: أبوجهل وناس من فريش، ونحرت جزوربناحية مكة: نو ابوجهل او دقريشو څه خلقو اووئيل دغه وخت د مكي مكرمي په يو گوټ كښي اوښ حلال كړيشوې وو دلته د باب په روايت كښي دا خو ذكر دى چه ابوجهل او څه قريشيانو خلقو اووئيل ليكن څه ئي اووئيل (يعني مقوله) محذوف ده او هغه محذوف مقوله دا ده: «هاتوا من سلاالجرد دالتي دهې (۴) او په دې حذف باندې دليل د ركتاب الوضوى وغيره روايت دې په كوم كښې چه دا الفاظ دى: (إذقال بعضهم لهعن : أيكميجي، بسل جرد دې فلان؟) (۵)

١) (دَ دوى دَ حالاتودَ پاره او كورئ كتاب الوضوء باب إذاألقي على ظهر المصلى قذر -

۲) (کشف الباری (ج۲ص۲۷۵)-

 ⁽۳) الصحيح للبخارى كتاب الوضوء باب إذا ألقى على ظهر المصلى قذر أوجيفة... رقم (٢٤٠)-

٤) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص٢٠٥)-

۵) (الصحيح للبخاري كتاب الوضوء باب إذا ألقى على ظهرالمصلى قذر أو جيفة....رقم (٢٤٠)-

۶) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص٢١٥)-

قوله: فأرسلوا فجاؤامر سلاها: نوهغوی سړې اوليګلو نوهغه دهغه لرې کولمې راوړلې. مطلب دا چه ابوجهل، د هغه ملګرو او شيطانانو د مکې په يوغاړه کښې حلال کړيشوې اوښانو لرې کولمو د پاره سړې اوليګلو چه لاړو او هغه لری راوړل

لری پسی تلونکی او راوړونگی هم يو سړې وو خو هغوی په دې عمل کښې شريك وو نو په دې عمل کښې شريك وو نو په دې وجه هغوی ټولوته نسبت او کړيشو. د رکتاب الوضؤ) په روايت کښې د حديث الفاظ دا وارد شوى دى: ((فانهند اشلى القوم، فجاء به))(۱) چه د قوم بدبخت ترين سړې لاړو او هغه لرى کولمې ئى راوړې.

(السلی) هغه جلئی ته وائی په کومه کښې چه بچې رااینغښتې شی نو که دا جلئی په خیټه کښې اوشلیږی نو مور او بچې دواړه مری. (۲)

قوله: قال عبدالله: فلقد رأيتهم في قليب بدر قتلي: حضرت عبدالله بن مسعود الله وائي ما دي د بدر په كوهي كښي مردار اوليدلو د

حضرت عبدالله بن مسعود گاتئ د قول مطلب دا دې چه رسول الله گاتئ کوم سردارانود قریشو خلاف مکه مکرمه کښې کومې خیرې کړې وې د هغې نتیجه په غزوه بدر کښې ښکاره شوه. نو پخپله حضرت عبدالله بن مسعود گاتئ هغه اووه کسان اوکتل چه هغه ټول د بدر په کوهي کښې مردار پراته وو. دغه شان الله تعالى د خپل نبى د بددعا عزت اوساتلو.

«قلیب» بکس اللام هغه کوهی ته وائی د کوم چه غاړه نه وی، دا مذکر او مؤنث په دواړه قسمه استعماليږی او د دې جمع تلب، تُلُب او اقلبة راځی (۳)

اوتتلى دَ تتيل جمع ده اوبه معنى دَ مقتول ده اوبه تركيب كښې دَ رأيت مفعول ثانى واقع كيږى قوله: قال أبوأسماق: ونسيت السابع: ابواسحاق سبيعى رُرَايَةُ فرمائى او مانه اووم هم شو

دَ پُورتنی عبارت مقصد: په حدیث باب کښی به تاسو کتلی وی چه رسول الله که که کومو کسانو خلاف بددعا فرمائیلی وه په هغی کښی د شپږو نومونه ذکر دی خو اووم نوم نشته ابواسحاق سبیعی میلید دا فرمائی چه اووم نوم مانه هیرشویدی. کله چه ابواسحاق سبیعی میلید دا حدیث حضرت سفیان ثوری ته واورولو نو هغه د اووم نوم ذکر نه کړو او د نسیان تصریح ئی اوکړه. (۴)

١) الصحيح للبخاري كتاب الوضوء باب إذا ألقى على ظهرالمصلى قذر أو جيفة....رقم (٢٤٠)-

۲) (عمدة القارى (ج ۲ ص ۲۰۵) وإرشاد السارى (ج۵ص ۱۰۸) وجامع الأصول (ج ۲۱ص ۳۶۶) ومصباح اللغات مادة سلى-

٣) (عمدة القارى (ج ١٤ص٢٠٥) وإرشاد السارى (ج٥ص١٠٨) وجامع الأصول (ج١١ص٣۶۶) ومصباح اللغات مادة قلب-

٤) (فتح الباری (ج۶ص۷۰۷) وعمدة القاری (ج ۱۴ص۲۰۵) وشرح القسطلانی (ج۵ص۱۰۸)-

اوس سوال دا پیداکیږی چه دا اووم سړې څوك دې، نود دې جواب دا دې چه هغه سړې عمارة بن وليد دې اود دې تصريح په (کتاب الصلاة) (١) کښې د اسرائيل نه مروی روايت کښې موجوددې او د اسرائيل سماع د ابواسحاق نه ډير په اوچته درجه باندې ده، ځکه چه ابواسحاق د اسرائیل نیکه دې او دې به هروخت هغه سره وو.اسرائیل پخپله فرمائی((کنت اخفظ حديث إن إسحاق كما أحفظ سورة الحمد)) (٢)

نوله: قال: أبو عبدالله: قال يوسف بن إسماق عن أبي إسماق: أمية

بر خلف....وقال شعبة: أمية أوأبي ، والصحيح: أمية: د ذكر تعليق نه دا دي چه د ابواسحاق د ذكر شوى تعليق نه دا دي چه د ابواسحاق سبيعي ند دا روايت يوسف بن اسحاق هم روايت كړيدې كوم كښې چه اميه بن خلف دې او شعبه هم روایت کریدی کوم کښی چه امیه یا ابی دی، یعنی شعبه ته په دې کښی شك شعبه هم روایت کریدی کوم چه د سفیان توری الله دې په هغې کښې ابی دې نو شویدې، خود پلار روایت نی کوم چه د سفیان توری الله دې په هغې کښې ابی دې نو امام بخاری میلید دا فرمانی چه صحیح امید دی نه چه ابی، ځکه چه ابی بن خلف خو پخپله حضور پاك تالم په غزوه احد كښې په خپلو لاسونو دوزخ ته رسولي وو. كه هغه چرته په بدر

کښی مردارشوی وی نو په غزوه احد کښی د وژلو به څه مطلب وی؟ (۳) د دواړو تعلیقاتو تخریج: امام بخاری مُشَاد داته دوه تعلیقات ذکر کړی دی، یو د یوسف بن اسحاق او بل د شعبه د یوسف بن اسحاق تعلیق خو موصولاً امام بخاری میای په رکتاب الوضۇ) كښې ذكر كړيدې. (۴) او د شعبه تعليق موصولاً امام بخارى رُرَيْد به ركتاب الجرية البوادعة) او (كتاب مناقب الإنسار) كنبي روايت كړيدي. (۵) د دې نه علاوه امام بخاري يوسيت هم دَ شعبه روايت موصولاً نقل كړيديً.

١) (صحيح البخاري كتاب الصلاة باب المرأة تطرح عن المصلى شيئا من الأذي رقم (٥٢٠)-

۲) (فتح البارى (ج١ص٣٥١)-٣) (عمدة القاري (ج ٤ ١ص ٢٠٥) وإرشاد الساري (ج٥ص ١٠٨)-

٤) (صحيح البخاري كتاب الوضوء باب إذا ألقى على ظهر المصلى قذر أو جيفة -

٥) (صحيح البخاري كتاب الجزية والمواعدة بآب طَرح جيف المشركين في البئر.... رقم (٣١٨٥) وكتاب مناقب الأنصار باب مالقي النبي صلى الله عليه وسلم وأصحابه من المشركين بمكة رقم (٣٨٥٤)-تنبیه: حافظ صاحب فتح الباری (ج۶ص۱۰۷) او تغلیق التعلیق (ج۳ص۴۹) علامه عینی عمدة القاری (ج٣ص٢٠٥) اود دې دواړو حضراتو اتباع ګولو سره علامه قسطلاني مُجَنَّلَة دِرشاد الساري (ج۵ص ۱۰۸) کښې دا ونیلې دی چه امام بخارې گڼځ د شعبه تعلیق موصولاً (کتاب المبعث) کښې نقل کریدی لیکن دی ټولو حضراتو ته غالباً تسامح شویدی ځکه چه اول په په صحیح بخاری کښی داسی څه کتاب نشته د کوم نوم چه (کتاب المبعث) وی د هغی طرف ته د تعلیق نسبت او کریشی. او دونم لکه څنګه چه مونو په تخریج کښې ذکرکول، دا تعلیق مصنف کونځ په دوو مقاماتو کښې موصولا ذکر کړیدې او په دې دواړو مقاماتو کښې د شعبه د شك تصریح موجود ده-

او د حدیث باقی تشریحات به انشاء الله (کتاب الوضو) کښی راځی. د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت د حدیث ترجمه الباب سره مطابقت په دې جمله کښی

دې ((اللهم عليك بغريش)) او په دې كښې هم هغه تقرير دې كوم چه دَ باب په نورو اجاديثو کښې راغلې دې چه د الله تعالى نيول عام دى، که د شکست په ذريعه وى، که د زلزلې په ذريعه وى، که د زلزلې په ذريعه وي دا د نور قسم تکليفونو او مشکلاتو په ذريعه وي (١) د حضرت عبدالله بن مسعود ناتو په دې حديث کښې هم د کفار قريش خلاف د رسول الله ناتا بددعا قبوله شوه اودَ الله تعالى دَ طرف نه دَ هغوي سخت نيول اوشو.

فائده د د دې حديث ټول رجال کوفيان دي، بيا په دې کښې د تابعي د تابعي نه روايت دي. ابو اسحاق سبيعي تابعي دې اوعمروبن ميمون هم مخضرم تابعي دې چه دُصحابي نه روايت کوي^{۲۰)،} [٢٧٧٠]حَدَّثَنَاسُلِيمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَاحَمَّادْعَنْ أَيُوبَ عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةً عَنْ عَائِشَةً رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا (٣) أَنَّ إِلْيَهُودَ دَخَلُوا عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا السَّامُ عَلَيْكَ فَلَعَنْتُهُمْ فَقَالَ مَالَكِ قُلْتُ أُولَمْ تَنْهَعُمَا قَالُوا قَالَ فَلَمْ تَنْهَعِي مَا قُلْتُ وَعَلَيْكُمْ

[۸۷۲۵, ۳۸۲۵, ۱۰۶۵, ۸۳۰۲, ۸۲۵۲]

تراجم رجال

ا-سليمان برر حرب: داابوايوب سليمان بن حرب بن بجيل ازدي وَعُزَالَةُ دي. دُ ده حالات اجمالاً ((كتاب الإيبان باب من كره أن يعود في الكفي) لاندې تيرشوى دى. (۴)

r- حماد: دا ابواسماعیل حماد بن زیدبن درهم ازدی بصری مین در در در در تذکره ((کتاب الإيبان باب (وإن طاتفتان من البؤمنين اقتتلوا فأصلحوا....) لاندى راغلى ده. (٥)

r- ایوب: دا ایوب بن ابی تمیمه کیسان سختیانی بصری میلید دی. د دوی حالات (رکتاب الإياه الإياه الإيان) كنبي راغلي دي. (ع)

۱) (عمدة القارى (ج ۱ ۱ص۲۰۵) و فتح البارى (ج۶ص۱۰۶) ـ

۲) (شرح القسطلاني (ج۵ص۱۰۸)-

٣) (قولهُ: عن عائشة رَضَى اللهِ عنها: الحديث أخرجه البخاري أيضًا في كتاب الأدب باب الرفق في الأمر كله رقم (٤٠٣٤) وباب لَم يكن النبي صلى الله عليه وسلم فاحشا ولا متفحشا، رقم (٤٠٣٠) وكتاب الاستنذان باب كيف يردعلي أهل الذمة والسلام رقم (٤٢٥۶) وكتاب الدعوات باب دلدعاء على المشركين رقم (٤٣٩٥) وباب ول النبي صلى الله عليه وسلم يستجاب الشافي اليهود، ولايستجاب لهم فينا رقم (۶٤٠١) وكتاب استنابة المرتدين باب إذا عرض الذمى وغيره بسب النبي صلى الله عليه وسلم ولم يصرح.... رقم (٤٩٢٧) ومسلم كتاب السلام باب النهى عن ابتداء أجل الكتاب بالسلام وكيف يرد عليهم؟ رقم (٥٤٥۶) والترمذي أبواب الاستئذان باب ماجاء في التسليم على أهل الذمة رقم (٢٧٠١)-

٤) (کشف الباری (ج۲ ص۱۰۵)۔

۵) (کشف الباری (ج۲ص۲۱۹)-

۶) (کشف الباری (ج۲ص۲۶)۔

م-ابن ابی ملیکه: دا ابوبکر عبدالله بن عبیدالله بن ابی ملیکه تیمی قرشی میه دی د دوی تذکره ((کتاب الإیمان باب عوف البؤمن من ان یحیط عبله ...)) په ذیل کښی تیره شوې ده . (۱) ه-عائشه رضی الله عنها: دا ام المؤمنین حبیبه الرسول تا ام الله عنها: دا ام المؤمنین حبیبه الرسول تا ام الله عنها: بنت ابی بکر صدیق تا الله عنها ده ، د دې حالات ((بده الوس)) په دونم حدیث کښی تیرشوی دی . (۲)

قوله: أن اليهود دخلوا.... د حضرت عائشه في نه روايت دې چه يهود يوه ورځ نبى اکرم نالل له راغله او وئى وئيل چه ته دې مړشې نوما په هغوى باندې لعنت اوملامتيا او کړه. حضور نالل اوفرمائيل (اې عائشه) په تاڅه اوشو؟ ماوئيل چه تاسو واونه ريده چه دې خلقو څه اووئيل؟وئى فرمائيل چه تا واونه ريدل چه ماڅه اووئيل وعليکم يعنى تاسوله دې مرګ راشى. د وعليکم واو متعلق يو بحث: علامه خطابى ميشت فرمائى چه د عامو محدثينو روايت خو همدغه دې چه واو دې باقى وى ليکن ابن عينيه ميشت د (عليکم) داکلمه بغيرد واو نه روايت کوله او همدغه صحيح هم دى.

د دی وجه دا ده که چری واو حذف کریشی نو د هغوی دا پورته ذکر شوی قول به بعینه په هغوی راواپس کیږی او د واو داخلولو په صورت کښی په صفت او بد دعا کښی اشتراك ثابتیږی یعن څنګه چه د دی یهودیانودپاره به بددعا وی هغه شان به د حضور ترفیخ د پاره هم وی رالعیاذبالله، ځکه چه واو حرف عطف دی او د دوو څیزونو د یوځائ کولو او شریکولو د پاره استعمالیږی. (۳)

علامه قرطبی فرمانی چه دلته واو زائده دې او په زائده کیدلوکښی هیڅ اشکال نشته اودا هم وثیلی شوی دی چه استئنافیه دې اود واو استئنافیه د ماقبل سره ربط او تعلق نه وی نو په دې صورت کښی به مطلب داوی چه مرګ دې هم په تاسووی. په دې صورت کښې اشتراك بین الامرین نه دې، د هغوی هم دا رائی ده چه دواو حذف کول په معنوی اعتبار سره احسن دې خود دې اثبات اصح او مشهور روایت دې. (۴)

علامه اپومحمدالمنذری گُولت فرمانی چه د سام دوه تفسیرونه شوی دی مرک او ستریوالی، کومو حضراتو چه د سام تفسیر په مرک سره کړیدی د هغوی په نزد د واو په اثبات کښی هیڅ خرابی نشته او کومو حضراتو چه ددې تفسیر سامه (خفګان او ستړیوالی) سره کړیدې نود هغوی په نزد د واو حذف بهتر دی.(۵)

۱) (کشف الباری (ج۲ص۵٤۸)-

۲) (کشف الباری (ج ۱ ص ۲۹۱)-

۳) (عمدة القارى (ج ٤ ١ص٢٠۶)-

٤) (حواله بالا-

٥) (حراله بالا-

د حدیث باب نوره تشریح به انشاء الله (کتاب الأدب) (۱) او (کتاب الاستئذان) کښی راځی. د حدیث باب ترجمه الباب سره مطابقت د حدیث باب ترجمه الباب سره مطابقت ((وعلیکم)) نه حاصلیږی. ځکه چه د دی معنی دا ده چه تاسو دې هم مړه شنی او دا د نبی کریم گالله د طرف نه د یهودیانو خلاف بددعا وه (۲)

اوددې حدیث په بعض طرق کښې داهم راغلی دی (ریستجاب لنافیهم، ولایستجاب لهم فینا))(۳) چه زمونږ دعاګانی خود هغی خلاف قبلیږی ولی د هغوی دعاګانی زمونږ خلاف نه قبلیږی. د دې طریق نه دا معلومه شوه چه د مشرکانو خلاف بددعا کول جانز دی. سره د دې چه بددعا کونکی (داعی) ته دا ویره وی چه هغوی هم د ده خلاف بددعا کوی. (۴)

((وهذا آخر ما أردنا إيراده هنا من شهم أحاديث كتاب الجهاد والسير من صحيم الهخارى من أردنا إيراده هنا من شهم أحاديث كتاب الجهاد ورعاه ومتعناالله يطول الهخارى من المسيخ المحدث الجليل سليم الله خان حفظه الله ورعاة ومتعناالله يطاله حياته بصحة وعافية، وقد وقع الغراغ من تسويده، وإعادة النظرفيه، ثم تصحيح ملازم الطهم بيوم الثلثاء ٢٠٠ جبادى الأولى ١٣٣١ه هرى الموافق ٢٨ يونيوة ٢٠٠٥م، والحددلله الذى بنعبته تتم الصالحات، وصلى الله على النبى الأمى وآله وصحهه وتابعيهم وسلم عليه مادامت الأرض والسبوات، رتبه وراجم نصوصه وعلق عليه حبيب الله محمدذ كريا عضوقسم التحقيق والتصنيف والأستاذ بالجامعة الفاروقية، ووفقه الله تعالى لاتمام باتى الكتب كما يحبه ويرضاة وهوعلى كل شئ قدير، ولاحول ولاقوة إلا بالله العلى العظيم، ويليه إن شاء الله)

باب هل يرتد البسلم أهل أو يعلبهم الكتاب؟

د ترجمے کمپوزنگ ،او سیټنگ نه نن د ګل په ورځ دریمه ذوالقعده ۱۴۲۸ ه مطابق ۱۲ نومبر۲۰۰۷ فارغ شو

۱) (کشف الباری کتاب الأدب(ص۳۹۳و ۳۹۹)-

⁽ ۲(عمدةالقارى (ج ٤ ١ص٢٠۶)-

٣) (صحيح البخارى كتاب الدعوات باب قول النبى صلى الله عليه وسلم: يستجاب لنا فى اليهود... رقم \$ ٤٠١) ومسلم كتاب السلام باب النهى عن ابتداء أهل الكتاب بالسلام..... رقم (٥٤٤٠) غير أنه من رواية جابر بن عبدالله رضى الله عنهما-

٤) (فتح الباری (ج^۶ص۱۰۷)-

مصأدر ومراجع

القرآن الكريم

- ر الإبواب والتراجم لصحيح البخارى _حضرت شيخ الحديث مولانا محمد زكريا صاحب الكاندهلوى رحمه الله تعالى متوفى ١٢٠١ه مراء مرادم اليج المرسعيد كبيني كرابي _
- م اتحان السادة المتقين بشرح اسرار احياء علوم الدين _ علامه سيد محمد بن محمد الحسيني النهور بمرتض، رحمه الله تعالى، متوفى ١٢٠٥هـ دار الكتب العلمية بدوت-
- مراك من المراك المراكب محيح ابن حبان _ امام ابو حاتم محمد بن حبان بستى رحمه الله تعالى . متوفى ٢٥٣ هـ، _ مؤسسة الرسالة بعدوت -
 - سراحكام القرآن امام ابوبكر احمد بن على رازى جصاص رحمه الله متوفى ١٢٠٥ دار الكتاب العربي بدوت
 - هـ احياء علوم الدين _ أمام محمد بن محمد الغزالى رحمه الله ، متوفى ٥٠٠ه مدار احياء التراث العربي _
- ٢- الأدب البقرد مع شرح فضل الله الصهد امير البؤمنين في الحديث محمد بن اسباعيل البخارى ، رحمه الله تعالى ، البتوفي ٢٥٦ هـ ، مكتبة الإيمان ، المدينة البنورة -
- 4- ارشاد السارى شرح صحيح البخارى _ ابو العباس شهاب الدين احبد القسطلانى ، رحبه الله تعالى ، متوفى ٩٢٠ هـ ، البطبعة الكبرى الاميرية مصر ، طبع سادس ١٣٠٣ ه -
- --٨- الاستأذ البودودي و شيئ من حياته و افكارة - الاستأذ العلامة السيد محمد يوسف البنوري ، رحمه الله ، الهتوفي ١٣٩٤ هـ ، الهكتبة البنورية كراتشي -
- 1- الاستيعاب في اسباء الاصحاب (بهامش الاصابة) ابو عمر يوسف بن عبد الله بن محمد بن عبد البر، رحمه الله تعالى ، متوفى ٢٣٣هـ دار الفكر بيروت -
- ١٠ ـ اسد الغابة في معرفة الصحابة _ عز الدين ابو الحسين على بن محمد الجزرى المعروف بأبن الاثير. رحمه الله تعالى المتوفى ٣٠ ه ، دار الكتب العلمية بيروت _
- ار الاصابة في تمييز الصحابة _ شهاب الدين ابو الفضل احمد بن على العسقلاني المعروف بأبن حجر ،رحمه الله تعالى . المتوفى ١٨٥٠هـ دالفكر بيدوت _
- اراعلام الحديث _ امام ابو سليبان حبد بن محبد الخطابي ، رحبه الله تعالى ، متوفى ٢٨٨ هـ مركز احياء التراث الاسلامي جامعة امر القرى مكه مكرمه _
 - r أعلاء السنن علامه ظفر احبد عثماني ، رحبه الله تعالى ، متوفى 1597 هـ ادارة القرآن كرايي "
- ار اكبال اكبال البعلم شرح صحيح البسلم ابو عبد الله محمد بن خلفة الوشناني الابي البالكي ، رحمه الله تعالى ، متوفى ٨٢٨ هـ بيا الكتب العلمية ، بيدوت -
- ۵- امداد الفتاوى ، حكيم الامت اشرف على بن السيد عبد الحق العبروى التهانوى ، رحمه الله تعالى ، متوفى ۱۲۹۲ همكتبه دار العلوم كرائى-
- n_ الانساب_ ابو سعد عبد الكريم بن محمد بن منصور السبعان ، رحمه الله تعالى ، متوفى ٥٣ هـ دار الجنان بيروت، طبع اول ١٠٠٨ه/ ٨٨٨ م _

- اوجز البسالک الی مؤطأ مالک _ شیخ الحدیث حضرت مولانا زکریا صاحب کاندهلوی ، رحمه الله .
 متوفی ۱۲۰۲ه . مطابق ۱۹۸۲ و _ ادار ۱۵ تالیفات اشرفیه ، ملتان _
- AL بدائع الصنائع فى ترتيب الشرائع _ ملك العلماء علاء الدين ابو بكر بن مسعود الكاسانى ، رحمه الله تعالى . متوفى ١٨٨ هـ ايج ايم سعيد كيمنى كرابى _
- 1- بداية المجتهد علامه قاض ابو الوليد محمد بن احمد بن رشد قرطيى ، متوفى ١٥٥٥ مصر طبع خاص -• البداية و النهاية - حافظ عماد الدين ابو الفداء اسماعيل بن عمر المعروف بأبن كثير، رحمه الله تعالى متوفى عدد مكتبة المعارف بدروت، طبع ثاني ١٩٧٤ م -
- 11_ البدر السارى حاشية فيض البارى _ حضرت مولانا بدر عالم مورثهن صاحب ، رحبه الله تعالى ، متوفى البدر بانى بكاري و دهل ، ١٩٨٠ ء _
- rr_بنال المجهود في حل ابو داؤد علامه خليل احمد سهارنهوري ، رحمه الله تعالى ، متوفى ١٣٢١ه- مطبعة ندوة العلماء لكهنؤ ١٢٩٢ه / ١٩٤٠ مر -
- rr_ البناية شرح الهداية _العلامة بدر الدين عينى محبود بن احبد ،رحبه الله .متوفئ فقد ه. مكتبه رشيديه . كوثته _
- ٢٢ ـ بيان القرآن _ حكيم الامت حضرت مولانا اشرف على صاحب تهانوى رحبه الله تعالى، متوفى ٢٣١ هـ شيخ غلام على اينت سنز لاهور _
- ۲۵_ تاج العروس من جواهر القاموس _ ابو الفيض سيد محمد بن محمد المعروف بالمرتفى الزبيدى ، رحمه الله تعالى . متوفى ١٠٥٥ ه ، دار مكتبة الحيأة ، بعدوت _
- مرتاريخ بغداد او مدينة السلام حافظ احمد بن على المعروف بالخطيب البغدادى ، رحمه الله تعالى ، متوفى سمو متوفى سمو دار الكتاب العربي بيروت -
- ٢٠_ تاريخ الخلفاء للامام السيوطى بتحقيق محيى الدين عبد الحبيد رحمه الله منشورات الشريف الرض ٢٨ ـ تاريخ عثمان بن سعيد الدارمي ، المتوفى ٢٨٠ ه ، عن ابى زكريا يحيى بن معين ، المتوفى ٢٢٠ ه . دار المامون للتراث ، ١٢٠٠ ه ـ
- سرات التاريخ الصغير امير المؤمنين في الحديث محمد بن اسباعيل البخارى ، رحمه الله تعالى ، متوفى ٢٥٦هـ المكتبة الاثرية ، شيخو پوره-
- ور التاريخ الكبير امير المؤمنين في الحديث محمد بن اسماعيل البخارى ، رحمه الله تعالى ، متوفى ٢٥١٥- وراد الكتب العلمية بعدوت -
 - ار تاليفات رشيديه الامام الرباني رشيد احمد كنكوهي قدس سرة المتوفى ١٢٦ه م ادارة اسلاميات -
- ٣٦- تحقة الاحوذي الشيخ عبد الرحين الببار كفورى ، رحبه الله تعالى ، البتوفي ١٣٥٣ ه. نشر السنة ملتان ٢٦- تحقة الاشراف بمعرفة الاطراف ابو الحجاج جمال الدين يوسف بن عبد الرحين البزى ، رحبه الله
- تعالى، متوفى ٢٢ هـ البكتب الاسلامى بيروت، طبع دوم ١٢٠٢ ه / ١٩٨٠ م. ٢٠ تريب الراوى بشرح تقريب النواوى _ حافظ جلال الدين عبد الرحين سيوطى رحيه الله تعالى، متوفى البكتبة العلبية مدينه منورة-

- ور تلكرة الحفاظ .. حافظ ابو عبد الله هبس الدين محبد بن عثبان ذهبي ، رحبه الله تعالى . متوفى ١٦٨ ه. واثرة البعار ف العثبائية ، الهند.
- ٣٠- الترغيب و الترهيب امام عبد العليم بن عبد القوى البنارى ، رحبه الله ، المتوفى ٢٥٧ هـ ، دار احياء التراث العربي ، بعدوت ، الطبعة الثالثة ، ١٨٨٨ ه / ١٩١١م -
- عد تعليقات على بذل المجهود _ شيخ الحديث محمد زكريا كالدهلوى رحمه الله تعالى . المتوفى ١٠٠٠ ه . المكتبة التجارية ،لدوة العلماء لكهنؤ ، الطبعة الثالثة ٣٩٣ هـ / ١٩٤٢ م _
 - تاريخ الطبرى . انظر (تاريخ الامم و الملوك) _
 - ٨- تعليقات على تهذيب التهذيب المطبع بذيل تهذيب التهذيب -
- ra_تعليقات على تهذيب الكمال دكتور بشار عواد معروف حفظه الله تعالى، مؤسسة الرسالة طبع اول mra
- مر تعليقات على الكاشف للذهبي _ شيخ محمد عوامة / شيخ احمد محمد نمر الخطيب حفظهما الله . مؤسسة دار القبلة / مؤسسة علوم القرآن ، الطبعة الاولى ١٢٣ه _
- ام تعليقات على الكوكب الدرى _ مولالاً شيخ الحديث مولاناً محمد زكرياً الكاندهلوى ، رحمه الله تعالى ، المتوفى ١٠٠١ هـ
- ٣٠٠ تعليقات على لامع الدرارى شيخ الحديث مولانا محمد زكريا صاحب رحمه الله تعالى متوفى ١٢٠٢ ه/ ١٨٨٨ مر
 - ٣٠ تعليقات على معجم الصحابة جماعة من العلماء والمحقيقين مكتبه لزار مصطفى الباز مكة / الرياض
- الم تغليق التعليق _ حافظ احبل بن على المعروف بأبن حجر رحبه الله تعالى ، متوفى ١٥٢ ه ، المكتب الاسلامي، ودار عبار _
- ٥٠ـ تفسير الطبرى (جامع البيان) _ امام محمد بن جرير الطبرى ، رحمه الله تعالى ، متوفى ٢١٠ ه. دار المعرفة ،بيروت_
- ٣- تفسير القرآن العظيم حافظ ابو القداء عباد الدين اسباعيل بن عبرابن كثير دمشق ، رحبه الله تعالى ، متوفى عبر ابن كثير دمشق ، رحبه الله تعالى ، متوفى عدد اراحياء الكتب العربية -
- ٤٦- تفسير القرطبي (الجامع لاحكام القرآن) _ امام ابو عبد الله محمد بن احمد الانصارى القرطبي ، رحمه الله تعالى متوفى ١٤١ هـ ، دار الفكر ، بهروت _
 - ra_تفهيم القرآن_السيدابوالاعل المودودي ، ادارة ترجمان القرآن . لاهور_
 - 19_ تقريب التهليب حافظ ابن حجر عسقلانى ، رحبه الله تعالى ، متوفى ١٥٨ه دار الرشيد حلب ١٢٠١ه ١٥٠ مد تقرير الجنجوهي على الصحيحين -
 - اهـ تكلية فتح البلهم _ حضرت مولالاً محيد تقى عثباني صاحب مد ظلهم ، مكتبه دار العلوم كرايي
- عه _ التلخيس الحبير في تخريج احاديث الرافق الكبير _ حافظ ابن حجر عسقلاني رحبه الله ، متوفئ ١٥٥ هـ دار نشر الكتب الاسلامية لاهور _
- س _ تلفيس المستدارك (مع المستدارك) _ حافظ شبس الدين محمد بن احمد عثمان ذهبى، رحمه الله تعالى معرفي معرفي معرفي المستدار الفكر بوروت _

- سه _ التبهيد لها في البؤطا من البعاني و الاسائيد _ حافظ ابو عبر يوسف بن عبد الله بن محمد عبد البر مالكي . رحبه الله تعالى ، متوفى ٣٣ه _ المكتبة التجارية ، مكة المكرمة _
- 00 تنزيه الشريعة المرفوعة عن الاحاديث الشنيعة الموضوعة الامام ابو الحسن على بن محمد بن عراق الكنان وحمه الله . المتوفى ١٣٠٣هـ دار الكتب العلمية بدوت، الطبعة الثانية ١٣٠١هـ
- ٢٥ تنظيم الاشتات في حل عويصات البشكوة _ مولانا العلام ابو الحسن رحبه الله تعالى ، مير محمد كتب خانه كرايي_
- عد تهذيب الاسهاء و اللغات _ امام محيى الدين ابو زكريا يحيى بن شرف النووى ، رحمه الله تعالى ، متوفى الدين ابو زكريا يحيى بن شرف النووى ، رحمه الله تعالى ، متوفى الدين الدين المناوية ـ ٢٠٦هـ ادارة الطباعة المناوية ـ
- AA تهذيب تاريخ دمشق الكبير _ الامام الحافظ ابو القاسم على المعروف بابن عساكر الشافعي ، رحمه الله ، المتوفى ٥٤١ هـ دار المسيرة ، بيروت ، الطبعة الثانية ١٢٩٩ هـ / ١٩٤٩ م -
- ٥٥ تهذيب التهذيب حافظ ابن حجر عسقلانى ، رحبه الله تعالى ، متوفى ١٥٢ هـ دائرة المعارف النظامية ، حيدر آباد دكن ١٣٢٥ هـ
- ٧٠_ تهاريب الكمال حافظ جمال الدين ابو الحجاج يوسف بن عبد الرحمن مزى ، رحمه الله تعالى ، متوفى المعرب متوفى المعرب متوفى المعرب الدين المعرب معرب المعرب ا
- الا_ الثقات لابن حبان _ حافظ ابو حاتم محمد بن حبان بسق ، رحمه الله تعالى ، متوفى ٢٥٣ ه ، دائرة المعارف العثمانية ، حيدر آباد ، ١٢٩٣ هـ
- ٣ _ جامع الاصول من حديث الرسول _ علامه مجد الدين ابو السعادات المبارك بن محمد بن الاثيد الجزرى . رحمه الله تعالى . متوفى ٢٠١٣ ه . دار الفكر ، بعدوت _
 - جامع البيان (ديكهي تفسير الطبرى)
- ٣- جامع الترمذى (سنن ترمذى) _ امام ابو عيس محمد بن عيس بن سورة الترمذى ، رحمه الله تعالى ، متوفى ١٠٥ هـ ايج ايم سعيد كمينى / دار احياء التراث العربي _
 - الجامع لاحكام القرآن (تفسير القرطبي)-
- س- الجرح والتعديل ، الامام الحافظ عبد الرحين بن ابي حاتم الرازى ، رحبه الله تعالى ، المتوفى ٢٢١ه، دار الكتب العلبية ، بيدوت، الطبعة الاولى ٢٠٠٢ هـ -
- ولا جبع الوسائل في شرح الشبائل _ الامام على بن سلطان القارى ، رحبه الله ، متوفى ١٠١٢ ه ، ادارة تأليفات اشرفيه ملتان _
 - حاشية تهذيب الكمال _ (ديكفئ تعليقات تهذيب الكمال) _
 - ٢١_ حاشية تفهيم البخاري _ مولانا ظهورالباري ، فأضل دار العلوم ديوبند -
- ٧٤ حاشية الجمل على الجلالين (الفتوحات الالهية) الامام العلام سليمان الجمل ، رحمه الله تعالى ، المتوفى ١٢٠١ه . قديس كتب خانه كراتشي -
- ٧٠ حاشية سبط ابن العجى على الكاشف _ امام برهان الدين ابراهيم بن محمد سبط ابن العجى الحلي ، رحمه الله تعالى . متوفى ١٨٠ ه . شركة دار القبلة /مؤسسة علوم القرآن _

- ٣ _ حاشية السندى على البخارى _ امام ابو الحسن نور الدين محمد بن عبد الهادى السندى ، رحمه الله تعالى ، متوفى ١٣٨ ه ، دار المعرفة ، بدروت _
- مي حاشية السهار نفورى المطبوع مع صحيح البخارى _ مولانا احبد على السهار نفورى ، رحبه الله تعالى ، المتوفى ١٢٩٤ ه، طبع قديس كتب خانه كراتش _
- الم حلية الاولياء حافظ ابو لعيم احبل بن عبل الله بن احبل الاصبهان ، رحبه الله تعالى ، متوفى ٢٠٠ه دار الفكر بيدوت -
- 12 حياً قالحيوان الإمام ابو البقاء كمال الدين محمد بن موسى بن عيسى الدمورى ، رحمه الله تعالى ، المتوفى ٨٠٨ه . شركة مصطفى الحلبي بمصر ، الطبعة الثالثة ١٢٢١ ه/ ١٩٥٧ مر -
- 1/1 الخصائص الكبرى الامام جلال الدين سيوطى ، رحمه الله ، المتوفى ١١١ه ، دار الكتب العلمية ، بيدوت الخصائص الكبرى . رحمه الله تعالى أن متوفى الدين خزرى ، رحمه الله تعالى ، متوفى الدين خزرى ، رحمه الله تعالى ، متوفى المعرب مكتب المطبوعات الاسلامية بحلب -
- ۵/دائر ه معارف اسلامیه (اردو) اساتله جامعه پنجاب، دانش گاه پنجاب، لاهور، نقش ثانی ۱۲۰۰ه/ ۱۸۸۸ مر ۲۵/ الله تعالی محمد الدر البختار حلامه علاء الدین محمد بن علی بن محمد الحصکفی، رحمه الله تعالی ، متوفی ۱۰۸۸ ه، مکتبه عارفین، پاکستان چوک کرایی -
- كدولائل النبوة الحافظ ابو بكراحيدين الحسين بن على البيه قى رحيه الله متوفى ٢٥٨ ه مكتبه اثريه لاهور ٨- ذخائر المواريث فى الدلالة على مواضع الحديث ـ العلامة عبد الغنى بن اسباعيل بن عبد الغنى النابلسى ، رحيه الله تعالى ، متوفى ١٣٠٣ هـ دار النعرفة بيروت ـ
- 44 رد المحتار _ علامه محمد امين بن عمر بن عبد العزيز عابدين شامى ، رحمه الله تعالى ، متوفى ١٢٥٢ ه ، مكتبه رشيديه ، كوثنه _
- ۸۰ رسالة شرح تراجم ابواب البخارى (مطبوعه مع صحیح البخاری) حضرت مولاناً شاه ولى الله ، رحمه الله ، متوفى ۱۱۲۱ ه ، قديم كتب خانه كرای -
- ۱۸ روح البعاني في تفسير القرآن العظيم و السبع البثاني _ ابو الفضل شهاب الدين سيد محبود آلوسي بغدادي، رحبه الله تعالى، متوفى ۱۲۷۰ه، مكتبه امداديه، ملتان _
- المدرياض الصالحين ـ الامام يحيى بن شرف النووى الدمشق رحمه الله تعالى ، المتوفى ١٤٦ هـ قديس كتب خانه كراتشي.
- سمد زاد المعاد من هدى خير العباد حافظ شبس الدين ابو عبد الله محمد بن ابى بكر المعروف بابن القيم ، رحمه الله تعالى . متوفى الده مؤسسة الرسالة -
- مر سنن ابن ماجه دامام ابو عبد الله محمد بن يزيد بن ماجه ، رحبه الله تعالى ، متوفى ٢٤٢ه ، قديس كتب خاله كراي / دار الكتاب المصرى قاهرة ،
- مد سنن ابي داؤد _ امام ابو داؤد سليمان بن الاشعث السجستان ، رحمه الله تعالى ، متوفى ٢٥٥ هـ ايج ايم سعيد كمين /دار احياء السنة النبوية _

- ٢٨ سنن الدار قطى حافظ ابو الحسن على بن عبر الدارقطني ، رحمه الله تعالى . متوفى ٢٨٥ ه ، دار نشر الكتب العلمية ، بعدوت ، الطبعة الثانية ، ١٣٢٢ ه / ٢٠٠٢ م -
- ۸۰ السنن الصغرى للنسائى _امام ابو عبدالرحين احبد بن شعيب النسائى ، رحبه الله تعالى ، متوفى ۲۰۳ ه. قديمى كتب خانه كرايى / دارالسلام رياض-
- ۸- السنن الكبرى للنسائى امام ابو عبد الرحين احبد بن شعيب النسائى ، رحبه الله تعالى ، متوفى ٢٠٠٣ هـ نشر السنة ملتأن -
- ٩٠ السنن الكبرى للبيهق _ امام حافظ ابو بكر احبد بن الحسين بن على البيهق ، رحبه الله تعالى ، متوفى متو
- ١١- سير اعلام النبلاء حافظ ابو عبد الله شس الدين محمد بن احمد بن عثمان ذهبي ، رحمه الله تعالى ، متوفي من النبلاء حافظ ابو عبد الله شس الدين محمد بن احمد بن عثمان ذهبي ، رحمه الله تعالى ، متوفي من النبلاء حافظ ابو عبد الله شس الدين محمد بن احمد بن عثمان ذهبي ، رحمه الله تعالى ،
- ٩٢- السيرة الحلبية (انسان العيون) علامه على بن برهان الدين الحلبي ، رحمه الله تعالى ، متوفى ١٩٢٢ هـ المكتبة الاسلامية ، بيروت-
- عه _ السيرة النبوية _ الامام ابو محمد عبد الملك بن هشام المعافري ، رحمه الله تعالى ، المتوفى عدم مطبعة مصطفى البابي ، الحلبي ، ١٣٥٥ ه /١٩٣١م _
- مه _ شرح ابن بطال ، امام ابو الحسن على بن خلف بن عبد الملك ، المعروف بأبن بطال ، رحمه الله تعالى ، متوفى ٢٠١٥ مرد مكتبه الرشد ، الرياض ، الطبعة الاولى ، ١٢٢٠ م / ٢٠٠٠م -
- وه _ شرح الزرقاني على المؤطأ _ شيخ محمد بن عبد الباق بن يوسف الزرقان المصرى ، رحمه الله تعالى ، متوفى ١١٢٢ه ، دار الفكر ، بعدوت _
 - شرح الطيبي (ديكهد، الكاشف عن حقائق السنن)
- - شرح القسطلاني (ديكه في ارشاد السارى)
- ٩٠ ـ شرح الكرماني (الكواكب الدراري) ـ علامه شبس الدين محمد بن يوسف بن على الكرماني ، رحمه الله تعالى . متوفى ١٨٠ ه ، دار احياء التراث العربي ـ
- ۸۰ شرح المناوى بهامش جمع الوسائل الامام عبد الرؤف المناوى المصرى ، رحمه الله تعالى ، ادارة تاليفات اشرفيه ، ملتان-
- ٩٠ شرح النووى على صحيح مسلم امام ابو زكريا يحيى بن شرف النووى ، رحبه الله تعالى ، البتوفي ٢٧١ه . قديم كتب خانه كراي -
- مار الشمائل المحمدية للترمذي بشرح المواهب اللدلية للبيجوري ، الامام ابو عيسى محمد بن عيسى بن مورة الترمذي ، المتوفى ٢٤٩ ه ، فأروق كتب خانه ملتأن -

- 101_ شهيد كربلا اور يزيد حكيم الاسلام قارى محمد طيب صاحب ، رحمه الله تعالى ، اداره اسلاميات ، اناركل ، لاهور ، كراي الطبعة الاولى 1921 م _
 - ١٠٢_شيعيت كا اصلى روپ ـ غلام محمد ، مطبع غلام محمد ، حيدر آبادسندهـ
- سه الصحيح للبخاري امام ابو عبد الله محمد بن اسمعيل البخاري ، رحمه الله تعالى ،المتوفى ٢٥٢ هـ والمحدد الله تعالى ،المتوفى ٢٥٢ هـ والمدين كتب خانه ، كرابي / دار السلام ،رياض ،الطبعة الاولى ١٢١٤هـ
- مور الصحيح لبسلم امام مسلم بن الحجاج القشيرى النيسابورى ، رحمه الله تعالى ، متوفى الاه ، قل الماه ، قل الماه ، قل بي كتب خانه ، كرايي / دار السلام ، رياض ـ
- ١٠٥ الصواعق المحرقة _ علامه شهاب الدين احمد بن محمد على بن حجر الهيشى المكى ، رحمه الله تعالى ، مترقى على مترق على مترق على المائية القاهرة ، مصر _
- ۱۰۱- الطبقات الكبرى _ امام ابو محمد بن سعد ، رحمه الله تعالى ، متوفی ۱۳۰ هـ دار صادر بدوت _
- ٠١٠ طرح التثريب في شرح التقريب _ امام زين الدين ، ابو الفضل عبد الرحيم بن الحسين العراقي المتوفى ١٠٠ هـ و ولد الحافظ ابو زرعة العراقي ، المتوفى ١٠٠ هـ مكتبه نزار مصطفى الباز ، مكة المكرمة _
- ١٠٨٠ عبدة القارى _الامام بدر الدين ابو محمد بن محبود احبد العينى ، رحبه الله تعالى ، متوفى نده ه ، ادارة الطباعة البندية _
 - . ۱۰۹ عون المعبود شرح سنن ابي داود _ شمس الحق عظيم آبادي ، دار الفكر بهروت ، لبنان _
 - ١١٠ فتاوي رشيديه الامام الرباني رشيد احمد كنكوهي قدس سرة المتوفى ١٩٦٣ هايج ايم سعيد -
- اا _ فتأوى قاض خان بهامش الفتاوى الهندية (العالبكيرية) _ الامام فخر الدين حسن بن منصور الفرغان. رحبه الله تعالى، المتوفى ١٩٩٣ه، نورانى كتب خانه پشاور _
- ۱۱۱- الفتاوى الهندية (العالبكيرية) _ العلامة الامام الشيخ نظام و جماعة من علماء الهند _ نوراني كتب خانه بشاور-
- 117_ فتح البارى _ حافظ احبد بن على البعروف بابن حجر العسقلاني ، رحبه الله تعالى ، متوفى مده دار الفكر بيدوت _
- الله عند القدير امام كمال الدين محمد بن عبدالواحد المعروف بأبن الهمام ، رحمه الله تعالى ، متوفى المدحكتبه رشيديه كوثنه-
- 011- فتح المغيث هرح الفية الحديث امام ابو عبد الله محمد بن عبد الرحس السخارى رحمه الله تعالى ، المتوفى 1917 ه م 1917 ه / 1917 م -
- ۱۱۱_فیش الباری _ امام العصر علامه انور شاه کشیوری ، رحیه الله تعالی ، متوفی ۱۲۵۳ هربانی بکتی و دهل ۱۲۱ و القاموس الوحید _ مولان و حید الزمان بین مسیح الزمان قاسمی کیدانوی ، رحیه الله تعالی ، متوفی ۱۲۱۵ ه. ۱۱۵ مر ۱۱۵ مرد الامور _ کرایی _
- ١١٨ _ قواص في علوم الحديث _ العلامة البحقق ظفر احبد العثباني ، رحبه الله تعالى ، البتوفي ٣٣ ه ، ادارة القرآن كراتشي _

- ۱۹۱ الكاشف شبس الدين ابو عبد الله محمد بن احمد بن عثبان ذهبي ، رحمه الله تعالى ، متوفى ٢٨ هـ مركة دار القبلة / مؤسسة علوم القرآن ، طبع اول ١٢١٢ه / ١٩٩٢م -
- ١٢٠ الكاشف عن حقائق السنن _ (شرح الطيبي) امام شرف الدين حسين بن محمد بن عبد الله الطيبي .
 رحمه الله تعالى ، متوفى ٢٠٠هـ ادارة القرآن كرائي_
- ۱۲۱ الكامل في التأريخ ، علامه ابو الحسن عز الدين على بن محمد ابن الاثير الجرزى ،رحمه الله تعالى ، متوفى ٣٠هـ دار الكتب العربي ،بيروت ـ
- ۱۳۲ الكامل في ضعفاء الرجال ـ امام حافظ ابو احبد عبد الله بن عدى جرجاني رحبه الله تعالى . متوفى ۲۲۵ م
- ١١٢ ـ كتاب الامر ـ امام محمد بن ادريس الشافعي ، رحمه الله تعالى ، متوفى ٢٠٠ ه ، دار المعرفة ، بيروت ، طبع ١٢٠٠ ه / ١٩٤٠ م ـ
 - ١٢٢ كتأب الامالي امام قالي، رحمه الله تعالى، دار الكتب العلمية، بمدوت
 - ١٢٥ _ كتأب الخراج ، الامام ابو يوسف ، يعقوب القاضي ، رحبه الله تعالى المتوفى ١٨٢ هـ
- ۱۲۱ ـ كتاب الضعفاء الكبير _ ابو جعفر محمل بن عمر بن موسى بن حماد العقيل المكى ، رحمه الله تعالى . متوفى ۲۲۲ هـ ، دارالكتب العلمية ، بيروت _
- ١٢٤ كتاب البيسوط الامام شبس الاثبة ابو بكر محبدين ابي سهل السرخس، رحبه الله ، البتوفي ٢٨٠ ه ، دار البعرفة ، يندوت ، الطبعة الثالثة ، ١٢٩٨ م / ١٩٤٨م -
- ١٢٨ كتاب المغازى الامام محمد بن عبر الواقدى ، رحمه الله تعالى ، المتوفى ٢٠٠٥ ، مؤسسة الاعلى ، بيدوت ١٢٨ كتاب الميسر في شرح مصابيح السنة الامام ابو عبد الله الحسن التوريشتى ، رحمه الله ، المتوفى ٢١١ هـ ، مكتبة مصطفى نزار الباز ، مكة المكرمة ، الطبعة الاولى ١٣٢٢ هـ /٢٠٠١م -
- ٣٠ ـ الكاشف عن حقائق غوامض التازيل ____ و الامام جار الله محبود بن عبر الزمخشري . المتوفى ١٢٨ه ه ، دار الكتاب العربي ، بيدوت ، لبنان _
- ۱۳۱ كشف البارى شيخ الحديث حضرت مولاناً سليم الله خان صاحب مد ظلهم ، مكتبة فاروقيه ، كرابى -۱۳۲ - كشف الخفاء و مزيل الالباس - شيخ اسهاعيل بن محمد العجلوني ، رحمه الله تعالى، متوفى ۱۱۳ هـ ، دار احياء التراث العربي ، بيروت -
- mr كنزالعبال _ علامه علاء الدين على المتقى بن حسام الدين الهندى ، رحبه الله تعالى ، متوفى 40 هـ مكتبة التراث الاسلامي ، حلب _
 - ۱۳۲-الکوکبالدری حضرت مولاناً رشید احدد گنگوهی رحبه الله تعالیٰ ، متوفیٔ ۱۳۲۳ ه ، ادارة القرآن کرایی الکواکب الدراری (دیکھٹے ، شرح الکرمانی)
- ۳۵ ـ لامع الدرارى ـ حضرت مولاناً رشيد احمد كنگوهى ، رحمه الله تعالى ، متوفى ۱۲۲۲ ه ، مكتبه امداديه مكة مكرمة ـ
- ۱۳۷ ـ لسان العرب ـ علامه ابو القضل جمال الدين محمد بن مكرم ابن منظور افريق مصرى ، رحمه الله تعالى ، متوفى ١٤٠١ هـ تعالى ، متوفى ١٤٠١ هـ ايران ، ١٢٠٥ هـ

1

٣٠ - المؤطأ - الامام مألك بن الس ، رحمه الله تعالى ، متوفى ١٤٩هـ دار احياء التراث العربي -

۱۳۸ المتوارى على تراجم ابواب البخارى _ علامه ناصر الدين احمد بن محمد المعروف بأبن المندد الاسكندراني ، رحمه الله تعالى ، متوفى ١٧٣ هـ مظهرى كتب خانه كرابى _

المجدع بحار الانوار _ علامه محمد بن طاهر پثنى ، رحمه الله ، متوفى ٩٨٢ هـ دائرة المعارف العثمانية حدد آباد، ١٣٩٥ هـ

وم مجمع الزوائد امام نورالدين على بن ابى بكرى الهيشى رحمه الله تعالى متوفى ١٥٨ه. دار الفكر، بدروت الماء المهدوع (شرح المهدب) - امام محيى الدين ابو زكريا يحيى بن شرف النووى رحمه الله تعالى ، متوفى الدين من شركة من علماء الازهر -

١٢٠ مجبوعة الفتاوي - ابو الحسنات عبد الحيى ، لكهنوى ، متوفى ١٣٠٢ه ، ايج ايم سعيد كمهلي-

سير المحلى علامه ابو محمد على احمد بن سعيد بن حزم رحمه الله تعالى ، متوفى ٢٥٦ هـ المكتب التجارى مدوت/ دارالكتب العلمية بدوت -

المحتار الصحاح، امام محنى بن ابى بكر بن عبد القادر الرازى، رحمه الله تعالى، متوفى ٣٣ هك بعد - دار البعار ف مصر

١٥٥ - المدولة الكبرى - الامام مالك بن السرحية الله تعالى البتوفي ١٤١ ه، دار صادر ، بدروت -

١١-مراح الارواح - الامام العلامة احمد بن على بن مسعود ، رحمه الله ، المتوفى ميد محمد كرايي -

١٩٢٥ مرقاة المفاتيح (شرح مشكوة المصابيح) _ علامه نور الدين على بن سلطان القارى رحمه الله تعالى ، متوفى ١٠١٣ م مكتبه امداديه ملتان _

۱۲۸ المستدرك على الصحيحين _ حافظ ابو عبد الله محمد بن عبد الله الحاكم النيسابورى ، رحمه الله تعالى ، متوفى ۲۰۵ ه ، دار الفكر ، بيدوت _

۱۲۹ مسند احمد امام احمد بن حنبل ، رحمه الله تعالى ، متوفى ۱۲۱ه المكتب الاسلامي / دار صادر ، بدوت موا مسند الحميدي و امام ابو بكر عبد الله بن الزبيد الحميدي ، رحمه الله تعالى ، متوفى ۲۱۱ه و المكتبة السلقية ، مدينة منورة -

الله مشكاة المصابيح _ شيخ ابو عبد الله ولى الدين خطيب محمد بن عبد الله ، رحمه الله تعالى ، متوفى ١٥١ هـ عدر قديس كتب خانه كرابى _

107 مصباح اللغات _ ابو الفضل مولانا عبد الحفيظ البلياوى ، رحمه الله تعالى ، المتوفى ١٣٩١ ه ، مكتبه برهان ، دهل_

الله تعالى ، متوفى ٢٢٥هـدار الكتب العلمية ، بخدوت ، طبع اول ، ٢١٦هـ

١٥٢ - المصنف لعبد الرزاق الامام عبد الرزاق بن همام صنعانى رحبه الله تعالى متوفى ١١١ همجلس على كرابى مدار المستفيد عبد المرابي معارف الحديث مولانا منظور نعبانى ، رحبه الله تعالى ، المتوفى ١٣٣ه ، دار الاهاعت كرابى -

۱۵۱ معارف القرآن - علامه محمد ادريس كالدهلوي ، رحمه الله ، مكتبه عثباليه لاهور ، طبع دوم ۱۸۷ مر -

- عدا معالم السنن _ الامام ابو سليمان حمد بن محمد الخطابي . رحمه الله تعالى ، المتوفى ٢٨٨ ه ، مطبعة
- ABL معجم البلدان _ علامه ابو عبد الله يأقوت حبوى رومى ، رحمه الله تعالى ، متوفى ٣٢ ه ، دار احياء التراث العربي ، بيروت _
- 101 معجم الصحابة ، الامام الحافظ ابو الحسين عبد الباق بن قالع البغدادى ، رحمه الله تعالى . المتوفى عجم مكتبه نزار مصطفى الباز ، مكة المكرمة ، الرياض ، الطبعة الاولى ، ١٢١٨هـ
- ۱۲۰- المعجم الكبير امام سليمان بن احمد بن ايوب الطبراني رحمه الله تعالى متوفى ۲۲۰ ه دار الفكر ، بيروت ۱۲۱- المعجم الفهرس لالفاظ الحديث النبوى _ أ-وى منسك ، وى پ منسج ، مطبعة بريل في مدينة ليدن ۱۲۵ م _ _
- ٧٦ معجم مقياييس اللغة _ امام احمد بن فارس بن زكريا قزوينى رازى ، رحمه الله تعالى ، متوفىدا د_ دارالفكر ، بيروت ـ
- ٢٢ المعجم الوسيط دكتور ابراهيم الس، دكتور عبدالحليم منتصر، عطية الصوالى، محمد خلف الله احمد، مجمع اللغة العربية، دمشق _
- ١٣- معرفة الصحابة الامام الحافظ ابو نعيم احمد بن عبد الله الاصبهان ، رحمه الله تعالى ، المتوفى ٣٠٠ م دارالكتب العلمية ، بدروت ، لبنان ، الطبعة الاولى ، ١٣٢٢ ه / ٢٠٠٢م -
 - ٢٥- البغ ـرب، ابو القتح ناصر الدين مطرزي، رحمه الله تعالى، المتوفى ١١٠ ه، ادارة دعوة الاسلام _
- ٢٦١ المغنى ـ امام موفق الدين ابو محمد عبدالله بن احمد بن قدامة ، رحمه الله تعالى ، متوفى ٣٠ ه ، دار الفكر ، بهدوت ـ
 - مقدمة فتح البارى (ديكه في مدى السارى) ـ
- ٧٢ ـ مقدمة لامع الدرارى ، حضرت شيخ الحديث مولاناً محمد زكرياً صاحب كاندهلوى رحمه الله تعالى ، المتوفى ٢٠٠٠ هـ مكتبه امداديه مكه مكرمه _
- ٢٨ مقدمة مشارع الاشواق الى مصارع العشاق لابن النحاس المتوفى ٨١٢ ه . المحقق ادريس محمد على . دار البشائر الاسلامية ، بعدوت -
 - ٢٨ مكتوبات شيخ الاسلام ، مرتبه مولانا نجم الدين اصلاى ، مكتبه دينيه ، ديوبند
- المعلى المال الاكمال الامام ابو عبد الله محمد بن محمد بن يوسف السنوسى ، رحمه الله تعالى ، المعتوفي المعتوفي المعتمد المعتمد
 - الما الهنجل وليس بن لقولا
- المواهب اللدلية البطبوع مع الشماثل المحمدية الامام الشيخ ابراهيم البيجورى ، رحمه الله تعالى ، فاروقى كتب خانه ، ملتان -
- سلا الموضوعات الامام ابو الفرج عبد الرحس ابن الجوزى ، رحمه الله تعالى ، المتوفى عدد . قرآن محل ، لردو بازار كرايى -

- من موسوعة النحو والصرف والاعراب الدكتور اميل بديع يعقوب، انتشارات استقلال للملايين ، الطبعة الاولى ١٨٨ مر ، بعدوت ، لبنأن / دار العلم ، ايران _
- 101 ميزان الاعتدال في نقد الرجال _ حافظ شبس الدين محمد احمد بن عثمان ذهبي ، رحمه الله تعالى . متوفى 20 هـ دار احياء التراث العربية ، مصر ، ١٣٨٢ هـ
- الناقد الحديث في علوم الحديث الشيخ محمد المبارك عبد الله ، مطبعة محمد على صبيح ، مصر ، الطبعة الأولى المام مرا
- سدالنبراس شرح العقائد علامه عبد العزيز بن احبد الفرهاري ، رحبه الله تعالى ، ١٣٦٩ هـ _ ك بعد مكتبه حقائيه ملتان -
- ١٤٠ نسيم الرياض في شرح شفاء القاض عياض _ الامام شهاب الدين احمد بن محمد بن عمر الخفاع ، رحمه الله تعالى ، المتوفى ١٠١١ه ، دار الكتب العلمية بدروت ، الطبعة الاولى ١٣٢١ ه / ١٠٠١م =
- 141- النكت الظراف على الإطراف _ الامام الحافظ احمد بن على بن جحر العسقلاني ، رحمه الله تعالى . متوفى معدد المكتب الاسلامي ، بهدوت _
- ٨٠-نور الالوار شرح البنار ، مولانا شيخ احبد المعروف بملا جيون الصديق الحنفي ، رحبه الله تعالى ، المتوفى ١٣٠ه ، ايج ايم سعيد كمپني كرايي
- ۱۸۱ النهاية في غريب الحديث و الاثر علامه مجد الدين ابو السعادات المبارك بن محمد ابن الاثور . رحمه الله تعالىٰ ، متوفى ۲۰۲ هـ دار احياء التراث العربي بيروت _
- ۱۸۷ ـ وفيات الاعيان ـ قاض شبس الدين احمد بن محمد المعروف بأبن خلكان ، رحمه الله تعالىٰ ، متوفى ۱۸۲ هـ ، دار صادر ، بيروت ـ
- ١٨٠ الهداية برهان الدين ابو الحسن على بن إلى بكر البرغينانى ، رحمه الله تعالى ، متوفى ١٨٠ هـ ، مكتبه شركت علميه ، ملتان -
- ۱۸۷ _ هدى السارى (مقدمة فتح البارى) _ حافظ ابن حجر عسقلانى ، رحبه الله تعالى ، متوفى ۱۸۳ ه ، دار الفكر ، بدوت_